AGAM SAHITYA RATNAMALA BOOK NO 6

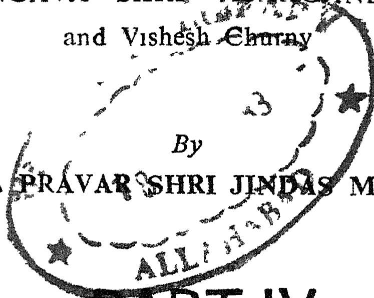
NISHITH SUTRAM

(With Bhashya)

By

STHAVIR PUNGAVA SHRI VISAHGANI MAHATTAR

and Vishesh Churny



By

ACHARYA PRAVAR SHRI JINDAS MAHATTAR

PART IV

UDESHIKA 16-20

Edited By

UPADHAYA KAVI SHRI AMAR CHAND JI MAHARAJ

&

MUNI SHRI KANHAIYA LAL JI MAHARAJ "KAMAL"

Published By

Bharatiya Vidya Prakashan
Delhi Varanasi

Sanmati Gyan Peeth
Agra Viraytan, Rajgir

Published by

BHARATIYA VIDYA PRAKASHAN
I U B Jawahar Nagar,
Bungalow Road, DELHI-7

P Box 108, Kachauri Gali,
VARANASI-1

Second Revised Edition, 1st November, (Sharad Purnima) 1982

PRICE . 600 00
Four Parts (Complete set)

Printed by

DELUX OFFSET
DELHI.

आगम-साहित्य रत्न-मालाया षष्ठ रत्नम्

स्थविर - पुगव श्री विसाहगणि महत्तर-प्रणीत सभाष्य

निशीथ-सूत्रम्

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर विरचितया

विशेष-चूर्ण्या समलकृतम्

चतुर्थो विभाग.

उद्देशकाः १६-२०

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि जी महाराज
तथा
मुनि श्री कन्हैयालाल जी म० "कमल"

प्रकाशक

भारतीय विद्या प्रकाशन

दिल्ली वाराणसी

सन्मति ज्ञान पीठ,

आगरा वीरायतन, राजगृह

प्रकाशक

भारतीय विद्या प्रकाशन

● १ यू० बी० जवाहरनगर,
बैंग्लो रोड, दिल्ली-७

● पो० बा० १०८, कचौड़ी गली,
वाराणसी-१

● लोहामण्डी,
आगरा

● वीरायतन,
राजगृह

द्वितीय संशोधित संस्करण, १, नवम्बर (शरद् पूर्णिमा) १९८२

मूल्य रु० ६००-०० (सम्पूर्ण चार भाग)

मुद्रक

डिलक्स आफसेट प्रिंटर्स

दिल्ली

आचार - शास्त्र

के

सतर्क एव सजग मर्मी अध्येताओ

को



—उपाध्याय अमर मुनि

सम्पादकीय

यह निशीथचूर्णि का चतुर्थ खण्ड है, और अब निशीथचूर्णि अपने मे पूर्ण है। इतने बडे भीमकाय ग्रन्थ का सम्पादन एव प्रकाशन इतनी शीघ्रता के साथ पूर्ण होना, वस्तुत एक आश्चर्य है। जिस गति से प्रारम्भ मे सम्पादन एव मुद्रण चल रहे थे, यदि वही गति अन्त तक बनी रहती, तो सभव था, इतना विलम्ब भी न होता। परन्तु कुछ ऐसी विघ्न-परम्परा उपस्थित होती रही कि हम चाहते हुए भी तदनुसार कुछ न कर सके।

निशीथचूर्णि अद्यावधि कही भी मुद्रित नही हुई है। यह पहला ही मुद्रण है। अत सम्पादन से सम्बन्धित सभी प्रकार की सतकता रखते हुए भी, हम, और तो क्या, अपनी कल्पना के अनुसार भी सफल नही हो सके। कारण यह था कि लिखित पुस्तक-प्रतिया अधिकतर अशुद्ध मिली, और ताडपत्र की प्रति तो उपलब्ध ही न हो सकी। और सबसे बडी बात यह भी थी कि इस प्रकार का सम्पादन-कार्य हमारे लिए पहला ही था, जिसके लिए *'सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृता'* कहा गया है। अस्तु, सम्पादन मे त्रुटिया रही हैं, जो हमारे भी ध्यान मे है, परन्तु, एतदर्थ क्षमायाचना के अतिरिक्त, अब हम अन्य कुछ कर भी तो नही सकते।

प्रस्तुत सम्पादन का विद्वज्जगत् मे बडा आदर हुआ है। विश्वविद्यालय तथा तत्स्तरीय अन्य सर्वोच्च शिक्षा-सस्थाओ ने अपने पुस्तकालयो के लिए इस ग्रन्थ की प्रतियाँ मँगाई हैं और अध्ययन के बाद मुक्त भाव से प्रशसा-पत्र प्रेषित किये हैं। भुवनेश्वर (उडीसा) मे, अक्टूबर १९५९ मे आयोजित 'अखिल भारतीय प्राच्य विद्या-परिषद्' (आल इडिया ओरिएटल कान्फ्रेन्स) के बीसवे अधिवेशन के प्राकृत एव जैन धर्म विभाग के अध्यक्ष डा० साडेसरा ने भी अपने अध्यक्षीय अभिभाषण मे प्रस्तुत सम्पादन को 'शोध-पात्र' गिना है। विद्वान् मुनिवरो ने भी खूब दिल खोलकर इसे सराहा है। हमे प्रसन्नता है कि हमारा यह नगण्य कार्य, साहित्यिक क्षेत्र मे उल्लेखनीय विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सका।

एक बात और भी है। कुछ लोग उक्त प्रकाशन से नाराज भी हुए है। क्यो? इसका उत्तर हम क्या दे! हमारा काम एक प्राचीन ग्रन्थ को, जो अबतक भडारो के जीर्ण-शीर्ण हस्त-लेखो की सीमा मे ही प्राय काल-यापन कर रहा था, मात्र, बाहर प्रकाश मे लाना था, और वह हमने ला दिया। हमारी दृष्टि सु-विशुद्ध रूप से ज्ञानोपासना की रही है। कौन आचार्य हैं? किस परम्परा के हैं? उन्होने क्या लिखा है? वह आज के युग मे कहाँ तक अनुकूल है या प्रतिकूल?

और उस युग मे भी वह कहाँ तक औचित्य की सीमा मे था ? हमारे अपने साम्प्रदायिक पक्षबद्ध मनोवृत्ति के व्यक्ति क्या कहेगे और क्या नही ? उनसे प्रशसा प्राप्त होगी अथवा निन्दा ? यह सब सोचना साहित्यकार का काम नही है । साहित्यकार का काम है, शुद्ध भाव से ज्ञान साधना करना । और वह हमने *'यावद्बुद्धिबलोदय'* की है । बस, अपना कार्य पूरा हुआ ।

निशीथ-चूर्णि को हम जैन-साहित्य का, जैन-साहित्य का ही नही, भारतीय साहित्य का एक महान् ग्रन्थ मानते है । जैन-आचार का यह शेखर ग्रन्थ है । आचार-शास्त्र की गुत्थियो का रहस्योद्घाटन, जैसा इस ग्रन्थ मे हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । भारतीय इतिहास तथा लोक-सस्कृति की प्रकट एव अप्रकट विपुल सामग्री का तो एक प्रकार से यह विश्व-कोष ही है । इसके अध्ययन के विना, निशीथ-सूत्र एव अन्य छेद-सूत्र कथमपि बुद्धिगम्य नही हो सकते, यह हमारा अधिकार की भाषा मे किया जाने वाला सुनिश्चित दावा है, जो किसी के भी मिथ्या प्रचार से झुठलाया नही जा सकता । निशीथ-चूर्णि क्या है, और उसमे ऐसा क्या कुछ है, जो वह पौर्वात्य एव पाश्चात्य, तथैव जैन एव जैनेतर सभी विद्वानो के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है ? इसके लिए प० दलसुखभाई मालवणिया (प्राध्यापक—जैन दर्शन, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) की विस्तृत प्रस्तावना *'निशीथ एक अध्ययन'* का अवलोकन किया जा सकता है । पण्डित जी ने गम्भीर अथच तलस्पर्शी अध्ययन के साथ जो तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण किया है, वह विद्वज्जगत् को चकित कर देन वाला है । हम यहा इस सम्बन्ध मे स्वय और कुछ लिखकर पुनरुक्ति नही करना चाहते ।

यह ठीक है कि चूर्णि एक मध्यकालीन प्राचीन कृति है, एक विशेष सप्रदाय एव परम्परा से सम्बन्धित है, वह उग्र साध्वाचार की अपक्रान्ति के एक विलक्षण मोड पर शब्दबद्ध हुई है, उस पर देश एव काल की बदली हुई परिस्थितियो का भी अनेकविध प्रभाव पडा है । अस्तु, चूर्णि की कुछ बाते ऐसी है, जो अटपटी सी है, जैन धर्म की मूल परम्परा से काफी दूर जा पडी है । परन्तु इस सबसे क्या ! पाठक को अपनी बुद्धि का उपयोग करना है, हस के नीर-क्षीर-विवेक से काम लेना है । किसी भी छद्मस्थ आचार्य की सभी बाते पूर्ण रूपेण ग्राह्य हो, एव सर्वप्रकारेण सभी को मान्य हो, यह तो न कभी हुआ है, और न कभी होगा । *"पन्नासमिक्खए धम्म"* का उत्तराध्ययनसूत्रीय सन्देश आखिर किस काम आयेगा ! इस सम्बन्ध मे हम निशीथचूर्णि के प्रथम भाग की प्रस्तावना (सन् १९५७) मे पहले से ही पाठको को सतर्क रहने के लिए, वह भी काफी स्पष्टता के साथ, लिख चुके है । अस्तु हम समझते है, फिर भी जो लोग चूर्णि की तद्युगीन कुछ अटपटी बातो को ही अग्रस्थान देकर अनर्गल अपप्रचार कर रहे हैं, वे अपने कलुषित अह का ही कुप्रदर्शन कर रहे है । यदि कोई गुलाब के मोहक एव सुवासित पुष्प मे केवल काँटे ही देखता है, यदि कोई निर्मल चन्द्र मे मात्र कलक के ही दर्शन करता है, तो यह उसके *'दोषदृष्टिपर मन'* का ही दोष कहा जायगा, और क्या ?

हाँ, तो गुण ग्रहण के भाव मे निशीथ-चूर्णि का अध्ययन करना चाहिए । आचार्य जिनदास ने साधक के मानसिक जगत् की सूक्ष्मताओ का, उतार-चढावो का बडी कुशलता के साथ चित्रण किया है । आचार की कठोर, कठोरतर एव कठोरतम चर्या को अग्रस्थान देते हुए उन्होने विभिन्न परिस्थितियो मे दुर्बल साधक को, कथचित् अपवाद प्ररूपणा के द्वारा, सर्वथा

अपभ्रष्ट होने से सरक्षण भी दिया है। आखिर *'जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्'* के यथार्थवादी सिद्धान्त को कोई कैसे सहसा अपदस्थ कर सकता है? साधना और जीवन का प्रामाणिक विश्लेषण करने की दिशा मे, चूर्णि, एक महत्त्वपूर्ण उपादेय सामग्री प्रस्तुत करती है। कुछेक प्रतिकूल बातो को छोडकर, शेष समस्त ग्रन्थ सूत्रार्थ की गभीर एव उच्चतर विपुल सामग्री से अटा पडा है। आखिर, २० × ३० अठपेजी १६७३ पृष्ठो के महाग्रन्थ की अमूल्य चिन्तन सामग्री मे, कुछेक प्रतिकूल बातो की कल्पित भीति से वचित रहना, विचारमूढता नही तो और क्या है? *'अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्, विचार-मूढ प्रतिभासि मे त्वम्।'* अस्तु, आशा है आज का चिन्तनशील तटस्थ साधक, अपनी तत्त्वसग्राहिणी प्रतिभा के उज्ज्वल प्रकाश मे, सारासार का ठीक मूल्याकन करके, स्वपर की सयम-साधना को निरन्तर उज्ज्वल से उज्ज्वलतर बनायेगा।

मुनि श्री अखिलेशचन्द्र जी का, प्रस्तुत सम्पादन-कार्य मे, प्रारभ से ही उत्साहवर्द्धक सहयोग रहा है। उनकी व्यवस्था-बुद्धि के द्वारा, समय-समय पर काफी सुविधाएँ उपलब्ध हुई है। अस्तु, उनकी मधुर स्मृति का समुल्लेख, यहा हमारे लिए आनन्द की वस्तु है।

महावीर-दीक्षा-कल्याणक,
मार्गशिर कृ० दशमी, वीराब्द २४८६

—उपाध्याय अमरमुनि
—मुनि कन्हैयालाल

निशीथ भाष्य मूल   भाण्डारकर इन्स्टीच्यूट पूना से प्राप्त

निशी।चू।

६७६

निशीथ चूर्णि   भाण्डारकर इन्स्टीच्यूट पूना से प्राप्त

विषयानुक्रम

षोडश उद्देशक

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	पन्द्रहवे तथा सोलहवे उद्देशक का सम्बन्ध	५०६५	१
१	सागारिक शय्या का निषेध		१–२६
	सागारिक शय्या की व्याख्या	५०६६	१
	सागारिक शय्या के भेद	५०६७	१
	सागारिक पद के निक्षेप	५०६८	१
	द्रव्य-निक्षेप	५०६६–५११२	२–४
	द्रव्य सागारिक के रूप, आभरण-विधि, वस्त्र, अलङ्कार, भोजन, गन्ध, आतोद्य, नाट्य, नाटक, गीत आदि प्रकार, उनका स्वरूप तथा तत्सबन्धी प्रायश्चित्त	५०६६–५१०२	२
	द्रव्यसागारिक वाले उपाश्रय मे निवास करने से लगने वाले दोषो का वर्णन	५१०३–५११२	३–४
	भाव निक्षेप	५११३–५२२७	५–२६
	भाव सागारिक का स्वरूप	५११३–५११४	५
	जनसाधारण, कौटुम्बिक और दण्डिक के स्वामित्व वाले भाव सागारिक अर्थात् दिव्य, मनुष्य और तिर्यञ्च सम्बन्धी रूप = प्रतिमा तथा रूप-सहगत का स्वरूप और उसके प्रकार	५११५	५
	दिव्य प्रतिमा का स्वरूप	५११६–५१६५	५–१६
	दिव्य प्रतिमा के प्रकार	५११७–५११८	५–६
	दिव्य प्रतिमा वाले उपाश्रय मे निवास करने से स्थान और प्रतिसेवना-निमित्तक लगने वाले प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी प्रश्नोत्तर	५११६–५१३६	६–१०
	दिव्य प्रतिमा-युक्त उपाश्रय मे निवास करने से लगने वाले आज्ञाभङ्ग आदि दोष और उनकी व्याख्या। आज्ञाभङ्ग पर गुरुतर दण्ड देने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का दृष्टान्त	५१३७–५१४३	१०–११

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	देवतादि के सान्निध्यवाली दिव्य प्रतिमाओ से युक्त उपाश्रय में रहने से देवता की ओर से की जाने वाली परीक्षा, प्रत्यनीकता तथा भोगेच्छा के निमित्त से होने वाली चेष्टाएँ और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५१४८–५१५३	११–१३
	देवता के सान्निध्यवाली प्रतिमाओ के प्रकार	५१५४	१३
	प्रतिमाओ के सान्निध्यकारी देवता के सुखविज्ञप्य, सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी अकरनैगम, रत्नदेवता आदि के उदाहरण	५१५५–५१५८	१३–१४
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्व वाली दिव्य स्त्री-प्रतिमाओ, प्रतिमा ही नही उनकी स्त्रियो, और तत्सम्बन्धी प्रायश्चितो की गुरुता, लघुता और उसके कारण	५१५९–५१६५	१५–१६
	मनुष्य-प्रतिमा का स्वरूप	५१६६-५१७९	१६–१९
	जनसाधारण आदि के स्वामित्ववाली मनुष्य-प्रतिमाओ के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमाओ वाले उपाश्रय मे रहने से लगने वाले दोष और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५१६६–५१७६	१६–१८
	मनुष्य-स्त्री के सुखविज्ञप्य-सुखमोच्य आदि चार प्रकार, उनके उदाहरण, दोष, प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी गुरुता-लघुता आदि	५१७७–५१७९	१९
	तिर्यञ्च प्रतिमा का स्वरूप	५१८०–५१९२	१९–२२
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्ववाली तिर्यञ्च प्रतिमाओ के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमा वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष एव उनके प्रायश्चित्त	५१८०–५१८९	१९–२१
	तियञ्च स्त्री के सुखविज्ञप्य सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी उदाहरण	५१९०–५१९२	२१–२२
	निग्रन्थियो के लिए दिव्यादि स्त्री प्रतिमा के स्थान में पुरुष-प्रतिमा की सूचना और कुक्कुरसेवी स्त्री का दृष्टान्त	५१९३	२२
	सागारिक शय्या-सम्बन्धी अपवाद और तद्विषयक चिलिमिलिका, निशिजागरण आदि यतना	५१९४–५१९६	२२–२३
	सागारिक शय्या का सामान्य वर्णन करने के अनन्तर श्रमण-श्रमणी के विभाग से विशेष वर्णन की प्रतिज्ञा	५१९७	२३
	श्रमणो को स्त्री-उपाश्रय मे तथा श्रमणियो को पुरुष उपाश्रय में रहने का निषेध एव सजातीय उपाश्रय में रहने का विधान	५१९८	२३
	सूत्र-रचना-विषयक शङ्का और उसका समाधान	५१९९–५२०२	२३–२४
	निर्ग्रन्थ-विषयक सागारिक सूत्र की विस्तृत व्याख्या	५२०३–५२२२	२४–२८

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सविकार पुरुष तथा नपुमक का स्वरूप, उसके मध्यस्थ आदि चार प्रकार, तत्सम्बन्धित उपाश्रय मे रहने से सयम-विराधनादि दोष और उनका प्रायश्चित्त। यदि कारणवश तथाकथित सागारिक उपाश्रय में रहना ही पडे तो तत्सम्बन्धी यतना और अपवाद	५२०३-५२२२	२५-२८
	निग्रन्थियो के लिए भी सागारिक शय्या सूत्र-सम्बन्धी निग्रन्थपरक व्याख्या को ही यत्किंचित् परिवतन के साथ जान लेने की सूचना	५२२३-५२२७	२८-२६
२	सोदक (जलसयुक्त शय्या का निषेध		२६-५७
	सोदक शय्या की व्याख्या	५२२८	२६
	जल के शीत, उष्ण और प्रासुक अप्रासुक विषयक चार भङ्ग और तत्सम्बन्धित उपाश्रय मे रहने से अगीतार्थ को प्रायश्चित्त	५२२६	२६
	द्रव्य, क्षेत्र आदि के भेद से प्रासुक की व्याख्या	५२३०	३०
	उत्सर्ग तथा अपवाद सम्बन्धी विस्तृत चर्चा	५२३१-५२५०	३०-३५
	अगीताथ विषयक शङ्का समाधान, उत्सग-सूत्र, अपवादसूत्र आदि छह प्रकार के सूत्रो तथा देश सूत्र आदि चार प्रकार के सूत्रो का सोदाहरण स्वरूप	५२३१-५२४३	३०-३४
	औत्सर्गिक तथा आपवादिक सूत्रो के विषय और उनके स्वस्थान	५२४४-५२४५	३४
	प्रश्नोत्तरी के द्वारा उत्सग और अपवाद का रहस्योद्घाटन	५२४६-५२५०	३४-३५
	अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना का स्वरूप	५२५१-५३०८	३५-४६
	त्रिविध यतना-विषयक अगीतार्थ की अज्ञानता	५२५१	३५
	अगीताथ-विषयक अनुज्ञापना-अयतना का स्वरूप	५२५२-५२५६	३५-३७
	अगीतार्थ-विषयक स्वपक्ष अयतना का स्वरूप	५२६०-५२७१	३७-३६
	अगीतार्थ-विषयक परपक्ष-अयतना का स्वरूप	५२७२-५२८२	३६-४१
	गीतार्थ-विषयक अनुज्ञापना यतना का स्वरूप	५२८३-५२८७	४१-४२
	गीतार्थ-विषयक स्वपक्ष यतना का स्वरूप	५२८८-५२६६	४२-४४
	गीताथ-विषयक परपक्ष-यतना का स्वरूप	५२६७-५३०८	४४-४६
	[जागरिका पर वत्स-नरेश की भगिनी जयन्ती श्राविका का उदाहरण, गाथा ५३०६]		
	दकतीर की विस्तृत व्याख्या	५३०६-५३५१	४६-५७
	दकतीर पर स्थानादि, यूपकवास और आतापना करने से प्रायश्चित्त	५३०६-५३१०	४६
	दकतीर की सीमा के सम्बन्ध मे प्रचलित सात आदेशो (मतो) का उल्लेख और उनमे से प्रामाणिक आदेशो का निर्णय	५३११-५३१२	४६-४७
	जलाशय के किनारे खडे होने, बैठने, सोने और स्वाध्याय आदि करने से लगने वाले अधिकरण आदि दोष एव उनका स्वरूप	५३१३-५३२४	४७-५०

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जलाशय के निकट स्थान, निषीदन आदि दस स्थानो के सम्बन्ध मे सामान्य प्रायश्चित्त	५३२५	५०
	निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला का स्वरूप	५३२६	५१
	दकतीर के सपातिम तथा असपातिम नामक दो भेद, उक्त दकतीर द्वय पर स्थान एव निषीदन आदि दस स्थानो को सेवन करने वाले आचार्य, उपाध्याय आदि पाँच निर्ग्रन्थो, तथैव प्रवर्तिनी, अभिषेका आदि पाँच निर्ग्रन्थियो के लिए प्रायश्चित्त-विषयक विभिन्न आदेश	५३२७–५३३७	५१–५३
	यूपक-स्वरूप और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५३३८–५३४१	५४
	दकतीर पर आतापना लेने से लगने वाले दोष	५३४२–५३४५	५५
	दकतीर, यूपक तथा आतापना-विषयक अपवाद एव यतना	५३४६–५३५१	५६–५७
३	साग्नि (अग्निसहित) शय्या का निषेध		५७–६५
	साग्नि शय्या के भेद-प्रभेद	५३५२–५३५३	५७
	उत्सर्ग और अपवाद विषयक विस्तृत चर्चा	५३५४–५३७३	५७–५६
	अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना	५३७४	५६
	ज्योतियुक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोपो का अप्रतिलेखनादि पतनान्त पदो द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद एव तत्सम्बन्धी यतना	५३७५–५४०३	५६–६४
	[प्रसङ्गवश पणितशाला आदि छह शालाओ का निरूपण, गाथा ५३६०–६१]		६१
	दीपक के प्रकार, तद्युक्त उपाश्रय मे रहने से लगने वाले दोषो का प्रतिमादहनादि पदो द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद और यतना	५४०४–५४०६	६४–६५
४–७	सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित इक्षु के भोजन एव विदशन का निषेध	५४१०	६५
८–११	इक्षु के सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित विभिन्न विभागो के भोजन एव विदशन का निषेध		६५
	इक्षु के अन्तरिक्षु आदि विभिन्न विभागो की व्याख्या	५४११–५४१२	६५–६६
१२–१३	अरण्य आदि मे जाते-आते लोगो से अशनादि लेने का निषेध		६६
	वन-यात्रा के हेतु जाते-आते यात्रियो से अशनादि लेने से दोष तथा अशिवादि अपवाद	५४१३–५४१६	६६–६७
१४	वसुरातिक (सयमी) को अवसुरातिक (असयमी) कहने का निषेध		६७–७२

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मूलसूत्रगत वसुराति या वुसिराति शब्द की विभिन्न नियुक्तियाँ, वसुराति के प्रति असद्गुणोद्भावन के कारण, संविग्नो की असंविग्नो द्वारा की जाने वाली अवहेलना और उसका प्रतिवाद, तथा प्रस्तुत निषेध का अपवाद	४४२०–४४४१	६७–७२
१५	अवसुरातिक को वसुरातिक कहने का निषेध	४४४२–४४४६	७२–७३
१६	वसुरातिक गण से अवसुरातिक गण मे संक्रमण का निषेध		७३–१००
	काल की दृष्टि मे उपसम्पदा के तीन प्रकार	४४५१–४४५३	७३
	गच्छवास के गुण और उनकी व्याख्या	४४५४–४४५७	७४
	ज्ञान दर्शनादि की अभिवृद्धि के लिए गणान्तरोपसम्पदा की स्वीकृति	४४५८	७४
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा	४४५९–४५२२	७५–८७
	सूत्र, अर्थ आदि के ज्ञानार्थ की जाने वाली उपसम्पदा और उसके भीत आदि आठ अतिचार, उनका स्वरूप एव तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	४४५९–४४७२	७५–७७
	निष्कारण प्रतिषेधक आदि के निकट उपसम्पदा स्वीकार करने की विधि	४४७३–४४७४	७७
	अप्रतिषेधक आदि मे सम्बन्धित अपवाद	४४७५–४४८०	७७–७९
	व्यक्त तथा अव्यक्त शिष्यो का स्वरूप, उन्हे उपसम्पदा लेने के लिए साथ मे अन्य साधु को भेजने के सम्बन्ध मे प्रतीच्छनीय आचार्य एव मूलाचार्य-सम्बन्धी आभाव्य एव अनाभाव्य का विभाग	४४८१–४४८९	७९–८०
	आचार्य–उपाध्याय आदि की आज्ञा के विना उपसम्पदा स्वीकार करने वाले शिष्य एव प्रतीच्छक आचार्य को प्रायश्चित्त और आज्ञा न देने के कारण	४४९०–४४९१	८०–८१
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा की विधि	४४९२–४५२२	८१–८७
	दर्शनार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	४५२३–४५३८	८७–८९
	चारित्रार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	४५३९–४५५०	८९–९२
	निर्ग्रन्थी-विषयक ज्ञानादि उपसम्पदा	४५५१–४५५२	९२
	संभोगार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	४५५३–४५७०	९२–९६
	आचार्य-उपाध्यायार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	४५७१–४५९३	९६–१००
१७–२५	कलह के कारण संघ से निष्क्रान्त भिक्षुओ के साथ अशनादि, वस्त्रादि, वसति एव स्वाध्याय के दानादान का निषेध		१००–१०५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अपक्रमण के प्रकार, बहुरतादि सात निह्नवो का परिचय, निह्नवो के साथ अशनादि दानादान सम्बन्धी प्रायश्चित्त और अपवाद	५५६४-५६१३	१०१-१०४
२६	आहारादि की दृष्टि से सुलभ जनपदो के रहते अनेक दिन गमनीय अध्वा के विहार का निषेध		१०४-१०५
	मूलसूत्रगत 'विह' शब्द का अर्थ और अध्वा के प्रकार	५६१४-५६३५	१०५
	दिन अथवा रात्रि मे गमन और रात्रि विषयक मान्यता के सम्बन्ध में दो आदेश	५६३६	१०६
	रात्रि मे मार्गरूप अध्वगमन से होने वाले दोषो का वर्णन और तत्सम्बन्धी अपवाद	५६३७-५६४४	१०६-१०७
	पन्थ के छिन्नादि दो प्रकार और तद्गमन की विधि	५६४५-५६४६	१०७
	रात्रि मे पथरूप अध्वगमन से लगने वाले आत्मविराधना आदि दोषो का स्वरूप तथा अध्वोपयोगी उपकरण न रखने से होने वाले दोष	५६४७-५६५२	१०८-१०९
	अध्वगमन-सम्बन्धी अपवाद के कारण, अध्वोपयोगी उपकरणो का संग्रह तथा योग्य सार्थवाह की शोध	५६५३-५६५७	१०९-११०
	भण्डी, वहिलक आदि पाच प्रकार के सार्थ और उनके साथ जाने की विधि	५६५८-५६६०	११०
	सार्थ और सार्थवाह आदि कैसे हैं ? सार्थ की खाद्य सामग्री और पडाव डालने आदि की क्या व्यवस्था है ? इत्यादि बातो के सम्बन्ध में उचित जानकारी प्राप्त करने की विधि	५६६१-५६७०	११०-११२
	आठ प्रकार के सार्थवाह और आठ ही प्रकार के अति आनिक=सार्थ-व्यवस्थापक	५६७१	११२
	अध्वगमन-विषयक ५१२० भङ्ग	५६७२-५६७६	११२-११३
	सार्थवाह से सहयात्रा की आज्ञा प्राप्त करने की विधि, और भिक्षा आदि से सम्बन्धित यतना	५६७७-५६८२	११३-११५
	अध्वगमनोपयोगी अध्व-कल्प का स्वरूप	५६८३-५६८८	११५-११६
	अध्वकल्प और आधाकर्मिक की सदोषता निर्दोषता के सम्बन्ध मे शका-समाधानादि	५६८९-५६९४	११६-११७
	अध्वगमन विषयक श्वापद, स्तेन, अशिव, दुर्भिक्ष आदि व्याघात और तत्सम्बन्धी यतनाओ की सविस्तर विवेचना	५६९५-५७२६	११७-१२४
२७	सुलभ जनपदो के रहते विरूप, दस्यु और अनार्य आदि प्रदेशो मे विहार करने का निषेध		१२४-१३१
	विरूप, प्रत्यत, अनार्य आदि की व्याख्या	५७२७-५७२८	१२४
	आय आयसक्रम आदि सक्रमण-सम्बन्धी चतुर्भङ्गी	५७२९-५७३१	१२५

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	लिङ्ग सम्बन्धी आर्य-अनार्य व्यवहार और तद्विषयक चतुभङ्गी	५७३२	१२५
	आय-क्षेत्र की सीमा	५७३३	१२५
	आय क्षेत्र मे विहार करने के हेतु	५७३४-५७३८	१२५-१२६
	अनायदेश-गमनविषयक चतुगुरु प्रायश्चित्त के सम्बन्ध मे शङ्का-समाधान	५७३९	१२६
	आय क्षेत्र से बाहर विहार करने से लगने वाले दोष और इस सम्बन्ध मे स्कन्दकाचाय का दृष्टान्त	५७४०-५७४३	१२७-१२८
	ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि की सुरक्षा एव अभिवृद्धि के लिए आय-क्षेत्र की सीमा (गा० ५७३३) से बाहर विहार करने की अनुज्ञा और इस सम्बन्ध मे सम्प्रति राजा के द्वारा प्रत्यत देशो में किये गये धम प्रचार का उल्लेख	५७४४-५७५८	१२८-१३१
२८-३३	जुगुप्सित कुलो मे अशनादि, वस्त्रादि, वसति तथा स्वाध्याय का निषेध		१३१-१३३
	जुगुप्सा के प्रकार, जुगुप्सित कुलो मे अशन-वस्त्रादिग्रहण एव स्वाध्याय से होने वाले दोष अपवाद और तत्सम्बन्धी यतना	५७५९-५७६४	१३२-१३३
३४-३६	पृथ्वी, सस्तारक और आकाश (ऊँचाई) पर अशनादि रखने का निषेध		१३३-१३४
	पृथ्वी, सस्तारक आदि पर अशनादि निक्षेप से होने वाले दोष, अपवाद और यतना	५७६५-५७७०	१३३-१३४
३७-३८	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थो के साथ एक पात्र तथा एक पक्ति मे भोजन करने का निषेध		१३४-१३६
	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थो के भेदानुभेद, उनके साथ भोजन करने से दोष, प्रायश्चित्त और अपवाद	५७७१-५७८०	१३४-१३६
३९	आचार्य तथा उपाध्याय के शय्या-सस्तारक को पैर से सघट्टित कर देने पर बिना क्षमा माँगे चले जाने का निषेध	५७८१-५७८४	१३७
४०	प्रमाणातिरिक्त और गणनातिरिक्त उपधि रखने का निषेध		१३८-१६०
	उपधि के भेद-प्रभेद	५७८५	१३८
	उपधि के प्रमाणादि की सूचक द्वार-गाथा	५७८६	१३८
	१ प्रमाण-द्वार	५७८७-५८१२	१३८-१४२
	जिन कल्पिक और स्थविर कल्पिक की पात्र सम्बन्धित उपधि की सख्या	५७८७	१३८

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जिन कल्पिक की शरीर-सम्बधित उपधि की सख्या	५७८८	१३८
	जिन-कल्पिक की जघन्य, मध्यम एव उत्कृष्ट उपधि की सख्या और उसका प्रमाण (कल्प, पात्रक-बन्ध और रजस्त्राण का नाप)	५७८९–५७९३	१३८–१३९
	गच्छवासियो के कल्प का प्रमाण और उसका कारण	५७९४–५७९५	१३९
	ग्रीष्म, शिशिर तथा वर्षा ऋतु आश्रित पटलको की सख्या और उसका प्रमाण	५७९६–५७९९	१४०
	रजोहरण का स्वरूप और उसका प्रमाण	५८००–५८०२	१४०
	मस्तारक, उत्तरपट्ट, चोलपट्ट, मुखवस्त्रिका, गोच्छग, पात्र प्रत्युपेक्षणिका और पात्रस्थापन का प्रमाण	५८०३–५८०६	१४०–१४१
	हीनाधिक वस्त्र को लेकर एक-दूसरे की निन्दा न करने का आदेश	५८०७	१४१
	कल्प के गुण और उसका उत्सग एव अपवाद की दृष्टि से प्रमाण	५८०८–५८१२	१४१–१४२
	२ हीनातिरिक्त द्वार	५८१३	१४२
	कम या अधिक उपधि रखने से होने वाले दोष		
	३ परिकर्म-द्वार	५८१४–५८१५	१४२
	वस्त्र परिकम-विषयक सकारण अकारण पद के साथ विधि-अविधि पद की चतुभङ्गी, तथा विधि परिकर्म और अविधि परिकम का स्वरूप		
	४ विभूषा-द्वार	५८१६–५८१९	१४३
	विभूषा-निमित्तक उपधि-प्रक्षालन करने वाले को प्रायश्चित्त और उसके कारण		
	५ मूर्च्छा-द्वार	५८२०–५८२१	१४४
	मूर्च्छा से उपधि रखने वाले को दोष और प्रायश्चित्त		
	पात्र विषयक विधि	५८२२–५८८५	१४४–१५७
	पात्र के प्रमाण आदि की सूचक द्वार गाथा	५८२२–५८२३	१४४
	१ प्रमाणातिरेक-हीनदोष द्वार	५८२४–५८३९	१४४–१४७
	शास्त्रोक्त दो पात्र से अधिक तथा विहित प्रमाण से बडे पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२४–५८२७	१४४–१४५
	शास्त्रोक्त सख्या से कम तथा विहित प्रमाण से छोटे पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२८–५८३६	१४५–१४७
	पात्र का प्रमाण (नाप)	५८३७–५८३९	१४७
	२ अपवाद-द्वार	५८४०–५८४५	१४७–१४८

मूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सख्या से अधिक या कम, और प्रमाण से बडे या छोटे पात्र रखने का अपवाद		
३	लक्षणाऽलक्षण द्वार	५८४६–५८५१	१४८–१४९
	पात्र के सुलक्षण तथा अपलक्षण, तद्विषयक गुण दोष एव प्रायश्चित		
४	त्रिविधोपधि द्वार	५८५२	१४९
	पात्र के तुम्बा आदि तथा यथाकृत आदि तीन प्रकार और उनके लेने का क्रम		
५	विपर्यस्त द्वार	५८५३	१४९
	पात्र-ग्रहण के क्रम को भग करने से होने वाले दोष एव प्रायश्चित्त		
६	क द्वार	५८५४	१५०
	पात्र की याचना करने वाले अधिकारी निर्ग्रन्थ का स्वरूप		
७	पौरुषी द्वार	५८५५	१५०
	पात्र की याचना का समय		
८	काल-द्वार	५८५६–५८५७	१५०
	कितने दिनो तक पात्र की याचना करनी चाहिए ?		
९	आकर द्वार	५८५८–५८६१	१५०–१५१
	पात्र-प्राप्ति के योग्य स्थान और तत्सम्बन्धी विधि		
१०	चाउल द्वार	५८६२–५८६७	१५१–१५३
	तन्दुल-धावन, तथा उष्णोदक आदि से भावित कल्पनीय पात्र, और उसके ग्रहण की विधि		
११	जघन्य यतना द्वार	५८६८–५८७४	१५३–१५४
	पात्र-ग्रहण विषयक जघन्य यतना		
१२–१३	चोदक तथा असति अशिव द्वार	५८७५–५८७७	१५४–१५५
	जघन्य यतना-विषयक शका-समाधान		
१४	प्रमाण-उपयोग-छेदन द्वार	५८७८–५८८३	१५५–१५६
	प्रमाण-युक्त पात्र के न मिलने पर उपलब्ध पात्र के छेदन का विधान		
१५	मुख प्रमाण द्वार	५८८४–५८८५	१५६–१५७
	पात्र-मुख के तीन भेद और उनका प्रमाण		
	मात्रक-विषयक विधि	५८८६–५९०१	१५७–१६०

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मात्रक के ग्रहण का विधान	५८८६-५८८७	१५७
	मात्रक न लेने से होने वाले दोषो की द्वार-गाथा	५८८८	१५७
	१ अग्रहणे वारत्रक द्वार मात्रक न रखने से लगने वाले दोष और वारत्रक का दृष्टान्त	५८८९-५८९०	१५८
	२ प्रमाण-द्वार मात्रक का प्रमाण और इस सम्बन्ध मे तीन आदेश	५८९१-५८९३	१५८-१५९
	३-४ हीनद्वार-अधिकद्वार शास्त्र-विहित प्रमाण से छोटा या बडा मात्रक रखने से दोष	५८९४-५८९६	१५९
	५-९ शोधि, अपवाद, परिभोग, ग्रहण तथा द्वितीय पद द्वार आचार्य बाल, वृद्ध, तपस्वी एव रोगी आदि के लिए मात्रक का ग्रहण, तथा निष्कारण स्वय मात्रक का उपयोग करने पर प्रायश्चित्त आदि।	५८९७-५८९९	१५९-१६०
	मात्रक के लेप की विधि	५९००	१६०
	पाणि-प्रतिग्रही आदि जिन कल्पिक, परिहार-विशुद्धि, आहालन्दिक, स्थविर कल्पिक तथा निर्ग्रन्थियो का उपधि-विभाग	५९०१	१६१
४१-४५	सचित्त, सस्निग्ध तथा जीव-प्रतिष्ठित आदि पृथ्वी पर उच्चार-प्रस्रवण करने का निषेध		१६१-१६२
४६-४८	जीव-प्रतिष्ठित शिला आदि पर उच्चार-प्रस्रवण करने का निषेध		१६२
४९-५१	थूणा आदि, कुण्ड आदि, प्राकार आदि पर उच्चार-प्रस्रवण करने का निषेध		१६२
	सूत्रोक्त-विशेषण-विशिष्ट पृथ्वी आदि पर उच्चार-प्रस्रवण करने के दोष और अपवाद	५९०२-५९०३	१६२-१६३
	छोटे-बडे भ्राताओ के उल्लेख के साथ चूर्णिकार का अपना परिचय		१६३

सप्तदश उद्देशक

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	षोडश और सप्तदश उद्देशक का सम्बन्ध	५९०४	१६५
१-२	कौतूहल से त्रस प्राणियो को बाधने तथा छोडने का निषेध	५९०५-५९०९	१६५-१६६
३-५	कौतूहल से तृणमाला, मुजमाला आदि मालाओ के निर्माण, एव धारण आदि का निषेध	५९१०-५९११	१६६
६-८	कौतूहल से लौह आदि धातुओ के निर्माण एव धारण आदि का निषेध	५९१२-५९१३	१६६-१६७

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
६–११	कौतूहल से हार, अर्धहार आदि के निर्माण एव धारण आदि का निषेध	५६१४–५६१५	१६७
१२–१४	कौतूहल से अजिन, कम्बल आदि के निर्माण एव धारण आदि का निषेध	५६१६–५६१७	१६८
१५–६७	निर्ग्रन्थी को निर्ग्रन्थ के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्वर्तन एव प्रक्षालन आदि करने का निषेध	५६१८–५६३०	१६६–१७६
६८–१२०	निर्ग्रन्थ को निर्ग्रन्थी के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्वर्तन तथा प्रक्षालन आदि कराने का निषेध	५६३१	१७६–१८७
१२१	सदृश निर्ग्रन्थ को उपाश्रय मे विद्यमान स्थान न देने वाले निर्ग्रन्थ को प्रायश्चित्त		१८७–१९०
	सदृशता की व्याख्या	५६३२	१८७
	दशविध स्थित कल्प	५६३३	१८७
	स्थापना-कल्प के दो प्रकार और उत्तरगुण-कल्प	५६३४–५६३५	१८८
	सदृश का आदेशान्तर, स्थान न देने पर प्रायश्चित्त, तथा निर्ग्रन्थ के आगमन के कारण	५६३६–५६३८	१८८
	वसति से बाहर रहने मे दोष तथा वसति-दान के अपवाद, यतना आदि	५६३६–५६४७	१८६–१९०
१२२	सदृश निर्ग्रन्थी को उपाश्रय मे विद्यमान स्थान न देने वाली निर्ग्रन्थी को प्रायश्चित्त	५६४८	१९१
१२३	माला-हृत अशनादि लेने का निषेध		१९१
	मालाहृत के ऊर्ध्व, अध आदि भेद-प्रभेद, दोष, प्रायश्चित्त तथा अपवाद	५६४६–५६५३	१९१
१२४	कुशूल आदि मे रखे हुए, फलत कठिनता से ऊँचे नीचे होकर दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५४	१९१–१९२
१२५	मृत्तिका से लिप्त, फलत भेदन करके दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५५–५६५७	१९२
१२६-१२९	पृथ्वी, जल, अग्नि और वनस्पति पर रखे हुए अशनादि का निषेध		१९२–१९३
	पृथ्वी आदि और निक्षिप्त के प्रकार, दोष, शका-समाधान, अपवाद और तद्विषयक यतना	५६५८–५६६४	१९३–१९४

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१३०-१३१	सूर्प आदि से शीतल करके दिये जाने वाले अत्यन्त ऊष्ण तथा उष्णोष्ण (गरमागरम) अशनादि का निषेध	५६६५-५६६८	१६४
१३२	पूर्ण रूप से शस्त्र-परिणत होकर अचित्त न हुए, इस प्रकार के उत्स्वेदिम आदि जल का निषेध		१६५-१६६
	उत्स्वेदिम आदि की व्याख्या, जल की अचित्तता के परिज्ञान के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान, अपवाद आदि	५६६६-५६७६	१६५-१६६
१३३	अपने आचार्य-योग्य लक्षणो के कथन का निषेध		१६७-१६८
	आचार्य के लक्षण, लक्षण-कथन से होने वाले दोष आदि	५६७७-५६८६	१६७-१६८
१३४	गायन-वादन-नृत्य आदि करने का निषेध	५६८७-५६६३	१६६-२००
१३५-१५०	भेरी आदि, वीणा आदि, ताल आदि, वप्र आदि के शब्द सुनने की अभिलाषा का निषेध	५६·४-५६६६	२००-२०३
१५१	लौकिक तथा पारलौकिक आदि विविध रूपो मे आसक्ति रखन का निषेध		२०३

अष्टादश उद्देशक

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सप्तदश और अष्टादश उद्देशक का सम्बन्ध	५६६७	२०५
१	विना प्रयोजन नाव पर चढने का निषेध	५६६८-६०००	२०५
२-५	नाव के खरीदने आदि का निषेध	६००१-६००६	२०६-२०७
६-७	स्थल से जल मे और जल से स्थल मे नाव के खीचने का निषेध		२०७
८-६	नाव मे से जल को उलीचने और कीचड मे से फँसी नाव को बाहर निकालने का निषेध	६०१०	२०८
१०	नाव मे पानी भरता देख छिद्र को हस्तादि से बन्द करने का निषेध		२०८
११	दूरस्थ नाव को अभीष्ट स्थान पर मँगाने का निषेध		२०८
१२-१३	ऊर्ध्वगामिनी आदि तथा योजनगामिनी आदि नाव मे बैठने का निषेध	६०११	२०८
१४-१६	नाव को खीचने, खेने, निकालने और जलरिक्त करने आदि का निषेध		२०८-२११
	उत्तिङ्ग आदि की व्याख्या तथा अपवाद, आचार्य आदि एव निर्ग्रन्थी को पूर्वापर रूप से नौका द्वारा पार उतारने का क्रम	६०१२-६०२३	२०८-२११

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
२०–२३	नौका-स्थित लोगो से अशनादि ग्रहण करने का निषेध	६०२४–६०२६	२१२–२१३
२४–७४	वस्त्र खरीदने आदि का निषेध (चतुर्दश उद्देशक के पात्र प्रकरण के समान)	६०२७	२१३–२१८

एकोनविंशतितम उद्देशक

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अष्टादश और एकोनविंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६०२८–६०२९	२१९
१–७	विकट के खरीदने आदि का निषेध और ग्लानापवाद	६०३०–६०५३	२१९–२२४
८	चार सन्ध्याओ मे स्वाध्याय का निषेध	६०५४–६०५८	२२४–२२५
९–१०	संध्या आदि मे कालिक श्रुत एव दृष्टिवाद के क्रम से ३ तथा ७ से अधिक प्रश्न पूछने का निषेध	६०५९–६०६३	२२५–२२६
११–१२	इन्द्र महोत्सवादि चार महामहोत्सवो और ग्रीष्म-कालीन आदि महाप्रतिपदाओ मे स्वाध्याय का निषेध	६०६४–६०६८	२२६–२२७
१३	पौरुषी स्वाध्याय के अतिक्रमण का निषेध		२२७
१४	स्वाध्याय-काल मे स्वाध्याय न करने पर प्रायश्चित्त	६०७०–६०७३	२२७–२२८
१५	अस्वाध्याय मे स्वाध्याय करने का निषेध		२२८–२४९
	अस्वाध्याय के भेद-प्रभेद	६०७४	२२८
	अस्वाध्याय मे स्वाध्याय करने पर दण्ड और इस सम्बन्ध में राजा का दृष्टान्त	६०७५–६०७८	२२९
	सयमघाती अस्वाध्याय	६०७९–६०८४	२२९–२३१
	औत्पातिक अस्वाध्याय	६०८५–६०८७	२३१–२३२
	दिव्यकृत अस्वाध्याय	६०८८–६०९३	२३२–२३३
	विग्रह सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९४–६०९८	२३३–२३४
	शरीर-सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९९–६११७	२३४–२३६
	काल-प्रतिलेखना सम्बन्धी शङ्का-समाधान तथा अपवाद आदि	६११८–६१६४	२३६–२४९
१६	स्वशरीर-समुत्थ अस्वाध्याय मे स्वय स्वाध्याय करने का निषेध	६१६५–६१७९	२४९–२५१
१७	पहले के समवसरणो का वाचन किये विना अग्रिम समवसरणो के वाचन का निषेध	६१८०–६१८३	२५२
१८	नव ब्रह्मचर्य (आचाराग) का वाचन किये विना उत्तर या उत्तम श्रुत (छेद सूत्र आदि) के वाचन का निषेध		२५२–२५५
	उत्तम श्रुत की व्याख्या, आर्यरक्षित के द्वारा युगानुसार अनुयोगो का पृथककरण, अनुयोगो का क्रम, दोष तथा अपवाद	६१८४–६१९९	२५३–२५५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१६	अपात्र (अयोग्य) को वाचना देने का निषेध		२५५
२०	पात्र को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२५५
२१	क्रम से अध्ययन न करने वाले को वाचना देने का निषेध		२५५
२२	क्रमश अध्ययन करने वाले को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२५५-२६२
	तिन्तणिक आदि अपात्र तथा अदृष्टभाव आदि अव्यक्त की विस्तृत व्याख्या, दोष एव अपवाद	६१६८-६२३६	२५५-२६२
२३-२६	अव्यक्त तथा अप्राप्त को वाचना देने का निषेध और व्यक्त तथा प्राप्त को वाचना न देने पर प्रायश्चित		२६२-२६३
	व्यक्त और अव्यक्त की परिभाषा, अप्राप्त-सम्बन्धी चतुभङ्गी, दोष तथा अपवाद	६२३७-६२४३	२६२-२६३
२७	दो समान गुणवाले अध्येताओ मे से एक को अध्ययन कराने और दूसरे को अध्ययन न कराने की भेद बुद्धि का निषेध	६२४४-६२४६	२६३-२६४
२८	आचाय तथा उपाध्याय द्वारा अदत्त वाणी के ग्रहण का निषेध		२६५-२६६
	वाणी के भेद, अदत्त वाणी-ग्रहण के कारण, तप स्तेन आदि, भावस्तेन के सम्बन्ध में गाविन्द वाचक का उदाहरण, दोष तथा अपवाद	६२५०-६२५७	२६५-२६६
२६-४०	अन्यतीर्थी, गृहस्थ, पार्श्वस्थ तथा कुशील आदि के साथ वाचना के दानाऽऽदान व्यवहार का निषेध		२६६-२६६
	अन्यतीर्थी आदि को वाचना देने-लेने पर प्रायश्चित्त, वाचना के देने लेने से दोष, स्वपाषण्डी और अन्यपाषण्डी की व्याख्या, अपवाद और तद्विषयक यतना	६२५८-६२७१	२६७-२६६

विंशतितम उद्देशक

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	एकोनविंशतितम और विंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६२७२	२७१
१	मासिक परिहार स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		२७१-३०४
	भिक्षु-पद के निक्षेप और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६२७३-६२८१	२७२-२७४
	मास पद के निक्षेप और नक्षत्रादि मासो का प्रमाण	६२८२-६२६१	२७४-२७६
	परिहार पद के निक्षेप	६२६२-६२६५	२७६-२८०
	स्थान-पद के निक्षेप	६२६६-६३०२	२८०-२८२

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रतिसेवना के भेद-प्रभेद और तद्विषयक शङ्का-समाधान	६३०३–६३०८	२८२–२८३
	शल्योद्धरण के लिए आलोचना और उसके तीन प्रकार	६३०६–६३११	२८३–२८४
	विहारालोचना	६३१२–६३२२	२८४–२८६
	उपसम्पदालोचना	६३२३–६३७६	२८६–३००
	अपराधालोचना	६३७७–६३६०	३००–३०२
	माया-मद मुक्त आलोचना के गुण	६३६१–६३६२	३०३
	आलोचनार्ह के दो प्रकार–आगम व्यवहारी और श्रुत-व्यवहारी	६३६३–६३६५	३०३–३०४
	मायावी आलोचक को अश्व और दण्डिक के दृष्टान्तो द्वारा उद्बोधनादि	६३६६–६३६८	३०४–३०५
२–६	द्विमासिक आदि परिहार-स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०५–३०७
	द्विमासादि परिकुञ्चित आलोचना के विषय में यथाक्रम कुंचित तापस, शल्य, मालाकार आदि के उदाहरण तथा छः मास से अधिक तप प्रायश्चित्त न देने का हेतु	६३६६	३०५–३०७
७–१२	अनेक बार मासिक आदि परिहार-स्थान सेवन करने वाले को परिकुंचित एवं अपरिकुंचित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०८–३१३
	एक बार और अनेक बार के दोषी को समान प्रायश्चित्त देने के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान तथा रासभ-मूल्य, कोष्ठागार एवं खल्वाट के उदाहरण	६४००–६४१७	३०८–३१३
१३	मासिक आदि परिहार स्थानो के प्रायश्चित्त का सयोगसूत्र		३१३–३१४
	सयोग-सूत्र के सम्बन्ध मे शङ्का-समाधान	६४१८–६४१६	३१३–३१४
१४	बहुश मासिक आदि परिहार-स्थानो के प्रायश्चित्त का सयोग-सूत्र		३१४-३६०
	सयोग-सूत्रो के अन्य प्रकार, उनकी रचना-विधि, और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६४२०–६४२६	३१४–३१८
	१ स्थापना-सचय द्वार	६४२७–६४६२	३१८–३३०
	स्थापना तथा आरोपणा की व्याख्या और उनके प्रकार आदि		
	२ राशि द्वार	६४६३–६४६५	३३०
	प्रायश्चित्त-राशि की उत्पत्ति के असयम स्थान		
	३ मान द्वार	६४६६	३३०–३३१
	विभिन्न तीर्थङ्करो की अपेक्षा से प्रायश्चित्त के मान (प्रमाण) की विविधता		
	४ प्रभु द्वार	६४६७–६४६८	३३१

सूत्रसख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रायश्चित्त-दान के योग्य अधिकारी		
	५ कियान् द्वार	६४६१–६४९६	३३१–३३८
	प्रायश्चित्तो की गणना तथा कृत्स्न और अकृत्स्न आरोपणा		
	अतिक्रमादि के सम्बन्ध मे विचार चर्चा	६४९७–६४९९	३३८–३३९
	नवम पूव से निशीथ का उद्धार	६५००	३३९
	अनेक दोषो की शुद्धि के लिए एक प्रायश्चित्त देने का हेतु, इस सम्बन्ध मे घृत-कुट आदि के उदाहरण तथा अन्य आवश्यक शङ्का-समाधान	६५०१–६५२६	३३९–३४६
	मूल व्रतातिचार तथा उत्तर गुणातिचार-सम्बन्धी चर्चा	६५२७–६५३५	३४६–३४८
	प्रायश्चित्त वहन करने वालो के भेद-प्रभेद	६५३६–६५७४	३४९–३६०
१५–१६	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आलोचना सूत्र		३६०–३६७
	आलोचक के गुण एव दोष तथा आलोचना-विधि	६५७५–६५८३	३६१–३६७
१७–२०	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आरोपणा-सूत्र		३६७–३८६
	परिहार तप और शुद्ध तप की विवेचना	६५८४–६६०४	३६९–३७५
	वैयावृत्य के तीन प्रकार तथा आचाय के गुण	६६०५–६६१५	३७५–३७७
	आरोपणा के भेद-प्रभेद तथा आलोचना की चतुभङ्गी	६६१६–६६४७	३७७–३८७
२१–५३	प्रायश्चित्त स्वरूप तप वहन करते हुए बीच मे लगे दोषो का प्रायश्चित्त		३८७–४११
	निशीथ के निर्माता विशाखागणी की प्रशस्ति		३९५
	प्रायश्चित्त वहन करने वालो के कृत करणादि भेद-प्रभेद	६६४८–६६६५	३९६–४०१
	निशीथ कल्प के श्रद्धान कल्प आदि चार प्रकार	६६६६–६६७६	४०१–४०४
	प्रायश्चित्त-प्रदान के हेतु	६६७७–६६७९	४०४
	दशविध प्रायश्चित्तो का ऐतिहासिक काल-क्रम	६६८०	४०४
	ओघनिष्पन्न तथा विस्तार निष्पन्न के भेद से प्रायश्चित्त के दो प्रकार	६६८१–६६८२	४०५
	उत्सग और अपवाद के आचरण की विधि, अथवा छेद-सूत्रो मे प्रतिसूत्र-प्रतिषेध, अपवाद आदि चतुर्विध अनुयोग-विधि	६६८३–६६९८	४०५–४०९
	अनुयोगधर की ओर से स्वगौरव का परिहार	६६९९	४०९
	निशीथ-सूत्र के अनेकविध अर्थाधिकार	६७००–६७०१	४०९–४१०
	निशीथ सूत्र के अधिकारी और अनधिकारी	६७०२–६७०३	४१०
	निशीथ-चूर्णिकार की स्वनामोल्लेखपूर्वक प्रशस्ति		४११
	निशीथ-चूर्णि के विंशतितम उद्देशक की सस्कृत मे सुबोधा व्याख्या		४१३–४४३

परिशिष्ट

१	प्रथम परिशिष्ट	४४७–५३५
	भाष्यगाथा-सूची	
२	द्वितीय परिशिष्ट	५३६–५४१
	उद्धृत गाथादि के प्रमाण	
३	तृतीय परिशिष्ट	५४२–५४४
	प्रमाणत्वेन निर्दिष्ट ग्रन्थ	
४	चतुर्थ परिशिष्ट	५४५–५५१
	भाष्य-चूर्ण्यन्तर्गत दृष्टान्त	
५	पञ्चम परिशिष्ट	
	विशेष नामो की विभागश अनुक्रमणिका	५५२–५७०
६	षष्ठ परिशिष्ट	
	सुभाषित-सुधासार	५७१–५७२

"अपक्षपातेन यदर्थनिर्णयम्,
तदेव धर्मः परमो मनीषिणाम् ।"

— विना किसी पक्ष-पात के यथार्थ
सत्य का निर्णय करना ही,
विद्वानो का परम धर्म है ।



निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्यप्रवर श्री जिनदासमहत्तर-विरचितया

विशेषचूर्ण्या समलंकृतम्

विंशतितमोद्देशकस्य सुबोधाख्यया संस्कृत-व्याख्यया सहितञ्च

चतुर्थो विभागः

उद्देशकाः १६-२०

ण वि किंचि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं।
एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्व ॥ ५२४८ ॥

दोसा जेण निरुंभति, जेण खिज्जति पुव्वकम्माइं।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥ ५२५० ॥

—भाष्यकार।

षोडश उद्देशकः

उक्त पचदशमोद्दे शक । इदानी षोडश प्रारभ्यते, तत्राय सम्बन्ध -

देहविभूसा बंभस्स अगुत्ती उज्जलोवहित्तं च ।
सागरिते य (वि) वसतो, बंभस्स विराहणाजोगो ॥५०९५॥

पंचदसमुद्देसगे देहविभूसाकरण उज्जलोवधिधारण च णिसिद्ध, मा बभवयस्स अगुत्ती, पसगतो मा बभव्वयस्स विराहणा भविस्सति । इहावि सोलसमुद्देसगे मा अगुत्ती बभविराहणा वा, अतो सागारिय-वसहिणिसेहो कज्जति । एस सम्बन्धो ॥५०९५॥

एतेण सम्बन्धेणागयस्स सोलसमुद्देसगस्स इम पढम सुत्त -

जे भिक्खू सागारियसेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसतं वा सातिज्जति ॥१॥

सह आगारीहिं सागारिया, जो त गेण्हति वसहिं तस्स आणादी दोसा, चउलहु च से पच्छित्त ॥

सन्नासुत्तं सागारियं ति जहि मेहुणुब्भवो होइ ।
जत्थित्थी पुरिसा वा, वसंति सुत्तं तु सट्ठाणे ॥५०९६॥

ज सुत्ते 'सागारिय' ति एसा सामयिकीसज्ञा । जत्थ वसहीए ठियाण मेहुणुब्भवो भवति सा सागारिगा, तत्थ चउगुरुगा ।

अधवा - जत्थ इत्थिपुरिसा वसति सा सागारिका, इत्थिसागारिगे चउगुरुगा सुत्तणिवातो । "सट्ठाणि" त्ति जा पुरिससागारिगा, णिग्गथीण पुरिससागारिगे चउगुरुगा । सेस तहेव ॥५०९६॥ एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्तिवित्थरो -

सागारिया उ सेज्जा, ओहे य विभागओ उ दुविहाओ ।
ठाण-पडिसेवणाए, दुविहा पुण ओहओ होंति ॥५०९७॥

सागारिया सेज्जा दुविहा - ओहेण विभागओ य । ओहेण पुण दुविधा - ठाणातो पडिसेवणातो अ । एतेसु पच्छित्त भण्णिहिति ॥५०९७॥

सागारियणिक्खेवो, चउव्विहो होइ आणुपुव्वीए ।
णामं ठवणा दविए, भावे य चउव्विहो भेदो ॥५०९८॥

सागारियणिक्खेवो णामठवणादिगो चउव्विधो कायव्वो। स पश्चार्धेन कृतश्चतुर्विध। दव्वे आगमओ, णो आगमओ य ॥५०९८॥

णो आगमओ जाणग-भवियव्वइरित्त दव्वसागारिय इम –

रूवं आभरणविही, वत्थालंकारभोयणे गंधे।
आओज्ज णट्ट णाडग, गीए सयणे य दव्वम्मि ॥५०९९॥

"रूव"त्ति अस्य व्याख्या –

जं कट्ठकम्ममादिसु, रूवं सट्ठाणे तं भवे दव्वं।
जं वा जीवविमुक्कं, विसरिमरूवं तु भावम्मि ॥५१००॥

रूव णाम ज कट्ठचित्तलेप्पकम्मं वा पुरिसरूव कय, अहवा – जीवविप्पमुक्क पुरिससरीर त "सट्ठाणे" ति णिग्गथाण पुरिसरूव दव्वसागारिय, जे इत्थीसरीरा त भावसागारिय। एतेसु चेव कट्ठकम्मादिसु ज इत्थीरूव त निग्गथीण दव्वसागारिय, जे पुण पुरिसरूवा त तासि भावसागारिय। आभरणा कडगादी ज पुरिसजोग्गा ते णिग्गथाण दव्वे, जे पुण इत्थिजोग्गा ते भावे। इत्थीण इत्थिजोग्गा दव्वे, पुरिसजोग्गा भावे ॥५१००॥

[1]वत्थादि अलकार चउव्विह। भोयण असणादिय चउव्विह। कोट्ठगपुडगादी गधा अणेगविहा। आउज्ज चउव्विह – तत वितत घण झुसिर। नट्ट चउव्विह – अचिय रिभिय आरभड भसाल ति।

अहवा इम [2]णट्ट –

णट्टं होति अगीयं, गीयजुयं णाडयं तु तं होइ।
आहरणादी पुरिसोवभोग दव्वं तु सट्ठाणे ॥५१०१॥

गीतेण विरहित णट्ट, गीतेण जुत्त णाडग। गीय चउव्विह–ततिसम तालसम [3]गहसम लयसम च। सयणिज्ज पल्लकादि बहुप्पगार। "[4]दव्वे" त्ति दव्वसागारियमेवमुद्दिट्ठ भोयण गधव्व-आओज्ज-सयणाणि। उभयपक्खे वि सरिसत्तणतो णियमा दव्वसागारिय चेव, सेसाणि दव्वभावेसु भाणियव्वाणि। सरिसे दव्वसागारिय, विसरिसे भावसागारिय ॥५१०१॥

एतेसु इम पच्छित्त –

एक्केक्कम्मि य ठाणे, भोयणवज्जाण चउलहू होंति।
चउगुरुग भोयणम्मी, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५१०२॥

रूवादिदव्वसागारियप्पगारेसु एक्केक्कम्मि ठाणे ठायमाणस्स भोयण वज्जेत्ता सेसेसु चउलहुगा, भोयण चउगुरु। केसि च आयरियाण – अलकारवत्थेसु वि चउगुरुगा, आणादिया य दोसा भवति।

चोदक आह – सव्वे ते साहू, कह ते दोसे करेज्ज ?,

१ गा० ५०९९। २ गा० ५०९९। ३ स्वरसाम्येन गान। ४ गा० ५०९९।

उच्यते –

को जाणति [1]केरिसओ, कस्स व माहप्पता समत्थत्ते ।
धिइदुब्बला उ केई, डेवेति पुणो अगारिजणं ॥५१०३॥

छउमत्थो को जाणइ णाणादेसियाण कस्स केरिसो भावो, इत्थिपरिस्सहे उदिण्णे कस्स वा माहप्पता, महतो अप्पा माहप्पता । अहवा – माहप्पता प्रभावो । तं च माहप्पं पभावं वा समत्थता चिंतिज्जति । सामत्थं धिती, सारीरा सत्ती । इंदियणिग्गह प्रति ब्रह्मव्रतपरिपालने वा कस्स किं माहात्म्यमिति । एयम्मि वि अपरिण्णाए सागारियवसधीए ठियाण तत्थ जे धितिदुब्बला ते रूवादीहिं अक्खित्ता विगयसंजमधुरा अगारिट्ठाण "डेवेति" – परिभुंजतीत्यर्थः ॥५१०३॥

ते य संजया पुव्वावत्था इमेरिसा होज्जा –

केइत्थ भुत्तभोई, अभुत्तभोई य केइ निक्खंता ।
रमणिज्जं लोइयं ति य, अम्हं पेयारिसं आसी ॥५१०४॥

भुत्ताऽभुत्ता दो वि भणति – रमणिज्जो लोइओ धम्मो । जे भुत्तभोगी ते भणति – अम्ह पि गिहाममे ठियाण एरिसं खाणपाणादिकं आसि ॥५१०४॥

किं च –

एरिसओ उवभोगो, अम्ह वि आसि (त्ति) ण्ह एण्हिं उज्जल्ला ।
दुक्कर करेमो भुत्ते, कोउगमितरस्स ते दट्ठुं ॥५१०५॥

"उवभोगो" त्ति ण्हाणवत्थाभरणगंधमल्लाणुलेवणधूवणवासतंबोलादियाण पुव्वं आसी । इण्हिं इदाणिं, उज्जल्ला प्राबल्येन, मलिणसरीरा लद्धसुहासादा अम्हे सुदुक्करं सहामो, एवं भुत्तभोगी चिंतयति । "इतर"त्ति अभुत्तभोगी, तं तं रूवादिं दट्ठुं कोउअं करेज्जा ॥५१०५॥

सति कोउएण दोण्ह वि, परिहेज्ज लएज्ज वा वि आभरणं ।
अण्णेसिं उवभोगं, करेज्ज वाएज्ज उड्डाहो ॥५१०६॥

"सति" त्ति पुव्वरयादियाण सरणं भुत्तभोगिणो, इयरस्स कोउअं । एते दोण्णि वि असुभभावुप्पण्णा वत्थे वा परिहेज्ज, आभरणं वा "लएज्ज" त्ति अप्पणो आभरेज्ज, अण्णेसिं वा वत्थादियाण उवभोगं करेज्ज, वाएज्ज वा आतोज्जं । असंजतो वा संजतं आयरियादि दट्ठुं उड्डाहं करेज्ज ॥५१०६॥

किं च –

तच्चित्ता तल्लेसा, भिक्खा-सज्झायमुक्कतत्तीया ।
विकहा-विसुत्तियमणा, गमणुस्सुग उस्सुगब्भूया ॥५१०७॥

तं इत्थीमादी रूवं दट्ठुं तदंगावयवसरूवं चिंतणं चित्तं, तदंगपरिभोगऽज्झवसाओ लेसा (भिक्खा) सज्झायादिसंजमजोगकरणमुक्कतत्ती णिव्वावारादित्यर्थः । वायिगजोगेण संजमाराहणी कहा, तव्विवक्खभूता विकहा । कुसलमणधारणोदीरणेण संजमसासविद्धि(?)करेत्ता सो त्रस्तमना ततो विगहाविसोत्तियमणा भवति । एवं

[1] को किरिसो, इति बृहत्कल्पे गा० २४५५ ।

इत्थिमादिरूवसमागमतो उदिण्णमोहाण स्थीपरिभोगुस्सुयभूताण गमणे औत्सुक्य भवति । अभिप्रेतार्थ त्वरित सम्प्रापण औत्सुक्यमित्यर्थ ॥५१०७॥

सुट्ठु कयं आभरणं, विणासियं ण वि य जाणसि तुमं पि ।
मुच्छुड्डाहो गंधे, विसोत्तिया गीयसद्देसु ॥५१०८॥

रूव आभरण वा दट्ठु एगो भणाति – "सुट्ठ" ति लट्ठ कय ।

बितिओ त भणाति – "एत विणासिय, अविसेसण्णू तुम, ण जाणसि किं चि" ।

एव उत्तरोत्तरेण अधिकरण भवति, प्रशसतो वा रागो इतरस्स दोसो । "मुच्छ" त्ति मुच्छ वा करेज्ज । मुच्छाओ वा सपरिग्गहो होज्जा ।

गधे त्ति चदणादिणा विलित्ते धूविते वा अप्पाणे उड्डाहो भवति । आतोज्ज-गीयसद्दादिएसु विसोत्तिया भवति ॥५१०८॥

किं च –

णिच्चं पि दव्वकरणं, अवहितहियस्स गीयसद्देसु ।
पडिलेहण सज्झाए, आवासग भुंज वेरत्ती ॥५१०९॥

णिच्चमिति तीए वसहीए सव्वकालगीतादिसद्देहिं अवधियमणस्स पडिलेहणादिकरण सव्वेसिं सजमजोगाण दव्वकरण भवति ॥५१०९॥

ते सीदिउमारद्धा, सजमजोगेहि वसहिदोसेणं ।
गलति जतुं तप्पंतं, एव चरित्तं मुणेयव्वं ॥५११०॥

तेसिं एव वसहिदोसेण सीअताण चरित्तहाणी ।

कह ?, उच्यते । इमो दिट्ठतो –

जहा जउ अग्गिणा तप्पत गलति एव जहुत्तसजमजोगस्स अकरणतातो चरित्त गलति, ॥५११०॥

वसहिदोसेण जो इत्थिमादीविसयोवभोगभावो असुभो उप्पण्णो –

[1]तण्णिक्खंता केई, पुणो वि सम्मेलणाइदोसेणं ।
वच्चंति संभरंता, भेत्तूण चरित्तपागारं ॥५१११॥

तस्मान्निक्खता त वा परित्यज्य नि क्रान्ता तण्णिक्खता केचिन्न सर्वे । सेस कठ ।

एगम्मि दोसु तीसु व, ओहावंतेसु तत्थ आयरिओ ।
मूलं अणवट्ठप्पो, पावति पारंचियं ठाणं ॥५११२॥

वसहिकएण दोसेण जइ एक्को उण्णिक्खमति तो आयरियस्स मूल, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारचिय । जस्स वा वसेण तत्थ ठिता तस्स वा एय पच्छित ॥५११२॥ दव्वसागारियं गत ।

---

१ उण्णि॰, इति बृहत्कल्पे गा॰ २४६३ ।

इदाणिं भावसागारियं –

[1]अट्ठारसविहमबंभं, भावउ ओरालियं च दिव्वं च ।
मणवयणकायगच्छण, भावम्मि य रूवसंजुत्तं ॥५११३॥

एयं दव्वसागारियं भणतेण भावसागारियंपि एत्थेव भणियं, तहावि वित्थरतो पुणो भण्णति – तं भावसागारियं अट्ठारसविहं अबंभं। तस्स मूलभेदा दो – ओरालियं च दिव्वं च। तत्थ ओरालियं नवविहं इमं – ओरालियं कामभोगा मणसा गच्छति, गच्छावेति, गच्छंतं अणुजाणति । एवं वायाए वि । काएण वि । एते तिण्णि तिया णव । एवं दिव्वेण वि णव । एते दो णवगा अट्ठारस । एयं अट्ठारसविहं अबंभं भावसागारियं ॥५११३॥

"[2]भावम्मि य रूवसंजुत्तं" त्ति अस्य व्याख्या –

अहव अबंभं जत्तो, भावो रूवा सहगयातो वा ।
भूसण-जीवजुतं वा, सहगय तव्वज्जियं रूवं ॥५११४॥

अबंभभावो जतो उप्पज्जइ तं च रूवं रूवसंजुत्तं वा, कारणे कज्जोवयाराओ, तं चेव भावतो अबंभं।

अहवा – उदिण्णभावो जं पडिसेवति तं च रूवं वा होज्ज, रूवसहगतं वा । तत्थ जं इत्थीसरीरं सचेयणं भूसणसंजुत्तं तं रूवसहगतं ।

अहवा – अणाभरणं पि जीवजुत्तं तं रूवसहगतं भण्णति, "तव्वज्जियं रूवं" ति सचेयणं इत्थीसरीरं भूसणवज्जियं रूवं भण्णति, अचेयणं वा रूवं भण्णति ॥५११४॥

तं पुण रूवं तिविहं, दिव्वं माणुस्सगं च तेरिच्छं ।
तत्थ उ दिव्वं तिविहं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥५११५॥ कंठा

दिव्वे इमे मूलभेदा –

पडिमेतरं तु दुविहं, सपरिग्गह एक्कमेक्कगं तिविहं ।
पायावच्च-कुडुंबिय-डंडियपरिग्गहं चेव ॥५११६॥

पडिमाजुयं तं दुविहं – सण्णिहितं असण्णिहितं वा । "इतरं" ति – देहजुयं तं पि सचेयणं अचेयणं वा । पुणो एक्केक्कं सपरिग्गहं अपरिग्गहं वा । जं सपरिग्गहं तं तिविधेहिं परिग्गहितं । पच्छद्धं कंठं ॥५११६॥

दिव्वं जहण्णादिगं तिविधं इमं –

वाणंतरिय जहण्णं, भवणवती जोइसं च मज्झिमगं ।
वेमाणियमुक्कोसं, पगयं पुण ताण पडिमासु ॥५११७॥

वाणमंतरं जहण्णं, भवणवासि जोइसियं च मज्झिमयं, वेमाणियं उक्कोसयं । इह पडिमाजुतेण अधिकारो जेण वसहिविसोही अधिकया ॥५११७॥

---

१ अट्ठारसविहऽबंभ इति बृहत्कल्पे गा० १४६५ । २ गा० ५११३ ।

अहवा – पडिमाजुएण जहण्णादिया इमे भेदा –

कट्ठे पोत्थे चित्ते, जहण्णयं मज्झिम च दंतम्मि ।
सेलम्मि य उक्कोसं, जं वा रुवातो णिप्फण्णं ॥५११८॥

जा दिव्वपडिमा कट्ठे पोत्थे लेप्पगे चित्तकम्मे वा जा कीरइ एय जहण्णय, अनिष्टस्पर्शत्वात् । जा पुण हत्थिदते कीरति सा मज्झिमा, जेण सुभतरफरिसा, अत्रापि हीरमभव । मणिसीलादिसु जा कीरइ सा उक्कोसा, सुकुमालफरिसत्तणतो अहीरत्तणतो य ।

अधवा – ज विरूव कय त जहण्ण । ज मज्झिमरूव त मज्झिम । ज पुण सुरूव कय त उक्कोसय ॥५११८॥ सव्वोहतो पडिमाजुए ठायमाणस्स चउलहु ।

ओहविभागे इम –

ठाण-पडिसेवणाए, तिविहे दुविहं तु होइ पच्छित्तं ।
लहुगा तिण्णि विसिट्ठा, अपरिग्गहे ठायमाणस्स ॥५११९॥

"तिविध" त्ति - दिव्वमाणुसतेरिच्छे दुविध पच्छित्त – ठाणपच्छित्त पडिसेवणापच्छित्त च । एव अत्थनिरूवण काउ । एय चेव पुव्वद्ध । अण्णहा भाणियव्व – "तिविधे" त्ति जहण्णमज्झिमुक्कोसे दुविह पच्छित्त – ठाणओ पडिसेवणओ य । तत्थ पडिसेवणओ ताव ठप्प । ठायनस्स इम – लहुगा तिण्णि विसिट्ठा', दिव्व पडिमाजुए असण्णिहिए जहन्ने चउलहुया उभयलहु, मज्झिमे लहुगा चेव कालगुरु, उक्कोसे लहुगा चेव तवगुरू ।

अहवा – "तिविधे दुविध तु' – तिविध जहण्णगादी, त सण्णिहियासण्णिहितेण दुविह ।

अहवा – पडिसेवणाए त चेव जहण्णादिक तिविध । दिट्ठादिट्ठेण दुविध ॥५११९॥

विभागे ओहपच्छित्त इम –

चत्तारि य उग्घाया, पढमे बितियम्मि ते अणुग्घाता ।
छम्मासा उग्घाता, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१२०॥

पढमे त्ति जहण्णे, तत्थ उग्घाय त्ति चउलहु । बितिय मज्झिम तत्थ अणुग्घाय त्ति चउगुरु । उक्कोसे छम्मासा, उग्घाय त्ति छल्लहु । एय ठायमाणस्स एयस्स इमा उच्चारणविधी – जहण्णे पायावच्चपरिग्गहिते ठाति ङ्क । मज्झिमए पातावच्चपरिग्गहिते ठाति ङ्का । उक्कोसे पातावच्चपरिग्गहिते ठाति फ्रुं ॥५१२०॥

इदाणि एते पच्छित्ता विसेसिज्जति –

पायावच्चपरिग्गहे, दोहि वि लहू होति एते पच्छित्ता ।
कालगुरू कोडुंबे, डंडियपारिग्गहे तवसा ॥५१२१॥

जे एते पायावच्चपरिग्गहिते जहण्णए मज्झिमए उक्कोसए य ठायमाणस्स चउलहु चउगुरु छल्लहुआ पच्छित्ता भणिता । एते कालेण वि तवेण वि लहुगा णायव्वा ।

कोटुंबियपरिग्गहिते एते चेव तिण्णि पच्छित्ता कालगुरु तवलहुआ ।

डडियपरिग्गहिते एते चेव तिण्गि पच्छित्ता काललहुग्रा तवगुरुग्रा । जम्हा जहण्णादितिभागेण कत सण्णिहितामण्णिहितेण ण विमेसियव्व, तम्हा विभागे ग्रोहो गग्रो ।।५१२१।।

इदाणि विभागपच्छित्त – तत्थ एयाणि चेव जहण्णमज्झिमुक्कोमाणि ग्रसण्णिहियसण्णिहियभिण्णा छट्ठाणा भवति ।

ताहे भण्णति –

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते ग्रणुग्घाया ।
ततियम्मि य एमेवा, चउत्थे छम्मास उग्घाता ।।५१२२।।

जहण्णेण ग्रसण्णिहिय पढम ठाण, सण्णिहिय बितिय ठाण ।

मज्झिमे ग्रसण्णिहिय तइयट्ठाण, सण्णिहिय चउत्थ ।

उक्कोमेण ग्रसण्णिहिय पचम, सण्णिहिय छट्ठ ।

जहण्णए ग्रसण्णिहिए पायावच्चपरिग्गहिते ठाति चउलहुय, सण्णिहिए चउगुरु । मज्झिमए ग्रमण्णिहिए "एमेव" त्ति – चउगुरुगा, सण्णिहिए छल्लहुगा।।५१२२।।

पंचमगम्मि वि एवं, छट्ठे छम्मास होतऽणुग्घाया ।
ग्रसन्निहिते सन्निहिते, एस विही ठायमाणस्स ।।५१२३।।

उक्कोसए ग्रसण्णिहिए पायावच्चपरिग्गहिते ठाति एमेव त्ति छल्लहुगा, सण्णिहिए छग्गुरू । एसो ठाणपच्छित्तस्स विधी भणितो ।।५१२३।।

पायावच्चपरिग्गह, दोहि वि लहु होंति एते पच्छित्ता ।
कालगुरुं कोडुंबे, डंडियपारिग्गहे तवसा ।।५१२४।।

पायावच्चे उभयलहु, कोटुंबिए कालगुरू, डडिए तवगुरू । सेस पूववत् ।।५१२४।।

ठाणपच्छित्त चेव वितियादेसतो भण्णति –

ग्रहवा भिक्खुस्सेयं, जहण्णगाइम्मि ठाणपच्छित्तं ।
गणिणो उवरिं छेदो, मूलायरिए हसति हेट्ठा ।।५१२५।।

ज एय जहण्णगादी ग्रसन्निहियसन्निहियभेदेण चउलहुगादि – छग्गुरुगावसाण एय भिक्खुस्स भणिय । "गणि" त्ति उवज्झाग्रो, तस्स चउगुरुगादी छेदे ठायति । ग्रायरियस्स छल्लहुगादी मूले ठायति । इह चारणाविकप्पे जहा उवरिपद वड्ढति तहा हेट्ठापद हस्सति । ।।५१२५।।

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।
बितियम्मि य कालगुरू, तवगुरुगा होंति तइयम्मि ।।५१२६।।

इह पढमिल्लुग पागतित ठाण, बितिय कोटुब, ततित दडिय । सेस पूर्ववत् ।।५१२६।। एय ठायनस्स पच्छित्त भणिय।

इदाणि पडिसेवतस्स पच्छित्त भण्णति –

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छम्मासिय छेद लहुग गुरुगो तु ।
मूलं जहण्णगम्मी, सेवंते पसज्जणं मोत्तुं ।।५१२७।।

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णे असण्णिहिए अदिट्ठे ङ्क । दिट्ठे ङ्का । सण्णिहिते अदिट्ठे ङ्का । दिट्ठे फ्रं ।

कोटुंबियपरिग्गहे जहण्णए असण्णिहिए – अदिट्ठे फ्रं । दिट्ठे फ्रां । सण्णिहिते अदिट्ठे फ्रां । दिट्ठे छम्मासिनो लहुनो छेदो ।

डडियपरिग्गहिते जहण्णए असण्णिहिते अदिट्ठे छम्मासिओ लहुच्छेदो । दिट्ठे छम्मासिओ गुरू छेदो । सण्णिहिए अदिट्ठे छम्मासिनो गुरू छेदो । दिट्ठे मूल ।

एय जहण्णपद अमुयतेण उदिण्णमोहत्तणनो पडिम पडिसेवतस्स पच्छित्त भणिय पसज्जण मोत्तु पसज्जणा णाम दिट्ठे सका भोइगादी, अथवा – गेण्हण कड्डणादी ।।५१२७।।

चउगुरुग छच्च लहु गुरु, छम्मासियछेदो लहुग गुरुगो य ।
मूल अणवट्ठप्पो, मज्झिमए पसज्जण मोत्तु ।।५१२८।।

मज्झिमे वि एव चेव चारणविधी, णवर – चउगुरुगाओ आढत्ते – अणवट्ठे ठाति ।।५१२८।।

तवछेदो लहु गुरुगो, छम्मासिओ मूल सेवमाणस्स ।
अणवट्ठप्पो पारंचिओ य उक्कोस विण्णवणे ।।५१२९।।

उक्कोसे वि एव चेव चारणविधी, णवर – चउगुरुगाओ (छल्लहुगातो) आढत्त पारचिते ठाति । विण्णवणत्ति पडिसेवणा पत्थणा वा, ।।५१२९।।

इमेण कमेण चारण करतेण आलावो कायव्वो –

पायावच्चपरिग्गह, जहण्ण सन्निहित तह असन्निहिते ।
अदिट्ठ दिट्ठ सेवति, आलावो एस सव्वत्थ ।।५१३०।।कठा

अण्णे चारणिय एव करेति – जहण्णे पायावच्चपरिग्गहे असण्णिहिते सण्णिहिते अदिट्ठ दिट्ठ त्ति, एय पायावच्चपय अचयतेण मज्झिमुक्कोसा वि चारियव्वा । पच्छित्त चउलहुगादि मूलावसाण ते चेव । एय कोडुबिय पि चउगुरुगादि अणवट्ठप्पावसाण । डडिय पि छल्लहुगादि पारचियावसाण । एत्थ पायावच्च जहण्ण कोटुब मज्झिम डडिय उक्कोस भाणियव्व, उभयहा वि चारिज्जत अविरुद्ध ।।५१३०।।

चोदगो भणति –

जम्हा पढमे मूलं, बितिए अणवट्ठ ततिय पारंची ।
तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ।।५१३१।।

"पढमे" त्ति – जहण्णे चउलहुगातो आढत्त मूले ठाति, मज्झिमे चउगुरुगातो आढत्त अणवट्ठे ठाति, उक्कोसे छल्लहुयातो आढत्त पारचिए ठाति । जइ एव पडिसेवमाणस्स पायच्छित्त भवति तम्हा ठायतस्सेव पारचिय भवतु । अधवा – ठाणपच्छित्त वि मूलाणवट्ठपारचिया भवतु । किं कारण ? अवश्यमेव प्रसजना प्रतीत्य मूलानवस्थाप्यपारचिकान् प्राप्स्यन्ति ।।५१३१।।

आयरिओ भणइ –

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।
चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्फण्णं ।।५१३२।।

"पडिसेवणाए" त्ति – पडिसेवतस्स अतियाराणुरूवा मूलाणवट्ठपारंचिया एव संभवति ।

जति पुण ठितो ण चेव पडिसेवति तो कह एते भवतु ? ॥५१३२॥

जति पुण सव्वो वि ठितो, सेवेज्जा होज्ज चरिमपच्छित्तं ।
तम्हा पसंगरहितं, जं सेवति तं ण सेसाइं ॥५१३३॥

जति णियमो होज्ज सव्वो ठायतो पडिसेवेज्जा तो जुज्जइ त तुम भणसि, जेण पुण ण सव्वो ठायतो पडिसेवति तेण कारणेण पसगरहिय ज ठाण सेवति तत्थेव पायच्छित्त भवति ॥५१३३॥

"[1]पसज्जणा तत्थ होति एक्केक्क" त्ति एक्केक्कातो पायच्छित्तठाणातो पसज्जणा भवति ।

कह ?, उच्यते – त साधु तत्थ ठिय दट्ठु अविरयओ को वि तस्सेव सक करेज्जा – "णूणं पडिसेवणाणिमित्तेण एस एत्थ ठिओ," ताहे दिट्ठे सका भोतिगादी भेदा भवति ।

अह पसग इच्छसि तो इमो पसगो "[2]चरिमपदे चरिमपद" ति अस्य व्याख्या –

अदिट्ठातो दिट्ठं, चरिमं तहि संकमादि जा चरिमं ।
अहव ण चरिमाऽऽरोवण, ततो वि पुण पावती चरिमं ॥५१३४॥

चारणियाए कज्जमाणीए अदिट्ठदिट्ठेहिं अदिट्ठपदातो ज दिट्ठपद त चरिमपद भण्णति, ततो चरिमपदातो सका भोतिगादिपदेहिं विभासाए जाव चरिम पारचिय च पावति ।

स्यात् मति – "अथ दृष्ट कथ सका ?, ननु नि शकितमेव । उच्यते – दूरेण गच्छतो दिट्ठ वि अविभाविते सका, अहवा – आसण्णतो वि ईसि अद्धऽच्छि णिरिक्खणेण सका भवति ।

अहवा – "चरिमपदे चरिमपद" भण्णति । असण्णिहितपदातो सण्णिहितपद चरिमपद ति । तत्थ सण्णिहिया पडिमा खित्तमादी करेज्जा, परितावणमादिपदेहिं चरिम पावेज्जा । अहव ण चरिमारोवण त्ति तृतीय प्रकार – जहण्णे चरिम मूल, मज्झिमे चरिम अणवट्ठो, उक्कोसे चरिम पारचिय । ततो एक्केक्कतातो चरिमपदातो सकादिपदेहिं चरिम पारचिय पावइ ॥५१३४॥

"[3]त पि य आणादिनिप्फण्ण" ति अस्य व्याख्या –

अहवा आणादिविराहणाओ एक्केक्कियाओ चरिमपदं ।
पावति तेण उ णियमा, पच्छित्तधरा अतिपसंगो ॥५१३५॥

अहवा – आणाणवत्थमिच्छत्तविराहणाण चउण्ह पयाण विराहणापद चरिम, सा विराहणा दुविहा – आय-सजमेसु । तत्थ एक्केक्कातो त चरिमपद णिप्फज्जइ ।

कह ?, उच्यते – तस्सामिणा दिट्ठे पताविए आयाए परितावणादि चरिम पावति, सजमे भग्गे पुण सठवणे – छक्काय चउसु गाहा । एव चरिम पावति । जम्हा पसगओ बहुविह भवति तम्हा पसगरहिय ज चेव आसेवित त चेव दायव्व । ठायमाणस्स ठाणपच्छित्त चेव, पडिसेवमाणस्स पडिसेवणापच्छित्त – न प्रसगमित्यर्थ ॥५१३५॥

---

१ गा० ५१३२ । २ गा० ५१३२ । ३ गा० ५१३२ ।

णत्थि खलु अपच्छित्ती, एव ण य दाणि कोइ मुंचेज्जा ।
कारि-अकारी समता, एवं मति राग-दोसा य ॥५१३६॥

एव नास्ति कश्चिदप्रायश्चित्ती, न वा कश्चिदसेवमानोऽपि कर्मबन्धान्मुच्यते, जो वि पडिसेवति तस्स वि त, जो वि ण पडिसेवति तस्स वि त । एव कारि अकारिसमभावता भवति । एव प्रायश्चित्तसभवे मति राग दोससभवो य भवति ॥५१३६॥

"त पि य आणादिणिफण्ण" पुनरप्यस्यैव पदस्य व्याख्या –

मुरियादी आणाए, अणवत्थ परपराए थिरकरण ।
मिच्छत्तं संकादी, पसज्जणा जाव चरिमपदं ॥५१३७॥

सव्वमेय पच्छित्त आणादिपदेहिं णिप्फज्जति, अवराहपदे पवत्ततो तित्थकराणाभग करेति तत्थ से चउगुरु, आणाभगे मुरियदिट्ठतो कज्जति ।

तम्मि चेव काले अणवत्थपदे वट्टति तत्थ से ङ्क । अणवत्थतो य परपरेण सजमवोच्छेदो भवति ।

तम्मि चेव काले देसेण मिच्छत्तमामेवति, परस्स वा मिच्छत्त जणेति, थिर वा करेति, तत्थ से ङ्क ।

अवराहपदे पुण वट्टतो विराहणापद वट्टति चेव तत्थ परस्स सक जणेति जहेय मास तहऽण्ण पि । अहव सकामोइगादी पसज्जणा चउलहुगादी जाव चरिम पद पावति ॥५१३७॥

एत्थ चोदक आह –

अवराहे लहुगतरो, किं णु हु आणाए गुरुतरो दंडो ।
आणाए च्चिय चरण, तब्भंगे कि न भग्गं तु ॥५१३८॥

चोदगो भणति – "अवराहपदे चउलहु पच्छित्त आणाभगे चउगुरु दिट्ठ । एव कह भवति, णणु अवराहपदे गुरुतरेण भवियव्व" ?

आयरियो आह – "आणाए च्चिय" पच्छद्ध । परमत्थओ आणाए च्चिय चरण ठिय, आणा दुवालसग गणिपिडग ति काउ, तव्वतिक्कमे तब्भगे किं ण भग्ग भवति ?, किं च लोइया वि आणाए भगे गुरुतर डड करेंति (पवत्तति) ।

एत्थ दिट्ठतो मुरियादि । मुरिय त्ति मोरपोसगवसो चदगुत्तो । आदिग्गहणातो अण्णे रायाणो । ते आणाभगे गुरुतर डड पवत्तेति । एव अम्ह वि आणा बलिया ॥५१३८॥

इम णिदरिसण –

भत्तमदाणमडंते, आणट्ठवणंब छेत्तु वसवती ।
गविसण पत्त दरिसिते, पुरिसवति सबालडहणं च ॥५१३९॥

चदगुत्तो मोरपोसगो त्ति जे अभिजाणति खत्तिया ते तस्स आण परिभवति ।

चाणक्कस्स चिता–आणाहीणो केरिसो राया ? कह आणातिक्खो होज्ज ? त्ति । तस्स य चाणक्कस्स कप्पडियत्ते अडतस्स एगम्मि गामे भत्त न लद्ध । तत्थ य गामे बहू अबा वसा य । तस्स य गामस्स पडिणिविट्ठेण आणट्ठवणणिमित्त लिहिय पेसिय इमेरिस "आम्रान् छित्वा वशाना

वृत्ति शीघ्र कार्ये" ति। तेहि य गामेयगेहि दुल्लिहिय ति काउ वसे छेत्तु अबाण वती कता। गवेसाविया चाणक्केण – "कि कत ?" ति। आगतो, उवालद्धा, एते वसा रोधगादिसु उवउज्जति, कीस मे छिण्णा ?, दसिय लेहचीरिय – "अण्ण सदिट्ठ अण्ण चेव करेहि" त्ति डडपत्ता। ततो तस्स गामस्स सबालवुड्ढे हि पुरिमेहि अधोसिरेहि वति काउ सो गामो सव्वो दड्ढो। अण्णे भणति – सबालवुड्ढा पुरिसा तीए वतीए छोढु दड्ढा ॥५१३९॥

एगमरणं तु लोए, आणति वा उत्तरे अणंताइ ।
अवराहरक्खणट्ठा, तेणाणा उत्तरे बलिया ॥५१४०॥

लोइयआणाइक्कमे (एगमरण)। लोगुत्तरे पुण आणाइक्कमे अणेगाति जम्ममरणाइ पावति। अण्ण च अतिचाररक्खणट्ठा चेव आणा बलिया, आणाअणतिक्कमे य अइयाराइक्कमो रक्खितो चेव भवति ॥५१४०॥

"अणवत्थ" त्ति अस्य व्याख्या –

अणवत्थाए पसंगो, मिच्छत्ते संकमादिया दोसा ।
दुविहा विराहणा पुण, तहिय पुण संजमे इणमो ॥५१४१॥ कठा

अणट्ठाडंडो विकहा, वक्खेव निसोत्तियाए सतिकरण ।
आलिंगणादिदोसा, असण्णिहिए ठायमाणस्स ॥५१४२॥

अकारणे डडो अणट्ठाडडो, सो – दव्वे भावे य। दव्वे अकारणे अवरद्ध रायकुल डडेति। भावडडो णाणादीण हाणी ॥५१४२॥

"[1]विकहाए" वक्खाण –

सुट्ठु कया अह पडिमा, विणासिया ण वि य जाणसि तुमं ति ।
इति विकहादधिकरणं, आलिंगणे भंग भद्दितरा ॥५१४३॥ कठा

आलिंगणे कज्जमाणे कयादि हत्थादियाण भगो हवेज्जा, तत्थ सपरिग्गहे भद्दपताइ दोसा हवेज्जा, वक्खेवो त पेक्खतस्स, उल्लाव च करेतस्स सुत्तत्थपलिमथो।

विसोत्तिया दव्वे भावे य। दव्वे सारणिपाणीय वहत तणमादिणा रुद्ध, अण्णतो कासारादिसु गच्छति, ततो सस्सहाणी भवति। भावे णाणादीण, आगमस्स विसोत्तियाए चरित्तस्स विणासो भवति।

सतिकरण ति भुत्तभोगीण, अभुत्तभोगीण कोउअ।

अध कोइ मोहादएण आलिगेज्ज, आलिगिता भज्जेज्जा, असण्णिहिए सपरिग्गहे भद्दपतदोसा, उड्डाहकम्मदोसा य, पतो तत्थ गेण्हणादी करेज्ज। एते असण्णिहिते ठायमाणस्स दोसा ॥५१४३॥

इमे य सण्णिहिए –

वीमसा पडिणीयट्ठया व भोगत्थिणी व सन्निहिया ।
काणच्छी उक्कपण, आलाव णिमंतण पलोभे ॥५१४४॥

सण्णिहिया तिहि कारणेहि साधु पलोहज्जा – वीमसट्ठया पडिणीयट्ठयाए भोगत्थिणी वा।

---

१ गा० ५१४२।

तत्थ वीमसाए—"किं एस सक्केति खोभेउ ण व" त्ति पडिमाए अणुपविसित्ता काणऽच्छी करेज्ज, थणुक्कंप (उक्कंपण) वा करेज्ज, आलाव वा करेज्ज – हे अमुग णाम ! कुसल ते, निमंतण वा करेज्ज—मए सम सामि ! भोगा भुंजसु एवमादिएहिं पलोभेजा। अहवा – पलोभेति थणकक्खोरुअद्धण्ण-दसिएहिं, कडक्खच्छिविकारणिरिक्खितेहिं ॥५१४४॥

काणच्छिमाइएहिं, खोभियद्धाति तम्मि भद्दा तु।
णासति इतरो मोहं, [1]सुवण्णकारेण दिट्ठंतो ॥५१४५॥

जाहे काणच्छिमादिएहिं आगारेहिं खोभितो ताहे गिण्हामि त्ति उद्धातितो, ताहे सा देवता भद्दा णासेति, इतरो णाम सो खोभियसाधू तीए अद्दसण गताए सम्मोह गतो पडितो त दट्ठुमिच्छति। कत्तो गयासि?, विलवति, पण्णविज्जतो वि पण्णवण ण गेण्हति। जहा अणगसेणसुवण्णगारो ॥५१४५॥ एसा भद्दविमसा।

इदाणिं "[2]पडिणीयट्ठताए" त्ति –

वीमंसा पडिणीता, विद्दरिसणऽखित्तमाइणो दोसा।
असंपत्ती संपत्ती, लग्गस्स य कड्ढणादीणि ॥५१४६॥

पडिणीया वि काणच्छिमातिएहिं वीमसेउ, एत्थ वीमसा णाम केवला, जाहे खुभिओ धातितो गिण्हामि त्ति ताहे सा पडिणीया "असपत्ति" त्ति जाव ण चेव गेण्हति इत्थादिणा ताव विदरिसण विकृतरूप दर्शयति।

अहवा—विद्दरिसण अलग्गमेव लोगो लग्ग पासति, खित्तमादि वा करेज्ज, मारेज्ज वा।

अधवा—सा पडिणीया पडिभोगसपत्ति काउ तत्थेव लाएज्ज श्वानादिवत्, पडिणीयदेवतापओगओ चेव लेप्पगसामिणा अण्णेण वा दिट्ठे गेण्हणकड्ढणादिया दोसा करेज्ज ॥५१४६॥

पंता उ असंपत्ती, तहेव मारेज्ज खित्तमादी वा।
संपत्तीइ वि लाएतु, कड्ढणमादीणि कारेज्ज ॥५१४७॥ गतार्था

इदाणिं भोगत्थिणी –

भोगत्थिणी विगते, कोउयम्मि खित्तादि दित्तचित्तं वा।
दट्ठूण व सेवंतं, देउलसामी करेज्ज इमं ॥५१४८॥

भोगत्थिणी देवता काणच्छिमादिएहिं उवलोभेत्ता खुभिएण सह भोगे भुंजित्ता विगयभोगकोतुका मा अण्णाए सह भोगे भुंजउ त्ति खित्तादिचित्त करेज्जा। अहवा—तीए सह सेवण करेंत दट्ठूण देउलसामी अहाभावेण इम करेज्ज ॥५१४८॥

तं चेव णिट्ठवेंती, बंधण णिच्छुभण कडगमद्दो य।
आयरिए गच्छंमि य, कुल गण संघे य पत्थारो ॥५१४९॥

त सेवल दट्ठु कुद्धो णिट्ठिवेति त्ति – मारेज्जा, पभू वा सय बधिज्जा, अप्पभू वि पभुणा बधाविज्जा। अधवा – वसधी गाम नगर देस रज्जाओ वा णिच्छुभेज्जा। 'कडगो" त्ति खधावारो। जहा सो

१ अणगसेणेण, इत्यपि पाठ। २ गा० ५१४४।

परविसयमोइण्णो एगस्स रण्णो अभिणिवेसेण अकारिणो वि गामणगरादि सव्वे विणासेइ, एव एगेण कयमकज्ज सव्वो बालवुड्ढादी जो जत्थ दीसइ सो तत्थ मारिज्जति । एस कडगमद्दो ।

अधवा – इमो कडगमद्दो, सह तेण कारिणा, मोत्तु वा त कारि (ण), जो आयरिओ गच्छो वा कुल गणो वा त वावादेति, तत्थ वा ठाणे जो सघो त वावादेति ॥५१४६॥

अधवा इम कुज्जा –

गेण्हणे गुरुगा छम्मास कड्ढणे छेदो होति ववहारे ।
पच्छाकडम्मि मूलं, उड्डहण-विरुंगणे णवमं ॥५१५०॥

पडिसेवते गहिते ङ्क । हत्थे वत्थे वा घेत्तु कड्ढिते णीते रायकुल फ्ँ । तेण परिकड्ढिते र्फा । ववहारे छेदो । पच्छाकडो त्ति-जितो मूल । उड्डाहे कते विरु गिते वा अणवट्ठो भवति ॥५१५०॥

उद्दावण णिव्विसए, एगमणेगे पदोस पारंची ।
अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारंचिओ होति ॥५१५१॥

उद्दविते णिव्विसए वा कते एगमणेगेसु वा पदोसे कते सो पडिसेवगो पारचिय पावति । उड्डहण विरु गण एतेसु दोसु अणवट्ठो भवति, णिव्विसतोद्दवणेसु दोसु पदेसु पारचिय ॥५१५१॥

अधवा – पदुट्ठो इम कुज्जा –

एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खितदिक्खगस्स अह दोसो ।
इति पंतो णिव्विसए, उद्दवण विरुंगणं व करे ॥५१५२॥

एयस्स त्ति पडिसेवगस्स ण दोसो, जो अपरिक्खित दिक्खेति तस्स एस दोसो, इति एव चितेउ पतो आयरिय णिव्विसय करेज्जा, उद्दवेज्ज वा, कण्ण णास-णयणुग्घायण वा करेज्ज, एय विरूवकरण विरूवण ॥५१५२॥

अहवा सण्णिहिते इमे दोसा –

तत्थेव य पडिबंधो, अदिट्ठ गमणादि वा अणेंतीए ।
एते अण्णे य तहिं, दोसाओ होंति सण्णिहिए ॥५१५३॥

तत्थेव पडिमाए पडिबध करेज्जा, अदिट्ठे त्ति – लेप्पगसामिणा अदिट्ठे त्ति इमे दोसा भवति ।

अधवा – सा वाणमतरी विगयकोउगा णागच्छति, तीए अणेंतीए सो पडिगमणादी करेज्ज ॥५१५३॥

ताओ पुण सण्णिहियपडिमाओ इमम्मि होज्जा –

कट्ठे पोत्ते चित्ते, दंतकम्मे य सेलकम्मे य ।
दिट्ठिप्पत्ते रूवे, खित्तचित्तस्स भंसणया ॥५१५४॥

पुव्वद्ध कठ । दिट्ठिणा पत्त रूव दृष्टमित्यथ । तेण रूवेण खित्त चित्त जस्स सो खित्तचित्तो, तस्स खित्तचित्तस्स पमत्तत्तणओ चारित्ताओ जीवियाओ वा भ सो भवति ॥५१५४॥

तासि पुण सण्णिहियाण देवयाण विण्णवण पडुच्च इमो पगारो भावो होज्जा –

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होंति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१५५॥

एतीए गाहाए चउभगो गाहतो ॥५१५५॥

तत्थ पढमभगे इम उदाहरण –

सोपारयम्मि णयरे, रण्णा किर मग्गिओ य णिगमकरो ।

अकरो त्ति मरणधम्मो, बालतवे धुत्तसंजोगो ॥५१५६॥

सोपारयम्मि णगरे णेगमो त्ति वाणियजणो वसति । ताण य पच कुडु बियसयाणि वसति ।

तत्थ य राया मतिणा वुग्गाहितो – "एते रूवगकर मग्गिज्जति ।"

रण्णा मग्गिता । ते य 'अकरे' त्ति पुत्ताणुपुत्तिओ करो भविस्सई, ण देमो ।

रण्णा भणिया – "जति ण देह, तो इमम्मि गिहे अग्गिपवेस करेह" । ततो तेहि मरण-धम्मो ववसितो । "ण य णाम करपवत्ति करेमो", सव्वे अग्गि पविट्ठा । ॥५१५६॥

पंचसयभोगि अगणी, अपरिग्गह सालभंजि सिंदूरे ।

तुह मज्झ धुत्तपुत्ताइ अवण्णे विज्जखीलणता ॥५१५७॥

तेसि पच महिलसताइ, ताणि वि अग्गि पविट्ठाणि । ताओ य बालतवेण पच वि सयाइ अपरिग्गहिया जाता । तेहि य णिगमेहि तम्मि चेव णगरे सिंदूर सभाघर कारिय । तत्थ पच सालिभजिता सता । ते तेहि देवतेहि य परिग्गहिता ।

ताओ य देवताओ ण कोइ देवो इच्छइ, ताहे धुत्तेहि सह सपलग्गाओ । ते धुत्ता तस्सबवे भडण काउमाढत्ता, एसा ण तुह मज्झ, इतरो वि भणाति – मज्झ ण तुह । जा य जेण धुत्तेण सह अच्छइ सा तस्स सव्व पुव्वभव साहति ।

ततो ते भणति – हरे ! अमुगणामधेया एस तुज्झ माता भगिणि वा इदाणि अमुगेण सह सपलग्गा, ता य एगम्मि पीति ण बधति जो जो पडिहाति तेण सह अच्छति । त च सोउ अयसो त्ति काउ विज्जावातिएण खीलावियातो ॥५१५७॥ गतो पढम भगो ।

इदाणि तिण्णि वि भगा एगगाहाए वक्खाणेति –

बितियम्मि रयणदेवय, तइए भंगम्मि सुइयविज्जातो ।

[1]गोरी-गंधारीया, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१५८॥

बितियभगे रयणदेवता उदाहरण । अप्पड्ढियत्तणतो कामाउरत्तणओ य सा सुहविण्णवणा, सव्वसुहसपायत्तणओ य सा दुहमोया ।

---

१ गधाराई, इत्यपि पाठ ।

तनियभगे सुइयविज्जाओ भवति – ताओ य णिच्च सुइसमायारत्तणओ सव्वसुइदव्वपडिसेवणतो महिड्डियत्तणओ य दुहविण्णप्पाओ, तेसि उग्गत्तणतो णिच्च दुग्णुचरत्तणओ य छेहे य सावायत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थभगे गोरि-गधारीओ मातगविज्जाओ साहणकाले लोगगरहियत्तणतो दुहविण्णवणाओ, जहिट्ठकामसपायत्तणओ य दुहम्मोया ॥५१५८॥ एव चउत्थभगो वक्खाओ ।

इदाणि तिविधपरिग्गहे गुरु लाघव भण्णति –

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागतिय कुडुंबि डडिए चेव ।
माहम असमिक्ख भए, इतरे पडिपक्ख पभुराया ॥५१५६॥

सीसो पुच्छति – "पायावच्च कुडबिय डडियपरिग्गहाण कत्थ गुरुतरो दोसो, कत्थ वा अप्पतरो ?" एत्थ य भयणा भण्णति – पागतिय गुरुतर, कोडुबिय-डडिय लहुतर ।

कह ?, उच्यते – सो मुक्खत्तणेण साहसकारी असमिक्खियकारी य, अणीसरत्तणओ य भय ण भवति । एव सो पागतिओ मारण पि ववसेज्जा ।

"इयरे' त्ति कोडुबिय डडिया, ते पागतितस्स पडिपक्खभूतो ।

कह ?, उच्यते – ते साहसकारी ण भवति, असमिक्खियकारी य ण भवति, पन्ना भवति, भय च तमि भवति । ५१५६॥

इम –

ईसरियत्ता रज्जा, व भंमए मंतुपहरणा रिसओ ।
तेण समिक्खियकारी, अण्णा वि य सिं बहू अत्थि ॥५१६०॥

मन्तु कोवो । एते रिसओ कोवपहरणा भवति, रुट्ठा य मा म रज्जाओ ईसरत्तणओ य भसेहिति, अतो ते समिक्खियकारी भवति । अण्ण च तेसि अण्णाओ वि बहू पडिमाओ अत्थि, अतो तेसु अणादरा ॥५१६०॥
(अत्रोच्यते) –

अहवा – "[1]पत्थरो" त्ति अस्य व्याख्या –

पत्थारदोसकारी, णिवावराधो य बहुजणे फुसइ ।
पागतिओ पुण तस्स व निवस्स व भया ण पडिकुज्जा ॥५१६१॥

डडियकोडुबिओ गुरुतरो, पागतिनो लहुतरो । राया पहू, सो एगस्स अत्थस्स रुट्ठो सधे पत्थार करेज्जा, रायावकारो य बहुजणे फुसति, तेण सो गुरुतरो । पागतियावराहो पुण बहुजणे ण फुसइ, अण्ण च – पागतिता "तस्स" त्ति साहुस्स "भया" णिवस्स भया पच्चवकार ण करेति, एतेण कारणेण पागतितो लहुतरो ॥५१६१॥

कि च –

अवि य हु कम्मद्दण्णा, ण य गुत्ती तेसि णेव दारिद्दा ।
तेण कयं पि ण णज्जति, इतरत्थ धुवो भवे दोसो ॥५१६२॥

---

१ गा० ५१४६ ।

ते पागतिता खेत्ते खलादिसु कम्मक्खणिया पडिमाण उदत ण वट्टति, तेण तत्थ कतो वि अवराहो ण णज्जति, ण य तेसिं सतियासु देवद्रोणीसु रक्खवालो भवति, ण वा दारपालो भवति । इतरत्थ त्ति राय-कुडुबिएसु ध्रुवो दोसो भवइ ।।५१६२।।

तुल्ले मेहुणभावे, णाणत्ताऽऽरोवणा य एमेव ।
जेण णिते पत्थारो, रागो वि य वत्थुमासज्ज ।।५१६३।।

पागतिय-कुडुबिय डडिएसु तुल्ले मेहुणभावे अवराहणाणत्तणओ चेव पायच्छित्ते णाणत्त । पायावच्च-परिग्गहातो काडुबियपरिग्गहे कालगुरुगा, डडियपरिग्गहे तवगुरुगा भणिता । अण्ण च कोडुबिय डडिएसु पत्थारदोसतो अधिकतर पच्छित्त ।

अहवा – वत्थुविसेसओ रागविसेसो, रागविसेसओ पच्छित्तविसेसो भवइ ।।५१६३।।

जतो भणति –

जतिभागगया मत्ता, रागादीणं तहा चयो कम्मे ।
रागादिविधुरता वि हु, पायं वत्थूण विहुरत्ता ।।५१६४।।

जारिसी रागभागमात्रा मदा मध्या तीव्रा वा तारिसी मात्रा कमबन्धो भवति ।

अहवा – जावतिया रागविसेसा तावतिग्ग कम्मानुभागविसेसा भवति – तुल्या इत्यर्थ ।

तेण भण्णति – जतिय भाग गता रागमात्रा । मात्राशब्द परिमाणवाचक । तन्मात्र कमबन्धो भवतीत्यर्थ । 'रागाइ विहुरया वि हु''–रागादिविधुरता नाम विषमत्व । हु शब्दो यस्मादर्थे । यत्समुत्थो राग प्रतिमादिके तस्य यस्मात् प्रतिमादिवस्तुविधुरता तस्माद्रागादिविधुरत्व भवति ।।५१६४।।

अयमन्यप्रकार विधुरत्वप्रदर्शने –

रण्णो य इत्थिया खलु, संपत्तीकारणम्मि पारंची ।
अमच्ची अणवट्ठप्पो, मूलं पुण पागयजणम्मि ।।५१६५।।

रण्णो जा इत्थी तीए सह मेहुणसपत्ती, एतेण मेहुणसपत्तिकारणेण पारचिय पायच्छित्त । अमच्चिए अणवट्ठो । पागतिए मूल । एय पच्छित्ते णाणत्त वत्थुणाणत्ताओ चेव भणिय ।।५१६५।। दिव्व गय ।

इदाणि माणुस्स भण्णइ –

माणुस्सगं पि तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।
पायावच्च कुडुंबिय, दंडिगपारिग्गहं चेव ।।५१६६।।

जहण्णादिग तिविध पुणो एक्केक्क पायावच्चातिपरिग्गहे भाणियव्व ।

उक्कोस माउ-भज्जा, मज्झं पुण भइणि-धूयमादीओ ।
खरियादी य जहण्णा, पगयं सचि (जि) तेतरे देहे ।।५१६७।।

माता अप्पणो अगम्मा, अण्णस्स य त ण देति, अतो तीए सह ज मेहुणे तिव्वरागज्झवसाण उप्पज्जति त उक्कोस ।

भज्ज अण्णस्स ण देति अतो तम्मि मुच्छितो उक्कोस ।

मिहुणकाले भगिणी गम्मा । सेसकाले भगिणी, धूया य सव्वकाल अप्पणो अगम्मा, अण्णस्स तातो देति त्ति अतो ताहिं सह ज मेहुण त मज्झिम ।

खरिगादिसु सव्वजणसामण्णासु ण तिव्वाभिणिवेसो, अतो त जहण्ण । इह माणुस्सदेहजुएण अधिकारो, ण पडिमासु । त देह दुविध – सचेयणमचेयण वा ॥५१६७॥

सामण्णतो देहजुए ठायतस्स इम –

[1]पढमिल्लुगम्मि ठाणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाता ।
छम्मासा [2]उग्घाया, बितिए ततिए भवे छेदो ॥५१६८॥

पढमिल्लुग त्ति जहण्ण, पायावच्चपरिग्गहितो जहण्णे ठाति ङ्क ।
बितिए त्ति मज्झिमे पायावच्चपरिग्गहे ठाति फ्रुं ।
ततिय त्ति उक्कोस पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसे ठाति छेदो ॥५१६८॥

ण भणिय कोविव छेदो, अतस्तज्ज्ञापनार्थमिदमुच्यते –

पढमस्स ततियठाणे, छम्मासुग्घाइओ भवे छेदो ।
चउमासो छम्मासो, बितिए ततिए अणुग्घातो ॥५१६९॥

एत्थ पढमट्ठाण पायावच्चपरिग्गह, तस्स ततिय ठाण उक्कोसय, तत्थ जो सो छेदो सो छम्मासितो उग्घातितो णायव्वो । 'चउमासो" पच्छद्ध अनयोस्तृतीयस्थानानुवर्तनादिदमुच्यते ।

बितिए त्ति कोटुबे उक्कोसे कोडुबपरिग्गहे चउगुरुओ छेदो ।

ततिए त्ति डडियपरिग्गहे गुरुओ छम्मासिओ छेदो । अर्थादापन्न कोटुबे जहण्णए मज्झिमए य ज चेव पायावच्चे, एव चेव डडिए वि जहण्णमज्झिमे ॥५१६९॥

पढमिल्लुगम्मि तवारिह, दोहि वि लहु होंति एए पच्छित्ता ।
बितियम्मि य कालगुरू, तवगुरुगा होंति ततियम्मि ॥५१७०॥

पढमिल्लुग णाम पायावच्चपरिग्गहे दोण्णि आदिल्ला तवारिहा, ते दो वि लहुया ।

बितिए त्ति कोडुबिए जे तवारिहा दोण्णि आइल्ला ते कालगुरु तवलहु ।

ततिए त्ति डडियपरिग्गहिए जे आदिल्ला दोण्णि तवारिहा ते काललहू तवगुरू ॥५१७०॥ एय ठाणपच्छित्त । मणुएसु गत ।

इदाणिं पडिसेवणापच्छित्त –

चतुगुरुगा छग्गुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति ।
छग्गुरुग छेद मूल, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥५१७१॥

---

१ प्रथम नाम जघन्य मानुष्यरूप, तत्र प्राजापत्यपरिगृहीतादौ भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्चत्वारोऽनुद्धाता मासा गुरव इत्यर्थ ।

द्वितीय – मध्यम, तत्रापि त्रिष्वपि भेदेषु षण्मासा अनुद्घाता ।

तृतीय – उत्कृष्ट, तत्र भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्छेदो भवेत, बृहत्कल्पे गा० २५१८ । २ ऽणुग्घाया, इति बृहत्कल्पे गा० २५१८ ।

छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होति पारंची ।
एवं दिट्ठमदिट्ठे, सेवंते पसज्जण मोत्तुं ॥५१७२॥

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णे अदिट्ठे ः ः । दिट्ठे ः ः ः ।

कोटविए परिग्गहे जहण्णे अदिट्ठे ः ः ः । दिट्ठे छेदो ।

डडियपरिग्गहे जहण्णे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

पायावच्चपरिग्गहे मज्झिमे अदिट्ठे छग्गुरुगा । दिट्ठे छेदो ।

कोडुवियपरिग्गहे मज्झिमे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

डडियपरिग्गहे मज्झिमे अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवट्ठो ।

पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

कुडुबियपरिग्गहे उक्कोसए अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवट्ठो ।

डडियपरिग्गहे उक्कोसए अदिट्ठे अणवट्ठो । दिट्ठे पारचिय ।

अहवा – पायावच्चे जहण्णमज्झिमुक्कोसे अदिट्ठदिट्ठेसु चउगुरुगादि मूले ठायति ।

कोडुबिए जहण्णादिगे छग्गुरुगादि अणवट्ठे ठायति ।

डडियपरिग्गहे जहण्णादिगे छेदादि पारचिए ठाति ॥५१७२॥

चोदगाह –

जम्हा पढमे मूलं, बितिए अणवट्ठ ततिय पारंची ।
तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥५१७३॥ पूर्ववत्

आचार्य आह –

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।
चरिमपदे चरिमपदं, तं चिय आणादिणिप्फण्णं ॥५१७४॥ पूर्ववत्

ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुव्विं ।
आलिंगणादि मोत्तुं, माणुस्से सेवमाणस्स ॥५१७५॥

ते चेव पुव्वभणिता अणवत्थादिगा दोसा भवति । "तत्थ" त्ति माणुस्से ।

चोदगेण चोदित – "कीस आणाए गुरुतरो डडो ?" आयरिएण मोरियआणाए दिट्ठत काउ तित्थकराणा गुरुतरी कता । एव जहा पुव्व भणिय तहा भाणियव्व ।

दिव्वे लेप्पगे आलिगणभगदोसा ते मोत्तु सेसा दोसा माणुस सेवमाणस्स सव्वे ते चेव भाणियव्वा ॥५१७५॥

इदमेव फुडतरमाह –

आलिंगंते हत्थादिभंजणे जे तु पच्छकम्मादी ।
ते इह णत्थि इमे पुण, णक्खादिविछेयणे सूया ॥५१७६॥

लेप्पग आलिंगतस्स जे हत्थादिभगे पच्छकम्मादिया दोसा भवति ते इह देहजुते ण भवति । इमे देहजुए दोसा भवति – इत्थी कामातुरत्तणओ णहेहिं ता छिंदेज्ज, दतेहिं वा छिंदेज्ज, तेहिं सो सूइज्जन्ति सपक्षेण वा परपक्षेण वा जहा एस सेवगो त्ति ।।५१७६।।

माणुसीसु वि इमे चउरो विकप्पा –

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होंति दुहमोया ।
दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ।।५१७७।।

भगचउक्क कठ ।

चउसु वि भगेसु जहक्कम्म इमे उदाहरणा –

खरिया महिड्ढिगणिया, अंतेपुरिया य रायमाया य ।
उभयं सुहविण्णवणे, सुमोय दोहि पि य दुहाओ ।।५१७८।।

खरिया सव्वजणसामण्ण त्ति सुहविण्णवणा, परिपेलवसुहलवासादत्तणतो सुहमोया पटमभगिल्ला ।

महिड्ढिगणिया वि गणियत्तणतो चेव सुहविण्णप्पा जोव्वणरूवविब्भमरूवादिभावजुत्तत्तणतो य भाववन्धयत्तकारिणि त्ति दुहमोया वितियभगिल्ली ।

ततियभगे अतेपुरिया । तत्थ दुप्पवेस भय च, अतो दुहविण्णवणा, अवायबहुलत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थे भगे रण्णो माता । सा सुरक्खिया भय च सव्वस्स य गुरुठाणे पूयणिज्जति दुहविण्णवणा, सव्वसुहसपायकारिणी अवाए य रक्खति जम्हा तेण दुहमोया । पच्छद्धे ण एते चेव जहक्कम्म चउरो भगा गहिया ।।५१७८।।

चोदगो पुच्छइ –

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागतिय कुडुंबि डंडिए चेव ।
साहस असमिक्खभए, इत / पडिपक्ख पभु राया ।।५१७९।।

कठा पूववत् । गत माणुस्सग ।

इदाणि तेरिच्छ –

तेरिच्छं पि य तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोस ।
पायावच्च कुडुंबिय, दंडियपारिग्गहं चेव ।।५१८०।।

जहण्णगादिग तिविध, एक्केक्क पायावच्चादितिपरिग्गहिय भाणियव्व ।

अतिग अमिला जहण्णा, खरि महिसी मज्झिमा वलवमादी ।
गोणि कणेरुक्कोसं, पगतं सजितेतरे देहे ।।५१८१।।

इह दव्वावेक्खतो जहण्णमज्झिमुक्कोसगा ।

अधवा – अइयअभिलासु णिरपायत्तणतो सुहपावणियामु ण तिव्वऽज्झवसाओ अतो जहण्ण ।

खरि-महिसिमादियासु सावयासु जो परिभोगऽज्झवसाओ स तिव्वतरो अतो मज्झिम ।

गोणि कणेरुसु, कणेरु त्ति हत्थिणी, लोगगरहियसावयासु जो अज्झवसाओ तिव्वतमो अतो उक्कोस ।

फासिओ वा विसेसो भाणियव्वो । तिरियाण वि पडिमासु णाधिकारो, देहेण अधिकारो । त देह दुविध – सचेयण अचेयण वा ॥५१८१॥

सामण्णतो देहजुए इम पच्छित्त ठायमाणस्स –

चत्तारि य उग्घाया, जहण्णिए मज्झिमे अणुग्घाया ।
छम्मासा उग्घाया, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१८२॥

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए ठाति ०० । मज्झिमए ०० । उक्कोसए फ्ं । एव चेव कोडुबिए डण्डिए य ॥५१८२॥

इमो विसेसो –

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।
बितियम्मि य कालगुरू, तवगुरुगा होति तइयम्मि ॥५१८३॥

पढमिल्लुग ठाण पागतित, बितिय ठाण कोडुबिय, ततिय डडिय, सेस कठ । ठाणपच्छित्त गत तिरिएसु ।

इदाणि तिरिएसु पडिसेवणापच्छित्त –

चउरो लहुगा गुरुगा, छेदो मूल जहण्णए होति ।
चउगुरुग छेद मूलं, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥५१८४॥

छेदो मूलं च तहा, अणवट्ठप्पो य होइ पारंची ।
एवं दिट्ठमदिट्ठे, मेवंते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१८५॥

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे पडिसेवतस्स ङ्क । दिट्ठे ङ्का ।

कोडुबियपरिग्गहे जहण्णए पडिसेवतस्स अदिट्ठे चउगुरु । दिट्ठे सेवतस्स छेदो ।

डडिए जहण्णए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

पायावच्चपरिग्गहे मज्झिमए अदिट्ठे ण्का । दिट्ठे छेदो ।

कोडुबिए मज्झिमए य अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

डडियपरिग्गहे मज्झिमपरिग्गहे अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवट्ठो ।

पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

कोडुबिए उक्कोसे अदिट्ठ मूल । दिट्ठे अणवट्ठो ।

दडिए उक्कोसे अदिट्ठे अणवट्ठो । दिट्ठे पारचिय । एय पच्छित्त पसगविरहिय भणिय ॥५१८५॥

चोदगाह –

जम्हा पढमे मूलं, बितिए अणवट्ठ तइय पारंची ।
तम्हा ठायतम्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥५१८६॥ कठा

आचार्याह –

पडिसेवणाए एवं, पमज्जणा तत्थ होइ एक्केक्के ।
चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्फण्णं ॥५१८७॥ कठा

ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुव्विं ।
आलवणादी मोत्तुं, तेरिच्छे सेवमाणस्स ॥५१८८॥

पूववत् पुव्वद्ध कंठ । मणुसित्थीसु जहा आलवणविब्भमा भवति तहा तिरिक्खीसु णत्थि । अतो ते आलवणादि तिरिक्खीसु मोत्तुं, सेसा आयसंजमविराहणादिदोसा सव्वे संभवति ॥५१८८॥

जह हास-खेड्ड-आकार-विब्भमा होति मणुयइत्थीसु ।
आलावा य बहुविहा, ते णत्थि तिरिक्खइत्थीसु ॥५१८९॥ कठा

विण्णवण इमो चउभंगो –

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य, सुहविण्णप्पा य होति दुहमोया ।
दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१६०॥

चउभंगरयणा कठा कायव्वा ॥५१६०॥

चउभंगे जहसंख इमे उदाहरणा –

अमिलादी उभयसुहा, अरहण्णगमादिमक्कडि दुमोया ।
गोणादि ततियभंगे, उभयदुहा सीहि-वग्घीओ ॥५१६१॥

पढमभंगे सुहग्गहणे निरपायत्वात् सुहविण्णवणा, लोगगरहिय अप्पत्वाच्च सुहमोया ।

बितियभंगे वाणरिमादी रिउकाले कामातुरत्तणतो सुहविण्णप्पा, ताओ चेव जदा अणुरत्ताओ तदा दुहमोया । एत्थ दिट्ठतो अरहण्णगो ।

ततियभंगे गोणादियाओ सपक्खे वि दुक्ख समागमं इच्छति, किमंग पुण मणुए । अतो दुहविण्णवणा, लोगगरहियत्तणतो सुहमोया ।

चरिमभंगे सीहिमादियाओ जीवियतकरीओ तेण दुहविण्णप्पाओ, ताओ चेव जया अणुरत्ताओ अणुबंध ण मुयति त्ति दुहमोया ॥५१६१॥

चोदगो पुच्छति – "को एरिसो असुभो भावो हुज्जा, जो तिरिक्खजोणीओ लोगगरहियाओ आसेवेज्जा" ?

आयरिओ आह –

जति ता मणप्फतीसु, मेहुणसन्नं तु पावती पुरिसो ।
जीवितदोच्चा जहिय, किं पुण सेमासु जातीसु ॥५१६२॥

सव्वे जे [1]णहारा ते सणप्फया भण्णति इह सीही घेत्तव्वा । जइ ताव सीहीसु जीवितंतकरीसु पुरिसा मेहुण पावनि कि पुण सेसासु अभिलादिजातिसु त्ति ।

एत्थ दिट्ठतो – एक्का सीही खुड्डुलिया चेव गहिता, सा बधणत्था चेव जोव्वण पत्ता । रितुकाले मेहुणत्थी, सजातिपुरिस अलभती अहावत्तीतो एक्केण पुरिसेण सागारियठाणे छिक्का, सा य चाडु काउमाढत्ता, सा य तेण अप्पसागारिए पडिसेविता । तत्थ तेसि दोण्ह वि ससाराणु-भावतो अणुरागो जातो । तेण सा बधणा मुक्का । सा त पुरिस घेत्तु पलाना अडवि पविट्ठा । त पुरिस गुहाए छोढु आणेउ पोग्गले देति । सो वि त पडिसेवति ॥५१६२॥ एय पुरिसाण भणिय ।

इदाणि सजतीण भण्णइ –

एमेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होति नायव्वो ।
पुरिसपडिमाओ तासि, साणम्मि य जं च अणुरागो ॥५१६३॥

सजतीण वि एमेव सव्व दट्ठव्व, णवर – नेप्पगे दिव्वपुरिसपडिमाओ । माणुसे मणुयपुरिसा । तेरिच्छे तिरियपुरिसा य दट्ठव्वा ।

तेरिच्छे साणदिट्ठतो य कायव्वो –

एक्का अगारी अवाउडा काइय वोसिरती विरहे साणेण दिट्ठा । सो य साणो पुच्छ [2]लोलतो चाडु करेतो उवासणाए अल्लीणो । सा अगारी चितेइ – "पेच्छामि एस कि करेति" त्ति । सा तस्स पुरतो सागारिय अभिमुह काउ हत्थेहि जाणुएहि य अधोमुही ठिता । तेण सा पडिसेविता । तीए अगारीए तत्थेव साणे अणुरागो जातो । एव मिग-छगल-वाणरादी वि अगारि अभिलसति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा सागारिए ण वसियव्व ॥५१६३॥

इम बितियपद –

अद्धाणणिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।
गीयत्था जयणाए, वसंति तो दव्वसागरिए ॥५१६४॥

अद्धाणणिग्गय त्ति अद्धाणप्रतिपन्ना तिक्खुत्तो तिन्नि वारा अण्ण सुद्ध वसहि मग्गिय । "असति त्ति अलभता ताहे दव्वसागारियवसधीए जयणाए वसति ।

का य जयणा ?, गीयसद्दाइसु उच्चेण सद्देण सज्झाय करेंति, झाणलद्धी वा झाण झायति ॥५१६४॥

इमो भावसागारियस्स अववातो –

अद्धाणणिग्गयादी, वासे सावयभए व तेणभए ।
आवरिया तिविहे वी, वसंति जतणाए गीयत्था ॥५१६५॥

---

१ णाहरा इत्यपि । २ चालतो, इत्यपि पाठ ।

अतो गामादीण सुद्धवसहिं अलभता बाहिं गामस्स निवसति । इमेहिं कारणेहिं – वास वासति, अहवा – बाहिं सीहमादिसावयभयं, सरीरोवहितेणगभय वा, ताहे अतो चेव भावसागारिए वसति । तत्थ निविधा वि पडिमाओ दिव्वा माणुसा तिरिया य वत्थमादिएहिं आवरेति, अतरे वा कडगचिलिमिलि दति । एव गीयत्था जयणाए वसता सुज्झति ।।५१९५।।

बहुधा दव्वभावसागारियसभवे इम भण्णति –

जहि अप्पतरा दोसा, आभरणादीण दूरतो य मिगा ।
चिलिमिणि णिम्मि जागरण, गीते सज्झाय-झाणादी ।।५१९६।।

अप्पतरदोसे गीयत्था ठायति, आभरणाउज्जभत्तादीण य अगीयत्था दूरतो ठविज्जति, त दिस अप्पणा ठायति, अतरे वा कडगचिलिमिलिं देति रातो य जागरण करति, गीयत्था इत्थिमादिगीतादिसद्दसु य सज्झ य करति, झाण वा झायति ।।५१९६।।

एसा खलु ओहेणं, वसही सागारिया समक्खाया ।
एत्तो उ विभागेणं, दोण्ह वि वग्गाण वोच्छामि ।।५१९७।।

ज पुरिसइत्थीण सामण्णतो अविभागेण अक्खाय एस ओहो भण्णइ । सेस कठ ।

इमो कप्पसुत्ते (प्रथमोद्देशके सूत्र २६, २७, २८, २९) विभागो भणितो –

णो कप्पइ णिग्गथाण इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथाण पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए।

णो कप्पति णिग्गथीण पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथीण इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ।।५१९८।।

एसेव सुत्तक्कमो इमो भणितो –

समणाणं इत्थीसुं, ण कप्पति कप्पती य पुरिसेसुं ।
समणीणं पुरिसेसु, ण कप्पति कप्पती थीसुं ।।५१९८।। कठा

इत्थीसागारिए उवस्सयम्मि सच्चेव इत्थिगा होती ।
देवी मणुय तिरिक्खी, सच्चेव पसज्जणा तत्थ ।।५१९९।।

जाए इत्थीए सागारिए उवस्सए ण कप्पइ वसिउ सा इत्थी भाणियव्वा, अतो भण्णति – सच्चेव इत्थिया होइ जा हेट्ठा णतरसुत्ते भणिता, ता य देवी मणुस्सी तिरिच्छी । एतासु ठियस्स त चेव पच्छित, ते चेव आयसजमविराहणादोसा, सच्चेव पसज्जणापसज्जणपच्छित्त, त चेव ज पुव्वसुत्ते भणिय ।।५१९९।।

चोदगाह–

जति सच्चेव य इत्थी, सोही य पसज्जणा य सच्चेव ।
सुत्त तु किमारद्धं, चोदग ! सुण कारणं एत्थं ।।५२००।।

जइ सव्व चेव त ज पुव्वसुत्ते भणिय, तो किमिह पुण इत्थसागारियसुत्तसमारभो ?

आचार्य आह – हे चोदग ! एत्थ कारण सुणसु –

पुव्वभणितं तु जं एत्थ, भण्णती तत्थ कारणं अत्थि ।
पडिसेहे अणुण्णा, कारणविसेसोवलंभो वा ॥५२०१॥

पुव्वद्ध कठ । जे पुव्व अणुजाणतेण अत्था भणिता ते चेवऽत्ये पडिसेघतो भणइ, ण दोसो ।

अहवा – जे पुव्व पडिसेधतो अत्था भणिता, ते चेव अणुण्ण करेतो दसेति, ण दोसो ।

अहवा – "कारण" ति हेउ दरिसतो भणाति, ण दोसो ।

अहवा – विसेसोवलभ वा दरिसता पुव्वभणिय भणाति, ण दोसो ॥५२०१॥

कि च –

ओहे सव्वणिसेहो, सरिसाणुण्णा विभागसुत्तेसु ।
जयणाहेतु भेदो, तह मज्झत्थादयो वा वि ॥५२०२॥

ओहसुत्ते सामण्णतो सव्व चेव णिसिद्ध, विभागसुत्ते पुण सपक्खे अणुण्णा, जहा पुरिसाण पुरिससागारिए कप्पति इत्थीण इत्थीसु कप्पइ ।

अहवा – जयणा जहा पुरिसेसु इत्थीसु वा कता त दरिसतेण विभागसुत्ते भेदो कतो ।

अहवा – पुरिसेसु इत्थीसु य मज्झत्थादधा विसेसा दसेहामि त्ति विभागसुत्तसमारभो ।

अधवा – अणतरसुत्ते सागारिय अत्थओ भणिय । इह पुण त चेव सुत्तेण णियमेति, विसे – सोवलभो वा इमो पुरिस नपुसग इत्थीसु ॥५२०२॥

तत्थ पुरिसेसु इम –

पुरिससागरिए उवस्सयम्मि [1]चउरो मासा हवंति उग्घाया ।
ते वि य पुरिसा दुविहा, सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

जइ पुरिससागारिए उवस्सए ठाति तो चउलहुअ । ते य पुरिसा दुविधा — सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

तत्थ सविकारा इमे –

रूवं आभरणविहिं, वत्था-ऽलंकार-भोयणे गधे ।
आओज्ज णट्ट णाडग, गीए य मणोरमे सुणिया ॥५२०४॥

तत्थ रूव उद्वतनस्नानजघास्वेदकरणणहदतवालसठावणादिय, आभरणवत्थाणि वा णाणादेसियाणि विविहाणि परिहेति, आभरणमल्लादिणा वा अलकरणेग अलकरेति, भोयण वा विभवेण विसिट्ठ भुजति, मज्जादि वा पिवति, चदणकुकुमकोट्ठपुडादीहि वा गवेहि अप्पाण आलिपेति, वासेति वा, धूवेति वा, तयादि वा चउव्विहमाउज्ज वादेति, णच्चति वा, णाडग णाडेति, मणोहारि वा मणोरम गेय करेति, रूवादि वा दट्ठु गधे य मणोहरे अग्घाएत्ता गीयादिए य सद्दे सुणित्ता जत्थ गधो तत्थ रसो वि । एवमादिएहि इदियऽत्थहि भुत्तभोगिणो सतिकरण, अभुत्तभोगिणो कोतुअ, पडिगमणादयो दोसा ॥५२०४॥

---

[1] चउरो लहुगा य दोस आणादी, इति बृहत्कल्पे गा० २५५६ ।

एतेसु ठायमाणस्स इमं पच्छित्तं –

एक्केक्कम्मि य ठाणे, चउरो मासा हवंति उग्घाया ।
आणाइणो य दोसा, विराहणा संजमाऽऽताए ॥५२०५॥

एतेसु रूवआभरणादिसु एक्केक्के ठायमाणस्स चउलहुया ॥५२०५॥

एव ता सविगारे, णिव्वीगारे इमे भवे दोसा ।
संसद्देण विबुद्धे, अहिगरणं सुत्तपरिहाणी ॥५२०६॥

पुव्वद्धं कंठं । साधूण सज्झायसद्देण आवस्सियणिसीहियसद्देण वा रातो सुत्तादि बुज्झेज्झा ततो अधिकरणं भवति । अह अधिकरणभया सुत्तत्थपोरिसीओ ण करेति तो सुत्तत्थपरिहाणी भवति ।

अहवा – "अधिकरणे" त्ति - साधू काइयादि णिप्फिडता पविसता वा आवडेज्ज वा पवडेज्ज वा णिसीहियादिसद्देण वा गिहत्था विबुद्धा रोसं करेज्जा, ततो अधिकरणं उत्तरुत्तरतो भवेज्ज । अधिकरणेण वा पिट्टापिट्टि करेज्ज । ततो आयविराहणा सुत्तात्थपरिहाणी य भवति ॥५२०६॥

अधवा – "[1]अधिकरणे" त्ति पदस्य इमा व्याख्या –

आउज्जोवण वणिए, अगणि कुडुंबि कुकम्म कुम्मरिए ।
तेणे मालागारे, उब्भामग पंथिए जंते ॥५२०७॥

जम्हा एते दोसा तम्हा एएसु पुरिसेसु वि ण ठायव्वं ॥५२०७॥

चोदगो भणति –

एवं सुत्त अफलं सुत्तणिवातो उ असति वसहीए ।
गीयत्था जयणाए, वसंति तो पुरिससागरिए ॥५२०८॥

आयरिओ भणति – सुत्तणिवाओ विसुद्धवसहीए असइ पुरिसाण जं पुरिससागारियं तं दव्वसागारियं, तत्थ गीयत्था जयणाए वसति ॥५२०८॥

ते वि य पुरिसा दुविहा, सन्नी य असन्निणो य बोधव्वा ।
मज्झत्थाऽऽभरणपिया, कंदप्पा काहिया चेव ॥५२०९॥

ते पुरिसा दुविधा – असण्णिणो सण्णिणो य । जे सण्णिणो ते चउव्विहा – मज्झत्था आभरणपिया कदप्पिया काहिया य । ॥५२०९॥

इमे आभरणपिया –

आभरणपिए जाणसु, अलंकरेंते उ केसमादीणि ।
सइरहसिय-प्पललिया, सरीरकुइणो उ कंदप्पा ॥५२१०॥

पुव्वद्धं कंठं । इमे कदप्पिया – "सइर" पच्छद्धं । सइरं ति गुरुभिरनिवार्यमाणा स्वेच्छया हसति, अनेकक्रीडासु अदोलकादिदप्पललिया चेइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेंतो कदप्पा भवति ॥५२१०॥

---

१ गा० ५२०६ ।

इमे य काहिया –

अक्खातिगा उ अक्खाणगाणि गीयाणि छलियकव्वाणि ।
कहयंता उ कहाओ, तिमसुत्था काहिया होति ॥५२११॥

तरगवतीमादिअक्खातियाओ अक्खाणगा धुत्तक्खाणगा, पदाणि धुवगादियाणि कहिंति। जे तेसि वण्णा सेतुमादिया छलियकव्वा, वसुदेवचरियचेडगादिकहाओ, धम्मत्थकामेसु य अण्णाओ वि कहाओ कहेंता काहिया भवति ॥५२११॥

एएमिं तिण्हं पी, जे उ विगाराण बाहिरा पुरिसा ।
वेरग्गरुई णिहुया, णिसग्गहिरिमं तु मज्झत्था ॥५२१२॥

वेरग्ग रुच्चति जेसि ते वेरु(र)ग्गरुई, करचरणिंदिएसु जे सत्था अच्छति ते णिहुया, निसग्गो नाम स्वभाव हिरिम जे सलज्जा इत्यर्थ । एवविहा मज्झत्था ॥५२१२॥

पुणो एतेसि इमो भेदो –

एक्केक्का ते तिविहा, थेरा तह मज्झिमा य तरुणा य ।
एवं सन्नी बारस, बारस अस्सण्णिणो होंति ॥५२१३॥

मज्झत्था तिविधा – थेरा मज्झिमा तरुणा । एव आभरणप्पिया वि कदप्पिया वि क हिया वि तिविधा । एव एते बारसविधा सण्णिणो । एव असण्णी वि बारसविधा कायव्वा ॥५२१३॥

पुरिससागारियस्स अलभे, कदाति णपु सगसागारिओ उवस्सओ लभेज्जा, तत्थ वि इमो भेदो -

एमेव बारसविहो, पुरिस-णपुंमाण सण्णिणं भेदो ।
अस्सण्णीण वि एवं, पडिसेवग अपडिसेवीणं ॥५२१४॥

एमेवऽवधारणे, जहा पुरिसाण भेदो बारसविहो तहा सण्णीण असण्णीण च णपुसगाण बारसभेदा कायव्वा ।

ते सव्वे वि समासतो दुविधा दट्ठव्वा – इत्थिणेवत्थिगा पुरिसणेवत्थिगा य ।

जे पुरिसणेवत्था ते दुविधा – पडिसेवी य अपडिसेवी य ।

जे इत्थिणेवत्थिया ते णियमा पडिसेवी ॥५२१४॥

एव विभागेसु विभत्तेसु इम पच्छित्त भण्णति –

काहीया तरुणेसुं, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणाणं ।
सेसेसु वि चउलहुगा, समणाणं पुरिसवग्गम्मि ॥५२१५॥

सण्णीण एक्को काहियतरुणो असण्णीण वि एक्को, एते दोण्णि । जे पुरिसणपुसा पुरिसणेवत्थ अपडिसेवगा तेसु वि सण्णिभेदे एक्को काहियतरुणो तेसु चेव असण्णिभेदे वि एक्को, एते वि दो । एते दो दुआ चउरो । ऐतेसु चउसु काहियतरुणेसु ठायमाणाण पत्तेय चउगुरुगा, सेसेसु चोयालीसाए भेदेसु ठायमाणाण पत्तेय चउलहुग । एय पच्छित्त पुरिसवग्गे भणिय णिक्कारणओ ठायमाणाण ।

कारणे पुण इयाए विधीए ठायमाणा सुज्झति – "असति वसहीए" त्ति ।।५११५।।

सण्णीसु पढमवग्गे, असति असण्णीसु पढमवग्गम्मि ।
तेण परं सण्णीसुं, कमेण अस्सन्निसु चेव ।।५२१६।।

सण्णीण पढमवग्गे मज्झत्था ते तिविधा, तत्थ पढम थेरेसु ठाति, थेरासति मज्झिमेसु, तेसऽसति तरुणेसु ठाइ ।

सण्णीण पढमवग्गासति ताहे असण्णीण पढमवग्गे थेर मज्झिम-तरुणेसु कमेण ठाति ।

तेसिं असतीए सण्णीण बितियवग्गे थेर-मज्झिम-तरुणेसु ठायति । तेसिं असइ सण्णीसु चेव तइयवग्गे थेर-मज्झिम-तरुणेसु ठायति ।

तेसि असइ सण्णीसु चेव काहिएसु थेर-मज्झिमेसु ठायति ।

ताहे असति सण्णीण असण्णीसु बितियवग्गाओ कमेण एव चेव जाव काहिय-मज्झिमाण असतीए ताहे सन्नीसु काहिय तरुणेसु ठायति, ते पण्णविज्जति जेण कहाओ ण कहेति ।

तेसिं असति असण्णीसु वि काहिय-तरुणेसु ठायति, ते वि पण्णविज्जति ।।५२१६।। पुरिसेसु एय पच्छित्त ठायव्व, जयणा य भणिया ।

इदाणि णपुंसगेसु भण्णति–

जह चेव य पुरिसेसु, सोही तह चेव पुरिसवेसेसु ।
तेरासिएसु सुविहित, पडिसेवगअपडिसेवीसु ।।५२१७।।

जह चेव पुरिसेसु सोधी भणिता तह चेव णपुंसेसु पुरिसवेसणेवत्थेसु अपडिसेवगेसु पडिसेवगेसु वा भाणियव्वा । ठायव्वे वि जयणाविधी तह चेव भाणियव्वा ।।५२१७।।

जह कारणम्मि पुरिसे, तह कारणे इत्थियासु वि वसंति ।
अद्धाण-वास-सावय-तेणेसु वि कारणे वसंति ।।५२१८।।

जह पुरिससागारिगे कारणेण ठाइ तहेव कारण अवलबिऊण इत्थिसागारिए वि जयणाए ठायति वसतीत्यर्थ । अद्धाणादिणिग्गया सुद्धवसहिं अप्पतरदोसवसहिं वा तिक्खुत्तो मग्गिउ अलभता इत्थिसागारिए वसति । इमेहिं कारणेहिं पडिबद्ध वास पडइ, बाहिं वा सावयभय, उवधिसरीरतेणभय वा । इत्थिसागारिए वि बारस भेदा जहा पुरिसेसु । असण्णित्थीसु वि बारस, इत्थिवेसणपुंसेसु सण्णीसु वि बारस, तेसु चेव असण्णीसु वि बारस ।।५२१८।।

इम पच्छित्त –

काहीता तरुणीसुं, चउसु वि मूलं ठायमाणाणं ।
सेसासु वि चउगुरुगा, समणाणं इत्थिवग्गम्मि ।५२१९।।

सण्णिकाहिकतरुणी, असण्णिकाहिकतरुणी, इत्थिवेसणपुंसण्णिकाधिकतरुणी, सा चेव असण्णिकाहिकतरुणी, एयासु चउसु वि जइ ठायति तो मूल । सेसासु सण्णि-असण्णिसु वा वीसाए इत्थीसु चउगुरु ।। एय समणाण इत्थिवग्गे ठायताण पच्छित्त ।।५२१९।।

जह चेव य इत्थीसु, सोही तह चेव इत्थिवेसेसु ।
तेरासिएसु सुविहिय, ते पुण णियमा उ पडिसेवी ॥५२२०॥

जहा समणाण इत्थीसु ठायमाणाण सोधी भणिया तह चेव इत्थिवेसेसु णपुंसगेसु ठायमाण सोधी भाणियव्वा, जेण ते णियमा पडिसेवी । ५२२०॥

इमा तासु ठायव्वे जयणाविधी –

एमेव होइ इत्थी, बारस सण्णी तहेव अस्सण्णी ।
सण्णीसु पढमवग्गे, असति असण्णीसु पढमंमि ॥५२२१॥

जहा पुरिसेसु भेदा एव इत्थीसु वि सण्णीसु बारस भेदा, असण्णीसु वि बारस । एयासु ठायव्वे जयणा "सण्णीसु पढमवग्गे" त्ति, मज्झिमतरुणीसु थेरमज्झिमतरुणीसु, असति तेसि असण्णीसु । पढमवग्गे असति तेसि सण्णीसु बितियवग्गे । असति तेसि असण्णीसु तितियवग्गे ॥५२२१॥

एव एक्केक्क तिग, वोच्चत्थगमेण होइ विण्णेयं ।
मोत्तूण चरिम सण्णी, एमेव नपुंसएहिं पि ॥५२२२॥

आहरणप्पियाण असण्णीण असति सण्णीसु कदप्पियासु ततियवग्गे ठाति ।

तेसि असति असण्णीसु कदप्पियासु, तेसि असति सण्णीसु काहियासु थेरमज्झिमासु ।

तेसि असति असण्णीसु काहियासु थेरमज्झिमासु । ततो सण्णीसु तरुणीसु । ततो असण्णीसु तरुणीसु । एवमेव इत्थिणपुंसेसु वि ठायव्वे जयणा भाणियव्वा ॥५२२२॥ एस पुरिसाण पुरिसेसु इत्थीसु य सोधी ठायव्वे जयणा भणिता ।

इदाणि इत्थीण पुरिसेसु य सोधी ठायव्वे जयणा भण्णति –

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ णायव्वो ।
जइ तेसि इत्थियाओ, तह तासि पुमा मुणेयव्वा ॥५२२३॥

पुव्वद्धं कंठ । जहा तेसि पुरिसाण इत्थीओ गुरुगाओ तहा तेसि इत्थियाण पुरिसा गुरुगा मुणेयव्वा ॥५२२३॥

इत्थियाण इम सपक्खे पच्छित्त –

काहीतातरुणीसु, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणीण ।
सेसासु वि चउलहुगा, समणीण इत्थिवग्गम्मि ॥५२२४॥

पूववत् कठा । णवर – इत्थियाओ भाणियव्वाओ ॥५२२४॥

इम पुरिसेसु ठायमाणीण पच्छित्त –

काहीगातरुणेसुं, चउसु वि मूलं तु ठायमाणीणं ।
सेसेसु वि चउगुरुगा, समणीणं पुरिसवग्गम्मि ॥५२२५॥

पूर्ववत् कठा । णवर – इत्थियाओ पुरिसेसु वत्तव्वा ॥५२२५॥

अथवा - इमो अण्णो पायच्छित्तादेसो, सण्णीसु बारससु असण्णीसु य बारससु -

थेरातितिविह अथवा पंचग पण्णरस मासलहुओ य ।
छेदो मज्झत्थादिसु, काधिगतरुणेसु चउलहुगा ॥५२२६॥

मज्झत्थे थेरे पच राइदिया छेदो ।

मज्झत्थे मज्झिमे पण्णरस राइदिया छेदो ।

मज्झत्थे तरुणे मासलहू छेदो । एव आभरणकदप्पेसु वि, काहिएसु वि थेरमज्झिमेसु एव चेव, णवर - काहिगतरुणेसु चउलहुछेदो । असण्णीण वि बारस विकप्पे एव चेव ॥५२२६॥

सण्णीसु असण्णीसुं, पुरिस-णपुंसेसु एव साहूणं ।
एयासुं च्चिय थीसु, गुरुगो समणीण विवरीओ ॥५२२७॥

सण्णिअसण्णीण विकप्पेसु चउवीसा पुरिसणपुसेसु, एव चेव इत्थीसु वि, एयासु चेव चउवीसभेदासु इत्थिवेसधारीसु य णपुसगेसु चउवीसविकप्पेसु एस चेव छेदो एव चेव दायव्वा, णवर - गुरुओ कायव्वो । "समणीण विवरीओ" त्ति समणीण समणीपक्खे जहा पुरिसाण पुरिसपक्खे, तासिं पुरिसपक्खे जहा पुरिसाण इत्थिपक्खे ॥५२२७॥

जे भिक्खू सउदगं सेज्ज उवागच्छइ, उवागच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

सह उदएण सउदया, उपेत्य गच्छति उपागच्छति, साइज्जणा दुविहा - अणुमोयणा कारावणा य, निसु वि ङ्क ॰ ॰ ।

अह सउदगा उ सेज्जा, जत्थ दगं जा य दगसमीवम्मि ।
एयासि पत्तेयं, दोण्हं पि परूवण वोच्छं ॥५२२८॥

अथेत्यय निपात, सागारिय अणन्तरभेदप्रदशने वा निपतति । "जत्थ दग" ति पाणियघर प्रपादि, जाए वा सेज्जाए उदग समीवे वट्टति । जा उदगसमीवे सा चिट्ठउ ताव जत्थ उदग त ताव परूवेमि ॥५२२८॥

जत्थ णाणाविहा उदया अच्छति इमे -

सीतोदे उसिणोदे, फासुमप्फासुगे य चउभंगो ।
ठायते लहु लहुगा, कोस अगीयत्थसुत्तं तु ॥५२२९॥

सीतोदग फासुय, सीतोदग अफासुय ।

उसिणोदग फासुय, उसिणोदग अफासुय ।

पढमभगे उसिणोदग सीतीभूत चाउलोदगादि वा, बितियभंगे सच्चित्तोदग चेव ।

ततियभगे उसिणोदग उव्वत्तडड चउत्थभगे तावोदगादि ।

पढमततियभगे ठायतस्स मासलहु । बितियचउत्थेसु चउलहु ।

एय कस्स पच्छित्त ?

आयरिओ भणइ - एय अगीयस्स पच्छित्त ॥५२२९॥

फासुगस्स इम वक्खाण –

सीतितरफासु चउहा, दव्वे संसट्ठमीसगं खेत्ते ।
कालतो पोरिसि परतो, वण्णादी परिणतं भावे ॥५२३०॥

ज सीतोदग फासुय, "इयर" ति ज च उण्होदग फासुय, त चउव्विह – दव्वग्रो खेत्तग्रो कालग्रो भावग्रो य ।

दव्वग्रो ज गारमसमट्ठे भायणे छूढ, सीतोदग त तेण गोरसेण परिणामित दव्वतो फासुय ।
खेत्तग्रो ज कूवतलागाइसु ठिय मधुर लवणेण मीसिज्जति लवण वा मधुरेण ।
कालतो ज इधण छूढे पहरमेत्तेण फासुग भवति ।
ज वण्णगधरसफरिसविप्परिणय भावतो ज (त) फासुय वुत्त ॥५२३०॥
"जो [1]अगीयत्थो भिक्खू ठाति तस्स एय पच्छित्त" ।

एत्थ चोदगो चोएति –

णत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ व कोइ णिद्दिट्ठो ।
जा पुण एगाणुण्णा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५२३१॥

"गीतो अगीतो वा सुत्ते ण भणितो । ज पुण एगस्स गीयत्थपक्खस्स अणुण्ण करेह, अगीयपक्खस्स पडिसेह करेह, एस (एत्थ) तुज्झ चेव स्वेच्छा, ण तित्थगरभणिय ।

अधवा – कि वा कारण, ज गीयस्स अणुण्णा, अगीयस्स पडिसेहो ॥५२३१॥

आयरिओ भणति –

एतारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिद्दिट्ठो ।
अव्वोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५२३२॥

पुव्वद्ध कठ । जम्हा य अगीतो कारण अकारण वा जयण अजयण वा ण याणति तेण अगीते पच्छित्त । अण्ण च सुत्ते अत्थो अव्वागडो भणिओ त्ति, अविसेसितो, त अविसिट्ठ अत्थ आयरिओ "उवेहति" उत्प्रेक्षते विशेषयतीत्यर्थ । जहा एगातो पिंडाओ कुलालो अणगे घडादिरूवे घडेति एव आयरिओ एगाओ सुत्ताओ अणेगे अत्थविगप्पे दमेति ।

अधवा – जहा अधगारे अप्पगासिते सता वि घडादिया ण दिसति एव सुत्ते अत्थविसेसा, ते य आयरियपदीवेण जदि पगासिता भवति तदा उवलब्भति ॥५२३२॥

कि च –

जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति वियारणा णत्थि ।
किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं ॥५२३३॥

जति सुत्ताभिहिते विचारणा ण कज्जति तो कालियसुत्तस्स अणुओगपोरिसीकरण किं दिट्ठं दिट्ठिप्पहाणेहिं ?, दिट्ठिप्पहाणा जिणा गणहरा वा । अतो अणुओगकरणओ णज्जति – जहा सुत्ते बहू अत्थपदा, ते य आयरिएण निगदिता ति ॥५२३३॥

---

१ गा० ५२२६ ।

किं च –

उस्सग्गसुयं किंची, किंची अववाइयं मुणेयव्वं ।
तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥५२३४॥

किं चि उस्सग्गसुत्तं । किं चि अववादसुत्तं । किं चि तदुभयसुत्तं । तं दुविहं, तं जहा – उस्सग्गववादियं, अववादुस्सग्गियं । एते सुत्तगमा – सूत्रप्रकारा इत्यर्थः ।

अधवा – सुत्तगमा द्विरभिहितो गमः, तं जहा – उस्सग्गुस्सग्गियं अववादाववादियं चेति ।

एते वि छ सुत्तप्पगारा आयरिएण बोधिता णज्जंति ॥५२३४॥

इमो वा सुत्ते अत्थपडिबंधो भवति –

[1]णेगेसु एगगहणं, सलोम णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।
विहिभिण्णस्स य गहणे, अववादुस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३५॥

इमो अणाणुपुव्वीए एतेसिं सुत्ताणं अत्थो दंसिज्जति – "विधिभिण्णस्स य" पच्छद्धं । [1]"कप्पति णिग्गंथीणं पक्के तालपलंबे भिण्णे पडिग्गाहित्तए से वि य विधिभिण्णे, णो चेव णं अविधिभिण्णे," अववादेण गहणे पत्ते जं अविधिभिण्णस्स पडिसेहं करेइ, एस अववादे उस्सग्गो ॥५२३५॥

अववादाणुण्णाय कहं पुणो पडिसिज्झति ?,

अतो भण्णति –

उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जयं लहइ ।
ण य तं होइ विरुद्धं, एमेव इमं पि पासामो ॥५२३६॥

ठाणं ठिती, उस्सग्गस्स ठिई उस्सग्गठिई – उत्सर्गस्थानमित्यर्थः । उस्सग्गठाणेसु जं चेव दव्वं कप्पति तं चेव दव्वं असंथरणे जम्हा विवज्जयं लभति । "विवज्जतो" विवरीयता – असुद्धमित्यर्थः । तं असुद्धं गुणकरेंति घेप्पंतं ण विरुद्धं भवति । "एमेव इमं पि पासामो" त्ति अववातअणुण्णाए अविधिभिण्णे दोसदंसणं जतो भवति, तेण पुणो पडिसेहो कज्जइ – ण दोष इत्यर्थः ॥५२३६॥

उस्सग्गे गोयरम्मी, णिसिज्जकप्पाऽववायओ तिण्हं ।
मंसं दल मा अट्ठिं, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३७॥

इमं उस्सग्गसूत्रं – "णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अंतरगिहंसि आसइत्तए वा जाव काउस्सग्गं वा ठाणं ठातित्तए वा" ।

अहवा – "[2]गोयरग्गपविट्ठो उ, ण णिसीएज्झ कत्थति ।
कहं च ण पबंधिज्जा, चिट्ठित्ता ण व संजए" ।

इमं अववादिकं – "[3]अध पुण एवं जाणेज्जा – जुण्णे वाहिए तवस्सि दुब्बले किलंते मुच्छेज्ज वा पवडेज्जवा एवं ण्हं कप्पति अंतरगिहंसि आसइत्तए वा जाव उस्सग्गठाणं ठातित्तए" ।

---

१ गा० ५२३५ । २ दश० अ० ५ उ० २ गा० ७ । ३ दश० अ० ६ गा० ६० ।

अहवा – '[1]णिण्हमण्णतरागस्स, णिमेज्जा जस्स कप्पति ।
जराए अभिभूयस्स, वाहिगस्स तवस्सिणो ॥६०॥

इम अववादुस्सग्गिय – "[1]बहुअट्ठिय पोग्गल अणिमिस वा बहुकटय ।" एव अववादतो गिण्हतो भणाति – "मम दल मा अट्ठिय" त्ति ॥५२३७॥

अधवा –

णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।
कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सग्गं ॥५२३८॥

"णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा आमे तालपलबे अभिण्णे पडिग्गाहित्तए" (बृह० उ० १ सू० १) एय उस्सग्गिय । "कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा आमे तालपलबे भिण्णे पडिग्गाहित्तए", (बृह० उ० १ सू० २) एय अववादिय । पच्छद्ध कठ ।

[2]पूर्वोक्त इम उस्सग्गाववाइय – "णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा रातो वा वियाले वा सेज्जासथारए पडिग्गाहित्तए, ॥ णऽण्णत्थेगेण पुव्वपडिलेहिएण सेज्जासथारएण" । (बृह० उ० ३ सू० ४२, ४३)

इम उस्सग्गुस्सग्गिय । "जे भिक्खू असण वा पाण वा, खाइम वा, साइम वा (ङ्क) पढमाए पोरिसाए पडिग्गाहेत्ता पच्छिम पोरिसि उवातिणावेति उवातिणावेत वा सातिज्जति, से य आहच्च उवातिणाविते सिया जो त भु जति भु जत वा सातिज्जति ।" (बृह० उ० ४ सू० १६)

इम अववादाववादिय । जेसु अववादो सुत्तेसु निबद्धा तेसु चेव सुत्तेसु अत्यतो पुणा अणुण्णा पवत्तति, ते अववायाववातिय । सुत्ता, जतो सा विनियाणुण्णा सुत्तत्थाणुगता इति ।

इदाणिं [3]विनियगाहाए पुव्वद्धस्स इम वक्खाण –

अणगेसु सुत्तत्थेसु घेत्तव्वेसु एगस्स अत्थस्स गहण करेति, जहा जत्थ सुत्ते पाणातिवातविरतिग्गहण तत्थ सेसा महव्वया अत्थतो दट्ठव्वा । एव कसायइदियआसवेसु वि भाणियव्व ।

इमे पत्तेयसुत्ता –

णो कप्पति णिग्गथाण अलोमाइ चम्माइ धारित्तए वा परिहरित्तए वा । ( )
कप्पइ णिग्गथाण सलोमाइ चम्माइ धारित्तए वा परिहित्तए वा । (बृह०उ० ३ सू० ४)
णो कप्पति णिग्गथीण सलोमाइ चम्माइ धारित्तए वा परिहरित्तए वा । (बृह०उ० ३ सू० ३)
कप्पति णिग्गथीण अलोमाइ चम्माइ धारित्तए वा परिहरित्तए वा । ( )

इम सामण्णसुत्त ।

णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा कसिणाइ चम्माइ धारित्तए वा परिहित्तए वा ।
कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा अकसिणाइ चम्माइ धारित्तए वा परिहित्तए वा । (बृह० उ० ३ सू० ५–६) ॥५२३८॥

कि चान्यत् –

कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं ।
उक्कम-कमजुत्ताइं, कारणवसतो निउत्ताइं ॥५२३९॥

---

१ दश० अ० ५ उ० १ गा० ७३ । २ गा० ५२३४ । ३ गा० ५२३५ ।

अस्य व्याख्या –

देसग्गहणे बीएहि सूइया मूलमाइणो होंति ।
कोहाति अणिग्गहिया, सिंचति भवं निरवसेसं ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्रे देशग्रहण करेति, जहा कप्पस्स पढमसुत्ते पलबग्गहणातो सेसवणस्सइभेदा मूल कद खंध-तया साह-प्पसाह-पत्त पुप्फ-बीया य गहिया । बीयग्गहणातो वा सेसा दट्ठव्वा ।

इम णिरवसेसग्गहण –

"[४]कोहो य माणो य अणिग्गहीया, माया य लोभो य विवड्ढमाणा ।
चत्तारि एते कसिणा कसाया, सिंचति मूलाइ पुणब्भवस्स ।" (दश० ८, ४०) ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्राणि उत्क्रमेण कृतानि क्वचित् क्रमेण जहा –

सत्थपरिण्णा उक्कमो, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।
जं पि य उक्कमकरणं, त पऽहिणवधम्ममायट्ठा ॥५२४१॥

सत्थपरिण्णऽज्झयणे – तेउक्कायस्स उवरि वाउक्कायो भवति, सो य न तत्थ भणितो, तसाणुवरि भणितो, दुश्रद्धेयत्वात् । ज त उक्कमकरण त अहिणवस्स सेहस्स धम्मप्रतिपत्तिकारणा वाउकातिग-जीवत्वप्रतिपत्तिकारणा वा इत्यर्थ ।

'गोयरपिंडेसणा कमेण" ति तत्थ गोयरातिमे अभिग्गहविसेसतो जाणियव्वा भवति, तजहा – पेला, अद्धपेला, गोमुत्तिया पयगवीहिया, अतोसबुक्का वट्टा, बाहिं सबुक्का वट्टा, गतुपच्चागया, उक्खित्तचरगा, उक्खित्तणिक्खित्तचरगा ।

इमाओ सत्त पिंडेसणाओ – असमट्ठा, ससट्ठा, उद्धडा, अप्पलेवा, उवग्गहिया, पग्गहिया, उज्झियधम्मिया य ।

दायगो असंसट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देति त्ति असंसट्ठदायगो ।

ससट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देति त्ति ससट्ठा ।

जत्थ उवक्खडिय भायण[*]तातो उद्धरिय अण्णगादिसु, एस उद्धडा ।

जस्स दिज्जमाणस्स दव्वस्स णिप्फाव चणगादिगस्स लेवो ण भवति, सा अप्पलेवा ।

ज परिवेसगेण परिवेसणाए परस्स कडुच्छुतादिणा उवग्गहिय – आणियति वुत्त भवति, तेण अ त पडिसिद्ध त तहुक्खित्त चेव साधुस्स देइ । एसा उवग्गहिया ।

ज असणादिग भोत्तुकामेण कसादिभायणे गहिय भुजामि त्ति असंसट्ठिते चेव साधू आगतो त चेव देति, एस पग्गहिया ।

ज असणादिग गिही उज्झिउकामो साहू य उवट्ठितो त तस्स देति, ण य त कोइ अण्णो दुपदादी अभिलसति, एसा उज्झियधम्मिया ॥५२४१॥

बीएहि कंदमादी, वि सूइया तेहि सव्ववणकायो ।
भोमातिका वणेण तु, सभेदमारोवणा भणिता ॥५२४२॥

कम्हिवि सुत्ते बीयग्गहणं कत, तेण बीयग्गहणेण मूलकंदादिया सूइता, तेहि सव्वो परित्ताणंतो सभेदो वणस्सइकाओ सूतितो, तेण वणस्सतिणा भोमादिया पंच काया सूतिता, एवं सप्रभेदा आरोवणा केसुइ सुत्तेसु भाणियव्वा ॥५२४२॥

किं च –

जत्थ तु देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि सूइयवसेण ।
मोत्तूण अहीकारं, अणुओगधरा पभासंति ॥५२४३॥

पुव्वद्धं गतार्थं । कम्हिवि सुत्ते अणुओगधरा अधिगतं अत्थं मोत्तूण सुत्ताणुपातियं पसंगागयमत्थं ताव भणंति । एवं विचिंता सुत्ता, विचिंतो य सुत्तत्थो ण णज्जति जाव सूरिणा ण पागडिओ ॥५२४३॥

उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववायओ य जाणि भवे ।
कारणजाएण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५२४४॥

उस्सग्गेण भणिताणि जाणि सुत्ताणि अववादेण य जाणि सुत्ताणि भणिताणि, "कारणजातेण मुणि" त्ति पडिसिद्धस्स आयरणहेऊ कारणं, "जाय" ति उप्पण्णं, "मुणि" त्ति आमंतणे, सव्वाणि वि जाणियव्वाणीति ।

कहं ?, उच्यते – अववायसुत्तेसुस्सग्गो अत्थतो भणितो अववादकारणे सुत्तणिबंधो, उस्सग्गसुत्तस्स उस्सग्गसुत्ते णिबंधो, अत्थतो कारणजाते अणुण्णा अतो सव्वसुत्तेसु उस्सग्गो अववादो य दिट्ठो ।

अतो भण्णति – 'कारणजातेण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि "सूत्राणीत्यर्थः । ते य उस्सग्गऽववादा गुरुणा बोधिता णज्जंति। ते य जाणिऊण अप्पप्पणो ठाणे समायरंति। अजाणिए पुण ते कहं समायरंति ?, ॥५२४४॥

अववादट्ठाणे पत्ते –

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।
कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५२४५॥

जाणि संथरमाणस्स उस्सग्गेण दव्वाणि णिसिद्धाणि ताणि चेव दव्वाणि अववायकारणजाते "जाय" सद्दो प्रकारवाची बितिओ 'जाय" सद्दो उप्पण्णवाची, अन्यतमे कारणप्रकारे उत्पन्ने इत्यर्थः । जाणि उस्सग्गे पडिसिद्धाणि उप्पण्णे कारणे सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ण दोसो ॥५२४५॥

चोदगाह –

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।
एवं होयऽणवत्था. ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५२४६॥

सुत्तत्थस्स अणवत्था भवति, चरणकरणस्स वा अणवत्थओ य तित्थं ण भवति, पडिसिद्धमणुजाणंतस्स सच्चं ण भवति ॥५२४६॥

उम्मत्तवायसरिसं, खु दंसणं न वि य कप्पऽकप्पं तु ।
अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५२४७॥

"पुव्वावरविरुद्ध सुत्त पावइ उम्मत्तवचनवत्", "इम कप्प, इम अकप्प" एय अण्णहा पावति जनो अकप्प पि कप्प भवति। जइ एव तुज्झ अभिप्पेयत्थसिद्धी भवति तो चरगादियाण वि अप्पप्पणो अभिप्पेयत्थसिद्धी भवेज्ज ॥५२४७॥

आचार्य आह – सुणेहि एत्थ णिच्छियऽत्थ –

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहि ।
एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५२४८॥

णिक्कारणे अकप्पणिज्ज ण किं चि अणुण्णाय, अववायकारणे उप्पण्णे अकप्पणिज्ज ण किं चि पडिसिद्ध, णिच्छयववहारतो एस तित्थकराणा, 'कज्जे सच्चेण भवियव्व" कज्ज ति अववादकारण, तेण जति अकप्प पडिसेवति तहावि सच्चो भवति, सच्चो त्ति सजमो ॥५२४८॥

अहवा –

कज्जं णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।
त तह समायरंतो, त सफल होइ सव्वं पि ॥५२४९॥

कज्ज ति णाण-दसण चरणा। त जहा जहा उस्सप्पति तहा तहा समायरतस्स सजमो भवति स्यात् ॥५२४९॥

कथ सजमो भवति –

दोसा जेण निरुंभंति, जेण खिज्जति पुव्वकम्माइं ।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥५२५०॥

उस्सग्गे उस्सग्ग, अववादे अववाद करेतस्स रागादिया दोसा णिरुभति, पुव्वोवचियकम्मा य खिज्जति, एव जो जो साधुस्स दोसनिरोधकम्मखवणो किरियाजोगो सो सो सव्वो मोक्खोवातो।

इमो दिट्ठतो – "रोगावत्थासु समण व", रोगावत्था रोगप्रकारा, तेसि रोगाण प्रशमन अपत्थ पडिसिज्झति, जेण य प्रशमति न तस्स दिज्जति।

अधवा – कस्स ति रोगिस्स णिसेहो कज्जति, कस्स वि पुणो तमेव अणुण्णवति।

एव कम्मरोगखवणे वि समत्थस्स अकप्पपडिसेहो कज्जति। असथरस्स पुण तमेव अणुण्णवति।

हे चोदक ! ज त तुब्भे भणिय – सुत्ते अगीतो गीतो वा नत्थि कोइ भणितो त, एय सुत्ते गीयादीया पवयणातो विण्णेया ॥५२५०॥

अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो न जाणाति ।
अणुण्णवणाइ जयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५२५१॥

चोदको भणति – "अगीयस्स किं कारण ण कप्पति ?

आयरिओ भणइ – "तिविध जयण" ति जेण सो न याणइ।

पुणो चोदगो भणति – "कयरा सा तिविधा जयणा" ?

आयरिओ भणइ – अणुण्णावणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य।

चोदको भणति – "सुत्ते पढिए अगीतो कह जयण न जाणति ?"

आयरिओ भणति – हे चोदक ! आयरिसहाया सव्वागमा भवति जेण पढिज्जति ॥५२५१॥

णिउणो खलु सुत्तत्थो, न हु सक्को अपडिबोहितो नाउं ।
ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसि तहिं वसताणं ॥५२५२॥

णिउणो त्ति सुहुमो सुत्तत्थो, सो य आयरिएण पडिबोहितो णज्जति, अण्णह ण णज्जति, जे अगीयत्थाण तहिं वसताण दोसा ते भण्णमाणे सुणसु ॥५२५२॥

अग्गीया खलु साहू, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।
रमणिज्जभिक्ख गामे, ठायती उदगसालाए ॥५२५३॥

अगीयसाधू साधुकिरियाए जुत्ता णवर – सदोसणिद्दोस-वसहिअणुण्णवणे दोसगुणे ण याणति, अजयणाए अणुण्णवणे दोसा, जयणाणुण्णवणाए य गुणा । सदोसाए य कारणे ठिया जयण काउ ण याणति जे य तत्थ दोसा उप्पज्जति ॥५२५३॥

"रमणिज्ज" पच्छद्ध अस्य व्याख्या –

रमणिज्जभिक्ख गामो, ठायामो इहेव वसहि भ्रोमेह ।
उदगघराणुण्णवणा, जति रक्खह देमि तो भंते ! ॥५२५४॥

अगीयत्थगच्छो दूइज्जनो एगत्थ गामे बाहिं ठितो, भिक्खा हिंडिया पभूता इट्ठा य लद्धा, ताहे भणति – "एस रमणिज्जो गामो, भिक्खा य अत्थि, अत्थेव मासकप्पविहारेणऽच्छिहामो, वसहिं भ्रोमेह धम्मकहि" त्ति । तेहिं उदगसाला दिट्ठा, त अणुण्णवेत्ता उदगघरसामिणा भणिता – "जति उदग घर वा रक्खिस्सह तो भे देमि" त्ति ॥५२५४॥

किं च ते गिहत्था भणति –

वसहीरक्खणवग्गा, कम्मं ण करेमो णेव पवसामो ।
णिच्चिता होह तुमं, अम्हे रत्ति पि जग्गामो ॥५२५५॥

"उदयघरादिरक्खवावडा अम्हे किसिमादि कम्म पि ण करेमो, ण य आमतणादिसु गामतर पि पवेसामो" । ताहे अगीयत्था भणति – "णिच्चितो होहि तुम, अम्हे रत्ति पि जग्गिस्सामो" ॥५२५५॥

इमा वि अणुण्णवणे अविधी चेव –

जोतिस निमित्तमादी, छंदं गणियं च अम्ह साहित्था ।
अक्खरमादि व डिंभे, [1]गाहेस्सह अजतणा सुणणे ॥५२५६॥

जति अणुण्णविज्जते वसहिसामी भणति – 'जति जोइस निमित्त छद गणिय वा अम्ह कहेस्सह, "डिम्भ"–त्ति डिभरूव त अक्खरे गाहिस्सह आदिसद्दातो अण्ण वा किं चि पावसुत्त वागरणादि ।"

एत्थ साधू जति पडिसुणेति – "कहेस्सामो सिक्खावेस्सामो वा" तो अणुण्णवणे अजयणा कया भवति ॥५२५६॥

---

१ गाहिज्जह ।

अजयणाऽणुण्णवणाए ठियाण इमे दोसा –

अणुण्णवण अजयणाए, पउत्थसागारिए घरे चेव ।
तेसिं पि य चीयत्तं, सागारियवज्जियं जात ॥५२५७॥

अस्य पूर्वार्धस्य व्याख्या –

तेसु ठितेसु पउत्थो, अच्छंतो वा वि ण वहती तत्ति ।
जइ वि य पविसितुकामो, तह वि य ण चएति अतिगतु ॥५२५८॥

"तेसु" त्ति – अगीयत्थेसु अजयणाणुण्णवणाए ठियाण "उदगादिघर सजता रक्खति" त्ति सागारिगो गिच्चितो पवसइ, घरे वा अच्छतो उदगादिभायणाण वावार ण वहति, "[1]तसि पि" – सजयाण "चियत्त' – ज अम्ह तेण सागारिणो णागच्छति ।

अहवा – जे सजता उदगरसकोउआ तेसिं चियत्त, अथवा – सो पविसिउकामो तह वि न सक्केइ तत्थ पविसिउ ॥५२५८॥

केण कारणेण ? अतो भण्णति –

सथारएहि य तहिं, समंततो आतिकिण्ण वितिकिण्णं ।
सागारिओ ण इंती, दोसे य तहिं ण जाणाति ॥५२५९॥

अतिकिण्ण आकीर्णं परिवाडीए, वितिकिण्ण विप्रकीर्णं अणाणुपुव्वीए, अड्डवियड्डु त्ति वुत्त भवति एतेण कारणेण सो सेज्जातरो ण पविसति । तेसु उदगभायणेसु जे सेवणादिदोसा ते ण याणति ॥५२५९॥ अणुण्णवण त्ति गता ।

इदाणि [2]सपक्खे जयणा –

ते तत्थ सण्णिविट्ठा, गहिता मंथारगा जहिच्छाए ।
णाणादेसी साहू, कस्सति चिता समुप्पण्णा ॥५२६०॥

"सण्णिविट्ठ" त्ति ठिता 'जहिच्छ' त्ति जहा इच्छति, णो गणावच्छेइएण दिण्णा अहारातिणियाए । ॥५२६० ।

तत्थ कस्स ति साधुस्स इमा चिता उप्पण्णा—

अणुभूता उदगरसा, णवरं मोत्तूणिमेसि उदगाणं ।
काहामि कोउहल्लं, पासुत्तेसुं समारद्धो ॥५२६१॥

"केरिसो उदगरसो" त्ति कोतुअ, त कोउआणुकूल काहामो त्ति सो सुत्तेसु साधूसु समारद्धो पाउ ॥५२६१॥

इमे उदगे –

धारोदए महासलिलजले संभारिते च दव्वेहि ।
तण्हाइयस्स व सती, दिया व राओ व उप्पज्झे ॥५२६२॥

---

१ गा० ५२५७ । २ गा० ५२५१ ।

सरोवरेसु जहा मत्तसागरादिसु, महासलिलोदए गंगासिंधुमादीहि दव्वेहि वा सभारिय, कप्पूरादिवासियवासेण वासिय, एवमादिउदगेसु तण्हाइयस्स अभिलासो भवति, पुव्वाणुभूतेण वा सती सभरणा भवति, अणणुभूतेण वा कोउएण सती भवति ॥५२६२॥

ताहे सतीए उप्पण्णाए अप्पणो हिययपच्चक्खं भण्णति –

इहरा कहासु सुणिमो इम खु त विमलसीतल तोयं ।
विगतस्स वि णत्थि रसो, इति सेवति धारतोयादी ॥५२६३॥

"इहरे" त्ति – अपच्चक्ख सुतिमेत्तोवलद्ध, "इम" ति पच्चक्ख, ज पि अम्हे उण्हादगादि विगतजीव पिबामो तस्स वि सत्थोवहयस्स अणणहाभूतस्स रसो णत्थि, इति एव चितेउ धारोदगादि सेवइ ॥५२६३॥

तम्मि पडिसेविते इमे दोसा –

णिग्गयम्मि कोउहल्ले, छट्ठवयविराहणं ति पडिगमणं ।
वेहाणस ओहाणे, गिलाण-सेहेण वा दिट्ठो ॥५२६४॥

तम्मि उदगे पडिसेविए विगते उदगरसकोउए छट्ठ रातीभोयणविरति वय भग्ग, तम्मि भग्गे सव्वयाण वि भग्गो, ताहे "भग्गवतो मि" त्ति स गिहं पडिगमण करेज्ज, वेहाणस वा करेज्ज, विहाराओ वा ओहाण करेज्ज, गिलाणेण सेहेण वा अभिणवधम्मेण दिट्ठो त पडिसेवतो ॥५२६४॥

ताहे गिलाणो इम कुज्जा –

तण्हातिओ गिलाणो, तं दिस्स पिएज्ज जा विराहणया ।
एमेव सेहमादो, पियति अप्पच्चओ वा मि ॥५२६५॥

त दट्ठु पिवत गिलाणा वि निमित्तो पिवेज्ज, अतिमितो वा कोउएण पिवेज्जा । तेण पीएण अण्णत्थ जा अणागाढादिविराहणा तण्णिप्फण्ण पच्छित्त तस्स साधुस्स भवति । अह उद्दाति तो चरिम । एव सेहेण वि दिट्ठे सेहो वि पिवेज्जा, सेहस्स वा अपच्चओ भवेज्ज, जहेय मोस तहऽण्ण पि ॥५२६५॥

अहवा –

उड्डाहं च करेज्जा, विप्परिणामो व होज्ज सेहस्स ।
गेण्हंतेण व तेणं, खडित भिण्णे व विद्धे वा ॥५२६६॥

सो वा सेहो अण्णमण्णस्स अक्खतो उड्डाह करेज्जा ।

अहवा – सेहो अयाणतो भणेज्ज – "एस तेणो आहरेड' त्ति उड्डाह करेज्जा, त वा दट्ठु सेहो विपरिणमेज्ज, विपरिणतो सम्मत्त चरण लिग वा छड्डेज्ज । अगिलाणसाधुणा गिलाणेण वा सेहेण वा एतेसि अण्णतरेण उदग गेण्हतेण त उदगभायण खडिय भिण्ण वा वेहो से वा कतो ॥५२६६॥

अधवा –

फेडितमुद्दा तेणं, कज्जे सागारियस्स अतिगमणं ।
केण इमं तेणेहि, तेणाणं आगमो कत्तो ॥५२६७॥

मुद्दियस्स वा मुद्दा फेडिया, अप्पणो य कज्जेण सागारितो "अट्टगतो" त्ति पविट्ठो तेण दिट्ठ। दिट्ठे भणाति – केण इम खडिय ? भिण्ण वा ?

साहू भणन्ति – तेणेहिं।

ताहे सागारितो भणइ – "तेणाण आगमो कह जातो ? जो अम्हेहिं ण णातो" ॥५२६७॥

ताहे सागारिएण चित्तेण अवधारित – "एतेहिं चेव उदग पीत भायण वा खडिय भिण्ण वा।" तत्थ सो भद्दो हवेज्ज पतो वा।

भद्दो इम भणेज्जा –

इहरह वि ताव अम्हं, भिक्खं च बलिं च गेण्हह ण किंचि।
एण्हि खु तारिओ मि, गेण्हह छंदेण जेणऽट्ठो ॥५२६८॥

एय उदगग्गहण मात्तु "इहरह वि" त्ति चरगादिसामण्ण भिक्खग्गहणकाले ज [1]कुटुंबप्पगत ततो भिक्ख अम्ह घरे ण हिंडह, ज वा देवताण वलीकय ततो उव्वरिय पि ण गेण्हह, इण्हि पुण उदगग्गहणेन अणुग्गहो कतो, ससारातो य तारिता। एत्थ जेण भे अण्णेण वि अट्ठो त पि तुब्भे छदेण अप्पणो इच्छाए पज्जत्तिय गेण्हह ॥५२६८॥

इम भद्दपतेसु पच्छित्त –

लहुगा अणुग्गहम्मी, अप्पत्तिय धम्मकंचुगे गुरुगा।
कडुग फरुसं भणंते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२६९॥

जति भद्दगो 'अणुग्गहु" ति भणेज्ज तो चउलहु। पतो अप्पत्तिय करेज्जा।

अपत्तिओ वा इम भणेज्ज – "एते धम्मकचुगपविट्ठा एगलेस्सा लाग मुसति", एत्थ से चउगुरु। कडुगवयण फरुसवयण वा भणति छग्गुरुगा। रायकरभरेहिं भग्गाण समणकरो वोढव्वो त्ति भणते छेदो भवति ॥५२६९॥

मूल सएज्झएसुं, अणवट्ठप्पो तिए चउक्केसु।
रच्छा महापहेसु य, पावति पारंचिय ठाण ॥५२७०॥

[2]सइज्झा समासियगा, तेहिं उदग तेणिय ति एत्थ मूल, तिगे चउक्के वा पसरिते 'तेणगा वा एते' अणवट्ठो, महापहेसु सेसरत्थासु य तेणिय ति य सुए पारचिय ॥५२७०॥

"[3]कडुगफरुस" पच्छद्धस्स इम वक्खाण –

चोरो त्ति कडु दुव्वोडिओ त्ति फरुसं हतो सि पव्वावी।
समणकरो वोढव्वो, जाते मे करभरहताणं ॥५२७१॥

कठा। सपक्खजयणा एसा गता।

[4]परपक्खजयणा इमा –

परपक्खम्मि य जयणा, दारे पिहितम्मि चउलहू होंति।
पिहिणे वि होति लहुगा, जं ते तसपाणघातो य ॥५२७२॥

---

[1] कुडुवपागकय, इत्यपि पाठ। २ सएज्झिया=प्रातिवेश्मिका। ३ गा० ५२६९। ४ गा० ५२५१।

मणुयगोणादी असजतो सव्वो परपक्खो भाणियव्वो, आवत्तणपेढियाए जीववववरोवणभया जति दार न पिहृति तो चउलहु । अह पिहेति तहावि आवत्तणपेढिया जते मचारयलूया उद्देहिगमादीण य तसाण घातो भवति, एत्थ वि चउलहु तसणिप्फण्ण च ।।५२७२।।

अपिहिते इमे दोसा –

गोणे य माणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।
खरए य तेणए या, गुरुगा य पदोसतो ज च ।।५२७३।।

दुवारे अपिहिते गोणादी पविसेज्जा ते जति वारेति तो चउलहु । सो य वारितो वच्चतो अधिकरण जेण हरितादि भलेहिति, तण्णिप्फण्ण अतराय च से कय ।

अहवा – 'खरए" त्ति तस्सेव सतिओ दासो दासी वा तेणगा वा पविसेज्जा, ते जति वारेति तो चउगुरुगा, ते वारिया ममाण पदुट्ठा ज छोभग परितावणादि काहिति तण्णिप्फण्ण पावति ।।५२७३।।

तेसि अवारणे लहुगा, गोसे सागारियस्स सिट्ठम्मि ।
लहुगा य ज च जत्तो, असिट्ठे संकापदं जं च ।।५२७४।।

गोण साण खर खरिय-तेणगा य जति ण वारेति तो पत्तेय ङ्क । ते य अवारिता उदग पिएज्जा, हरेज्जा वा, भायणादि वा विणासेज्जा । गोसे त्ति पच्चूसे जइ सागारियस्स साहेति "अमुगेण अमुगीए वा अमुगेण वा तेणेण राओ उदग पीत" ति चउलहुगा । कहिते सो रुट्ठो दुवक्खरियादीण ज परितावणादि काहीति, "जतो" त्ति बधणघायण विसेसा तो तण्णिप्फण्ण सव्व पावइ । अह ण कहिति तो वि चउलहुगा । साधू य णट्ठे सकेज्जा, सकाए चउलहु । निस्सकिते चउगुरु । अणुग्गहादि वा भद्दपतदोसा हवेज्ज, 'ज च" पदुट्ठो णिच्छुभणादि करेज्ज ।।५२७४।।

गोणादियाण सव्वेसि वारणे इमे दोसा –

तिरियनिवारण अभिहणण मारण जीवघातो नासंते ।
खरिया छोभ विसाऽगणि, खरए पंतावणादीया ।।५२७५।।

सव्वे वि गोणादी तिरिया णिवारिज्जता सिंगादिणा आहणेज्ज, तत्थ परितावणादि जाव मरण भवे, सो वा णिवारितो जीवघात करेतो वच्चेज्जा । खरिया य णिवारिता छोभग देज्ज – "एस मे समणो पत्थेति", विसगरादि वा देज्ज, वसहि वा अगणिणा झामेज्ज । खरगो वि पदुट्ठो पतावणादि करेज्ज, भायणाणि वा विणासेज्ज, सेज्जातर वा पतावेज्ज ।।५२७५।।

तेणगा इमेहि कारणेहि उदग हरेज्जा–

आसण्णो य छणूसवो, कज्जं पि य तारिसेण उदएण ।
तेणाण य आगमणं, अच्छह तुण्हिक्कगा तेण ।।५२७६।।

आसण्णे छणे ऊसवे वा, छणो जत्थ विसिट्ठ भत्तपाण उवसाहिज्जति, ऊसवो जत्थ त च उवसाधिज्जति, जणो य अलकिय विभूसितो उज्जाणादिसु मित्तादिजणपरिवुडो खज्जादिणा उवललति । तम्मि छणे ऊसवे वा तारिसेण उदगेण अवस्स कज्ज ।

तम्मि य अप्पणो गिहे अविज्जमाणे उदगतेणणट्ठाए आगता तेणा । ताहे अगीता भणति – "तेणा आगता, अच्छह भते ! तुण्हिक्का, ण कप्पति कहेतु अय तेणो, अय उवचरए" त्ति । अधवा – तेणा आगता सजतहि दिट्ठा । ते तेणगा भणति – "तुण्हिक्का अच्छह, मा भे उद्दविस्सामो" ॥५२७६॥

उच्छवछणेसु संभारितं दगं ति मितरोगितट्ठा वा ।
दोहल-कुतूहलेण व, हरंति पडिसेवियादीया ॥५२७७॥

तेसु छणूसवेसु तिमिया पीयणट्ठाए उदग वासवासिय कप्पूरपाडलावासिय वा चउपचमूलसभारकय वा रोगियस्सट्ठाए अवहरति, गुव्विणीए वा डोहलट्ठाए, कोउगेण वा केरिसो एयस्स साओ ? त्ति, पडिसेविता अण्ण वा अवहरति ॥५२७७॥

गहित च तेहि उदगं, घेत्तूण गता जतो सि गंतव्वं ।
सागारितो उ भणती, सउणो वि य रक्खती नेड्डं ॥५२७८॥

तेणगा घेत्तु उदग गता जत्थ गतव्व । अप्पणो य कज्जेण सागारिओ पभाए आगतो । मुद्दाभेद दट्ठु भणाति – "अज्जो ! सउणो वि, "नेड्ड" त्ति गिह, सो वि ताव अप्पणो गिह रक्खति, तुब्भेहि इम ण रक्खिय" ॥५२७८॥

दगभाणणे दट्ठुं, सजलं व हितं दगं च परिसडितं ।
केण हिय ? तेणेहिं, असिट्ठ भद्देतर इमे तू ॥५२७९॥

अहवा – जलेण भरिय भायण दग च परिसडिय । तत्थ दट्ठु सागारिगो पुच्छति – केण हिय । साहू भणति – तेणेहिति। तत्थ जति तेणग वण्णरूवेण कहेति तो बधणादिया दोसा, "असिट्ठि" त्ति अकहिते भद्दोसा "इतरे" त्ति पतदोसा य इमे ॥५२७९॥

लहुगा अणुग्गहम्मी, अप्पत्तियधम्मकंचुगे गुरुगा ।
कडुग-फरुसं भणते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२८०॥ पूर्ववत्

मूल सएज्झएसुं, अणवट्ठप्पो तिए चउक्केसु ।
रच्छ-महापहेसु य, पावति पारंचियं ठाणं ॥५२८१॥ पूर्ववत्

एगमणेगे छेदो, दिय रातो विणास-गरहमादीया ।
ज पाविहिंति विहणिग्गतादि वसहिं अलभमाणा ॥५२८२॥

पूववत् । एगस्स साधुस्स अणेगाण वा वोच्छेद करेज्जा । अहवा – तद्दव्वस्स अणेगाण वा । जति दिवसतो णिच्छुभेज्जा ⁘ , रातो वा ⁘ । अण्ण वा वसहि अलभता तेणसावयादिएहि विणास पाविज्जति, लोगेण वा गरहिज्जति । एते तेणग त्ति । ततो य णिच्छूढा विह पडिवण्णा ज सीउण्हखुप्पिवासपरीसहमादी तेणसावयादीहि वा वसहि अलभता ज पावेति तण्णिप्फण्ण पावेति ।

अथवा – तस्स दोसेण अण्णे विह णिग्गतादिया वसहि अलभता ज पाविहिति तण्णिप्फण्ण पावति । एव अकहिज्जते तेणे दोसा । अध तेण कहेज्ज – ज ते तेणगाण काहिति तेणगा वा तस्स साधुस्स वा ज काहिंति ॥५२८२॥ एते अगीयत्थस्स दोसा ।

इदाणि गियत्थस्स विवी भण्णइ –

गीयत्थस्स वि एव, णिक्कारण कारणे अजतणाए ।
कारणे कडजोगिस्स उ, कप्पति वि तिविहाए जयणाए ॥५२८३॥

गीयत्थो वि जो निक्कारणे उदगसालाए ठाति, कारणे वा ठिनो जयण ण करेति। कडजोगी गीयत्थो। तिविधा जयणा – अणुण्णवणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ॥५२८३॥

निक्कारणम्मि दोसा, पडिबंधे कारणम्मि णिद्दोसा ।
ते चेव अजयणाए, पुणो वि सो पावती दोसे ॥५२८४॥

जइ निक्कारणे उदगपडिबद्धाए वसहीए ठाति तो ते चेव पुव्वभणिता दोसा भवति । कारणे पुण ते चेव दोसे पावति जे अजयणट्ठिताण ॥५२८४॥

किं पुण त कारण ?, इम –

अद्धाणणिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।
गीयत्था जयणाए, वसंति तो उदगसालाए ॥५२८५॥

विसुद्धवसहीए असति सेस कठ ॥५२८५॥

तत्थ य अणुण्णवणाए जति वसहिसामी भणेज्ज – "जति अम्ह किं चि जोतिमाति कहेस्सह ता भे वसहिं देमो ।"

तत्थ साधूहिं वत्तव्व –

न वि जोतिमं न गणियं, न चऽक्खरे न वि य किं चि रक्खामो ।
अप्पस्सगा असुणगा, भायणसंभोवमा वसिमो ॥५२८६॥

जोतिमाति ण सिक्खवेमो, ण वा जाणामो त्ति वत्तव्व, जहा भायणखभ कुड्डादिया तुज्झ सुत्थदुत्थेसु वावार ण वहंति एव अम्हे विसामो । जति ते किंचि कज्जविवत्ति पेच्छामो त पेच्छता वि अपस्सगा इह अच्छामो । जइ वा कोइ भणेज्जा – इम मेज्जातरस्स कहेज्जह, अमुणत वा सुणावेह, तत्थ वि अम्हे असुणगा ॥५२८६॥

णिक्कारणम्मि एव, कारणदुलभे भणतिमं वसभा ।
अम्हे ठियल्लग च्चिय, अहापवत्तं वहह तुब्भे ॥५२८७॥

उस्सग्गेण एव ठायति । असिवोमादिदुब्भिक्खकारणेसु अण्णतो अगच्छता तत्थ य सुद्धवसही दुल्लभा ताहे उदगसालाए ठायता इम भणति साधारणवयण वसभा "अम्हे ता ठियचित्ता, तुम्हे पुण ज अहापवत्त वावारवहण दिवसदेवसिय त वहेह चेव ॥५२८७॥ गया अणुण्णवणजयणा ।

इमा [1]सपक्खजयणा –

आम ति अब्भुवगए, भिक्ख-वियारादि णिग्गय सिएसुं ।
भणति गुरू सागरियं, कत्थुदगं जाणणट्ठाए ॥५२८८॥

---

१ गा० ५२८३ ।

सागारिगेण अब्भुवगय – 'णिरुवगारी होउ अच्छह त्ति, अहापवत्त वावार वहिस्सामो' त्ति, ताहे तत्थ ठिया, इहरा ण ठायति । तत्थ ठियाण इमा विही – जाहे सव्वे भिग. भिक्खादिणिग्गता भवन्ति ताहे गुरू उदगजाणणट्ठा अण्णावदेसेण सागारियस्स पुरतो ॥५२८८॥

इम भणति –

चउमूल पचमूला, तालोदाणं च तावतोयाण ।
दिट्ठभए सन्निचिया, अण्णादेसे कुव्वाण ॥५२८९॥

चउहि पचहि वा अण्णतमेहि सुरहिमूलेहि पाणट्ठा सभारकड तालोद तोसलीए तावोदग गयगिहे ॥५२८९॥

एवं च भणितमेत्तम्मि कारणे सो भणाति आयरिए ।
अत्थि ममं सन्निचिया, पेच्छह णाणाविहे उदए ॥५२९०॥

जाहे एव भणितो गुरुणा ताहे कमपत्ते कहणकारणे सेज्जातरा पच्छद्धेण भणति – "एत्थभोयणे तावोदग, एत्थ तालोदग" एव तेण सव्व कहिता ॥५२९०॥

ते य गुरुणा –

उवलक्खिया य उदगा, संथारगाण जहाविही गहणं ।
जो जस्स उ पाओग्गो, सो तस्स तहि तु दायव्वो ॥५२९१॥

ताहे सथारगाण अहाराइणियाए विहिगहणे पत्ते वि त सामायारि भेत्तु गुरवो अप्पत्तिय तत्थ करन्ति, जो जस्स जम्मि ठाणे जोगो सथारगो तस्स तहि ठाण देति ॥५२९१॥

तत्थिमो विही –

निक्खम-पवेसवज्जण, दूरे य अभाविता उ उदगस्स ।
उदयंतेण परिणता, चिलिमिणि राडदिय असुण्णं ॥५२९२॥

सागारियस्स उदगादिगहणट्ठा पविसमाणस्स णिक्खमण-पवेसो वज्जेयव्वो । उदगभायणाण य अभाविया अगीया अनिपरिणामगा सदवम्मा य दूरतो ठविज्जति । जे पुण धम्मसद्धिया थिरचित्ता ते उदगभायणाण ठाणे य अतरे कडगो चिलिमिली वा दिज्जति । गीयत्थपरिणामगेहिं य दियारातो य असुण्ण कज्जति ॥५२९२॥

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संथारगा विधीपुव्वं ।
जागरमाण वसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५२९३॥

जहा तत्थ दोसो ण भवति तहा सथारगा घेत्तव्वा, एसेव तत्थ विधी । सपक्ख रक्खता तत्थ गीयत्था सदा सजागरा सुवति ॥५२९३॥

अधवा –

ठाणं वा ठायती, णिसेज्ज अहवा सजागरे सुवति ।
बहुसो अभिद्दवंते, वयणमिण वायणं देमि ॥५२९४॥

जो वा दढसंघयणो अत्थचिंतगो सो ठाणं ठाति, णिसण्णो वा झायमाणो चिट्ठइ ।

अधवा – गीयत्थो कृतकेन सव्वेसिं पुरतो भणति –"संदिसह भंते ! सव्वराइयं उस्सग्गं करेस्सामि।" पच्छा सुत्तेसु सुवति, अण्णदिणं अण्णो संदिसावेति । एवं रक्खंति । वसभा वा सजागरा सुवंति, जति तत्थ दगाभिलासी दगभायणंतेण आगच्छति तत्थ तहा गुरवो वसभा वा संजीहारं करेंति, जहा सो पडिणीयत्त त्ति ।

अध सो पुणो पुणो अभिद्दवति ताहे गुरू सामण्णतो वयणं भणाति – "उट्ठेह भंते ! वायणं देमि।" तं वा भणाइ "अज्जो ! वायणं वा ते देमि" ॥५२६४॥

फिडितं च दगट्ठिं वा, जतणा वारेंति ण तु फुडं बेति ।
मा तं सोच्छिति अण्णो, णित्थक्कोऽकज्ज गमणं वा ॥५२६५॥

फुडं रुक्खं ण भणंति, मा तं अण्णो सोउं अण्णेसिं कहेस्सति ।

पच्छा सव्वेहि णाते गुरुणा वा फुडं भणिते णित्थक्को णिल्लज्जो भवति ।

पच्छा णिल्लज्जीभूतो अकज्जं पि करेति, णातो मि त्ति लज्जितो वा पडिगमणादीणि करेज्ज। ॥५२६५॥

"[१]जयणाए वारेंति" त्ति अस्य व्याख्या –

दारं न होति एत्तो, निद्दामत्ताणि पुच्छ अच्छीणि ।
भण जं च संकितं ते, गेण्हह वेरत्तियं भंते ! ॥५२६६॥

कंठा । सपक्खजयणा गता ।

[२]इमा परपक्खजयणा –

परपक्खम्मि वि दारं, ठयंति जयणाए दो वि वारेंति ।
तहवि य अठायमाणे, उवेह पुट्ठा व साहंति ॥५२६७॥

परपक्खेसु दारं ठयंति इमाए जयणाए –

पेहपमज्जणसणियं, उवओगं काउं दारे घट्टेंति ।
तिरिय णर दोण्णि एते, खर-खरि त्थि-पुं णिसिट्ठितरे ॥५२६८॥

चक्खुणा पेहिउं रयोहरणेण पमज्जंति, अचक्खुविसए वा उवओगं काउं ।

अधवा – सचक्खुविसए वि उवओगकरणं ण विरुज्झति । एवं च सणियं जहा जीवविराधणा ण भवति तहा जयणाए दारं ठयंति ।

अहवा – "जयणाए दो वि वारेंति" तिरिया णरा य एते दोण्णि ।

अहवा – दोण्णि – दासो दासी य, अहवा – दोण्णि – इत्थी पुरिसो य ।

अहवा – दोण्णि "निसिट्ठितर" त्ति जेसिं पवेसोऽणुण्णातो ते निसिट्ठा, णाणुण्णातो पवेसो जेसिं ते इतर त्ति ।

---

१ गा० ५२६५ । २ गा० ५२८३ ।

अहवा – अक्कतियतेणा णिसट्ठा इतरे अणिसट्ठा, उवरि वक्खाणिज्जमाणा, जयणाए । तहा य अट्ठायमाणेसु "उवेह" त्ति तुण्हिक्को अच्छति । सागारिणा वा पुट्ठो – "केणुदग णीय?" ति ताहे साहेंति "अमुगेण अमुगीए वा" ॥५२६८॥

गेण्हंतेसु य दोसु वि, वयणमिणं तत्थ बेति गीयत्था ।
बहुग च णेसि उदग, किं पगयं होहिती कल्लं ॥५२६९॥

इत्थिपुरिमादिसु दोसु वि गेण्हतेसु गुरुमादी गीयत्था इम वयण (भणंति) पच्छद्ध कठ ॥५२६९॥

तेणगेसु इमा विही –

नीसट्ठेसु उवेहं, सत्थेणं तासिता तु तुसिणीया ।
बहुसो य भणति महिलं, जह त वयण सुणति अन्नो ॥५३००॥

तेणा दुविधा – णिसट्ठतेणा अणिसट्ठतेणा य । णिसट्ठा अक्कतिया बला अवहरति जहा पभवो । तेसु आगतेसु उवेह करेइ, तुण्हिक्को अच्छइ ।

अहवा – खग्गादिणा सत्थेण तासिता – तुण्हिक्का अच्छह मा भे मारेम ।

अह महिला उदग णेति तत्थ इम वयण – "बहुसो य पच्छद्ध" ॥५३००॥

अस्य व्याख्या –

साहूणं वसहीए, रत्तिं महिला ण कप्पती एंती ।
बहुगं च नेसि उदगं, किं पाहुणगा वियाले य ॥५३०१॥
तेणेसु णिसट्ठेसु पुव्वा-ऽवररत्तिमल्लियंतेसु ।
तेणुदयरक्खणट्ठा, वयणमिम बेति गीयत्था ॥५३०२॥

"तेणे" त्ति उदग जे तेणेति, तेसिं रक्खणट्ठा गीयत्था उच्चसद्देण इम भणति ॥५३०२॥

जागरह णरा ! णिच्च, जागरमाणस्स वड्ढती बुद्धी ।
जो सुवति ण सो सुहितो, जो जग्गति सो सया सुहितो ॥५३०३॥ कठा
सुवति सुवंतस्स सुय, संकियखलिय भवे पमत्तस्स ।
जागरमाणस्स सुय, थिरपरिचियमप्पमत्तस्स ॥५३०४॥

"सुवति" त्ति नश्यतीत्यर्थ । अहवा – निद्राप्रमत्तस्य सुत्तत्था सकिता भवति खलति वा, णो दरदरस्स आगच्छति, सभरणेण आगच्छति, नागच्छति वेत्यर्थ । विगहादीहिं वा पमत्तस्स सुय अथिर भवति ॥५३०४॥

सुवइ य अजगरभूतो, सुयं पि से णासती अमयभूयं ।
होहिति गोणब्भूयो, सुय पि णट्ठे अमयभूये ॥५३०५॥

अयगरस्स किल महती निद्दा भवति, जेण जहा निच्चितो सुवइ ।

किं चान्यत् –

जागरिता धम्मीणं, आधम्मीणं च सुत्तगा सेया ।
वच्छाहिवभगिणीए, अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥५३०६॥

वच्छजणवए कोसबी णगरी, तस्स अहिवो सताणितो राया, तस्स भगिणी जयती। तीए भगव वद्धमाणो पुच्छिओ। [1]धम्मियाण कि सुत्तया, सेया ? जागरिया सेया ? भगवया वागरिअ – "धम्मियाण जागरिया सेया, णो सुत्तया। अधम्मियाण सुत्तया सेया, णो जागरिया।"

"अक्खिसु" त्ति अतीते एव कहियवान् ॥५३०६॥

कि चान्यत् –

णालस्सेण सम सोक्खं, ण विज्जा सह णिद्दया।
ण वेरग्गं ममत्तेण, णारंभेण दयालुया ॥५३०७॥ कठा

तामेतूण अवहिते, अवेडएहिं व गोमे माहेति।
जाणते वि य तेण, माहति न वण्ण-रूवेहिं ॥५३०८॥

अक्कनियतेगेहिं सत्थेण तासेउ, अणक्कतिएहिं वा अवइएहिं य, एव अण्णयरप्पगारेण हरिते, "गोमि' त्ति पच्चूसे सेज्जातरस्स कहेति, जति वि ते णामाएण जाणति तहावि त ण कहेति, अकहिज्जते वा जति पच्चगिरा भवति ता कहेति ॥५३०८॥ "स उदग" त्ति सेज्जा गता।

इदाणि उदगसमीवे सा भण्णइ –

इति सउदगा तु एसा, उदगसमीवम्मि तिण्णिमे भेदा।
एक्केक्क चिट्ठणादी, आहारुच्चार-झाणादी ॥५३०९॥

जा सा उदगसमीवे तस्स तिण्णि भेदा, तेसु तिसु भेदेसु एक्केक्के चिट्ठणादिया किरियविसेसा करेज्ज ॥५३०९॥

ते य इमे तिण्णि भेदा –

दगतीरचिट्ठणादी, जूवग आतावणा य बोधव्वा।
लहुगो लहुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५३१०॥

[2]चिट्ठणादिया दस वि पदा एक्क पद। जूवग ति बितिय। आयावणं ति ततिय। चिट्ठणादि दस वि उदगसमीव करेतस्स पत्तेय मासलहु। जूवगे वसहि गेण्हति ङ्क। आतवेति ङ्क। जूवग वा सकमेण गच्छति ङ्क। तिसु वि ठाणेसु पत्तेय आणादिया दोसा भवति ॥५३१०॥

दगतीर दगासण्ण दगब्भास ति वा एगट्ठ। तस्स पमाणे इमे आएसा –

णयणे[1] पूरे[2] दिट्ठे[3], तडि[4] सिंचण[5] वीइमेव[6] पुट्ठे[7] य।
आगच्छते आरण्ण, गाम पसु मणुय इत्थीओ ॥५३११॥

चोदगो भणइ—"अह दगतीर भणामि, उदगागरातो जत्थ णिज्जति उदग त उदगतीर" ?

---

१ भग० श० १२ उ० २। २ गा० ७ देखो ५३२५।

आयरिओ भणति – दूरं पि णज्जति उदग, तम्हा ण होइ त उदगतीर।

तो जत्तिय णदीपूरेण अक्कमइ त उदगतीर।

अथवा – जहिं ठिएहिं जल दीसइ, अथवा – णदीए तडी उदगतीर।

अथवा – जहिं ठितो जलट्ठिएण सिच्चिज्जइ सिंगगादिणा त जलतीर।

अथवा – जावतिय वीति (चि) ओ फुसति, अथवा – जावतिय जलेण पुट्ठ त दगतीर"।

आयरिओ भणइ – 'ण होइ एय दकतीर।"

दगतीरलक्खण इम भणति – आरण्णा गामेयगा वा दगट्ठिणो आगच्छमाणा पसु मणुस्सा इत्थिगाओ वा साधु दगतीरट्ठिय दट्ठु थक्कति – णियत्तति वा जत्तो त उदगतीर ॥५३११॥

पुणरवि आयरिओ भणति –

सिचण-वीयी-पुट्ठा, दगतीरं होइ ण पुण तम्मत्तं।
ओयरिउत्तरितुमणा, जहि दिस्स तसंति तं तीरं ॥५३१२

णयणादियाण सत्तण्ह आदेसाण चरिमा तिण्णि सिचण, वीति पुट्ठो य, एते णियमा दगतीर। सेसा भयणिज्जा। इम अव्वभिचारि दगतीर – आरण्णा गामेयगा वा तिरिया वा मणुस्सा वा दगट्ठिणो आयरिउमणा पाउ वा उत्तरिउमणा जलचरा वा जहि ठिय साधु दट्ठूण चिट्ठति, त्रसति वा त दगतीर भवति ॥५३१२॥

दगतीरे चिट्ठणादिसु इमे दोसा –

अहिकरणमंतराए, छेदण उस्सास अणहियासे य।
आणा सिचण जल-थल-खहचरपाणाण वित्तासो ॥५३१३॥

दगतीरे चिट्ठतस्स अधिकरण भवति, बहूण य अतराय करेति। "छेदण" ति – साधुस्स चरण जो उट्टिय-स्सो सा ज्ञा णिवडति 'उस्सासे" ति – उस्सासविमुक्कपोग्गला जले णिवडति। जल वा फुसेज। दगतीरे ठितो वा तिसितो पिपासुत्तो अणहियासो जल पिवेज्जा। तित्थकराणाभगो य। दगतीरे ठिय वा पसुणा पडिणीयट्ठयाए काति सिचेज्ज। दगतीरट्ठिओ य जल-थल-खहचराण वित्तास करेति ॥५३१३॥

"अधिकरण" ति अस्य व्याख्या –

दट्ठूण वा णियत्तण, अभिहणणं वा वि अण्णतूहेणं।
गामा-ऽऽरण्णपसूण, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५३१४

"[1]दट्ठूण वा नियत्तण" त्ति अस्य व्याख्या –

पडिपहणियत्तमाणम्मि अंतरागं (यं) च तिसरणे चरिमं।
सिग्घगति तन्निमित्तं, अभिघातो काय-आताए ॥५३१५

गामेयगा अरण्णवासिणो वा, गामेयगा ताव ठप्पा। आरण्णा तिसिया तित्थाहिमुहा एता दगतीरे त साधु दट्ठूण पडिपहेण गच्छतेसु अधिकरण, छक्काए य वहेति, उदग च अपाउ जति ते पडिपहेण

[1] गा० ५३१३।

गच्छति तो अन्तराय भवति, चमट्टातो परितावणादी दोसा, एगम्मि परितावित्ते छेदो, दोसु मूल, तिसु अणवट्ठो।[1]

अह एक्क तिसाए मरइ तो मूल, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारचिय।

"[2]अभिहणण वा वि" अस्य व्याख्या – "सिग्घगति" पच्छद्ध, "तण्णिमित" ति – त साधु दट्ठु भीता सिग्घगती अण्ण अण्णोण्ण वा अभिघायति, छक्काए वा घाएति, साहुस्स वा दित्ता वाघात, करेज्जा, तिसिया वा अणधियामत्तणतो साहु णोल्लेउ अभिहणेउ गच्छेज्जा ॥५३१५॥

"[3]अण्णतूहेण" ति अस्य व्याख्या –

अतड-पवातो सो च्चेव य मग्गो अपरिभुत्त हरितादी।
ओवड कूडे मगरा, जदि घोट्टे तसा य दुहतो वि ॥५३१६॥

तत्थ ठित साधु दट्ठु 'अतड" ति अतित्थ अणोतार तण ओयरेज्जा। तत्थ छिण्णटके प्रपाते आयविराहणा से हवेज्ज।

अहवा – सो चेव अट्टिणवो मग्गो पयट्टेज्ज, तत्थ अपरिभुत्ते अणाणुपुव्वीए छक्काया विराहिज्जेज्ज। "[4]ओवड" ति – खड्डातीते पडेज्ज, अतित्थे वा कूडेण घेप्पेज्ज, अतित्थे वा जलमोइण्णो मगरातिणा सावयेण खज्जेज्ज। साधुनिमित्त तित्थेण अनित्थेण वा ओयरित्ता अतसे आउक्काए जति सो घोट्टे करेइ ततिया चउलहुगा, अचित्ते आउक्काए जइ बेदिये घमति तो छल्लहुग, तेइदिए छग्गुरुग, चउरिंदिए छेदो, पचेदिए एक्कम्मि मूल, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारचिय। 'दुहतो वि" त्ति – जत्थ आउक्काओ सचित्तो सतसो य तत्थ दो वि पच्छित्ता भवति, चउरिंदिएसु चउसु पारचिय, तेइदिएसु पचसु पारचिय, बेदिएसु छसु पारचिय ॥५३१६॥ एते ताव आरण्णगाण दोसा भणिता।

इदाणि [6]गामेयगाण दोसा भण्णति –

गामेय कुच्छियमकुच्छिते य एक्केक्क दुट्ठऽदुट्ठा य।
दुट्ठा जह आरण्णा, दुगुछित[7]ऽदुगुछिता णेया ॥५३१७॥

ते गामेयगा तिरिया दुविधा – दुगुछिता अदुगुछिता य। दुगुछिता गद्दभाती, अदुगुछिता गवादी। दुगुछिता दुट्ठा अदुट्ठा य। अदुगुछिया वि एव। जे दुगुछिता अदुगुछिता वा दुट्ठा ते दोवि जहा आरण्णा भणिता तहा भाणियव्वा ॥५३१७॥

जे अदुगु छिता अदुट्ठा तेसु नत्थि दोसा जहासभव भाणियव्वा,

जे ते दुगु छिया अदुट्ठा तेसु इमे दोसा –

भुत्तयरदोस कुच्छिते, पडिणीए छोभ गेण्हणादीया।
आरण्णमणुय-थीसु वि, ते चेव णियत्तणादीया ॥५३१८॥

तिरियत्तो महासद्दिता दुगुछिताले, जेण गिहिका भुत्ता तस्स त दट्ठु सतिकरण, "इतरे" त्ति – जेण ण भुत्ता तस्स त दट्ठु कोउअ भवति, कुच्छियासु वा आसण्णठियासु पडिणीतो कोइ छोभ देज्ज – "मए

१ चतुषु परितापितेषु पाराचिक, इति बृ० वृ० गा० २३८६। २ गा० ५३१४। ३ गा० ५३१४। ४ उवग, इति पूनासत्कताडपत्रप्रतौ। ५ अन्ननित्थेण, इत्यपि पाठ। ६ गा० ५३१४। ७ ऽकुछिता इत्यपि पाठ।

एस समणगो महासद्दिय पडिसेवतो दिट्ठो", तत्थ वि गेण्हणादिया दोसा । एव गामारण्णतिरिएसु दोसा भणिता। जा य जत्थ काए आरोवणा भणिता सा सव्वा उववजितूण भाणियव्वा ।। एते तिरियाण दोसा भणिता ।

इदाणि मणुस्साण "आरण्णमणुय" पच्छद्ध ।

मणुया दुविधा – आरण्णगा गामेयगा य । तत्थ आरण्णयाण पुरिसाण य इत्थियाण य ते चेव णियत्तणादिया दोसा जे तिरियाण भणिया ।।५३१८।।

इमे य अण्णे दोसा –

पाव अवाउडातो, सबरादीतो तहेव णित्थक्का ।
आरियपुरिस कुतूहल, आतुभयपुलिंद आसुवधो ।।५३१९।।

पुव्वद्ध कठ । णित्थक्का णिल्लज्जा । तातो साधु दट्ठूण आरियपुरिसो त्ति काउ पुलिंदियादिअणारिया कोउएण साधुममीव एज्जताओ दट्ठु आयपरउभयसमुत्था दोसा भवेज्ज । मेहुणपुलिंदो वा त इत्थिय साधुसगासमागत दट्ठु ईसायतो रुट्ठो "आमु" सिग्घ मारेज्ज ।।५३१९।।

थी-पुरिसअणायारे, खोभो सागारियं ति वा पहणे ।
गामित्थी-पुरिसेसु वि, ते विय दोसा इमे चऽण्णे ।।५३२०।।

अधवा – सो पुलिंदपुरिसो पुलिंदयाए सह अणायार आयरेज्ज, तत्थ भुत्ताभुत्ताण सतिकरणकोउएहिं चित्तखोहो हवेज्ज । खुभिए य चित्ते पडिगमणादिया दोसा ।

अहवा – सो पुलिंदतो अणायारमायरिउकामो सागारिय ति काउ साधु पहणेज्जा मारेज्ज वा । एते आरण्णयाण दोसा । गामेयकपुरिसइत्थीण वि एते चेव दोसा, इमे य अण्णे दोसा ।।५३२०।।

चंकमण णिल्लेवण, चिट्ठित्ता चेव तम्मि तूहम्मि ।
अच्छंते संकापद, मज्जण दट्ठुं सतीकरणं ।।५३२१।।

"[1]चकमणे" त्ति अस्य व्याख्या –

अण्णत्थ व चंकमती, [2]मज्जण अण्णत्थ वा वि वोसिरती ।
कोनाली चंकमणे, परकूलातो वि तत्थेति ।।५३२२।।

कोइ अण्णत्थ चकमतो साधु दगतीरे दट्ठु तत्थेति एत्थ साधुसमीवे चेव चकमण करेस्सामि, किं चि पुच्छिस्सामि वा बोलचालाव सकहाए अच्छिस्सामि, साधु वा दगतीरे चकमत दट्ठु गिही अण्णथाणाओ तत्थेइ अह पि एत्थेव चकमिस्स, सो य अयगोलसमो विभासा ।

अहवा – तत्थ [3]दगतीरे चकमण करेस्सामीति आगतो तत्थ साधु दट्ठूण चितेति – "जामि इतो ठाणातो अण्णत्थ चकमण करेस्सामी" ति गच्छति, गच्छते अधिकरण । "[4]णिल्लेवण" ति अस्य व्याख्या – "[5][6]मज्जण अण्णत्थ वा वि वोसिरति" । सण्ण वोसिरितु अण्णत्थ णिल्लेवेउकामो साधु दट्ठ साहुसमीवे एउ निल्लेवेइ । एव मज्जणपि, मज्जण ति ण्हाण ।

अहवा – तत्थ निल्लेविउ कामो साहु दट्ठु अण्णत्थ गतु णिल्लेवेति एव मज्जण सण्णवोसिरण पि ।

१ गा० ५३२१ । २ आयमण इत्यपि पाठ । ३ समीवे, इत्यपि पाठ । ४ गा० ५३२१ । ५ आयमण इत्यपि पाठ । ६ गा० ५३२२ ।

"[1]चिट्ठिना चेव तम्मि तूहम्मि" अस्य व्याख्या – "कोनाली" पच्छद्ध। गतुकामो सागारिगो साधु दगतीरे दट्ठु तम्मि चेव "तूहम्मि" त्ति तित्थे चिट्ठति।

अहवा – परकूलातो वि साधुसमीव एति। "कोनालि" त्ति गोट्ठी। गोट्ठीए स धुणा सह बोल्लालाव-सकहेण चकमण करेतो अच्छिस्स, तत्थ साधुसलावणिमित्त अच्छतो छक्काए वधति ॥५३२२॥

"[2]अच्छने सकापद" त्ति अस्य व्याख्या –

दग-मेहुणसंकाए, लहुगा गुरुगा य मूल णीसंके ।
दगतूर कुचवीरग, पधंस वेसादलंकारे ॥५३२३॥

दगतीरे साधु अच्छत दट्ठु कोइ सकेज्जा – कि उदगट्ठा अच्छति। अह किं सगारदिण्णतो ? तत्थ दगसकाए चउलहु, णिस्सके चउगुरु। मेहुणसकाए चउगुरु, णिस्सकिते मूल।

"[3]मज्जण दट्ठु सतीकरण" त्ति अस्य व्याख्या – "दगतूर" पच्छद्ध। कोति सविगार मज्जति, दगतूर करेतो एरिस जल अप्फालेति जेण मुरवसद्दो भवति। एव पडह-पणव-भेरिमादिया सद्दा करेति।

अधवा – कुचवीरगेण जल आहिंडति। कुचवीरगो सगडपक्खसारिच्छ जलजाण कज्जति। सुगध-दव्वेहि य आघममाण केसवत्थमल्लआभरणालकारेण य आभरेते दट्ठु भुत्तभोगिसतिकरण, इयराण कोउय भवइ। पडिगमणादी दोसा ॥५३२३॥ एते पुरिसेसु दोसा।

इमे इत्थीसु–

मज्जण-ण्हाणट्ठाणेसु अच्छती इत्थिणं ति गहणादी ।
एमेव कुच्छितेतर-इत्थीसविसेस मिहुणेसु ॥५३२४॥

इत्थीओ दुविहा – अदुगुछिता दुगुछिता य। तत्थ अदुगुछिता बभणी खत्तिया वेमि सुद्दी य। दुगुछिता सभोइयदुअक्खरियाओ, अहवा णडवरुडादियाओ असभोइयइत्थिआओ। एताओ वि दुविधाओ – सपरिग्गहा अपरिग्गहाओ य। एत्थ सपरिग्गहित्थियाण वसताइसु अण्णत्थ ऊसवे विभवेण जा जलक्रीडा समज्जण, मलडाहोवसमकरणमेत्त ण्हाण, जलवहणपहेसु वा अण्णेसु वा णिल्लेवणट्ठाणेसु इत्थीण अच्छतस्स आयपरोभय-ससुत्था दोसा।

अधवा – तंसि णाययो पासित्ता जत्थऽम्ह इत्थीओ मज्जणादी करेति तत्थ सो समणो परिभव – कामेमाणो अच्छति, दुट्ठो त्ति काउ गेण्हणादयो दोसा। जाओ पुण अपरिग्गहाओ कुच्छिया इयर त्ति अकुच्छिया व इत्थीओ तासु वि एव चेव आयपरोभयसमुत्था दोसा। "मिहुण" ति जे सइत्थिया पुरिसा तेसु मिहुणक्रीडासु क्रीडतेसु सविसेसतरा दोसा भवति ॥५३२४॥

जम्हा दगसमीवे एवमादिया दोसा तम्हा [4]चिट्ठणादिया पदा इमे तत्थ णो कुज्जा –

चिट्ठण[1] णिसिय[2] तुयट्टे[3], निद्दा[4] पयला[5] तहेव सज्झाए[6] ।
झाणा[7]ऽऽहार[8]वियारे[9], काउस्सग्गे[10] य मासलहुं ॥५३२५॥

उद्धट्ठितो चिट्ठइ, णिसीयण उवविट्ठो चिट्ठइ, तुयट्टो णिव्वण्णो अच्छति ॥५३२५॥

१ गा० ५३२१। २ गा० ५३२१। ३ गा० ५३२१। ४ गा० ५३१०।

पयलणिद्दाण इम वक्खाण –

सुहपडिबोहो णिद्दा, दुहपडिवोहो य णिद्द-णिद्दा य ।
पयला होति ठियस्सा, पयलापयला उ चंकमतो ।।५३२६।।

वायणादि पञ्चविहो मज्झाओ । "[1]झाणि" ति धम्मसुक्के झायति, आहोर वा आहारेति, "वियारे" त्ति उच्चारपासवण करेंति, अभिभवस्स काउस्सग वा करेति । एतेसु ताव दसस पदेसु अविसुद्ध असामायारि-णिप्फण्ण मासलहु ।।५३२६।।

इदाणि विभागओ पच्छित्त वण्णेउकामो अणाणुपुव्वीचारणियपदसगह चारणियविकप्पसु च ज पच्छित्त त भणामि –

संपाइमे असंपाइमे य अदिट्ठे तहेव दिट्ठे य ।
पणगं लहु गुरु लहुगा गुरुग अहालंद पोरिसी अधिका ।।५३२७।।

त दगतीर दुविह सपातिमसपातिम वा ।

एतेसि इमा विभासा –

जलजाओ असंपातिम, संपाइम सेसगा उ पचेदी ।
अहवा विहंगवज्जा, होति असंपाइमा सेसा ।।५३२८।।

अण्णठाणातो आगतु जे जले जलचरा वा थलचरा वा पचेंदिया सपतति ते सपाइमा, जे पुण जलचरा वा तत्रस्था एव ते असपातिमा ।

अहवा – खहचरा आगत्य जले सपतति सपाइमा । सेसा विहगवज्जा थलचरा सव्वे असपाइमा । एतेहिं सपाइमऽसपातिमेहिं जुत्त दुविध दगतीर । एयम्मि दुविधे दगतीरे तेहिं सपातिमेहिं दिट्ठो अच्छति अदिट्ठो वा । ज त अच्छति काल तस्सिमे विभागा – अधालद पोरिसि ।

अधिग च पोरिसि लदमिति कालस्तस्य व्याख्या – तरुणित्थीए उदउल्लो करो जावतिएण कालेण सुक्कति जहण्णो लदकालो । उक्कोसेण पुव्वकोडी । सेसो मज्झो ।

अहवा – जहण्णो सो चेव, उक्कोसो "अ लद" त्ति जहालद, जहा जस्स जुत्त, जहा – पडिमा-पडिवण्णाण अहालदियाण य पचराइदिया, परिहारविसुद्धियाण जिणकप्पियाण णिक्कारणओ य गच्छवासीण वा उडुबद्धे मास, वासासु चउमास, अज्जाण उडुबद्धे दुमास, मज्झिमाण पुव्वकोडी, । एत्थ जहण्णेण अहालद-कालेण अधिकारो ।।५३२८।।

इदाणि सपाति-असपाति-अधालदियादिसु अदिट्ठ-दिट्ठेसु य पच्छित्त भणति –

असंपाति अहालंदे, अदिट्ठे पंच दिट्ठ मासो उ ।
पोरिसि अदिट्ठ दिट्ठे, लहु गुरु अहि गुरुग लहुगा य ।।५३२९।।

असपातिमे अहालद अदिट्ठे अच्छति पच राइदिया । दिट्ठे अच्छइ मासलहु ।

असपाइमेसु पोरिसि अदिट्ठे अच्छइ मासलहू । दिट्ठे मासगुरू ।

---

1 गा० ५३२५ ।

अधिय पोरिसिं अदिट्ठे अच्छति मासगुरु । दिट्ठे चउलहुग ।

सपाइमेसु अहालद अदिट्ठे मासलहु । दिट्ठे मासगुरु ।

पोरिसि अदिट्ठे मासगुरु । दिट्ठे चउलहुग ।

अधिय पोरिसि अदिट्ठे चउलहु । दिट्ठे चउगुरु ॥५३२९॥

संपातिमे वि एव, मासादी णवरि ठाति चउगुरुए ।
भिक्खु वसहाभिसेगे, आयरिए दिसेमिता अहवा ॥५३३०॥

पुव्वद्ध गतार्थं । एव ओहिय गय ।

अधवा – एव चेव भिक्खुस्स वसभस्स अभिसेगस्स आयरियस्स य विसेसिय दिज्जति । भिक्खुस्स उभयलहु, वसभस्स कालगुरु, अभिसेगस्स तवगुरु आयरियस्स, उभयगुरु । एस वितिओ आदेसो ॥५३३०॥

अहवा भिक्खुस्सेवं, वसभे लहुगाति ठाति छल्लहुगे ।
अभिसेगे गुरुगादी, छग्गुरु लहुगादि छेदंतं ॥५३३१॥

भिक्खुस्स एय ज वुत्त । वसभस्स असपाइम-सपाइम-अधालदपोरिसि-अधिय-अदिट्ठदिट्ठेसु पुव्व चारणियविहीते मासलहुगाओ आढत्त छल्लहुए ठायति ।

उवज्झायस्स असपाइमेसु मासगुरुगाओ आढत्त छल्लहुए ठायति, सपातिमेसु चउलहुगातो आढत्त छग्गुरुए ठायति ।

आयरियस्स चउलहुगाओ आढत्त छेदे ठायति । एस ततिओ पगारो ॥५३३१॥

अहवा पंचण्हं संजतीण समणाण चेव पंचण्हं ।
पणगादी आरद्धा, णेयव्वा जाव चरिमं तु ॥५३३२॥

पच सजतीओ इमा – खुड्डी, थेरी, भिक्खुणी, अभिसेगि, पवत्तिणी चेव । समणाण वि एते चेव पच भेदा । "पणगादि जाव चरिम" ति ॥५३३२॥

इमे पच्छित्तठाणा –

पण दस पण्णर वीसा, पणवीसा मास चउर छच्चेव ।
लहुगुरुगा सव्वेते, लदादि असंप-संपदिसु ॥५३३३॥

पणगादि जाव छम्मासो सव्वे एते लहुगुरुभेदभिण्णा सोलस भवति । छेदो मूल अणवट्ठो पारचिय च एते चउरो, सव्वे वीस ठाणा । अहालदादिया तिण्णि पदा, असपाइमा दो पदा, अदिट्ठदिट्ठा य दो पदा, चिट्ठणादिया य दसपदा ॥५३३३॥

इदाणि चारणिया कज्जति –

पणगादि असपादिमं, संपातिमदिट्ठमेव दिट्ठे य ।
चउगुरुगे ठाति खुड्डी, सेसाणं वुड्ढि एक्केक्कं ॥५३३४॥

खुड्डी चिट्ठति असपाइमे अहालद काल अदिट्ठे पचराइदिय लहुया । दिट्ठे पच राइदिया गुरुया ।

खुड्डी चिट्ठति असपातिमे पोरिसि अदिट्ठे पच राइदिया गुरुया । दिट्ठे दस राइदिया लहुया ।

खुड्डी चिट्ठइ असपाइमे अधिय पोरिसिं अदिट्ठे दसराइदिया लहुया । दिट्ठे दस राइदिया गुरुया ।

एय असगातिमे भणिय ।

सपाइमे पुण पचराइदिएहिं गुरुएहिं आढत्त पण्णरसराइदिएहिं लहुए ठाति ।

एय चिट्ठतीए भणिय णिसीयतीए पचराइदिएहिं गुरुएहिं आढत्त पण्णरसहिं गुरूहिं ठाति ।

तुअट्टतीए असपातिम-सपातिमेहिं दससु राइदिएसु लहुएसु आढत्त वीसाए राइदिएहिं लहुएहिं ठाति ।

णिद्दायतीए वीसाए गुरुहिं ठाति ।

[1]पयलायतीए पणुवीसाए लहुएहि ठाति ।

सज्झाय करेतीए पणुवीसाए राइदिएहिं गुरुएहिं ठाति ।

झाण झायतीए मासलहुए ठाति ।

आहार आहारतीए मासगुरुए ठाति ।

वियार करेतीए चउलहुए ठाति ।

काउस्सग्ग करेतीए चउगुरुए ठाति ।

एय खुड्डीए भणिय । थेरमादियाण हेट्ठा एक्क पद हुसेज्जा उवरिं एक्क वड्ढेज्जा ।।५३३४।।

छल्लहुगे ठाति थेरी, भिक्खुणि छग्गुरुग छेदो गणिणीए ।
मूलं पवित्तिणी पुण, जहभिक्खुणि खुड्डए एवं ।।५३३५।।

थेरीए गुरुपणगातो आढत्त छल्लहुगे ठाति ।

भिक्खुणीए दसण्ह राइदियाण लहुयाण आढत्त छग्गुरुए ठाति ।

अभिसेयाए दसण्ह इदियाण गुरुआण आढत्त छेदे ठाति ।

पवित्तिणीए पण्णरस लहुगा आढत्त मूले ठायति । एव सजतीण भणिय ।

इदाणिं सजयाण भण्णति – तत्थ अतिदेसो कीरति ।

जहा भिक्खुणी भणिता तहा खुड्डो भाणियव्वो ।

जहा गणिणी भणिया तहा भिक्खू भाणियव्वो ।

उवज्झायस्स गुरूएहिं पण्णरसहिं आढत्त अणवट्ठे ठाति ।

आयरिओ वीसाए लहुएहिं राइदिएहिं आढत्त पारचिए ठाति ।।५३३५।।

गणिणिसरिसो उ थेरो, पवत्तिणीसरिसओ भवे भिक्खू ।
अट्ठोक्कंती एवं, सपदं सपदं गणि-गुरूणं ।।५३३६।।

गतार्था । गणिस्स सपद अणवट्ठ गुरुस्स सपद पारचिय ।।५३३६।।

एमेव चिट्ठणादिसु, सव्वेसु पदेसु जाव उस्सग्गो ।
पच्छित्ते आएसा, एक्केक्कपदम्मि चत्तारि ।।५३३७।।

---

१ प्रचलाहारनिहारस्वाध्याय-ध्यानकायोत्सर्गा, इति क्रमेण प्रायश्चित्तान्युक्तानि, बृ० क० २४०९ गाथा वृत्तौ ।

चिट्ठणादिपदे असपातिमसपानिमे य अदिट्ठ-दिट्ठेसु चउरो पच्छित्ता भवति। एव गिमीयणादिसु वि एक्केक्के चउरो पच्छित्ता भवति।

अहवा – चिट्ठणादिसु एक्केक्के चउरो आदेसा इमे – एक्क ओहिय, बितिय त चेव कालविसेसित, ततिय छेदत पच्छित्त, चउत्थ [1]महतल पच्छित ॥५३३७॥ सम्मत्त दगतीर ति दार।

अधुना [2]जूवकस्यावसर प्राप्त। तत्थ गाहा –

सकम जूवे अचले, चले य लहुगो य होति लहुगा य।
तम्मि वि सो चेव गमो, नवरि गिलाणे इमं होति ॥५३३८॥

जूवय णाम विट्ठ (वीउ) पाणियपरिक्खित्त। तत्थ पुण देउलिया घर वा होज्ज, तत्थ वसति गेण्हति चउलहुगा, एय वसहिगहणणिप्फण्ण। त जूवग सकमेण जलेण वा गम्मइ।

सकमो दुविहो – चलो अचलो य। अचलेण जाति मासलहू।

चलो दुविहो – सपच्चवाओ अपच्चवाओ य। णिप्पच्चवाएण जइ जाति तो चउलहु सपच्चवाएण जाति चउगुरू। जलेण वि सपच्चवाएण गच्छति चउगुरु। णिप्पच्चवाए चउलहु। "तम्मि वि सच्चेव" पच्छद्ध – तम्मि वि जूवते सच्चेव वत्तव्वया जा उदगतीरए भणिता। '[3]अधिकरण अतराए" त्ति एत्तओ आढत्त जाव "[4]एक्केक्कपदम्मि चत्तारि" त्ति, णवरि – इमे दोसा अब्भहिता गिलाण पडुच्च ॥५३३८॥

दट्ठूण व मतिकरण, ओभासण विरहिते व आतियण।
परितावण चउगुरुगा, अकप्प पडिसेव मूलदुग ॥५३३९॥

गिलाणस्स उदग दट्ठु "सतिकरण" ति एरिसी मती उप्पज्जति पियामि त्ति। ताहे ओभासइ। जइ दिज्जति तो सजमविराहणा। अह ण दिज्जति तो गिलाणो परिचत्तो, विरहिय साहूहि अण्णेहि य ताहे आदिएज्ज। जति सलिंगेण आदियति ता चउलहु। अहाऽकप्प पडिसेवति "दुग" पि गिहिलिंगेण अण्णतित्थिय-लिंगेण वा तो मूल।

अहवा – आदिए आउक्कायणिप्फण्ण चउलहुअ। तसेसु य तसणिप्फण्ण भणियव्व। पचिदिएसु तिसु चरिम, तेण वा अगत्थेण परितावणादिणिप्फण्ण।

अह ओभासेतस्स ण देति असजमो त्ति काउ तत्थ अणागाढादिणिप्फण्ण।

अह उद्दातितो चरिम जणो य भणइ – "अहो ! णिरणुकपा मरतस्स वि ण देति"।

अहवा – अकप्प पडिसेवतो ओहावेज्ज – एगो मूल, दोसु अणवट्ठ, तिसु चरिम ॥५३३९॥

आउक्काए लहुगा, पूतरगादीतसेसु जा चरिमं।
जे गेलण्णे दोसा, धितिदुब्बल-सेहे ते चेव ॥५३४०॥

एत्थ कायणिप्फण्ण पच्छित्त भाणियव्व।

छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुगमाहरणे।
संघट्टण परितावण, लहुगुरुगऽतिवायतो मूल ॥५३४१॥

---

१ चारणिका प्रायश्चित्त। २ गा० ५३१० । ३ गा० ५३१३ । ४ गा ५३३७ ।

कठा। जे गिलाणदोसा भणिता ते धितिदुब्बले वि दोसा, सेहे वि तच्चेव दोसा ॥५३४१॥ जूवगेत्ति गय।

इदाणिं [1]आयावणा –

आतावण तह चेव उ, णवरि इमं तत्थ होति णाणत्तं।
मज्जण-सिचण-परिणाम-वित्ति तह देवता पंता ॥५३४२॥

जदि दगसमीवे आयावेति तत्थ तह चेव अधिकरणादि दोसा। जे उदगतीरे भणिया जे जूवगे भणिया सभवति ते सव्वे अविसेसेण भाणियव्वा। दगसमीवे आयावेतस्स चउलहु। आयावणाए इमे अब्भहिया 'मज्जण सिचण परिणाम वित्तिदेवतापत" त्ति ॥५३४२॥ मज्जण-सिंचणपरिणामा एते तिण्णि पदा जुगव एक्कगाहाए वक्खाणेति।

मज्जति व सिंचंति व, पडिणीयऽणुकंपया व ण कोई।
तण्हुण्हपरिणतस्स व, परिणामो ण्हाण-पियणेसु ॥५३४३॥

त दगतीरातावग मज्जति ण्हवति पडिणीयत्तणतो, घम्मितो पयावणेण सिंचति त सिगच्छडाहिं अजलीहिं वा, त पि अणुकपया पडिणीयतया वा कश्चित् अहभद्र प्रत्यनीको वा एव करेति।

अहवा – तस्स दगतीरातावगस्स "तण्हपरिणतस्मि" त्ति तिसिओ उण्हपरिणतो घम्मितो, एयावत्थ-भूयस्स घम्मियस्स ण्हाणपरिणामो उप्पज्जति, तिसियस्स पियणपरिणामो त्ति ॥५३४३॥ दारा तिन्नि गता।

"[3]वित्ति" अस्य व्याख्या –

आउट्टजणे मरुगाण अदाणे खरि-तिरिक्खिछोभादी।
पच्चक्ख देवपूयण, खरियाचरणं च खित्तादी ॥५३४४॥

पुव्वद्धस्स इमा विभासा –

आतावण साहुस्सा, अणुकंपतस्स कुणति गामो तु।
मरुगाणं च पदोसा, पडिणीयाणं च संका उ ॥५३४५॥

तस्स साहुस्स दगतीरे आयावेतस्स आउट्टो सो गामजणो अणुकपतो य पारणगदिणे भत्तादिय सविसेस देति,–"इमो पच्चक्खदेवो त्ति किं अम्ह अन्नेसि मरुगादीण दिन्नेण होहिति, एयस्स दिण्ण महफल" त्ति। ताहे मरुगादि अदिज्जते पदोस गता। "[4]खरि" त्ति दुक्खखरिता, "तिरिक्खी" महासड्ढियादि, एयासु "छोभगो" त्ति अयस देति,–"एस सजतो दुक्खरिय परिभुजति, तिरिक्खिय वा"।

अहवा – दुक्खखरिय दाणसगहिय काउ महाजणमज्झे बोल्लावेति, महासड्ढिय वा तत्थ सजतसमीवे नेउ सजयवेसेण गिण्हति, सजय च अप्पसागारिय ठवेति, अन्ने य बोल करेति – "एस सजतो एरिसो" त्ति। तत्थ जे पडिणीआ तेसि सका भवति ङ्क। निस्सकिए मूल। अधवा – जे पडिणीया ते सकति कीस एसो तित्थठाणे आयवेति, किं तेणट्ठेण, किं ताव मेहुणट्ठेण। "वित्ति" गत।

इदाणिं "[5]तह देवता पता" अस्य व्याख्या – "[6]पच्चक्खदेव" पच्छद्ध। जत्थ आयावेति तस्स समीवे देवता जत्थ जणो पुव्व पूयापरो आसीत्, साहु आयावेत दट्ठु इमो पच्चक्खदेवो त्ति साहुस्स

१ गा० ५३१०। २ ऽऽ ता प क, इत्यपि पाठ। ३ गा० ५३४२। ४ गा० ५३४८। ५ गा० ५३४२। ६ गा० ५३४८।

पूय काउमारद्धो न देवताए, सा देवया जहा मरुगा पदुट्ठा तहा दुक्खरिग-तिरिक्खिसु करेज्ज, अहवा – सा दवना माहुरूव आवरेत्ता अन्न च तम्स पडिरूव करेत्ता दुक्खरिग तिरिक्खी वा परिभुजत लोगस्स दसेति। अहवा – खित्तचित्तादिग करेज्ज। अन्नाओ वा अकप्पपडिसेवणा अकिरियाओ दरिसेज्ज। जम्हा तत्थ एत्तिया दोसा तम्हा तत्थ दगतीरे न ठाएज्जा ॥५३४५॥

बीयपए ठाएज्ज वि दगतीरे –

पढमे गिलाणकारण, बितिए वसही य असति ठाएज्जा ।
रातिणियकज्जकारण, ततिए बितियपयजयणाए ॥५३४६॥[1]

"पढम" त्ति दगतीर, तत्थ गिलाणकारणेग ठाएज्जा। "बितिय" त्ति जुवग तत्थ ठायज्जा वसधिनिमित्त। "ततिय" ति – आयावणा, "राइणिउ" त्ति कुलगणसघकज्ज तेण राइणो कज्ज हवेज्ज, एते-तिन्निवि बितियपदा ॥५३४६॥

कह पुण गिलाणट्ठा दगतीराए ठाएज्जा ? –

विज्ज-दवियट्ठाए, णिज्जतो गिलाणो असति वसतीए ।
जोग्गाए वा असती, चिट्ठे दगतीरणोतारे ॥५३४७॥

वेज्जस्स सगास निज्जतो, ओसहट्ठा वा ["असति"] अन्नत्थ निज्जतो, अन्नत्थ नत्थि वसधी दगतीरे य अत्थि ताहे तत्थ ठाएज्ज, गिलाणजोगा वा वसही अन्नत्थ नत्थि। अहवा – वीममणट्ठा दगतीरए मुहुत्तमेत्त ओयारिज्जइ तत्थ वि मणुयतिरियाण ओयरणमग्गे नोतारिज्जति ॥५३४७॥

तत्थ ठियाण इमा जयणा –

उदगंतेण चिलिमिणी, पडिचरए मोत्तु सेस अण्णत्थ ।
पडिचर पडिमंलीणा, करेज्ज सव्वाणि वि पदाणि ॥५३४८॥

उदगतेण चिलिमिणी कडगो वा दिज्जइ, जे गिलाणपडियरगा ते पर तत्थ अच्छति सेसा अन्नत्थ अच्छति। पडियरगा वि पडिसलीणा अच्छति जहा असपातिसपातिमाण सत्ताण सत्रासो न भवति। एव ठिया सव्वाणि वि चिट्ठणादिपदाणि करेज्ज ॥५३४८॥ पढमे त्ति गत।

इदाणि [1]बितिय त्ति –

अद्धाणणिग्गयादी, संकम अप्पाबहुं असुण्णं तु ।
गेलण्ण-सेहभावे संसट्ठुसिणं व (सु) निव्ववियं ॥५३४९॥

अद्धाणनिग्गयादी दोसा साहुणो अन्नाए वसहिए सति जूवगे ठायति। तत्थ जति सकमेण गमण, तेसु सकमेसु अप्पाबहुअ, जो एगगिओ अचलो अपरिसाडी णिप्पच्चवातो य तेण गतव्व, अण्णेसु वि जो बहुगुणो तेण गतव्व। दियाराओ य वसही असुण्णा कायव्वा। तत्थ य ठियाण जति गिलाणस्स सेहस्स वा पाणिय पियामो त्ति असुभो भावो उप्पज्जति ताहे त पण्णविज्जति, तहावि अट्ठिते भावे ताहे ससट्ठपाणग उसिणोदव वा "सुणिव्ववित" ति सुसीयल काउ दिज्जति, अण्ण वा फासुग ॥५३४९॥ जूवगजयणा गता।

---

१ गा० ५३४६।

इदाणिं [1]रातिणियकज्जति –

उल्लोयण णिग्गमणे, ससहातो दगसमीव आतावे ।
उभयदढो जोगजढे, कज्जे आउट्ट पुच्छणया ॥५३५०॥

चेतियाण वा तद्दव्वविणासे वा सजतिकारणे वा अण्णम्मि वा कम्हि य कज्जे रायाहीणे, सो य राया त कज्ज ण करेति, सय वुग्गाहितो वा, तस्साउट्टणाणिमित्त दगतीरे आतावेज्ज । त च दगतीर रण्णो ओलोयणठिय णिग्गमणपहे वा । तत्थ य आतावेतो ससहाओ आतावेति उभयदढो धितिसघयणेहिं । तिरियाण जो अवतरणपहो मणुयाण य ण्हाणादिभोगट्ठाण त च वज्जेउ आतावेइ । कज्जे त महातवजुत्त दट्ठु अल्लिएज्ज, राया आउट्टो य पुच्छेज्जा – "कि कज्ज आयावेसि ? अह ते कज्ज करेमि, भोगे वा पयच्छामि, वरेहि वा वर जण ते अट्ठो" । ताहे भणाति साहू – "ण मे कज्ज वरेहिं, इय सघकज्ज करेहि" ॥५३५०॥

इमेरिसो सो य सहाओ –

भावित करण सहायो, उत्तर-सिंचणपहे य मोत्तूणं ।
मज्जणगाइणिवारण, ण हिंडति पुप्फ वारेति ॥५३५१॥

धम्म प्रति भावितो, ईसत्थे धणुवेदादिए कयकरणे सजमकरणे वा कयकरणे, ससमयपरसमयगहियऽत्थत्तणओ उत्तरसमत्थो, अप्पणो वि एरिसो चेव । सो य सहाओ जति कोइ अणुकूलपडिणीयत्तणेण सिंचति वा मज्जति वा पुप्फाणि वा आलएति तो त वारेति । तम्मि गामे णगरे वा सो आयावगो भिक्ख ण हिंडइ, मा मरुगादि पदुट्ठा विसगरादि देज्ज ॥५३५१॥

जे भिक्खू सागणियसेज्जं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

सह अगणिणा सागणिया ।

सागणिया तू सेज्जा, होति सजोती य सप्पदीवा य ।
एतेसिं दोण्हं पी, पत्तेय-परूवणं वोच्छं ॥५३५२॥

सागणिसेज्जा दुविधा – जोती दीवो वा । पुणो एक्केक्का दुविधा – असव्वराती सव्वराती य । असव्वरातीए दीवे मासलहु । सेसेसु तिसु विकप्पेसु चउलहुगा पत्तेय ॥ ३५२॥

दुविहा य होति जोई, असव्वराई य सव्वरादी य ।
ठायंतगाण लहुगा, कीस अगीयत्थ सुत्तं तु ॥५३५३॥

"जोइ" त्ति उद्दियत । सेस कठ ।

चोदगाह –

[2]णत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ य कोति णिद्दिट्ठो ।
जा पुण एगाणुण्णा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५३५४॥

---

१ गा० २५० । २ देखो गा० ५३३१ से ५३५३ ।

आयरिग्राह –

एयारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिद्दिट्ठो ।
अव्वोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५३५५॥

जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति वियारणा णत्थि ।
किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठि प्पहाणेहिं ॥५३५६॥

उस्सग्गसुतं किंची, किची अववाइय मुणेयव्वं ।
तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥५३५७॥

णेगेसु एगगहणं, सलोम-णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।
विहिभिण्णस्स य गहणे, अववाउस्सग्गिय सुत्तं ॥५३५८॥

उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जय लहइ ।
न य तं होइ विरुद्धं, एमेव इम पि पासामो ॥५३५९॥

उस्सग्गे गोयरम्मी, णिसिज्जऽकप्पाववायओ तिण्हं ।
मंसं दल मा अट्ठिं, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५३६०॥

णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।
कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सग्गं ॥५३६१॥

कत्थति देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइ ।
उक्कमकमजुत्ताइं, कारणवसतो णिउत्ताइं ॥५३६२॥

देसग्गहणे बीए, हि सूइया मूलमाइणो होंति ।
कोहाति अणिग्गहिया, सिंचंति भवं निरवसेसं ॥५३६३॥

सत्थपरिण्णा उक्कमे, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।
जं पि य उक्कम्करण, तं पिऽभिनवधम्ममातट्ठा ॥५३६४॥

बीएहि कंदमादी, विसूइया तेहि सव्ववणकायो ।
भोमातिका वणेण तु, सभेदमारोवणा भणिता ॥५३६५॥

जत्थ उ देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि सूइयवसेणं ।
मोत्तूण अहीकारं, अणुओगधरा पभासेति ॥५३६६॥

उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववादओ य जाणि भवे ।
कारणजाएण मुणी !, सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५३६७॥

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।
कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पति ॥५३६८॥

चोदगाह –

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।
एवं होयऽणवत्था, ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५३६९॥
उम्मत्तवायसरिसं, खु दसणं न वि य कप्पऽकप्प तु ।
अह ते एव सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५३७०॥

आयरिओ –

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं ।
एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५३७१॥
कज्ज णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।
तं तह समायरतो, तं सफलं होइ सव्वं पि ॥५३७२॥
दोसा जेण णिरुंभति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समण व ॥५३७३॥
अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो ण जाणाति ।
अणुण्णवणाइजयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५३७४॥
णिउणो खलु सुत्तत्थो, न हु सक्को अपडिबोहितो नाउं ।
ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसिं तहिं वसंताणं ॥५३७५॥
अग्गीया खलु साहू, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।
रमणिज्ज भिक्ख गामे, ठायंती जोइसालाए ॥५३७६॥

एत्तती (५३५४) आढत जाव 'अग्गीया' गाह (५३७६) ।
एयाओ सव्वाओ गाहाओ जहा उदगसालाए भणिता तहा भाणियव्वा ।
सजोइवसधीए ठियाण इमे दोसा –

पडिमाए झामियाए, उड्डाहो तणाणि वा तहिं होज्जा ।
साणादि वालणा लाली, मूसए खंभतणाई पलिप्पेज्जा ॥५३७७॥

तेण जोतिणा पडिमा झामिज्जेज्जा, तत्थ उड्डाहो एतेहिं पडिणीयताए णारायणादिपडिमा झामिता, तत्थ गेण्हणादी दोसा ।

संथारगादिकया वा तणा पलिवेज्ज ।
साणेण वा उम्मुए चालिए पलीवण होज्ज ।

जत्थ पदीवो तत्थ मूसगो "लाल" त्ति वट्टी त कड्ढति, तत्थ खभो पलिप्पइ णिवेसणाणि वा पलिप्पति ॥५३७७॥ बितिय० गाहा (५१५८) श्रद्धाणनिग्गया० गाहा (५१६४) ॥५३७८॥ ॥५३७९॥ कठ्या पूववत् ।

सजोनिवमहीए दव्वतो ठायतस्स इमे दोसा पच्छित्त च –

उवकरणेऽपडिलेहा[1], पमज्जणावास[2] पोरिसि[3] मणे[4] य ।
णिक्खमणे य पवेसो, आवडणे चेव पडणे य ॥५३८०॥

चउण्ह दाराण इम वक्खाण –

पेह पमज्जण वासए, अग्गी ताणि अकुव्वतो जा परिहाणी ।
पोरिसिभंगे अभंगे, मजोती होति मणे तु रति अरति वा ॥५३८१॥

जति उवगरण ण पडिलेहेइ, 'मा छेदणेहिं अगणिसघट्टो भविस्सइ" त्ति तो मासलहु उवधिणिप्फण्ण वा । ते य अपडिलेहनस्स सजमपरिहाणी भवति । अह पडिलेहेति तो छेदणेहिं अगणिकायसघट्टो भवति, तत्थ चउलहु । सुत्तपोरिसिं ण करेति मासलहु, अत्थपोरिसिं ग करेति मासगुरु, सुत्त णासेइ चउलहु, अत्थ णासेति चउगुरु । मणेण य जइ जोइसालाए रती भवति "सजोतीए सुह अच्छिज्जइ" तो चउगुरु, अह अरती उप्पज्जइ, जोतीए दोस भण्णइ तो चउलहु ॥५३८१॥

[1]आवासए त्ति अस्य व्याख्या –

जति उस्सग्गे ण कुणति, ततिमासा सव्वअकरणे लहुगा ।
वंदण-थुती अकरणे, मासो संडासगादिसु य ॥५३८२॥

"जोति" त्ति काउ जत्तिया काउस्सग्गा ण करेति तत्तिया मासलहु । सव्व आवस्सय ण करेति चउलहुगा । अह सजोइयाए आवस्सय करेति तहावि जत्तिया उस्सग्गा करेति अगणिविराहण त्ति काउ तत्तिया चउलहुया । सव्वम्मि चउलहुग चेव । अगणि त्ति काउ वदणय न देंति, थुतीतो ण देति, सडासय ण पमज्जति उवसता, तिसु वि पत्तेय मासलहु । अह करेति तह वि मासलहु । छेदणगेहिं य अगणिविराहणाए चउलहु ॥५३८२॥

[2]णिक्खमणे य पच्छद्ध अस्य व्याख्या –

आवस्सिया णिसीहिय, पमज्ज आसज्ज अकरणे इम तु ।
पणग पणगं लहु लहु, आवडणे लहुग जं चऽण्णं ॥५३८३॥

णिक्खमना आवासिय ण करेति तो पणग, पविसता णिसीहिय ण करेंति तो पणग चेव । अधवा–पविसता णिता वा ण पमज्जति, वमहिं वा ण पमज्जति तो मासलहु अह पमज्जति तो मासलहु, पमज्जतस्स य छेदणेहिं अगणिविराहणे चउलहु । आसज्ज ण करेति मासलहु । [3]आवडण त्ति उम्मुआदिसु पखलणा तत्थ चउलहु । 'ज चऽन" ति अणागाढपरितावणगणिप्फण्ण ॥५३८३॥

अधवा – "[4]ज चऽऽण्ण" ति –

सेहस्स विसीयणता, ओसक्कऽहिसक्क अण्णहिं नयणं ।
विज्जविऊण तुयट्टण, अहवा वि भवे पलीवणता ॥५३८४॥

---

१ गा० ५३८० । २ गा० ५३८० । ३ गा० ५३८० । ४ गा० ५३८३ ।

मेहो कोइ सीयतो विसीएज्ज तेण वा उज्जालिते जइ अण्णो तप्पइ तो चउलहु। जत्तिया वारा हत्था परावत्तेइ तावेइ वा अण्ण वा गाय तत्तिया चउलहुगा। "ओसक्केइ" त्ति उस्सारेइ उम्मुय "अहिसक्केइ" त्ति अगणि तेण उत्तुअति, सुयतो जग्गतो वा त अगणि अण्णत्थ णेति, सुयतो वा जति विज्झावति-एएसु सव्वेसु पत्तेय चउलहुआ पयावमाणस्स पमादेण पलिप्पेज्जा ॥५३८४॥

तत्थिम पच्छित्त –

गाउय दुगुणादुगुणं, बत्तीसं जोयणाइ चरिमपदं ।
चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८५॥

जइ गाउय डज्झति तो ः ः। अद्धजोयण डज्झति ः ः। जायण ः ः ः। दोहि जोयणेहिं ः ः ः। चउहिं जोयणेहि छेदो। अट्ठहि मूल। सोलसहि अणवट्ठो। बत्तीसाए चरिम ॥५३८५॥

गोणे य साणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।
लहुगा अवारणम्मि, खंभतणाइं पलीवेज्जा ॥५३८६॥

अह गोणसाणे वारेति मा पलीवण करेहि त्ति तो चउलहुगा। वारिया य हरितादी विराहेत्ता वच्चति, अधिकरण तत्थ वि चउलहु, कायणिप्फण्ण वा। अह ण वारेति तत्थ खभ तणादि वा पलीवेज्जा॥५३८६॥

तत्थ वि –

गाउय दुगुणादुगुण, बत्तीसं जोयणाइ चरिमपद ।
चत्तारि छच्च लहू गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८७॥ पूववत्

जम्हा एते दोसा तम्हा णो जोतिसालाए ठाएज्जा, कारणे ठायति –

अद्धाणणिग्गतादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।
गीयत्था जयणाए, वसति तो जोतिसालाए ॥५३८८॥

पुव्वभणितो अववातो गाममज्झे जा जोतिसाला देवकुल वा। इमो कुभकारसालाए अववादो, जेण कुभकारस्स पचसालाओ भणिया,

इमाओ –

पणिया य भंडसाला, कम्मे पयणे य वग्घरणसाला ।
इंधणसाला गुरुगा, सेसासु वि होति चउलहुगा ॥५३८९॥

एतेसि इमा विभासा –

कोलालियावणा खलु, पणिसाला भंडसाल जहिं भंडं ।
कुंभारसाल कम्मे, पयणे वासासु आवातो ॥५३९०॥

तोसलिए वग्घरणा, अग्गीकुंडं तहिं जलति णिच्चं ।
तत्थ सयंवरहेउं, चेडा चेडी य छुब्भंति ॥५३९१॥

पणियसाला जत्थ भायणाणि विक्केति, वाणिय कुंभकारो वा एसा पणियसाला ।
भंडसाला जहिं भायणाणि सगोवियाणि अच्छति ।
कम्मसाला जत्थ कम्मं करेति कुंभकारो ।
पयणसाला जहिं पच्चति भायणाणि ।
इंधणसाला जत्थ तण करिसभारा अच्छति ।

वग्घारणसाला तोसलिविसए गाममज्झे साला कीरइ । तत्थ अगणिकुंड णिच्चमेव अच्छति सयवरणिमित्त । तत्थ य बहवे चेडा एक्का य सयवरा चेडी पविसिज्जति, जो से चेडीए भावति तं वरेति । एयासु सव्वासु इमं पच्छित्तं ङ्क । ।।५३६१।।

णवर –

इंधणसाला गुरुगा, आलित्ते तत्थ णासिउं दुक्खं ।
दुविहविराहणा झुसिरे, सेसा अगणी उ सागरियं ।।५३६२।।

पुव्वद्ध कंठं । अण्ण च इंधणसालाए झुसिर तत्थ दुविधा विराधणा – आयविराहणाए चउगुरुगा, सजमविराधणाए तत्थ संघट्टादिकं जं आवज्जति तं पावति । सेसासु पणियसालादिसु सागारियं पयणसालाए पुण अगणिदोसो ।।५३६२।।

एयासु अववादेण ठायतम्स इमो कमो –

पढमं तु भंडसाला, तहिं सागारि णत्थि उभयकाले वि ।
कम्माऽऽपणि णिसि णत्थी, सेसकमेणिंधणं जाव ।।५३६३।।

अण्णाए वसहीए असति पढमं भंडसालाए ठाति, तत्थ उभयकाले वि सागारियं नत्थि । उभयकालो – दिया रातो य । ततो पच्छा कम्मसालाए । ततो पच्छा पणियसालाए ।

अहवा – कम्मपणियसालाण कमो णत्थि, तुल्लदोसत्तणतो, । सेसेसु पयण वग्घरण-इंधणाइसु असति कमेण ठाएज्जा ।।५३६३।।

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संथारगा विही पुव्वं ।
जागरमाणवसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ।।५३६४।। कंठ्या

तत्थ वसताण इमा जयणा –

पासे तणाण सोहण, ओसक्कऽहिसक्क अन्नहिं नयणं ।
संवरणा लिंपणया, छुक्कार णिवारणोकड्ढी ।।५३६५

पुरातना गाथा । अगणिकायस्स पासे तणाणि विसोहिज्जति अक्कतियतेणेसु वा ओसक्किज्जति, सीवणभएण वा अक्कतियतेणेसु वा उस्सक्किज्जति, गिलाणट्ठा सावयभएण वा अद्धाणे वा विवित्तासीय व तेण अइसक्कावेज्जा वि, अण्णहिं वा सोउमणो नेज्जा, बाहिं वा ठवेज्जा, कते वा कज्जे छारेण सवरिज्जति, अक्कमइ त्ति वुत्तं भवति मल्लगेण वा, अहाउअं पालेत्ता विज्झाहित्ति । खभो छगणादिणा वा लिप्पति । सीलवणभया साणो गोणो तेणो वा तत्थ छुत्ति हडि त्ति वा भन्नइ, तह वि अटता वारिज्जति, सहसा वा लित्ते तत्थतो उक्कड्ढिज्जति णेव्व । तणाणि वा, कडगो वा उदग धूलीहिं वा विज्झविज्जति, पाल वा कज्जति ५३६५।।

सजोनिवसहीए उवकरण-पडिलेहणादिदारेसु इम जयण करेति—

कडओ व चिलिमिली वा, असती सभए व बाहिं जं अंतं ।
ठागामति सभयम्मि व, विज्झायऽगणिम्मि पेहंति ॥५३९६॥

जोतीए अतरे कडओ कज्जति, चिलिमिली वा । असति कडगचिलिमिलीए वा जति य उवहितेणग-भय अत्थि ताहे अतोवही बाहिं पडिलेहिज्जति, अहवा – बाहिं पि तेणगभय ठागो वा णत्थि ताहे विज्झाए अगणिम्मि पेहिति ॥५३९६॥

णिंता ण पमज्जंति, मूगा वा मंतु वंदणगहीणं ।
पोरिसि बाहि मणेण व, सेहाण व देंति अणुसट्ठि ॥५३९७॥

णिंता पविसता वा ण पमज्जति, आवासग वाइयजोग विरहिय मूअ करेति, बारसावत्तवदण ण दिति, पोरिसि सुत्तत्थाण बाहिं करेंति । अह बाहिं ठागो णत्थि ताहे "मणे" त्ति मणसा अणुपेहित्ति। जत्थ सेहो अण्णो वा उट्ठित्ते राग गच्छति तत्थ अणुसट्ठिं दति गीयत्था ॥५३९७॥

आवास बाहि असती, ठित वंदण विगड जतण थुतिहीण ।
सुत्तत्थ बाहियंतो, चिलिमिणि काऊण व सरंति ॥५३९८॥

गताथा । बाहिं असति ठागस्स जो जहिं ठिओ सो तहिं चेव ठिओ पडिक्कमति वदणहीण । विगडणा आलोयणा, त जयणाते करेति । थुईतो मणसा कढति । सुत्तत्थ बहिं गयत्थ जोतिअतरेवि चिलिमिलि काउ अतो चेव सुत्तत्थे सरति ॥५३९८॥

इमा अणुसट्ठी सेहादीण –

नाणुज्जोया साहू, दव्वुज्जोयम्मि मा हु सज्जित्था ।
जस्स वि न एति निद्दा, स पाउया णिमीलियं गिम्हे ॥५३९९॥

मज्जति त्ति रज्जते । जस्स वि सजोतिए णिद्दा ण एइ सोवि पाउओ सुवति । अह गिम्हे घम्मो सो अच्छीणि णिमिल्लेति जाव सुवति ॥५३९९॥

मूगा विसति णिंति व, उम्मुगमादी कताइ अछिवंता ।
सेहा य जोइ दूरे, जग्गंती जा धरति जोती ॥५४००॥

मूगा विशति प्रविशति । मूअत्ति णिसीहिय ण करेति णितो आवस्सिय ण करेति, आवट्टणादिभया अगणिसघट्टणभया उम्मुआदि ण च्छिवेति, सेहे अगीता अपरिणता णिद्धम्मा य जोतीए दूरे ठविज्जति, जे य गीता वसभा ते जग्गति जाव सो जोति धरति ॥५४००॥

अहवा -

विहिणिग्गतादि अतिनिद्दपेल्लितो गीओ सक्किउं सुवति ।
सावयभय उस्सक्कण, तेणभए होति भयणा उ ॥५४०१॥
अद्धाणविवित्ता वा, परकड असती सयं तु जालंति ।
सूलादी व तवेउं, कयकज्जे छारअक्कमणं ॥५४०२॥

विहिणिग्गतो श्रा त अतीवनिद्दातितो वा ताहे ओसक्किउ सुवति, गीयत्थो सीहसावयादिभए वा ओसक्कति, तेणभए य भयणा, अक्कतिएसु विज्झावेति, इयरेसु ण विज्झावेति ।

अद्धाणे विवित्ता मुसिता सीतेण वा अभिभूता ताहे जो परकडो अगणी तत्थ विसीतति, परकडस्स असति सय जालेति, सूलादिसु कज्ज काउ छारेण अक्कमति णिव्ववेति वा ॥५४०२॥

सावयभए आणिंति व, सोउमणा वा वि बाहि णीणति ।
बाहिं पलीवणभया, छारे तस्सासति णिव्वावे ॥५४०३॥

अण्णतो वि आणेंति, वसहीतो बाहिं णेति । सेस कठ ॥५४०३॥ जोति त्ति गत ।

इदाणि [1]दीवो –

दुविहो य होति दीवो, असव्वराती य सव्वराती य ।
ठायंते लहु लहुगा, करीम अगीतत्थसुत्त तु ॥५४०४॥

[2]एत्ततो आढत्त सव्व भाणियव्व ।

"[3]णत्थि अगीतत्थो वा" गाहा (५३५४) "एयारिसम्मि" गाहा (५३५५) "ज जह गाहा (५३५६) "उस्सग्गसुय" गाहा (५३५७) जाव ते "तत्थ सन्निविट्ठा" गाहा (५३६४) ।

पडिमाभामण ओरुभणं, लिंपणा दीवगस्स ओरुभणं ।
उव्वत्तण परियत्तण, छुक्कारण वारणोकड्ढी ॥५४०५॥

जत्थ पडिमाभामणभय होज्जा तत्थ तओ ओगासाओ पडिमा फेडिज्जति, जति सक्कति फेडेतु । अह ण सक्केति तो दीवतो फेडिज्जति, खभकडणकुड्डाणि य लिप्पति । अहवा – सकलदीवगो ण सक्कति उत्तारेउ ताहे वत्ती उवत्तिज्जति, पिपीलिज्जति वा साणगोणादि वा छुक्कारिज्जति, पविसता वा साणगोणादी वारिज्जति, बही वा ओकड्ढिज्जति, तेणगेसु वा उस्सक्किज्जति, सप्पादिभए वा ॥५४०५॥

संकलदीवे वत्ती, उव्वत्ते पीलए य मा डज्झे ।
रूतेण व तं तेल्लं, घेत्तूण दिया विगिंचंति ॥५४०६॥ कठा

पासे तणाणि सोहण, अहिमक्कोसक्क अण्णहिं णयणं ।
आगाढकारणम्मि, ओसक्कऽहिसक्कणं कुज्जा ॥५४०७॥

दीवगस्स जे पासे तणा, दीवग वा अहिसक्केति । "ओसक्कति" त्ति उस्सक्केति वा अण्णहिं वा णेति । ज त उस्सक्कण ओसक्कण करेंति त आगाढे करेंति, णो अणागाढे ॥५४०७॥

मज्झे व देउलादी, बाहिं व ठियाण होति अतिगमणं ।
जे तत्थ सेहदोसा, ते इह आगाढजतणाए ॥५४०८॥

अधवा – ते साधू वियाले आगता देउले ठातेज्ज, मज्झे वा गामदेउल तद्दिवसतो सागारियाउल पएवि आगता तत्थ दिवसतो ण ठायति, बाहिं अच्छंति, विसरिएसु सागारिएसु सझाए पविसति,

१ गा० ५३५२ । २ भाष्ये गृहीत्वात् । ३ अत्र सर्वासु यत्र यत्रोदगसालादि तत्र जोइसालादि उपयुज्य वक्तव्य भाष्यवचनात् ।

बाहिं वासे तेणमावयादिभय जाणिऊण तत्य सजोतियाए सालाए सदीवए वा जे सेहादिदोसा पुव्वुत्ता ते इह कारणे आगाढे जयणाए कायव्वा ।।५४०८।।

तत्थ जति कहिं वि पलिवेज्जा तो इमा जयणा –

अण्णाते तुमिणीया, णाते दट्ठूण करण सविउलं ।
बाहिं च देउलादी, संमद्दा आगय खरंटो ।।५४०९।।

जति केणइ ण णाता 'एत्थ सजया ठिय' त्ति तो तुमिणीया णासति । अध णाया लोगेण तो पलित्त दट्ठ महता सद्देण सविउल बोल करेंति ताव जाव जत्थ बहुजणो मिलिओ, ताहे बहुजणस्स पुरओ भणति- "केणति पावेण पलीवण कत, तुब्भेहिं चेव पलीवित 'समणा दुज्झतु' त्ति, 'अम्ह च सव्व उवकरण एत्थ दड्ढ', एव ते खरटिया ण किंचि उल्लवेति "अ (तु) म्हेहिं पलीवित" ति । जत्थ वि बाहिं गामस्स देउल तत्थ वि एव चेव, अधवा – देउलातो बाहिं णिग्गतु ससद्द कज्जति ।।५४०९।।

जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं भुजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ।।सू०।।४।।

जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ।।सू०।।५।।

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं उच्छु भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ।।सू०।।६।।

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं उच्छुं विडसइ, विडसतं वा सातिज्जइ ।।सू०।।७।।

"भुजति ज भुक्खत्तो, लीला पुण विडसण त्ति णायव्वा ।
जीवजुत सच्चित्त, अच्चित्त सचेयण पतिट्ठ ।"

एतेसिं चेव चउण्ह सुत्ताण इमो अतिदेसो –

सच्चित्तअफलेहिं, पण्णरसे जो गमो समक्खातो ।
सो चेव णिरवसेसो, सोलसमे होति इक्खुम्मि ।।५४१०।। कठा

आणादिया दोसा चउलहु पच्छित्त ।

इमे उच्छुविभागसुत्ता –

जे भिक्खू सचित्तं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८।।

जे भिक्खू सचित्तं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालग वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९।।

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालग वा उच्छुडालगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०।।

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अतंरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ।।सू०।।११।।

पव्वसहितं तु खंडं, तव्वज्जिय अंतरुच्छुयं होइ ।
डगलं चक्कलिछेदो, मोयं पुण छल्लिपरिहीणं ॥५४११॥

पेरु उभयो पव्वदेससहितखड पव्व, उभयो पेरुरहिय अतरुच्छुय, चक्कलिछेदछिण्ण डगल भण्णति, मोय अब्भतरो गीरो ॥५४११॥

चोयं तु होति हीरो, सगलं पुण तस्स बाहिरा छल्ली ।
काणं घुण क्खुक्कं वा, इतरजुतं तप्पइट्ठं तु ॥५४१२॥

वसहीरसहितो चोय भण्णति, सगल बाहिरी छल्ली भण्णति, घुणकाणिय अगारइय वा वुत्तय, सियालादीहिं वा खइय, उवरि मुक्क, इयर ति सचित्त तम्मि सचित्तविभागे पतिट्ठिय सचित्तपतिट्ठित भण्णति ॥५४१२॥

जे भिक्खू आरण्णगाणं [1]वण्णंधाण अडविजत्तासंपइ[2]ट्ठिताण असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू आरण्णगाणं वण्णंधाण अडविजत्ताओ पडिनियत्ताण असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा साइज्जति ॥सू०॥१३॥

अरण्ण गच्छतीति आरण्णगा, वण धावतीति वण्णधा, आरण्य वणार्थाय धावतीत्यथ । तेसिं जत्तापट्ठियाण जो असणादी गेण्हति जत्तापडिनियत्ताण असणादिसेस खउरादि वा जो गेण्हति तस्स आणादी दोसा, चउलहु च पच्छित्त ।

तणकट्ठहारगादी, आरण्ण वणंधगा उ विण्णेया ।
अडविं पविसंताण, णियत्तमाणाण तत्तो य ॥५४१३॥

आदिसद्दातो पुप्फफलमूलकदादीण, तेसिं वण्णधाण अडविं पविसताण ज सबल पकत, तत्तो णियत्ताण ज किंचि [3]धुण्णादि। सेस कठ ॥५४१३॥

तण-कट्ठ-पुप्फ-फल-मूल-कंद-पत्तादिहारगा चेव ।
पत्थयणं वच्चंता, करेंति पविसंति तस्सेसं ॥५४१४॥

तणादिहारगा अडविं पविसता अप्पणो पत्थयण करेंति, सेस उव्वरिय सिद्ध ।

अडवी पविसंताणं, अहवा तत्तो य पडिनियत्ताणं ।
जे भिक्खू असणादी, पडिच्छते आणमादीणि ॥५४१५॥ कठा

---

१ वणवयाण । २ सपट्ठियाण इति जिनविजयसपादित मूल पुस्तके । ३ गा० ५४१८ ।

इमे दोसा –

पच्छाकम्ममतिंते, णियट्टमाणे वि बंधवा तेसिं ।
अच्छिज्जा णु तदा सा, तद्व्वे अण्णद्व्वे य ॥५४१६॥

अडविपविसतेण ज सबल कए त साधूण द तु पच्छा अप्पणो अण्ण करेति । सण्णियट्टाण वि ण घेत्तव्व, तेसिं बधवा तद्व्वे अण्णदव्वे वा कनासा अच्छेज्जा । तद् व चेव ज घरातो णीत, अण्णदव्व ज अडविए कदचुण्णादि उप्पजति ॥५४१६॥

पत्थयण दाउ इम करेति –

कम्मं कीतं पामिच्चियं च अच्छेज्ज अगहण दिगिंछा ।
कंदादीण व घातं, करेंति पंचिंदियाणं च ॥५४१७॥

अप्पणो "कम्म" ति अण्ण करेंति, अप्पो वा किणाति, "पामिच्च" ति उच्छिण्ण गेण्हति, अण्णेसिं वा अच्छिन्ति, अह ण गेण्हति पत्थयण तो दिगिचति, छुहाए ज अणागाढादि परिताविज्जति, अहवा – भुक्खितो कदादि गेण्हति, अत्थ परित्ताणतण्णिप्फण्ण ।

अधवा – भुक्खित्तो ज लावगतित्तिरादि घातिस्सति, परितावणादिणिप्फण्ण तिसु चरिम ॥५४१७॥

अरण्णातो णिग्गच्छमाणो जो गेण्हति तस्स इमे दोसा –

चुण्णखउरादि दाउं, कप्पट्ठग देह कोव जह गोवो ।
चड्डण अण्णं व वए, खउरादि वऽसखडे भोयी ॥५४१८॥

चुण्णो वदरादियाण, खोरखदिरमादियाण खउरो, भत्तसेस वा साधूण दाउ कप्पट्ठिएहिं पुत्तणत्तुभत्तिजगादिएहिं अण्णहि य तदासाए अच्छमाणेहिं जातिज्जमाणा–"देह णे कदे मूले चुण्णखउरभत्तसेस वा", ते भणति – "दिण्णा अम्हेहि साधूण" एव भणते त पम्णा रुण्ण करेंताणि ताणि दट्ठूण पदोस गच्छेज्ज, जहा गोवो पिडणिज्जु त्तीए । एतेसु वा चड्डु तसु अडवीसु अण्ण वा आणेति खउरादि "भोइ" त्ति भारिया तीए सह असखड भवति, अतरायदोसा य । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा वण पविसताण णिताण वा ण घेत्तव्व ॥५४१८॥

भवे कारण –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणागहण तु गीयत्थे ॥५४१९॥

जयण त्ति पणगपरिहाणीए जाहे चउलहु पत्ता ताहे सावसेस गेण्हति ॥५४१९॥

जे भिक्खू वसुराइय अवसुराइय वयइ, वयतं वा साहिज्जति ॥सू०॥१३॥

वसूणि रयणाणि, तेसु रातो वसुराती, अथवा – राती दीप्तिमाभ्राजते वा शोभत इत्यर्थं, त विवरीय जा भणति तस्स चउलहु ।

इमा णिज्जुत्ती –

वसुमं ति व वसिमं ति व, वसति व वुसिमं व पज्जया चरणे ।
तेसु रतो वुसिराती, अवुसिम्मि रतो अवुसिराती ॥५४२०॥

वसु त्ति रयणा, ते दुविधा–दव्वे भावे य। दव्वे मणिरयणादिया, भावे णाणादिया। इह भाववसूहि अधिकारो। नाणि जस्स अत्थि सो वसुग त्ति भण्णति।

अधवा – इंदियाणि जस्स वसे वट्टंति सो वसिम भण्णति।

अधवा – णाणदसणचरित्तेसु जो वसति चिरकाल सा वस (वुसिम) ति रातिणिग्रो भण्णति।

अहवा – व्युत्सृजति पाप अन्यपदाथाख्यान, चारित्र वा वुसिम ति वुच्चति। वसति वा चारित्ते वसुराती भण्णति।

अहवा – "पज्जया चरणे" त्ति एत चारित्तठियस्स पज्जत्ता एगट्ठिता इत्यर्थ। एस वुसिराती भण्णति, पडिपक्खे अवुसिराती ॥५४२०॥

अहवा –

वुसि सविग्गो भणितो, अवुसि असंविग्ग ते तु वोच्चत्थं।
जे भिक्खु वएज्जा ही, सो पावति आणमादीणि ॥५४२१॥

कठा। वोच्च थ ति वुसिरातिय अवुसिरातित भणति ड्ढा ॥५४२१॥

एत्थ पढम वुसिरातिय अवुसिरातिय भण्णति इमेहि कारणेहि –

रोसेण पडिणिवेसेण ग्रा वि अकयन्नु मिच्छभावेणं।
संतगुणे छाएत्ता, भासंति अगुण असंते उ ॥५४२२॥

कोइ कस्सति कारणे अकारणे वा रुट्ठो, पडिनिवेसण एसो पूतिज्जइ अह ण पूइज्जामि, एवमादिविभासा। अकयण्णुयाए एतेण तस्स उवयारो कम्रो ताहे मा एयस्स पडिउवयारो कायव्वो होहिइ त्ति, मिच्छाभावेण मिच्छत्तेण उद्दिण्णेण। सेस कठ ॥५४२२॥

असविग्गा सविग्गजण इमेण ग्रालवणेण हीलति –

धीरपुरिसपरिहाणी, नाऊणं मंदधम्मिया केई।
हीलंति विहरमाणं, संविग्गजणं अवुद्धीतो ॥५४२३॥

के पुण धीरपुरिसा ?, इमे –

केवल-मणोहि-चोद्दस-दस-णवपुव्वीहि विरहिए एण्हि।
सुद्धमसुद्धं चरणं, को जाणति कस्स भावं च ॥५४२४॥

एते सपइ णत्थि, जति सपइ एते होतो तो जाणता असीदताण चरण सुद्ध इयरेसिं असुद्ध, केवलिमादिणो णाउ पडिचोयता पच्छित्त च जहारुह देंता चितति अब्भतरगो वि एरिसो चेव भावो, ण य एगतेण बाहिरकरणजुत्तो अभ्यतरकरणयुक्तो भवति।

कह ? उच्यते – जेण विवज्जतो दीसति, जहा उदायिमारयस्स पसण्णचदस्स य। बाहिर अविसुद्धो वि भरहो विसुद्धो चेव ॥५४२४॥

बाहिरकरणेण समं, अब्भितरयं करेति अमुणेंता।
णेगंता तं च भवे, विवज्जओ दिस्सते जेणं ॥५४२५॥

जति वा णिरतीचारा, हवेज्ज तव्वज्जिया य सुज्झेज्जा ।
ण य होंति णिरतिचारा, संघयणधितीण दोब्बल्ला ॥५४२६॥

सामयिकाल जति णिरतिचारा हवेज्ज अहवा – तव्वज्जिया णाम अोहिणाणादीहिं वज्जिते जइ चरित्तसुद्धी हवज्ज ना जुत्त वत्तु – इमे विसुद्धचरणा, इमे अविसुद्धचरणा। संघयणधितीण दुब्बलत्तणतो [1]य – पच्छित्त करेति ॥५४२६॥

संघयण-धितिदुब्बलत्तणतो चेव इम च अोसण्णा भणति –

को वा तहा समत्थो, जह तेहि कयं तु धीरपुरिसेहिं ।
जहसत्ती पुण कीरति, [जहा] [2]पइण्णा हवइ एवं ॥५४२७॥

धीरपुरिमा तित्थकरादी जहासत्तिए कीरति एव भण्णमाणे दढा पइण्णा भवति, अनलिय च भवति जो एव भणति। जो पुण अण्णहा वदति अण्णहा य करेति, तस्स सच्चपइण्णा ण भवति ॥५४२७॥

आयरिअो भणति –

सव्वेसि एगचरणं सरण मोयावगं दुहसयाणं ।
मा रागदोसवसगा, अप्पणो सरण पलीवेह ॥५४२८॥

सव्वेसि भवसिद्धियाण चरण च सरीरमाणसाण दुक्खाण विमोक्खणकर, त तुब्भे सय सीयमाणा अप्पणो चरित्तेण रागाणुगता उज्जयचरणाण चरणदोसमावण्णा मा भणह – "चरण णत्थि, मा जत्थेव वसह त चेव सरण पलीवेह णामहत्यथ'' ॥५४२८॥

किं च -

सतगुणणासणा खलु, परपरिवाअो य होति अलिय च ।
धम्मे य अबहुमाणो, साहुपदोसे य संसारो ॥५४२९॥

चरण णत्थि त्ति एव भणतेहिं [3]साधूहिं सतगुणणासो कतो भवति पवयणस्स परिभवो कता भवति, अलियवयण च भवति, चरणधम्मे पलोविज्जते चरणधम्मे य अबहुमाणो कतो भवति, साधूण य पदोसो कतो भवति, साधुपदोसे य णियमा संसारो वुड्ढितो भवति ॥५४२९॥

किं च –

खय उवसम मीसं पि य, जिणकाले वि तिविहं भवे चरण ।
मिस्सातो च्चिय पावति, खयउवसमं च णऽण्णत्तो ॥५४३०॥

तित्थकरकाले वि तिविह चरित्त – खतिय उवसमिय खअोवसमिय च। तम्मि वि तित्थकरकाले मिस्सातो चेव चरित्तातो खतिय उवसमिय वा चरित्त पावति, नान्यस्मात्। बहुतरा य चरित्तविसेसा खअोवसमभावे भवति ॥५४३०॥

किं च तीर्थकाले वि

अइयारो वि हु चरणे. ठितस्स मिस्से ण दोसु इतरेसु ।
वत्थातुरदिट्ठंता, पच्छित्तेणं स तु विसुज्झो ॥५४३१॥

---

१ ण य। (ताड)। २ दढा, इति चूर्णौ। ३ साधूण, इत्यपि पाठ।

'इयरेसु" ति खतिए उवसमिए य । जहा वत्थ खारादीहिं सुज्झति, आतुरस्स वा रोगो विरेयणओसहपओगेहिं सोहिज्जति, तथा साधुस्स मिस्सचरणादिअइयारो पच्छित्तेण सुज्झति ॥५४३१॥

ज च भणिय – "अतिसयरहिएहि सुद्धासुद्धचरण ण णज्जति भावो" ।

तत्थ भण्णति –

दुविहं चेव पमाणं, पच्चक्खं चेव तह परोक्खं च ।
ओधाति तिहा पढमं, अणुमाणोवम्मसुत्तितर ॥५४३२॥

ओहि मणपज्जव केवल च एय तिविघ पच्चक्ख । धूमादग्निज्ञानमनुमान । यथा गौस्तथा गवय औपम्य । सुत्तमिति आगम । इयरति एय तिविघ परोक्ख ॥५४३२॥

सुद्धमसुद्धं चरणं, जहा उ जाणंति ओहिणाणादी ।
आगारेहि मणं पि व, जाणंति तहेतरा भावं ॥५४३३॥

पुव्वद्ध कठ । जहा परस्स भमुहणेत्ति (भमुहाणण) बाहिरागारेहिं अतरगतो मणो णज्जति तहा "इयर" त्ति परोक्खणाणी आलोयणाविहाण सोउ पुव्वावरबाहियाहिं गिराहिं आचरणेहिं य जाणति चरित्त सुद्धामुद्ध भाव च सुद्धेतर ॥५४३३॥

चोदगाह – "जइ आगारेण भावो णज्जति तो उदातिमारदिण कि ण णातो ?"

आचार्याह –

कामं जिणपच्चक्खो, गूढाचाराण दुम्मणो भावो ।
तहऽवि य परोक्खसुद्धी, जुत्तस्स व पणवीसाए ॥५४३४॥

काममिति अनुमितार्थे । जइ वि जे उदायिमारगादि गूढायारा तेसिं छउमत्थेण दुक्ख उवलब्भति भावो, सो जिणाण पुण पच्चक्खो, तहावि परोक्खणाणी आगमाणुसारेण चरित्तसुद्धि करेति चेव ।

कह ?, उच्यते – "जुत्तस्स व" त्ति जहा सुत्तोवउत्तो "मीसजायज्झोयरो एगो" त्ति पण्णरस उग्गमदोसा, दस एसणादोसा, एते पणुवीस जहासुयाणुसारेण मोहतो चरण सोहेति, तहा सुत्ताणुसारेण पच्छित्त देतो करेतो य चरित्त सोधेति ॥५४३४॥

अणुज्जतचरणो इमेहिं कज्जेहिं होज्ज –

होज्ज हु वसणप्पत्तो, सरीरदोब्बल्लताए असमत्थो ।
चरण-करणे असुद्धे, सुद्धं मग्गं परूवेज्जा ॥५४३५॥

वसण आवती मज्जगीतादित वा, [1]तम्मि ण उज्जमति, अहवा – सरीरदुब्बलत्तणतो असमत्थो सज्झायपडिलेहणादिकिरिय काउ अकप्पियादिपडिसेहण च । अधवा – सरीरदोब्बला असमत्था अदढधम्मा एवमादिकारणेहिं चरणकरण से अविसुद्ध, तहावि अप्पाण गरिहतो सुद्ध साहुमग्ग परूवेंतो आराधगो भवति ॥५४३५॥

---

१ तेण, इत्यपि पाठ ।

इमो चेव अत्थो भण्णति –

ओमण्णो वि विहारे, कम्मं सिढिलेति सुलभबोही य ।
चरणकरणं विसुद्धं, उववृहेंतो परूवेंतो ।।५४३६।।

कण्ठ्या । जो पुण ओसण्णो होउ ओसण्णमग्गं उववूहइ, सुद्ध चरणकरणमग्गं गूहति इमेहिं कारणेहिं ।

इम च से दुल्लभबोहिअत्त फल –

परियायपूयहेतुं, ओसण्णाणं च आणुवत्तीए ।
चरणकरणं णिगूहति, तं दुल्लभबोहियं जाणे ।।५४३७।। कण्ठ्या ।

अहवा –

गुणसयमहस्सकलियं, गुणुत्तरतरं च अभिलसंताणं ।
चरणकरणाभिलासी, गुणुत्तरतरं तु सो लहति ।।५४३८।।

गुणाण मत गुणसत, गुणसयाण महस्सा गुणमयमहस्सा, छन्दोभगभया सकारस्स हुस्सता कता, ते य अट्ठारससीलगसहस्सा, तेंहि कलिय जुत्त सखिय वा । किं त ?, चारित्त जो त पससति । किं च गुणश्चासौ उत्तर च गुणोत्तर, अथवा – अन्येऽपि गुणा सन्ति क्षमादयस्तेषा उत्तर त च गुणोत्तर सरागचारित्त, गुणुत्तरतर पुण अहक्खाय चारित्त भण्णति, त च जे अभिलसति, ते उज्जयचरणा इत्यर्थ । ते य उववूहते जो ओसण्णो अप्पणा य उज्जयचरणो होहति चरणकरणाभिलाषी भण्णति स एववादी गुणुत्तरतर लभति अहक्खाय-चारित्रमित्यर्थ । अहवा – गुणुत्तर भवत्थकेवलिसुह, गुणुत्तरतर पुण मोक्खसुह भण्णति, त लभति ।।५४३८।।

जो पुणोसण्णो –

जिणवयणभासितेणं, गुणुत्तरतरं तु सो वियाणित्ता ।
चरणकरणाभिघाती, गुणुत्तरतरं तु सो हणति ।।५४३९।।

गुणुत्तरतर चारित्र साघू वा अप्पणा य चरणकरणोवघाते वट्टति । अहवा – चरणकरणस्स जत्ताण वा निंदापरोवघाय करेइ, स एववादी गुणुत्तर वा चारित्र मोक्खसुह वा हणति ण लभइ त्ति, जेण सो दीहसंसारित्तण णिव्वत्तेति ।।५४३९।।

जो ओसण्ण ओसण्णमग्ग वा उववूहति –

सो होती पडिणीतो, पंचण्हं अप्पणो अहितिओ य ।
सुहसीलवियत्ताण, नाणे चरणे य मोक्खे य ।।५४४०।।

पच पासत्थादि सुहसीला विहाररलिगा ओघाविउकामा अवियत्ता अगीयत्था णाणचरणमोक्खस्स य एतेसिं स वेसिं पडिणीतो भवति ।।५४४०।।

इमेहिं पुण कारणेहिं ओसण्ण ओसण्णमग्ग वा उववूहेज्जा –

बितियपदमणप्पज्झे, वएज्ज अविकोविए वि अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वाति गच्छट्ठा ।।५४४१।।

राया सिय ओसण्णाणुवत्तियो भया भणेज्जा। तव्वादि त्ति कश्चिद् वादी ब्रूयात् – "तपस्विन अतपस्विन ब्रुवत पाप भवतीति न प्रनिज्ञा", तत्प्रतिघातकरणे वुसिरातिय अवुसिरातिय भणेज्ज, दुब्भिक्खादिसु वा ओसण्णभाविएसु खेत्तेसु अच्छतो ओसण्णाणुवत्तियो गच्छपरिपालणट्ठा भणेज्ज ॥५५४१॥

जे भिक्खू अवुसिराइयं वुसिराइयं वयइ, वयंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

एमेव बितियसुत्ते, अवुसीरातिं वएज्ज वुसिराति।
कह पुण वएज्ज सोऊण अवुसिरातिं तु वुसिरातिं ॥५४४२॥ कठा

एगचरिं मन्नंता, सयं च तेसु य पदेसु वट्टंता।
सगदोसछायणट्ठा, केइ पसंमंति णिद्धम्मे ॥५४४३॥

कोइ पासत्थादीण एगचारिय भण्णति – 'एस सुदरा, एयस्स एगागिणो ण केणइ सह रागदोसा उप्पज्जति", सो वि अप्पणा गच्छपज्जभग्गो तम्मि चेव ठाणे वट्टति, सो य अप्पणिज्जदोसे छाएउकामा त पासत्थादि एगचारि णिद्धम्म पससति ॥५४४३॥

इम च भणति –

दुक्करय खु जहुत्तं, जहुत्तवादुट्ठियावि सीदंति।
एस नितिओ हु मग्गो, जहसत्तीए चरणसुद्धी ॥५४४४॥ कठा

एव भणते इमे दोसा –

अब्भक्खाण णिस्सकया य अस्संजमंमि य थिरत्तं।
अप्पा सो अवि चत्तो, अवण्णवातो य तित्थस्स ॥५४४५॥

असतभावुब्भावण अब्भक्खाण, अवुसिरातिय वुसिरातिय भणति, सो य सीततो पसमिज्जमाण णिस्सको भवति, सदधम्माण वि असजमे थिरीकरण करेति, अण्ण च उम्मग्गपससणाते अप्पणो य उम्मग्गपट्ठितो चत्तो, तित्थस्स य अन्यपदार्थेन अवणवाद कृतो भवति ॥५४४५॥

कि च –

जो जत्थ होइ भग्गो, ओवासं सो परस्स अविदंतो।
गंतु तत्थऽचएंतो, इम पहाणं ति घोसेति ॥५४४६॥

अद्धाणगदिट्ठतेण ओसण्णो उवसघारेयव्वो, सेस कठ ॥५४४६॥

कि च –

पुव्वगयकालियसुए, संतासंतेहि केइ खोभेति।
ओसण्णचरणकरणा, इमं पहाण ति घोसेति ॥५४४७॥

पुव्वगयकालियसुयनिबधपच्चयतो सीदति,

तत्थ कालियसुते इमेरिसो आलावगो –
"बहुमोहो वि य ण पुव्व विहरेत्ता पच्छा सवुडे काल करेज्जा, कि आराहए विराहए गोयमा! आराहए, णो विराहए"। (   )

एव पुव्वगए वि जे के वि आलावगा ते उच्चरिता। पर खोभति, अप्पणा खोभति – सीदतीत्यर्थ । ते य ओसण्णचरणकरणा "इम" ति अप्पणो चरिय पहाण घोसेंति ।।५४४७।।

इमेमि पुरतो –

अबहुस्सुए अगीयत्थे, तरुणे मंदधम्मिए।
परियारपूयहेऊ, सम्मोहेउं निरुंभंति ।।५४४८।।

जेण आयारपगप्पो ण झातितो एस अबहुस्सुतो, जेण आवस्सगादियाण अत्थो ण सुतो सो अगीयत्थो, सोलसवरिसाण आढवेत्तु जाव न चत्तालीसवरिसो एस तरुणो, असविग्गो मदधम्मो, एते पुरिसे विपरिणामेति, अप्पणो परिवारहेउ, एतेहि य परिबारितो लोयस्स पूयणिज्जो होह, कालियदिट्ठिवाए भणितेहिं, अहवा – अभणिएहिं वा सम्मोहेउ अप्पणो पासे णिरुभति – धरतीत्यर्थ । अधवा – जो एव पण्णवेति सो चेव अबहुस्सुओ अगीयत्थो वा तरुणो मदधम्मो वा । सेस कठ ।।५४४८।।

जत्तो चुतो विहारा, तं चेव पसंसए सुलभबोही।
ओसण्णविहारं पुण, पसंसए दीहसंसारी ।।५४४६।।

जत्तो चुतो विहारा, सविग्गविहारातो चुओ त पससति जो सो सुलभबोधी । जो पुण ओसण्ण-विहार पससति सो दीहससारी भवति ।।५४४६।।

बितियपदमणप्पज्झे, वएज्ज अविकोविए व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वादिगच्छट्ठा ।।५४५०।। पूर्ववत्

जे भिक्खू वुसिरातियगणातो अवुसिराइयं गणं संकमइ, संकमंतं वा साइज्जइ ।।१५।।

वुसिरातियागणातो, जे भिक्खू संकमे अवुसिरातिं।
वुसिरातिया वुसिं वा, सो पावति आणमादीणि ।।५४५१।।

वुसिरातियातो वुसिराइय चउभगो कायव्वो । चउत्थभगो अवत्थु । ततियभगे अणुण्णा । पढम बितिएसु सकमो पडिसिद्धो । पढमे सकमतस्स मासलहु । बितिए चउलहु ।

चोदगाह – "जुत्त बितिए पडिसेहो, पढमभगे किं पडिसेहो" ?

आचार्याह – तत्थ णिक्कारणे पडिसेहो, कारणे पुणो पढमभगे उवसपद करेति ।।५४५१।।

सा य उवसपया काल पडुच्च तिविहा इमा –

छम्मासे उवसंपद, जहण्ण बारससमा उ मज्झिमिया।
आवकहा उक्कोसे, पडिच्छसीसे तु जाजीवं ।।५४५२।।

उवसपदा तिविहा – जहण्णा मज्झिमा उक्कोसा । जहण्णा छम्मासे मज्झिमा बारसवरिसे, उक्कोसा जावज्जीव । एव पडिच्छगस्स सीसस्स एगविहो चेव जावज्जीव आयरिओ ण मोत्तव्वो ।।५४५२।।

छम्मासे अपूरेंतो, गुरुगा बारससमा चउलहुगा।
तेण परं मासियं तू, भणितं पुण आरतो कज्जे ।।५४५३।।

जेण पडिच्छगेण छम्मासिया उवसपया कया सो जति छम्मासे अपूरित्ता जाति तस्स चउगुरुगा ।

जेण बारसवरिसा कया ते अपूरित्ता जाइ चउलहू । जेण जावज्जीव उवसपदा कता सो जाइ तस्स मासलहु । छण्ह मासाण परेण णिक्कारणे गच्छतस्स मासलहु ।

जेण बारससमा उवसपदा कया तस्स वि छम्मासे अपूरेतस्स चउगुरुगा चेव । बारससमातो परेण णिक्कारणे मासलहु ।

जेण जावज्जीवोवसपया कया तस्स छम्मासे अपूरेतस्स चउगुरुगा चेव, तस्सेव बारससमाओ चउलहुगा ।।५४५३।। एस सोही गच्छतो णितस्स भणितो ।

गच्छे पुण वसतस्स इमे गुणा –

भीतावासो[१] रतीधम्मे[२], अणायतणवज्जणं[३] ।
णिग्गहो[४] य कसायाणं, एयं धीराण सासणं ।।५४५४।।

"[१]भीतावासो" त्ति अस्य व्याख्या –

आयरियादीण भया, पच्छित्तभया ण सेवति अकज्जं ।
वेयावच्चऽज्झयणेसु सज्जते तदुवयोगेणं ।।५४५५।। कठा

पुव्वद्ध कठ । [२]रतीधम्मे अस्य व्याख्या –

"वयावच्च" पच्छद्ध । आयरियादीण वेयावच्च करेति । अज्झयण ति सज्झाय करेति । तदुवओगो सुत्तत्थोवओगो, तेण सुत्तत्थोवओगेण वेयावच्चज्झयणेसु रज्जति – रति करेइ त्ति वुत्त भवइ ।

अहवा – तदुवओगो अप्पणो आयरियादीहि य भण्णमाणो वेयावच्चज्झयणादिसु रज्जति ।।५४५५।।

"[३]अणायतणवज्जण" त्ति अस्य व्याख्या –

एगो इत्थीगम्मो, तेणादिभया य [४]अल्लियपगारे ।
कोहादी व उदिण्णे, परिणिव्वावेति से अण्णे ।।५४५६।। कठा

"[५]कसायणिग्गहो" अस्य व्याख्या – कोहादी पच्छद्ध । गच्छवासे वसतस्स अण्णे य आयरियादी परिणिव्वावेति सकसाए । गच्छवासे वसतेण एय वीरसासणे धीर-सासणे वा ज भणिय त आराहिय भवति ।।५४५६।।

इमे य अण्णे गच्छवासे वसतस्स गुणा –

णाणस्स होइ भागी, थिरयरतो दंसणे चरित्ते य ।
धण्णा आवकहाए, गुरुकुलवासं न मुचंति ।।५४५७।।

जम्हा गच्छवासे वसतस्स एवमादी गुणा तम्हा णिक्कारणे सविग्गेण सविग्गेसु वि सकमो ण कायव्वो ।।५४५७।।

कारणे पुण करेज्ज ते य इमे कारणा –

णाणट्ठ दंसणट्ठा, चरितट्ठा एवमाइसंकमणं ।
संभोगट्ठा व पुणो, आयरियट्ठा व णातव्वं ।।५४५८।।

---

१ गा० ५४५४ । २ गा० ५४५४ । ३ गा० ५४५४ । ४ अल्लियागारे, इत्यपि पाठ । ५ गा० ५४५४ ।

णाणट्ठ त्ति अस्य व्याख्या –

सुत्तस्स व अत्थस्स व, उभयस्स व कारणा तु संकमणं ।
वीसज्जियस्स गमणं, भीओ य णियत्तई कोई ॥५५५९॥

पुव्वद्ध कंठ । तेण अप्पणो आयरियाण जं सुत्तं अत्थि तं गहियं, अत्थि य से सत्ती अण्णं पि घेत्तुं, ताहे जत्थ अत्थि अधिगसुत्तं सविग्गेसु तत्थ संकमइ विसज्जितो आयरिएण, अविसज्जिएण ण गतव्वं । अह गच्छति तो चउलहुगा । विसज्जितो य इमे पदे आयरेज्जा जइ तेसिं आयरियाण कक्खडचरियं सोउं कोति भीओ णियत्तेज्ज तो पणगं ॥५४५९॥

चिंतेंतो वइगादी, गामे वा संखडी अपडिसेहो ।
सीसपडिच्छग परिसा, पिसुगादायरियपेसविओ ॥५४६०॥

पणगं च भिण्णमासो, मासो लहुगो य सेसए इमं तु ।
संखडि सेह गुरुगा, पेसविओमि त्ति मासगुरुं ॥५४६१॥

पडिसेहगस्स लहुगा, परिमिल्ले छ त्तु चरिमओ सुद्धो ।
तेसिं पि होंति लहुगा, जं वाऽऽभव्वं तु ण लभंति ॥५४६२॥

एतेसिं तिण्ह वि गाहाण अत्थो सह पच्छित्तेण भण्णति –

चिंतेति-किं वच्चामि ण वच्चामि तत्थ अण्णत्थ वा चिंतेति भिण्णमासो (पणग) । वच्चंतो वा वइयादिसु [1]पडिवज्जति, दधिखीरट्ठा उव्वत्तति वा मासलहुं । आदिसद्दातो सण्णीसु वा दाणसड्ढेसु भद्देसु गा दीहं वा गोयरं करेज्ज, अप्पत्तं वा देसकालं पडिच्छेज्ज, सद्धादाणियगामे वा पडिवज्जति सव्वेसेतेसु पत्तेयं मासलहुं ।

संखडीए वा पडिवज्जति चउगुरुगा, पडिसेवगस्स वा पासे अतरा चिट्ठेज्ज तत्थ य तेसिं पविसंताण चउलहुगा, सेहेण सह चउगुरुगा, गहिओवकरणउवधिणिप्फण्णं ।

पडिसेहगस्स पडिसेहत्तणं करेंतस्स चउलहुं, सेहट्ठा करेंतस्स चउगुरुगा ।

"सीसपडिच्छग" त्ति सो पडिसेहगो सीसपडिच्छए वावारेति तम्मि आगते णिउणं [2]सुत्तं पुच्छेज्ज, परिसिल्लस्स वा पासे अतरा पविसेज्जा तेसिं तत्थ चउलहुगा, सह सेहेण चउगुरुगा, उवकरणे उवहिणिप्फण्णं । परिसिल्लत्तगं करेंतस्स अप्पणो छल्लहुगा । पिसुया मकुणाण वा भया णियत्तंति, अण्णतो वा गच्छति मासलहुं ।

अहवा – तत्थ संपत्तो भणाइ "आयरिएणाहं तुज्झ समीवं अमुगसुत्तत्थणिमित्तं पेसविओ", एवं भणतस्स चउगुरुं । "चरिमो" त्ति जो भणति – "अहं आयरियविसज्जितो तुज्झ समीवमागतो" सो सुद्धो । "तेसिं पि होति लहुगो" त्ति अण्णं अभिधारेउं अण्णं वदतस्स चउलहुं, पडिच्छंतस्स वि चउलहुं, जं च सचित्ताचित्तं किं चि तं तेण लभति, जत्थ पट्ठवितो जो [3]पुव्वधारिउ तस्स तं आभव्वं ॥५४६२॥

एयं चेव अत्थं सिद्धसेणखमासमणो वक्खाणेति ।

---

१ वज्झति इत्यपि पाठः । २ सुतत्थं करेज्ज । ३ पुव्वमभिधारिओ ।

"[1]भीओ णियत्तइ" त्ति अस्य व्याख्या –

मंसाहगस्स सोतुं, पडिपथियमाइयस्स वा भीओ ।
आचरणा तत्थ खरा, सयं च नाउं पडिनियत्तो ॥५४६३॥

ससाहग अणुवच्चगो । सेस कठ्य ।

"[2]चिंतेतो" त्ति अस्य व्याख्या –

पुव्वं चिंतेयव्वं, णिग्गतो चिंतेति किं णु हु करेमि ।
वच्चामि णियत्तामि व, तहिं व अण्णत्थ वा गच्छे ॥५४६४॥

जाव ण णिग्गच्छति आयरिय वा ण पुच्छति ताव सुचिंतिय कायव्व, सेस कठ ॥५४६४॥

"[3]वइयगामसखडिमादिसु" इमा व्याख्या –

उव्वत्तणमप्पत्ते, लहुगो खद्धे भुत्तम्मि होंति चउलहुगा ।
निमट्ठ सुवण्ण लहुगो, संखडि गुरुगा य जं चऽण्णं ॥५४६५॥

पथातो वइयमादिओ उव्वत्तति। अप्पत्त वा वेल पडिक्खति। 'ज चऽण्ण" ति सखडीए हत्थेण हत्थे सघट्टियपु वे, पाएण वा पाए अक्कतपुव्वे, सीसेण वा सीसे आउडियपुव्वे सजमविराहणा वा भायणभगो वा भवति । सेस गतार्थं कठ्य ॥५४६५॥

इदाणिं "[4]पडिसेह सीसपडिच्छग" अस्य व्याख्या –

अमुगत्थऽमुओ वच्चति, मेहावी तस्स कड्ढणट्ठाए ।
अण्णगामे पथे, उवस्सए वा वि वावारे ॥५४६६॥
अभिलावसुद्धपुच्छा, रोलेणं मा हु ते विणासेज्जा ।
इति कड्ढंते लहुगा, जति सेहट्ठाए तो गुरुगा ॥५४६७॥
अक्खर-वंजणसुद्ध, मं पुच्छह तम्मि आगए संते ।
घोसेहि य परिसुद्ध, पुच्छह णिउणे य सुत्तत्थे ॥५४६८॥

को ति आयरिओ विसुद्धसुत्तत्थो फुडवियडवंजणाभिलावी अपडिसेघितो वि पडिसेहगो चेव भावतो लब्भति, तेण य सुय जहा अमुगत्थ अमुगो साहू मेधावी, अमुगसुत्तणिमित्त गच्छति, तेणवि चिंतिय मा म अतिक्कमेउ, तस्स कड्ढणट्ठाए [5]उड्डावणक करेति, उवरिएण अण्णगामेण गच्छतस्स पथे वा अप्पणो वा उवस्सए सीसे पडिच्छए य वावारेति, जण्णिमित्त सो वच्चति तम्मि आगते – "त तुब्भे परियट्टेह, अहिलाव-सुद्ध अत्थ च गुणेज्जह, अत्थ च मे पुच्छिज्जह, ते एव णिक्काएति, पुणो पुणो मा ते रोलेण विणासेज्जह त्ति, अण्ण पि सुय अक्खरवंजणघोससुद्ध पढेज्जह, तम्मि आगते अण्ण पि णिउणे सुत्तत्थे पुच्छेज्जह" एव कड्ढिए चउलहु, सेहट्ठा कड्ढिए चउगुरु ॥५४६८॥ पविसतस्स वि एव चेव ।

---

१ गा० ५४५९ । २ गा० ५४६० । ३ गा० ५४६० । ४ गा० ५४६० । ५ आकर्षण ।

इदाणिं [1]परिसिल्लस्स व्याख्या –

पाउतमपाउता घट्ट मट्ठ लोय खुर विविहवेसधरा ।
परिसिल्लस्स तु परिसा, थलिए व ण किंचि वारेति ॥५४६९॥
तत्थ पवेसे लहुगा, सच्चित्ते चउगुरुं च नायव्व ।
उवहिणिप्फण्णं पि य, अचित्त देंते य गिण्हंते ॥५४७०॥

परिसिल्लो सव्वस्स सविग्गामविग्गस्स परिसणिमित्त सगह करेति । घट्टा फेणादिणा जघाओ, तेल्लेण केसे सरीर वा मट्ठेति, थलि त्ति देवद्रोणी । सेस कठ ॥५४७०॥

इदाणिं "[2]पिमुन गुरुहि पेसितो मि" त्ति एतेसि व्याख्या –

ढिंकुण-पिसुगादि तहिं, सोउ नातु व सन्नियत्तंते ।
अमुग सुतत्थनिमित्ते, तुज्झंति गुरूहि पेसवितो ॥५४७१॥ कठ्या

चोदगाह – "गुरूहिं पेसिओ मि त्ति भणतस्स को दोसो" ?

आचार्याह –

आणाए जिणवराणं, न हु बलियतरा उ आयरियआणा ।
जिणआणाए परिभवो, एव गव्वो अविणओ य ॥५४७२॥

जिणिदेहिं चेव भणिय णिद्दोसो विधिमागतो पडिच्छियव्वो त्ति, णो आयरियाणुवत्तीए पडिच्छियव्वो, जिणाणा य पराभविता भवति, पेसतस्स उवसग्गज्जतस्स पडिच्छितस्स वि तिण्हि वि गव्वो भवति, तित्थकराण सुयस्स य अविणओ कओ भवति ॥५४७२॥

जो ज अभिधारेउ पट्ठितो तत्थ जो अच्चासगेण गतो सो सुद्धो –

अण्णं अभिधारेतुं, पडिसेह परिसिल्ल अण्णं वा ।
पविसेते कुलातिगुरू, पच्चित्तादि च से हातुं ॥५४७३॥

जो पुण अण्ण अभिधारेउ अपडिसेहगस्स पडिसेहगस्स परिसिल्लस्स अण्णस्स वा पासे पविसति पच्छा कुलगणसघथेरेहिं णातो तो ज तेण सचित्ताचित्तादि उवणीय त से हरति ॥५४७३॥

ते दोवुग्गलभित्ता, अभिधारिज्जंति देंति तं थेरा ।
घट्टण वियारणं ति य, पुच्छा विप्फालणेगट्ठा ॥५४७४॥

कीस तुम अण्ण अभिधारेत्ता एत्थ ठितो जेण य पडिच्छिनो ? सो वि भण्णति – "[3]किं ते एस पडिच्छितो ?" त सचित्तादिग थेरा जो पुव्वअभिधारितो तस्स विसज्जति । सेस कठ ॥५४७४॥

घट्टेउं सच्चित्तं, एसा आरोवणा य अविहीए ।
बितियपदमसंविग्गे, जयणाए कयम्मि तो सुद्धो ॥५४७५॥

---

[1] गा० ५ ६२ [2] गा० ५४६० । [3] कीस, इत्यपि पाठ ।

"घट्टण" त्ति पुच्छा, जइ निक्कारणे तत्थ ठितो तो सचित्तादी हरेज्ज, पच्छित्त च से अविधिपदे दिज्जति णिक्कारणे त्ति वुत्त भवति।

पडिमेहगस्स अववाओ भण्णति – "बितियपद" पच्छद्ध। ज सो अभिधारेति सो असविग्गे ताहे जयणाए पडिसेह करति।

का जयणा ?, पढम सव्वेहिं भणावेति, मा तत्थ वच्चाहि, पच्छा अप्पणो वि भणावेज्ज, पुव्वुत्तेण वा सीसपडिच्छगवावारणपयोगेण धरेज्जा, ण दोसो। एव करेतो कारणे मुज्झति, णवर – ज तत्थ सचित्ताचित्त सव्व पुव्वाभिधारियस्स पयट्टेयव्व ॥५४७५॥

इदमेवत्थ भण्णति –

अभिधारेते पासत्थमादिणो तं च जइ सुतं अत्थि ।
जे अ पडिसेहदोसा, ते कुव्वंता हि णिद्दोसो ॥५४७६॥

ज सो सुत अभिलसति, जइ सुत अत्थि तो पडिसेहत्तण करेतस्स वि जे दोसा भणिया ते ण भवति ॥५४७६॥

जं पुण सचित्तादी, तं तेसि देंति ण वि सयं गेण्हे ।
बितिय घित्तूण पेसे, जावतियं वा असंथरणे ॥५४७७॥

पुव्वद्ध कठ। ज वत्थादिग अचित्त त कारणे अप्पणा विमूरेतो असिवादिकारणेहि अण्ण अलभतो ण पेसेति जावतिय उवउज्जति, जेण असथरण वा तावतिय गेण्हति, सेस विसज्जेति, अहवा – सव्व पि ण विसज्जेति ॥५४७७॥

कारणे इमो सचित्तस्स अववातो –

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।
सयमेव दिसाबंधं, करेज्ज तेसिं ण पेसेज्जा ॥५४७८॥

जो तेण सेहो आणितो सो परममेहावी, अप्पणो गच्छे णत्थि को वि आयरियपदजोग्गो, ज च से पुव्वगत कालियसुय च तस्स गाहगो णत्थि, ताहे तेसि वोच्छेद जाणिऊण त सेह अप्पणो सीस णिबधइ, ण पुव्वाभिधारियस्स पट्ठवेइ ॥५४७८॥

इदाणिं परिसिल्ले अववादो भण्णति –

असहाओ परिसिल्लत्तणं पि कुज्जा उ मंदधम्मेसु ।
पप्प व काल-ऽद्धाणे, सचित्तादी वि गिण्हेज्जा ॥५४७९॥

असहायो आयरियो पलिसिल्लत्तण पि करेइ त सवेग्ग असविग्ग वा सहाय गेण्हति।
सिस्सा वा मदधम्मा गुरुस्स वावार ण वहति, ताहे अण्ण सहाय गेण्हति।
सड्ढा वा मदधम्मा गुरुणो जोग्ग ण देति ताहे लद्धिसपण्ण परिगेण्हति।

दुब्भिक्खादिकाले वा श्रद्धाण वा पविसतो – एवमादिकारणेहिं परिभिल्लत्तण करेतो सुद्धो। सचित्ताचित्त पुण पेसेति ण पेसेति वा, पुव्वभणियकारणेहिं ॥५४७६॥

जो सो अभिधारेंतो वच्चति तस्स अववादो भण्णति –

असिवादिकारणेहिं, कालगतं वा वि सो व्व इतरो तु ।
पडिसेहे परिसिल्ले, अण्ण व विसिज्ज बितियपदे ॥५४८०॥

जत्थ गतुकामो तत्थ असिव अतरा वा, अहवा – जो अभिधारितो आयरिओ सो कालगतो, 'इयरो' त्ति जा सो पहावितो साधू पडिसेहगपरिसिल्ले अण्णस्स वा आयरियस्स पास पविसेज्ज, बितियपदेण ण दोसो ॥५४८०॥ एय अविसेसित्त भणिय।

इम [1]आभव्वाणाभव्व विसेसिय भण्णति –

वच्चंतो वि य दुविहो, वत्तमवत्तस्स मग्गणा होति ।
वत्तम्मि खेत्तवज्जं, अव्वत्तेणं पि तं जाव ॥५४८१॥

पुव्वद्धस्स इमा विभासा –

सुअ अव्वत्तो अगीओ, वएण जो सोलसण्ह आरेणं ।
तव्विवरीतो वत्तो, वत्तमवत्ते च चउभंगो ॥५४८२॥

सुएण वि अव्वत्तो वएण वि अव्वत्तो चउभगो कायव्वो। सुएण अगीयो अव्वत्तो। वएण जो सोलसण्ह वासाण आरतो। तव्विवरीतो वत्तो जाणियव्वो। सो पुण वच्चतो ससहाओ वच्चति असहाओ वा ॥५४८२॥

वत्तस्स वि दायव्वो, पहुप्पमाणे सहाओ किमु इतरे ।
खेत्तविवज्जं अव्वंतिएसु जं लब्भति पुरिल्ले ॥५४८३॥

आयरिएण पहुप्पमाणेसु साहुसु वत्तस्स वि सहाओ दायव्वो अवत्तस्स, किमग पुण अवत्ते।

"[2]वत्तम्मि खेत्तवज्जम्मि" अस्य व्याख्या – "खेत्तविवज्ज" पच्छद्ध। वत्तो अव्वत्तो वा अव्वतिया से सहाया तेणेव सह गतुकामो परखेत्त मात्तु ज सो य लब्भति त सव्व पुरिमस्स अभिधारेतस्स आभवति, परखेत्ते ज पुण लद्ध त खेत्तियस्स आभवति ॥५४८३॥

जति णेतु एतुमाणा, जं ते मग्गिल्ल वत्तपुरिमस्स ।
नियमऽव्वत्तसहाओ, णेउ णियत्तति ज सो य ॥५४८४॥

अह ते सहाया त णेउ पराणेत्ता पडियागतुकामा ज ते सहाया लब्भति त मग्गिल्लस्स अप्पणिज्ज आयरियस्स आभवति। सो पुण वच्चतो अप्पणा जति वत्तो तो ज सो लब्भति त पुरिमस्स अभिधारिज्जतस्स देति। "[3]अव्वत्तेण पि जाव" त्ति अस्य व्याख्या – अव्वत्तो पुण नियमा ससहायो भवति, तस्स सहाया जे ते य णेतु णियत्तिउकामो ज सो ते य लभति त सव्व पुव्विल्लायरियस्स आभवति ॥५४८४॥

बितियं अपहुप्पंते, ण देज्ज वत्तस्स सो सहाओ तु ।
वइयाइ अपडिवज्झंतगस्स उवही विसुद्धो उ ॥५४८५॥

---

१ गा० ५४६२। २ गा० ५४८१। ३ गा० ५४८१।

बिनिय त्ति अववादतो, आयरिओ अपहुप्पतेसु सहाय न देज्जा, सो य अप्पणा सुय-वएसु वत्तो, तस्स वइगादिसु अप्पडिवज्जतस्स उवहीए बाघातो ण भवति, अह वइयादिसु पडिवज्जइ तो तण्णिप्फण्ण, उवकरणोवघायट्ठाणेसु व वट्टतस्स उवही उवहम्मति ।।५४८५।।

एगे तू वच्चंते, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।
वच्चतो उ गिलाणो, अंतरा उवहिमग्गणा होति ।।५४८६।।

जो वत्तो एगागी गच्छति सो जति अण्णस्स आयरियस्स। जो उग्गहो त वज्जेउ अणोग्गहखेत्ते किंचि लभति त सव्व अभिधारिज्जते देति । अहवा – एगागी वच्चतो दो तिण्णि वा आयरिए अभिधारेज्ज, तस्स य अतरा गेलण्ण होज्ज, जे अभिधारिता तेहि आयरिएहिं सुय जहा अम्हे धारता साधू यतो गिलाणो जाओ ।।५४८६।।

आयरिय दोण्णि आगत, एक्के एक्के व णागए गुरुगा ।
न य लभती सचित्तं, कालगए विप्परिणए य ।।५४८७।।

जे ते अभिधारिता ते जति सव्वे आगता तो तेण ज अतराले लद्ध त तेसिं सव्वेसिं साधारण ।

अह तत्थ एगो आगतो अवसेसा णागता । जे नागया तसिं चउगुरु, त सचित्ताचित्त ण लब्भति । जो गतो गवेसगो तस्स त सव्व आभव्वति । कालगते वि एव चेव ।

अह गिलाणो वि विप्परिणओ जस्स सो ण लभति, ज पुण अभिधारिज्जते लद्ध पच्छा विपरिणतो ज अविपरिणते भावे लद्ध त लभति, विप्परिणए भावे ज लद्ध त ण लभति ।।५४८७।। एसा सुअभिधारणे आभवतमग्गणा भणिया ।

इमा अण्णा वाताहडमग्गणा भण्णति –

पंथसहायमसड्ढो, धम्म सोऊण पव्वयामि त्ति ।
खेत्ते य बाहि परिणत, सहियं पुण मग्गणा इणमो ।।५४८८।।

एक्को कारणितो विहरति, तस्स पथे असढो वाताहडो सहाओ मिलितो, सो य तस्स साहुस्स पासे धम्म सुणेत्ता असुणेत्ता वा पव्वयामि त्ति परिणामो जातो – "दिक्खेह म" ति । सो परिणामो जति साधुपरिग्गहियखेत्तस्स अतो जातो तो सो सेहो खेत्तियस्स आभवति, अह बाहिं खेत्तस्स अपरिग्गहे खेत्ते परिणामो होज्ज तो तस्सेव साहुस्स आभव्वो ।।५४८८।।

खित्तम्मि खेत्तियस्सा, खेत्तबहिं परिणते पुरिल्लस्स ।
अंतरपरिणयविप्परिणए य कायव्व मग्गणता ।।५४८९।।

पुव्वद्ध गतार्थं । णवर – "पुरिल्लस्स" त्ति साधो पूर्वाचार्यस्येत्यर्थं । एव अतरा पव्वज्जापरिणामो पुण विपरिणामो, एव जत्थ अवट्ठितो परिणामो जाओ सो पमाण – खेत्ते खित्तियस्स, अखेत्ते तस्सेव । जो पुण सम्मद्दिट्ठी तस्स जइ दसणपज्जातो णत्थि तो इच्छा, दसणपज्जायअच्छिण्णो जेण सम्मत्त गाहितो तस्स भवति । ।।५४८९।।

एस विही तु विसज्जिते, अविसज्जि लहुगमासऽणापुच्छा ।
तेसिं पि होंति लहुगा, जं वाऽऽभव्वं च ण लभंति ।।५४९०।।

अविसज्जितो जइ सीसो गच्छइ ङ्कु, पडिच्छगो जइ जाइ तो चउलहुगा।

अह विसज्जितो दोच्च वार अणापुच्छाए गच्छइ, सीसो पडिच्छओ वा तो मासलहु, तेसि पि पडिच्छनाण चउलहुगा, ज च सचित्तादिग त ते पडिच्छनगा ण लभति ।।५४६०।।

आयरिओ पुण इमेहि कारणेहि ण विसज्जेति -

परिवार-पूयहेउं, अविसज्जंते ममत्तदोसा वा ।
अणुलोमेण गमेज्जा, दुक्खं खु विसज्जिउ गुरुणो ।।५४६१।।

अप्पणो परिवारणिमित्त बहूहिं वा परिवारितो पूयणिज्जो भविस्स, मम सीसो अण्णस्स पास गच्छति त्ति णेहममत्तेण वा ण विसज्जेति। पच्छद्ध कठ। जम्हा अविसज्जिते सोही ण भवति, ण य सो गुरू पडिच्छइ तम्हा पुच्छियव्व ।।५४६१।।

सा य आपुच्छा दुविहा - अविधी विधी य। अविधिआपुच्छणे त चेव पच्छित्त ज अपुच्छिए। विधिपुच्छाए पुण सुद्धो।

सा इमा विधी -

नाणम्मि तिण्णि पक्खा, आयरिय-उवज्झाय-सेसगाणं तु ।
एक्केक्के पंच दिवसो, अहवा पक्खेण एक्केक्कं ।।५४६२।।

णाणणिमित्तेण जतो तिण्णि पक्खे आपुच्छ करेति, तत्थ आयरिय आपुच्छति पच दिणा, जति ण विसज्जेति तो उवज्झाय पचदिणे, जति सो वि ण विसज्जेति तो गच्छ पचदिणे पुणो आयरियउवज्झायगच्छ च पचपचदिणे, पुणो एते चेव पचपचदिणे, एव एक्केक्के पक्खो भवति, एव तिण्णि पक्खा। अहवा - अणुबद्ध आयरियपक्ख, पच्छा उवज्झाय, पच्छा गच्छपक्ख, एव वा तिण्णि पक्खा। एव जति ण विसज्जितो तो अविसज्जितो चेव गच्छति ।।५४६२।।

एतविहिमागत तू, पडिच्छ अपडिच्छणमि भवे लहुगा ।
अहवा इमेहिं आगत, एगादि पडिच्छए गुरुगा ।।५४६३।। कठ

अह एगादिकारणेहिं आगय पडिच्छति तो चउगुरुगा ।।५४६३।।

एगे अपरिणए या, अप्पाहारे य थेरए ।
गिलाणे बहुरोगे य, मदधम्मे य पाहुडे ।।५४६४।।

एगागि आयरिय छड्डे त्ता आगतो। अपरिणता वा सेहा, आहारवत्थपादादियाण अकप्पिया तेसि सहिय आयरिय छड्डे त्ता आगता। अप्पाहारो आयरितो त चेव पुच्छित्ता सुत्तत्थे वायण देवि, त मोत्तुमागतो। थेर गिलाण आयरिय छड्डे त्ता आगतो। बहुरोगी णाम जो चिरकाल बहूहिं वा रोगेहिं अभिभूतो त छड्डे त्ता आगतो। अहवा - सीसो गुरू वा मदधम्मा, तस्स गुणे ण सामायारी पडिपूरेति त "छड्डे त्ता" आगतो। "पाहुडे" त्ति आयरिएण सह कलहेत्ता आगतो ।।५४६४।।

एतारिसं विउसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।
सीस-पडिच्छा-ऽऽयरिए, पायच्छित्तं विहिज्जति ।।५४६५।। कठ

सिस्सस्स पडिच्छगस्स आयरियस्स य तिण्ह वि पच्छित्तं भण्णति –

एगे गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुगा तु सीसमादीणं ।
सेसे सीसे गुरुगा, लहुगपडिच्छे य गुरुसरिसं ॥५४९६॥

एगे गिलाणे पाहुडे य तिसु वि दारेसु तिण्ह वि सीसपडिच्छगायरियाणं पत्तेयं गुरुगा भवंति, सेसा जे अपरिणयादी दारा तेसु सीसस्स चउगुरुगा, तेसु चेव पडिच्छयस्स चउलहुगा, गुरुसरिसं ति जइ सीसं पडिच्छइ तो चउगुरुगा, अह पडिच्छगं तो चउलहुगा ॥५४९६॥

[1]णाणट्ठा तिण्णि पक्खे आपुच्छियव्वं तस्स इमो अववातो –

बितियपदमसंविग्गे, संविग्गे वा वि कारणाऽऽगाढे ।
नाऊण तस्स भावं, कप्पति गमणं चऽणापुच्छा ॥५४९७॥

आयरियादीसु असंविग्गीभूतेसु णापुच्छिज्जा वि । अहवा – संविग्गेसु आयरियादिसु अप्पणो से किंचि इत्थिमादियं चरित्तविणासकारणं आगाढं उप्पण्णं ताहे अणापुच्छिए वि गच्छति । "मा एस गच्छति (त्ति) गुरुमादियाण वा भावे णाते अणाते अणापुच्छाए वि गच्छति ॥५४९७॥

अविसज्जिएण ण गंतव्वं ति एयस्स अववादो –

अज्झयणं वोच्छिज्जति, तस्स य गहणम्मि अत्थि सामत्थं ।
ण य वितरंति चिरेण वि, णातुं अविसज्जितो गच्छे ॥५४९८॥ कंठ्या

एवं अविसज्जिओ गच्छति, ण दोसो । अविधिमागतो आयरिएण ण पडिच्छियव्वो त्ति ।

एयस्स अववादो –

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।
सुत्तत्थजाणतो खलु, अविहीय वि आगतं वाए ॥५४९९॥

अणापुच्छविसज्जियं वइयादिपडिबज्झंतगं वा अविधिमागयं वोच्छेदादिकारणे अवलंबिऊण पडिच्छति चोदेति वा ण दोसो ॥५४९९॥

"जो तेण आगंतुगेण सेहो आणितो तस्स अभिधारियस्स अणाभव्वो, सो तेण ण गेण्हियव्वो" त्ति एयस्स अववादो इमो –

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।
सुत्तत्थजाणगस्स तु, कारणजाते दिसाबंधो ॥५५००॥

चोदक आह – "अणिबद्धो किं ण वाइज्जति" ?

आचार्य आह – अणिबद्धो गच्छइ स गुरूहिं वातिज्जइ, कालसभावदोसेण वा ममत्तीकतं वाएति, अतो दिसाबंधो अणुण्णातो ।

जो य सो णिबज्झइ सो इमो –

ससहायअवत्तेण, खेत्ते वि उवट्ठियं तु सच्चित्तं ।
दलयंतु नानुबंधति, उभयममत्तट्ठया तं वा ॥५५०१॥

---

[1] गा० ५४९२ ।

अव्वत्तेण ससहायेण वत्तेण वा असहाएण परखेत्ते उवट्ठितो सच्चित्तो सो खेत्तियाण आभव्वो तहावि त दलयति परममेहाविण गुरुपदजोग्ग च, अप्पणो य सो गच्छे आयरियजोग्गो णत्थि त्ति ताहे तस्स अप्पणो दिसाबध करेति । "उभय" ति सजता सजतीओ य । अहवा – तस्स सगच्छिल्लगाण य परोप्पर ममीकारकरण भवति, अम्ह सज्झतिउ त्ति, "त व" त्ति जो पडिच्छगो आगतो त वा णिबधइ । जो सो सेहो पडिच्छगो आगतो त वा णिबधइ ॥५५०१॥

जो सो सेहो पडिच्छगो वा णिबद्धो सो तत्थ णिम्मातो –

आयरिए कालगते, परियट्टति सो गणं सयं चेव ।
चोदेति व अपढंते, इमा तु तहि मग्गणा होति ॥५५०२॥

आयरिए कालगए सो त गच्छ ण मुयइ, एत्थ गच्छस्स णिबद्धायरियस्स ववहारो भण्णति, सो त सयमेव गण परियट्टेइ, सो य गच्छो ण पढति, अपढनो य तेण चोदेयव्वो, जति चोदिया वि ण पढति तो इमो आभवतमग्गणा ॥५५०२॥

आहारणं तु पढमे, बितिए खेत्तम्मि ततिए सुहदुक्खं ।
अणहिज्जंते सेमे, हवंति एक्कारस विभागा ॥५५०३॥

कालगयस्स जाव पढमवरिस ताव गच्छस्स जो सो ठितो आयरिओ एतेसिं दोण्ह वि साधारण सचित्तादि सामान्यमित्यर्थ ।

बितिए वरिसे – ज खेत्तोवसपण्णतो लभति त ते अपढता लभति ।

ततिए वरिसे – ज सुहदुक्खोवसपण्णतो लभति त ते लभति ।

चउत्थे वरिसे – कालगतायरियसीसा अणहिज्जता ण किं चि लभति, सव्व पडिच्छगायरियस्स भवति ॥५५०३॥

सीसो पुच्छइ – "किं खेत्तोवसपण्णओ सुहदुक्खिओ वा लभइ ?" त्ति ।

उच्यते –

णातीवग्गं दुविहं, मित्ता य वयंसगा य खेत्तम्मि ।
पुरपच्छसंथुता वा, सुहदुक्ख चउत्थए सव्वं ॥५५०४॥

दुविध णातीवग्ग – पुव्वसथुता पच्छासथुता य । सहजायगादि मित्ता, पुव्वुप्पणा वयसगा, एते सव्वे खेत्तोवसपण्णतो लभति, सुहदुक्खीतो पुण पुरपच्छसथुता एव केवला भवति । जे पुण अहिज्जति तेसिं [1]एक्कारस विभागा । तस्स य कालगयायरियस्स चउव्विधो गणो – पडिच्छया सिस्सा सिस्सिणीओ पडिच्छिणीओ य । एतेसिं ज तेण आयरिएण जीवतेण उद्दिट्ठ त पुव्वुद्दिट्ठ भण्णति, ज पुण तेण पडिच्छगायरिएण उद्दिट्ठ त पच्छुद्दिट्ठ भण्णति ॥५५०४॥

खेत्तोवसंपयाए, बावीसं संथुया य मित्ता य ।
सुहदुक्खमित्तवज्जा, चउत्थए णालबद्धा य ॥५५०५॥

---

[1] गा० ५५०३ ।

पुव्वुद्दिट्ठं तस्स उ, पच्छुद्दिट्ठं पवाततंतस्स ।
संवच्छरम्मि पढमे, पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ।।५५०६।।

जं जीवतेण आयरिएण पडिच्छगस्स उद्दिट्ठं तं चेव पढतस्स पढमवरिसे जं सचित्ताचित्तं लब्भति तं सव्वं "तस्स" त्ति जेण उद्दिट्ठं तस्स आभव्वं। एस एक्को विभागो। अह इमेण उद्दिट्ठं पडिच्छगस्स पढमवरिसे तो जं सचित्ताचित्तं लब्भति तं सव्वं वा देतस्स। एस बितिओ विभागो ।।५५०६।।

बितियवरिसे –

पुव्व पच्छुद्दिट्ठे, पडिच्छए जं तु होइ सच्चित्तं ।
संवच्छरम्मि बितिए, तं सव्वं पवाययतस्स ।।५५०७।।

पडिच्छगो बितियवरिसे पुव्वुद्दिट्ठं वा पच्छुद्दिट्ठं वा पढउ जं तस्स सचित्ताचित्तं सव्वं वाएतस्स। एस ततिओ विभागो ।।५५०७।।

इदाणि सीसस्स भण्णति –

पुव्वं पच्छुद्दिट्ठं, सीसम्मी जं तु होइ सच्चित्तं ।
संवच्छरम्मि पढमे, तं सव्वं गुरुस्स आभवति ।।५५०८।।

सीसस्स पढमवरिसे कालगतायरिएण च उद्दिट्ठं इमेण वा पडिच्छगारिएण उद्दिट्ठं पढतस्स जं सचित्ताचित्तं तं सव्वं कालगतस्स गुरुस्स आभवति। एस चउत्थो विभागो ।।५५०८।।

सीसस्स बितिए वरिसे –

पुव्वुद्दिट्ठंतस्स उ, पच्छुद्दिट्ठं पवाययतस्स ।
संवच्छरम्मि बितिए, सीसम्मी जं तु सच्चित्तं ।।५५०९।।

जहा पडिच्छगस्स पढमवरिसे दो आदेसा तहा सीसस्स बितियवरिसे दो आदेसा भाणियव्वा। एत्थ पंच-छट्ठ विभागा सीसस्स बितीयवरिसे ।।५५०९।।

पुव्वं पच्छुद्दिट्ठं, सीसम्मी जं तु होति सच्चित्तं ।
संवच्छरम्मि तइए, तं सव्वं पवाययंतस्स ।।५५१०।। (ङ)

जहा पडिच्छगस्स बितियवरिसे तहा सीसस्स ततियवरिसे। एस सत्तमो विभागो ।।५५१०।।

इदाणि सिस्सिणी पढम-बितियसंवच्छरेसु भाणियव्वा पडिच्छगतुल्ला –

पुव्वुद्दिट्ठंतस्सा, पच्छुद्दिट्ठं पवाययंतस्स ।
संवच्छरम्मि पढमे, सिस्सिणिए जं तु सच्चित्तं ।।५५११।।

पुव्वं पच्छुद्दिट्ठं, सीसिणिए जं तु होति सच्चित्तं ।
संवच्छरम्मि बितिए, तं सव्वं पवाययतस्स ।।५५१२।।

तत्थ तिण्णि विभागा पुव्विल्लेसु जुत्ता दस विभागा ।

इदाणि पडिच्छगा –

पुव्वं पच्छुद्दिट्ठं, पडिच्छए जं तु होति सच्चित्तं ।
संवच्छरम्मि पढमे, तं सव्वं पवाययतस्स ॥५५१३॥

पडिच्छगाए पढमे चेव सवच्छरे आयरिएण वा उद्दिट्ठ इमेण वा उद्दिट्ठ पढउ ज से सचित्तादि त सव्व वाएतो गेण्हति, एते एक्कारस विभागा ॥५५१३॥ एसो विभागे ओहो, इमो विभागेण पुण अण्णो आदेसो भण्णइ अहवा – एसो विधि जो सो सेहो अप्पणो णिबद्धो तस्स भणितो ।

जो पुण सो पाडिच्छगो णिबद्धो तस्सिमो विधी –

सो तिविहो होज्ज – कुलिच्चो गणिच्चो, सघिच्चो वा होज्ज ।

संवच्छराणि तिण्णि उ, सीसम्मि पडिच्छए उ तद्दिवसं ।
एवं कुले गणे या, संवच्छर संघे छम्मासा ॥५५१४॥

जइ सो एगकुलिच्चो तो तिण्णि वरिसे सचित्तादि सिस्साण ण गेण्हति, पडिच्छगाण पुण जद्दिवस चेव आयरिओ कालगओ तद्दिवस चेव गेण्हति, एव कुलिच्चए भणिय ।

अह सो एगगणिच्चो तो सवत्सर सिस्साण सचित्तादि ण गेण्हति । जो य कुलगणिच्चो [ण] भवति सो णियमा सघिच्चो । सो सघिच्चो छम्मासे सिस्साण सचित्तादि ण गेण्हति, ते पडिच्छगायरिएण तत्थ गच्छे तिण्णि वरिसा अवस्स अच्छियव्व, परेण इच्छा ॥५५१४॥

तत्थेव य निम्माए, अणिग्गते णिग्गते इमा मेरा ।
सकुले तिण्णि तिगाई, गणे दुगं वच्छरं संघे ॥५५१५॥

तत्थेव पडिच्छगायरियस्स समीवे तम्मि अणिग्गए जति कोति तम्मि गच्छे णिम्मातो तो सुदर ।

अह ण णिम्माओ सो य तिण्ह वरिसाण परतो णिग्गतो, अहवा – एस अम्ह सचित्तादि हरति त्ति ते वा णिग्गता तेसिं इमा मेरा –

सकुले समवाय काउ कुले थेरेसु वा उवट्ठायति ताहे तेसिं कुल वायणायरिय देति, वारएण वा वाएति कुल, तिण्णि तिया णववरिसे वाएति ण य सचित्तादि गेण्हति, जइ णिम्मातो विहरइ ततो सुदर ।

अह एक्को वि ण णिम्मातो ततो पर सचित्तादि गेण्हति, ताहे सगणे उवट्ठाति गणो वायणायरिय देति, सो वि दोण्णि वरिसे वातेति, ण य सचित्तादि गेण्हति, जति णिम्मातो एक्को वि तो विहरतु, अणिम्माते सघे उवट्ठायति, सघो वायणायरिय देति, सो य वरिस वाएति, ण य सचित्तादि गेण्हति, णिम्माए विहरतु । एते बारस वरिसा ॥५५१५॥

अह एतेसि एक्को वि णिम्मातो, कह पुण एवतिएण कालेण णिम्माति ?

उच्यते –

ओमादिकारणेहि व, दुम्मेहत्तेण वा ण णिम्माओ ।
काऊण कुलसमायं, कुलं थेरे वा उवट्ठंति ॥५५१६॥

ओमसिवदुब्भिक्खमाइएहिं अडतो न निम्मातो दुम्मेहत्तणेण वा, ताहे पुणो कुलादिसु कुलादिथेरेसु वा उवट्ठायति तेणेव कमेण, एते वि बारस वरिसे । दो बारस चउव्वीस । जति एक्को वि णिम्मातो

विहरतु, ग्रह न निम्मातो तो पुणो कुलादिसु तेणेव कमेण उवट्ठायति, एते वि बारस वरिसे, सव्वे छत्तीस जाता । एव जति छत्तीसाए वरिसेहिं णिम्मातो तो सुदर, ग्रह न निम्मातो ताहे ग्रण्ण परममेहाविण पत्त उवादाय पव्वावेत्ता उवसपज्जति ॥५५१६॥

सा य उवसपदा एतारिसे ठाणे –

पव्वज्जएगपक्खिय, उवसंपद पंचहा मए ठाणे ।
छत्तीसाऽतिक्कते, उवसंपद पत्तुवादाय ॥५५१७॥

पच्छद्ध गतार्थं ।

पुव्वद्धस्स इमा विभासा, "पव्वज्ज एगपक्खी" इमे –

गुरुसज्झिलए सज्झंतिए य गुरुगुरु गुरुस्स वा नत्तू ।
ग्रहवा कुलिच्चग्रो ऊ पव्वज्जा एगपक्खी उ ॥५५१८॥

पितृव्य, भ्राता, पितामह, पौत्रक – भ्रातृव्य इत्यथ । ग्रहवा – एगकुलिच्चए तेसिं एक्का सव्वा सामाचारी, सुतेण एगपक्खितो जस्स एगवायणिय सुत ॥

पव्वज्जाए सुएण य, चउभंगुवसंपया कमेणं तु ।
पुव्वाहियविस्सरिए, पढमासति तइयभंगो उ ॥५५१९॥

पुव्वद्धभणियक्कमेण उवसपदा पढमततियभगेसु त्ति, जम्हा तेसु पुव्वाहित विस्सरिय पुणो उज्जुयारे ग्रोसक्कइ ।

चोदकाह – "साहम्मियवच्छल्लयाए सव्वस्सेव कायव्व, कि कुलातिविभागेण उवट्ठवण कत" ? उच्यते –

सव्वस्स वि कातव्वं, निच्छयग्रो किं कुलं व ग्रकुलं वा ।
कालसभावममत्ते, गारवलज्जाए काहिंति ॥५५२०॥ कठा

"[1]उवसपद पचविध" त्ति ग्रस्य व्याख्या –

सुतसुहदुक्खे खेत्ते, मग्गे विणए य होति बोधव्वे ।
उवसंपया उ एसा, पंचविहा देसिता सुत्ते ॥५५२१॥

उवसपदासु इमो ग्राभवतववहारो –

सुत्तम्मि णालबद्धा, णातीबद्धा य दुविहमित्तादी ।
खेत्ते सुहदुक्खे पुण, [2]पुव्वसंथुय मग्गदिट्ठादी ॥५५२२॥

सुत्तोवसपदा दुविधा – पढते ग्रभिधारेंते य । दुविधाए वि सुत्तोवसपदाए छ णालबद्धा इमे – माता पिता भ्राता भगिणी पुत्तो धूता ।

---

१ गा० ५५१७ । २ पुरे इत्यपि पाठ ।

एतेसिं पराविं सोलस इमे –

माउम्माता पिता भ्राता भगिणी, एव पिउणो वि चउरो, भाउपुत्तो धूया य, एव भगिणी पुत्त-धूयाण वि दो दो, एते सोलस, छ सोलस य बावीस, एते णालबद्धा, सुत्तोवसपण्णो लभति । खेत्तोवसपण्णो बावीस पुव्वपच्छसथुया य मित्ता य लभति । सुहदुक्खी पुण बावीस पुव्वपच्छसथुया य लभति । मग्गोवस-पण्णता एते सव्वे लभति दिट्ठा भट्ठा य लभति । विणग्रोवसपदाते सव्व लभति, णवर – विणयाणरिहस्स ण वदणाविणय पउजति ।

"[1]सगे ठाण" त्ति – पढ ज्जाए सुतेण य जो एगपक्खी पढम तत्थ य उवसपज्जति, पच्छा कुलेण सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण गणेण य जो एगपक्खी, तस्स त्रि पच्छा बितियभगेसु, पच्छा चउत्थभगे, एव उवसपदाते ठायति ।

ग्रहवा – "[1]सट्ठाणे" त्ति – सुत्तत्थिस्स जम्स सुय ग्रत्थि त सट्ठाण एव सुहदुक्खियस्स जत्थ वेयावच्चकरा ग्रत्थि, खेत्तोवसपदत्थिस्स जस्स वत्थभत्तादिय ग्रत्थि, मग्गोवसपदत्थिस्स जत्थ मग्ग ग्रत्थि, विणयोवसपदत्थिस्स जत्थ विणयकरण जुज्जति । एते सट्ठाणा एतेसु उवसपदा ।।५५२२।। णाणट्ठोवसपदा गता ।

इदाणि [2]दसणट्ठा भण्णति ।

क वा दसणट्ठा गम्मति ?, उच्यते –

कालियपुव्वगते वा, णिम्माओ जदि य अत्थि से सत्ती ।
दंसणदीवगहेउं, गच्छइ अहवा इमेहिं तू ।।५५२३।।

कालियसुते पुव्वगयसुते वा ज वा जम्मि काले पतरति सुत्त तम्मि सुत्तत्थतदुभएसु णिम्मातो ताहे जइ से दसणदीवगेसु गहणधारणसत्ती ग्रत्थि ताहे ग्रप्पणो परस्स य दरिसण दीवगत्ति दीप्त करोति हेतु कारण तानि दर्शनविशोधनानीत्यथ । ग्रहवा – इमेहिं कारणेहिं गच्छति ।।५५२३।।

भिक्खुगा जहि देसे, बोडिय-थलि णिण्हएहि ससग्गी ।
तेसिं पण्णवणं असहमाणे वीसज्जिते गमणं ।।५५२४।।

जत्थ गामे णगरे देसे वा भिक्खुग-बोडिय-णिण्हगाण वा थली तत्थ ते ग्रायरिया ठिता, तेहिं सद्धि ग्रायरियससग्गी – प्रीतिरित्यथ । ते य भिक्खुमादी ग्रप्पणो सिद्धत पण्णवेंति सो य ग्रायरिग्रो तेसिं दक्खिण्णण तुण्हिक्को ग्रच्छति ।।५५२३।।

लोगे वि य परिवाओ, भिक्खुयमादी य गाढ चमढेंति ।
विप्परिणमंति सेहा, ओभामिज्जति सड्ढा य ।।५५२५।।

एते भिक्खुमादी जाणगा, इमे पुण ग्रोदणमुडा, ते य भिक्खुमादी ग्रम्ह पक्ख गाढ चमढेंति, सेह सड्ढा य विपरिणमति, भणति य – एते सेयभिक्खू धम्मवादिणो, जइ सामत्थ ग्रत्थि ण तो ग्रम्हं उत्तर देनु, एव सपक्खेसु सड्ढा ग्रोहाविज्जति, ।।५५२५।।

ग्रह तेहिं भिक्खुगमाईहिं थलीए वट्टमो णिबद्धो –

रसगिद्धो य थलीए, परतित्थियतज्जणं असहमाणो ।
गमणं बहुस्सुयत्तं, आगमणं वादिपरिसाओ ।।५५२६।।

---

१ गा० ५५१७ । २ गा० ५४५८ ।

सो य आयरियो रसगिद्धो गोउलपिंडहतो, सति वि सामत्थे भण्णमाणो वि ण किं चि उत्तर देति, एवमादि तेसि परतित्थियाण पण्णवणतज्जण असहमाणो सिस्सो आयरिए विधीए पुच्छति, जाहे विसज्जितो ताहे विहिणा गओ, सो य सुणेत्ता बहुस्सुओ जाओ आगमण, आगतेण य पुव्व आयरिया दट्ठव्वा, अण्णवसहीए सो ठाइ, जे तत्थ पडिया वादिपरिस च गेण्हति, ते परिजियायत्ते करेति, ते रण्णो महाजणस्स वा पुरतो णिरुत्तरे करेंति ॥५५२६॥

वादपरायणकुविया, जति पडिसेहेंति साहु लट्ठं च ।
अह चिरणुगतो अम्हं, मा से पवत्त परिहवेह ॥५५२७॥

वादकरणे जिता कुविया जइ ते त आयरियस्स निबध पडिसेहति तो सुदर, अहवा – तत्थ कोइ तुट्ठो भणिज्ज – "एयस्स को दोसो ? एस अम्ह चिरणुगतो, पुव्ववत्त वट्टय मा परिहवेह" ॥५५२७॥

ओहे वत्त अवत्ते, आभव्वे जो गमो तु णाणट्ठा ।
सो चेव दंसणट्ठा, पच्चागते हो इमो वऽण्णो ॥५५२८॥

ओहविभागे नाणट्ठा सजयस्स वत्तस्स अवत्तस्स य जो सचित्तादियाण आभव्वाऽणाभव्वगमो भणिओ सो चेव असेसो दसणट्ठा गच्छतस्स भवति, पच्चागते कते वादे जितेसु भिक्खुगादिसु आयरिए भणति–णीह एतत्तो तुब्भे ॥५५२८॥

जइ एव भण्णमाणो णीति तो इमा विधी –

कातूण य पणामं, छेदसुतस्स ददाहि पडिपुच्छं ।
अण्णत्थ वसहि जग्गण, तेसिं च निवेयणं काउं ॥५५२९॥

आयरियस्स पादे पणमित्ता भणति – 'छेदसुयस्स ददाहि पडिपुच्छ" ति, अस्य व्याख्या –

सद्दं च हेउसत्थं, चऽहिज्जिओ छेदसुत्त णट्ठं मे ।
एत्थ य मा असुयत्था, सुणेज्ज तो अण्णहि वसिमो ॥५५३०॥

सद्दे त्ति व्याकरण, हेतुसत्थ अक्खपादादि, एवमादि अहिज्जतो छेदसुत्त णिसीहादि णट्ठ सुत्तओ अत्थओ तदुभओ वा, तस्स मे पडिपुच्छ देह ।

"[1]अण्णत्थ वसहि" त्ति अस्य व्याख्या – 'एत्थ य" पच्छद्ध । "एत्थ बहुवसहीए असुयत्था सेहा अगीता अपरिणामगा य, मा ते सुणेज्जा तो अण्णवसहीए ठामो, एव ववएसेण णीणेति, ॥५५३०॥

अहवा – वसहीओ खेत्तओ वा णो इच्छइ णिग्गतु ।

"[2]जग्गण तेसि णिवेदण" त्ति अस्य व्याख्या –

खेत्तारक्खिनिवेयण, इतरे पुव्वं तु गाहिता समणा ।
जग्गविओ सो य चिरं, जह णिज्जंतो ण चेतेति ॥५५३१॥

आरक्खिगो त्ति दडवासिगो, तस्स णिवेदिज्जति – "अम्ह मदो पभू अत्थि, त अम्हे रयणीए वेज्जमूल नेहामो ति तुब्भे मा किं चि भणेज्जह", इतरे य अगीता समणा ते गमिया – "अम्हे आयरिय एव

१ गा० ५५२९ । २ गा० ५५२९ ।

णेहामो तुम्हे आ बोल करेज्जह।" "जग्गण" त्ति सो य आयरिओ रायो किंचि अक्खाइगादि कहाविज्जति सुचिर जेण णिसट्ठसुत्तो णिज्जतो ण किंचि वेदति, ताहे सथारगे छोढूण णेति, अह चेतेति विलवति वा ताहे "खित्तचित्तो" त्ति लोगस्स कहेयव्व ॥५५३१॥

णिण्हयसंसग्गीए, बहुसो भण्णंतुवेह सो भणति।
तुह किं ति वत्ति वच्चसु, गता-ऽऽगते णीणितो विहिणा ॥५५३२॥

अह बोडियाण णिण्हयाण वा ससग्गी तेण ण गच्छति, बहुसो वि भणतो उवेहति – तुण्हिक्को अच्छति। अहवा भणेज्ज – "जति ह णिण्हवगसंसग्गीए अच्छामि तो तुब्भ किं दुक्खति?, अह तुब्भे जतो मे गतव्व, अह ण गच्छामि", एत्थ वि सिस्सेण सिक्खणगतागतेण णिण्हगादि जेउ आयरिओ विहिणा णीणियव्वो ॥५५३२॥

एसा विही विसज्जिते, अविसज्जिए लहुग गुरुगमासो य।
लहुगुरुगा पडिच्छंते, आगतमविही इमो तु विही ॥५५३३॥

पडिच्छगस्स चउलहुअ, सीसस्स चउगुरुगा, दोच्च आपुच्छणे मासो, अणापुच्छे आगय जइ पडिच्छग पडिच्छइ तो चउलहु, अह सीस तो चउगुरुगा, एव अविहिमागयस्स पच्छित्त।

इमा विही भण्णति ॥५५५३॥

दंसणपक्खे आयरिओवज्झाए चेव सेसगाणं च।
एक्केक्के पंचदिणे, अहवा पक्खेण सव्वे वि ॥५५३४॥

दसणप्पभावगाण सत्थाण सिक्खगस्स गच्छतस्स पक्ख आपुच्छणकालो, तत्थ आयरिय पचदिणे, सेसा पचदिणा। "अहवा – "पक्खेण सव्वे" त्ति बितियादेसो, दिणे दिण सव्वे पुच्छति जाव पक्खो पुण्णो ॥५५३४॥

एतविहिमागतं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा।
अहवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छए गुरुगा ॥५५३५॥

एगे अपरिणए या, अप्पाहारे य थेरए।
गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥५५३६॥
एतारिसे विओमेज्ज, विप्पवासो न कप्पती।
सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५३७॥
बितियपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागाढे।
णाऊण तस्स भावं, होति तु गमणं अणापुच्छा ॥५५३८॥ गतार्थाः

दसणट्ठा गय।

इदाणि [1]चरित्तट्ठा –

चरितट्ठ देस दुविहा, एसणदोसा य इत्थिदोसा य।
गच्छम्मि विसीयंते, आतसमुत्थेहि दोसेहिं ॥५५३९॥

---

1 गा० ५४५८।

चरित्तट्ठगमण दुविह – देसदोसेहिं आयसमुत्थदोसेहिं य । देस-दोसा दुविधा – एसणदोसा, इत्थिदोसा य । आयसमुत्था दुविहा – गुरुदोसा, गच्छदोसा य ।

तत्थ गच्छे जति आयसमुत्थेहिं चक्कवालममारिवितहकरणेहिं सीएज्ज तत्थ पक्ख आपुच्छतो अच्छति, परतो गच्छइ ॥५५३९॥

इमे सजमोवघायदोसा, एतेसु उवदेसो – न गतव्व –

जहियं एसणदोसा, पुरकम्मादी ण तत्थ गंतव्वं ।

उदयपउरो व देसो, जहि तं चरियादिसंकिण्णो ॥५५४०॥

उदयप्रचुर सिंधुविषयवत्, परिव्राजिका कापालिका तच्चण्णगी भगवी च एवमादिचरगादीहिं जो आइण्णो विसओ त पि ण गतव्व ॥५५४०॥

अह सजमविसए असिवादी कारणा होज्ज ताहे असजमखेत्त पविट्ठा –

असिवादीहि गया पुण, तक्कज्जसमाणिया ततो णिंति ।

आयरिए अणिंते पुण, आपुच्छित्तु अप्पणा णेंति ॥५५४१॥

आदिसद्दातो दुब्भिक्खपरचक्कादिया । "तक्कज्जसमाणिय" त्ति तम्मि सजमखेत्ते जया ते असिवादिया फिट्टा ताहे तो असजमखित्ताओ णिग्गतव्व । जइ आयरिओ केणइ पडिबधेण सायतो वा णणिग्गच्छति तो जो एगा दो बहू वा असीदता ते आयरिय विधीए पुच्छित्ता अप्पणा णिग्गच्छति ॥५५४१॥

णिग्गच्छणे इमा विधी –

दो मासे एसणाए, इत्थिं वज्जेज्ज अट्ठ दिवसाणि ।

आतसमुत्थे दोसे, आगाढे एगदिवसं तु ॥५५४२॥

जत्थ एसणादोसा तत्थ जयणाए अणेसणिज्ज गिण्हतो वि दो मासे, आयरिय आपुच्छते वि उदिक्खति सहसा ण परिच्चयति,

अह [1]इत्थिसयज्झिगादि उवसग्गेति, अप्पणो य दढ चित्त, तो अट्ठदिवसे आपुच्छति । तप्परतो अणितेसु अप्पणा णिग्गच्छति ।

अह – इत्थीए अप्पणा अज्झोववण्णो तो एरिसे आयसमुत्थे आगाढे दोसे एगदिवस पुच्छित्ता अणितेसु बितियदिवसे अप्पणा णीणेति ॥५५४२॥

सेज्जायरमादि सएज्झिया व अउत्थदोस उभए वा ।

आपुच्छति सण्णिहितं, सण्णातिगतो व तत्तो उ ॥५५४३॥

अह अप्पणा सेज्जातरीए सएज्झिगाए वा अतीव अज्झोववण्णो । "उभयए" वत्ति परोप्परओ तो जति सो आयरितो सण्णिहितो आपुच्छति, असण्णिहिते पडिस्सयगओ सण्णादिभूमिगओ वा अहा – सण्णिहित साधु पुच्छित्ता ततो चेव गच्छति ॥५५४३॥

---

१ गा० इत्थी सेहमिगादि इत्यपि पाठ ।

एयविहिमागयं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा ।
अहवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छणे गुरुगा ॥५५४४॥ पूर्ववत्

एगे अपरिणते या, अप्पाहारे य थेरए ।
गिलाणे बहुरोगे य, मदधम्मे य पाहुडे ॥५५४५॥ पूर्ववत्

एतारिसं विओसज्ज, विप्पवासो ण कप्पति ।
सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५४६॥ पूर्ववत्

भवे कारण ण पुच्छिज्जा वि –

बितियपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागाढे ।
नाऊण तस्स भावं, अप्पणो भावं चऽणापुच्छा ॥५५४७॥

आयरियादी असविग्गा होज्ज, सविग्गा वा कारण आगाढ अहिडक्कादि अवलबित्ता ण पुच्छेज्ज, तस्स वा भाव जाणेति, सुचिरेण वि ण विसज्जेति, अप्पणो वा भाव जाणति – "अम्ह अच्छतो अवस्स सि (सी) दामि", एवमादिकारणेहिं अणापुच्छित्ता वच्चेज्जा चरित्तट्ठा ५५४७॥

अह गुर इत्थिदोसेहिं सीएज्जा –

सेज्जायरकप्पट्ठी, चरित्तठवणाए अभिगया खरिया ।
सारूविओ गिहत्थो, सो वि उवाएण हरियव्वे ॥५५४८॥

सेज्जायरस्स भूणिगा जोव्वणकप्पे ठिया, कप्पट्ठिय पडुच्च आयरिएण चरित्त ठविय – त पडिसेवतीत्यथ । अहवा – दुवक्खरिगा अभिगता सम्मद्दिट्ठी त वा पडिसेवेति, अहवा – अभिगते त्ति – आसत्ता, सो पुण आयरिओ चरित्तवज्जितो वेसधारी वा बाहिकरणजुत्तो होज्जा । लिंगी वा सारूविगो वा सिद्धपुत्तो वा गिहत्थो वा होज्ज ।

लिंगधारी लिंगी ।

बाहिरब्भतकरणवज्जितो सारूवी ।

मुडो सुक्किलवासधारी कच्छ ण बधति अबभचारी अभज्जगो भिक्ख हिंडइ ।

जो पुण मुडी ससिहो सुक्कबरधरो सभज्जगो सो सिद्धपुत्तो, एयण्णयरविकप्पे ठितो ।

"उवाएण हरियव्वो" पुव्व गुरु अणुकूल भणति – इमाओ खेत्ताओ वच्चामो, जदा णेच्छति ताहे जत्थ सा पडिबद्धो सा पण्णविज्जति "एसो बहूण आहारो, एय विसज्जेहि, तुम किंच मा महामोहकम्म पगरेहि" । जति सा ठिया तो सुदर, अह ण ठाति तो सा विज्जमतणिमित्तेहिं माउट्टिज्जति वसीकज्जति वा, असति विज्जादियाण अत्थ दाउ मोएति, गुरू य एगते व भण्णमाणो सव्वहा अणिच्छतो पुव्वकमेण राओ हरियव्वो ॥५५४८॥

सव्वहा आयरिए अणिते अप्पणा ततो णेति अणेगा एगो वा ।

जा एगस्स विधी सा अणेगाण वि दट्ठव्वा –

एगे तू वच्चंते, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।
चरित्तट्ठ जो तु णेति सच्चित्तं णऽप्पिणे जाव ॥५५४६॥

जो साहू वत्तो एगाणितो वच्चति सो परोवग्गहवज्ज सचित्तादि ज लभति त अप्पणो [1]समग्गिल्लस्स वा गुरुस्स, चरित्तस्स वा [2]स्वपौरुषलक्षणचरित्तट्ठा पुण जो सहाओ णेति तत्थ सचित्तादि णेतस्स ज सचित्तादि त जाव ण समप्पेति ताव पूर्वाचार्यस्य अव्वत्तसहाए वि ण लभति पुरिल्लो, जदा पुण उवसपण्णो समप्पितो वा तदा लभति, तक्कालाओ वा चरित्तपरिचालणा ॥५५४९॥

एमेव गणावच्छे, तिविहो उ गमो उ होति णाणादी ।
आयरिय-उवज्झाए, एसेव य णवरि ते वत्ता ॥५५५०॥

जहा साधुस्स भणिय तहा गणावच्छेइयस्स तिविधो गमो णाणदसणचरित्तट्ठा गच्छतस्स, एव आयरिउवज्झायाण वि । णवर – ते णियमा वत्ता भवति ॥५५५०॥

एसेव गमो नियमा, निग्गंथीणं पि होइ नायव्वो ।
णाणट्ठं जो तु णेती, सच्चित्तं नऽप्पणिज्जा वा ॥५५५१॥

णवर – ताओ णियमा ससहायाओ जो पुण तातो णेति सचित्तादी तस्स, समप्पियासु वाएतस्स ॥५५५१॥

को पुण तातो णेति ?,

पंचण्हं एगतरे, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।
आपुच्छ अट्ठ पक्खे, इत्थीवग्गेण संविग्गे ॥५५५२॥

सजतीतो णाणट्ठा णेंति आयरिय उवज्झायो वा पवित्ती गणी वा थेरो वा, एएसि पचण्ह अण्णतरो णितो उग्गहवज्ज सचित्तादि लभति । इत्थी पुण णाणट्ठा वच्चती अट्ठपक्खे आपुच्छति आयरिय उवज्झाय वसभ गच्छ वा । एव सजतिवग्गे वि चउरो इत्थीओ सत्थेण णेयव्वाओ, सविग्गो गीयत्थो परिणयवयो णेति । चरित्तट्ठा गय ॥५५५२॥

तिण्हट्ठा संकमणं, एयं संभोइएसु जं भणितं ।
तेसऽसति अण्णसंभोइए वि वच्चेज्ज तिण्हट्ठा ॥५५५३॥

णाणातितिगस्सट्ठा एय सकमण सभोइएसु भणिय, सभोइयाण असती अण्णसभोइएसु वि णाणातितिगस्सट्ठा सकमति ॥५५५३॥

अहवा - सभोगट्ठा सकमति –

संभोगा अवि हु तिहि, कारणेहिं तत्थ चरणे इमो भेदो ।
संकमचउक्कभंगो, पढमे गच्छम्मि सीदंते ॥५५५४॥

---

1 सेससिस्सस्स, इत्यपि पाठः । 2 लक्षणस्स अट्ठा चरित्त ट्ठा, इत्यपि पाठः ।

संभोगो वि तिण्हट्ठा इच्छिज्जइ, तं जहा णाणस्स दसणस्स चरित्तस्स। णाणदंसणट्ठा जस्स उवसपण्णो तम्मि सीयते ततो णिग्गमो भाणियव्वो, जहा अप्पणो गच्छाम्रो। चरित्तट्ठा पुण जस्स उवसपण्णो तस्स चरण प्रति सीदतेसु इमो चउव्विहो विगप्पो।

कह पुण सकमति ?, चउभगे।

इमो चउभगो –

गच्छो सीदति, णो आयरिम्रो। णो गच्छो, आयरिम्रो।

गच्छो वि, आयरिम्रो वि। णो गच्छो, णो आयरिम्रो।

पढमे गच्छो सीदति ॥५५५४॥

सो पुण इमेहि सीदति –

पडिलेह दियतुयट्टण, णिक्खवणाऽऽयाण विणय सज्झाते।
आलोय-ठवण-भत्तट्ठ-भास-पडलग-सेज्जातरादीसु ॥५५५५॥

पडिलेहणा काले ण पडिलेहेति, [ण] पडिलेहेति वा विवच्चासेण, [वा] ऊणातिरित्तमादिदोसेहिं वा पडिलेहेति। गुरुपरिण्णगिलाणसेहाण वा न पडिलेहेति। निक्कारणे वा दिया तुयट्टति। णिक्खवणे आदाणे वा ण पडिलेहति, ण पमज्जति, सत्त भगा। विणय अहारिहं ण पयुजति। सज्झाए सुत्तत्थपोरिसीम्रो अ ण करेंति, अकाले असज्झाए वा करेंति। पक्खियादिसु आलोयण ण पउजति, भत्तादि वा ण आलोएति, दोसेहिं वा आलोएति, सखडिए वा भत्त आलोएति-णिरवखतीत्यर्थ। ठवणकुलाणि वा ण ठवति, ठविएसु अणापुच्छाए विसंति भत्तट्ठ। मडलीए ण भुजति बीसु भुजति, दोसेहि वा भुजति, गुरुणो वा अणालोगेण भुजति। अगारभासादिहि भासति, सावज्ज भासति। पडलेहिं आणिय अभिहड भुजति। सेज्जायरपिंड वा भुजति। आदिग्गहणेण उग्गमउप्पादणेसणादोसेहिं य गेण्हति ॥५५५५॥

एवमादिएहिं गच्छ सीदत –

चोदावेति गुरूण व, सीदंतं गणं सयं व चोदेति।
आयरियं सीदंतं, सयं गणेणं व चोदावे ॥५५५६॥

गच्छो सीयतो गुरुणा चोइज्जति अप्पणा वा चोएति, जे वा तहिं ण सीदति ते वा चोएति। बीयभगे आयरिय सीदत सत वा चोएति, गणो वा त आयरिय चोएति ततियभगे ॥५५५६॥

दोण्णि वि विसीयमाणे, सयं च जे वा तहिं ण सीदंति।
ठाणं ठाणासज्जतु, अणुलोमादीहि चोदावे ॥५५५७॥

दोण्णि वि जत्थ गच्छो आयरिम्रो य सीदति तत्थ य सय चोएति। जे वा तहिं ण सीयति तेहिं चोयावेति। "ठाण ठाणासज्ज" त्ति आयरिय उवज्झाय पवत्ति थेर गणावच्छ भिक्खु-खुड्डा य अहवा खर-मज्झ-मउय कूराऽकूरा वा जस्स जारिसी अरुहा चोदणा जो वा जहा चोदण गेण्हति सो तहा चोदेयव्वो ॥५५५७॥

भणमाण भाणवेंतो, अयायमाणस्स पक्ख उक्कोसो।
लज्जाए पंच तिण्णि व, तुह किं ति व परिणते विवेगो ॥५५५८॥

गच्छ सीदत, आयरिय वा उभय वा सीदत सय चोदेंतो अण्णेहिं वा चोयावेंतो अच्छति । जत्थ ण जाणति जहा एते भण्णमाणा वि णो उज्जमिउकामा तत्थ उक्कोसेण पक्ख अच्छति गुरु पुण सीदत लज्जाए गारवेण वा जाणतो वि पच तिण्णि वा दिवसे अभणतोवि सुद्धो ।

अह चोदिज्जतो गच्छो गुरू वा उभय वा भणेज्जा – "तुम्ह कि दुक्खति ? जइ अम्हे सीदामो, अम्हे चेव दोग्गति जाईहामो", एवभावपरिणए विवेगो गच्छस्स गुरुस्स उभयस्स व कज्जति । अन्न गण गच्छइ । सो पुण एगो अणेगा वा असविग्गगणातो सविग्गगण सकमेति । एव चउभगो ।।५५५८।।

गीयत्थविहारातो, संविग्गा दोण्णि एज्ज अण्णतरे ।
आलोइयम्मि सुद्धा, तिविहुवधीमग्गणा णवरिं ।।५५५९।।

गीयत्थगहणातो उज्जयविहारी गहितो, ततो उज्जयविहारातो सविग्गा, दोण्णि एज्ज ।।५५५९।।

"अण्णतरे" त्ति अस्य व्याख्या –

गीयमगीतागीते, अप्पडिबंधे ण होति उवघातो ।
अग्गीयस्स वि एवं, जेण सुया ओहणिज्जुत्ती ।।५५६०।।

जइ एगो सो गीओ अगीओ वा, अह दुगादी होज्ज ते गीता अगीता वा मिस्सा वा, जति एगो गीतो वइयादिसु अप्पडिबज्झतो वच्चति तो उवधिउवघातो ण भवति, जो वि अगीतो जहण्णेण जेण सुत. ओहणिज्जुत्ती तस्स वि अप्पडिउज्झतस्स उवही ण उवहम्मति ।।५५६०।।

गीयाण व मीसाण व, दोण्ह वयताण वइगमादीसु ।
पडिबज्झंताण पि हु, उवहि ण हम्मे ण वा-ऽऽरुवणा ।।५५६१।।

दोण्ह गीताण विमिस्साण वा दोण्ह जइ वि वतियादिसु पडिबज्झति सेससामायारिं करेंति तेसिं उवही ण उवहम्मति ण वा पच्छित्त भवति । भणियविवज्जते उवधिउवघातो चितणिज्जो । एव सविग्गविहारातो एगो अणेगा वा विहीए आगता, जप्पभिति गणातो फिडिया ततो आढवेत्तु आलोयणा दायव्वा, ततो सुद्धा ।।५५६१।।

"[1]तिविधउवहीमग्गणा णवरि" त्ति अस्य व्याख्या –

आगंतु अहाकडयं, वत्थव्व अहाकडस्स असती य ।
मेलेंति मज्झिमेहिं, मा गारवकारणमगीए ।।५५६२।।

"तिविहो" त्ति अहाकडो अप्पपरिकम्मो बहुपरिकम्मो य । एव वत्थव्वाण वि तिविधो, अहाकड अहाकडेहिं मेलिज्जति, इतरे वि दो एव । वत्थव्वाण अहाकडा णत्थि ताहे आगतुगा अधाकडा वत्थव्वग-मज्झिमेहिं मेलिज्जति, मा सो आगतु अगीयत्थो गारव करेस्सति "ममेव उवधी उक्कोसतरो" त्ति ।।५५६२।।

गीयत्थे ण मेलिज्जति, जो पुण गीओ वि गारवं कुणइ ।
तस्सुवही मेलिज्जइ, अहिगरण अपच्चओ इहरा ।।५५६३।।

---

१ गा० ५५५९ ।

गीयत्थो जइ अगारवी वत्थव्वअहाकडअसतीते तहा'वि अहाकडपरिभोगेणेव भुजति, अह सेषाण अण्णाण वा पुरओ भणति ।

"ममोवही उक्कोसो, तुब्भ उवही असुद्धो" एव भणतो वारिज्जति । जइ ठितो तो सुदर, अह ण ठाति, ताहे अण्णोवहिसमो कज्जति ।

"इहरे" त्ति अमेलिज्जतो अगीयसेहाण अप्पच्चयो किं अम्हेहिंतो एस उज्जमततरो जेण उवधि उक्कोसपरिभोगेण भुजति । "ममोवही उक्कोसो" त्ति इतरे असहमाणा अधिकरण करेज्जा, तम्हा मेलिज्जति ॥५५६३॥

एव खलु संविग्गे, सविग्गे संकमं करेमाणे ।
सविग्गमसविग्गे, -ऽसंविग्गे या वि संविग्गे ॥५५६४॥

पुव्वद्धे पढमभगो गतो, पच्छद्धे बितिय ततियभगा ।

तत्थ बितियभगसकमे इमे दोसा –

सीहगुहं वग्घगुहं, उदहिं व पलित्तगं व जो पविसे ।
असिवं ओमोयरियं, धुवं मे अप्पा परिच्चत्तो ॥५५६५॥

जो सविग्गो असविग्गेसु सकमति तस्स ड्ड, आणादिया य दोसा, सेस कठ ॥५५६५॥

चरण-करणपरिहीणे, पासत्थे जो उ पविसए समणो ।
जयमाणए य जहितु, जो ठाणे परिच्चए तिण्णि ॥५५६६॥

ओसण्णादी सीहगुहादिसठाणा, सीहगुहादिपवेसे एगमवि य मरण पावति । जो पुण पासत्थादी अतीति सो अणेगाइ जाइव्व मरियव्वाइ पावति ॥५५६६॥

एमेव अहाछंदे, कुसील ओसण्णमेव संसत्ते ।
जं तिण्णि परिच्चयती, णाणं तह दंसण चरित्तं ॥५५६७॥

कठ्या । गतो बितियभगो ।

पंचण्हं एगतरे, संविग्गे संकमं करेमाणे ।
आलोइए विवेगो, दोसु असंविग्गे सच्छंदो ॥५५६८॥

पचविहो असविग्गो – पासत्थो ओसण्णो कुसीलो ससत्तो अहाछदो । एतेसिं अण्णयरो सविग्गेसु सकमेज्जा, सो सविग्गमज्झगतो सतो आलोयण देति, अविसुद्धोवधिस्स विवेग करेति, अण्णो मे विसुद्धोवधी दिज्जति । "दोसु" त्ति असविग्गो असविग्गेसु सकम करेति एस चउत्थभगो । एस "सच्छदो" इच्छा से "अविधि" त्ति काउ अवत्थू चेव ॥५५६८॥

पंचेगतरे गीए, आरुभिय वदे जतंत एमाणे ।
जं उवहिं उप्पाए, संभोइय सेसमुज्झंति ॥५५६९॥

पचण्ह पासत्थादियाण एगतरो एतो जइ गीयत्थो आयरिय अभिधारेउ तहिं चेव महव्वयउच्चारण काउ आगतव्व । विधीए अपडिबज्झतो आगच्छमाणो पथे ज उवकरण उप्पाएतो एति त सव्व सभोतित ।

"सेसो" त्ति जो पासत्थोवधी अविसुद्धो तं परिट्ठवेंति, जो पुण अगीयत्थो तस्स वते आयरितो देति, उवधी से पुराणो अहिणवुप्पातितो वा से सव्वो परिठविज्जति आलोइए ज आवण्णो त से पच्छित्त देज्जति ।।५५६९।।

पासत्थादिसु इम आलोयणाविधाण –

पासत्थादीमुंडिते, आलोयण होति दिक्खपभितिं तु ।

संविग्ग पुराणे पुण, जप्पिभितिं चेव ओसण्णो ।।५५७०।।

अच्चतपासत्थो जो तस्स पव्वज्जादी आलोयणा । जो पुण पच्छा पासत्थो जातो सो जतो पासत्थो जातो ततो कालतो आढवेत्तु आलोयण देति । एय अहाछदवज्जाण । अहाछदा जाहे पडिक्कमति ताहे तस्स ड्ड । अवसेस तहेव ।।५५७०।। एव सभोगट्ठा गयं ।

इमो आयरियट्ठा णियमो भण्णति –

आयरिओ वि हु तिहि कारणेहि णाणट्ठ दंसणचरित्ते ।

णाणे महकप्पसुत, दंसणजुत्ता इमं चरणे ।।५५७१।।

आयरियादि णाणनिमित्त उवसपज्जति । अहवा – "णाणे महाकप्पसुय" ति –

नाणे महकप्पसुयं, सीसत्ता केइ उवगते देइ ।

तस्सऽट्ठ उद्दिसिज्जा, सेच्छा खलु सा ण जिणआणा ।।५५७२।।

केसि चि आयरियाण कुले गणे वा महाकप्पसुय अत्थि । तेहिं गणसठिती कया – "जो अम्ह आवकहियसीसत्ताए उवट्ठाइ तस्स महाकप्पसुय दायव्व, णो अण्णस्स" । अण्णतो गणे विज्जमाणे अविज्जमाणे वा [1]महाकप्पसुत उद्दिट्ठे आयरिए तम्मि गहिए सो पुरिल्लाण चेव, ण वाएतस्स, जेण तेसिं सा सेच्छा । ण जिणगणहरेहिं भणिय – "आवकहियसीसत्ताए उवगयस्सेव सुय देयमिति" ।।५५७२।।

दसणट्ठा –

विज्जा-मंत-णिमित्ते, हेतूसत्थट्ठ दंसणट्ठाए ।

चरितट्ठा पुव्वगमो, अहव इमे होंति आएसा ।।५५७३।।

हेतुसत्थ-गोविंदणिज्जुत्तादियट्ठा उवसपज्जति ।

चरित्तट्ठा इमो आदेसो –

आयरिय-उवज्झाए, ओसण्णोहाविते व कालगते ।

ओसण्ण छव्विहे खलु, वत्तमवत्तस्स मग्गणता ।।५५७४।।

आयरिओ ओसण्णो जातो, ओधावितो वा गिहत्थो जातो, कालगतो वा । जति ओसण्णो तो छण्ह अण्णतरो – पासत्थो, ओसण्णो, कुसीलो, ससत्तो, णीतितो, अहाच्छदो य । जो य तस्स सीसो आयरियपदे जोग्गो सो वत्तो अवत्तो वा ।।५५७४।।

---

१ सुतट्ठा अदिट्ठे, इत्यपि पाठ ।

वत्ते खलु गीयत्थे, अव्वत्तवएण अहवऽगीयत्थे ।
वत्तिच्छ सार पेसण, अहवा सण्णे सयं गमणं ॥५५७५॥

वत्तो वएण, सुएण वत्तो गीयत्थो । एस पढमभंगो ।

वत्तो वएण, सुएण अवत्तो । एम अत्थतो बितियभंगो ।

अव्वत्तो वएण, सुएण वत्तो । एस अत्थतो ततियभंगो ।

अव्वत्तो वएण अहवा अगीयत्थ त्ति । एस चउत्थो भंगो ।

पढमभंगिल्लो जो वत्तो तस्स इच्छा गण सारेति वा ण वा । अहवा – तस्स इच्छा अण्ण आयरिय उद्दिसइ वा ण वा, जाव ण उद्दिसति ताव गण सारवेति । अहवा – त आयरिय दूरत्थ "सारेति" त्ति – चोदेति साधुसघाडगपेसणेण । अह आसण्णे सो य आयरितो तो सयमेव गतु चोदेति ॥५५७५॥

चोदणे इम कालपरिमाण –

एगाह पणग पक्खे, चउमासे वरिस जत्थ वा मिलती ।
चोयति चोयावेति य, अणिच्छे वट्टावए सयं तू ॥५५७६॥

अप्पणा चोदेति, सगच्छ-परगच्छिच्चेहिं वा चोतावेति, सव्वहा अणिच्छे समत्थो सयमेव गण वट्टावेति ॥५५७६॥

अहवा –

अण्णं च उद्दिसावे, पतावणट्ठा ण संगहट्ठाए ।
जति णाम गारवेण वि, मुएज्जऽणिच्छे सयं ठाति ॥५५७७॥

ण गच्छस्स संगहोवग्गहणिमित्त आयरिय उद्दिसति, आतावणट्ठा उद्दिसति ।

तत्थ गतो भणति – "अह अण्ण वा आयरिय उद्दिसावेमि, जइ तुब्भे एत्ततो ठाणातो ण उवरमह" ।

सो चिंतेति "मए जीवते अण्ण आयरिय पडिवज्जति, मुयामि पासत्थत्तण", जइउवरतो तो सुदर । सव्वहा तम्मि अणिच्छे जइ समत्थो तो अप्पणा गच्छाधिवो ठाति ॥५५७७॥ गतो पढमभंगो ।

इमो बितियभंगो –

सुतवत्तो वयवत्तो, भणति गणं ते ण सारिउ सत्तो ।
सगणं सारेहे तं, अण्णं व वयामो आयरियं ॥५५७८॥

असमत्थो अप्पणो गच्छ वट्टावेउ सो त आयरिय ताव भणति – "अह असमत्थो गच्छ वट्टावेउं तुम्हे चेव इमे सीसा, अह च अण्णेसिं सिस्सो होहामि", अहवा – "एते य अह च अण्ण आयरिय वयामो उद्दिसामो" इत्यर्थ ॥५५७८॥

आयरिय उवज्झाए, अणिछंते अप्पणा य असमत्थो ।
तिपसंवच्छरमद्धं, कुलगणसंघे दिसाबंधो ॥५५७९॥

एव पि भणिओ आयरिओ उवज्झाओ वा जाहे ण इच्छति सजमे ठाउ, गणाहिवत्ते वा अप्पणो य असमत्थो य, ताहे कुलिच्च आयरिय उद्दिसति तिण्णि वासे। ताहे तहिं ठितो त परिसारेति चोदेति य। तिण्ह वरिसाण परओ ज सचित्ताचित्त सो कुलिच्चायरिओ हरति ताहे गणिच्च उद्दिसावेति वरिस, ततो सघिच्च छम्मासे उद्दिसावेति ॥५५७९॥

कुलातो गण, गणातो वा सघ सकमतो आयरिय इम भणाति –

सच्चित्तादि हरति णे, कुलं पि णेच्छामो जं कुलं तुज्झं।
वच्चामो अण्णगण, संघं च तुमं जति ण ठासि ॥५५८०॥

एव भणते जति अब्भुट्ठितो तो सुदर ॥५५८०॥

एव पि अठायंते, तावेतुं अद्धपचमे वरिसे।
सयमेव धरेति गणं, अणुलोमेणं व ण सारे ॥५५८१॥

अद्धपचमवरिसोवरि वएण वत्तीभूतो समत्थो सयमेव गण धारेति, ठिओ वि त आयरिय अणुलोमेहिं सारेति ॥५५८१॥

अहवा – बितियभगिल्लो कुलगणसघेसु नो उवसपज्जति।

कह ?, उच्यते –

अहव जदि अत्थि थेरा, सत्ता परिउट्टिऊण तं गच्छं।
दुहओ वत्तसरिसओ, तस्स उ गमओ मुणेयव्वो ॥५५८२॥

सुयवत्तो अप्पणा सुत्तत्थपोरिसीतो देति, गीयत्था थेरा गच्छति परियट्टति, एस पढमभगतुल्लो चेव भवति। "गमो" त्ति पढमभगप्रकार एव, एसो वि आयरिय सारेति तावेति य ॥५५८२॥ गतो बितियभगो।

इमो ततियभगे –

वत्तवओ उ अगीओ, जति थेरा तत्थ केति गीयत्था।
तेसंतिए पढंतो, चोदे तेसऽसति अण्णत्थ ॥५५८३॥

वत्तवयत्तणेण गण रक्खेति चोदयति असति थेराण गीयत्थाण अण्णमायरिय पव्वज्जसुएण एगपक्खिय सह गणेण उवसपज्जति।

अहवा – ततियभगिल्लो जइ अगीअत्थत्तणओ गण परियट्टिउ असमत्थो थेरा य से गीयत्था तेसतिए पढति, अण्णे य थेरा गच्छपरियट्टणे कुसला ते गण परियट्टति, एरिसो वि णो अण्णस्स उवसपज्जति, असति थेराण उवसपज्जति ॥५५८३॥ गतो ततियभगो।

इमो चउत्थभगो –

जो पुण उभयाव्वत्तो, वट्टावग असति तो उ उद्दिसति।
सव्वे वि उद्दिसंता, मोत्तूणमिमे तु उद्दिसती ॥५५८४॥

जति थेरा पाढेंतया अत्थि गण च वट्टावेंतया तो एसो वि ण उद्दिसति, अण्ण च वट्टावगथेराण पुण असति उद्दिसति ।।५५८४।।

सव्वे वि आयरिय उद्दिसता इमेरिसे आयरिय मोत्तु उद्दिसति –

संविग्गमगीतत्थं, असंविग्गं खलु तहेव गीयत्थं ।
असंविग्गमगीयत्थं, उद्दिसमाणस्स चउगुरुगा ।।५५८५।।

तिविध पि उद्दिसनस्स चउगुरुगा, अहवा – काल तव-उभएहिं गुरुगा कायव्वा ।।५५८५।।

एतेसु उद्दिट्ठेसु य अणाउट्ट तस्स इम कालगत पच्छित्त –

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेतो पहावती ।
छेदेण छिण्णपरिभाए, ततो मूलं तओ दुगं ।।५५८६।।

सत्तदिवसे चउगुरुग । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहु । अण्णे सत्तदिणे छग्गुरु । अण्णे सत्तदिणे छेदो । मूल एक्क दिण, अणवट्ठ एक्कदिण । एक्कतीमइमे दिणे पारचिय ।

अहवा – बितितो इमो आदेसो–एक्कवीस दिवमे तवो पूर्ववत् । तवोवरि सत्तदिवसे चउगुरु छेदो । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहुछेदो । अण्णे सत्तदिवसे छगुरुछेदो, ततो मूलऽणवट्ठपारचिया पणयालीसइमे दिवसे ।

अहवा – छेदे ततितो आदेसो – पणगादि सत्त सत्त दिणेहिं णेयव्वो, एत्थ छत्तीसुत्तरसत्तदिवमे पारचिय च पावति । जम्हा एते दोमा तम्हा सविग्गो गीयत्थो उद्दिसियव्वो ।।५५८६।।

छट्ठाणविरहियं वा, संविग्गं वा वि वयति गीयत्थं ।
चउरो वि अणुग्घाया, तत्थ वि आणादिणो दोसा ।।५५८७।।

एय पि सविग्गगीयत्थ छट्ठाणविरहय । जति मामक काहिय पासणिय सपसारिय उद्दिसावेति तो चउगुरुगा आणादिया दोसा ।।५५८७।।

छट्ठाणा जा णितिओ तव्विरहियकाहिगादिया चउरो ।
ते वि य उद्दिसमाणो, छट्ठाणगताण जे दोसा ।।५५८८।।

गतार्था । एत्थ वि सत्तरत्तादिनवच्छेदविसेसा य सव्वे भाणियव्वा ।

एतस्स इमो अववातो – गीयत्थस्स सविग्गस्स असति गीयत्थ असविग्ग पव्वज्जसुतेण एगपक्खिय उद्दिसति, एव कुलगणसघिच्चय पि, एवपि ता ओसण्णो गतो ।।५५८८।।

ओहावित-कालगते, जाविच्छा ता तह उद्दिसावेंति ।
अव्वत्ते तिविहे वी, नियमा पुण संगहट्ठाए ।।५५८६।।

जो ओहाविनो सो सारूवितो लिंगत्थो गिहत्थो वा, सो विऽण्णेण गवेसियव्वो, अप्पसागारिय च विण्णवियव्वो, जाहे णेच्छति अप्पणा य अण्ण आयरिय इच्छति ताहे उद्दिसावेति । "अव्वत्तो तिविहो" पढमभगवज्जा ततो भगा, अहवा – तिविहो अव्वत्तो तिविहे वि कुले गण सघे य उद्दिसावेति । एतेसि दोण्ह वि पगाराण उद्दिसावेंतो णियमा सगहणिमित्त उद्दिसावेति । कालगए वि एस चेव विही, णवर – चोदण तावणा णत्थि ।।५५८६।।

वत्तम्मि जो गमो खलु, गणवच्छे सो गमो उ आयरिए ।
णिक्खिवणे तम्मि चत्ता, जमुद्दिसे तम्मि ते पच्छा ॥५५६०॥

जो वत्तस्स भिक्खुस्स गमो सो गमो गणावच्छेइए आयरियाण । इम णाणत्त – जइ णाण दसण-णिमित्त गच्छति अप्पणो य से आयरिओ सविग्गो तस्स पासे णिक्खिविउ गच्छ अप्पबितितो ततितो वा गच्छति ।

अह से अप्पणो आयरिओ असविग्गो तो ते साधू जनि तस्स पासि णिक्खिविउ गच्छति तो तेण ते चत्ता भवति, तम्हा ण णिक्खियव्वा णेयव्व। । तेण ते जेण तेण पगारेण ते य घेत्तु जत्थ गतो तत्थ पढम अप्पाण णिक्खिवति, पच्छा भणति – "जहा मे अह, तहा मे इमे वि" । "तम्मि ते पच्छा' तस्स सिस्सा भवति ॥५५६०॥

णिक्खिवणा अप्पाणो परे य संतेसु तम्स ते देंति ।
संघाडगं असंते, सो वि ण वावारऽणापुच्छा ॥५५६१॥

जदा अप्पा परो य णिक्खित्तो तदा तम्स वि आयरियस्स किं वा जाया ?, जति से सति त्ति अप्पणो य सहाया पहुप्पति ताहे तेण तस्स चेव दायव्वा, असतेसु सघाडग एग देति, अवमेसा अप्पणा गेण्हति। अह सव्वहा असहातो सव्वे वि गेण्हति, तेण वि से कायव्व, तस्स गुरुस्स अणापुच्छाए सो ते ण वावारेति ॥५५६१॥

आयरिय गिहिभूय ओसण्ण वा जत्थ पेच्छति तत्थिम भणनि –

ओहावित-उस्सण्णे, भण्णति अणाहओ विणा वयं तुब्भे ।
कमसीसमसागरिए, दुप्पडियरगं जतो तिण्हं ॥५५६२॥

पुव्वद्ध कठ । ओसण्णस्स पुव्वगुरुस्स कमा पादा सिरेण तेसु णिवडति असागारिए ।

सीसो भणति – "तस्स असजयस्स कह चलणेसु णिवडिज्जइ" ।

आयरिओ भणति – "दुप्पडियरय जतो तिण्ह" दुक्ख उवकारिस्स पच्चुवकारो किज्जति, त जहा – माता पिउणो, सामिस्स, धम्मायरियस्स । अतो तस्स पादेसु वि पडिज्जति, ण दोसो ॥५५६२॥

कि च –

जो जेण जम्मि ठाणम्मि, ठाविओ दंसणे व चरणे वा ।
सो तं तओ चुयं तम्मि चेव कातं भवे निरिणो ॥५५६३॥

सो सीसो तेण आयरिएण णाणादिसु ठविओ, इदाणिं सो आयरिओ ततो णाणादिभावाओ चुतो, त चुअ सो सीसो तेसु चेव णाणादिसु ठवेंतो णिरण्णो भवति ॥५५६२॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं पडिच्छइ, पडिच्छत वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताण वसहिं अणुपदिसइ, अणुपदिसतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू॥२४॥

सव्वे सुत्ता भाणियव्वा –

वुग्गहवक्कंताणं, जे भिक्खू असणमादि देज्जाहि ।
चउलहुग अट्ठहा पुण, णियमा हि इमं अवक्कमणं ॥५५६४॥

वुग्गहो कलहो, त काउ अवक्कमति । एक्कग्गहणा तज्जातीयग्गहणमिति वचनात् अट्ठहिं ठाणेहिं गणाओ अवक्कमणे पण्णत्ते –

अब्भुज्जत ओहाणे, एक्केक्क-दुभेद होज्जऽवक्कमणं ।
णाणादिकारणं वा, वुग्गहो वा इहं पगतं ॥५५६५॥

अब्भुज्जय दुविध – अब्भुज्जतमरणेण अब्भुज्जयविहारेण वा । ओहाण दुविध – विहारोधावणेण लिंगोधावणेण वा, णाणट्ठा आदिग्गहणातो दसणचरित्तट्ठा य वुग्गहेण वा । एते उच्चारितसरिस त्ति काउ इह वुग्गहेण पगत, वुग्गहेण वुक्कता । वुग्गहो त्ति कलहो ति वा भडण ति वा विवादो त्ति वा एगट्ठ ॥५५६५॥

के पुण ते वुग्गहवक्कता ?, इमे सत्त –

बहुरयपदेस अव्वत्त समुच्छा दुग तिग अबद्धिया चेव ।
सत्तेते णिण्हगा खलु, वुग्गहो होंत वक्कंता ॥५५६६॥

जेट्ठा सुदंसण जमालिऽणोज्ज सावत्थि-तिंदुगुज्जाणे ।
पंचसया य सहस्सं, ढंकेण जमालि मोत्तूणं ॥५५६७॥

रायगिहे गुणसिलए, वसु चोद्दसपुव्वि तीसगुत्ताओ ।
आमलकप्पा णगरी, मित्तसिरी कूर पिउडाई ॥५५६८॥

सेयविपोलासाढे, जोगे तद्दिवसहिययसूले य ।
सोधम्म-णलिणिगुम्मे, रायगिहे मुरियबलभद्दे ॥५५६६॥

मिहिलाए लच्छिघरे, महगिरि कोडिण्ण आसमित्ते य ।
नेउणियणुप्पवाए, रायगिहे खंडरक्खा य ॥५६००॥
नदिखेडजणवउल्लुग, महगिरि धणगुत्त अज्जगंगे य ।
किरिया दो रायगिहे, महातवो तीरमणिणाए ॥५६०१॥
पुरिमंतरंजि भूयगिह, बलसिरि सिरिगुत्त रोहगुत्ते य ।
परिवायपोट्टसाले घोसणपडिसेहणा वादे ॥५६०२॥
विच्छु य सप्पे मूसग, मिगी वराही य काग पोयाई ।
एयाहि विज्जाहिं, सो य परिव्वायगो कुसलो ॥५६०३॥
मोरी नउली बिराली, वग्घी सिंही य उलुगि ओवाइ ।
एयाओ विज्जाओ, गिण्ह परिव्वाय महणीओ ॥५६०४॥
सिरिगुत्तेणं छलुगो छम्मास विकड्ढिऊण वाए जिओ ।
आहरण कुत्तिआवण, चोयालसएण पुच्छाण ॥५६०५॥
वाए पराजिओ सो, निव्विसओ कारिओ नरिंदेण ।
घोसावियं च नयरे, जयइ जिणो वद्धमाणो त्ति ॥५६०६॥
दसउर-नगरुच्छुघरे, अज्जरक्खिय पूसमित्ततियगं च ।
गोट्ठा माहिल नवमट्ठमेसु, पुच्छाय विंझस्स ॥५६०७॥
पुट्ठो जहा अबद्धो, कंचुइणं कंचुओ समन्नेइ ।
एवं पुट्ठमबद्धं, जीवं कम्मं समन्नेइ ॥५६०८॥
रहवीरपुर नगरं, दीवगमुज्जाणमज्जकण्हे य ।
सिवभूइस्सुवहिम्मि, पुच्छा थेराण कहणा य ॥५६०९॥
उहाए पण्णत्तं, बोडिय-सिवभूइ उत्तराहि इमं ।
मिच्छादंसणमिणमो, रहवीरपुरे समुप्पण्ण ॥५६१०॥
चोद्दस वासाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्स नाणस्स ।
तो बहुरयाण दिट्ठी, सावत्थीए समुप्पन्ना ॥५६११॥
सोलस वासाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्स नाणस्स ।
जिवपएसियदिट्ठी, तो उसभपुरे समुप्पण्णा ॥५६१२॥
चोद्दा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
तो अव्वत्तय दिट्ठी, सेयविआए समुप्पण्णा ॥५६१३॥

वीसा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
सामुच्छेइयदिट्ठी, मिहिलपुरीए समुप्पन्ना ॥५६१४॥
अट्ठावीसा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
दो किरियाणं दिट्ठी, उल्लुगतीरे समुप्पण्णा ॥५६१५॥
पंचसया चोयाला, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
पुरिमंतरंजियाए, तेरासियदिट्ठि उप्पन्ना ॥५६१६॥
छव्वाससयाइं नवुत्तराइं, तइआ सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
तो बोडियाण दिट्ठी, रहवीरपुरे समुप्पण्णा ॥५६१७॥
चोद्दस सोलस वासा, चोद्दावीसुत्तरा य दोन्नि सया ।
अट्ठावीसा य दुवे, पचेव सया य चोआला ॥५६१८॥
पंचसया चुलसीया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
तो अवद्धियादिट्ठी, दसउरणयरे समुप्पन्ना ॥५६१९॥
बोडियसिवभूइओ, बोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती ।
कोडिन्न कोट्ट वीरा, परंपरा फासमुप्पन्ना ॥५६२०॥
पंचसया चुलसीओ, छच्चेव सया नवुत्तरा हुंति ।
नाणुप्पत्तीए दुवे, उप्पन्ना निव्वुए सेसा ॥५६२१॥
सावत्थी उसभपुर, सेअम्बिआ मिहिल उल्लुगातीरं ।
पुरिमंतरंजि दसपुर रहवीरपुरं च नयराइं ॥५६२२॥
सत्तेया दिट्ठीओ, जाइ-जरा-मरण-गब्भ-वसहीणं ।
मूलं संसारस्स उ, हवंति निग्गंथरूवेणं ॥५६२३॥
मोत्तूण एत्थ एक्कं, सेसाणं जावजीविया दिट्ठी ।
एक्केक्कस्स य एत्तो, दो दो दोसा मुणेयव्वा ॥[1]५६२४॥

बहुरयादी जाव बोडिया –

एएसिं तु परूवण, पुव्विं जा वन्निया उ विहिसुत्ते ।
स च्चेव णिरवसेसा, इहमुद्देसम्मि नायव्वा ॥५६२५॥

एतेसिं परूवणा कायव्वा "विधिसुत्ते" त्ति जहा आवस्सगे सामाइय-णिज्जुत्तीए ॥५६२५॥

एतेसिं असणादी, वत्थादी वसहि-वायणादीणि ।
जे देज्ज पडिच्छेज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥५६२६॥

१—"५६०३"—"५,२४" परिमिता सर्वा खलु गाथा पूनासत्कमूलभाष्यप्रतौ मात्र प्रथमपदोल्लेख-रूपणैव संकेतिता आसन्, अतोऽस्माभिरावश्यक-सामायिकनिर्युक्तित पूर्णीकृता ।

तेसिं असणादि देंते पच्छित्त सव्वपदेसु चउलहु, सुत्ते चउगुरु, आणादिया य दोसा, अणवत्थपसगा अण्णो वि दाहिति, सड्ढाण वि मिच्छत्त जणेंति ॥५६२६॥

दाण[1]ग्गहणे[2] मंवास[3]ओ य वायण[4] पडिच्छणादी[5] य ।
सरिसं[6] पभासमाणा, जुत्तिसुवण्णेण[7] ववहरंति ॥५६२७॥

"[1]दाणे' त्ति अस्य व्याख्या –

गव्वेण ते उदिण्णा, अण्णे वा देंते दट्ठु भासंति ।
नूण एते पहाणा, विसादि ससग्गिए गच्छे ॥५६२८॥

अम्ह एते असणादि देंति गव्व करेज्ज, तेण गव्वेण उदिण्णेण पलावा भवेज्ज । अण्णो वा दिज्जत दट्ठु भणेज्ज – "णूण एते चेव पहाणा" । तेसिं वा किं चि अहाभावेण गेलण्ण होज्ज, तं भणेज्ज – "एतेहिं किं पि विसादि दिण्ण", एत्थ गेण्हण कड्ढणादिया दोसा । एव दाणसंसग्गीए अगीयसेहादिया चोदिता तेसु चेव वएज्जा ॥५६२८॥

"[2]गहणे त्ति अस्य व्याख्या –

तेसिं पडिच्छणे आणा, उग्गममविसुद्ध आभिओगं वा ।
पडिणीयया व देज्जा, बहुआगमियस्स विसमादी ॥५६२९॥

तेसिं हत्थातो भत्तादि पडिच्छंतस्स तित्थकराणातिक्कमो, उग्गमादि असुद्ध परिभुजंति, वसीकरण वा देज्ज 'अम्ह एते पडिवक्खो" त्ति पडिणीयत्तणे । अहवा – एस बहु आगमिउ त्ति विसादि देज्ज ।

एगवसहिसवासेण सेहा णिद्धम्मा सीदति, तेसिं वा चरियं गेण्हति ।

सुय वायग पडिच्छगादिसु वि समग्गिमादिदोसा ।

जुत्तिसुवण्णदिट्ठतेण वा सरिस चरणकरण कहेतो सेहादी हरेंति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा णो किं चि तेसिं देज्जा, पडिच्छेज्ज वा, ण वा सवसेज्जा । एव सकरेतेण पुव्वभणिया दोसा परिहरिया भवति । ॥५६२९॥

भवे कारण –

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, अयाणमाणे वि बितियपदं ॥५६३०॥

असिवादिकारणेहिं तेसिं दिज्जति पडिच्छति वा ॥५६३०॥

इम गेलण्णे –

गेलण्ण मे कीरति, न कीरती एव तुब्भ भणियम्मि ।
एस गिलाणो एत्थं, गवेसणा णिण्हओ सो य ॥५६३१॥

---

१ गा० ५६२७ । २ गा० ५६२७ । ३ गा० ५६२७ ।

एगत्थ गामे साधू गच्छता भणिता – "तुब्भ गिलाणस्स किं वेयावच्चं कीरइ, न कीरइ वा" ।

साधू भणति – "किं वा ते" ।

गिही भणइ – "एम गिलाणो तुब्भसन्निओ ।"

एत्थ गामे साहुणा पविसिउं गविट्ठो जाव णिण्हतो सो ॥५६३१॥

जणपुरतो फासुएणं, अप्फासुयमग्गणे असमणो उ ।

पण्णवणपडिक्कामण, अविसेमित णिण्हए वा वि ॥५६३२॥

जणसमक्खं उग्गमुप्पादणेसणासुद्धच्छेण करेंति, जाहे सुद्धं ण लभति सो य असुद्धं मग्गति ताहे लोगस्स पुरओ उस्सग्ग पण्णवेति भणति य – "एस असमणो" ।

त पि भणति–"जति तुम णिण्हगदिट्ठीओ पडिक्कमसि पासत्थादित्तणओ वा तो ते सव्वहा करेमो ।" तहा य पण्णवेंति जहा सो तट्ठाणाओ पडिक्कमति । अहवा – जत्थ साधूण णिण्हगाण य विसेसो ण णज्जइ किंचि ॥५६३२॥

दुक्खं खु निरणुकंपा, लोए अदेंते य होति उड्डाहो ।

मारूवम्मि य दिस्सति, दिज्जति तेणेवमादीसु ॥५६३३॥

जइ वि सो ओसण्णो निण्हओ वा तहावि अकज्जते णिरणुकंपया भवति, सा य दुक्खं कज्जइ, लोगो य तत्थ उड्डाह करेति – "जइ वि पव्वज्जाए एरिस अणाहत्तण ण परोप्पर कतोवकारियाओ अल पव्वज्जाए," सारूप्प सरिसं लिंग दीसति, एवमादि कारणेहिं करेतो सुद्धो ॥५६३३॥

जे भिक्खू विहं अणेगाहगमणिज्जं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२५॥

"जे" त्ति – णिद्देसे, भिक्खू पुव्ववण्णितो । विह णाम अद्धाण अणेगेहिं अहेहिं ज गम्मति त अणेगाहगमणिज्ज, अहो णाम दिवसो । अहवा – अणेगेहिं अहेहिं गमणिज्ज अणेगाहगमणिज्ज ।

अकारणेण गमण पडिसिद्ध ।

किं कारण गमण पडिसेहेति ?, जम्हा एत्थ गम्ममाणे अणेगा सजमाताए दोसा पसज्जति । जम्मि विसए गुणा तवणियमसजमसज्झायमादिया त विसय, "लाढे" त्ति – सहू, जम्हा उग्गमुप्पादणेसणासुद्धेण आहारोवधिणा सजमभारवहणट्ठयाए अप्पणो सरीरग लाढेतीति लाढो, विहारायेति । दप्पेण देसदसणाए विहरति । "सथरमाणसु जणवएसु" त्ति आहारोवहिवसहिमादिएहिं सुलभेहिं जणवए, त जणवय विहाय पव्वज्जाए तस्स पव्वज्जतो सुद्ध सुद्धेण वि गच्छमाणस्स चउलहु । एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्ति-वित्थरो –

विहमद्धाणं भणितं. णेगा य अहा अणेगदिवसा तु ।

मति पुण विज्जंतम्मी, लाढे पुण साहुणो अक्खा ॥५६३४॥

गयत्था । विह णाम अद्धा ।

अद्धाणं पि य दुविहं, पंथो मग्गो य होइ नायव्वो ।

पंथम्मि णत्थि किंची, मग्ग सगामो तु गुरु आणा ॥५६३५॥

त दुविध – पथो मग्गो य। पुणो पथो दुविहो – छिण्णो अच्छिण्णो य। छिण्णे णत्थि किंचि, सुण्ण सव्व। अच्छिण्णे पल्लिवइता वा अत्थि। गामाणुगामि मग्गो। पथे चउगुरुगा, मग्गे चउलहु आणादिया य दोसा ॥५६३५॥

त पुण गमेज्ज दिवा, रत्तिं वा पंथ गमणमग्गे वा।
रत्तिं आदेसदुग, दोसु वि गुरुगा य आणादी ॥५६३६॥

त पथ मग्ग वा दिवसओ वा राओ गच्छति। राइसद्दे आदेसदुग – सझारातो, सझावगमो वा राती।

कह ?, उच्यते – सझा जेण रायति सोभति दिप्पति तेण सझरातो। सझावगमो वियालो। अहवा – सझावगमो राती।

कह ?, उच्यते – जम्हा सझावगमे चार पारदारिया रमति तेण सझावगमो राती। सझाए जम्हा एते विरमति तेण सझा विकालो। पथ मग्ग वा जइ रातीए विगाले वा गच्छइ तो चउगुरुगा ॥५६३६॥

तत्थ मग्गे ताव इमे दोसा –

मिच्छत्ते उड्डाहो, विराहणं होति सजमाताए।
इरियाति संजमम्मी, छक्काय अचक्खुविसयम्मी ॥५६३७॥

"मिच्छत्ते उड्डाहो" दोण्ह विभासा –

किं मण्णे णिसिगमणं, जाती ण सोहेंति वा कहं इरियं।
जतिवेसेण व तेणा, अडंति गहणादि उड्डाहो ॥५६३८॥

इहलोयचत्तकज्जाण परलोयकज्जुज्जताण किं रातो गमण ? किं मण्णे दुट्ठचित्ता एते होज्जा ? कह वा इरिय सोहति इरिउवउत्ता वा जति ?, जहा एय असच्च तहा अण्ण पि मिच्छत्त जणेज्जा, जइवेसेण वा तेण त्ति काउ रातो अडना गहिया कड्ढणववहारादिसु पदेसु उड्डाहो ॥५६३८॥

[1]"विराहण सजमाताए" एसा विभासा –

संजमविराहणाए, महव्वया तत्थ पढमे छक्काया।
बितिए अतेण तेणे, तइए अदिन्नं तु कंदादी ॥५६३९॥

सजमविराधणा दुविधा – मूलगुणे उत्तरगुणे य। मूलगुणे पचमहव्वया, पढमे य महव्वए छक्काय विराहण करेति, बितिए महव्वए अतेण तेणमिति भासेज्जा, ततिए महव्वए कदादि अदिण्णा गेण्हेज्ज ॥५६३९॥

अहवा –

दियदिन्ने वि सचित्ते, जिणतेण्णं किमुत सव्वरीविसए।
जेसिं च ते सरीरा, अविदिण्णा तेहि जीवेहिं ॥५६४०॥

सचित्त जिणेहिं णाणुण्णाय तेण दिवसतो वि तेण्ण, रात्री रातो वा अदिण्ण, अहवा – जेसिं ते कदादिया सरीरा जीवाण तेहिं वा अदिण्ण ति तेण्ण ॥५६४०॥

१ गा० ५६३७।

पंचमे अणेसणादी, छट्ठे कप्पो व पढम बितिया वा ।
भग्गवओ त्ति मि जाओ, अपरिणओ मेहुणं पि वए ॥५६४१॥

पचमे त्ति वते अणेसणिज्ज गेण्हनस्स परिग्गहो भवति, छट्ठे त्ति रातीभोयणे अद्धाण कप्प भुजतस्स रातीभोयणभगो भवति । पढमो त्ति-खुहापरीसहो बितिओ पिवासापरीसहो तेहिं आतुरो रातिं भुजेज्ज वा पिएज्ज वा, एगव्रतभगे सव्ववयभगो त्ति काउ मेधुण पि सेवेज्जा । अहवा – अपरिणतो अबुद्धधम्मत्तणओ दिया रातो मत्थे वक्खमाणे काइयानिमित्त उसक्को अगारी ति काइ उसक्का, अप्पसागारिए त पडिसेवेज्ज ॥५६४१॥

[1]इरिया इति अस्य व्याख्या –

रीयादसोधि रत्तिं, भासाए उच्चमद्दवाहरणं ।
ण य आदाणुस्सग्गे, सोहए काया य ठाणादि ॥५६४२॥

राओ इरियासमिइ न सोहेइ । भासासमिइए वि असमिओ पथाइविप्पणट्ठे उच्चमद्देण वाहरेज्जा । एसणासमिति ण सभवति, रातो दिवसनो वा अद्धाण पढमबितियपरीसहाउरो एसण पेलेज्जा । आदाणणिक्खेव-समितीए ठाणणिसीदणाणि वा करेंतो रातो ण सोहेति । काइयादिपरिट्ठवण पि करेंतो थडिल्ल पि ण सोहेति ॥५६४२॥ एसा सव्वा सजमविराहणा ।

इमा आयविराहणा –

वाले तेणे तह सावए य विसमे य खाणु कंटे य ।
अकम्हा भय आतसमुत्थं रत्तिं मग्गे भवे दोसा ॥५६४३॥

सप्पादी वाला तेसु डसिज्जति, उवकरणसरीरतेणा ते उवकरण सजत वा हरेज्जा, सीहादिसावएण खज्जति, विसमे पडियस्स अण्णतरगा य विराहणा हवेज्जा, खाणुकटए वा वि सप्पो हवेज्जा, अकस्माद् भय अहेतुक भवति, राओ मग्गे वि एते दोसा, किमुत पथे ॥५६४३॥

इम बितियपद –

कप्पति तु गिलाणट्ठा, रत्तिं मग्गो तहेव संझाए ।
पंथो य पुव्वदिट्ठो, आरक्खिओ पुव्वभणितो य ॥५६४४॥

आरक्खिगो त्ति दडवासिगो, पुव्वामेव भण्णति अम्हे गिलाणादिकारणेण रातो गमिस्सामो, मा किंचि छल काहिसि । अणुण्णाते गच्छति, सेस कठ ॥५६४४॥ मग्ग त्ति गत ।

इदाणिं [2]पथो भण्णति –

दुविहो य होइ पथो, छिण्णद्धाणतरं अछिण्णं च ।
छिण्णे ण होइ किंची, अछिण्णे पल्लीहि वइगाहिं ॥५६४५॥

इमो विधी –

छिण्णेण अछिण्णेण व, रत्तिं गुरुगा तु दिवसतो लहुगा ।
उद्दद्दरे पवज्जण, सुद्धपदे सेवती जं च ॥५६४६॥

---

१ गा० ५६२८ । २ गा० ५६३५ ।

उद्दद्दरे जइ अद्धाण पव्वजति तत्थ सुद्धसुद्धेण वि गच्छमाणस्स एय पच्छित्त, ज च अकप्पादि किंचि सवति त सव्व पावति ।।५६४६।।

इमा आयविराहणा –

वात खलु वात कंटग, आवडणं विसम-खाणु-कंटेसु ।

वाले सावय तेणे, एमाइ होंति आयाए ।।५६४७।।

खलुगा जाणुगादिसधाणा वातेण घेप्पति, चम्मकटगो वातकटगो अहवा [1]गृद्धिमी हड्डागृद्धिमी वा कायकटगो वा । सेस कठ्य ।।५६४७।। एसा आयविराहणा ।

इमा सजमविराहणा –

छक्कायाण विराहण, उवगरणं बालवुड्ढसेहा य ।

पढमेण व बितिएण व, सावय तेणे य मेच्छे य ।।५६४८।।

अथडिलेसु पुढविमादिछण्ह कायाण सघट्टणादिविराहण करति, बालवुड्ढसेहा पढमबितियपरीसहेहिं परिताविज्जति, साधू उज्झिउ सावओ सावएण वा खज्जेज्जा । तेणगेहिं मेच्छेहिं वा उवकरण खुड्डगादि वा हीरेज्जा ।।५६४८।।

[2]उवकरण त्ति एयस्स इम वक्खाण –

उवगरण-गेण्हणे भार-वेदणे तेणगम्म अधिकरण ।

रीयादि अणुवओगो, गोम्मिय भरवाह उड्डाहो ।।५६४९।।

नदिपडिग्गह अद्धाणकप्प दुल्लिग्गमादिपथोवकरण च जइ गिण्हति तो भारेण वेयणा भवति, [3]विहडप्फडा य तेणगगम्मा भवति, तेणेहिं वा उवकरणे गहिए अधिकरण, भारक्कता य इरियादिउत्ता ण भवति, बहूवकरणा वा गोमिएहि घेप्पति, गोमिया य चितति उल्लावेति य – "अहो ! बहुलोभा भारवहा य" एव उड्डाहो भवे । अहवा – एतद्दोसभया उवकरण उज्झति तो ज तेण उवकरणेण विणा विराहण पावेंति तमावज्जति ।।५६४९।।

इम पथोवकरण –

चम्मकरग सत्थादी, दुलिंगकप्पे य चिलिमिलिऽग्गहणे ।

तस विपरिणमुड्डाहो, कंदादिवहो य कुच्छा य ।।५६५०।।

जइ चम्मकरगो ण घेप्पति सत्थकोसग वा, "दुल्लिग" वा गिहत्थलिंगोवकरण अण्णपासडियलिंगोवकरण वा, 'कप्प" त्ति अद्धाणकप्प चिलिमिलि त्ति, एतेसि अग्गहणे इमे दोसा जहासख पच्छद्ध भणिया । चम्मकरग अग्गहणे तसविराहणा, पिप्पलगुलिया गोरसपोत्तगादि अग्गहणे सहमादियाण विप्परिणामो भवति, पिप्पलगादिसत्थेण पुण पलबे विकरणे काउ आणिज्जति, दुल्लिगेण विणा रातो गेण्हताण पिसियादि वा उड्डाहो भवति । अद्धाणकप्पेण विणा कदादियाण छण्ह वा कायाण विराहणा भवति, चिलिमिलिय विणा मडलीए भुजताण जणो दुगछति ।।५६५०।।

पथजोग्गोवकरण अग्गहणे अजयकरणे य इमे दोसा –

अपरिणामगमरणं, अतिपरिणामा य होंति णित्थक्का ।

णिग्गत गहणे चोदित, भणंति तइया कहं कप्पे ।।५६५१।।

---

१ कत्थघोभागवर्ती सविवायु । २ गा० ५६४८ । ३ व्याकुला, इत्यर्थ ।

"अकप्पिय" त्ति णाउ अपरिणामगो ण गेण्हति, अगेण्हणे मरति । अद्धाणे अकप्पियगहणं दट्ठु अतिपरिणामा 'णित्थक्का" णिल्लज्जा भवंति, अद्धाणातो णिग्गया अकप्पं गेण्हता चोदिता – 'मा गेण्हह त्ति, ण वट्टति" ते पडिभणति – "तनिया अद्धाणे कह कप्पं" ॥५६५१॥

काउडीए विणा इमे दोसा –

तेणभयोदककज्जे, रत्ति सिग्घगति दूरगमणे य ।
वहणावहणे दोसा, बालादी सल्लविद्धे य ॥५६५२॥

तेणभया रातो सिग्घं गंतव्वं, उदगणिमित्तं जहा मरुविसए रातो सिग्घं दूरं च गतव्वं । तत्थ कावोडीए बालवुड्ढा असहू सल्लविद्धा उवकरणं च वाढव्वं, अह ण वहति तो एते परिचत्ता भवति । उवकरणं पि छड्डेयव्वं । अहवा – "तेण" त्ति तेणभए डडचिलिमिली घेप्पति । अकप्पणिज्जकज्जे परतित्थियउवकरणं । उदगकज्जे चम्मकरगा, उदगकज्जे चेव गुलियगहणं उदगगहणट्ठया दतिग्गहणं । रातो सिग्घगतिगमणे तलियग्गहणं । दूरं गतुं सत्थो ठाइस्सति तत्थ बालादिमल्लविद्धवहणट्ठा कावोडी । सल्लुद्धरणादिणिमित्तं सत्थकोसा घेप्पइ । एवमादिउवकरणं अहतो भारमादिया दोसा, अवहतस्स आयसजमविराधणादिया दोसा, तम्हा णिक्कारणे अद्धाणं णो पवज्जेज्ज ॥५६५२॥

कारणे पवज्जंति तत्थ इमो कमो –

बितियपदं गम्ममाणे, मग्गे असतीए पंथजयणाए ।
पडिपुच्छिऊण गमणं, अछिण्णपल्लीहि वतियाहिं ॥५६५३॥

पढमं मग्गेण गंतव्वं । असति मग्गस्स जणवय पुच्छिउण अछिण्णपथेण पल्लिवतिगादीहिं गंतव्वं, ततो छिण्णेण ॥५६५३॥

इमेहि कारणेहि पथेण गम्मति –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।
गेलण्ण उत्तिमट्ठे, णाणे तह दंसण चरित्ते ॥५६५४॥

अण्णतरं वा आगाढं, जहा – सुधम्मसामिगणहरस्स मासकप्पे असपुण्णे रायगिहे णगरे तणकट्ठहारगो दमगो पव्वइतो । तं भिक्खं हिंडतं लोगो भणति–"तणकट्ठहारगो" त्ति । तस्स असहणं, सुधम्मस्स अभयाऽऽपुच्छणं ।

अभयस्स पुच्छा, कहणं "सेहस्स सागारिय" ति, तिकोडिपरिच्चागो विभासा –

एएहि कारणेहिं, आगाढेहिं तु गम्ममाणेहिं ।
उवगरण पुव्वपडिलेहिएण सत्थेण गतव्वं ॥५६५५॥

पथजोग्गोवकरणपडिलेहा गहणं, अह पुव्वं सत्थ पडिलेहेउ सुद्धेण तेण सह गमणं ॥५६५५॥

असिवे अगम्ममाणे, गुरुगा दुविहा विराहणा णियमा ।
तम्हा खलु गतव्वं, विहिणा जो वण्णिओ हेट्ठा ॥५६५६॥

दुविहा विराहणा – आय-संजमेसु । अहवा – अप्पणो परस्स य । हेट्ठा ओहणिज्जुत्तीए जो गमो भणितो, सेसा वि ओमोदरियादओ जहेव ओहणिज्जुत्तीए तहा भाणियव्वा ॥५६५६॥

उवगरण पुव्वभणितं, अप्पडिलेहेंते चउगुरू आणा ।
ओमाण पथ सत्थिय, अतियत्ति अप्पपत्थयणे ।।५६५७।।

उवकरण चम्मकरगादी, ज वा वक्खमाण त अगेण्हमाणस्स सत्थ वाऽपडिलेहतस्स चउगुरुगा । अपडिलेहीए दोसा भवति ओमाण पेल्लिओ व होज्जा, सत्थवाहो अतियत्ती पासत्थो वा पतो होज्ज, सत्थो वा अप्पपत्थयणो अप्पसबलो होज्ज, अण्णे वा पथिया तत्थ पत। होज्ज । तम्हा एयद्दोसपरिहणत्थ पडिलेहियव्वो सत्थो ।।५६५७।।

सो केरिसो सत्थपडिलेहगो –

रागद्दोसविमुक्को, सत्थं पडिलेहे सो उ पचविहो ।
भंडी वहिलग भरवह, ओदरिय कप्पडिय सत्थो ५६५८।।

सो सत्थो पचविहो – भडि त्ति गडी, बहिलगा उट्टबलिद्दादी, भारवहा पोट्टलिया वाहगा, उदरिया णाम जहिं गता तहिं चेव रूवगादी छोढु समुद्दिसति पच्छा गम्मति, अहवा – गहियसबला उदरिया, कप्पडिया भिक्खायरा ।।५६५८।।

रागदोसिए इमे दोसा –

गंतव्वदेसरागी, असत्थ सत्थं करेति जे दोसा ।
इयरो सत्थमसत्थं, करेति अच्छंति जे दोसा ।।५५५६।।

जस्स गतव्वे रागो सो ज'ति सत्थपडिलेहगो सो असत्थ पि सत्थ करेज्जा, तेण कुसत्थेण गच्छताण जे दोसा तमावज्जति । "इयरे" त्ति जो गतव्वो दोसी सो सुज्झमाणसत्थ पि असत्थ करेति, तत्थ असिवादिसु अच्छताण जे दोसा ते पावति ।।५६५६।।

उप्परिवाडी गुरुगा, तिसु कंजिमादि संभवो होज्जा ।
परिवहणं दोसु भवे, बालादी सल्ल-गेलण्णे ।।५६६०।।

भडीसु विज्जमाणासु जइ बहिलगेसु गच्छति तो चउगुरुगा, एव सेसेसु वि । आदिल्लेसु तिसु कजियमादिपाणगसभवो होज्ज, दोसु भडिबहिलगेसु परिवहण होज्ज ।

केरिस परिवहण ?, उच्यते – बालादीण, आदिसद्दगहणेण वुड्ढाण दुब्बलाण खमकियाण य सल्ल-विद्धाण गिलाणाण य ।।५६६०।। सत्थ पडिलेहति तम्हा सत्थो पडिलेहियव्वो ।

सत्थे इम पडिलेहियव्व –

सत्थ च सत्थवाहं, सत्थविहाण च आदियत्तं च ।
दव्वं खेत्त कालं, भावोमाण च पडिलेहे ।।५६६१।।

पुव्वद्धस्स इमा वक्खा –

सत्थे त्ति पंचभेदा, सत्थाहा अट्ठ आतियत्तीया ।
सत्थस्स विहाणं पुण, गणिमाति चउव्विहेक्केक्कं ।।५६६२।।

मत्थस्स पच भेदा – भडीमादि। सत्थवाहो अट्ठविहो। आइयत्तिया वि अट्ठविहा उवरि भण्णिहिति। सत्थविहाण पुण गणिमादि चउव्विध, गणिम पूगफलादि, धरिम ज तुलाए दिज्जति खडसक्करादि, मेज्ज घृततदुलादि, पारिच्छ रयणमोत्तियादि। "एक्केक्के" त्ति वहिलगेसु वि एय चउव्विह। भारवहेसु वि एव चउव्विह। उदरियकप्पडिएसु त भड चउव्विह भाणियव्व ॥५६६२॥

दव्वादि चउक्क च पडिलेहेज्ज, तत्थ दव्वे –

अणुरंगादी जाणे, गुंठादी वाहणे अणुण्णवणे।
धम्मो त्ति व भत्ती य व, बालादि अणिच्छे पडिकुट्ठं ॥५६६३॥

अणुरगा णाम घसिओ। जाणा सगडिगातो वा वाहणा। गुठादी – गुठो घोडगो, आदिसद्दातो अस्सो उट्टो हत्थी वा। ते अणुण्णविज्जति – जइ अम्ह कोइ बालो आदिसद्दाओ वुड्ढो दुब्बलो गिलाणो वा गतु ण सक्केज्जा सो तुब्भेहिं चडावेयव्वो, जइ अणुजाणति धम्मेण तो तेहिं सम सुद्ध गमण। अह मुल्लेण विणा णेच्छति तो त पि अब्भुवगच्छिज्जति। अह मुल्लेण वि णेच्छति तो तेहिं सम पडिकुट्ठ गमण, ण तेहिं सम गम्मति ॥५६६३॥

किं च इमेरिसभडभरितो इच्छिज्जति सत्थो –

दंतिक्क-गोर-तेल्ले, गुल-सप्पिएमातिभडभरितासु।
अंतरवाघातम्मि उ, देंतेतिधरा उ किं देउ ॥५६६४॥

मोदग-साग-वट्टिमादी दतखज्जय बहुविह दतिक्क।

अहवा – तदुला दतिक्का, सव्व वा दतखज्जय दतिक्क। गोर त्ति गोधूमा। तहा तेल्लगुलसप्पि-णाणविधाण य धण्णाण भडीओ जइ भरियातो तो सो दव्वतो सुद्धो।

किं कारण ?, अतरा वाघाए उप्पण्णे त अप्पणा खति अम्हाण वि देति। "इहरह" त्ति अह कुकुम कत्थूरिय – तगर पत्तचोय हिंगु सखलोयमादी अखज्जदव्वभरिए अतरा वाघाते सबले णिट्ठिए किं दितु, तम्हा एरिसभरिएण ण गतव्व ॥५६६४॥

अतरा वाघातो इमो –

वासेण णदीपूरेण वा वि तेणभय हत्थि रोहे वा।
खोभो जत्थ व गम्मति, असिव एमादि वाघातो ॥५६६५॥

अतरा गाढ वासमारद्ध, चउमासवाहिणी वा महानदी पूरेण आगता, अग्गतो वा चोरभय, दुट्ठहत्थिणा वा पथो रुद्धो जत्थ वा सत्थो गतुकामो तत्थ रोहगो, रज्जखोभो वा तत्थ, असिव वा तत्थ, एवमादिकज्जेसु अतरा सण्णिवेस काउ सत्थो अच्छति ॥५६६५॥ एव दव्वतो पडिलेहा।

इमा [1]खेत्त-काल-भावेसु –

खेत्तं जं बालादी, अपरिस्संता वतंति अद्धाणं।
काले जो पुव्वण्हे, भावे सपक्ख-परपक्खणादिण्णो ॥५६६६॥

१ गा० ५६६१।

जत्तिय खेत्त बालवुड्ढादिगच्छो अपरिश्रातो गच्छति तत्तिय जति सत्थो जाति तो खेत्तश्रो सुद्धो। कालो जो उदयवेलाए पत्थित्ते पुव्वण्हे ठाति सो कालतो सुद्धो। भावे जो सपक्ख-परपक्खभिक्खायरेहिं श्राणाउण्णो सो भावश्रो सुद्धो॥५६६६॥

एक्केक्को सो दुविहो, सुद्धो ओमाणपेल्लितो चेव ।
मिच्छत्तपरिग्गहितो, गमणाऽऽदियणे य ठाणे य ॥५६६७॥

"एक्केक्को" त्ति भंडिवहिलगादिसत्थो दुविहो—सुद्धो असुद्धो य। सुद्धो अणोमाणो, श्रोमाणपेल्लिश्रो असुद्धो। सत्थवाहो श्रातियत्ती वा जे वा तत्थ अप्पहाणा एते मिच्छद्दिट्ठी। एतेहिं सो सत्थो परिग्गहिता होज्ज ॥५६६७॥

श्रोमाणपेल्लिश्रो इमेहिं होज्ज –

समणा समणि सपक्खो, परपक्खो लिंगिणो गिहत्था य ।
श्राता संजमदोसा, असती य सपक्खवज्जेणं ॥५६६८॥

पुव्वद्ध कंठ। बहूसु सपक्ख-परपक्खभिक्खायरेसु अप्फव्वताए श्रायविराहणा, कंदादिग्गहणे वा संजमविराहणा। अणोमाणस्स असतीते सपक्खोमाण वज्जित्ता परपक्खोमाणेण गंतव्व, तत्थ जणा भिक्खग्गहणे विसेस जाणति ॥५६६८॥

"[1]गमणे" त्ति अस्य व्याख्या –

गमणे जो जुत्तगती, वइगापल्लीहिं वा अछिण्णेण ।
थंडिल्ल तत्थ भवे, भिक्खग्गहणे य वसही य ॥५६६९॥

जुत्तगती णाम मिदुगती – न शीघ्रं गच्छतीत्यर्थ। अछिण्णपहेण वइयपल्लीमादीहिं वा गच्छति, तत्थ थंडिल्ल भवति, वइयपल्लीहिं य भिक्ख लभइ, वसही य लब्भति ॥५६६९॥

'[2]आदियणे" त्ति अस्य व्याख्या –

आतियणे मोत्तणं, ण चलति अवरण्हे तेण गतव्वं ।
तेण पर भयणा उ, ठाणे थंडिल्लठायीसु ॥५६७०॥

आतियण त्ति जो भुजणवेलाए ठाति, भोत्तूण य अवरण्हे जो ण चलति तेण गतव्व। तेण पर भयणे त्ति भयणा णाम जइ अवरण्हे भोत्तु चलए तत्थ जइ सव्व सम था गतु तो सुद्धो, अह ण सक्केति तो असुद्धो, ण तेण गतव्व। ठाणे त्ति जो सत्थो सण्णिवेसथंडिलेसु ठाति सो सुद्धो, अथंडिले ठाति असुद्धो ॥५६७०॥

ज वुत्त [3]सत्थहा अट्ठ आयियत्ती य अस्य व्याख्या –

पुराणसावग सम्मद्दिट्ठि अहाभद्द दाणसड्ढे य ।
अणभिग्गहिते मिच्छे, अभिग्गहिते अण्णतित्थी य ॥५६७१॥

पुराणो, गहिताणुव्वतो सावगो, अविरयसम्मद्दिट्ठी, अहाभद्दगो, दाणसड्ढो, अणभिग्गहियमिच्छो अभिग्गहियमिच्छद्दिट्ठी, अण्णतित्थिश्रो य, एते सत्थाहिवा अट्ठ। आतियत्तिया वि एते चेव अट्ठ ॥५६७१॥

---

१ गा० ५६६७। २ गा० ५६६७। ३ गा० ५६६२।

अद्धाण पडुच्च भगदसणत्थ भण्णति –

सत्थपणए य सुद्धे, य पेल्लिते कालऽकालगम-भोजी ।
कालमकालट्ठाई, सत्थाहऽट्ठाऽऽदियत्ती वा ॥५६७२॥

स थपणग ति पच सत्था, एय गुणकारपय, ते य सत्था सुद्धा ।

कह ?, उच्यते – सपक्ख परपक्खतोमाणअपेल्लिय त्ति, कालअकाले गमण, कालअकाले भोयण कालअकालनिवेसो ठाइ त्ति थडिलअथडिलठाई। एते चउरो सपडिपक्खा सोलसभगकरणपया। अट्ठ सत्थवाहा अतियत्ति ते दो वि गुणकारपया – एत्थ काले गच्छइ, काले भुजइ, काले निवेसइ, थडिले ठाइ-एए सुद्धपया, पडिपक्खे असुद्धा। सत्थवाहादिया पढमा चउरो नियमा भद्दा, पच्छिमा चउरो भयणिज्जा भवति, अइयत्ती वि ॥५६७२॥ एसा भद्दबाहुकया गाहा, एईए अत्थओ सोलस भगा उत्तरभगा, उत्तरभगविगप्पा य सव्वे सूतिया।

जतो भण्णति –

एतेसिं च पयाण, भयणाए सयाइ एगपण्णं तु ।
वीसं च गमा णेया, एत्तो य सयग्गसो जतणा ॥५६७३॥

सत्थपणगपद, चउरो य सोलसभगपदा, अट्ठ सत्थवाहा, आदियत्ति अट्ठ पदा य, एतेसिं पदाण सजोगे भयण त्ति भगा, एतेसि एक्कावण्णसया भवति वीस च भगा। एत्थ सत्थेसु सुद्धासुद्धेसु सत्थवाहाइयत्तसु य भद्दपतेसु अप्पबहुचिताए सयगेहिं जयणा भवति ॥५६७३॥

एमेवत्थो फुडो कज्जति –

कालुट्ठाई कालनिवेसी, ठाणट्ठाई कालभोई य ।
उग्गयऽणत्थमियथंडिल मज्झण्ह धरंत सूरे वा ॥५६७४॥

कालुट्ठाती उग्गए आइच्चे दिवसतो जा गच्छति, कालनिवेसी जे अणत्थमिए आदिच्चे थक्कति, ठाणट्ठाती थडिल्ले थक्कइ, कालभाती जो मज्झण्हे भुजइ, अणत्थमिए वा ॥५६७४॥

एतेसिं तु पयाण, भयणा सोलसविहा तु कायव्वा ।
सत्थपणएण गुणिता, असीति भगा उ नायव्वा ॥५६७५॥

एतेसि चउण्ह पयाण इमेण विहिणा सोलस भगा कायव्वा – कालुट्ठाती कालनिवेसी ठाणट्ठाती कालभोती (१), एव सपडिपक्खेसु सोलस भगा कायव्वा। एते सोलस भगा सत्थपणएण गुणिता असीति भगा भवति ॥५६७५॥

सत्थाहऽट्ठगगुणिता, असीति चत्ताल छस्सया होंति ।
ते आइयत्तिगुणिता, सत एक्कावण्ण वीसऽहिया ॥५६७६॥

असीति अट्ठेहिं सत्थाहिवेहिं गुणिया छस्सता चत्ताला भवति। ते अट्ठहिं अतियत्तिएहिं गुणिता एक्कावण्ण सत। वीसा (५१२०) भवति। एत्थ अण्णयरे सत्थे भगविगप्पेण वा सुद्धे आगत आयरियाण आलोएति सत्यपडिलेहगा ॥५६७६॥

इदाणि अणुण्णवणा भण्णति –

दोण्ह वि चियत्ते गमणं, एगस्सऽचियत्ते होति भयणा उ ।
अप्पत्ताण णिमित्तं, पत्त सत्थम्मि परिसाओ ॥५६७७॥

जत्थ एगो सत्थवाहो तत्थ त अणुण्णवेति जे य अहप्पधाणा पुरिसा ते वि अणुण्णवेंति जत्थ दो सत्थाधिवा तत्थ दोऽवि अणुण्णवेति, दोण्ह वि चियत्ते गमण । अह एगस्स अचियत्त तो भयणा, जति पेल्लगस्स चियत्त तो गम्मति अह पल्लगस्स अचियत्त तो ण गम्मति । पत्थिता वा जाव ण मिलति सत्थे ताव सउणादि-णिमित्त गेण्हति, सत्थे पुण पत्ता सत्थस्स चेव सउणेण गच्छति । अण्ण च सत्थपत्ता तिण्णि परिसा करेति – पुरतो मिगपरिसा, मज्झे सीहपरिसा, पिट्ठतो वसभपरिसा ॥५६७७॥

दोण्ह वि त्ति अस्य व्याख्या –

दोण्ह वि समागता सत्थिओ व जस्स व वसेण गम्मति ऊ ।
अणणुण्णवणे गुरुगा, एमेव य एगतरपंते ॥५६७८॥

'दोण्ह'' वि सत्थो सत्थवाहो य, एते दो वि समागए समग अणुन्नवेंति । अहवा – सत्थवाह जस्स य वसेण गम्मइ एते दो वि समागते समग अणुन्नवेंति । अहवा – सत्थाहिव चेव एक्क अणुण्णवे । एव जइ णो अणुन्नवेति तो चउगुरुगा, जति दोण्णि अहिवा ते दो वि पेल्लगा तत्थ एक्क अणुण्णवेंति, एत्थ वि चउ-गुरुगा । एगतरे वा पते पेल्लगे जइ गच्छति तत्थ एमेव चउगुरुग ॥५६७८॥

जो वा वि पेल्लिओ तं, भणति तुह बाहुछायसंगहिया ।
वच्चामऽणुग्गहो त्ति य, गमणं इहरा गुरू आणा ॥५६७९॥

सत्थाहिव सत्थ वा जो वा तम्मि सत्थ पेल्लगे त भण्णति – जति अणुजाणह अम्हे तो तुब्भेहिं सम तुह बाहुच्छायट्ठिता सम वच्चामो ।

जइ सो भणेज्ज – 'अणुग्गहो'' ततो गम्मति । अह तुण्हिक्को अच्छति भणइ वा – 'मा गच्छह'' जइ गच्छति तो चउगुरुग, आणादिया य दोसा ॥५६७९॥

जति सत्थस्स अचियत्ते सत्थाहिवस्स वा अन्नस्स वा पेल्लगस्स अचियत्ते गम्मति तो इमे दोसा –

पडिसेहण णिच्छुभणं, उवकरणं बालमाति वा हारे ।
अतियत्ति गोम्मएहि व, उड्डज्झंते (उद्दुज्जंते) ण वारेंति ॥५६८०॥

अडविमज्झे गयाण भत्तपाण पडिसेहेज्ज, सत्थातो वा णिच्छुभेज्ज, उवकरण वा बाल वा अण्णेण हरावेज्ज, अतियत्तिएहिं "गोमिय" त्ति गो (था) णइल्लया तेहिं उद्दुज्जते न वारेति ॥५६८०॥

ते पता भद्दगा वा –

भद्दगवयणे गमणं, भिक्खे भत्तट्ठणाए वसहीए ।
थंडिल्लासति मत्तग, वसभा य पदेस वोसिरणं ॥५६८१॥

अणुण्णविए भद्दगवयणे गम्मति, इम भद्दगवयण – ज तुब्भेहिं सदिसह त मे सव्व पडिपावेस्स सिद्धत्थपुप्फाविव सिरट्ठिना मे पीड ण करेह । एव भणते गतव्व ॥५६८१॥

पुव्वभणितो व जयणा, भिक्खे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।
सच्चेव य होति इहं, णाणत्तं णवरि कप्पम्मि ॥५६८२॥

पुव्व भणिता सवट्टसुत्ते थडिल्लस्स असति मत्तगेसु वोसिरित्तु वहति जाव थडिल, एव वसभा जयति । थडिलमत्तगासति धम्माधम्मागासप्पदेसेसु वोसिरति । इह कप्पे णाणत्त ॥५६८२॥

तस्सिमो विही –

अग्गहणे कप्पस्स उ, गुरुगा दुविहा विराहणा नियमा ।
पुरिसऽद्धाण सत्थ, णाऊण ण वा वि गिण्हेज्जा ॥५६८३॥

जति छिण्णे अच्छिण्णे वा पथे अद्धाणकप्प ण गेण्हति तो चउगुरुगा, भत्तादिअलभे खुहियस्स आयविराहणा, खुहत्तो वा कदादी गेण्हेज्ज सजमविराहणा । अहवा – सव्वे जइ सघयण-धिति बलिया पुरिसा अद्धाण वा जति एगदेवसिय दो देवसिय वा, सत्थ त्ति – जति सत्थे अत्थि भिक्ख पभूय धुवलभो भद्दगो सत्थगो कालभोईय कालट्ठाती य एवमादिणा णातु छिण्णद्धाणे वि ण गेण्हेज्ज ॥५६८३॥

सो पुण अद्धाणकप्पो केरिसो घेत्तव्वो –

सक्कर-घय-गुलमीसा, खज्जूर अगंथिमा य तम्मीसा ।
सत्तुअ पिण्णाओ वा, घय-गुलमिस्से खरेणं वा ॥५६८४॥

सक्कराए घएण य, सक्कराभावे गुलेण वा घएण वा, एतेहिं मिस्सिया अगथिमा घेप्पति । अगथिमा णाम कयलया ।

अण्णे भणति – मरहट्ठविसए फलाण कयलकप्पमाणाओ पेडीओ एक्कम्मि डाले बहुक्किओ भवति ताणि फलाणि खडाखडीण कयाणि घेप्पति, तेसि असति खज्जूरा घयगुलमिस्सा घिप्पति, एतेसि असतीए सत्तुआ घयगुलमिस्सा घेप्पति, असति घयस्स खरमण्डगुलमिस्सो पिण्णाओ घेत्तव्वो ॥५६८४॥

एतेसि इमो गुणो –

थोवा वि हणंति खुहं, ण य तण्ह करेति एते खज्जंता ।
सुक्खोदणोवऽलंभे, समितिम दंतिक्क चुण्णं वा ॥५६८५॥

पुव्वद्ध कठ । एरिसअद्धाणकप्पस्स अलभे "सुक्खोदणो" – सुक्खकूरो 'समितिम" सुक्खमडगा, "दतिक्क" – अणेगागार खज्जग । अहवा – दतिक्क चुण्णो तदुललोट्टो दतिक्कगहणेण तदुलचुण्णो, चुण्णगहणातो खज्जगचूरी, एस दतिक्कचुण्णो खज्जगचूरी वा घयगुलेण मिस्सिज्जति, मा सम्मच्छिहित्ति । जति सुद्ध लभति तो अद्धाणकप्प ण भुजति, जत्तिएण वा ऊण सुद्ध तत्तिय अद्धाणकप्प भुजति, अणुवट्टाविया वा दिज्जति अद्धाणकप्पो ॥५६८५॥

इम च गिण्हति –

तिविहाऽऽमयभेसज्जे, वणभेसज्जे य सप्पि-महु-पट्टे ।
सुद्धाऽसति तिपरिरए, जा कम्मं णाउमद्धाणं ॥५६८६॥

वात-पित्त-सिंभवमहानो मण्णिवातियाण वा रोगातकाण भेसजा ओसहा वण ओसहाणि य गेण्हति, वणभगट्टा य घनमहु, वगवट्टा य खीरपट्ट गेण्हति । सव्व पय सुद्ध मग्गियव्व, असति सुद्धस्स तिपरिरियजयणाए पणगपरिहाणीए जाव अहाकम्म वि गेण्हति, पमाणतो अद्धाणकप्प थोव बहु वा अद्धाण णाउ गेण्हति, गन्छप्पमाण वा नाउ ।।५६८६।।

सभए सरभेदादी, लिंगविवेगं च कातु गीतत्था ।

खरकम्मिया व होउ, करेंति गुत्तिं उभयवग्गे ।।५६८७।।

जत्थ सभय तत्थ वसभा सरभेयवण्णभेयकारिगुलियाहिं अप्पणो अण्णारिस सरवण्णभेद काउ, अहवा–रयोहरण दि दव्वलिंग मोत्तु गिहिलिंग काउ जहा ण णज्जति एते सजय त्ति खरकम्मिया व सन्नद्धपरियरा जहासभवगहियाउधा होउ साहुसाहुणीउभयवग्गे गुत्तिरक्ख करंति ।।५६८७।।

किं च –

जे पुव्वं उवगरणा, गहिता अद्धाण पविसमाणेहिं ।

जं जं जोग्गं जत्थ उ, अद्धाणे तस्स परिभोगो ।।५६८८।।

पुव्वद्ध कठ । ज जोग्ग – जत्थ उदगगलणकाले चम्मकरगो, वहणकाले कावोडी उड्डा, भिक्खाय-रियकाले सिक्कगा, विकरणकाले पिप्पलगो, एवमादि ।।५६८८।।

सुक्खोदणो समितिमा, कंजुसिणोदेहि उण्हविय भुंजे ।

मूलुत्तरे विभासा, जतितूणं णिग्गते विवेगो ।।५६८९।।

जो सुक्खोदणो गहितो, जे य समितिमादी खरा, एते उण्होदणेण कजिएण वा उण्हे गाहेत्ता सुईकरेत्ता भोत्तव्वा । "मूलुत्तरे विभास" त्ति अद्धाणकप्पो मूलगुणोवघातो, अहाकम्म उत्तरगुणोवघाओ ।

कि अद्धाणकप्प भुजउ ? अह अहाकम्म लब्भमाण भुजउ ?, अत्रोच्यते–"एत्थ दो आदेसा, जम्हा कप्पो मूलगुणघाती, अहाकम्म उत्तरगुणघाती, तम्हा कम्म लहुतर भोत्तव्व । जम्हा आहाकम्मे छण्हुवघातो, कप्पो पुण फासुओ । एत्थ वर कप्पो, ण कम्म" ।।५६८९।।

चोदगाह – 'जो कप्पो आहाकम्मिओ तत्थ कह दुदोसदुट्ठो" ?,

आचार्य आह –

काम कम्म पि सो कप्पो, णिमिं च परिवासितो ।

तहावि खलु सो सेयो, ण य कम्म दिणे दिणे ।।५६९०।।

सवथा वर अद्धाणकप्प एव, न चाहाकम्म, दिने दिने बहुसत्त्वोपघातित्वात् ।।५६९०।।

आहाकम्मं सइं घातो, सय पुव्वहते सिया ।

जे ते तु कम्ममिच्छंति, निग्घीणा ते ण मे मता ।।५६९१।।

अद्धाणकप्पे ज आहाकम्म तत्र पूवट्टते सकृदेव जीवोवघात (जे पुण) अद्धाणकप्प मूलगुणा ण भजति । "उत्तरगुणो ति" जे पुण आधाकम्म भुजति दिने दिने ते अत्यन्तनिघृणा सत्त्वेषु, न ते मम सम्मता सयमायतन प्रति ।

"जतिऊण णिग्गए विवेगो" त्ति एव श्रद्धाणे जतित्ता जाहे श्रद्धाणातो णिग्गता ताहे अभुत्त भुत्तुद्धरिय वा श्रद्धाणकप्प विवेगो त्ति परिट्ठवेति ।।५६६१।। भद्दगवयणे त्ति गय ।

इदाणि "[1]भिक्खित्ति" दारस्स कोति विसेसो भण्णति –

कालुट्ठादीमादिसु, भंगेसु जतंति बितियभंगादी ।
लिंगविवेगोऽक्कंते, चुडलीश्रो मग्गश्रो श्रभए ।।५६६२।।

कालुट्ठानी कालनिवेसी, ठाणठाती कालभोती ।

एत्थ पढमभगो सुद्धो । एत्थ भगजयणा णत्थि ।

बितियमगादिसु जयति-तत्थ बितियभगे श्रकालभोती, तत्थ सलिंगविवेग काउ राश्रो परलिंगेण गिण्हति ।

तत्तिय-चउत्थभगेसु श्र ठाणट्ठाती तत्थ जयति, ज गोणादीहिं श्रक्कतट्ठाण श्रासि तहिं ठायति । चउत्थभगे लिंगविवेगेण भत्तादि गेण्हति, गोणादिश्रक्कते य ठायति ।

पचमादिभगेसु चउसु "चुडली" सथारभूमादिसु बिलादि जोइउ ठायति ।

णवमादिसोलसतेसु श्रट्ठभगेसु श्रंकालट्ठातीसु रातो गमणमग्गतो "श्रभए" त्ति जति वच्चताण 'मग्गतो" त्ति पच्छनो श्रभय तो पच्छतो ठिता जयति । एसा भगजयणा ।।५६६२।।

पुव्वं भणिता जतणा, भिक्खे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।
सच्चेव य होति इहं, जयणा ततियम्मि भंगम्मि ।।५६६३।।

सवट्टसुत्तमादिसु बहुसो भणिया जयणा ।

श्रहवा – णवगणिवेसे जहा भिक्खग्गहण तहा कायव्व भत्तट्ठाण, श्रकालठातिस्स निब्भए पुरतो गतु समुद्दिसति, जेण समुद्दिट्ठे सत्थो श्रब्भेत, वसहिमज्झे सत्थस्स गिण्हति, श्रथडिले मत्तएसु जयति, मत्तगासति पदेसेसु वि । श्रहवा – ततियभगे श्रथडिलाइम्मि सच्चेव जयणा जा सवट्टसुत्ते सवित्थरा भणिया ।।५६६३।।

सावय श्रण्णट्ठकडे, श्रट्ठा सयमेव जोति जतणाए ।
गोउलविउव्वणाए, श्रासासपरंपरा सुद्धो ।।५६६४।।

सावय त्ति श्रद्धाणे जति सावयभय होज्ज तो श्रण्णेहिं सत्थिल्लएहिं जा श्रप्पणट्ठा कया श्रगणी तमल्लियति, तस्स य श्रसति श्रण्णत्थकड श्रगणि घेत्तूण फासुयदारुएहिं जालति, श्रट्ठे त्ति जा सत्थिल्लगेहिं सजयट्ठाए कडा त सेवति, परकडश्रसति त्ति सयमेव श्रगणि श्रहरुत्तरेण जणति जोइजइणाए त्ति – कते कज्जे जोइसालभणियजयणाए विज्झवेतीत्यर्थ ।।५६६४।।

"[2]गोउल" पश्चार्ध, श्रस्य व्याख्या –

सावय-तेण-परद्धे, सत्थे फिडिता ततो जति हवेज्जा ।
श्रंतिमवइया वेंटिय, नियट्टणय गोउलं कहणा ।।५६६५।।

---

१ गा० ५६८१ । २ गा० ५६६४ ।

अतरा महाडवीए सिंघादिसावयतेणेहिं वा सत्थो परद्धो सव्वो दिसोदिसिं णट्ठो, साधू वि एक्कतो णट्ठा, सत्थाओ फिडिया ण किंचि सत्थिल्लय पस्सति, पथ च अजाणमाणा भीमाडविं पवज्जेज्जा। तत्थ वसभा गणिपुरोगा सेसा सव्वत्थामेण गच्छरक्खण करेंति जयणाए ताहे दिसाभागममुणेंता सबालवुड्ढगच्छस्स रक्खणट्ठा वणदेवताए उस्सग्ग करेंति, सा आगपिया दिसिभाग पथ वा कहेज्ज, सम्मद्दिट्ठिदेवता वा अण्णोवदेसतो वइयाओ विउव्वति, ते साधू त वइय पासित्ता आसमिया, ते साधू ताए देवताए गोउलपरंपरएण ताव नीया जाव जणवय पत्ता ताहे सा देवता अतिमवइयाए जाव उवगरणवेंटिय विस्सरावेइ, तीए अट्ठा साहुणो णियत्ता गोउल न पेच्छति, वेंटिय घेत्तु पडिगया। गुरुणो कहेंति – नत्थि सा वइयत्ति, नाय जहा देवयाए कय ति, एत्थ सुद्धा चेव। नत्थि पच्छित्त ॥५६६५॥

भंडी-बहिलग-भरवाहिएसु एसा व वण्णिया जतणा।

ओदरिय विवित्तेसु, जयणा इमा तत्थ नायव्वा ॥५६६६॥

विवित्ता कप्पडिया, अहवा-विवित्ता-मुसिता, सेस कठ।

ओदरिए पत्थयणा, ऽसति पत्थयण तेसि कंदमूलफला।

अग्गहणम्मि य रज्जू, वलेंति गहणं तु जयणाए ॥५६६७॥

भडिबहिलगभरवहाण असति आगाढे रायदुट्ठादिकज्जे उदरिगादिसु वि सह गम्मेज। तत्थ ओदरिगेहिं सह गम्ममाणे अद्धाणकप्पादि ओदरिगादीण वि पत्थयणासति जाहे ते ओदरिया पत्थयण-खीणा, ताहे तेसिं पत्थयण कदमूलफलादि, साहूण ते च्चेव होज्ज ॥५६६७॥

"अग्गहणम्मि" पच्छद्ध, अस्य व्याख्या –

कदादि अभुंजंते, अपरिणते सत्थियाण कहयति।

पुच्छा वेहासे पुण, दुक्खिहरा खाइतुं पुरतो ॥५६६८॥

तत्थ जे अपरिणया ते णेच्छंति कदादि भुजिउ, ताहे वसभा तेसिं सत्थइल्लाण कहेंति।

ते वसभा सत्थिल्लए भणति – एते तहा बीहावेह, जहा खायति।

ताहे ते सत्थिल्लया रज्जूओ वलति, अपरिणता पुच्छति। अपरिणयाण वा पुरतो साहू पुच्छति – किं एयाहिं रज्जूहि ?,

ताहे ते सत्थिल्लया भणति – अम्हे एक्कणावारूढा। अम्हे कदादि ण खाइत, अम्हे एताहिं वेहाणसे उल्लबेहामो, इहरा तेसि पुरओ दुक्ख खायामो ॥५६६८॥

इहरा वि मरति एसो, अम्हे खायामो सो वि तु भएणं।

कंदादि कज्जगहणे, इमा उ जतणा तहिं होति ॥५६६९॥

सो कदादि अखायतो इह अडवीए अवस्स चेव मरइ तम्हा तं मारेत्ता अम्हे सुह चेव खायामो। सो य अपरिणओ एय सोच्चा भया खायति, एवमादिकज्जे कदादिगहणे इमा जयणा ॥५६६९॥

फासुगजोणि ·· गाहा ॥५७००॥
बद्धट्ठिए वि एवं ·· ··गाहा ॥५७०१॥
एमेव होइ ·· ··गाहा ॥५७०२॥
साहारण · गाहा ॥५७०३॥
तुवरे · ·· गाहा ॥५७०४॥
पासंदण · · गाहा ॥५७०५॥

[1]एवं छ गाहाओ भाणियव्वो ।

एयाओ जहा पलबसूत्रे, पूर्ववत् । असिवे त्ति गत ।

इदाणिं ओमे त्ति –

ओमे एसण सोही, पजहति परितावितो दिगिंछाए ।
अलभंते वि य मरणं, असमाही तित्थवोच्छेदो ॥५७०६॥

ओमे अद्धाण पवज्जियव्व ओमे अच्छनो दिगिंछाए परिताविओ एसण पजहति । अहवा – अलभतो भत्तपाण मरति, असमाही वा भवति, असमाहिमरणेण वा णाराधइ, अण्णोण्णमरतेसु य तित्थवोच्छेओ भवति, एते अगमणे दोसा ॥५७००॥

गमणे इमा पथजयणा –

ओमोयरियागमणे, मग्गे असती य पथजयणाए ।
परिपुच्छिऊण गमणं चतुव्विहं रायदुट्ठं तु ॥५७०७॥

जया ओमे गम्मति तदा पुव्व मग्गेण गतव्व, असति मग्गस्स पथेण, तत्थ वि पुव्व अच्छिण्णे, पच्छा छिण्णेण । गमणे विही सच्चेव जो असिवे । ओमे त्ति गत ।

इदाणि "रायदुट्ठे", त चउव्विह वक्खमाण ॥५७०७॥

---

[1] पूनासत्कमूलभाष्यपुस्तकादर्शे, टाइपअङ्कितपुस्तकादर्शे च "फासुग जोणि गाहा" त आरभ्य "एव छ गाहाओ भाणियव्वाओ" इत्यन्त पाठ उपरिनिर्दिष्टरूपेण भाष्ये समुपलभ्यते । किन्तु चूर्णिकारेण "एयाओ जहा प्रलबसूत्रे पूर्ववत्" इति सूचना विहिता, तदनुसारेण प्रलम्बसूत्राधिकारे तु गाथात्रयमेव, न तु गाथा षट्कम् । ता खलु तिस्रो गाथास्त्वेता —

फासुग जोणि परित्ते, एगट्ठि अबद्ध भिण्णऽभिण्णे य ।
बद्धट्ठिए वि एव, एमेव य होति बहुबीए ॥३४६७॥
एमेव होति उवरिं, बद्धट्ठिय तह होति बहुबीए ।
साहारणस्स भावा, आदीए बहुगुण ज च ॥३४६८॥
तुवरे फले य पत्ते, रुक्ख-सिला-तुप्प-मद्दणादीसु ।
पासदणे पवाते, आयवतत्ते वहे अवहे ॥३४७०॥

गाथाऽवलोकनेन स्फुट प्रतिभाति – यत "बद्धट्ठिए वि एव" ५७०१, साहारण ५७०३, पासदण ५७०५, अङ्कमिता गाथा "फासुगजोणि" ५७००, "एमेवहोइ" ५७०२, "तुवरे" ५७०४, अङ्कमिताना गाथानामुत्तरांशरूपा एव ।

सो पुण राया कहं पदुट्ठो ?, अत उच्यते –

ओरोहधरिसणाए, अब्भरहियसेहदिक्खणाए य ।
अहिमर अणिट्ठदरिसण, वुग्गाहण वा अणायारे ॥५७०८॥

ओरोहओ अंतेपुरं, तं लिंगत्थमादिणा केणइ आधरिसियं ।

अहवा – तस्स रण्णो अब्भरहिओ त्ति आसण्णो कोइ सेहो दिक्खितो । अहवा – साधुवेसेण अहिमरा पविट्ठा ।

अहवा – स्वभावेण कोइ साधू अणिट्ठो, अणिट्ठं वा साधुदंसणं मण्णति, मंतिमादीण वा वुग्गाहितो, वाए वा जितो, संजओ वा अगारीए समं अणायारं पडिसेवंतो दिट्ठो ॥५७०८॥

एवमादिकारणेहिं पदुट्ठो इमं कुज्जा –

णिव्विसओत्ति य पढमो, बितिओ मा देह भत्त-पाणं से ।
ततिओ उवकरणहरो, जीविय-चरित्तस्स वा भेदो ॥५७०९॥

जेण रण्णा णिव्विसया आणत्ता तत्थ जति ण गच्छति तो चउगुरुगं, अण्णं च आणाइक्कमे कज्जमाणे राया गाढयरं रुस्सति । एते पढमभेदे दोसा ॥५७०९॥

गुरुगा आणालोवे, बलियतरं कुप्पे पढमए दोसा ।
गेण्हंत-देंतदोसा, बितिए चरिमे दुविधमेतो ॥५७१०॥

जेण रण्णा रुट्ठेणं गाम-णगरादिसु भत्तपाणं वारितं तत्थ देंताण गेण्हंताण वि दोसा, एते बितिते दोसा । ततिए उवकरणहरो तत्थ वि एते चेव । चरिमो त्ति चउत्थो तत्थ दुविधभेददोसो जीवियभेदं वा करेज्ज, चरणभेयं वा । जम्हा अच्छंताण एवमादी दोसा तम्हा गंतव्वं ॥५७१०॥

णिव्विसयाण ताण तिविहं गमणं इमं –

सच्छंदेण य गमणं, भिक्खे भत्तट्ठणा य वसहीए ।
दारे ठिओ रुंभति, एगत्थ ठिओ व आणावे ॥५७११॥

"सच्छंदेण य गमणं भिक्खे" अस्य व्याख्या –

सच्छंदेण सयं वा, गमणं सत्थेण वा वि पुव्वुत्तं ।
तत्थुग्गमातिसुद्धं, असंथरे वा पणगहाणी ॥५७१२॥

सच्छंदगमणं अप्पणो इच्छाए, सयं ति विणा सत्थेण वा गच्छति, तं च गमणं पुव्वुत्तं इहेव असिवद्दारे ओहणिज्जुत्तीए वा । तत्थ सच्छंदगमणे उग्गमादिसुद्धं भत्तपाणं गेण्हंतो अच्छतु, सुद्धासति वा असंथरे पणगपरिहाणीए जयंता गेण्हंति ।

[1]"दारे व ठिउ" त्ति एयस्स विभासा – णिव्विसयमाणत्तेसु मा एत्थेव जणवदे णिलुक्का अच्छिहिंति, ताहे पुरिसे साहज्जे देति ।

१ गा० ५७११ ।

ते पुरिसा भिक्खग्गहणकाले भणंति – "तुम्हे पविसह गाम णगर वा भिक्ख हिंडित्ता ततो चेव भोत्तु मागच्छह, इह चेव दारट्ठिता उद्दिक्खामो ।" ते तत्थ ठिया जो जो साधू एति त त च णिरुभति जाव सव्वं मिलिया ।

अहवा – ते रायपुरिसा एगत्थ सभाए देउले वा ठिता भणंति – तुब्भे भिक्ख हिंडित्ता इह आणेह, अम्ह समीवे भुजह त्ति ॥५७१२॥

तिण्हेगतरे गमणं, एसणमादीसु होइ जइतव्वं ।
भत्तट्ठ ण थंडिल्ले, असति सोही व जा जत्थ ॥५७१३॥

"तिण्हेगयर" त्ति – मच्छदगमण एक्को, दारे रुभति बितिओ, इह आणेह ति ततिओ, एयण्णयरप्पगारेण गच्छमाणा एसणा । आदिसद्दातो उग्गमुप्पायणा य । तेसु विसुद्ध भत्तपाण गेण्हति, भत्तट्ठ दोसु विहिणा करेति । रायपुरिससमीवट्ठितेसु भयणा । थडिल्लसामायारी ण हावेति, रायपुरिससमीवट्ठितेहिं वा कुरुकुय करेति । सच्छद वसमाणा वसहिसामायारिं न परिहावति ।

अह रायपुरिसा भणेज्ज – "अम्ह समीवे वसियव्व ।" तत्थ वि जहा विरोहतो ण हावेति । मतादिसुद्धस्स असति पणगपरिहाणीए विसोधि अविसोधीए जयतस्स जा जत्थ अप्पतरदोसकोडी त गेण्हति ॥५७१३॥

जे भणिया भद्दबाहुकयाए गाहाए सच्छदगमणाइया तिण्णि पगारा, ते चेव सिद्धसेणखमासमणेहिं फुडतरा करेतेहिं इमे भणिता –

सच्छदेण उ एक्कं, बितियं अण्णत्थ भोत्तिहं मिलह ।
ततिओ घेत्तुं भिक्खं, इह भुजह तीसु वी जतणा ॥५७१४॥

तिसु वि पगारेसु गच्छता तिसु वि उग्गमुप्पायणेसणासु जतति, सत्ति ण हावेति । शेष गतार्थम् ॥५७१४॥

अहवा – कोइ कम्मघणक्क्खडो स्वचिननिकृतिवचनानुमानपरमविजृम्भादिद कुर्यात् –

सबितिज्जए व मुंचति, आणावेत्तुं च चोल्लए देंति ।
अम्हुग्गमाइसुद्धं, अणुसट्ठि अणिच्छ जं अंतं ॥५७१५॥

साधूण भिक्ख हिंडताण रायपुरिसबितिज्जते जइ उत्तसना अणेसणिज्ज पि गिण्हावेति तत्थ ते पण्णवेयव्वा – अम्ह उग्गमातिसुद्ध घेप्पति । अहवा – एगत्थ णिरुभिउ चोल्लए आणावेऊण देंति "एय भुजह" त्ति ।

ताहे सो रायपुरिसो भणति – "अम्हे उग्गमाइ सुद्ध भुजेमो, ण कप्पइ एय ।" एव भणिओ जइ उस्सकलइ ताहे भिक्ख हिंडति, अणिच्छे अणुसट्ठी, धम्मकहालद्धी तो धम्म कहेति, णिमित्तेण वा आउट्टिज्जति, मतजोएण वा वसीकज्जति, असति अणिच्छे य ज चोल्लगेसु आणीय तत्थ ज अतपत त भुजति ॥५७१५॥

अहवा –

पुव्वं व उवक्खडियं, खीरादी वा अणिच्छे जं देति ।
कमढग भुत्ते सन्ना, कुरुकुयदुविहेण वि दवेणं ॥५७१६॥

सो रायपुरिसो भणति – 'जं पुव्वरद्धं तं अम्हं चोल्लगेसु आणिज्जउ, दधिखीरादि वा आणाविज्जउ ।"

अहवा – चोल्लगेसु जं पुव्वरद्धं दहिखीरादि वं भजति, जइ पुव्वरद्धं दहिखीरादि वा नेच्छति आणावेतु ताहे सुद्धमसुद्धं वा जं सो देति तं भुजति ।

इमा भत्तट्ठजयणा – कमढगेसु सतर भुंजति, गिहिभायणेसु वा । सण्णं च वोसिरित्ता फासुयमट्टियाए बहुदवेण य कुरकुयं करेंति, दुविघेण वि दवेण अचित्तेण य सचित्तेण वि, पुव्वं मीसेण पच्छा ववहारसचित्तेण ।

"[1]असति सोधी य जा जत्थ" ति एयं पदं अण्णहा भण्णति – जति जयणा संभवे अजयणं ण करेंति, विसुद्धाहारे वा लब्भते असुद्धं भत्तट्ठ, थंडिल्लविहिं वा ण करेंति, तो जा जत्थ सोही तमावज्जति । णिव्विसय त्ति गयं ।

[2]इदाणिं बितिओ "मा देह भत्तपाणं" त्ति अत्रोच्यते –

बितिए वि होति जयणा, भत्ते पाणे अलब्भमाणे वि ।
दोसीण तक्क पिंडी, एसणमादीसु जइयव्वं ।।५७१७।।

पुव्वद्धं कंठं । जाव जणो ण संचरति ताव साणुवेलाए दोसीणं तक्कं वा गेण्हति भिक्खवेलाए वा वायसपिंडीओ गेण्हति, ततो एसणाए जे अप्पतरा दोसा ततो उप्पायणाए ततो उग्गमेण अप्पतरदोसेसु जयति ।।५७१७।।

अहवा – इमा जयणा –

पुराणादि पण्णवेउं, णिसिं पि गीयत्थे होइ गहणं तु ।
अग्गीते दिवा गहणं, सुण्णघरे ओमरादीसु ।।५७१८।।

पुराणो सावगो वा गहियाणुव्वतो खेयण्णो पण्णविज्जति । सो पण्णविओ देवकुले बलिलक्खेण ठावेइ, तं दिवा घेप्पइ, तारिसस्स असइ गीयत्थेसु रातो वि घेप्पति । अगीएसु दिवा गहणं, देवकुले सुण्णघरे वसतघरे वा अच्चणलक्खेण ओमराईसु ठविय ।।५७१८।।

उम्भर कोट्टिंबेसु य, देवकुले वा णिवेदणं रण्णो ।
कयकरणे करणं वा, असती णदी दुविधदव्वे ।।५७१९।।

"कोट्टिंबे" त्ति – जत्थ गोभत्तं दिज्जति तत्थ गोभत्तलक्खेण ठविय गेण्हति, जाव उवसामिज्जति राया ताव एवं जयणजुत्ता अच्छति । जति सव्वहा उवसामिज्जतो णोवसमति ताहे जो संजतो कयकरणो ईसत्थे सो तं बधेउ सासेति, विज्जाबलेण वा सासेति, तिउव्विणिड्ढिसपण्णो वा सासेति । जाहे कयकरणादियाण असति ताहे "नदि" त्ति णदी हरिसो, एसो तुट्ठी, जेण दुविधदव्वेण भवति तं गेण्हति । दुविधदव्वं फासुगमफासुगं वा, परित्तमणंतं वा, असण्णिहिं सण्णिहिं वा, एसणिज्जं अणेसणिज्जं वा । एवमादिभत्तपाणं पडिसेवं त्ति ।।५७१९।। मा देह भत्तपाणंति गयं ।

इदाणिं [3]उवकरणहरे त्ति –

ततिए वि होति जयणा, वत्थे पादे अलब्भमाणम्मि ।
उच्छुद्ध विप्पइण्णे, एसणमादीसु जतियव्वं ।।५७२०।।

---

१ गा० ५७०९ । २ गा० ५७१३ । ३ गा० ५७०९ ।

रण्णा पडिसिद्धं मा एतेसिं कोइ देज्ज। एवं वत्थपादेसु अलब्भमाणेसु इमा जयणा – जं देवकुलादिसु कप्पडिएसु उच्छुढं तं गिण्हति, विप्पइण्णं जं उक्कुरुडियादिसु ठितं एसणादिसु वा जतति पूर्ववत् ॥५७२०॥

हितसेसगाण असती, तण अगणी सिक्कगा य वागा य।
पेहुण-चम्मग्गहणे, भत्तं च पलास पाणिसु वा ॥५७२१॥

रण्णा रुट्ठेण सव्वं उवकरणं हरितं, सेसं ति अण्णं णत्थि, ताहे सीताभिभूता तणाणि गेण्हेज्जा, अगणिं गेण्हेज्ज, अगणिं वा सेवेज्ज। पत्तगबंधाभावे सिक्कगट्ठियादे काउं हिं (डे) ज्ज, सणादि प (व) क्कतया पाउरणा गेण्हेज्ज, पेहुणं ति मोरगमया पिच्छया रयहरणट्ठाणे करेज्ज, पत्थरणं पाउरणं वा जह बोडियाण, चम्मयं वा पत्थरणपाउरणं गेण्हेज्ज, पलासपत्तिमादिसु भत्तं गेण्हेज्ज, अहवा – भत्तं कुडगादिसु गेण्हेज्जा पलासपत्तेसु वा भुंजेज्ज। पाणीसु वा गहणं भुंजणं वा ॥५७२१॥

असती य लिंगकरणं, पण्णवणट्ठा सयं व गहणट्ठा।
आगाढकारणम्मि, जहेव हंसादिणं गहणं ॥५७२२॥

असति रण्णोवसमस्स, उवकरणस्स वा असति, ताहे परलिंगं करेंति। जं रण्णो अणुमतं तेण लिंगेण ठिता ससमय-परसमयविदू वसभा रायाणं पण्णवेंति – उवसामेंतीत्यर्थः। तेन वा परलिंगेन ठिता उवकरणं स्वयमेव गृण्हन्ति, एयं चेव आगाढं। अण्णम्मि वा आगाढे जहेव हंसमादितेल्लाण गहणं दिट्ठं तहा इह पि आगाढ कारणे वत्थ पत्तादियाण गहणं कायव्वं। ओमोवण-तालुग्घाडमादिएहिं अन्येन वाहिं सप्रयोगेनेत्यर्थ ॥५७२२॥ उवकरणहडे त्ति गयं।

इदाणिं [1]भेदे त्ति –

दुविहम्मि भेरवम्मि, विज्जणिमित्ते य चुण्ण देवीए।
सेट्ठिम्मि अमच्चम्मि य, एसणमादीसु जइयव्वं ॥५७२३॥

भेरवं भयानकं, तं दुविहं जीवियाओ चारित्ताओ वा ववरोवेति तं रायाणं पदुट्ठं विज्जादीहिं वसीकरेज्जा, णिमित्तेण वा आउट्टिज्जति, चुण्णेहिं वा आघसमादीहिं वसीकज्जति। "देवी य" त्ति जा य तस्स महादेवी इट्ठा सा वा विज्जादीहिं आउट्टिज्जति, अहवा – खतगो खतिगा वा से जो वा रण्णो अवुक्कमणिज्जो, जइ तेहिं भण्णतो ठितं सुंदरं।

अह ण ठाति ताहे सेट्ठि भण्णति, अमच्चं वा, जइ ते उवसमेज्जा। अहवा — जाव उवसमइ ताव सेट्ठि-अमच्चाण अवग्गहे अच्छति, जो वा रण्णो अवुक्कमणिज्जो तस्स वा घरे अच्छति, एसणादिसु जयति पूर्ववत्। पासंजण (पासंडगण) वा उवट्ठावेज्जा, जइ णाम ते उवसामेज्ज अप्पणिज्जाहिं अणुसासणादीहिं ॥५७२३॥

आगाढे अण्णलिंगं, कालक्खेवो बहिं निगमणं वा।
कतकरणे करणं वा, पच्छायण थावरादीसु ॥५७२४॥

अणुवसमते एरिसे आगाढकारणे अण्णलिंगं करेति, तेण परलिंगेण तत्थेव कालक्खेवं करेति, अणज्जमाणा विसयंतरं वा गच्छति, जाहे सव्वहा उवसामेउं ण तीरइ ताहे "कयकरणे करणं वं" त्ति सहस्स-जोही तं सासेज्ज, अह तं पि णत्थि ताहे "पच्छादणथावरादीसु" ति जाव पसादिज्जति ताव रुक्खग्गहणेसु

1 गा० ५७०६।

अप्पाण पच्छादेंति, पउमसरादिसु वा लिक्किया अच्छति, अहवा – दिया एन्तेसु निलुक्कया अच्छति, रातो वच्चति । एव रायदुट्ठे जयति ॥५७२४॥

इदाणि [1]भयादिदारा –

बोहिग-मेच्छादिभए, एमेव य गम्ममाण जयणाए ।
ठोण्हऽट्ठा य गिलाणे, णाणादट्ठा व गम्मंते ॥५७२५॥

"भय" ति बोहियभय, बोहिगा मालवादिमेच्छा, ते पव्वयमालेसु ठिया माणुसाणि हरति । तेसिं भया गम्ममाणे एव चेव गमण, जयणा य जहा असिवादिसु । भयमेवागाढ । अहवा – किंचि उप्पत्तियमागाढ, जहा मातापितिसण्णायगेण सदिट्ठ –"इम कुल पव्वज्जमब्भुवगच्छति जति तुम आगच्छसि" अहवा–"णागच्छसि तो विप्परिणमति अण्णम्मि वा सामणे पव्वयति" एरिसे वा गतव्व । गेलण्णवेज्जस्स वा ओसहाण य । उत्तिमट्ठे य पडियरगो विसोहिकामो वा ।

णाणदसणेसु सुत्तणिमित्त । अहवा – अत्थस्स । अहवा – उभयस्स । चरित्तट्ठा पुव्वभणिय । एवमादिकारणेसु पुव्व मग्गेण, पच्छा अच्छिण्णपथेण, ततो छिण्णपथेण ॥५७२५॥

एत्थ एक्केक्के असिवादिकारणे –

एगापण्ण व सतावीसं च ठाण णिग्गमा णेया ।
एतो एक्केक्कम्मिं, मयग्गसो होइ जयणा उ ॥५७२६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू विरूवरूवाइं दसुयायणाइ अणारियाइ मिलक्खूइं पच्चंतियाइं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसधारेइ, अभिसंधारेंत वा सातिज्जति ॥२६॥

इमो सुत्तत्थो –

सग-जवणादिविरूवा, छव्वीसद्धतवासि पच्चंता ।
कम्माणज्जमणारिय, दमणेहि दसंति तेण दसू ॥५७२७॥

सग जवणादिअण्णण्णवेसभासादिट्ठिता विविधरूवा विरूवा मगहादियाण अद्धछव्वीसाए आरिय-जणवयाण, तेसिं अण्णतर ठिया जे अणारिया ते पच्चतिया, आरुट्ठा दतेहिं दसति तेण दसू, तेसिं [2]आयतणा विसओ पल्लिमादी वा । हिंसादिअकज्जकम्मकारिणो अणायरिया ॥५७२७॥

मिल्लक्खूऽव्वत्तभासी, संथरणिज्जा उ जणवया सगुणा ।
आहारोवहिसेज्जा, मंथारुच्चारसज्झाए ॥५७२८॥

मिलक्खू जे अव्वत्त अफुड भासति ते मिलक्खू । जदा रुट्ठा तदा दुक्ख सण्णविज्जति दुस्सण्णप्पा । दुक्ख चरणकरणजातमाताउत्तिए धम्मे पण्णविज्जति दुप्पण्णवणिज्जा, रातो सव्वादरेण भुजति अकालपरिभोगिणो, रातो चेव पडिबुज्झति अकालपडिबोही, सद्धम्मे दुक्ख बुज्झति त्ति दुप्पडिबोहीणि । सति विज्जमाणे "लाढे"

---

१ गा० ५६३० । २ आयरिय निव्वासओ पल्लिगादी वा इत्यपि पाठ ।

त्ति साधुणो अक्खा, सगुणा जणवया सथरणिज्जा भवति । ते पुण गुणा आहारो उवही सेज्जा सथारगो, अण्णो य बहुविहो । उवधी सतत अविरुद्धो लब्भति, उच्चारपासवणभूमीओ य सति, सज्झायो सुज्झति । "विहाराए" त्ति दप्पेण णो असिवादिकारणे, तस्स चउलहु आणादिया य दोसा ।।५७२८।।

इमो णिज्जुत्तिवित्थारो –

आरियमणारिएसु, चउक्कभयणा तु संकमे होति ।
पढमततिए अणुण्णा, बितियचउत्थाऽणणुण्णाया ।।५७२६।।

आरितातो जणवयाओ आरिय जणवय सकमइ, एव चउभगो कायव्वो, सेस कठ ।।५७२६।।

आरिय-आरियसंकम अद्धछव्वीसं हवति सेसा तु ।
आरियमणारियसंकम, बोधिगमादी मुणेतव्वा ।।५७३०।।

अद्धछव्वीसाए जणवयाण अण्णतराओ अण्णतर चेव आरिय सकमति तस्स पढमभगो, आरियातो अण्णयरबोहिगविसय सकमतस्स बितिओ ।।५७३०।।

अणारियारियसकम, अंधादमिला य होति णायव्वा ।
अणारियऽणारियसंकम, सग-जवणादी मुणेतव्वा ।।५७३१।।

अधदमिलादिविसयाओ आरियविसय सकमतस्स तइओ, अणारियातो सगविसयाओ अणारिय चेव जवणविसय सकमतस्स चउत्थो । एस खित्त पडुच्च चउभगो भणितो ।।५७३१।।

इम लिग पडुच्च भण्णति –

भिक्खुसरक्खे तावस, चरगे कावाल गारलिंगं च ।
एते अणारिया खलु, अज्जं आयारभंडेणं ।।५७३२।।

भिक्खूमादी अणारिया लिंगा, "अज्ज" ति आरिय, त पुण आयारभडय रयोहरण मुहपोत्तिया चोलपट्टकप्पा य पडिग्गहो समत्तो य ।

आयारभडग एत्थ वि चउभगो कायव्वो ।

आरियलिगाओ आरियलिग एस पढमभगो । एत्थ थेरकप्पातो जिणकप्पातिसु सकम करेति । बितिओ कारणिओ, ततिए भिक्खुमादि उवसता, चउत्थे भिक्खुमादी सरक्खादीसु ।

अहवा चउभगो – आयरिओ आरियलिग सकमति भावणा कायव्वा ।

अहवा चउभगो – आरिएण लिगेण आरियविसय सकमति भावणा कायव्वा । जो आरिएण वि लिगेण अणारियविसय सकमति, एत्थ सुत्तणिवातो । सेस विकोवणट्ठा भणिय ।।५७३२।।

को पुण आरिओ, को वा अणारिओ ?

अतो भण्णति –

मगहा कोसंबीया, थूणाविसओ कुणालविसओ य ।
एसा विहारभूमी, पत्ता वा आरियं खेत्तं ।।५७३३।।

पुव्वेण मगहविसओ, दक्खिणेण कोसंबी, अवरेण थूणाविसओ, उत्तरेण कुणालाविसओ। एतेसिं मज्झं आरियं, परतो अणारियं ॥५७३३॥

आरियविसयं विहरंताण के गुणा, अतो भण्णति –

समणगुणविदुऽत्थ जणो, सुलभो उवही सतंत अविरुद्धो ।
आयरियविसयम्मि गुणा, णाण-चरण-गच्छवुड्ढी य ॥५७३४॥

समणाण गुणा समणगुणा। के गुणा ?, मूलगुण-उत्तरगुणा। पंचमहव्वया मूलगुणा, उग्गमुप्पायणेसणा अट्ठारससीलंगसहस्साणि य उत्तरगुणा। "विद ज्ञाने" श्रमणगुणविदु ।

कश्चासौ ?, उच्यते – जनसुलभो उवधी ओहिओ उवग्गहिओ य ।

अस्मिन् तंत्रे – अविरुद्धो एसणिज्जो लब्भति, एवमादि गुणा आरिएसु। किं च णाणदंसण-चरित्ताण विद्धी, नास्ति व्याघातं, गच्छवुड्ढी य तत्थ पव्वज्जंति सिक्खापदाणि य गिण्हंति ॥५७३४॥

इमं च आरिए जणे भवति –

जम्मण-णिक्खमणेसु य, तित्थकराणं करेंति महिमाओ ।
भवणवति-वाणमंतर- जोतिस-वेमाणिया देवा ॥५७३५॥

तं दट्ठुं भव्वा विबुज्झंति थुव्वयंति य, चिरपव्वइया वि थिरतरा भवंति ॥५७३५॥

तित्थकरा इमं धर्मोपदेशादिकं आरिए जणे करेंति –

उप्पण्णे णाणवरे, तम्मि अणंते पहीणकम्माणो ।
तो उवदिसंति धम्मं, जगजीवहियाय तित्थगरा ॥५७३६॥

इमो समोसरणातिसओ –

लोगच्छेरयभूयं, उप्पयणं निवयणं च देवाण ।
संसयवागरणाणि य, पुच्छंति तहिं जिणवरिंदे ॥५७३७॥

सण्णी बहू जुगवं संसए पुच्छंति, तेसिं चेव जिणो जुगवं चेव वागरणं करेति, तेहिं आरियजणवए जिणवरिंदे पुच्छंति ॥५७३७॥

एत्थ किर सन्नि सावग, जाणंति अभिग्गहे सुविहिताणं ।
एएहिं कारणेहिं, बहि गमणे होतऽणुग्घाता ॥५७३८॥

एत्थ किर आरियजणवए, "किर" त्ति परोक्खवयणं, अविरयसम्मद्दिट्ठी सण्णी गहियाणुव्वतो सावगो एते जाणंति "अभिग्गहे" त्ति आहारोवधिसेज्जागहणविहाणं, तं जाणता तहा देंति। अहवा – अभिग्गहो दव्वखेत्तकालभावेहिं तं जाणंता तहेव पडिपूरेंति। जम्हा एते गुणा आरियजणवए तम्हा "बहिं" ति अणारियविसयं गच्छंताण चउगुरुगा ॥५७३८॥

चोदगाह –

सुत्तस्स विसंवादो, सुत्तनिवातो इहं तु संकप्पे ।
चत्तारि छच्च लहुगुरु, मद्दाणं चेव आवण्णे ॥५७३९॥

इह सोलसमुद्देसगे चउलहुगाऽधिकारो – तुम च अणारियविसयसकमे चउगुरु देसि, अतो सुत्तविसवातो।

आयरिओ भणइ – तुम सुत्तणिवात ण याणसि। इह सुत्तणिवातो मणसकप्पे चउलहु, पदभेदे चउगुरु, पथमोइण्णेसु छल्लहु, अणारियविसयपत्तेसु छग्गुरु, सजमायविराहणाए मट्ठाण। तत्थ सजमविराहणाए "छक्काय चउसु लहु" गाहा भावणिज्जा। आयविराहणाए चउगुरुग परितावणाई वा ॥५७३९॥

आणादिणो य दोसा, विराहणा खंदएण दिट्ठंतो।
एवं ततियविरोहो, पडुच्चकालं तु पण्णवणा ॥५७४०॥

आयविराहणाए खदगो दिट्ठतो –

दोच्चेण आगतो खंदएण वाए पराजिओ कुवितो।
खंदगदिक्खा पुच्छा णिवारणाऽऽराध तव्वज्जा ॥५७४१॥

चपा णाम णगरी, तत्थ खदगो राया। तस्स भगिणी पुरदरजसा उत्तरापथे कुभाकारकडे णगरे डडगिस्स रण्णो दिण्णा।

तस्स पुरोहिओ मरुगो पालगो, सो य अकिरियदिट्ठी। अण्णया सो दूओ आगतो चप। खदगस्स पुरतो जिणसाहुअवण्ण करेति। खदगेण वादे जिओ, कुविओ, गओ स-णगर। खदगस्स वह चिंतेंतो अच्छइ।

खदगो वि पुत्त रज्जे ठवित्ता मुणिसुव्वयसामिअंतिए पचसयपरिवारो पव्वतितो अधीयसुयस्स गच्छो अणुण्णाओ।

अण्णया भगिणी दिच्छामि त्ति जिण पुच्छति। सोवस्सग्ग से कहिय।

पुणो पुच्छति – "आराहगो ण व?" त्ति।

कहिय जिणेण – तुम मोत्तु आराहगा सेसा। गतो णिवारिज्जतोऽवि ॥५७४१॥

सुतो पालगेण आगच्छमाणो –

उज्जाणाऽऽउह णूमेण, णिवकहणं कोव जंतयं पुव्वं।
बंध चिरिक्क णिदाणे, कंबलदाणे रजोहरणं ॥५७४२॥

पालगेण अग्गुज्जाणे पचसया आयुहाण ठविया। साहवो आगया तत्थ ठिता। पुरदरजसा दिट्ठा, खदगो कबलरयणेन पडिलाभितो। तत्थ णिसिज्जाओ कयाओ।

पालगेण राया वुग्गाहितो। एस परिसहपराजिओ आगओ तुम मारेउं रज्ज अहिट्ठेहेति।

कह णज्जति?, आयुधा दसिया।

कुविओ राया, पालगो भणितो – मारेहि त्ति। तेण इक्खुजत कय।

खदगेण भणिय – 'म पुव्व मारेहि।' जतसमीवे खभे बधिउ ठविओ, साहु पीलिउ रुहिरचिरिक्काहिं खदगो भरितो। खुड्डगो आयरिय विलवतो, सो वि आराहगो। खदगेण णियाण कत ॥५७४२॥

अग्गिकुमारुववातो, चिंता देवीए चिण्ह रयहरणं।
खिज्जण सपरिसदिक्खा, जिण साहर वात डाहो य ॥५७४३॥

अग्गिकुमारेसु उववण्णो।

पुरंदरजसाए देवीए चिंता उप्पण्णा वट्टति "साधुणो पाणगपढमालियाणिमित्त णागच्छति किं होज्ज"? एत्थंतरे खदगेण "सण्ण" त्ति – सकुलिकारूव काउं रयहरण रुहिरालित्त पुरंदरजसा-पुरतो पाडिय, दिट्ठ, सहसा अक्कंद करेंती उट्ठिया, भणिओ राया – पाव! विणट्ठो सि विणट्ठो सि।

सा तेण खदगेण सपरिवारा मुणिसुव्वयस्स समीवं णीया दिक्खिया। खदगेण सव्वट्ट गवाय विउव्वित्ता रायाण सबलवाहण पुर च स कोहाविट्ठो बारसजोयण खेत्त णिड्डहति। अज्ज वि डडगारण्ण ति भण्णति ॥५७४३॥

जम्हा एवमादी दोसा तम्हा आरियातो अणारिय ण गतव्व।

चोदगाह – "[1]एव ततियविरोहो त्ति – एव वक्खाणिज्जते ज गाहासुत्ते ततियभगो अणुण्णाओ, त विरुज्झति।

जइ अणारिएसु गमो णत्थि धम्मो वा, तो भिक्खुस्स अणारियाओ आरिएसु आगमो कह?,

आयरिओ भणइ – [2]सुत्ते पणीयणकाल पडुच्च पढमभगा। ततियभगो पुण आगओ सामियसुत्तत्थेण सपइरायकुल पडुच्च पण्णविज्जति।

एत्थ सपइस्स उप्पत्ती –

कोसंबाऽऽहारकए, अज्जसुहत्थीण दमगपव्वज्जा।
अव्वत्तेणं सामाइएण रण्णो घरे जातो ॥५७४४॥

कोसंबीए णगरीए अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य दोवि समोसढा। तया य [3]अबीयकाले साधूजणो य हिंडमाणो फव्वति।

तत्थ एगेण दमएण ते दिट्ठा। ताहे सो भत्त जायति।

तेहि भणियं – अम्ह आयरिया जाणति।

ताहे सो आगओ आयरियसगास। आयरिया उवउत्ता, तेहि णात –"एस पवयणउवग्गहे वट्टिहिति" त्ति। ताहे भणिओ – जति पव्वयसि तो दिज्ज भत्त।

सो भणइ – पव्वयामि त्ति। ताहे आहारकते सो दमगो पव्वावितो। सामाइय से कय, ते अतिसमुद्दिट्ठो। सो य तेण कालगओ। सो य तस्स अव्वत्तसामाइयस्स भावेण कुणालकुमा-रस्स अधस्स रण्णो पुत्तो जातो।

को कुणालो? कह वा अधो? त्ति –

पाडलिपुत्ते असोगसिरी राया, तस्स पुत्तो कुणालो। तस्स कुमारस्स भुत्ती उज्जेणी दिण्णा। सो य अट्ठवरिसो, रण्णा लेहो विसज्जितो – शीघ्रमधीयता कुमार। असवत्तियलेहे रण्णो उट्ठितस्स माइसवत्तीए कत "अधीयता कुमार"। सयमेव तत्तसलागाए अच्छी अजिया। सुत रण्णा। गामो

१ गा० ५७४०। २ रयणा इत्यपि पाठ। ३ अचियकालो इति बृहत्कल्प भाष्य चूर्णौ गा० ३२७६।

मे दिण्णो। गधव्वकलासिक्खण। पुत्तस्स रज्जत्थी आगओ पाडलिपुत्त। असोगसिरिणो जवणियत-रितो गधव्व करेति, आउट्टो राया, मग्गसु ज ते अभिच्छित ॥५७४४॥

तेण भणिय –

चंदगुत्तपपुत्तो य, बिंदुसारस्स णत्तुओ।
असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणिं ॥५७४५॥

उवउत्तो राया, णातो कि ते अधस्स कागिणीए ? कागिणी=रज्ज।

तेण भणिय – पुत्तस्स मे कज्ज। सपति पुत्तो वि त्ति। आणेहि त पेच्छामो, आणिओ, सवड्ढिओ, दिण्ण रज्ज। सव्वे पच्चता विसया तेण उयविया विक्कतो रज्ज भुजइ ॥५७४५॥

अण्णया –

अज्जसुहत्थाऽऽगमण, दट्ठु सरणं च पुच्छणा कहणं।
पावयणम्मि य भत्ती, तो जाया संपतीरण्णो ॥५७४६॥

उज्जेणीए समोसरणे अणुजाणे रहपुरतो रायगणे बहुसिस्सपरिवारो आलोयणठितेण रण्णा अज्जसुहत्थी आलोइओ, न दट्ठूण जाती सभरिया, आगतो गुरुसमीव।

धम्म सोउ पुच्छति – अह भे कहि चि दिट्ठपुव्वो ?, पुच्छति य – इमस्स धम्मस्स कि फल ?, गुरुणाऽभिहित सग्गो मोक्खो वा।

पुणो पुच्छइ – इमस्स सामाइयस्स कि फल ?,

गुरू भणइ – अव्वत्तस्स सामाइयस्स रज्ज फल। सो सभतो भणाति सच्च।

ताहे सुहत्थी उवउज्जिऊण भणति – "दिट्ठिल्लओ त्ति।" सव्व से परिकहिय। ताहे सो पवयणभत्तो परमसावगो जातो ॥५७४६॥

जवमज्झ मुरियवंसो, दारे वणि-विवणि दाणसंभोगो।
तसपाणपडिक्कमओ, पभावओ समणसघस्स ॥५७४७॥

चदगुत्तातो बिदुसारो महततरो, ततो असोगसिरी महततरो, ततो सपती सव्वमहतो, ततो हाणी, एव मुरियवसो जवागारो, मज्झे सपइ – आसो।

"दारे" त्ति अस्य व्याख्या –

उदरियमओ चउसुवि, दारेसु महाणसे स कारेति।
णिताऽऽणिते भोयण, पुच्छा सेसे अभुत्ते य ॥५७४८॥

पुव्वभवे ओदरिओ त्ति पिडोलगो आसि, त सभरित्ता णगरस्स चउसु वि दारेसु सत्तकारमहाणसे कारवेति, णितो पविसतो वा जो इच्छइ सो सव्वो भुजति, ज सेस उव्वरति त महाणसियाण आभवति।

---

१ गा० ५७४७।

ताहे राया ते महाणसिए पुच्छति – ज सेस तेण तुब्भे किं करेह ?,
ते भणति – घरे उवउज्जति ।।५७४६।।

ताहे राया भणति – ज सेस – अभुत्त त तुब्भे –

साहूण देह एयं, अह भे दाहेमि तत्तिय मोल्लं ।
णेच्छंति घरे घेत्तुं, समणा मम रायपिंडो त्ति ।।५७४६।।

एव महाणसिता भणिता देति साधूण ।

"[1]वणि-विवणि-दाणि" त्ति अस्य व्याख्या –

एमेव तेल्ल-गोलिय,-पूवीय-मोरंड दूसिए चेव ।
जं देह तस्स मोल्लं, दलामि पुच्छा य महगिरिणो ।।५७५०।।

वणित्ति – जे णिच्चट्ठिता ववहरति, "विवणी" त्ति-जे विणा आवणेण उब्भट्टिता वाणिज्ज करेंति ।

अहवा – विवणि त्ति अवाणियगा ।

रण्णा भणिया – तेल्लविक्किण्णा साधूण तेल्ल देज्जह, अह भे मोल्ल दाहामि । एव "गो (कु) लिय त्ति" महियविक्कया, पूवलिकादि पूविगा, तिलमोदगा मोरडविक्कया, वत्थाणि य दोसिया । पच्छद्ध कठ ।

"[2]सभोगो" त्ति एव पभूते किमिच्छए लब्भमाणे महागिरी अज्जसुहत्थी पुच्छति – अज्जो ! जाणसु, मा अणेसणा होज्जा ।।५७५०।।

ताहे –

अज्जसुहत्थि ममत्ते, अणुरायाधम्मतो जणो देति ।
संभोग वीसुकरणं, तक्खण आउंटण-णियत्ती ।।५७५१।।

अज्जसुहत्थी जाणतो वि अणेसण अप्पणो सीसममत्तेण भणइ – अणुराया धम्माओ जणो ..त त्ति – रायाणमणुवत्तए जणो, जहा राया भद्दओ तहा जणो वि, राजानुवर्तितो धर्मश्च भविष्यतीत्यतो जनो ददाति" । एव भणतो महागिरिणा अज्जसुहत्थीण सह सभोगो वीसु कओ, विसभोगकरणमित्यर्थ ।

ताहे अज्जसुहत्थी चितेइ – 'मए अणेसणा भुत्त" त्ति, तक्खणमेव आउट्टो समुत्तो, अकप्पसेवणाओ य णियत्ती ।।५७५१।।

सो रायाऽवंतिवती, समणाणं सावओ सुविहियाणं ।
पच्चंतियरायाणो, सव्वे सद्दाविता तेणं ।।५७५२।। कठ

अवतीजणवए उज्जेणीणगरी –

कहितो तेसिं धम्मो, वित्थरतो गाहिता च सम्मत्तं ।
अप्पाहियाय बहुसो, समणाणं सावगा होइ ।।५७५३।। कठ

---

१ गा० ५७४७ । २ गा० ५७४७ ।

अणुयाणे अणुयाती, पुप्फारुहणाइ उक्खिरणगाइं ।
पूयं च चेतियाणं, ते वि सरज्जेसु कारेंति ॥५७५४॥

अणजाण रहजत्ता, तेसु सो राया अणुजाणति, भडचडगसहितो रहेण सह हिंडति, रहेसु पुप्फारुहण करेति, रहग्गतो य विविधफले खज्जगे य कवड्डगवत्थमादी य उक्खिरणे करेति, अन्नेसिं च चेइयघरट्ठियाण चेइया पूय करेंति, ते वि रायाणो एव चेव सरज्जेसु कारावेंति ॥५७४७॥

इम च ते पच्चतियरायाणो भणति –

जति मं जाणह सामिं, समणाणं पणमधा सुविहियाणं ।
दव्वेण मे ण कज्जं, एयं खु पियं कुणह मज्झं ॥५७५५॥

गच्छह सरज्जेसु, एव करेह त्ति ॥५७५५॥

वीसज्जिता य तेणं, गमणं घोमावणं सरज्जेसु ।
साहूण सुहविहारा, जाया पच्चंतिया देसा ॥५७५६॥

तेण सपइणा रण्णा विसज्जिता, सरज्जाणि गतु अमाघात घोसति, चेइयघरे य करति, रहजाणे य । अधदमिलकुडक्कमरहट्ठता एते पच्चतिया, सपतिकालातो आरब्भ सुहविहारा जाता ।

सपतिणा साधू भणिया – गच्छह एते पच्चतियविसए, विबोहेना हिंडह ।

ततो साधूहिं भणिय – एते ण किंचि साधूण कप्पाकप्प एसण वा जाणति, कह विहरामो ? ॥५७५६॥

ताहे तेण सपतिणा –

समणभडभावितेसुं, तेसुं रज्जेसु एसणादीहिं ।
साहू सुह पविहरिता, तेणं चिय भद्दगा ते उ ॥५७५७॥

समणवेसधारी भडा विसज्जिया बहू, ते जहा साधूण कप्पाकप्प तहा तं दरिसतेहि एसणसुद्ध च भिक्खग्गहण करेतेहिं जाहे सो जणो भावितो ताहे साधू पविट्ठा, तेसिं सुहविहार जात, ते य भद्दया तप्पभिई जाया ॥५७५७॥

उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो, स पत्थिवो णिज्जितसत्तुसेणो ।
समंततो साहुसुहप्पयारे, अकासि अंधे दमिले य घोरे ॥५७५८॥

उदिण्णा सजायबला, के ते ?, जोहा, तेहिं आउलो–बहवस्ते इत्यर्थ । तेण उदिण्णाउलत्तेण सिद्धा सेणा जस्स सो उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो । उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणत्तणतो चेव विपक्खभूता सत्तुसेणा ते निज्जिया जेण स पत्थिवो णिज्जियसत्तुसेणो सो अंधडविडाईसु अकासि कृतवान् सुहविहारमित्यर्थ ॥५७५८॥

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२८।।

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु वसहिं पडिग्गाहेइ. पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।२९।।

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु सज्झायं उद्दिसइ, उद्दिसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३०।।

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु सज्झायं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३१।।

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।३२।।

चउलहु, तेसि इमो भेदो सरूवं च –

दुविहा दुगुंछिया खलु, इत्तरिया होंति आवकहिया य ।
एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ।।५७५९।।

'इत्तिरिय" त्ति –

सूयगमतगकुलाइं, इत्तरिया जे य होंति निज्जूढा ।
जे जत्थ जुंगिता खलु, ते होंति य आवकहिया तु ।।५७६०।

इत्तरियत्ति सुत्तणिज्जूढा – जे ठप्पा कया । सलागपडिय त्ति आवकहिगा, जे जत्थविसए जात्यादि-जुगिता जहा दक्खिणावहे लोहकारकल्लाला,लाडेसु णडवरुडचम्मकारादि । एते आवकहिया ।।५७६०।।

इमे य दोसा –

तेसु असणवत्थादी, वसही वा अहव वायणादीणि ।
जे भिक्खू गेण्हेज्जा, विसेज्ज कुज्जा व आणादी ।।५७६१।।

असणवत्थादियाण गहणं, वसहीए वा विसेज्ज पविसति, वायणादिसज्झाय कुज्जा, तस्स आणादिया दोसा ।।५७६१।।

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तहेव कुच्छा य ।
तेसिं वि होति संका, सव्वे एयारिसा मण्णे ।।५७६२।।

सवसाधवो नीचेत्यादि अयस , अभोज्जसपक्कं न कश्चित् प्रव्रजतीति एव परिहाणी, अभोज्जेसु भक्तादिग्गहणं दृष्ट्वा धर्माभिमुखा पूवप्रतिपन्नगा वा विपरिणमते, श्वपाकादिसमाना इति जुगुप्सा, जेसु वि गेण्हइ तेसि वि सका – सव्वे एयलिंगधारिणो एते "एतारिस" त्ति अम्हे सरिसा ।।५७६२।।

इमो अववादो –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, अयाणमाणे वि वितियपदं ।।५७६३।।

एतेहिं असिवादिएहिं कारणेहिं जया घेप्पति तदा पणगपरिहाणीए ।।५७६३।।

जाहे चउलहु पत्तो ताहे इमाए जयणाए गेण्हति –

अण्णत्थ ठवावेउं, लिंगविवेगं च काउ पविसेज्जा ।
काऊण व उवयोगं, अदिट्ठे मत्ताति संवरितो ।।५७६४।।

सो दुगुंछितो असणवत्थादी अप्पसागारिय अण्णत्थ सुण्णघरादिसु ठवाविज्जति, तम्मि गते पच्छा गेण्हति । अहवा – रओहरणादिउवकरण अण्णत्थ ठवेतु सरक्खादिपरलिंग काउ जहा अयमादिदोसा ण भवति तहा पविसिउ गेण्हति । अहवा – मज्झण्हादी विअणकाले दिगावलोयण काउ अण्णेण अदिस्सतो मत्तय पत्त वा वासकप्पमादिणा सुट्ठु आवरेत्ता पविसति गेण्हइ य, वत्थादियं पि जहा अविसुद्ध तहा गेण्हति, वसहिं अण्णत्थ अलभन्तो बाहिं सावयतेणभएसु वसहिं गेण्हेज्ज, जहा ण णज्जति तहा वसति । सज्झाय ण करेति । रायदुट्ठादिसु अभिगमो अप्पसागारिए सज्झायझाणधम्मकहादी वि करेज्ज ।।५७६४।।

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढवीए णिक्खिवइ,
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ।।३३।।

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा संथारए णिक्खिवइ,
णिक्खिवतं वा सातिज्जति ।।३४।।

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वेहासे णिक्खिवइ
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ।।३५।।

पुढवि-तण-वत्थमातिसु, संथारे तह य होइ वेहासे ।
जे भिक्खू णिक्खिवती, सो पावति आणमादीणि ।।५७६५।।

पुढविग्गहणातो उव्वट्टगादिभेदा दट्ठव्वा, दब्भादितणसथारए वा, वत्थे, वत्थसथारए वा, कबलादिफलहसथारए वा, वेहासे वा दोरगेण उल्लबेइ, एवमादिपगाराण अण्णयरेण जो णिक्खिवइ तस्स चउलहु, तस्स आणादिया य दोसा सजमायविराहणा य ।।५७६५।।

तत्थ सजमे –

तक्कंतपरोप्परओ, पलोट्टछिण्णे य भेद कायवहो ।
अहि-मूसलाल-विच्छुय, संचयदोसा पसंगो वा ।।५७६६।।

सुण्णे भत्तपाणे चउरिंदियाओ घरकोइलातो तक्केंति, त पि मज्जारा, एव तक्केंतपरप्परो डेप्पत वातादिवसेण वा पलोट्टति छक्कायविराहणा, आयपरिहाणी य वेहासट्ठित मूसगादिछिण्णे भायणभेदो छक्कायवहो वा आयपरिहाणी य । एसा सजमविराहणा ।

इमा आयविराहणा –

अहिस्स मूसगस्स वा उस्सिघमाणस्स लाला पडेज, णीससतो वा विस मुचेज, विच्छुगाइ वा पडेज, विस वा मुचेज, जे वा सण्णिहिसचए दोसा तत्थ वि णिक्खित्ते ते चेव दोसा, पसगतो सण्णिहि पि ट्ठवेज्जा ।।५७६६।।

किं च जो भत्तपाण णिक्खिवइ –

सो समणसुविहियाणं, कप्पाओ अविचितो ति णायव्वो ।
दसरातम्मि य पुण्णे, सो उवही उवहतो होति ॥५७६७॥

समणकप्पो तम्मि अवगओ अपगत समणकप्पातो वा अवचिओ, एव णिक्खेवतस्स दसराते गते जम्मि पादे ज भत्तादि णिक्खिवइ त उवहत होइ, जो य उवही णिक्खित्ता अच्छइ दसगइ अपडिलेहिउ सोवि उवहतो भवति ॥५७६७॥

ओबद्धपीढफलयं, तु भजय ठविय भत्तपाणं तु ।
सुविहियकप्पावचितं, सेयत्थि विवज्जए साहू ॥५७६८॥

सथारगादियाण बधे जो पक्खस्स ण मुचति सो बद्धो णिक्खित्तभत्तपाणा य जो सो सुविहियकप्पातो अवगता, जो सेयत्थी साधू तेण वज्जेयव्वो, ण तेण सह सभोगो कायव्वो ॥५७६८॥

इमो अववाओ –

वितियपय गेलण्णे, रोहग अद्धाण उत्तिमट्ठे वा ।
एतेहि कारणेहिं, जयणाए णिक्खिवे भिक्खू ॥५७६९॥

गिलाणकज्जवावडो णिक्खिवति, रोहगे वा सकुडवसहीए वेहासे करेति, अद्धाणे वा सागारिए भुजमाणो उत्तिमट्ठपवण्णस्स वा करणिज्ज करेंतो णिक्खिवति ॥५७६९॥

एवमादिकारणेहि णिक्खिवतो इमाए जयणाए णिक्खिवति –

दूरगमणे णिसिं वा, वेहासे इहरहा तु संथारे ।
भूमीए ठवेज्ज व ण, घणबंध अभिक्ख उवओगो ॥५७७०॥

दूर गतुकामो णिसिं वा ज परिवासिज्जति त वेहासे दारगेण णिक्खिवति "इहरह" त्ति आसण्णे गतुकामो आसण्णे वा किंचि लोयमादिकाउकामो तत्थ सथारे भूमीए वा ठवेति, वकारो विगप्पे, णकारो पादपूरण । त पि ठवेतो घण चीरेण बधइ, पिपीलिगभया छगणादीहिं वा लिपइ, अभिक्खण च उवयोग करेति ॥५७७०॥

जे भिक्खू अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥३६॥
जे भिक्खू अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं आवेढिय परिवेढिय भुजइ, भुजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

अण्णउत्थिया तच्चन्नियादि बभणा, खत्तिया गारत्था, तेहिं सद्धिं एगभायणे भोयण एगदु-तिदिसि-ट्ठितेसु आवेढिउ, सव्वदिसिट्ठितेसु परिवेढिउ, अहवा – आङ् मर्यादया वेष्टित । दिसिविदिसासु विच्छिण्ण ट्ठितेसु परिवेष्टित । अहवा – एगपतीए समता ठिएसु आवेष्टित, दुगातिसु पतीसु समता परिट्ठियासु परिवेष्टित ।

गिहि अण्णतित्थिएहि व, सद्धिं परिवेढीए व तम्मज्झे
जे भिक्खू असणादी, भुंजेज्जा आणमादीणि ॥५७७१॥

अण्णउत्थिएहिं समं भुंजति अण्णउत्थियाण वा मज्झे ठितो परिवेढितो भुंजति, आणादिया दोसा, ओहओ चउलहुं पच्छित्तं ॥५७७१॥

विभागतो इमं –

पुव्वं पच्छा संथुय, असोयवाई य सोयवादी य ।
लहुगा चउ जमलपदे, चरिमपदे दोहि वी गुरुगा ॥५७७२॥

पुव्वसंथुया असोय-सोयवाति य, पच्छासंथुया असोय-सोय त्ति । एतेसु चउसु पदेसु लहुगा चउगो त्ति, जमलपदं वि कालतवेहिं विसेसिज्जं ति जाव चरिमपदं । पच्छासंथुतो सोयवादी तत्थ चउलहुगं तं कालतवेहिं दोहिं वि गुरुगं भवति ॥५७७२॥

थीसुं ते च्चिय गुरुगा, छल्लहुगा होंति अण्णतित्थीसु ।
परउत्थिणि छग्गुरुगा, पुव्वावरसमणि सत्तऽट्ठ ॥५७७३॥

एयासु चेव इत्थीसु पुरपच्छअसोयसोयासु चउगुरुगा कालतवेहिं विसेसिता । एतेसु चेव अण्णतित्थियपुरिसेसु चउसु छल्लहुगा कालतवविसिट्ठा । एयासु चेव परतित्थिणीसु छग्गुरुगा । पुव्वसंथुयासु समणीसु छेदो, अवर त्ति पच्छसंथुयासु समणीसु अट्ठमं ति मूलं ॥५७७३॥

अयमपर कल्प –

अहवा वि णालबद्धे, अणुव्वओवासए व चउलहुगा ।
एयासु चिय थीसुं, णालसम्मे य चउगुरुगा ॥५७७४॥

णालबद्धेण पुरिसेण अणालबद्धेण य गहिताणुव्वतो वा सावगेण, एतेसु दोसु वि चउलहुगा । एयासु चिय दोसु इत्थीसु णालबद्धे य अविरयसम्मद्दिट्ठिम्मि एतेसु वि चउगुरुगा ॥५७७४॥

अणालदंसणित्थिसु, छल्लहु पुरिसे य दिट्ठआभट्ठे ।
दिट्ठित्थि पुम अदिट्ठे, मेहुणि भोती य छग्गुरुगा ॥५७७५॥

इत्थीसु अणालबद्धासु अविरयसम्मद्दिट्ठीसु दिट्ठाभट्ठेसु पुरिसेसु एतेसु दोसु वि छल्लहुगा, इत्थीसु दिट्ठाभट्ठासु पुरिसेसु य अदिट्ठाभट्ठेसु [1]मेहुणि त्ति माउलपिउस्सयधाता, भोइय त्ति पुव्वभज्जा, एतेसु चउसु वि छग्गुरुगा ॥५७७५॥

अद्दिट्ठाभट्ठासु थीसुं संभोगसंजती छेदो ।
अमणुण्णसंजतीए मूलं थीफाससबधो ॥५७७६॥

इत्थीसु अद्दिट्ठाभट्ठासु संभोइयसंजतीसु य एयासु दोसु वि छेओ, अमणुण्ण त्ति असंभोइय-संजतीसु मूलं, इत्थीहिं सह भुंजतस्स फासे संबधो, आयपरोभयदोसा, दिट्ठे सकातिया य दोसा, जति संजतिसंतितो समुद्देसो तो चउलहुं अधिकरणं वा ॥५७७६॥

पुव्वं पच्छाकम्मे, एगतरदुगुंछ उड्डुमुड्डाहो ।
अण्णोण्णामयगहणं खद्धग्गहणे य अचियत्तं ॥५७७७॥

१ मेहुणि मामाकी तथा भूआ की लडकी तथा साली (पत्नी की बहिन) ।

पुरेकम्म सजतेण सह भोयव्व हत्थपादादिसुइ करेइ, सजतो भुजिस्सइ त्ति अधिकतर रधावेति। पच्छाकम्म "कोवि एसो" त्ति सचलण्हाण करेज्ज, पच्छित्त वा पडिवज्जेज्ज, सजतेण वा भुत्ते अपहुप्पते अण्ण पि रधिज्जा, सजतो गिही वा ण्गतरो जुगुछ करेज्ज, विलिगभावेण वा उड्ड करेज्जा, अण्णेण दिट्ठे उड्डाहो भवति, कामादिरोगो वा सकमेज्ज, अधिकतरखद्धण वा अचियत्त भवेज्ज ॥५७७७॥

एव तु भुजमाण, तेहि सद्धि तु वण्णिता दोसा ।
परिवारितमज्झगते, भुज्जंते लहुग दोस इमे ॥५७७८॥

परिवारितो जति भुजइ तो चउलहु ॥५७७८॥

इमे य दोसा –

परिवारियमज्झगते, भुंजंते सव्व होंति चउलहुगा ।
गिहिमत्तचड्डगादिसु, कुरुकुयदोसा य उड्डाहो ॥५७७९॥

मज्झे ठितो जणस्स परिवारिओ जइ भुजइ, अहवा—समता परिवारिओ दोण्ह तिण्ह वा जइ मज्झगओ भुजइ, सव्वप्पगारेहि चउलहु, गिहिभायणे य ण भुजियव्व तत्थ भुजतो आयाराओ भस्सइ।

"[1]कसेसु कसपाएसु" – सिलोगो।

मत्तगचड्डगादिसु य भुजतस्स उड्डाहो भवति, कजियदवेण य उड्डाहो, इयरेण आउक्कायविराहणा, बहुदवेण य कुरुकुयकरणेण उप्पिलावणादि दोसा, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा एतेहिं सद्धि परिवेढिएण वा ण भुजियव्व ॥५७७९॥

बितियपद मेहसाहारणे य गेलण्ण रायदुट्ठे य ।
आहार तेण अद्धाण रोहए भयलंभे तत्थेव ॥५७८०॥

पुव्वसथुतो पच्छासथुतो वा पुव्व एगभायणो आसी से तस्स णेहेण आगतो जति ण भुजति तो विपरिणमति, अतो मेहेण सम भुजति, परिवेढितोवि तेमागएसु मा एतेसि सका भविस्सति – "किं एस अप्पसागारिय समुद्दिसति त्ति अम्हे बाहिं करेंति" बाहिभाव गच्छे अतो परिवेढितो भुजति। साहारण वा लद्ध त ण चेव भुजियव्व, अह कक्खड ओम ताहे घेत्तु वीसु भुजति, अह दाया न देइ, ते वा न देंति, ताहे तेहिं चेव सद्धि परिवुडो वा भुजति।

गिलाणो वा वेज्जस्स पुरतो समुद्दिसेज्जा, जयणाए कुरुकुय करेज्जा।

रायदुट्ठे रायपुरिसेहिं णिज्जतो तेहिं परिवेढितो भुजेज्जा।

आहारतेणगेसु तेसिं पुरओ भुजेज्ज।

अद्धाणतेणसावयभया सत्थस्स मज्झेच्चेव भुजति।

रोहगे सव्वेसिं एक्का वसही होज्जा, बोहिगादिभए जणेण सह कदगाइसु अच्छति, तत्थ तेसि पुरतो समुद्दिसेज्ज।

ओमे कहिंचि सत्तागारे तत्थेव भुजताण लब्भति, भायणेसु ण लब्भति तत्थेव भुजेज्जा।

सागारिए एक्को परिवेसण करे चड्डगाइसु सतर सभुजति, णाउ दुविहदवेण कुरुकुय करेइ सव्वेसु जहासभव। एसा जयणा ॥५७८०॥

---

१ दशवै० अ० ६ गा० ५१।

जे भिक्खू आयरिय-उवज्झायाणं सेज्जासथारग पाएण संघट्टेत्ता हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता धारयमाणो गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्जइ।।सू०।।३८।।

आचार्य एव उपाध्याय आयरिय-उवज्झाओ भणति, केसिंचि आयरिओ केसिंचि आयरिअ-उवज्झातो। अहवा – जहा आयरियस्स तहा उवज्झायस्स वि न सघट्टेज्जति। पातो सव्वाऽफरिसि त्ति अविणतो। हत्थेण अणणुण्णवति – न हस्तेन स्पृष्ट्वा नमस्कारयति मिथ्यादुष्कृत च न भाषते, तस्स चउलहु।

सेज्जासथारग्गहणातो इमे वि गहिया—

आहार उवहि देह, गुरुणो संघट्टियाण पादेहि।
जे भिक्खु ण खामेति, सो पावति आणमादीणि ।।५७८१।।

आहारे त्ति – जत्थ मत्तगे भत्त धारित, उवहि त्ति – कप्पादी, सेस कठ ।।५७८१।।

कह पुण सघट्टेति?, भणति—

पविसंते णिक्खमंते, य चंकमंते व वावरंते वा।
चेट्ठणिवण्णाऽऽउंटण, पसारयंते व संघट्टे ।।५७८२।।

पथे वा चकमतो विस्सामणादिवावार करेंता, सेस कठ ।।५७८२।।

चोदगाह—"जुत्त आहारउवधिदेहस्स य अघट्टण। सथारगभूमी किं ण सघट्टिज्जति? को वा उवकरणातिसघट्टिएसु दोसो?,

आचार्य आह –

कमरेणु अबहुमाणो, अविणय परितावणा य हत्थादी।
संथारग्गहणमआ, उच्छुवणस्सेव वति रक्खा ।।५७८३।।

कमेसु त्ति पदेसु जा रेणू सा सथारगभूमीए परिसडति, उवकरणे वा लग्गति, अबहुमाणो अविणओ य सघट्टिए कओ, अण्ण च उच्छूवणे रक्खियव्वे वतिं रक्खति – ण भजण देति, तस्स रक्खणे उच्छुवण रक्खित चेव, एव सथारगस्स असघट्टणे गुरुस्स देहातिया दूरातो चेव परिहरिता। सजमायविराहणा य, आयरिय च अवमण्णतेण सजमो विराहिओ।

कह? जेण तम्मि चेव णाणदसणचरित्ताणि अधीणाणि –

"[1]जे यावि मदे त्ति गुरु०" वृत्त।

आयविराहणा – जाए देवयाए आयरिया परिग्गहिता सा विराहेज्ज, अण्णो वा कोइ आयरिय पक्खितो साधू उट्ठेज्जा, तत्थ असखडादी दोसा ।।५७८३।।

बितियपदमणप्पज्झे, ण खमे अविकोविते व अप्पज्झे।
खित्तादोसण्णं वा, खामे आउट्टिया वा वि ।।५७८४।।

अणप्पज्झो सेहो वा अजाणतो ण खामेति, आयरिय वा खितादिचित्त सारवेंतो दित्तचित्त वा उवेक्ख सघट्टेज्जा, ओसण्ण वा "म एए ओसण्णमिति परिभवति" त्ति उज्जमेज्जा, एव आउट्टियाए वि सघट्टेज्जा पच्छा खामावेइ ।।५७८४।।

---

१ दसवै० अ० ९ गा० २।

जे भिक्खू पमाणाइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

गणणाए पमाणेण य, हीणतिरित्तं व जो धरेज्जाहि ।
ओहोवग्गह उवही, सो पावति आणमादीणि ॥५७८५॥

उवधी दुविहो – ओहोवही उवग्गहितो य । एक्केक्को तिविहो – जहण्णो मज्झिमो उक्कोसो य । तत्थ एक्केक्के गणणापमाण पमाणप्पमाण च, त हीण अधिक वा जो धरेति । तत्थ ओहओ – सुत्तभणिय चउलह । विभागतो – अण्णअत्थेण उवधिणिप्फण्ण भारभयपरितावणादी दोसा, जम्हा एते दोसा तम्हा ण हीणातिरित्त धरेयव्व ॥५७८५॥

जिण-थेराण गणणातिपमाणेण जाणणत्थ भण्णति –

दव्वप्पमाणगणणाइरेग परिकम्म विभूसणा य मुच्छा य ।
उवहिस्स य प्पमाण, जिणथेर अधक्कमं वोच्छ ॥५७८६॥

जिणथेराण इम पायणिज्जोगपमाण –

पत्तं पत्ताबंधो पायट्ठवण च पायकेसरिया ।
पडलाइ रयत्ताण, च गुच्छओ पायनिज्जोगो ॥५७८७॥ कण्ठ्या

इम जिणकप्पियाण सरीरोवहिप्पमाण –

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती ।
एमो दुवालस विहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥५७८८॥ कण्ठ्या

इम जहण्णमज्झिमुक्कोसाण कप्पाण य प्पमाण –

चत्तारि उ उक्कोसा, मज्झिमगा जहण्णगा वि चत्तारि ।
कप्पाणं तु पमाणं, संडासो दो य रयणीओ ॥५७८९॥

सडासो त्ति कुडडो, रयणि त्ति दो हत्था, एय दीहत्तणेण, वित्थरेण दिवड्ढ रयणि । अहवा – जिणकप्पियाण कप्पपरिमाण दीहत्तणेण सडासो वित्थारेण दोण्णि रयणीओ, एस आदेसो वक्खमाणो ॥५७८९॥

इम पत्तगबधस्स पमाणप्पमाण –

पत्ताबधपमाणं, भाणपमाणेण होइ कायव्वं ।
जह गंठिम्मि कयम्मी, कोणा चउरंगुला होंति ॥५७९०॥

ज च समचउरस तस्स जा बाहिरतो परिही तेण भायणप्पमाणेण पत्तगबधो कायव्वो, ज पुण विसम तस्स जा परिही महनतरी तेणप्पमाणेण पत्तगबधो कायव्वो, अहवा – गठीए कयाए जहा पत्तगबध कण्णा चउरगुला भवति – गठीए अतिरित्ता भवतीत्यथ ॥५७९०॥

इम रयताणस्स पमाणप्पमाण –

रयताणपमाण भाणपमाणेण होइ निप्फण्णं ।
पायाहिणं करतं, मज्झे चउरंगुलं कमइ ॥५७९१॥

मज्झि त्ति – मुहताओ मुहाओ जहा दो वि अता चउरगुल कमति एय रयताणप्पमाण ॥५७९१॥

अहवा – जिणकप्पियस्स कप्पप्पमाण इम –

अवरो वि य आएसो, संडासो सोत्थिए निवण्णे य ।
जं खंडियं दढं तं, छम्मासे दुब्बलं इयरं ॥५७९२॥

आदेसो त्ति – प्रकार । सडासो त्ति कप्पाण दीहप्पमाण, एय जाणुसडासगातो आढत्त पुते पडिच्छादेना जाव बध एय दीहत्तण । सोत्यिए त्ति – दो वि बोधव्वकण्णे दोहिं वि हत्थेहिं घेत्तु दो वि बाहुसीसे पावति ।

कह ? उच्यते – दाहिणेग वाम बाहुसीस, एव दोण्ह वि कलादीण हृदयपदेसे सोत्थियागारो भवति । एय कप्पाण बोधव्व ॥५७९२॥

एत्थ आएसेण इम कारण –

संडासछिड्डेण हिमाइ एति, गुत्ता अगुत्ता वि य तस्स सेज्जा ।
हत्थेहि तो गेण्हिय दो वि कण्णे, काऊण खंधे सुवई व झाई ॥५७९३॥

जिणकप्पियाण गुत्ता अगुना वा सेज्जा होज्जा, ताए सेज्जाए उक्कुडुअणिविट्ठस्स सडासछिड्डेसु अही हिमवातो वा आगच्छेज्ज, तस्स रक्खणट्ठाते, तेण कारणेण एस पाउरणविही, कप्पाण एय पमाण भणिय – "दो वि कण्णे" ति दो वि वत्थस्स कण्णे घेत्तु णिवण्णो णिसण्णो वा सुवति झायति वा । सो पुण उक्कुडुतो चेव अच्छइ प्रायो जग्गति य ।

केई भणति – उक्कुडुओ चेव णिद्दाइओ सुवइ ईसिमेत्त ततियजामे ।

सो पुण केरिस वत्थ गेण्हति ? ज "[1]खडिय" ति छिण्ण ज एक्कातो पासाउ, त च ज छम्मास धरति जहण्णेण त दढ गेण्हति, [2]"इयर" ति ज छम्मास ण धरति त दुब्बल ण गेण्हति ॥५७९३॥ एय गच्छणिग्गयाण पमाण गत ।

इदाणि गच्छवासीण प्रमाण प्रमाण-प्रमाण च भण्णत्ति –

कप्पा आतपमाणा, अड्ढाइज्जा उ वित्थडा हत्थे ।
एवं मज्झिम माण, उक्कोसं होंति चत्तारि ॥५७९४॥

उक्कोसेण चत्तारि हत्था दीहत्तणेण एय पमाण अणुग्गहत्थ थेराण भवति, पुहुत्ते वि छ अगुला समाधिया कज्जति ॥५७९४॥

मज्झिमुक्कोसएसु दोसु वि पमाणेसु इम कारण –

संकुचित तरुण आतप्पमाण सुवणे ण सीतसंफासो ।
दुहतो पेल्लण थेरे, अणुचिय पाणादिरक्खा य ॥५७९५॥

तरुणभिक्खू बलवतो, सो सकुचियपाओ सुवति, जेण कारणेण तस्स ण सीतस्पर्शो भवति तेण तस्स कप्पा आयप्पमाणा । जो पुण थेरो सो खीणबलो ण सक्केति सकुचियपादो सुविउ तेण तस्स अहियप्पमाणा

---

१ गा० ५७९२ । २ गा० ५७९२ ।

कप्पा कप्पति। "पेल्लण" ति अक्कमण "दुहओ" त्ति – सिरपादातेसु दोसु अ पासेसु एव तस्स सीत ण भवति। सेहस्स वि अगुच्चिए सुवणविहिम्मि एव चेव कप्पाण पमाण कज्जति। अवि य पाणदया कया भवति, न मडूकप्लुत्या वीडाती पविसतीनि ॥५७९५॥

इम पडलाण गणणप्पमाण –

तिविधम्मि कालछेदे, तिविवा पडलाओ होंति पादस्स।
गिम्ह-सिसिर-वासासु, उक्कोसा मज्झिम जहण्णा ॥५७९६॥

जे दढा ते उक्कोसा, दढदुब्बला मज्झिमा, दुब्बला जहण्णा, सेस कठ।

गिम्हासु तिण्णि पडला, चउरो हेमंति पंच वासासु।
उक्कोसगा उ एए, एत्तो पुण मज्झिमे वोच्छं ॥५७९७॥

गिम्हासु चउ पडला, पंच य हेमंति छच्च वासासु।
एए खलु मज्झिमा य, एत्तो उ जहन्नओ वुच्छं ॥५७९८॥

गिम्हासु पंच पडला, छप्पुण हेमति सत्त वासासु।
तिविहंमि कालछेए, पायावरणा भवे पडला ॥५७९९॥

तिन्नि वि गाहाओ कठाओ कायव्वाओ।

इम रयोहरण –

घणं मूले थिरं मज्झे, अग्गे मद्दवजुत्तयं।
एगगियं अझुसिरं, पोरायामं तिपासियं ॥५८००॥

हत्थग्गहपदेसे मूल भण्णति, तत्थ घण वेढिज्जति, मज्झति रयहरणपट्टगो सो य दढो, गब्भगो वा मज्झसो दढो, अग्गा दसाओ ताओ मद्दवाओ कायव्वाओ, एगगिय दुगादिखड न भवति, अज्झुसिर ति रोमबहुल न भवति, वेढिय अगुट्ठपव्वमेत्त तिभागे तज्जायदोरेण बद्ध तिपासिय ॥५८००॥

भण्णति –

अप्पोल्लं मिउपम्हं, पडिपुण्णं हत्थपूरिमं।
तिपरियल्लमणिस्सिट्ठं, रयहरणं धारए एगं ॥५८०१॥

अप्पोल्ल-अज्झुसिरमित्यर्थ, मृदुदश, पडिपुण्ण प्रमाणत बत्तीसगुल सह णिसेज्जाए, हत्थपूरिम-णिसेज्जाए तिपरियल वेढिज्जति, "अणिसह" ति उग्गहा अफिट्ट धरिज्जति ॥५८०१॥

उण्णिय उट्टियं वावि, कंबलं पायपुच्छणं।
रयणिप्पमाणमित्तं, कुज्जा पोरपरिग्गहं ॥५८०२॥

उण्णिय कबल उट्टियकबल वा पायपुछण भवति। रयणि त्ति हत्थो, तप्पमाणो पट्टगो ॥५८०२॥

संथारुत्तरपट्टो, अड्डाइज्जा य आयया हत्था ।
दोण्हपि य वित्थारो, हत्थो चउरंगुलं चेव ॥५८०३॥

उण्णिओ संथारपट्टगो, खोमिओ तप्पमाणो उत्तरपट्टगो, सेसं कंठ्यं ॥५८०३॥

इमो चोलपट्टगो –

दुगुणो चउग्गुणो वा, हत्थो चउरंस चोलपट्टो य ।
थेरजुवाणाणट्ठा, सण्हे थूलंमि य विभासा ॥५८०४॥

दढो जो सो दीहत्तणेण दो हत्था वित्थारेण हत्थो सो दुगुणो कतो समचउरंसो भवति, जो दढ-दुब्बलो सो दीहत्तणेण चउरो हत्था, सो वि चउगुणो कओ हत्थमेत्तो चउरंसो भवति, एगगुण ति गणणप्पमाणं, उण्णिया एगा णिसिज्जा पमाणप्पमाणेन हस्तप्रमाणा तप्पमाणा चेव तस्स अन्नो पच्छादणा खोमिया णिसेज्जा ॥५८०४॥

चउरंगुलं वितत्थी, एयं मुहणंतगस्स उ पमाणं ।
बीओवि य आएसो, मुहप्पमाणेण णिप्फन्नं ॥५८०५॥

बितियप्पमाणं विकण्णकोणगहिय णासिगमुहं पच्छादेति जहा किकाडियाए गंठी भवति ॥५८०५॥

गोच्छयपादट्ठवणं, पडिलेहणिया य होइ णायव्वा ।
तिण्हं पि उ प्पमाणं, वितत्थि चउरंगुलं चेव ॥५८०६॥ कंठ्या

जो वि दुवत्थ तिवत्थो, एगेण अचेलतो व संथरती ।
ण हु ते खिंसंति परं, सव्वेण वि तिण्णि घेत्तव्वा ॥५८०७॥

जिणकप्पियाण गहणं, थेरकप्पियाण परिभोगं प्रति, जो एगेण संथरति सो एगं गेण्हति परिभुंजति वा । जो दोहिं संथरति सो दो गेण्हति परिभुंजति वा, एवं ततिओ वि ।

जिणकप्पिओ वा अचेलो जो संथरति सो अचेलो चेव अच्छति, एस अभिग्गहविसेसो भणिओ । एतेण अभिग्गहविसेसट्ठिएण अधिकतरवत्थो ण हीलियव्वो ।

किं कारणं ? जम्हा जिणाण एसा आणा, सव्वेण वि तिण्णि कप्पा घेत्तव्वा ।
थेरकप्पियाण जइ अपाउएण संथरति तहावि तिण्णि कप्पा णियमा घेत्तव्वा ॥५८०७॥

कप्पाण इमो गुणो –

अप्पा असंथरंतो, निवारिओ होति तिहि उ वत्थेहिं ।
गिण्हति गुरू विदिण्णे पगासपडिलेहणे सत्त ॥५८०८॥

सीतादिणा असंथरतस्स तं असंथरणं वत्थपरिभोगेण णिवारितं भवति । ते य वत्थे गुरुणा आयरिएण दिण्णे गेण्हति, पगासपडिलेहण त्ति अचोरहरणिज्जे, उक्कोसेण सत्त गेण्हति ॥५८०८॥

इमं उस्सग्गतो, अववादियं च प्रमाणं –

तिण्णि कसिणे जहण्णे, पंच य दढदुब्बला य गेण्हेज्जा ।
सत्त य परिजुण्णाइं, एयं उक्कोसयं गहणं ॥५८०९॥

कमिग त्ति वण्णातो जुत्तप्पमाणा घगमसिणा, जेहिं सविया अतरितो न दीसइ तारिसा, जहण्णेण तिण्णि गेण्हति । पच दढदुब्बले, परिजुण्णे सत्ता गेण्हइ ॥५८०९॥

भिण्ण गणणाजुत्तं, पमाण-इंगाल-धूमपरिसुद्धं ।
उवहिं धारए भिक्खू, जो गणचिंतं न चितेइ ॥५८१०॥

भिण्ण ति ग्रदस सगल न भवति, गणणप्पमाणेण पमाणप्पमाणेण य जुत्त गेण्हइ । इगालो त्ति रागो, धूमो त्ति दोसा, तेहिं परिसुद्ध – न तेहिं परिभुजतीत्यथ ॥५८१०॥ जो सामण्णभिक्खू तस्सेय वत्थप्पमाण भणिय ।

जो पुण गणचितगो गणावच्छेदगादि तस्सिम पमाण –

गणचिंतगस्स एत्तो, उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य ।
सव्वो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महा (ज) णस्स ॥५८११॥

गणचितगो गणावच्छेइगो तस्स जहण्णमज्झिमुक्कोसो सव्वो वि ओहितो उवग्गहितो वा, महाजणो गच्छो ॥५८११॥

आलवणे विसुद्धे, दुगुणो तिगुणो चउगुणो वा वि ।
सव्वो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महाणस्स ॥५८१२॥

आलबति ज त आलबण, 'त' दुविध – दव्वे रज्जुमादी, भावे णाणादी । इह पुण भावे दुल्लभ-वत्थादिदेसे तत्थ जो गणचितगा सो दुगुण पडोयार तिगुण वा चउगुण वा, अहवा – जो अतिरित्तो ओहितो उवग्गहितो सव्वो गणचितगस्स परिग्गहो भवति, महाजणो त्ति गच्छो तस्स आवतिकाले उवग्गहकरो भविस्सइ ॥५८१२॥ गणणप्पमाणेत्ति गय ।

इदाणि अइरेगहीणे त्ति –

पेहा-ऽपेहकता दोसा, भारो अहिकरणमेव अतिरित्ते ।
एते हवंति दोसा, कज्जविवत्ती य हीणम्मि ॥५८१३॥

अतिरेग पडिलेहतस्स सुत्तादिपलिमथो, अपेहतस्स उवहिणिप्फण्ण, अपरिभोगे अनुपभोगत्वात् अधिकरण भवति, हीणे पुण कज्जविवत्ति विणासो भवति ॥५८१३॥ हीणाइरित्ते त्ति गय ।

इदाणि [1]परिकम्मणे त्ति –

परिकम्मणे चउभगो, कारण विही बितिओ कारणे अविही ।
णिक्कारणम्मि य विही, चउत्थो निक्कारणे अविही ॥५८१४॥
कारण अणुण्ण विहिणा, सुद्धो सेसेसु मासिया तिण्णि ।
तव-कालेहि विसिट्ठा, अते गुरुगा य दोहि पि ॥५८१५॥

सुद्धो कारणे विहीए एस पढमभगो, एत्थ अणुण्णे त्ति परिकम्मे त्ति सुद्धो त्ति ण पच्छित्त । सेसेसु तिसु भगेसु पत्तेय मासलहु । बितियभगे कालगुरु । ततियभगे तवगुरु । अतिल्लो चउत्थभगो तत्थ तवकालेहि

१ गा० ५७८६ ।

दोहिं वि गुरु । परिकम्मणति वा सिव्वणति वा एगट्ठ । एगसरा डडी उव्वट्टणि घग्गरसिव्वणि य एसा अविही, झसकटगदुसरिगा य विही ॥५८१५॥

इदाणिं "[1]विभूस" त्ति –

उदाहडा जे हरियाहडीए, परेहि धोतादिपदा उ वत्थे ।
भूसाणिमित्तं खलु ते करेंते, उग्घातिता वत्थ सवित्थरा उ ॥५८१६॥

"उदाहड" त्ति भणिया "[2]हरिया हडिया" सुत्ते । परेहिं ति तेणगेहिं जे धोताती पदा कता ते जति अप्पणा विभूमावडियाए करेति त जहा धोवति वा, रयति वा, घट्टेति वा, मट्ठ वा करेति, [3]विवरित्तरगेहि वा रयति तस्स चउलहु । सवित्थरग्गहणातो धोतादिपदे करेतस्स जा आयविराहणा तासु ज पच्छित्त त च भवति ॥५८१६॥

विभूस करेतस्स इमो अभिप्पाओ –

मलेण घत्थं बहुणा उ वत्थं, उज्झाइओ हं चिमिणा भवामि ।
हं तस्स धोवम्मि करेमि तत्ति, वरं ण जोगो मलिणाण जोगो ॥५८१७॥

मलिन वस्त्र तेन वाऽह विरूपो दृश्ये, यस्माद्विरूपोऽह दृश्ये तस्मात्तस्य वस्त्रस्य धौतव्ये "तत्ति" त्ति – जेण त धोव्वति गोमुत्तातिणा त उदाहरामि, "वर ण जोगो" त्ति – वर मे अवत्थगस्स कप्पति अच्छिउ, ण य मलिणेहिं वत्थेहिं सह सजोगो ॥५८१७॥ कारणे पुणो धोवतो सुद्धो ।

चोदगो भणाति – णणु धोवतस्स । "[4]विभूसा इत्थीससग्गी" सिलोगो ।

आयरिओ भणइ –

कामं विभूसा खलु लोभदोसो, तहावि त पाहुणतो ण दोसो ।
मा हीलणिज्जो इमिणा भविस्सं, पुव्विड्ढिमादी इय संजती वि ॥५८१८॥

काम चोदगाभिप्पायस्स अणुमयत्थे, खलु अवधारणे, जा एषा विभूसा – एस लोभ एवेत्यर्थ , तहावि त वत्थ "[5]सुविभूसित कारणे काऊण पाउरणे ण दोसो भवति ।

रायाइइड्ढिम जो इड्ढि विहाय पव्वइओ सो चिंतेति – "मा इमस्स अबुहजणस्स इहलोकपडिबद्धस्स इमेहिं मलिणवत्थेहिं हीलणिज्जो भविस्सामि त्ति । एम सावसत्तो जेण त तारिस विभूतिं परिच्चज्ज इम अवत्थ पत्तो [6]किमण्ण तवेण पाविहित्ति" त्ति, एव सजती वि हिंडइ अच्छति वा णिच्च पडरपडपाउआ ॥५८१८॥

ण तस्स वत्थादिसु कोइ संगो, रज्जं तणं चेव जहाय तेण ।
जो सो उवज्झाइय वत्थसंगो, त गारवा सो ण चएइ मोत्तु ॥५८१९॥

जो सो इड्ढिम पव्वतितो ण तस्स वत्थादिसु कोइ सगो त्ति वा बधण ति वा एगट्ठ । कह णज्जति जहा सगो णत्थि ?, उच्यते – जतो तेण रज्ज बहुगुण तृणमिव जढ । सेस कठ ॥५८१९॥ विभूसत्ति गय ।

---

१ गा० ५७८६ । २ बृहत्कल्पे सू० ४५ । ३ विचित्त ' इत्यपि पाठ । ४ दशवै० अ० ८ गा० ५७ । ५ सूईभूय इत्यपि पाठ । ६ किमणेण इत्यपि पाठ ।

इदाणिं [1]मुच्छ त्ति –

महद्धणे अप्पधणे व वत्थे, मुच्छिज्जती जो अविवित्तभावो ।
सइ पि नो भुंजइ मा हु झिज्झे, वारेति वण्णं कसिणा दुगा दो ।।५८२०।।

बहुमुल्ल अप्पमोल्ल वा अविवित्तभावो त्ति अविसुद्धभावो, अविवित्तो – लोहिल्लमित्यर्थ । त पहाणवत्थ ण सय भुजति, जो अण्ण वारेइ परिभुजत तस्स पच्छित्त "कसिणा दुगा दो" त्ति, कसिण त्ति सपुण्णा, दुगा दा चउरो – चउगुरुमित्यर्थ ।।५८२०।।

वत्थे इमाणि मुच्छाकारणाणि –

देसिल्लगं पम्हजय मणुण्णं, चिरायणं दाइ सिणेहतो वा ।
लब्भं च अण्ण पि इमप्पभावा, मुच्छिज्जती एव भिसं कुसत्तो ।।५८२१।।

देसिल्लग जहा पोड्रवधनक, पम्हजुग जहा पुग्वुढपावारगो सण्ह थूल सदेस-परदेस वा, मणस्स ज रुच्चइ त मणुण्ण, चिरायण आयरियपरपरागय, दाइति विकारार्थे जेण वा त दिण्ण तस्स सिणेहतो ण परिभुजति, इमेण वा अच्छतेण एयप्पभावाग्रो अण्ण पि लब्भामो एव मुच्छाए ण परिभुजति, एव त्ति एव "भिस" अत्यर्थं कुत्सित सत्त्व यस्य भवति स कुसत्वो अल्पसत्व इत्यथ, एव भिस कुसत्वा लोभ करोतीत्यथ ।।५८२१।। वत्थे त्ति गत ।

इदाणिं पाय भणामि, तस्स इमाणि दाराणि –

दव्वप्पमाणअतिरेग हीणदोसा तहेव अववादे ।
लक्खणमलक्खण तिविह उवहि वोच्चत्थ आणादी ।।५८२२।।
को पोरिसीए काले, आकर चाउल जहण्ण जयणाए ।
चोदग असती असिव, प्पमाणउवओग छेदण मुहे य ।।५८२३।।
पमाणाइरेगधरणे, चउरो मासा हवति उग्घाया ।
आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमा-ऽऽयाए ।।५८२४।।

द्रव्यपात्र, तस्य दुविध प्रमाण – गणणप्पमाण पमाणप्पमाण च । दुविहस्स वि पमाणस्स अतिरेगधरणे चउलहुगा । सेस कठच ।

गणणाते पमाणेण व, गणणाते मत्तओ पडिग्गहओ ।
पलिमंथ भरुड्डुग, अतिप्पमाणे इमे दोसा ।।५८२५।।

दुविह पमाण तत्थ गणणप्पमाणेण दो पादा – पडिग्गहो मत्तगो य । अह एत्तो तिगादिअतिरित्त धरेति तो परिकम्मण रगण पडिलेहणादिसु सुत्तत्थपलिमथो अद्धाणे वहतो भारो उड्डकश्च जनहास्यो भवति – 'अहो ! भारवाहिता इमे' ।।५८२५।।

---

[1] गा० ५७८६ ।

[1]दुप्पमाणाइरित्ते वि इमे दोसा –

भारेण वेयणाते, अभिहणमादी ण पेहए दोसा ।
रीयादि संजमम्मि य, छक्काया भाणभेदम्मि ॥५८२६॥

भारो भवति, भारक्कनस्स य वेयणा भवति, वेयणाए य अद्दितो गोणहत्थिमाइ ण पस्सति, ते अभिहणेज्जा, वडसालक्खाणुमाइ वा न पेहइ, इरिउवउत्तो वा न भवइ, अणुवउत्तो वा छक्काए विराहेज्ज, अणुवउत्तो वा भायणभेय करेज्जा । ॥५८२६॥

इमे [2]अइरेगदोसा । "अइरेग" ति पमाणप्पमाणातो –

भाणऽप्पमाणगहणे, भुंजण गेलण्णऽभुंज उज्झिमिता ।
एसणपेल्लण भेदो, हाणि अडंते दुविध दोसा ॥५८२७॥

भाजन अप्रमाण – भाणऽप्पमाणति त, अतिवुड्ड गेण्हति । तम्मि भरिए जइ सव्व भु जति तो हा(तो)देज्ज वा मारेज्ज वा गेलन्न वा कुज्जा अह ण भु जति तो उज्झिमिता अहिकरणादी दोसा । भायण भरेमि त्ति अलब्भमाण एसण पेलित्ता भरेति, भरिए अतिभारेण पच्चुप्पिडित्ता भज्जति, भायणेण विणा अप्पणो कज्जपरिहाणी, भायणट्ठा अडतस्स भायणभूमीजतस्स दुविह त्ति – आयसजमविराहणा दोसा भवति ॥५८२७॥

हीणदोसत्ति अस्य व्याख्या –

हीणप्पमाणधरणे, चउरो मासा हवंति उग्धाता ।
आणादिया य दोसा, विराहणा संजमा-ऽऽयाए ॥५८२८॥

ज पडिग्गहगमत्तगप्पमाण भणिय ततो जति हीण धरेति ततो पडिग्गहगे चउलहु, मत्तगे मासलहु ॥५८२८॥

किं चान्यत् –

ऊणेण ण पूरिस्सं, आकंठा तेण गेण्हती उभयं ।
मा लेवकडं ति ततो, तत्थुवओगं न भूमीए ॥५८२९॥

ऊणेण ति प्रमाणतो एतेण भरिएण वि ण पूरेस्सति ण सथरिस्सति ताहे कण्णाकण्णि भरेति, उभय ति कूर कुसण च, अहवा – भत्त पाण वा । तम्मि अतिभरिए मा पत्तबधो लेवाडिस्सति त्ति – तदुवओगेण भूमीए उवओग न करेति ॥५८२९॥

अणुवत्तस्स य इमे दोसा –

खाणू कटग विसमे, अभिहणमादी ण पेहती दोसा ।
रीया पगलित तेणग, भायणभेदे य छक्काया ॥५८३०॥

अणुवउत्तो खाणुणा दुक्खाविज्जति, कटगेण वा विज्झति, विसमे वा पडति, गवादिणा वा अभिहण्णति । एसा आयविराहणा । रीयादी सजमविराहणा कठ्या ॥५८३०॥

---

[1] गा० ५८२० द्वा० २ । [2] गा० ५८२० । [3] गा० ५८२० ।

अहवा इमे दोसा—

[1]हीणप्पमाणधरणे, चउरो मासा हवंति उग्घाया ।
आणादिया य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥५८३१॥ कठ्या

गुरुमाइयाण अदाणे इम पच्छित्त –

गुरु पाहुणए दुब्बल, बाले वुड्ढे गिलाण सेहे य ।
लाभा-ऽऽलाभऽद्धाणे, अणुकंपा लाभवोच्छेदो ॥५८३२॥

गुरुगा य गुरु-गिलाणे, पाहुण-खमए य चउलहू होंति ।
सेहम्मि य मासगुरू, दुब्बल जुव (य) ले य मासलहुं ॥५८३३॥ कठ्या

गुरुमादियाण इमा विभासा –

अप्प-परपरिच्चाओ, गुरुमादीण तु अदेंत-देंतस्स ।
अपरिच्छिते य दोसा, वोच्छेदो णिज्जराऽलाभो ॥५८३४॥

डहरभायणभरिय गुरुमादियाण जति देति तो अप्पा चत्तो, अह ण देति तो गुरुमातिया परिचत्ता । दुब्बलो सभावतो रोगतो वा न तरति हिंडिउ तस्स दायव्व ।

"[2]लाभाऽऽलोभ" त्ति अस्य व्याख्या – "अपरिच्छिते य दोसा", जस्स हीणप्पमाण भायण सो खेत्तपडिलेहगो पयट्ठितो स तेण खुड्डलगेण भाणेण किह लाभ परिक्खउ, ताहे जे अपरिक्खित्ते खेत्ते दोसा, ते मदपरिक्खिए वि गच्छस्स य आगयस्स अलभते ज असथरण जा य परिहाणी सा सव्वा खुड्डलभाणग्गाहिणो भवति, अद्धाणे वा पवण्णाण सखडी होज्जा तत्थ पज्जत्तियलाभे लब्भमाणे कहिं गेण्हउ ? त भायण थेवेण चेव भरिय ।

अहवा – "[3]अणुकपलाभवोच्छेतो" त्ति – छिण्णद्धाणे वा कोइ अणुकपाए वा ज ज अडिज्जति त भायण भरेति, तत्थ गच्छसाधारणकर भायण उड्डेयव्व, हीणभायणे पुण अडिज्जते लाभस्स वोच्छेदो णिज्जराए य अलाभो भवति ।

अहवा – सद्धाणेऽवि घयादिदव्वे लब्भमाणे खुड्डलभायणेण लाभवोच्छेद करेज्ज निज्जराए वा अलाभ पावेज्ज ॥५८३४॥

इमे य डहरभायणे दोसा –

लेवकडे वोसट्ठे, सुक्के लग्गेज्ज कोडिए सिहरे ।
एते हवंति दोसा, डहरे भाणे य उड्डाहो ॥५८३५॥

तेण अतीव पाहुडिय ताहे तेण वोसट्ट, तेण अतिपलोट्टमाणेण लेवाडिज्जति । अहवा – मा थेव भत्त देहीति, ताहे सुक्कस्स चप्पाचप्प भरेइ, त च सुक्क भत्त लगेज्ज अजिण्ण हवेज्ज । कोडिय ति चप्पिय चपिज्जत वा भजेज्ज, सुक्कभत्तस्स वा सिहर करेंतो भरेज्ज, त जणो दटटु भणति – अहो ! असतुट्टा । पच्छद्ध कठ ॥५८३५॥

---

१ गाथेयमधिका प्रतिभाति । २ गा० ५८३२ । ३ गा० ५८३२ ।

धुवणाऽधुवणे दोसा, वोसट्ठते य काय आतुसिणे ।
सुक्खे लग्गाऽजीरग कोडित सिह भेद उड्डाहो ॥५८३६॥

वोसट्टतेण ज लेवाडित त जति धोवति तो उब्भावणादी दोसा, ग्रह ण धोवति तो रातीभोयणभगो। अहवा – वोसट्टे पगलते पुढवादी छक्कायविराधणा ।

अहवा – वोसट्टते उसिणेण दड्ढे आयविराहणा, पच्छद्ध गतार्थं । चप्पिज्जते उस्सिहरभरिगे य बहि फोड त्ति उड्डाहो, जम्हा एवमादी दोसा तम्हा जुत्तप्पमाण पाद घेत्तव्व ॥५८३६॥

केरिस पुण त जुत्तपमाण ?, अत उच्यते –

तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च भाण मज्झिमप्पमाणं ।
एतो हीण जहण्णं, अतिरेगतर तु उक्कोसं ॥५८३७॥

उक्कोसतिसामासे, दुगाउअद्धाणमागश्रो साहू ।
चउरंगुलऊणं भायणं तु पज्जत्तियं हेट्ठा ॥५८३८॥

एयं चेव पमाणं, सविसेसतरं अणुग्गहपवत्तं ।
कंतारे दुब्भिक्खे, रोहगमादीसु भतियव्वं ॥५८३९॥

एयाओ जहा पढमुद्देसगे तहेव ॥५८३९॥

"[1]अववाय" त्ति अस्य व्याख्या –

अण्णाणे[1] गारवे[2] लुद्धे[3], असंपत्ती[4] य जाणए[5] ।
लहुओ लहुया गुरुगा, चउत्थ सुद्धे उ जाणओ ॥५८४०॥

पच्छा अववाय भणीहामि, जइ इमेहिं धरेति तो इम पच्छित्त पच्छद्धगहिय जहसख – अण्णाणेण मासलहु, गारवेण चउलहु, लुद्धस्स चउगुरुगा । असपत्ती जाणगे दो वि सुद्धा ॥५८४०॥

नत्थ अण्णाणस्स वक्खाण –

हीणा-ऽतिरेगदोसे, अयाणमाणो उ धरति हीण-ऽहियं ।
पगतीए थोवभोई, सति लाभे वा करेतोमं ॥५८४१॥

पुव्वद्ध कठ । इम गारवस्स वक्खाण – पगतीए पच्छद्ध, पगती स्वभावो य, स्वभावतो चेव थोवभोइ । अहवा – लब्भते वि ओम करेति, वर मे थोवासि त्ति जणवातो भविस्सइ ॥५८४१॥

इस्सरनिक्खंतो वा, आयरिओ वा वि एस डहरेणं ।
अतिगारवेण ओम, अतिप्पमाणं इमेहिं तु ॥५८४२॥

ईसरो को वि एस जेण डहरेण भायणेण भिक्ख हिंडइ, आयरियत्ते ण गारवेण वा डहरभायण गेण्हति ॥५८४२॥

---

१ गा० ५८२० ।

अतिप्पमाण इमेण गारवेण धरेइ –

अणिगूहियबलविरिओ, वेयावच्चं करेइ अह समणो ।
बाहुबल च अती से, पससकामी महल्लेणं ॥५८४३॥

महल्लभायणेण वेयावच्च करेइ – एव मे साधू पससिस्सति, अहवा – साहुजणो वा भणिस्सइ – "एयस्स विसिट्ठ बाहुबल जेण महल्लेण भायणेण भिक्ख हिंडइ" ॥५८४३॥

[1]लुद्धस्स व्याख्या –

अंतं न होइ देयं, थोवासी एस देह से सुद्धं ।
उक्कोसस्स व लभे, कहि घेच्छ महल्ल लोभेणं ॥५८४४॥

खुडलगभायणे गहिए घरगणे वि ठित दट्ठु घरसामी भणति – "एयस्स अतपतभत्त ण देय" ।

अहवा भणेज्ज – "एस थोवासी, जेण एस खुड्डुलएण गेण्हति" ।

अहवा भणेज्ज – "एयस्स सुद्ध देह" । "सुद्ध" ति उक्कोस, [2]शाल्योदनपढमदोच्चगादी सुद्धो चेव ।

महल्ल इमेण कारणेण गेण्हति – "उक्कोम लब्भमाण पभूत सामण्ण वा समुद्दाणिय लब्भमाण कत्थ गेण्हिस्सामि" त्ति एव लुद्धत्तणेण महल्ल गेण्हति ॥५८४४॥

"[3]असपत्ति" दार चउत्थ, तस्स इम वक्खाण –

जुत्तपमाणस्सऽसती, हिण-ऽतिरित्तं चउत्थो धारेति ।
लक्खणजुतहीण-ऽहिय, नंदी गच्छट्ठता चरिमो ॥५८४५॥

पुव्वद्ध कठ । "[4]जाणगे" त्ति अस्य व्याख्या – लक्खणपच्छद्ध, ज लक्खणजुत्त त जाणगो हीण वा अहिय वा धरेति, णाणादिगच्छवृद्धिनिमित्त ।

अहवा – गच्छस्स उवग्गहकर णदीभायण, "चरिमो" त्ति जाणगो सो धरेति न दोसो ॥५८४५॥ अववाए त्ति गय ।

इदाणि "[5]लक्खणमलक्खणे" त्ति दार –

वट्टं समचउरंसं, होति थिरं थावरं च वण्णं च ।
हुंड वायाइद्धं, भिन्नं च अधारणिज्जाइं ॥५८४६॥

वृत्ताकृति उच्छिन्नकुक्षिपरिधितुल्य चतुरम दृढ स्थिर स्थावर अप्रतिहारिक एतेहिं गुणहिं जुत्त धण्ण । अहवा – अण्णेहि वि वण्णादिगुणहि ज जुत्त त घण्ण, एय लक्खणजुत्त ।

इम अलक्खण – विसमसठिय हुड अणिप्फण्ण तुप्पडय वाताइद्ध ज च भिण्ण, एते अलक्खणा ॥५८४६॥

संठियम्मि भवे लाभो, पतिट्ठा सुपतिट्ठिते ।
निव्वणे कित्तिमारोग्गं, वण्णड्ढे णाणसपया ॥५८४७॥

---

१ गा० ५८४० द्वा० ३ । २ व्यञ्जनादि । ३ गा० ५८४० द्वा० ४ । ४ गा० ५८४० द्वा० ५ । ५ गा० ५८२० द्वा० ५ ।

हुंडे चरित्तभेदो, सबलम्मि य चित्तविब्भम जाणे।
दुप्पुते खीलसंठाणे, गणे य चरणे य नो ठाणं ॥५८४८॥

पउमुप्पले अकुसले, सव्वणे वणमाइसे।
अंतो बहिं व दड्ढे, मरणं तत्थ निद्दिसे ॥५८४९॥

सुसठाणसठिए भत्तादि लाभो भवति, ज फुल्लगवधेण सुपइट्ठिय तेण चरण गणे आयरियादिपदे वा सुप्पतिट्ठितो भवति। जस्स पातस्स वणो नत्थि तेण पातेण णिव्वणो भवति, कित्ती जसो य भवति, [1]आरोग्ग च से भवति। पवालसण्णिभेण वण्णेण ज अड्ढ ति जुत्त तेण णाण भवति। ज हुड तेण चरित्तविराहणा भवति, मूलुत्तरचरित्ताइयारा भवति। सबल चित्तविचित्त तेग चित्तविब्भमो खित्तादिचित्तो भवति। पुप्फग मूले न सुपइट्ठिय दुप्पुत कोप्परागार खीलसठिय, एरिसे गणे चरणे वा ण थिरो भवति। अहवा — हिंडतो चेव अच्छति।

अंतो बहिं व दड्ढे, पुप्फगं भिण्णे य चउगुरू होंति।
इयरब्भिण्णे लहुगा, हुंडादिसु सत्तसु लहुओ ॥५८५०॥

हुंड सबले सव्वण, दुप्पुत वातिद्धवण्ण हीणे य।
कीलगसठाणे वि य, हुंडाई होंति सत्तेते ॥५८५१॥

ज अतो बहि वा दड्ढ तत्थ मरण गेलण्ण वा त गेण्हते चउगुरु। पुप्फगमज्झे णाभिभिण्णे एव चेव। इयर ति — ज अण्णकुक्षिमादिसु भिण्ण तत्थ चउलहु। हुडे वाताइद्धे दुप्पुते खीलसठाणे अवण्णड्ढे सबले सव्वणे एतेसु मासलहु ॥५८५१॥ लक्खणमलक्खण त्ति गत।

इदाणि "[2]तिविह उवहि" त्ति —

तिविहं च होति पादं, अहाकडं अप्प-सपरिकम्मं च।
पुव्वमहाकडगहणे, तस्सऽसति कमेण दोण्णितरे ॥५८५२॥

तिविह पाद — लाउय दारुय मट्टियापाय च। पुणो एक्केक्क तिविह — अहाकड अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म च। गहणकाले पुव्व अहाकड गेण्हियव्व, तस्स असति अप्पपरिकम्म, तस्स असति बहुपरिकम्म ५८५२॥

इदाणि "[3]वोच्चत्थ" त्ति —

तिविहे परूवितम्मि, वोच्चत्थे गहण लहुग आणादी।
छेदण-भेदण करणे, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५८५३॥

जो एस अहाकडाइगो गहणकमो भणिओ, एयाओ ज वोच्चत्थ विवरीय गेण्हति।

अहाकडस्स जोग अकाउ जो अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म वा गेण्हति तस्स चउलहु, अन्न च ज सपरिकम्मे पादे वि छेयण-भेयण त करेंतस्स जा य छेयण-भेयणादिगा आयविराहणा सजमविराधणा वा पढमुद्देसगे भणिया, सच्चेव इह अपरिसेसा सहारोवणाए भाणियव्वा ॥५८५३॥

---

१ रोग वा से न भवति। २ गा० ५८२० द्रा० ६। ३ गा० ५८२१ द्रा० ६।

बितियद्दारगाहा आदिद्दारे [1]कोत्ति अस्य व्याख्या –

को गेण्हति गीयत्थो, असतीए पादकप्पिओ जो उ।
उस्सग्ग-ऽववातेहिं, कहिज्जती पादगहणं से ॥५८५४॥

को पाद गेण्हति ? जो गीयत्थो सो गेण्हति । गीयत्थस्स असति जेण पादेसणा सुत्तत्थो गहिओ सो पायकप्पितो गेण्हति । तस्स वि असति जो मेहावी तस्स पादेसणा उस्सग्गववाएहिं कहिज्जति, सो वा गेण्हति ॥५८५४॥

इदाणि '[2]पोरिसि" त्ति –

हुंडादि एगबंधे, सुत्तत्थे करेतो मग्गणं कुज्जा ।
दुग-तिगबंधे सुत्तं, तिण्हुवरिं दो वि वज्जेज्जा ॥५८५५॥

ज हुड आदिसद्दातो दुप्पुत खीलमठिय सबल एगबंध च, एताणि परिभुजतो सुत्तत्थ करेंतो अहाकडादि मग्गेज्ज । जइ पुण दुगबंधण तिगबंधण वा पाद से, तो सुत्तपोरिसिं काउ अत्थपोरिसिं वज्जेत्ता मग्गति ।

अह पाद से तिगबंधणाओ उवरिं चउसु ठाणेसु बद्ध, एरिसे पादे दो वि सुत्तत्थपोरिसीओ वज्जेत्ता आदिच्चुदयाओ चेव आढवेत्ता मग्गति ॥५८५५॥ पोरिसि त्ति गय।

इदाणिं "काले" त्ति दार।

अहाकडादियाण क केत्तिय मग्गियव्व ?

चत्तारि अहाकडए, दो मासा हुंति अप्पपरिकम्मे ।
तेण परिमग्गिऊणं, असती गहणं सपरिकम्मे ॥५८५६॥

चत्तारि मासा अहाकड मग्गियव्व, चउहिं मासेहिं पुण्णेहिं तस्स अलाभे अण्णे दो मासा अप्पपरिकम्म मग्गति, तेण परिमग्गिउण ति अहाकडकालाओ परत अप्पपरिकम्म एत्तिय काल मग्गति, एते छम्मासे बितियस्स वि अलभे ताहे सपरिकम्म मग्गियव्व ॥५८५६॥

केच्चिर काल ?, अत उच्यते –

पणयालीसं दिवसे, मग्गित्ता जा ण लब्भते ततियं ।
तेण परेण ण गेण्हति, मा पक्खेणं रज्जेज्जा ॥५८५७॥

पणयालीस दिवसे बहुपरिम्म गेण्हति, ततो पर न गेण्हति, जेण पण्णरसेहिं दिवसेहिं वरिसाकालो भविस्सति । मा तेण पक्खकालेण परिकम्मण रगण रोहवण च न परिवारिज्जति ॥५८५७॥ काले त्ति गत।

इदाणि "[3]आकरे" त्ति। अहाकड कहि मग्गियव्व ?, अत उच्यते –

कुत्तीय-सिद्ध-णिण्हग,-पवज्जुवासादिसू अहाकडयं ।
कुत्तियवज्ज बितियं, आगरमादीसु वा दो वि ॥५८५८॥

---

१ गा० ५८२१ द्वा० ९। २ गा० ५८२१ द्वा० १०। ३ गा० ५८२१ द्वा० ११।

कुत्तियावणे मग्गति, सिद्ध त्ति सिद्धपुत्तो जो पव्वतिउकामो कते उवकरणे वाघाओ उप्पण्णो ताहे त पडिग्गहगादि साधूण देज्जा, णिण्हयस्स वा, एव च समणस्स वा पामे लब्भति ।

समणोवासओ वा पडिम करेउ घर पच्चागओ पडिग्गहग साधूण देज्ज, अहाकड एतेषु स्थानेषु प्राप्यते ।

अप्पपरिकम्म कतरेषु प्राप्यते ?, अत्रोच्यते "कुत्तियवज्ज बितिय" – कुत्तियावण वज्जेउ सिद्धपुत्तादिसु अप्पपरिकम्म लब्भति । अहवा – 'आगरमादीसु वा दो वि" त्ति अप्परिकम्म ॥५८५८॥

कानि च तानि आगरमादीनि स्थानानि ? अतस्तेषा प्रदर्शनार्थं उच्यते –

आगर णदी कुडंगे, वाहे तेणे य भिक्ख जंत विही ।
कत कारित व कीतं, जति कप्पति तु घिप्पति अज्जो ! ॥५८५६॥

आगराइताण इम वक्खाण –

आगर पल्लीमादी, णिच्चुदग-णदी कुडंग ओसरणं ।
वाहे तेणे भिक्खे, जते परिभोगऽससत्त ॥५८६०॥

आगरो भिल्लपल्ली भिल्लकोट्ट वा, "नदि" त्ति जेसु गामनगरतरेसु नदीओ लाउएहिं सतरिज्जति णिच्चोदगातो, तासि चेव णदीण कूलेसु जे वच्छकुडगा तेसु वा विज्जति तुबीओ, वाहतेणपल्लीसु वा, अहवा – वाहतेणा अडविं गच्छता लाउए उदग घेत्तु गच्छति, भिक्खट्ठा भिक्खयरो लाउय गेण्हेज्ज, गुलजतसालादिसु वा उम्मिचणट्ठा भत्तनेल्लादिठावणट्ठा वा लाउय गेण्हेज्जा । एतेसु आगरादिसु ज लब्भति त विधीए गेण्हति, अण्ण च ज एतेसु चेव परिभुज्जमाण त गेण्हति, जेण त असंसत्त भवति ॥५८६०॥

आगरादिसु ओभट्ठ पुच्छियं च "कस्सेय, कस्सट्ठा वा कय" ति ।

स पुच्छितो भणाति – "[1]कय कारिपच्छद्ध" अस्य व्याख्या –

तुब्भट्ठाए कतमिणं, अन्नस्सट्ठाए अहव सट्ठाए ।
जो घेच्छति व तदट्ठा, एमेव य कीय-पामिच्चे ॥५८६१॥

तुब्भट्ठाए कय वा, तुब्भट्ठाए वा कारित, अण्णस्स वा साहुस्स भिक्खतरस्स वा अट्ठाए कय ।

अहवा – सट्ठाए त्ति अप्पणो अट्ठाए, अहवा – जो चेव गेण्हति तस्सट्ठाए कय जावतिगमित्यथ । अहाकम्मे भणिय एव कीयगडपामिच्चादिसु वि भाणियव्व । अण्णे वि उग्गमदोसा जहासभव सोहेयव्वा, एसणदोसा य । ज सुद्ध त घेप्पइ, असुद्ध त वज्जेयव्व ॥५८६१॥ आगर त्ति गय ।

इदाणि "[2]चाउले" त्ति –

चाउल उण्होदग तुवर कूर फुसणे तहेव तक्के य ।
जं होति भावितं कप्पती तु भइयव्व तं सेसं ॥५८६२॥

चाउलसोधण तुवरो कुसुभगोदगादी भइयव्व ॥५८६२॥

---

१ गा० ५८५६ । २ गा० ५८२१ द्वा० १२ ।

[1]सेसति अस्य व्याख्या –

सीतोदगभावितं अविगते तु सीतोदएण गेण्हंति ।
मज्ज-वस-तेल्ल-सप्पी,-महुमातीभावियं भडतं ॥५८६३॥

परिणए पुण सीतोदगे गेण्हति, मज्जादिएसु जति निक्खारेउ सक्कति तो घेप्पइ, इयरहा न घेप्पइ। एस भयणा ।

अहवा – वियडभावित जत्थ दुगुछिय तत्थ न घेप्पइ, अदुगुछिए घेप्पति॥५८६३॥

ओभासणा य पुच्छा, दिट्ठे रिक्के मुहे वहते य ।
संसट्ठे णिक्खित्ते, सुक्खे य पगास दट्ठूणं ॥५८६४॥

ओभासण त्ति जहा वत्थस्स "कस्सेय, किं वासी, किं वा भवस्सति, कत्थ वा आसी ?"–एव पुच्छा। सुद्धे गहण ।

पुणो सीसो पुच्छइ – "दिट्ठादिपदे" ।

आयरिओ आह – अदिट्ठातो दिट्ठ खेमतर ।

कह ?, उच्यते – अदिट्ठे देये कि काए सघट्टेतो गेण्हति ण वा ? अहवा – कायाण उवरि ठवियल्लय होज्जा, अहवा – बीजाती छूढा होज्ज, दिट्ठे पुण सव्व दीसइ, एएण कारणेण दिट्ठ वर, णो अदिट्ठ।

"कि रिक्क, अणरिक्क त घेप्पतु ?" ज दहिखीरादीहिं अणरिक्क त घेप्पउ ।

इयर आउक्कायादीहिं अणरिक्क तत्थ कायवहो होज्ज, रिक्के वि कुंथुमाती भवति ।

'किं कयमुह घेप्पइ अकयमुह ?" कय मुह घेप्पइ ।

"वहतय, अवहतय ?"

ज तक्कमादि फासुएण वहतय त घेप्पति, णावि ज आउक्कायादीहिं ।

"कि ससट्ठ, असंसट्ठ गेण्हउ" ? ज फासुदव्वेण ससट्ठ त घेप्पउ ।

"उक्खित्त, णिक्खित्त" ? एत्थ उक्खित्त कप्पति ।

"सुक्क, उल्ल" ? फासुएण उल्ल पसत्थ ।

"पगासमुह, अपगासमुह' ? पगासमुह कप्पति ।

अहवा – "पगासट्ठिय अप्पगासट्ठिय" ? पगासट्ठिय कप्पति । "दट्ठूण" ति जदा सुद्ध तदा चक्खुणा पडिलेहेति, जदि न पडिलेहेइ ताहे तसबीयादी होज्ज ॥५८६४॥

जइ तसबीयादी होज्ज, ताहे इम पुणो जयण करेइ –

ओमंथ पाणमादी, पुच्छा मूलगुण-उत्तरगुणेसुं ।
तिट्ठाणे तिक्खुत्तो, सुद्धो ससणिद्धमादीसु ॥५८६५॥

"ओमत्थ" त्ति पयस्स विभासा –

दाहिणकरेण कण्णे, घेत्तुत्ताणे य वाममणिबंधे ।
घट्टेति तिण्णि वारा, तिण्णि तले तिण्णि भूमीए ॥५८६६॥

---

१ गा० ५८६२ ।

कण्ण तस्स मुह। कण्णे घेत्तु हत्थ उत्ताणय काउ, त पाय कण्णगहिय वामबाहूमणिबघप्पदेस मघट्टेति त्ति तिण्णि वारा ग्राहणति। जत्थ जइ बीय तसा वा दिट्ठा तो ण कप्पति, ग्रह दिट्ठा ताहे हत्थतले ततो वारा ग्राहणति। तत्थ वि तस-बीए दिट्ठे ण कप्पति, ग्रदिट्ठेसु पुणो ग्रोमथय भूमीए तिण्णि वारा पप्फोडेति ॥५८६६॥

[1]पाणमादी, एयस्स विभासा तिट्ठाणे तिक्खुत्तो खोडिए समाणे –

तस बीयम्मि वि दिट्ठे, ण गेण्हती गेण्हती उ अदिट्ठे।
गहणम्मि उ परिसुद्धे, कप्पति दिट्ठेहि वि बहूहिं ॥५८६७॥

गहणकाले परिसुद्धे जइ पच्छा तसबीय वा पासति, ससणिद्धाणि वा पासति, तहावि त सुद्ध चेव, न परिट्ठवेंति।

ग्रन्ने पुण भणति – जइ तज्जाए बीए जीव सत्त कुणगा ताव न परिट्ठवेइ। ग्रह बहुतरे पासइ तज्जाए तो गहणकाले सुद्धपि सपडिग्गहमातात्ते परिट्ठवेति। ग्रतज्जाएसु बहूसु वि ठियेसु ण परिट्ठवेइ, ते ग्रतज्जाए सडिय जयणाए फडेंति ॥५८६७॥

"[2]पुच्छा मूलगुणउत्तरगुणेसु" त्ति सीसो पुच्छति – तस्स के मूलगुणा, के वा उत्तरगुणा? मुहकरण मूलगुणा, मोयकरण उत्तरगुणा।

एत्थ मूलगुणउत्तरगुणेहि चउभगो कायव्वो।

पढमभगे चउगुरु तवकालगुरु, बितियभगे चउगुरु चेव तवगुरू।

ततियभगे चउलहु चउगुरु। चउत्थो सुद्धो। "चाउल" त्ति गय।

इदाणि "[3]जहण्णजयण" त्ति दार –

पच्छित्त पण जहण्णे ते णेउ तव्वुड्ढिए उ जयणाए।
जहण्णा उ सरिसवादी, तेहि तु जयणंतर कलादी ॥५८६८॥

पच्छित्त पणग जहण्ण ग्रसतासति तववुड्ढिजयणाए गिण्हति, ग्रहवा – सरिसवाती बीया जहण्णा, तहिं छब्भागकरवड्ढिजयणाए गेण्हति। इयरे त्ति बादरा कलादी, कल त्ति चणगा ॥५८६८॥

इयाणि एसेवत्थो विवरिज्जति हत्थपमाण काउ –

छब्भागकए हत्थे, सुहुमेसु पढमपव्व पंचदिणा।
दस बितिते रातिदिणा, अंगुलिमूलेसु पण्णरस ॥५८६९॥

हत्थो छब्भाए कीरइ, पढमपव्वा एको भागो, बितियपव्वा बितियभागो, ग्रगुलिमूले ततिग्रो, ग्राउरेहा चउत्थो, पचमो ग्रगुट्ठबुधे, सेसो छट्ठो। एस पढमपव्वमेत्तेसु सुहुमबीएसु पचराइदिया, बितियपव्वमेत्ते दसराइदिया, ग्रगुलमूलमेत्तेसु पण्णरस ॥५८६९॥

वीसं तु ग्राउलेहा, अंगुट्ठयमूले होंति पणुवीस।
पसतिम्मि होति मासो, चाउम्मासो भवे चउसु ॥५८७०॥

---

१ गा० ५८६५। २ गा० ५८६५। ३ गा० ७०० द्वा० १३।

आयुरेहमेत्तेसु वीस राइदिया, अगुट्ठबुघमेत्तेसु पणुवीस, पसतीए मासलहु, चउसु पसतीसु चउलहु ॥५८७०॥

एसेव गमो णियमा, थूलेसु वि बितियपव्वमारद्धो ।
अंजलि चउक्क लहुगा, ते च्चिय गुरुगा अणंतेसु ॥५८७१॥

मासमादिसु थूलेसु बितियपव्वमेत्तेसु पणग, अगुलिमूले दस, आयुरेहाए पण्णरस, अगुट्ठमूले वीसा, पसतीए भिण्णमासो, अजलीए मासलहु, चउसु अजलीसु चउलहु । एते चेव पच्छित्ता सुहुमथूरेसु अणतेसु गुरुगा कायव्वा ॥५८७१॥

णिक्कारणम्मि एते, पच्छित्ता वण्णिया उ बितिएसु ।
णायव्वऽणुपुव्वीए, एसेव य कारणे जयणा ॥५८७२॥

जा एसा पच्छित्तवुड्ढी भणिया णिक्कारणे, कारणे पुण गेण्हतस्स सेव जयणा पणगादिगा भवति ।

जइ पुण अहाकडे पढमपव्वप्पमाणा बीया अप्पपरिकम्म च सुद्ध लब्भति ।

एत्थ अप्पबहुचिताए कतर घेत्तव्व ? भण्णति – अहाकड घेत्तव्व, णो अप्पपरिकम्म । एव बितियपव्वादिसु वि वत्तव्व ॥५८७२॥

जाव –

वोसट्ठं पि हु कप्पति, बीयादीणं अहाकडं पायं ।
ण य अप्प सपरिकम्मा, तहेव अप्पं सपरिकम्मा ॥५८७३॥

वोसट्ठ ति भरिय, अहाकड आगतुगाण भरिय पि कप्पति, ण य अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म वा । एव अप्पपरिकम्म पि आगतुगाण भरिय कप्पति ण य बहुपरिकम्म सुद्ध ॥५८७ ॥

इम जयणाए णिच्छतो छडेति –

थूले वा सुहुमे वा, अवहते वा असंथरंतम्मि ।
आगतुग सकामिय, अप्पबहु असंथरतम्मि ॥५८७४॥

थूलाण वा चणगादियाण बीयाण सुहुमाण वा सरिसवादियाण भरिय होज्जा तस्स य जति पुव्वभायण, णवर–त ण वहति । "असथर" ति अपज्जत्तिय वा भायण, भायणस्स वा अभावो, ताहे तम्मि असथरे अप्पबहुअ तुलेत्ता बहुगुणकरे ति काउ अहाकड, आगतुगाण बीयाण भरिय ति आगतुगे सकामेत्ता जयणाए अण्णत्थ, अहाकड चेव गेण्हति ण दोसो ॥५८७४॥ जयण त्ति गता ।

इदाणि [1]"चोदगो" त्ति –

थूल-सुहुमेसु वोत्तुं, पच्छित्तं तेसु चेव भरितेसु ।
ज कप्पति त्ति भणियं, ण जुज्जते पुव्वमवरेणं ॥५८७५॥ कण्ठ्या

आचार्य आह – '[2]असति असिव" त्ति –

चोदग ! दुविधा असती, संताऽसंता य संत अमित्रादी ।
इयरो उ झामियादी, कप्पति दोसु पि जा भरिते ॥५८७६॥

---

१ गा० ५८२० द्वा० १४ । २ गा० ५८२० द्वा० १५ ।

सतासती जत्थ गामे णगरे विसए वा भायणे अत्थि तत्थतरा वा असिव, सगामे वा जेसु कुलेसु अत्थि तेसु वा असिव, ओमोयरियादीणि वा तत्थतरा वा एसा सतासती ।

अहवा – सतासती अत्थि भायण, णवर – त ण बहति ।

अहवा – सतासती असथरम्मि त्ति अत्थि भायण डहर ण सथरति । तेण इयर त्ति असतासती सा इमा – "झामिय" ति, पलीवए दड्ढ पात, तेणेहिं वा हड, रायदुट्ठेण वा हड, भग्ग वा, सव्वहा अभावो पातस्स, एवमादिकारणेहि कप्पति दोसु वि असतीसु अहाकड पाद आगतुगबीयाण भरिय घेत्तु, ण य सुद्ध अप्पपरिकम्म । ज पुण मए भणिय पच्छित्त त दुविहाए असतीए अभावे जो गेण्हति तस्स त भवति । अहाकडे जइ विधीए दोसा तहावि त बहुगुणकर, अप्पपरिकम्ममि पुण सुद्ध पि बहुदोसकर ।।५८७६।।

कह ? उच्यते –

जो तु गुणो दोसकरो, ण सो गुणो दोस एव सो होती ।
अगुणो वि य होति गुणो, जो सुंदर णिच्छओ होति ।।५८७७।।

एव इह पि अप्पपरिकम्मे सुद्धेवि दोसा, अहाकडे बीयस्स सहिए दुट्ठे वि गुणो चेव ।

कह ?, उच्यते – अहाकडे जति वि ताणि आगतुगबीयाणि जयणाए अण्णत्थ सकामेंतस्स अप्पो सघट्टणादोसो, तहावि ण य सुत्तत्थपलिमथो, ण य छेदणादिआतोवघायदोसा । अण्णो य इमो नवर – गुणो, तक्खणादेव घेत्तु हिंडियव्व । एव त सदोस पि बहुगुण । अप्पपरिकम्मे पुण एव चेव विवरीय भाणियव्व, अतो त सगुण पि सदोस ।।५८७७।। असति असिव त्ति गय ।

इदाणि "[1]पमाण-उवओग-छेदण" ति तिण्णि वि पदे जुगव भण्णति –

पाद सामण्णेण वा उवकरण जइ अहाकड पमाणजुत्त वा ण लब्भति, तो त पमाणजुत्त कायव्व, उवउत्तेण छेत्तु इणमेव ।

जतो भण्णति –

असति तिगे पुण जुत्तजोग ओहोवधी उवग्गहिते ।
छेदण-भेदणकरणे, सुद्धो तं निज्जरा विउला ।।५८७८।।

असति त्ति अहाकडस्स "तिगे" त्ति तिन्निवारा "जुत्तो जोगो" अहाकड तयो वारा मार्गितमित्यर्थं, पुण त्ति अवधारणे । किं अवधारेति ?, उच्यते – तिण्ह वाराण परओ अप्पपरिकम्मेव गेण्हति । एस ओहिए उवग्गहिए वा पादे, वत्थे अण्णम्मि वा उवहिम्मि विही गेण्हियव्वो । एव क्रमागते अप्पपरिकम्मे उवउत्तो छेदणभेदण करेंतो विसुद्धो, ण तस्स पच्छित्त । त विहिं [2]अवेक्खतस्स, प्रत्युत निर्जरा विपुला भवति ।।५८७८।।

चोदगाह – "णणु अप्पपरिकम्ममादिसु घेप्पमाणेसु छेदणादिकरणे आयसजमविराहणा भवति ।" –

आचार्याह –

चोदग ! एताए च्चिय, असती य अहाकडस्स दो इतरे ।
कप्पंते छेदणे पुण, उवओगं मा दुवे दोसा ।।५८७९।।

हे चोदग ! जा एसा दुविहा सताऽसतासती भणिया ताए अहाकडस्स असतीते दो इतर त्ति

---

१ गा ५०२० द्वा० १६-१८ । २ अवक्खेवतस्स इत्यपि पाठ ।

अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म च कप्पते घेत्तु, तेसु पुण छेदणादि करेतो सुट्ठुवउत्तो करेति, मा दुवे दोसा भविस्सति, आयसजमविराहणादोसा इत्यर्थ ।।५८७९।।

अस्यैवार्थस्य अपर कल्प –

अहवा वि कओ णेणं, उवओगो ण वि य लब्भती पढमं ।
हीणऽधिय वा लब्भइ, पमाणओ तेण दो इयरे ।।५८८०।।

उवओगो त्ति मग्गणजोगे पढम ति अहाकडय, अहवा – लब्भई अहाकड त पमाणतो हीण अहिय वा लब्भइ तेण कारणेण "दो इतरे" त्ति, "इतर" ति – अप्पपरिकम्म सुद्ध पमाणजुत्त गेण्हति, तम्सासति हीणप्पमाणाइरेगलभे वा बहुपरिकम्म सुद्ध जुत्तप्पमाण घेप्पति ।।५८८०।।

इम च अप्पपरिकम्म पडुच्च भण्णइ –

जह सपरिकम्मलंभे, मग्गंते अहाकडं भवे विपुला ।
णिज्जरमेवमलंभे, बितियस्सितरे भवे विपुला ।।५८८१।।

जहा सपरिकम्मे त्ति अप्पपरिकम्मे सुद्धे जुत्तप्पमाणे लब्भमाणे वि अहाकड मग्गतस्स णिज्जरा विपुला भवति, तहा पढमस्स त्ति अहाकडस्स अलभे इयर त्ति – अप्पपरिकम्म मग्गतस्स विपुला णिज्जरा भवति ।

अहवा – एतीए गाहाए चउत्थ पाद पढति "बीयस्सितरे भवे विउल" त्ति । बितिय अप्पपरिकम्म, तस्स अलाभे इयर ति बहुपरिकम्म, त मगतस्स णिज्जरा विउला भवति, पढमबितियाण अलभे सतासतासतीए वा ।।५८८१।।

अहवा – जत्थ ते लब्भति तत्थिमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
सेहे चरित्त सावय-भए व ततियं पि गेण्हेज्जा ।।५८८२।।

जत्थ अहाकड पाद अप्पपरिकम्म वा लब्भति तत्थ असिव, अतरे वा परिरयगमण च णत्थि, एव ओमरायदुट्ठ बोहिगादीण वा भय गिलाणपडिबधेण वा तत्थ न गम्मइ, सेहस्स वा तत्थ सागारिय चारित्तभेदो त्ति, तत्थतरा वा चरित्ताओ उवसग्गति, सीहादिसावयभय तत्थ अतरा वा, एवमादिकारणेहिं अगच्छतो ततिय । ततिय ति — बहुपरिकम्म सत्थाणे चेव गेण्हति ।।५८८२।।

गयमत्थ सीहावलोयणेण भणति –

आगंतुगाणि ताणि य, सपरिक्कम्मे य सुत्तपरिहाणी ।
एएण कारणेण, अहाकडे होति गहणं तु ।।५८८३।।

चरिम परिकम्मेतस्स सुत्तत्थपरिहाणी । शेष गतार्थम् ।।५८८३।। पमाण उवओगछेयण ति गत।

इदाणि "[1]मुहे" त्ति दार –

बितिय-ततिएसु नियमा मुहकरणं होज्ज तस्सिमं माणं ।
तं पि य तिविहं पादं, करंडयं दीह वट्टं च ५८८४।।

---

१ गा० ५८२० द्वा० १६ ।

बितिय अप्पपरिकम्म, (ततिय बहुपरिकम्म) एतेसु णियमा मुहकरण, त च मुह तिविह – करडाकृति, दीह ति ओलबग, वट्ट ति समचउरस ॥५८८४॥

तेसि मुहस्स इम माण –

अकरंडगम्मि भाणे, हत्थो [1]उडढं जहा ण घट्टेति ।
एयं जहण्णयमुहं, वत्थुं पप्पा ततो विसालं ॥५८८५॥

अकरड ओलबओ समचउरस्स वा, एतेसु मुहप्पमाण हत्थो पविसतो णिप्फिडतो वा जहा उड्ढ अह य ण घट्टेति – ण स्पृशतीत्यर्थ । एय सव्वजहण्णमुहप्पमाण । अतो पर वत्थु ति महते महततर विसाले विसालतर मुह कज्जति, ज पुण करडगाकृति तस्स विसालमेव मुह कज्जति । अण्णहा त दुकप्पय भवति ॥५८८५॥ एस पडिग्गहो भणितो ।

इदाणि [2]मत्तगो भण्णति –

अत्राह चोदक – न तित्थकरेहिं मत्तगो अणुण्ण तो ।

कह ?, यस्मादुक्त –

दव्वे एगं पादं, वुत्तं तरुणो य एगपादो उ ।
अप्पोवही पसत्थो, चोदेति न मत्तओ तम्हा ॥५८८६॥

उवकरणदव्वोमोयरियाए भणिय – "[3]एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवगरणसज्जणया" । तथा चोक्त – "[4]जे भिक्खू तरुणे बलव जुवाणे से एग पाद धरेज्ज" तथा चोक्त – "[5]अप्पोवही कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिण पसत्था" ।

चोदगो भणति – जम्हा एव बहुसुय, अण्णेसु वि सुत्तपदेसु भणिय, तम्हा ण मत्तगो घेत्तव्वो ॥५८८६॥

आयरियाह –

जिणकप्पे सुत्तेतं, सपडिग्गहकस्स तस्स तं एगं ।
णियमा थेराणं पुण, बितिज्जओ मत्तओ भणिओ ॥५८८७॥

एगवत्थपादादिया जे सुत्तपदा चोदेसि, एते सपडिग्गहस्स सपाउरणस्स य जिणकप्पियस्स सुत्ता । थेराण पुण णियमा पडिग्गहस्स बितितो मत्तगो भवति, स तित्थयरेहिं चेव अणुण्णातो, अप्पोवहिगहणातो दुपत्तो अप्पोवही चेव, जतो तिप्पभिति बहुत्त तम्हा दिट्ठ मत्तगगहण ॥५८८७॥ त अगेण्हते पच्छित्त ।

इमे य दोसा –

अग्गहणे[1] वारत्तग[2], पमाण[3] हीणा[4]ऽहिय[5]सोही[6] अववाए[7] ।
परिभोग[8] गहण[9] बितियपद लक्खणादी मुहं जाव ॥५८८८॥

---

१ उड्ढ, इति बृहत्कल्पे गा० ४०६० । २ गा० ५८२३ । ३ उव० सू० १८ । ४ आचा० श्रुत० २ अ० ६ उ० १ सू० १५२ । ५ दश० चू० २ गा० ५

अग्गहणे त्ति अस्य व्याख्या –

मत्तगऽगेण्हणे गुरुगा, मिच्छत्तं अप्प-परपरिच्चाओ ।
संसत्तग्गहणम्मि य, संजमदोसा मुणेयव्वा ।।५८८९।।

मत्तगं अगेण्हंते चउगुरुगा पच्छित्तं, णवसड्ढादि मिच्छत्तं गच्छे ।

कहं ?, उच्यते – तेण चेव पडिग्गहेण णिल्लेवंतं दट्ठुं दुद्दिट्ठधम्मे त्ति, जति पडिग्गहे आयरियातीणं गेण्हति अप्पा चत्तो, अह अप्पणो गेण्हति तो आयरियादी पदा चत्ता ।

मत्तगअभावे संसत्तभत्तपाणं कहिं गेण्हउ ?, अहापडिलेहियं पडिग्गहे चेव गेण्हति, तो संजम-विराहणा सवित्थरा भाणियव्वा । [1]छक्काय च० गाहा ।।५८८९।।

"[2]वारत्त" त्ति अस्य व्याख्या –

वारत्तग पव्वज्जा, पुत्तो तप्पडिम देवथलि साहू ।
पडिचरणेगपडिग्गह, आयमणुच्चालणा छेदो ।।५८९०।।

वारत्तपुरं नगरं तत्थ य अभग्गसेणो राया, तस्स अमच्चो वारत्तगो णाम । सो घरसारं पुत्तस्स णिसिउं पव्वइतो । तस्स पुत्तेण पिउभत्तीए देवकुलं करित्तु रयहरणमुहपोत्तियपडिग्गहधारी पिउपडिमा तत्थ ठाविया । तत्थ थलीए सत्तागारो पवत्तितो । तत्थ एगो साधू एगपडिग्गहधारी तत्थ थलीए पडिग्गहए भिक्खं घेत्तुं, तं भोत्तुं, तत्थेव पडिग्गहे पुणो पाणगं घेत्तुं सण्णं वोसिरिउं, तेणेव पडिग्गहेण णिल्लेवेति ।

तेसिं सत्ताकारणिउत्ताणं चिंता – कहं णिल्लेवेइ त्ति, पडियरतो दिट्ठो, तेहिं णिच्छूढो । तेहिं य ताणि भायणाणि अगणिकाइयाणि अण्णाणि छड्डियाणि, तस्स अण्णेसिं च साधूणं वोच्छेओ तत्थ जातो, उड्डाहो य ।।५८९०।।

इमं [3]मत्तगस्स पमाणं –

जो मागहओ पत्थो, सविसेसतरं तु मत्तगपमाणं ।
दोसु वि दव्वग्गहणं, वासावासेसु अहिगारो ।।५८९१।।

मगहाविसए पत्थो त्ति कुलवो । दोसु वि त्ति उडुबद्धे वासासु य । कारणे असणं पाणगदव्वं वा गेण्हति ।

अण्णे पुण भणंति, – दोसु वि त्ति – पडिग्गहे भत्तं, मत्तगे पाणगं । इहं पुण मत्तगेण वासावासासु अधिकारो । वासासु पढमं चेव जत्थ धम्मलाभोत्ति तत्थ पाणगस्स जोगो कायव्वो ।

किं कारणं ?, कयाति वग्घारियवासं पडेज्ज, जेण घराओ घरं न सक्केति संचरिउं, ताहे विणा दव्वेण लेवाडो भवति, तम्हा पढमभिक्खातो चेव पाणगं मग्गियव्वं । अहवा – वासासु संसज्जति त्ति तेण सोहिज्जइ त्ति अतो तेण अधिकारो ।।५८९१।।

अधवा इमं पमाणं –

सुक्खोल्ल ओदणस्सा, दुगाउतद्धाणमागओ साहू ।
भुंजति एगट्ठाणे, एतं खलु मत्तगपमाणं ।।५८९२।।

---

१ पीठिकायाम् गा० ४६ । २ गा० ५८८८ । ३ गा० ५८८८ ।

अप्पेण उल्लिओ सुक्खोयणो, अहवा – सुक्खो चेव ओयणो अण्णभायणगहितेण तिम्मणेण जो पज्जत्तिओ भवइ, एय मत्तगस्स पमाणं ।।५८९२।।

अघवा इम पमाण –

भत्तस्स व पाणस्स व, एगतरागस्स जो भवे भरिओ ।
पज्जत्तो साहुस्मा, एतं किर मत्तगपमाणं ।।५८९३।। कण्ठ्या

मत्तगो जुत्तप्पमाणो घेत्तव्वो, हीणप्पमाणे अतिरित्ते वा बहू दोसा ।।५८९३।।

एत्थ [1]हीणे त्ति दार –

तस्सिमे दोसा –

डहरस्स एते दोसा, ओभावण खिंसणा गलंते य ।
छण्हं विराहणा भाणभेयो जं वा गिलाणस्स ।।५८९४।।

ओभावणा चप्पाचप्पि भरेमाण दट्ठु भणाति – इमे दरिद्दा दुक्खभग्गा पव्वइत त्ति । अहवा – चप्पाचप्पि भरेमाण दट्ठु भणाति - इमे असतुट्ठ त्ति, खीसति [2]अतिलोभगिच्चे त्ति वा भणाति, अतिभारिय-गलंते य पुढवादिछक्कायविराहणा लेवाडिज्जति, तत्थ धुवणाधुवणे दोसा ।

अहवा – लेवाडणभया तत्थुवओगेण खाणुमादी ण पेहति, अतो भायणविराहणा । चप्पाचप्पि वा करेतस्स भायणविराहणा । गिलाणमादियाण वा अप्पज्जत्त भवति तेण तेसिं विराहणा ।।५८९४।।

अहवा इमे डहरे दोसा –

पडणं अवंगुतम्मि, पुढवी-तसपाण-तरुगणादीणं ।
आणिज्जंते गामंतरातो गलणे य छक्काया ।।५८९५।।

कण्णाकण्णि भरिते लेवाडणभएण अवगुएण त्ति तत्थ पुढविकाया तसा तरुपुप्फाइया पडेज्ज, अहवा – गामतरातो अनिभरिए आणिज्जते परिगलमाण छक्काया विराहिज्जति ।।५८९५।। हीणे त्ति गत ।

इदाणि [3]अधिगे त्ति दार –

अहियस्स इमे दोसा, एगतरस्सोग्गहम्मि भरियम्मि ।
सहसा मत्तगभरणे, भारो व विगिंचणियमादी ५८९६।।

प्रमाणाधिके इमे दोसा – एगतरस्स त्ति भत्तस्स पाणस्स वा पडिग्गहे भरिते पच्छा मत्तगे गहणं करेज्ज, सहसा तम्मि मत्तगे भरिए अतिभारेण खाणुमादिए दोसे ण पेहेइ, अण्ण च दोसु वि भरितेसु विगिंचणिया दोसा, अह ण विगिंचति तो अतिखद्धेण गेलण्णादिया दोसा ।।५८९६।। अधिगे त्ति गय ।

जम्हा एते दोसा तम्हा हीणऽइरित्ते वज्जेउ पमाणपत्तो घेत्तव्वो । त च अप्पणट्ठा ण परिभुजति । आयरियादीणट्ठा परिभुजति ।

अह णिक्कारणे अप्पणट्ठा परिभुजति, तो इम [4]पच्छित्त –

जति भोयणमावहती, दिवसेणं तत्तिया चउम्मासा ।
दिवसे दिवसे तस्स उ, बितिएणाऽऽरोवणा भणिता ।।५८९७।।

१ गा० ५८८८ । २ घत्थ इत्यपि पाठ । ३ गा० ५८८८ । ४ गा० ५८८८ ।

एगदिवसेण जत्तिए वारे मत्तगेण भत्तपाण आणेति तत्तिया चउलहुगा भवति, दिवसे दिवसे त्ति वीप्साया बितियादिदिवसेसु पच्छित्तवुड्ढी दरिसेति – जत्तियवारा आणेति ततो से बितिएण आरोवणा कज्जति, चउलहुस्स अबितिय चउगुरुग त बितियवारे दिज्जति, एव उवरिं पि णेयव्व, अट्ठमे दिवसे पारंचिय पावति ।।५८६७।। सोही गया ।

इदाणि [1]अववादे त्ति –

अण्णाणे गारवे लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।
लहुओ लहुओ गुरुगा, चउत्थो सुद्धो य जाणओ ।।५८६८।।

एरिसा जहा पडिग्गहे भणिया तहेव मत्तगे वि भाणियव्वा ।।५८६८।।

इदाणिं [2]परिभोगो त्ति दार ।

मत्तगो णो अप्पणट्ठा परिभुंजइ, आयरियादीणट्ठा परिभुंजइ –

आयरिय बाल वुड्ढा, खमग गिलाणा य सेह आएसा ।
दुल्लभ संसत्त असंथरम्मि अद्धाणकप्पम्मि ।।५८६९।।

आयरियस्स य गिलाणस्स य मत्तगे पाउग्ग घप्पइ सेहबालादियाण अणहिंडताण मत्तगे भत्त घेप्पइ पाउग्ग वा । अहवा – बालादिया पडिग्गहय ण सक्केति वट्टावेउ, ताहे मत्तगेण हिंडति । गच्छट्ठा वा दुल्लभदव्व घतादिय पडुप्पण्ण मत्तगे गेण्हेज्जा । तत्थ वा ससज्जति भत्तपाण तत्थ मत्तगे गेण्हिज्जति भत्तपाण, तत्थ मत्तए घेत्तु सोहेति, पच्छा पडिग्गहे छुब्भइ । ओमादि असथरणे वा, असथरणे पडिग्गहे भरिए अण्णम्मि य लब्भते मत्तगे गेण्हेज्जा । अद्धाण कप्पो अद्धाणकप्पो अद्धाणे विधिरित्यर्थ । कप्पगहण कारणे विधीए अद्धाण पडिवण्णेति दसेति, तत्थ असथरणे पडिग्गहे भरिए मत्तगे गेण्हति ।।५८६९।। परिभोगि त्ति गत ।

"[3]गहणपदबितियपदलक्खणादि मुह जाव" त्ति – एतेसिं पदाण अत्थो जहा पडिग्गहे ।

तहावि अक्खरत्थो भण्णति – गहणे ।

मत्तग को गेण्हति ? बितियपद असिवादिकारणेहिं सत्थाणे चेव अप्पबहुपरिकम्मा गेण्हति । [4]लक्खणादि दारा जहा पडिग्गहे तहा मत्तगे वि वत्तव्वा, मुहकरण च, अप्पपरिकम्म सपरिकम्म च लेवेयव्व ।

तत्थ लेवग्गहणे इमा विही –

हरिए बीए चले जुत्ते, वत्थे साणे जलट्ठिते ।
पुढवीऽसंपातिमा सामा, महावाते महिताऽमिते ।।५९००।।

ओहणिज्जुत्तिमादीसु अणेगमो गतत्था । एस उवही अव्वोकडो भणिओ ।

विभागतो पुण उवही दुविहो – ओहिओ उवग्गहितो य । जिणाण परिहारविसुद्धियाण अहालदियाण पडिमापडिवण्णगाण, एतेसिं ओहितो चेव उवही ।

जिणकप्पिया दुविहा – पाणिपडिग्गही, पडिग्गहधारी य ।

पाणिपडिग्गही दुविहा – पाउरणवज्जिया, सहिया य ।

---

१ गा० ५८८८ । २ गा० ५८८८ । ३ गा० ५८२१, ५८२१ गाथोक्तानि द्वाराणि ।

पाउरणवज्जियाण दुविहो – रयहरण मुहपोत्तिया य ।

पाउरणसहियाण तिविह, चउव्विह, पचविह ।

पडिग्गहधारी वि पाउरणवज्जिओ पाउरणसहितो वा ।

पाउरणवज्जियस्स नवविहो ।

पाउरणसहियस्स दसविहो एक्कारसविहो बारसविहो य ।

परिहारविसुद्धिगादी णियमा पडिग्गहधारी पाउरण । धितिसघयणअभिग्गहविसेसओ भयणिज्ज । महालदियाण विसेसो गच्छे पडिबद्धा अप्पडिबद्धा वा होज्ज ।

इम थेरकप्पियाण –

चोद्दसगं पणुवीसा, ओहोवधुवग्गहो यऽणेगविहो ।
संथारपट्टमादी, उभयो पक्खे वि नायव्वो ॥५६०१॥

थेरकप्पियाण ओहोवही चोद्दसविहो ।

सजतीण ओहोवही पणवीसविहो ।

उभयपक्खे त्ति साधुसाधुणीण उवग्गहिओ उवही सथारगपट्टादि अणेगविहो भवति ॥५६०१॥

जे भिक्खू अणंतरहियाए पुढवीए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि, दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए, सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टियमक्कडासंताणगंसि दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४१॥

जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू मट्टियाकडाए पुढवीए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवण परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्खू चित्तमताए पुढवीए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए मउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणगंमि
दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवण परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा मातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू सिलाए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू लेलूए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे मबीए सहरिए
सओम्से सउदए मउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणगंसि
दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवण परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालसि वा कामजलसि वा
दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंत वा मातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिंमि वा सिलंसि वा लेलुसि वा
अंतलिक्खजायंसि वा दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले
उच्चारपासवण परिट्ठवेइ, परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू खंधसि वा फलहंसि वा मंचमि वा मंडवंसि वा मालसि वा पासायंसि वा
दुब्बद्धे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवण परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंत वा सातिज्जति ।

त सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं॥सू०॥५०॥

पुढवीमादी कुलिमादिएसु थूणादिखंधमादीसु ।
तेसुच्चारादीणि, परिट्ठवे आणमादीणि ॥५९०२॥

आदिसद्दातो मसणिद्धमरक्खादी जे सुत्तपदा भणिता तेसु उच्चारपासवण परिट्ठवेंतस्स आयसंजम-विराहणा भवति, आणादिया य दोसा । चउलहु पच्छित्तं । एतेसु पुढवादी पदा जहा तेरसमे उद्देसगे वक्खाया तहा भाणियव्वा । णवरं – तत्थ ठाणाति भणिया, इह उच्चारपासवणं भाणियव्वं ॥५९०२॥

इमो अववातो –

बितियपदमणप्पज्झे, ओसण्णाइण्णरोहगद्धाणे ।

दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसिरण होति जयणाए ॥५९०३॥

अणप्पज्झो खित्तचित्तादि, ओसण्ण ति चिरायतणं अपरिभोगं "आइण्ण", जणो वि तत्थ वोसिरति, रोहगे वा त अणुण्णाय, दुब्बलो वा साधू, गहणिदुब्बलो वा, थंडिलं गंतुमसमत्थो वा, गिलाणो वा असमत्थो, एते वोसिरति । जयणाए वोसिरति, जहा आयसंजमविराहणा ण भवतीत्यर्थः ॥५९०३॥

"देहडो सीह थोरा य ततो जेट्ठा सहोयरा ।
कणिट्ठा देउलो णण्णो सत्तमो य तिइज्जगो ।
एतेसि मज्झिमो जो उ, मदे वी तेण वित्तिता ।

॥ इति णिसीह-विसेसचुण्णीए सोलसमो उद्देसओ समत्तो ॥

सप्तदश उद्देशकः

उक्त षोडशम । इदानी सप्तदशमोद्दे शक । तस्सिमो सबधो –

आतपरे वावत्ती, खंधादीएसु वोसिरेंतस्स ।
मा सच्चिय कोतुहला, बंधंताऽऽरंभो सत्तरसे ॥५९०४॥

खधादिएसु उच्चारपासवण करेंतस्स आयविराहणा पडतस्स हवेज्ज, उभएण पडतेण कुथुमादि विराहिज्जति, मा सच्चेव आयपरविराहणा कोउग्रमादीहि तण्णगादिबंधतस्स भविस्सति । अतो सत्तरसमस्स आरभो ॥५९०४॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्ठपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधइ, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्ठपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधेल्लगं मुयइ, मुयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

तसपाणतण्णगादी, कोतूहलपडियाए जो उ बंधेज्जा ।
तणपासगमादीहिं, सो पावति आणमादीणि ॥५९०५॥

तसपाणगो वच्छमादि मेदुर, आणादी चउलहु च ।

तण्णग-वाणर-बरहिण,-चगोर-हंस-सुगमाइणो पक्खी ।
गामारण्ण चउप्पद, दिट्ठमदिट्ठा य परिसप्पा ॥५९०६॥

तण्णगग्गहणातो इमे वि पक्खिणो गहिता-बरिहणो त्ति-मोरो, रत्तपादो दीघंग्रीवो जलचरा पक्खी चकोरो, अण्ण वा किं चि किसोरादि गामेयग, मृगादि वा आरण्ण दिट्ठपुव्व वा अदिट्ठपुव्व वा, णउलादि वा, भुयपरिसप्प, सप्पादि वा उरपरिसप्प, एवमानि बधति मुयति वा ॥५९०६॥

बधमुयणे वा इम कारण –

दिस्सिहिति चिरं बद्धो, णयणादि [1]चउप्पडंत दुप्पस्स ।
गमणपुत्तादिकुतूहल, मुयति व जे बारसे दोसा ॥५९०७॥

---

१ चडप्फडत इत्यपि पाठ ।

वितियपदमणप्पज्झे, बंधे अविकोविते य अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५९०८॥

वितियपदमणप्पज्झे, मुचे अविकोविते व अपज्झे ।
जाणते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५९०९॥

उस्सग्गो अववातो य जहा बारसमे उद्देसगे तहा भाणियव्वो ।

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालियं वा मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा संखमालियं वा हड्डमालियं वा कट्ठमालियं वा पत्तमालियं वा पुप्फमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालियं वा, मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा, संखमालियं वा हड्डमालियं वा कट्ठमालियं वा पत्तमालियं वा, पुप्फमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा, धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालियं वा, मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा संखमालियं वा हड्डमालियं वा कट्ठमालियं वा पत्तमालियं वा, पुप्फमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा पिणद्धइ, पिणद्धतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

तणमादिमालियाओ जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।
ताओ कुतूहलेणं, धारेंत आणमादीणि ॥५९१०॥

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५९११॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा, सीसलोहाणि वा रुप्पलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा, करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

अयमादी [1]आगरा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।
ताइं कुतूहलेणं, [2]मालेंते आणमादीणि ॥५६१२॥

बितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६१३॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा सीसलोहाणि वा रुप्पलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा सीसलोहाणि वा रुप्पलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा पिणद्धइ, पिणद्धंत वा सातिज्जइ ॥सू०॥८॥

※ ※ ※

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा करेति, करेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा धरेइ, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि वा सुवण्णसुत्ताणि वा पिणद्धइ पिणद्धंत वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

कडगादी आभरणा, जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।
ताइ कुतूहलेण, [3]मालते आणमादीणि ॥५६१४॥

बितियपदमणप्पज्झे, माले अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणते या वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६१५॥

---

१ लोहा, इत्यपि पाठ । २ कुव्वते, इत्यपि पाठ । ३ परिहते, इत्यपि पाठ ।

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा भामाणि वा मिहामामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा कणगखम्मियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ, करेतं वा सातिज्जइ ।।सू०।।१२।।

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराण वा कवलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा कणगखसियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा धरेड, धरेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१३।।

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा कणगखंसियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति।।सू।।१४।।

अजिणादी वत्था खलु, जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।
ताइं कुतूहलेणं, परिहंते आणमादीणि ।।५९१६।।
त्रितियपदमणप्पज्झे, परिहे अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ।।५९१७।।

जेभिक्खू इत्यादि । करेति धरेति पिणद्धेति, एय लोह सुत्ते आभरण सुत्त, अइणादि जाव वत्थसुत्त ।

एतेसि सुत्ताण भासगाहाण य अत्थो जहा सत्तमुद्देसगे तहा भाणियव्वो, णवर – तत्थ माउग्गामस्स मेहुणपडियाए करेनि, इह पुण कोउयपडियाए करेति । इह चउलहु पच्छित्त । सेस उस्सग्गववादेहिं सविन्थर तुल्ल, णवर – अववादे कज्जेसु बहुप्पगारेसु त्ति जहा ओमे तण्णमालियाओ दाणसड्ढादियाण अब्भत्थिओ करेंति विक्कयट्ठा वा काउ धरेन्ति, कारणे परलिंगट्ठिते वा पिणिद्धति । एव सेसा वि उवउज्जिउ भावेयव्वा ॥५९१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंत वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उवट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उवट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेंत वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥१९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

काय अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा

आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२१।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

काय अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संवाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा

संवाहावेतं वा पलिमद्दावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।२२।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा

भिलिंगावेज्ज वा मक्खावेंत वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।२३।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा

उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२४।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा

पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२५।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा

रयावेज्ज वा फूमावेंतं वा रयावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।२६।।

❀ ❀ ❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा

आमज्जावेंत वा पमज्जावेत वा सातिज्जति ।।सू०।।२७।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायंसि वण अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि वण अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा
मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि वण अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

❀ ❀ ❀

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –
कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेज्ज वा विच्छिंदावेज्ज वा
अच्छिदावेंत वा विच्छिंदावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –
कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेण तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदावित्ता विच्छिदावित्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्ञति ॥सू०॥३४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,

अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेंत वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेण सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेण आलेवणजाएण आलिंपावेज्ज वा विलिंपावेज्ज वा
आलिंपावेंतं वा विलिंपावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा
अब्भंगावेंतं वा मक्खावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –
कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेत्ता मक्खावेत्ता
अन्नयरेणं धूवणजाएणं धूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा
धूवावेंतं वा पधूवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अंगुलीए निवेसाविय निवेसाविय नीहरावेइ
नीहरावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाओ नहसिहाओ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं जंघरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं कक्खरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं मंसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं चक्खुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

❀ ❀ ❀

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –

दते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आघंसावेज्ज वा
पघंसावेज्ज वा, आघसावेंतं वा पघंसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

❀ ❀ ❀

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संवाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा
मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जा णिग्गंथी णिग्गथस्स –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा

रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५४।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा

कप्पावेंत वा संठवावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।५५।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं अच्छिपत्ताइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा

कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५६।।

❀ ❀ ❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा

आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५७।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा

संबाहावेंत वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।५८।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा

भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।५९।।

❀ ❀ ❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा

उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६०।।

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।६१।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फुमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फुमावेंत वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६२।।

❀ ❀ ❀

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा सठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६३।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा सठवावेज्ज वा
कप्पावेंत वा सठवावेतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।

जा णिग्गंथी णिग्गथस्स –

अच्छिमलं वा कण्णमल वा दंतमलं वा नहमलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेत वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६५।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

कायाओ सेयं वा जल्ल वा पकं वा मलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६६।।

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स –

गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६७।।

आमज्जण सकृत् पुन पुन प्रमार्जन ।

जा समणि संजयाणं, गिहिणो अहवा वि अण्णतित्थीणं ।
पादप्पमज्जणमादी, कारेज्जा आणमादीणि ॥५६१८॥

आदिमद्दातो सवाधणादिमुत्ता पच, कायसुत्ता छ, वणसुत्ता छ, गंडसुत्ता छ, पालुकिमिसुत्त, णहसिहा रोमराती-मसुसुत्त च एते तिण्णि, दतसुत्ता तिण्णि, उत्तरोट्ठ [णासिगा] सुत्त च, अच्छिपत्तामज्जणसुत्ता तिण्णि (छ) भमुहसुत्त, सेयसुत्त, अच्छिमलातिसुत्त, सीसदुवारियसुत्त च । एते (एग) चत्तालीस सुत्ता [1]ततिओद्देसगगमेण भाणियव्वा । तत्थ सय करण, इह पुण णिग्गथीण समणस्स अण्णतित्थिएण गारत्थिएण कारवेति त्ति विसेसो ॥५६१८॥

इम अधिकयसुत्ते भण्णति –

समणाण संजतीहिं, अस्संजतएहि तह गिहत्थेहिं ।
गुरुगा गुरुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५६१९॥

सजतीओ जति समणस्स पायप्पमज्जणादी करेंति तो चउगुरुगा, असजतीओ त्ति गिहत्थीओ जति करेंति तत्थ वि चउगुरुगा, गिहत्थपुरिसा जति करेंति तो चउलहुगा, आणादिणो य दोसा भवति ॥५६१९॥

मिच्छत्ते उड्डाहो, विराहणा फासभावसंबंधो ।
पडिगमणादी दोसा, भुत्ताभुत्ते य णायव्वा ॥५६२०॥

इत्थियाहिं कीरत पासित्ता कोइ मिच्छत्त गच्छेज्जा, एते कावडिय त्ति काउ । सजमविराहणा य । इत्थिफासे मोहोदयो परोप्परओ वा फासेण भावसबधो हवेज्जा, ताहे पडिगमण अण्णतित्थियादि दोसा । अहवा – फासतो जो भुत्तभोगी सो पुव्वरयादि सभरिज्जा । अहवा – चितिज्ज एरिसो मम भोइयाए फासो, एरिसी वा मम भोइया आसि । अभुत्तभोइस्स इत्थिफासेण कोउगादि विभासा ॥५६२०॥

दीहं च णीससेज्जा, पुच्छा किं एरिसेण कहिएणं ।
मम भोइयाए सरिसी, सा वा चलणे वदे एवं ॥५६२१॥

सो वा सजओ सजतीए पमज्जमाणीए दीह णीससिज्जा ।

ताहे सा पुच्छति – किमेय दीह ते नीससिय ?

सो भणाति – कि एरिसेण कहिएण ति ? निब्बधे कहेइ, "मम भोइयाए सरिसी तुम ति ।" सा वा चलणे पमज्जती दीह णीससेज्जा । पुच्छा कहण च एव चेव । एते सजतीहिं दोसा ॥५६२१॥

एते चेव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।
आतपरमोहुदीरण, बाउस तह सुत्तपरिहाणी ॥५६२२॥

गिहत्थीसु अतिरित्तदोसा – पच्छ कम्म हत्थे सीतोदकेण पक्खालेज्जा, पादामज्जणादीहिं य उज्जलवेसस्स अप्पणो मोहो उदीज्जेज्जा, सोभामि, [वा] अह को मे एरिस ण कामेति त्ति गव्वो हवेज्ज, त वा उज्जलवेस दट्ठु अण्णेसिं इत्थियाण मोहो उदिज्जेज्ज, सरीरबाउसत्त च कत भवति, जाव त करेति ताव सुत्तत्थपलिमथो भवेज्जा ॥५६२२॥

---

1 तृतीयोद्देशके तु १६ सख्यकसूत्रादारभ्य ६९ सख्यकसूत्रपर्यन्त ५३ सख्याकानि सूत्राणि भवन्ति ।

मपातिमादिघातो, विवज्जओ चेव लोगपरिवाओ ।
गिहिएहि पच्छकम्मं, तम्हा समणेहि कायव्वं ॥५६२३॥

पमज्जमाणी सपातिमे अभिघाएज्जा अजयत्तणेण । विवज्जतो" त्ति साधुणा विभूसापरिवज्जिएण होयव्वं, भणियं च "[1]विभूसा इत्थिसग्गो" सिलागो, एयस्स विवरीयकरणं विवज्जतो भवति । लोग-परिवादो त्ति, जारिसं सेवेमग्गहणं परिसेण गनिवृत्तेन भवितव्यं । एवमादि इत्थीसु दोसा । गिहत्थपुरिसेसु वि इत्थिफासादिया मोत्तु एते चेव दोसा पच्छकम्मं च ॥५६२३॥

इमे य दोसा –

अयते पप्फोडेते, पाणा उप्पीलणं च सपाढी ।
अतिपेल्लणम्मि आता, फोडण खय अट्ठिभगादी ॥५६२४॥

मजओ अजयणाए पप्फोडनो पाण अभिहणेज्ज, बहुणं वा दवेण धोवनो पाणे उप्पिलावेज्ज, खिल्लरवधे वा सपातिमा पडेज्ज । एस संजमविरावणा ।

आयविराधणा इमा – तेण गिहिणा अतीव पेल्लिओ पादो ताहे मनी विकरेज्ज, फोडण ति णित्थरभल्लेण णहादिणा वा खयं करेज्ज, अट्ठि वा भजेज्ज ॥५६२४॥

एते चेव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।
गिहिएहि पच्छकम्मं, कुच्छा तम्हा तु समणेहिं ॥५६२५॥

गतार्था । किं चि विसेसो – पुव्वद्धेण गिहत्थी भणिता पच्छद्धेण गिहत्था । दो वि पाए पप्फोडेनो कुच्छं करेज्ज, कुच्छनो य पच्छाकम्मसभवो । जम्हा एते दोसा तम्हा समणाण समणेहिं कायव्वं, समणीण समणीहिं कायव्वं, ण गिहत्था अण्णतित्थिया वा छदेयव्वा ॥५६२५॥

बितियपदमणप्पज्झे, अद्धाणुच्चाते अप्पणा उ करे ।
अज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥५६२६॥

अणप्पज्झो कारवेज्जा, अणप्पज्झस्स वा कारविज्जति, अद्धाणे पडिवण्णो वा अतीव उच्चाओ पमज्जणादिपदे अप्पणो चेव जयणाए करेज्ज, अप्पणो असत्तो संजतेहिं कारवेज्जा ॥५६२६॥

असती य सजयाणं, पच्छाकडमादिएहि कारेज्जा ।
गिहि-अण्णतित्थिएहिं, गिहत्थि-परतित्थितिविहाहि ॥५६२७॥

असति संजयाण पच्छाकडेहि कारवेति । तआ साभिग्गहेहिं, ततो णिरभिग्गहेहिं । ततो अहाभद्दएहिं । ततो णियल्लएहि मिच्छदिट्ठीहिं । ततो अभिग्गहियमिच्छादिट्ठी- । ततो अण्णतित्थिएहिं मिच्छद्दिट्ठिमादिएहि । पुव्वं असोयवादीहिं, पच्छा सोयवादीहिं । ततो पच्छा "गिहत्थिपरतित्थितिविहाहिं" ति । ततो गिहत्थीहिं णालबद्धाहिं अणालबद्धाहिं, तिविधाहि थेरमज्झिमतरुणीहिं, एवं परतित्थिणीहिं वि संजतीहिं वि एवं चेव । ॥५६२७॥

एसो चेव अत्थो वित्थरतो भण्णति, ततो पच्छा "गिहत्थिपरतित्थितिविहाहि" ति, गिहत्थी दुविहा – णालबद्धा अणालबद्धा य ।

१ दशवै० अ० ८ गा० ५७ ।

तनो इमाहि गिहत्थीहिं णालवद्धाहिं –

माता भगिणी धूया, अज्जियणीयल्लयाण असतीए ।
अणियल्लियथेरीहिं, मज्झ-तरुण-अण्णतित्थीहिं ॥५९२८॥

माता भगिणी धूना अज्जिया णत्तुगी य । एतेसि असतीते एयाहि चेव अण्णतित्थिणीहिं, एतेसिं असतीए अणालबद्धाहि गिहत्थीहि तिविधाहिं कमेण थेर-मज्झिम-तरुणीहिं, तम्रो एयाहि चेव अण्णतित्थियाहि तिविधाहि ॥५९२८॥

तिविहाण वि एयासिं, असतीए संजतिमातिभगिणीहिं ।
अज्जियभगिणीणऽसती, तप्पच्छाऽविसेसतिविहाहिं ॥५९२९॥

अणालबद्धाण थेर-मज्झिम-तरुणीण असति सजतीतो माता भगिणी धूया य अज्जियणत्तुअमादितातो करेंति, ततो पच्छा अवसेसातो अणालबद्धातो तिविहाओ थेर-मज्झिम तरुणीओ करावेति करेति वा ॥५९२९॥

एयम्मि चेव अत्थे अण्णायरियकया इमा गाहा –

माता भगिणी धूया, अज्जिय णत्तीय सेसतिविहा उ ।
एतासि असतीए, तिविहा वि करेति जयणाए ॥५९३०॥

एयासि असतीए त्ति मायभगिणिमादियाण असति सेसतिविहाउ त्ति अणालबद्धातो •सजतीतो तिविधातो थेरमज्झिमतरुणीओ, जयणा जहा फाससबद्धणाणि ण भवति तहा कारवेंति करेति वा ॥५९३०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उवट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उवट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेंत वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७२।।

जे निग्गथे णिग्गथीए –
पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७३।।

❀ ❀ ❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७४।।

जे निग्गथे निग्गंथीए –
कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७५।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिंगावेज्ज वा मक्खावेंत वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति।।सू०।।७६।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –
कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७७।।

जे निग्गथे निग्गंथीए --
कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७८।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

काये अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७६।।

❀ ❀ ❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायम्मि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।८०।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
संबाहावेंतं वा पलिमद्दावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८१।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा
मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८२।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८३।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८४।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८५।।

❀ ❀ ❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेज्ज वा विच्छिंदावेज्ज वा
अच्छिंदावेंत वा विच्छिंदावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।८६।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेण तिक्खेणं सत्थजाएण अच्छिंदावित्ता विच्छिंदावित्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८७।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेणं तिक्खेण सत्थजाएण अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेंत वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।८८।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेण आलेवणजाएण आलिपावेज्ज वा विलिपावेज्ज वा
आलिपावेंतं वा विलिपावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।८९।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेण तिक्खेण सत्थजाएणं
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता

सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा
अब्भंगावेंतं वा मक्खावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेण सत्थजाएण
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएण आलिंपावेत्ता विलिपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेत्ता मक्खावेत्ता
अन्नयरेण धूवणजाएणं धूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा
धूवावेंत वा पधूवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९१॥

❋　　❋　　❋

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अंगुलीए निवेसाविय निवेसाविय नीहरावेइ
नीहरावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९२॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाओ नहसिहाओ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू० ।९३॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं जंघरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥९४॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं कक्खरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंत वा संठवावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥९५॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं मंसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९६।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंत वा सातिज्जति ।।सू०।।९७।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं चक्खुरोमाइ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा मठवावेंतं वा मातिज्जति ।।सू०।।९८।।

* * *

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आघंसावेज्ज वा
पघमावेज्ज वा, आघमावेंतं वा पघमावतं वा सातिज्जति ।।सू०।।९९।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेंत वा पधोयावेंत वा सातिज्जति।।सू०।।१००।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०१।।

* * *

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१०२।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मंबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा
मंबाहावेंत वा पलिमद्दावेंतं वा मातिज्जति ।।सू०।।१०३।।

जे निग्गंथे णिग्गंथीए –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा
मक्खावेंत वा भिलिंगावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०४॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा
उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०५॥

जे निग्गंथे निग्गथीए –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेंत वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०६॥

ज निग्गंथे निग्गंथीए –

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०७॥

जे निग्गंथे निग्गंथीस्स –

दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंत वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०८॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं अच्छिपत्ताइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेंतं वा संठवावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०९॥

❀　❀　❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेंत वा पमज्जावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११०॥

जे निग्गंथे णिग्गंथीए –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संबाहावेज्ज वा पलिमद्दावेज्ज वा

संबाहावेंत वा पलिमद्दावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१११॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा

भिलिंगावेज्ज वा, मक्खावेंतं वा भिलिंगावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥११२॥

❀ ❀ ❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्टावेज्ज वा

उल्लोलावेंतं वा उव्वट्टावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११३॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा

पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेंतं वा पधोयावेंतं वा सातिज्जति॥सू०॥११४॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा

फूमावेंतं वा रयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११५॥

❀ ❀ ❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा

कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११६॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा

कप्पावेंतं वा संठवावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११७॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।११८।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेंतं वा विसोहावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।११९।।

जे निग्गंथे निग्गंथीए –

गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१२०।।

सुत्ता एक्कचत्तालीस ततिओद्देसगगमेण जाव सीसदुवारेति सुत्त[1] अत्थो पूर्ववत् ।

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ णायव्वो ।
कारावण संजतेहिं, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ।।५९३१।।

संजतो गारत्थिमादिएहिं संजतीण पादपमज्जणाती कारवेति, उत्तरोट्ठसुत्ता ण संभवति, अलक्खणाए वा संभवति ।।५९२९।।

जे निग्गंथे निग्गंथस्स सरिसगस्स अंते ओवासे संते ओवासे
न देइ, न देंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१२१।।

णिग्गंथगथो अतो वसहीए व्रतसंजमगुणादीहिं तुल्लो सरिसो संतमिति विज्जमाण ओवासो त्ति – अवगासो – स्थानमित्यर्थ । अदेंतस्स चउलहू ।

इमो सरिसो –

ठितकप्पम्मि दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहमण्णतरे ।
उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिसकप्पो स सरिसो उ ।।५९३२।।

दसविहो ठियकप्पो इमो –

आचेलक्कुद्देसिय, सेज्जायर रायपिंड किइकम्मे ।
वय जेट्ठ पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवणकप्पे ।।५९३३।।

इमस्स वि [1]अचेलको धम्मो, इमस्स वि उद्देसिय ण कप्पइ । एव सेज्जायरपिंडो रायपिंडो य ।

कितिकम्म दुविध – अब्भुट्ठाण वंदण च । त दुविह पि इमोवि जहारुह करेति, इमो वि जहारुह । अधवा – किं कम्म सव्वाहि संजतीहि अज्जदिक्खियस्स वि संजतस्स कायव्व दो वि तुल्लमिच्छति ।

१ आचेलक्को, इत्यपि पाठ ।

इमस्स वि पच महव्वयाणि। जो पत्म पचमहव्वयारूढो सो जिट्ठो सामाइए वा ठविग्रो। इमस्स वि इमस्स वि अइयारो होउ मा वा, उभयसभ इमस्स वि इमस्स वि पडिक्कमति। उदुबद्धे मास मास एगत्थ अच्छति इमस्स वि इमस्स वि। चत्तारि मासा वासासु पज्जोसवणकप्पे ण विहरति इमस्स वि इमस्स वि। एसो दसविहो ठियकप्पो ॥५६३२॥

ठवणाकप्पो दुविहो – अकप्पठवणाकप्पो सेहठवणाकप्पो य –

आहार उवहि सेज्जा, अकप्पिएण तु जो ण गिण्हावे।
ण य दिक्खेति अणट्ठा, अडयालीसं पि पडिकुट्ठे ॥५६३४॥

आहार-उवहि सेज्ज अकप्पिय ण गिण्हति। एस अकप्पठवणा। सेहठवणाकप्पो – अट्ठारस पुरिसेसु, वीस इत्थीसु, दस णपुंसेसु, एते अडयालीस ण दिक्खेइ णिक्कारणे ॥५६३४॥

सो वि इमो [1]उत्तरगुणकप्पो –

उग्गमविसुद्धिमादिसु, सीलंगेसु तु समणधम्मेसु।
उत्तरगुणसरिसकप्पो, विसरिसधम्मो विसरिसो उ ॥५६३५॥

पिडस्स जा विसोही ॥ गाहा ॥

तत्थ उग्गमसुद्ध गेण्हति, आदिसद्दाओ उप्पायणएसणातो, समितीओ पच भावणा बारस, तवो दुविहो, पडिमा बारस, अभिग्गहा दव्वादिया, एते सीलगगहणेण गहिया। अहवा – सीलगगहणाओ अट्ठारससीलगसहस्सा। एयम्मि ठितकप्पे उत्तरगुणकप्पे वा जो सरिसकप्पो सो सरिसो भवति, जो पुण एतेसिं ठाणाण अण्णयरे वि ठाणे सीदति सो विसरिसधम्मो भवति।

अहवा – ठियकप्पे दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहे, णियमा सरिसो। उत्तरगुणे पुण केसु विसरिसो चेव, जहा तवपडिमाभिग्गहेसु ॥५६३५॥

अहवा सरिसो इमो –

अण्णो वि य आएसो, संविग्गो अहव एस संभोगी।
दोसु वि य अधीगारो, कारणे इतरे वि सरिसाओ ॥५६३६॥

जो सविग्गो सो सव्वो चेव सरिसो, अहवा – जो सभोइओ सो सरिसो। अहवा – कारण पप्प इयरे त्ति – पासत्थअसभोइया ते वि सरिसा भवन्ति ॥५६३६॥

जो तस्स सरिसगस्स तु, संतो वा से ण देति ओवासं।
णिक्कारणम्मि लहुया, कारणे गुरुगा य आणादी ॥५६३७॥

सतमोवास निक्कारणियमागयस्स जइ ण देति तो चउलहु। सतमोवास कारणियमागयस्स जइ न देइ तो चउगुरु, आणादिया य दोसा ॥५६३७॥

इमे कारणा जेहि आगओ –

उदगागणितेणोमे, अद्धाण गिलाण सावयपउट्ठे।
एतेहिं कारणिओ, णिक्कारणिओ य विवरीओ ॥५६३८॥

---

१ गा० ५६२७।

अण्णगामे सग्गामे वा अण्णवसधीए साधू ठिता, तेसिं सा वसती उदकेन प्लाविता अगणिणा वा दड्ढा ते आगता, तेण-सावयदुट्ठेहिं वा उवद्दविज्जमाणा सरणमागया, अद्धाणपडिवण्णा वा वज्जोसहकज्जेसु वा गिलाणट्ठमागयस्स एवमादिएहिं पयोयणेहिं जो आगतो सो कारणिओ। अतो विवरीओ दप्पतो आगतो णिक्कारणिओ ॥५६३८॥

वसहि सभावे बहि वसतस्स इमे दोसा –

कुयरदससमोससीता, सावय-वाल-सतक्करगा वा ।
दोस वहू वसतो वहितो जे ते सव्विसेस उविंति अदेंते ॥५६३६॥

कुच्छियचरा कुचरा पारदारिकादि तेहिं उवद्दविज्जति, दससगादीहिं वा खज्जति, उस्सादि वा जल सीतं वा पडति, सीहादिसावएण सप्पादिवालेण वा खज्जइ, तक्करे त्ति चोरा तेहिं वा मुस्सति हरिज्जति। एवमादि बहिं वसते बहुदोसा। जे तस्स साधुस्स वहिं वसतो दोसा ते सव्वे उवेंति त्ति – भवंति अदेंतस्स। जं तेसु पच्छित्तं तं सव्वं अदेंतस्स भवतीत्यर्थः ॥५६३६॥

किं चान्यत् –

एगट्ठा संभोगो, जा कारुवकारिता परोप्परओ ।
अविविरा ऽवच्छल्ला, हवंति एवं तु छेदो य ॥५६४०॥

अविवित्तभावा अदेन्तस्स अवच्छलता य भवति, संभोगवोच्छित्ती, साहम्मियवच्छल्लवोच्छित्ती वा, अहवा – पवयणवुच्छित्ती वा, तम्हा साहुणा साहुस्स दढसोहिएण होयव्वं ॥५६४०॥

जति एक्कमाणजिमित्ता, निहिणो वि हु दीहसोहिया होंति ।
जिणवयणबाहिभूया, धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥५६४१॥ कश्चा

किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुंजिऊण समणेण ।
सकसा हु एक्कमेक्के, नियगं पि व रक्खितो देहो ॥५६४२॥

आवत्तीए जहा अप्प रक्खति तहा अण्णो वि आवत्तीए रक्खियव्वो ॥५६४२॥

एव खेत्ते अखेत्ते वा वसधीए वासो दातव्वो। असथरणे खेत्ते वि अन्नगच्छस्स अवगासो दातव्वो।

जतो भण्णति –

अत्थि हु वसभग्गामा, कुदेस-णगरोवमा सुहविहारा ।
बहुगच्छुवग्गहकरा, सीमाछेदेण वसियव्वा ॥५६४३॥

अत्थि त्ति विज्जए वसभग्गामो णाम जत्थ उडुबद्धे आयरिओ अप्पबितिओ गणावच्छेओ अप्पतितिओ एस पंच, एतेण पमाणेण जत्थ तिण्णि गच्छा परिवसति एय वसभखेत्तं।

वासासु आयरिओ अप्पततितो, गणावच्छेतितो अप्पचउत्थो एते सत्त, एतेण पमाणेण जत्थ तिण्णि गच्छा परिवसति एय वसभखेत्तं। एते एक्कवीस, एय वसभखेत्तं। कुच्छिओ देसो कुदेसो उवमिज्जति जो गामो कुदेस णगरोवमो, सो य सुहविहारो सुलभभत्तपाण वसधी वत्थ णिरुवद्दव च नृप्रभृतिबहुत्व पुव्वभणिए सत्थप्पमाणेण उवग्गहे वट्टति, ते य बहुगच्छा जति सम ठिया तो साधारणं खेत्तं।

तत्थ सीमच्छेदेण वसियव्वं, इमो सीमच्छेदो –

तुम्ह सचित्तं, अम्ह अचित्तं।

अहवा – तुम्ह बाहिं, अम्ह अतो। तुम्ह इत्थी, अम्ह पुरिसा।

अहवा – तुम्ह सग्गामो अम्ह वाताहडा कलेहिं वा वाडगसाहाहिं वा उब्भामगेहिं।

अहवा – ज लब्भति त सव्व सामण्ण।

अहवा – जो ज लाही तस्स त। एव सीमच्छदेण वसियव्व, णो अधिकरण कायव्व। परखेत्ते वि खेत्तियवसेण सीमच्छेदो कायव्वा। खित्तएण वि अमायाविणा भवियव्व ॥५८४३॥

भवे कारण ण देज्जा वि –

बितियपद पारंचिय, असिव गिलाणे य उत्तमट्ठे य।
अव्वोच्छित्तीवासे, असति णिक्कारणे जतणा ॥५६४४॥

पारचिय असिवस्स इमा विभासा –

पारंचिओ ण देज्ज व, दिज्जति व ण तस्सुवस्सए ठाओ।
दुविहे असिवे बाहिं, ठितपडियरणं च ते वा वी ॥५६४५॥

पारचिओ अण्णेसि अप्पणो ठाण ण देज्जा, पारचियस्स वा ठाओ न दिज्जति, असिवगहियस्स ण दिज्जति, असिवगहिओ वा वसहीए ठाण ण देज्ज, असिवगहियस्स अण्णवसहिठियस्स वेयावच्च कायव्व, अण्णवसहिठितो वा असिवगहियाण वेयावच्च करेइ। दुविह पुण असिव। चउभगे पच्छिमा जा दो भगा साहु अभद्दा ॥५६४५॥

इयाणि [1]गिलाणउत्तिमट्ठाण विभासा –

अतरतमिगावण्णहि, मिगपरिसा वा तरंतो अण्णत्थ।
एमेव उतिमट्ठे, समाहि पाणादि उभयम्मि ॥५६४६॥

जेसि अतरतो अत्थि सो य आगतुगो मिगो अगीयत्थो होज्ज अपरिणामो वा ताहे सो अण्णवसहीए ठविज्जति अहवा – गिलाणो आगओ वत्थव्वाण य मिगपरिसा ताहे सो गिलाणो अण्णत्थ ठविज्जति, एव उत्तिमट्ठपडिवण्णे वि समाहिणिमित्त पाणगादि दायव्व। तत्थ "उभयमि" त्ति जति आगतुगो मिगो तो अण्ण वसहीए ठविज्जति। अह वत्थव्वगपरिसा मिगा तो उत्तिमट्ठपडिवण्णे अण्णवसहीए ठविज्जदि ॥५६४६॥

[2]अव्वोच्छित्तिविभासा इमा –

छेदसुतणिसीहादी, अत्थो य गतो य छेदसुत्तादी।
मंतनिमित्तोसहिपाहुडे, य गाहेंति अण्णत्थ ॥५६४७॥

णिसीहमादियस्स छेदसुत्तस्स जो अत्थो आगतो सुत्त वा मोक्कलाणि वा पच्छित्तविहाणाणि मताणि वा जोणिपाहुड वा गाहतो अण्णत्थ वा गाहेंति अण्णत्थ वा ते मिगा ठविज्जति, जत्थ वसहीए वा दिज्जति तत्थ मिगाण ओवासो ण दिज्जति।

एव ता णिक्कारणे पारचियादयाण ओवासो ण दिज्जते ॥५६४७॥

इमो अववादे अववादो - पुणो इम कारणमविक्खिऊण असिवादिके पारचियादीण वि ओवासो दिज्जति –

---

[1] गा० ५६४४। [2] गा० ५६४२।

जा निग्गंथी निग्गंथीए मरिसियाए अंते ओवासे मंते ओवासे-
न देइ न देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२२॥

एमेव गमो णियमा, णिग्गथीण पि होइ नायव्वो ।
पुव्वे अवरे य पदे, एगं पारचियं मोत्तुं ॥५६४८॥ कठ्या

णवर – अववादपदे सजनीण पारचिय णत्थि ।

जे भिक्खू मालोहडं असणं वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२३॥

मालोहडं पि तिविहं, उड्ढमहो उभयओ य णायव्वं ।
एक्केक्कं पि य दुविहं जहण्णमुक्कोसयं चेव ॥५६४९॥

उड्ढमालोहड बिभूमादिसु, अहामालोहड भूमिघरादिसु, उभयमालोहड मचादिसु, समश्रेणिस्थित, अहवा – कुडिमादिसु भूमिट्ठितो अधोसिरो ज कड्ढति । अग्गतलेहिं ठाउ ज उत्तारेइ त जहण्ण । पीढगादिसु ज आरोढु उत्तारेइ त सव्व उक्कोस ॥५६४९॥

भिक्खू जहण्णयम्मी, गेरुत उक्कोसयम्मि नायव्वो ।
अहिडसण मालपडणे, एवमादी नहिं दोसा ॥५६५०॥

सिक्कताओ उत्तारिउकामा साहुणा पडिसिद्धा तच्चन्नियट्ठा गिण्हइ अहिणा डक्का मया । मालाओ उत्तारिउकामा साहुणा पडिसिद्धा परिव्वायगट्ठा उत्तारेती पडिया, जतखीलेण पोट्ट फाडिय मया ॥५६५०॥

इमे उक्कोसे उदाहरणा –

आसंद पीढ मंचग, जंतोदुक्खलपडंत उभयवहो ।
वोच्छेय-पदोसादी, उड्डाहमणा णिवातो य ॥५६५१॥

सेस पिडणिज्जुत्ति-अणुसारेण भाणियव्व ।

इमा सोही –

सुत्तणिवातो उक्कोसयम्मि तं खंधमादिसु हवेज्जा ।
एतेसामण्णतरं, तं सेवंतम्मि आणादी ॥५६५२॥

उक्कोसे चउलहु, जहण्णे मासलहु, सेस कठ ।

इम बितियपद –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाणरोहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥५६५३॥

अणेगसो गतत्था । णवर-गीयत्थो पणगपरिहाणीए जयणाए गेण्हइ ॥५६५३॥

जे भिक्खू कोट्ठियाउत्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
उक्कुज्जिय निक्कुज्जिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२४॥

पुग्गिमपमाणा हीणाधिया वा चिक्खल्लमती कोट्ठिआ भवति, कलिजो णाम वसमयो कडवल्लो सट्ठनी वि भण्णति। अण्णे भणंति – उट्ठियाउवरिं हुत्तिकरण उक्कुज्जिय, उड्डाए तिरियहुत्तकरण अवकुज्जिय, उहरिय त्ति – पेढियमादिसु आरुभिउ आआरेति। अथवा – काय उच्च करेज्जा उक्कुज्जियडडायत तद्धद गृण्हाति, काय उड्ड कृत्वा गृण्हाति – उणामिय इत्यर्थः।

कोट्ठिग्गमादीएसुं, उभओ मालोहडं तु णायव्वं।
ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति बितियपयं ॥५९५४॥

एवं उभयमालोहड दमिय ड्ड, ते चेव दोसा बितियपयं च।

जे भिक्खू मट्टिओलित्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
उब्भिंदिय निब्भिंदिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२५॥

घयफाणियादिभायणे छूढ त पिहित सरावगादिणा मट्टियाए उल्लित्त त उब्भिंदिय दतस्स जो गेण्हइ तस्स चउलहु।

पिहितुब्भिण्णकवाडे, फासुग अप्फासुगे य बोधव्वे।
अप्फासु पुढविमादी, फासुगछगणादिदद्दरए ॥५९५५॥

उब्भिण्णं दुविधं – पिहुब्भिण्णं वा कवाडुब्भिण्णं च।

पिहुब्भिण्णं दुविधं–फासुयं अफासुयं च। जं तं फासयं तं अचित्तं वा मीसं वा। अफासुयं पुढविमादि-छसु काएसु जहासंभवं भाणियव्वं। जं फासुअं छगणेण अहवा – वत्थेण चम्मेण वा दद्दरियं। दद्दरपिहि-उब्भिण्णे मासलहु, सेसपिहुब्भिण्णेसु चउलहु, अणंतेसु चउगुरु परित्तमीसेसु मासलहुं अणंतमीसेसु मासगुरु, साहुणिमित्तं उब्भिण्णे कयविक्कतेसु अधिकरणं कवाडपिहितुब्भिण्णे कुंचियवेधे तालए वा आवत्तणपेढियाए वा तसमादिविराधणा। सेसं जहा पिंडणिज्जुत्तीए ॥५९५५॥

एतेसामण्णतरं, पिहितुब्भिण्णं तु गेण्हती जो तु।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥५९५६॥ कण्ठ्या

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थो ॥५९५७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविपतिट्ठियं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२६॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउपतिट्ठियं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२७॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तेउपतिट्ठियं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२८॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सतिकायपतिट्ठियं पडिग्गाहेति पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१२९।।

सच्चित्तमीसएसु, काएसु य होंति दुविहनिक्खित्तं ।
अणंतर-परंपरे वि य, विभासियव्व जहा सुत्ते ।।५९५८।।

पुढवादी काया ते दुविधा – सच्चित्ता मीसा वा । सचित्तेसु अणंतरणिक्खित्त परंपरणिक्खित्त वा । मीसेसु वि अणंतरणिक्खित्त परंपरणिक्खित्त वा । पिंडणिज्जुत्तिगाहासुत्ते जहा तहा सवित्थरं भाणियव्वं । आयारविनियसुयक्खधे वा जहा सत्तमे पिंडेसणासुत्ते तहा भाणियव्वं ।।५९५८।।

सुत्तणिवातो सच्चित्तऽणंतरे त तु गेण्हती जो उ ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ।।५९५९।।

परित्तसचित्तेसु अणंतरणिक्खित्ते चउलहु, एत्थ सुत्त णिवयति । सचित्तपरंपरे मासलहु, मीसअणंतरे मासलहु परंपर पणगं, अणंते एते चेव गुरुगा पच्छित्ता ।।५९५९।।

चोदगाह –

तत्थ भवे णणु एव, उक्खिप्पतम्मि तेसिं आसासो ।
सजतिणिमित्त घट्टण, थेरुवमाए ण तं जुत्तं ।।५९६०।।

पुढवादिकायाण उवरिं ठिय ज तम्मि उक्खिप्पंते णणु तेसिं आसासो भवति ?

आचार्याह – तम्मि उक्खिप्पंते जा सघट्टणा सा संजयणिमित्त, ताण य अप्पसघयणाण सघट्टणाए महंती वेदणा भवति ।।५९६०।।

इमा थेरुवमा –

जरजज्जरो उ थेरो, तरुणेणं जमलपाणिमुद्धहतो ।
जारिसवेदण देहे, एगिंदियघट्टिते तह उ ।।५९६१।।

जहा जराजुण्णदेहो थेरो बलवता तरुणेण जमलपाणिणा मुद्धे आहते जारिसं वेयण वेयति, ततो अधिकतर त सघट्टिता वेयणं अणुहवंति, तम्हा ण जुत्त ज तुमं भणसि ।।५९६१।।

इम बितियपद –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ।।५९६२।।

पूर्ववत् । गीयत्था इमाए जयणाए गहणं करेंति – पुव्वं मीसे परंपरट्ठितं गेण्हंति, ततो मीसे अणंतरे ततो सचित्ते परंपरं, ततो सचित्ते अणंतरं, एवं अणंतकाए वि, एस परित्ताणंतेसु कमो दरिसिओ ।।५९६२।।

गहणे पुण इमा जयणा –

पुव्वं मीसपरंपर, मीसे तत्तो अणंतरे गहणं ।
सच्चित्त परंपरऽणंतरे य एमेव य अणंते ।।५९६३।।

पुव्व परित्ते मीसे परपरट्ठितो गेण्हति, ततो मीसअणतपरपर, ततो मचित्तपरित्तपरपर, ततो अणतमीसअणतर, ततो अणतसचित्तपरपर, ततो परित्तसचित्तअणतर, ततो अणतसचित्तअणतर आहारे भणिय ॥५९६३॥

आहारे जो उ गमो, णियमा सो चेव होइ उवहिम्मि ।
णायव्वो तु मतिमता, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥५९६४॥ कठ्या

जे भिक्खू अच्चुसिण असण वा पाणं वा खाइमं वा साइम वा सुप्पेण वा विहुणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमित्ता वीइत्ता आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१३०॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उसिणुसिणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३१॥

जे भिक्खू असणादी, उसिणं णिव्वविय संजयट्ठाए ।
विहुवणमाईएहि, पडिच्छए आणमादीणि ॥५९६५॥

"णिव्वाविय" त्ति उल्लवेऊण, सेस कठ्य ।

उसिणे घेप्पते इमे दोसा—

दायग-गाहगडाहो, परिसडणे काय-लेव-णासो य ।
डज्झति करोति पादस्स छड्डणे हाणि उड्डाहो ॥५९६६॥

परिसडते वा भूमीते छक्कायवहो, अच्चुसिणेण व, भायणस्स लेवो डज्झति, उसिणे दिज्जमाणे वा करे डज्झमाणो पाय त छड्डेज्ज, तम्मि भग्गे असति भायणस्स अप्पणो हाणी, बहु असणादि परिट्ठविय दट्ठ "बहि फोड" त्ति उड्डाहो । जणो वा पुच्छति – "कह डड्ढो" ? त्ति । सजयस्स भिक्ख देज्जमाणो जणे फुसते उड्डाहो त्ति ॥५९६६॥

इमो अववादो -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, काले वा अतिच्छमाणम्मि ॥५९६७॥ पूववत्

काले अतिच्छमाणे त्ति जाव त परिक्कमेण सीतीभवति ताव आइच्चो उवत्थम गच्छति । अतो सूरादीहिं तुरिय सीयलिज्जति, ण, दोसो ॥५९६७॥

उसिणे पुण कारणे घेप्पते इमा जयणा –

गिण्हति णिमीतितु वा, सज्झाए महीय वा ठवेऊण ।
पत्ताबंधगते वा, घोलणगहिते व जतणाए ॥५९६८॥

उववसिता पदसधिय जहा ण डज्झति तहा गेण्हति । अहवा – मचगे मचिकाए वा मज्झे भूमीए वा पाद ठवेत्ता गेण्हति । पत्तगबधगतो वा गेण्हति । अच्चुसिग च पादट्ठित घालेइ, मा लेवो डज्झिहिति । एयाए जयणाए कारणे गेण्हतो अदासो ॥५९६८॥

जे भिक्खू उस्सेइमं वा ससेइमं वा चाउलोदगं वा वालोदगं वा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अंबकंजियं वा सुद्धवियडं वा अहुणा धोयं अणंबिलं अपरिणयं अवक्कंतजीवं अविद्धत्थं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३२॥

उस्सेतिममादीया, पाणा वुत्ता उ जत्तिया सुत्ते ।
तेसिं अण्णतरायं, गेण्हंते आणमादीणि ॥५९६९॥

उसिण सीतोदगे छुब्भति त उस्सइमपाणय । ज पुण उसिण चेव उवरि सीतोदगेण चेव सिचिय त ससेइम । अहवा–ससेतिम, तिला उण्हपाणिएण सिण्णा जति सीतोदगा धोवति तो ससेतिम भण्णति । चाउलाण धोवण चाउलोदग । अधुणा धोत अचिरकालधात । रसतो अणबीभूय । ज जीवेण विप्पमुक्क त वक्कत, ण वक्कत अवक्कत, सचेतन मिश्र वा इत्यर्थ । जमवण्णमजात त परिणय, न परिणय अपरिणय – स्वभाववर्णस्थमित्यर्थ । ज वण्णगधरसफासेहिं सव्वेहिं ध्वस्त त विध्वस्त, अणेगधा वा ध्वस्त विध्वस्त, ण विद्धत्थ अविद्धत्थ, सवथा स्वभावस्थमित्यर्थ । अहवा – एए एगट्ठिया । अपरिणय गेण्हतस्स चउलहु, आणाइया य दोसा ॥५९६९॥

उस्सेइमस्स इम वक्खाण –

सीतोदगम्मि छुब्भति, दीवगमादी उसेइमं पिट्ठं ।
संसेइमं पुण तिला, सिण्णा छुब्भति जत्थुदए ॥५९७०॥

मरहट्ठविसए उस्सेइया दीवगा सीआदगे । छुब्भति । उस्सेइमे उदाहरण, जहा-पिट्ठ । अहवा – पिट्ठस्स उस्सेज्जमाणस्स हेट्ठ ज पाणिय त उस्सइम । पच्छद्ध गताथम् ॥५९७०॥

पढमुस्सेतिमसुदयं, अकप्पकप्पं च होति केसिंचि ।
तं तु ण जुज्जति जम्हा, उसिणं मीसं ति जा दंडो ॥५९७१॥

ते दीवगादी उस्सेतिमा, एकम्मि पाणिए दोसु तिसु वा णिच्चलिज्जति तत्थ बितियततिज्जा य सव्वसि चेव अकप्पा, पढम पाणिय त पि अकप्प चेव । केसि चि आयरियाण कप्प, त ण घडति ।

कम्हा ? जम्हा उसिणोदगमवि अणुव्वत्ते डडे मीस भवति, ट पुण कहिं उस्सेतिमेसु छूढेसु अचित्त भविष्यतीत्यथ ? ।५९७ ॥

इमो चाउलोदे विही –

पढमं बितियं ततियं, चाउलउदगं तु होति सम्मिस्सं ।
तेण परं तु चउत्थे, सुत्तणिवातो इहं भणितो ॥५९७२॥

पढम बितिय ततिय चाउलोदगा एत णियमा मिस्सा भवति, तेण पर चउत्थादि सचित्ता । एत्थ सुत्तणिवाता चउलादगमित्यथ । आदिल्लेसु तिसु वि सामत्तट्ठ ।

अण्णे पुण – ततिए वा चाउलसोधणे सुत्तणिवायमिच्छति, जेण तत्थ बहुं अपरिणयं, थोवं परिणयमिति ।।५९७२।।

जं उस्सेतिमादि मिस्सं तस्सिमो गहणविही –

कालेणं पुण कप्पति, अंबरसं वण्णगंधपरिणामं ।
वण्णातिविगतलिंगं, णज्जति वुक्कंतजीवं ति ।।५९७३।।

तं उस्सेतिमं चिरकालं अच्छंतं जया रसतो अंबरसं, वण्णतो विवण्णं, गंधओ अण्णगंधं, फासतो चिक्खिल्लं, एवं तं उदगं वण्णादिविगतलिंगं दट्ठुं णज्जति जहा विगयजीवं ति तहा घेप्पति ।

चोदगाह – "जेसिं फुडं गमणादिकं जीवलिंगं ते णज्जंति, जहा विगयजीवा त्ति । पुढवादी पुण अव्वत्तजीवलिंगे कहं णाता, जहा विगतजीवं ?" ति ।।५९७३।।

आचार्याह –

कामं खलु चेतण्णं, सव्वेसेगिंदियाण अव्वत्तं ।
परिणामो पुण तेसिं, वण्णादि इंधणासज्ज ।।५९७४।।

पुव्वद्धं कंठं । पच्छद्धे इमो अत्थो–बहुमज्झत्थो विंधणेण जहासंखं अप्पमज्झ चिरकालोवलक्खिता जहा वण्णादी तहा तेसिं अव्वभिचारी अजीवत्ते परिणामो लक्खिज्जति ।।५९७४।।

एमेव चाउलोदे, पढमे बिति-ततिए तिण्णि आएसा ।
तेण परं चिरधोतं, जहिं सुत्तं मीसयं सेसं ।।५९७५।।

चाउलोदगे वि जे पढमबितिता चाउलोदगा ते अहुणा धोता मीसा ।"तेण परं चिर धोयं जहिं सुत्तं" ति तेण परं चउत्थादि चाउलोदगं तं चिरधोयं पि सचित्तं, जहिं सुत्तं णिवयति तस्याग्रहणमेव । जं पुण "मीसयं सेसं" ति तम्मि इमे तिण्णि अणागमिगा आदेसा –

तत्थेगो भणति -- चाउला धोवित्ता जत्थ तं चाउलोदगं छुब्भति तत्थ जातो कण्णे फुसिताओ लग्गाओ ताओ ण जाव सुक्कंति ताव तं मीसं, "तेण परं" ति – तासु सुक्कासु तं अचित्तं भवतीत्यर्थः । १ ।

अवरो भणति – चाउला जाव सिज्झंति ताव त मीसं, तेण परं अचित्तं पूर्ववत् । २ ।

अवरो भणति – तम्मि चाउलोदगे जे बुब्बुआ ते जाव अच्छति ताव मीसं, तेण परं अचित्तं पूर्ववत् । ३ ।

आचार्याह –"तेण परं चिरधोयं' ति एते अक्खरा पुणो चारिज्जंति, जेण फुसिताओ सि(सी)यकाले चिरं पि अच्छंति । गिम्हकाले लहुं सुसंति, चाउला वि लहुं चिरेण वा सिज्झंति, बुब्बुआ वि चिरं नीवाए अच्छंति, पवाए लहुं विणस्संति, "तेणं" ति तेण कारणेण एते अणादेसा । "परं" ति एतेसिं आएसाणं इमं वरं प्रधानं आगमितं आदेसंतरं – "[1]जं जाणेज्ज चिराधोतं" सिलोगो । बहुप्पसण्णं च मतीए दंसणेण य अचित्तं जाणेत्ता गेण्हति । जत्थ "[2]वालधोवणं" ति आलावगो-चमरिवाला धोव्वंति तक्कादीहिं, पच्छा ते चमरा सुद्धोदगेण धोवंति । तत्थऽवि पढमबितियततिया मीसा, जं च पच्छिमं तं सचित्तं, तत्थ सुत्तनिवातो । अहवा वालधोवणं सुरा गालिज्जति जाए कंबलीए सा पच्छा उदएण धोवइ, तत्थ वि पढमाति धोवणा मीसा,

---

१ दशवै० अ० ५ उ० १ गा० ७६ । २ गा० सूत्र १३२ ।

पच्छिमा सचित्ता, तम्मि मुत्तणिवातो। अहवा – वालधोवण रलयाएकत्वात् वारागागदुगो, सो तक्कवियडादि-भाविता धोव्वइ तत्थ वि पढमादी मीसा, पच्छिमा सचित्ता, तम्मि मुत्तणिवातो। सव्वेसु मीस कालेण परिणय गे ष्फ ॥५९७५॥

इम वितियपद –

अमिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे।
अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥५९७६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइं वागरेइ
वागरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३३॥

जहा मे करपादेसु लेहा गिव्वत्तिता, चदचक्ककुमादी दीसति सुसठाणे, सुपमाणता य देहस्स, तहा म अवस्स आयरिएण भवियव्व, जो एव वागरेइ तस्स चउलहु आणादिया य।

ते लक्खणा इमे –

माणुम्माणपमाणं, लेहसत्तवपुअंगमंगाइं।
जे भिक्खू वागरेति, आयरियत्तादि आणादी ॥५९७७॥

माणस्स उम्माणस्स य इमा विभासा –

छड्डेति तो य दोणं, छूढो दोणीए जो तु पुण्णाए।
सो माणजुतो पुरिसो, ओमाणे अद्धभारगुरू ॥५९७८॥

माण नाम पुरिसप्पमाणातो ईसिअतिरित्ता उट्टिया कीरइ सा पाणियस्स समणिबद्धा भरिज्जति, पच्छा तत्थ पुरिसो पाक्खप्पति, जति द्रोणो पाणियस्स छड्डेति तो माणजुत्तो पुरिसो, अहवा – पुरिस छाढूण पच्छा पाणियस्स भरिज्जति तम्मि पुरिसे ओसित्ते जइ सा कुडी द्रोण पाणियस्स पडिच्छइ तो माणजुत्तो। उम्माणे त्ति जति तुलाए आरोविओ अद्धभार तुलति तो उम्माणजुत्तो भवति ॥५९७८॥

अट्ठसतमंगुलुच्चो, समुहाइं वा समुस्सितो णवओ।
सो होति पमाणजुतो, संपुण्णंगो व जो होति ॥५९७९॥ कण्ठ्या

[1]लेह त्ति अस्य व्याख्या –

मणिवधाओ पवत्ता, अंगुट्ठे जस्स परिगता लेहा।
सा कुणति धणमसिद्धं, लोगपहाण च आयरियं ॥५९८०॥ कण्ठ्या

सत्त्वपुअगमगाण इमा विभासा –

सत्त अदीणता खलु, वपुतेओ जस्स ऊ भवइ देहे।
अंगा वा सुपइट्ठा, लक्खण सिरिवच्छमा इतरे ॥५९८१॥

सत्त्व प्रधान महतीए वि आवदीए जो अदीणो भवति सो सत्त्वमतो। वपू णाम तयो सो जस्स अत्थि देहे सो वपुमतो। अट्ठअगा ताणि जस्स सुपतिट्ठसुसठाण णि, [2]अगाणि ति उवगाणि ताणि वि जस्स

१ गा० ५९७७। २ गा० ५९७७।

सुपइट्ठसुसंठिप्राणि, अण्णाणि य सिरिवच्छमादीणि लक्खणाणि, "इयरे" त्ति वजणा ते य मसतिलगादी। अहवा – सह जाय लक्खण, पच्छा जाय वजण, ॥५६८१॥

अहवा भणेज्ज –

अमुगायरियसरिच्छाइं लक्खणाइं ण पासह महं ति ।
एरिसलक्खणजुत्तो, य होति अचिरेण आयरिओ ॥५६८२॥

अमुगस्स आयरियस्स जारिसा हत्थपादादिसु लक्खणा, जारिस पि वा देह, मम वि तारिस चेव। पच्छद्ध कठ ॥५६८२॥

इमे दोसा –

गारवकारणखेत्ताइणो य सच्चमलिय च होज्जा हि ।
विवरीयं एति जदो, केति णिमित्ता ण सव्वे उ ॥५६८३॥

अह आयरिओ भविस्सामि त्ति गारवकारणे खित्तादिचित्तो भवेज्जा, सायवाहणो इव। अहवा – छउमत्थोवलक्खिया लक्खणा सच्चा वा हवेज्जा अलिता व होज्ज । पच्छद्ध कठ । अहवा – इमो आयरिओ होहिइ त्ति कोइ पडिणीओ जीविताओ ववरोविज्ज ॥५६८३॥

एयस्स इमो अववातो –

बितियपदसणप्पज्झे, वागरे अविकोविते य अप्पज्झे ।
कज्जे[1] अण्णपभावण[2], वियाणणट्ठा[3] य जाणमवि ॥५६८४॥

पडिणीयपुच्छणे को, गुरु भे किं सो हं ति पेच्छ मे अंगं ।
गिहि-अण्णतित्थिपुट्ठे, व जुंगिते जो अणोतप्पे ॥५६८५॥

खित्तादिगो अणप्पज्झो सेहो अजाणंतो अप्पणो लक्खणो पगासेज्ज। अप्पज्झो वा "[1]कज्जे" त्ति कोइ पडिणीतो पुच्छेज्जा – कतमो भे गुरू ?

ताहे जो आरोहपरिणाहजुत्तो सो भणति – किं तेण ? अह सो ।

पडिणीओ भणति – कह णाय ?

साहू भणति – पिच्छ मे अग लक्खणजुत्त ।

"[2]अण्णप्पभावण" ति अस्य व्याख्या – गिहिअण्णतित्थिएण वा पुच्छिय – को भे गुरु ? त्ति।

आयरिओ जति सरीरजुंगितो ताहे जो अण्णो साहू अणुत्तरदेहो अलज्जणिज्जो, आगमेसु य कयागमो, एव सो अण्णो पभाविज्जति, अप्पणा वा पभावेति ॥५६८५॥

[3]वियाणणट्ठाए त्ति अस्य व्याख्या -

अट्ठवितगणहरे वा, कालगते गुरुम्मि भणतऽहं जोग्गो ।
देहस्स सपद मे, आरोहादी पलोएह ॥५६८६॥

---

१ गा० ५६८४ द्वा० १ । २ गा० ५६८४ द्वा० २ । ३ गा० ५६८४ द्वा० ३ ।

अट्ठविते गणधरे आयरिया कालगया । तत्थ जे वसभा अण्ण अलक्खणजुत्त ठविउकामा, ताहे सो लक्खणजुत्तो अण्णेहिं भणावेति –

अप्पणो वा भणति – आयरियपदजोगो देहसपद मे पेच्छह । अह आयरियो वि अलक्खणजुत्त ठवेउकामो, तत्थ वि एय चेव अप्पाण पगासेति - खमासमणो जारिसो सुत्ते भणिओ तारिस ठवेह, सरीरसपदाते आरोहादिजुत्तो ठवेयव्वो । एव [1]जाणतो वि भणेज्जा ।।५६८६।।

जे भिक्खू गाएज्ज वा हसेज्ज वा वाएज्ज वा णच्चेज्ज वा अभिणवेज्ज वा हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं उक्कुट्ठसीहनायं वा करेइ करेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१३४।।

सरकरण सरसचारो वा गेय, मुह विप्फालिय सविकारकहक्कह हसण, सखमादि आओज्ज वा वाएज्ज, पाद-जघा-ऊरु कडि उदर बाहु अगुलि-वदण-णयण भमुहादिविकारकरण नृत्य, पुक्कारकरण उक्किट्ठसघयणसत्ति-सपन्नो रुट्ठो तुट्ठो वा भूमी अप्फालेत्ता सीहस्सेव णाय करेति, हयस्स सरिस णाय करेइ हयहेसिय । वाणरस्स सरिस किलिकिलित करेति, अण्ण वा गयगज्जिआदिजीवरुत करेंतस्स चउलहु आणादिया य दोसा ।

जे भिक्खू गाएज्जा, णच्चे वाएज्ज अभिणवेज्जा वा ।
उक्किट्ठहेसियं वा, कुज्जा वग्गेज्ज वीणादी ।।५६८७।।

अहिणओ परस्स सिक्खावणा, नृत्यविकार एव वल्गित डिडिकवत् जावतिग मुह विप्फालेत्ता गीयउक्कुडिमादिया करेति ।।५६८७।।

तेसु इमे दोसा –

पुव्वामयप्पकोवो, अभिणवसूलं व अण्णगहणं वा ।
अस्संपुडणं च भवे, गायणउक्किट्ठिमादीसु ।।५६८८।।

आमयो त्ति रोगो सो उवसतो पकुप्पति, अहिणव वा सूल उप्पज्जइ, "अन्नगहण" त्ति गलगस्स उभओ [1]कण्णबुधेसु सरणीतो मता।तो तासु वातसंभगहितासु य अणायत मुहजत हवेज्ज, अहवा – अण्णगहण सघव्विउ त्ति काउ रायादिणा घेप्पेज्जा, मुह वा अस्सपुड वातसंभदोसेण अच्छेज्जा ।।५६८८।।

एते चेव य दोसा, अस्संपुडणं मुइत्तु सेसेसु ।
अण्णतरइंदियस्स व, विराहणा कायमुड्डाहो ।।५६८६।।

सेसा जे णच्चणादिता पदा तेसु वि एते चेव दोसा । मुहस्सवि असपुडण एक्क मोत्तु अण्णतर वा हत्थपादादि सोतादि वा उप्फिडेंतो लुसेज्जा, एवमादिया आयविराहणा । गायणादिसु वा पाणजातिमुहप्पवेसे सविराहणा । णच्चणादिसु उप्फिडतो पाणविराहण करेज्ज अभिहणेज्ज वा । एव कायविराहणा । एयासु आयसजमविराहणासु सट्टाणपच्छित्त, गेय णच्चणादिसु सविगारो अणिहुतो वा स जतो त्ति जणो भणेज्जा, उड्डाह वा करेज्जा ।।५६८६।।

वितियपदमणप्पज्झे, पसत्थजोगे य अतिसयप्पमत्ते ।
अद्धाण वसण अभियोग बोहिए तेणमादिसु वा ।।५६६०।।

खित्तादिअणप्पज्झो सेहो वा अजाणतो गीतादि करेज्ज ।।५६६०।।

---

१ गा० ५६८४ द्वा० ४ ।

"[1]पमत्थजोए" त्ति अस्य व्याख्या –

एम पमत्थो जोगो, सद्दप्पडिवद्धे वाए गाए वा ।
अण्णो वि य आएसो, धम्मकह पवत्तयतो उ ॥५६६१॥

कारणट्ठिया सद्दपडिबद्धाए वसहीए तत्थ गेय करेति, आओज्ज वा वाएति, मा अप्पणो अण्णसि मोहुब्भवण विसोत्ति हवेज्ज ।

अहवा – समोसरणादिसु पुच्छगवायण करेतो गधव्वेण कज्जति ॥५६६१॥

"[2]अनिमय पत्त" त्ति अस्य व्याख्या –

केवलवज्जेसु तु अतिमएसु हरिसेण सीहणायादी ।
उक्किट्ठ मेलण विहे, पुव्वव्वसण व गीतादि ॥५६६२॥

वीतरागत्वात् न कराति, तेन केवलातिसउप्पत्ति वज्जेत्ता सेसेसु अवधिलभादिएस अतिसएसु उप्पण्णसु हरिसिउ सीहणाय करेज्ज । अण्णत्थ वा [3]पडिगियत्तेग स वेड्यासु आरूढो सीहनाय करिज्जा । [4]अद्धाणपडिवण्णा महल्लसत्थेण परोप्पर फिडित्ता मिलणट्ठा उक्किट्ठसद्द सकरिज्जा । "[5]वसण" त्ति कस्स ति पुव्व गिहिकाले गीतादिग आसि, त स पव्वतितोवि वमणाओ करेज्जा, रायादिअभिओगेण वा ॥५६६२॥

अहवा –

अभिओगे कविलज्जो, उज्जेणीए उ रोधसीसो तु ।
बोहियतेणे महुरा, खमएण सीहणादादी ॥५६६३॥

मगारअभिओगओ जहा कविलेण कय तहा करिज्ज । अहवा – जहा रोहसीसेण उज्जेणीए रायपुरोहियसुयाभिओगतो कय । बोहिगतेणेसु जहा महुराए खमएण सीहणा दो कओ तहा करेज्ज ॥५६६३॥

जे भिक्खू भेरि-सद्दाणि वा पडह-सद्दाणि वा मुरव-सद्दाणि वा मुइंग-सद्दाणि वा नंदि-सद्दाणि वा झल्लरि-सद्दाणि वा वल्लरि-सद्दाणि वा डमरुग-सद्दाणि वा मड्डय-सद्दाणि वा सदुय-सद्दाणि वा पएस-सद्दाणि वा गोलुइ-सद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंत वा सातिज्जति ॥सू॥१३५॥

जे भिक्खू वीणा-सद्दाणि वा विवंचि-सद्दाणि वा तुण-सद्दाणि वा बव्वीसग-सद्दाणि वा वीणाइय-सद्दाणि वा तुंबवीणा-सद्दाणि वा झोडय-सद्दाणि वा ढंकुण-सद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा तयाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३६॥

---

१ गा० ५६९० । २ गा० ५६९० । ३ पडिगिदत्तणेण सावयाइसु आरुट्ठा इत्यपि पाठ । ४ गा० ५६९० ।
५ कुक्कुडिय, इत्यपि पाठ । ६ गा० ५६९० ।

जे भिक्खू ताल-सद्दाणि वा कंसताल-सद्दाणि वा लित्तिय-सद्दाणि वा
गोहिय-सद्दाणि वा मकरिय-सद्दाणि वा कच्छभि-सद्दाणि वा
महइ-सद्दाणि वा सणालिया-सद्दाणि वा वलिया-सद्दाणि वा
अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा झुसिराणि कण्णसोयपडियाए
अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३७॥

जे भिक्खू संख-सद्दाणि वा वंस-सद्दाणि वा वेणु-सद्दाणि वा खरमुहि-सद्दाणि वा
परिलिस-सद्दाणि वा वेवा-सद्दाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा
झुसिराणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३८॥

संख शृंग, वृत्त शंख, दीर्घाकृति स्वल्पा च संखिगा। खरमुखी काहला, तस्स मुहत्थाणे खरमुहाकार कट्ठमय मुहं कज्जति। पिरिपिरित्ता ततनोणसलागातो सु (झु) सिरात्रो जमलात्रो संपा (व) तिज्जति। मुहमूले एगमुहा सा संखागारेण वाइज्जमाणी जुगवं तिण्णि सद्दे पिरिपिरिती करेति।

अण्णे भणंति – गुंजापणवो मठाण भवति। भभा मायगाण भवति। भेरिआगारसकुडमुही दुदुभी। महत्प्रमाणा मुरजा। सेसा पसिद्धा।

ततवितते घणझुसिरे, तव्विवरीते य बहुविहे सद्दे।
सद्दपडियाए पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ॥५९९४॥

आलत्तिणीयमादि ततं वीणातिसरिसं बहुतंतीहिं विततं। अहवा–तंतीहिं ततं, मुहमउंदादि विततं। घणं कंसालकुडादि झुसिरं वंसादिया। तव्विवरीया कंसिग-कमालग-भल तालजल-वादित्रा, जीवरुतादयश्च बहवो तव्विवरीया ॥५९९४॥

बितियपदमणप्पज्झे, अभिधारऽविकोविते व अप्पज्झे।
जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५९९५॥

कज्जेसु बहुप्पगारेसु त्ति जहा जे असिवोवसमणपयुत्ता संखसद्दातिया तेसिं सवणट्ठाते अभिसंधारेज्जा गमणाए वारवतीए जहा भेरिसद्दस्स ॥५९९५॥

जे भिक्खू वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्फलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा
निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा सराणि वा
सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३९॥

जे भिक्खू कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा
पव्वयाणि वा पव्वयविदुग्गाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४०॥

* * *

जे भिक्खू गामाणि वा नगराणि वा खेडाणि वा कव्वडाणि वा मडंबाणि वा
दोणमुहाणि वा पट्टणाणि वा आगराणि वा संबाहाणि वा
सन्निवेसाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४१।।

जे भिक्खू गाम-महाणि वा नगर-महाणि वा खेड-महाणि वा कव्वड-महाणि वा
मडंब-महाणि वा दोणमुह-महाणि वा पट्टण-महाणि वा आगार-महाणि वा
संबाह-महाणि वा सन्निवेस-महाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४२।।

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू गाम-वहाणि वा नगर-वहाणि वा खेड-वहाणि वा कव्वड-वहाणि वा
मडंब-वहाणि वा दोणमुह-वहाणि वा पट्टण-वहाणि वा आगार-वहाणि वा
संबाह-वहाणि वा सन्निवेस-वहाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४३।।

जे भिक्खू गाम-पहाणि वा नगर-पहाणि वा खेड-पहाणि वा कव्वड-पहाणि वा
मडंब-पहाणि वा दोणमुह-पहाणि वा पट्टण-पहाणि वा आगार-पहाणि वा
संबाह-पहाणि वा सन्निवेस-पहाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४४।।

जे भिक्खू आस-करणाणि वा हत्थि-करणाणि वा उट्ट-करणाणि वा
गोण-करणाणि वा महिस-करणाणि वा सूयर-करणाणि वा कण्णसोय-
पडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४५।।

जे भिक्खू आस-जुद्धाणि वा हत्थि-जुद्धाणि वा उट्ट-जुद्धाणि वा गोण-जुद्धाणि वा
महिस-जुद्धाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४६।।

जे भिक्खू उज्जूहियट्ठाणाणि वा हय-जूहियट्ठाणाणि वा गय-जूहियट्ठाणाणि वा
कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।सू।१४७।

जे भिक्खू अभिसेय-ट्ठाणाणि वा अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा माणुम्माण-ट्ठाणाणि वा
महया हय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-
ट्ठाणाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,
अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।१४८।।

जे भिक्खू डिंबराणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४९॥

जे भिक्खू विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा मोहंताणि वा विउलं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परिभायंताणि वा परिभुंजंताणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥१५०॥

जे भिक्खू इहलोइएसु वा रूवेसु, परलोइएसु वा रूवेसु, दिट्ठेसु वा रूवेसु, अदिट्ठेसु वा रूवेसु, सुएसु वा रूवेसु, असुएसु वा रूवेसु, विन्नाएसु वा रूवेसु, अविन्नाएसु वा रूवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ सज्जंतं रज्जंतं गिज्झंतं अज्झोववज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५१॥

॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥

एते चोद्दससुत्ता जहा बारसमे उद्देसगे भणिता तहा इह पि सत्तरसमे उद्देसगे भाणियव्वा।

वप्पादी जा विह लोइयादि सद्दादि जो तु अभिधारे।
तं चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति बितियपदं ॥५९९६॥

विसेसो तत्थ चक्खुदंसणप्रतिज्ञया, इह पुण कण्णसवणपडियाए गच्छति, वप्पादिएसु ठाणेसु जे सद्दा ते अभिधारेउ गच्छति ॥५९९६॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए सत्तरसमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥

अष्टादश उद्देशक:

भणिओ सत्तरसगो। इदाणिं अट्ठारसमो इमो भण्णति। तस्सिमो संबंधो—

सद्दे पुण धारेउं, गच्छति तं पुण जलेण य थलेण।

जलपगतं अट्ठारे तं च अणट्ठा णिवारेति ॥५९९७॥

सखादिसद्दे अभिधारेंता गच्छतो जलेण वा गच्छति थलेन वा गच्छति। इह जलगमणेण अधिगारो, अधवा – जलेण गमणं अणाट्ठए ण गतव्वं। एयं अट्ठारसमे णिवारेति। एस संबंधो ॥५९९७॥

अणेण संबंधेणागयस्स इमं पढमसुत्तं—

जे भिक्खू अणट्ठाए णावं दुरुहइ दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

णो अट्ठाए, अणट्ठाए। दुरुहइ त्ति विलग्गइ त्ति आरुभति त्ति एगट्ठं। आणादिया दोसा चउलहुं।

बारसमे उद्देसे, नावासंतारिमम्मि जे दोसा।

ते चेव अणट्ठाए, अट्ठारसमे निरवसेसा ॥५९९८॥

अणट्ठं दसेत्ति—

अतो मणे किरिसिया, णावारूढेहिं वच्चइ कहं वा।

अहवा णाणातिजढं, दुरूहणं होतऽणट्ठाए ॥५९९९॥

केरिसि अब्भतरं त्ति चक्खुदसणपडियाए आरुभति, गमणकुतूहलेण वा दुरुहति, अहवा – नाणाविजढं दुरुहतस्स सेसं सव्वं अणट्ठा ॥५९९९॥

अववादेण आगाढे कारणे दुरुहेज्जा।

थलपहेण संघट्टादिजलेण वा जइ इमे दोसा हवेज्ज—

बितियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे।

कज्जुवहिमगरवुज्झण, णावोदग तं पि जयणाए ॥६०००॥

एस बारसमुद्देसगे जहा, तहा भाणियव्वा। सुत्तं दिट्ठं, कारणेण विलग्गियव्वं।

केरिस पुण णाव विलग्गति ? केरिस वा ण विलग्गति ?

अतो सुत्त भण्णति –

जे भिक्खू नावं किणइ किणावेइ, कीयं आहट्टु देज्जमाणं दुरुहइ दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू नावं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ, पामिच्चं आहट्टु देज्जमाणं दुरुहइ दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू नावं परियट्टेइ परियट्टावेइ, परियट्टं आहट्टु देज्जमाणं दुरुहेइ दुरुहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू नावं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहड आहट्टु देज्जमाणं दुरुहेइ दुरुहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे अप्पणा कीणइ, अण्णेण वा कीणावेइ, किणत अणुमोदति वा ङ्कु ।

पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चत अणुमोदेति ङ्कु। पामिच्च णाम उच्छिण्ण । जे णाव परियट्टेति ३, ङ्कु । डहरियणावाए महल्ल णाव परिणावेति — परिवर्तयतात्यर्थ । महल्लाए वा डहर परावतयति ।

अण्णस्स वा बला अच्छेत्तु साहूण णेति ङ्कु । अणिसट्ठा पडिहारिया गहिता अप्पणो कए कज्जे त साधूण समप्पेति साधूण वा णति ङ्कु ।

एतेहिं सुत्तपदेहिं सव्वे उग्गम-उप्पादण-एसणादोसा य सूचिता ।

तेण णावणिज्जुत्ति भण्णइ –

नावा उग्गमउप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य ।
इंगालधूमकारण, अट्ठविहा णावणिज्जुत्ती ॥६००१॥

उग्गमदोसेसु जे चउलहू ते जहा सभव, णाव पडुच्च वा ।

उच्चत्तभत्तिए वा, दुविहा किणणा उ होति णावाए ।
हीणाहियणावाए, भंडगुरुए य पामिच्चे ॥६००२॥

साधुअट्ठाए उच्चताए नाव किणाति सवधा आत्मीकरोतीत्यर्थ । भत्तीए त्ति – भाडएण गेण्हति । अप्पणा से णावा हीणप्पमाणा अहियप्पमाणा वा । अहवा – भडगुरु त्ति – ज तत्थ भडभारो विज्जति त गुरु साहू य णो खमिहितित्ति, ता एवमादिकज्जेहिं णाव पामिच्चेति । अहवा – सा णावा स्वयमेव गुरुत्वान्न शीघ्रगामिनीत्यथ ॥६००२॥

दोण्ह वि उवट्ठियाए, जत्ताए हीण अहिय सिग्घट्ठा ।
णावापरिणामं पुण, परियट्टियमाहु आयरिया ॥६००३॥

दो वणिया जत्ताए णावाहिं उवट्ठिता, तत्थ य एगस्स हीणा, एगस्स अहिया, तो परोप्पर णावा-परिणाम करेति — नावा नाव परावर्त्तयतीत्यर्थ । अहवा – मदगामिनी शीघ्रगामिन्या परावतयति । एव साध्वर्थमपि ॥६००३॥

एमेव सेसएसु वि, उप्पायण-एसणाए दोसेसुं ।
ज ज जुज्जति सुत्ते, विभासियव्वं दुवत्ताए ॥६००४॥

कीयगडादीणावासुत्तेसु ज ज जुज्जति त त पिंडणिज्जुत्तिए भाणियव्व–दुवत्ता बायालीसा, सोलस उग्गमदोसा, सोलस उप्पायणदोसा, दस एसणदोसा, एते मिलिया बाताला उग्गमउप्पायणेसणा तिण्णि दाग गता ।

[1]सजोगादियाण चउण्ह इमा विभासा ।

संजोए रणमादी, जले य णावाए होति माणं तु ।
सुहगमणिंत्तिगालं, छड्डीखोभादिसुं धूमो ॥६००५॥

साधुअट्ठाए रणमादि किं चि कट्ठु सजोएति, आसण्णमज्झदूरगमणा जलप्पमाण साधुप्पमाणाओ य हीण जुत्तमधियप्पमाणेण वा होज्ज । सुहगमणि त्ति रागेण इगालसरिस चरण करेति, णावागमणे छड्डी हवइ दुट्ठा वाहया वा नावाभएण सरीरसखोहो भवति । कपो, मुच्छा, सिरत्ती य । एवमादी दोसा चरण धूमधणेण सम करेति ॥६००५॥

कारणे विलग्गियव्वं, अकारणे चउलहू मुणेयव्वं ।
किं पुण कारण होज्जा, असिवादि थलामती दुरुहे ॥६००६॥

णाणाइकारणेण य दुरुहियव्व, निक्कारणे चउलहु, असिवाइकारणे वा गच्छतस्स ॥६००६॥

त नावातारिम चउव्विह–

नावासंतारपहो, चउव्विहो वण्णितो उ जो पुव्विं ।
णिज्जुत्तीए सुविहिय, सो चेव इहं पि णायव्वो ॥६००७॥

निज्जुत्तीपेढ इमस्सेव जह पेढया आउक्कायाधिगारेण भाणिया तहा भाणियव्वा ॥६००७॥

तिरिओ य णुज्जाणे, समुद्दगामी य चेव नावाए ।
चउलहुगा अंतगुरू, जोयण मद्धद्ध जा सपदं ॥६००८॥

तत्र इव ॥६००८॥

बीयपथ तेण मावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।
कज्जुवहिमगर वुज्झण, नावोदग तं पि जयणाए ॥६००६॥

बारसमे पूववत् ॥६००६॥

जे भिक्खू थलाओ नाव जले ओकसावेइ ओकसावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

थलस्थ जले करेति ।

जे भिक्खू जलाओ नावं थले उक्कसावेइ उक्कसावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

जलस्थ थले करेति ।

---

१ गा० ६००१ ।

जे भिक्खू पुण्णं णावं उस्सिंचइ उस्सिंचंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सण्णं णावं उप्पिलावेइ उप्पिलावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

"सण्ण" त्ति – कद्दमे खुत्ता, उप्पिलावेइ त्ति – ततो उक्खणति ।

गाहेइ जलाओ थलं, जो व थलाओ जल समोगाढे ।
सण्ण व उप्पिलावे, दोसा ते त च बितियपदं ॥६०१०॥

दोसा ज बारसमे भणिता ते भवन्ति, बितियपद च ज तत्थेव भणिय त चेव भाणियव्व ॥६०१०॥

जे भिक्खू उबुड्डिय णावं उत्तिंगं वा उदग वा आसिंचमाणिं वा उवरुवरि वा कज्जलावेमाणिं पेहाए हत्थेण वा पाएण वा असिपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्टियाए वा चेलेण वा पडिपिहेइ पडिपिहेंतं वा साइज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू पडिणाविय कट्टु णावाए दुरुहइ दुरुहतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू उड्ढगामिणिं वा नावं अहो गामिणि वा नावं दुरुहइ दुरुहतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू जोयणवेलागामिणि वा अद्धजोयणवेलागामिणिं वा नाव दुरुहइ दुरुहत वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जलनावा बलाए हीरति, दीहरज्जुए तडसि रुक्खे व। कालगे वा बद्ध वा मुत्तित्ता वाहेज्ज, छुब्भमाणि वा बधेज्ज, उत्तिगेण वा भरित भरज्जमाणी वा जो उवसिंचति, सबलपाणियस्स वा भरेति रित्त वा, विमिती गच्छउ त्ति पाणियस्स भरेति, । तस्स चउलहु ।

उब्बद्धपवाहेती, बंधइ वुज्झइ य भरिय उस्सिचे ।
रित्त वा पूरेति, ते दोसा त च बितियपदं ॥६०११॥ कज्या

जे भिक्खू नावं आकसइ आकसावेइ आकसावंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू नावं खेवेइ खेवावेइ खेवावंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू णाव रज्जुणा वा कट्ठेण वा कड्ढइ, कड्ढंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू णावं अलित्तएण वा पप्फिडएण वा वंसेण वा पलेण वा वाहेइ, वाहेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू नावाओ उदगं भायणेण वा पडिग्गहणेण वा मत्तेण वा नावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचइ उस्सिंचंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

णावाए उत्तिग जाव पिहित सातिज्जति ।

एतेसिं सुत्ताण पदा सुत्तसिद्धा चेव तहावि केइपदे सुत्तफासिया फुसति –

नावाए खिवण वाहण, उस्सिंचण पिहण साहणं वा वि ।
जे भिक्खू कुज्जा ही, सो पावति आणमादीणि ।।६०१२।।

अण्णणावट्ठितो जलट्ठितो तडट्ठितो वा णाव पराहुत्त खिवति, णावण्णतरणयणप्पगारेण णयण वाहण भण्णति । उत्तिंगादिणावाए चिट्ठमुदग अण्णयरेण कव्वादिणा उस्सिचणएण उस्सिचइ । उत्तिंगादिणा उदग पविसमाण हत्थादिणा पिहेति । एवमप्पणा करेति, अण्णस्स वा कहेति, आणादि चउलहु च ।।६०१२।।

एतेसु अण्णेसु य सुत्तपदेसु इम बितियपद –

बितियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।
कज्जोवहिमगरवुज्भण, णावोदग तं पि जयणाए ।।६०१३।। पूर्ववत्

आकड्ढणमाकमण, उक्कमण पेल्लणं जओ उदगं ।
उड्ढमहतिरियकड्ढण, रज्जू कट्ठम्मि वा घेत्तुं ।।६०१४।।

अप्पणो तेण आकड्ढणमागमण उदग तेण प्रेरण उक्कमण 'उड्ढ" ति णदीए समुद्दे वा वेला पाणियस्स प्रतिकूल उड्ढ, "अह" त्ति तस्सेव उदगस्स श्रोतोऽनुकूल अहो भण्णति, नो प्रतिकूल नो अनुकूल विंतिरिच्छ तिरिय भण्णति, एय उड्ढ अह तिरिय वा रज्जुए कट्ठम्मि वा घेत्तु कड्ढ ति ।।६०१४।।

तणुयमलित्तं आसत्थपत्तसरिसो पिहो हवति रुंदो ।
वंसेण थाहि गम्मति, चलएण वलिज्जती णावा ।।६०१५।।

तणुतर दीह अलित्ताभिती [1]अलित्त, आसत्थो पिप्पलो तस्स पत्तस्स सरिसो रुंदो पिहो भवति, वंसो वेणू तस्स अवट्ठभेण पादंति पेरिता णावा गच्छति जेण वाम दक्खिण वा वालिज्जति सो चलगो रण्ण वि भण्णति ।।६०१५।।

मूले रुंद अकण्णा, अंते तणुगा हवंति णायव्वा ।
दव्वी तणुगी लहुगी, दोणी वाहिज्जती तीए ।।६०१६।।

पुव्वद्ध कठ । लहुगी जा दोणी सा तीए दव्वीए वाहिज्जति णावाउस्सिचणग च दुग (उस चलग) दव्वगादि वा भवति, उत्तिंग णाम छिद्र त हत्थमादीहिं पिहेति ।।६०१६।।

सरतिमिगा वा विप्पिय, होति उ उसुमत्तिया य नम्मिस्सा ।
मोयतिमाइ दुमाणं, वातो छल्ली कुविंदो उ ।।६०१७।।

अहवा – सरस्स छल्ली ईसिगि त्ति तस्सेव उवरि नस्स छल्ली सो य मुंजो दब्भो वा, एते वि विप्पिन त्ति कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जति एत उसुमट्टिया, कुसुमट्टिया वा, मोदती गुलवजणी, आदिसद्दाओ वड पिप्पल-आसत्थयमादियाण वक्को मट्टियाए सह कुट्टिज्जति सो कुट्टविंदो भण्णति, अहवा – चेलेण सह मट्टिया कुट्टिया चेलमट्टिया भण्णति ।

एवमाईएहि त उत्तिग पिहेति जो तस्स चउलहु आणादिया य दोसा ।।६०१७।।

---

[1] नौकादड ।

जे भिक्खू नावं उत्तिगेण उदगं आसवमाणं उवरुवरिं कज्जलमाणं पलोय हत्थेण वा पाएण वा आसत्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्टियाए वा चेलकण्णेण वा पडिपेहेइ पडिपेहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

उत्तिगेण णावाए उग्ग आसवति पेहे त्ति प्रक्ष्य उवरुवरि कज्जलमाणि ति भरिज्जमाण पेक्खित्ता परस्स दाएति आणादिया चउलहु च ।

उत्तिगो पुण छिड्डं, तेणासव उवरिएण कज्जलण ।
बितियपदेण दुरूढो, णावाए भंडभूतो वा ॥६०१८॥

पुव्वद्ध गताथ । असिवादिगाणादिकारणहिं दुरूढो णाव जहा भड निव्वावार तहा णिव्वावारभूतेण भवियव्व । सव्वसुत्तेसु जाणि [वा] पडिसिद्धाणि ताणि कारणारूढो सव्वाणि सय करेज्ज वा कारवेज्ज वा, ते तत्थ साधुणो णिव्वावार दट्ठु कोइ पडिणीओ जले पक्खिवेज्ज ॥६०१८॥

अहवा –

नावादोसे सव्वे, तारेयव्वा गुणेहि वा अधिओ ।
पवयणपभावओ वा, एगे पुण बेंति णिग्गंथी ॥६०१६॥

एव वच्चतस्स णावाए सभवो हवेज्ज जहा तेसिं माकदियदाराण णावाए दोसो त्ति भिण्णा सा णावा ।

इयदुद्धराति गाढे, आवइवत्तो सबालवुड्ढो उ ।
सहसा णिव्बुडमाणो, उद्धरियव्वो समत्थेण ॥

एस जिणाण आणा, एमुवदेसो उ गणधराण च ।
एस पइण्णा तस्स वि, ज उद्धरते दुविहगच्छ ॥

जो अतिसेसविसेससपण्णो तेण सव्वो नित्थारेयव्वो, अतिसेसअभावे सारीरबलसमत्थेण वा त सव्वे णित्थारेयव्वा । अह सव्वे ण सक्केति ताहे एक्केक्क हावतेण, जो पवयणप्पभावगो सो पुव्व तारेयव्वो ।

अण्णे पुण भणंति जहा – णिग्गथी पुव्व तारेयव्वा ॥६०१६॥

इमा पुरिसेसु केवलेसु जयणा –

आयरिए अभिसेगे, भिक्खू खुड्डे तहेव थेरे अ ।
गहणं तेसिं इणमो, संजोगकमं तु वोच्छामि ॥६०२०॥

जइ समत्थो एते चेव सव्वे वि तारेउ तो सव्वे तारेति ।

अह ण सक्केति ताहे थेरवज्जा चउरो ।

अह ण तरति ताहे थेरखुड्डगवज्जा तिण्णि ।

अह ण तरति ताहे आयरिय अभिसेगा दोण्णि ।

अह ण तरति ताहे आयरिअ ॥६०२०॥

दो आयरिया होज्ज, दो वि नित्थारेतु ।

अह न तरइ नाहे इम भण्णनि—

तरुणे निप्फण्ण परिवारे, सलद्धिए जे य होति अब्भासे ।
अभिसेगम्मी चउरो, सेमाण पच चेव गमा ॥६०२१॥

आयरिओ एगो तरुणो, एगो थेरो । जो तरुणो सो नित्थारेयव्वो ।

दोवि तरुण थेरा वा एक्को सुत्तत्थे निप्फण्णो, एक्को अनिप्फण्णो । जो निप्फण्णो सो नित्थारिज्जति ।

दोवि णिप्फन्ना अणिफन्ना वा । एक्को सपरिवारो, एक्को अपरिवारो । जो सपरिवारो सो नित्थारिज्जनि ।

दोवि सपरिवारा तो उक्कोमलद्धीतो जो भत्तवत्थसिस्सादिएहिं सहितो सो णित्थारिज्जति । दोवि सलद्धिया वा तत्थ जो अब्भासतरो सो णित्थारिज्जति, मा दूरत्थ । समीव ज त जाव जाहिति ताव सो हडो । इयरो वि जाव पव्वेहिति ताव हडो । दोण्ह वि चुक्को तम्हा जो आसण्णो सो तारेयव्वो ।

अभिसेगे पुण चउरो गमा भवनि – तरुणो सपरिवारो सलद्धी आसण्णो य, जम्हा सो णियमा निप्फण्णो तम्हा तस्स निप्फण्णानिप्फण्ण इति न कर्तव्य ।

सेसाणि भिक्खूथे खुड्डाण जहा आयरियस्स तरुणादिया पच गमा तहा कायव्वा ।

अण्णे पच गमा एव करेति – तरुणे णिप्फण्ण परिवारे सलद्धिए अब्भासे ।

अहवा पंच गमा – तरुणे निप्फण्ण परिवारे सलद्धीए अब्भासे थलवासी । जो थलविसयवासी न नित्थारेति, सो अतारगो । जलविसयवासी पुण तारगो भवति, ण सहसा जलस्स बीहेति ॥६०२१॥

इदाणि णिग्गंथीण पत्तेय भण्णति –

पवत्तिणि अभिसेगपत्त थेरि तह भिक्खुणी य खुड्डी य ।
अभिसेगाए चउरो, जलथलवासीसु संजोगा ॥६०२२॥

जहा साहूण भणिय तहा साहुणीण वि भाणियव्व ॥६०२२॥ एस पत्तेयाण विधी ।

इमा मीसाण –

सव्वत्थ वि आयरिओ, आयरियाओ पवत्तिणी होति ।
तो अभिसेगप्पत्तो, सेसेसू इत्थिया पढमं ॥६०२३॥

दोसु वि वग्गेसु जुगव आवइपत्तेसु इमा जयणा – जति समत्थो सव्वाणि वि तारेउ तो सव्वे तारेति । अह असमत्थो ताहे एगदुगातिपरिहाणीए, जाहे दोण्ह वि असमत्थो ताहे सव्वे अच्छतु आयरिय पढम णित्थारेइ, ततो पवित्तिणी, ततो अभिसेग, सेसेसु इत्थिया पढम, ति भिक्खुणि पढम ततो भिक्खु, खुड्डि ततो खुड्ड, थेरिं ततो थेर । एत्थऽप्पबहूचिंता कायव्वा – सुणिपुणो होऊण लघेऊणुत्तविहिं बहुगुणवेट्ट (वड्ढ) करेज्जा ।

भणिय च –

"बहुवित्थरमुस्सग्ग, बहुतरमववायवित्थर णाउ ।
जह जह सजमवुड्ढी, तह जयसू णिज्जरा जह य" ॥

आयरियवज्जाण को परिवारो ? भण्णति – माया पिया पुत्तो भाया भगिणी सुण्हा धूया, अण्णे य सबन्धिणो मित्ता तदुवसमणिक्खता य ।

जे भिक्खू नावाओ नावागयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२०।।

जे भिक्खू नावाओ जलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२१।।

जे भिक्खू नावाओ पंकगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२२।।

जे भिक्खू नावाओ थलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।२३।।

णावागयस्सेव दायगस्स हत्थातो पडिग्गाहेति तस्स चउलहु ।

अण्णेसु तिसु भंगेसु भिक्खू णावागतो चेव, दायगो जल पंक थलगतो । एतेसु चउरो भंगा ।

अण्णेसु चउभंगेसु भिक्खू जलगतो, दायगो णावा-जल पंक थलगतो ।

अण्णेसु चउसु भिक्खू पंकगओ, दायगो णावा-जल पंक थलगओ ।

अण्णेसु चउसु भिक्खू थलगतो दायगो णावा जल-पंक थलगतो ।

एते सव्वे सोलससु वि पत्तेयं चउलहु । णावागते दायगे पडिसेहो, जेण सो सचित्तआउकाय-परंपरपतिट्ठो जलपंकथला सचित्ता मीसा वा, तो पडिसेहो ।

तत्थ कमं दरिसेइ –

नावजले पंकथले, संजोगा एत्थ होंति णायव्वा ।
तत्थ गएणं एक्को गमणागमणेण बितिओ उ ।।६०२४।।

एतेसु णाव-जल-पंक-थलपदेसु ठितो भिक्खू दायगस्स सट्ठाण-परट्ठाणसंजोगेण ठियस्स हत्थाओ गेण्हंतस्स दुगसंजोगाभिलाव अमुचंतेण सोलस भंगा कायव्वा पूववत् ।

'तत्थ गएण एक्को'' त्ति णावारूढो णावागयस्स हत्थातो गेण्हति एस पढमभंगो, णावागतो जलगयस्स हत्थदायगस्स अच्छमाणस्स जलट्ठियस्स हत्थातो गेण्हति, एवं पंकथलेसु वि गमणागमणेण ततिय-चउत्थ भंगा, एवं सेसभंगा वि बारस उवउज्ज भाणियव्वा ।।६०२४।।

एत्तो एगतरेणं, संजोगेण तु जो उ पडिगाहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधण पावे ।।६०२५।।

कण्ठ्या । सोलसमो भंगो थलगओ, थलगतस्स समुद्दस्स अंतरदीवं संभवति, सा पुढवी सचित्ता मीसा वा ससणिद्धा वा तेण पडिसिज्झति ।।६०२५।।

इम बितियपद –

अगिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥६०२६॥

जयणा पणगपरिहाणी, मीसपरपरठितादि वा जयणा भाणिव्वा ।

जे भिक्खू वत्थं किणइ किणावेइ कीय आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंत वा सातिज्जमि ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू वत्थं पामिच्चेति, पामिच्चावेति पामिच्चमाहट्टु दिज्जमाण
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू वत्थं परियट्टेइ, परियट्टावेइ, परियट्टियमाहट्टु दिज्जमाण
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू वत्थं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडमाहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू अतिरेग-वत्थ गणि उद्दिसिय गणिं समुद्दिसिय
तं गणिं अणापुच्छिय अणामंतिय अण्णमण्णस्स वियरइ,
वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू अइरेगं वत्थं खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा
अहत्थच्छिण्णस्स अपायच्छिण्णस्स अनासच्छिण्णस्स अकण्णच्छिण्णस्स
अणोट्ठच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अइरेगं वत्थं, खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा
हत्थच्छिण्णस्स पायच्छिण्णस्स नासच्छिण्णस्स कण्णच्छिण्णस्स
ओट्ठच्छिण्णस्स असक्कस्स न देइ, न देंत वा सातिज्जति ॥सू॥३०॥

जे भिक्खू वत्थं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्ज धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू वत्थं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ,
न धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू वण्णमंतं वत्थं विवण्णं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू विवण्णं वत्थं वण्णमंतं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू "नो नवए मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा
णवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेतं वा भिलिगेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू "नो नवए मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा
चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा [1]उव्वलेज्ज वा
उल्लोलेंतं वा [2]उव्वलेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू "नो नवए मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा,
उच्छोल्लेंत वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू "नो नवए मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा
घएण वा णवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खत वा भिलिंगेत वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू "नो नवए मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा
कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा
उल्लोलेतं वा उव्वलेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू "नो नवए मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदगविय-
डेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंत वा पधोएत वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा
नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा
मक्खेत वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा
चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा
उल्लोलेतं वा उव्वलेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोलेंत वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

१ पधोवेज्ज इत्यपि पाठ । २ पधावेज्जत इत्यपि पाठ ।

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंत वा भिलिंगेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे वत्थं लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंत वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू "दुब्भिगंधे मे वत्थ लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदग-वियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंत वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

❀ ❀ ❀

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेंतं वा भिलिंगेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंत वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू "नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे" त्ति कट्टु बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खू अणंतरहियाए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंत वा पयावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खू मट्टियाकडाए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खू चित्तमंताए पुढवीए दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खू चित्तमंताए सिलाए दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खू चित्तमंताए लेलूए दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खू कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिग-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेंत वा पयावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा कामजलंसि वा दुब्बंधे
दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा
आयावेंत वा पयावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिंसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अंतलिक्ख-
जायंसि वा दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६२।।
जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा
पासायंसि वा दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेंतं वा पयावेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६३।।
जे भिक्खू वत्थातो पुढविकाय नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६४।।
जे भिक्खू वत्थाओ आउक्काय नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६५।।
ज भिक्खू वत्थातो तेउकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत वा सातिज्जति ।।सू०।।६६।।
ज भिक्खू वत्थातो कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा
फलाणि वा नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरिय आहट्टु देज्जमाण
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६७।।
जे भिक्खू वत्थातो ओसहि-बीयाणि नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरिय आहट्टु
देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६८।।
जे भिक्खू वत्थातो तसपाणजाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।६९।।
जे भिक्खू वत्थं कोरेइ, कोरावेइ, कोरिय आहट्टु
देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७०।।
जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामंतरंसि वा
गामपहंतरंसि वा वत्थं ओभासिय ओभासिय जायइ
जायतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७१।।
जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा परिसामज्झाओ
उट्ठवेत्ता वत्थं ओभासिय ओभासिय जायइ
जायतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७२।।
ज भिक्खू वत्थनीसाए उडुबद्धं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७३।।

जे भिक्खू वत्थनीसाए वासावासं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७४।।

।। तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।।

चोद्दसमे उद्देसे, पातम्मि उ जो गमो समक्खाओ ।
सो चेव निरवसेसो, वत्थम्मि वि होति अट्ठारे ।।६०२७।।

सुत्ताणि [1]पणुवीस उच्चारेयव्वाणि जाव समत्तो उद्देसगो । एतेसिं अत्थो चोद्दसमे, जहा चोद्दसमे पाद भणितं तहा अट्ठारसमे वत्थं भाणियव्वं ।

।। इति विसेस-णिसीहचुण्णीए अट्ठारसमो उद्देसओ समत्तो ।।

---

१ चतुर्दशोद्देशकानुसारेण तु पञ्चचत्वारिंशत्सूत्राणि भवन्ति ।

एकोनविंशतितम उद्देशकः

भणिओ अट्ठारसमो । इदाणिं एक्कूणवीसइमो भण्णति । तस्सिमो संबंधो –

वत्थत्था वसमाणो, जयणाजुत्तो वि होति तु पमत्तो ।
अन्नो वि जो पमाओ, पडिसिद्धो एस एकूणे ॥६०२८॥

जो उदुबद्धे वासावासे वा वत्थट्ठा वसति, सो जति जयणाजुत्तो तहावि सो पमत्तो लब्भति । एव अट्ठारसमस्स अंतसुत्ते पमातो दिट्ठो । इहावि एगूणवीसईमस्स आदिसुत्ते पमाओ चेव पडिसिज्झति । एस अट्ठारसमाओ एगूणवीसइमस्स संबंधो ॥६०२८॥

अहवा चिर वसंतो, सयवणेहिं किणति त वत्थं ।
अक्कीत पि ण कप्पति, वियड किमु कीयसंबंधो ॥६०२९॥

चिर ति वारिसितो चउरो मासे, सेस कठं ।

इम पढमसुत्तं –

जे भिक्खू वियडं किणइ, किणावेइ, कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

कीय किणाविय अणुमोदितं च वियडं जमाहियं सुत्ते ।
एक्केक्कं त दुविहं, दव्वे भावे य णायव्वं ॥६०३०॥

अप्पणा किणति, अण्णेण वा किणावेइ साहुअट्ठा वा कीय परिभोगओ अणुजाणति, अण्ण वा अणुमोएइ, आणादिया दोसा चउलहु च । सो कीओ दुविधो – अप्पणा परेण च । एक्केक्को पुणो दुविहो – दव्वे भावे य । सेष पूर्ववत् । परभावकीए मासलहु । ज अप्पणा किणति, एस उप्पायणा । ज परेण किणावेइ, एस उग्गमो ॥६०३०॥

एएसामण्णतरं, वियड कातं तु जो पडिग्गाहे ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६०३१॥

कठा । वियडग्गहणे परिभोगो वा अकप्पग्गहण अकप्पपडिसेवा य संजमविराहणा य ।

जतो भण्णति –

इहरह वि ता न कप्पइ, किमु वियडं कीतमादि अविसुद्धं ।
असमितिऽगुत्ति गेही, उड्डाह सहव्वसा आता ॥६०३२॥

इहरहा अकीत। किं पुण कीय ?, उग्गमदोसजुत्त सुट्ठुतर ण कप्पइ। वियडत्ते पचसु वि समितीसु असमितो भवति, गुत्तीसु वि अगुत्तो, तम्मि लद्धसायस्स अपरिच्चागो गेही, जणेण णाते उड्डाहो, परायीणो वा महव्वए भजेज ॥६०३२॥

कह ? उच्यते –

वियडत्तो छक्काए, विराहए भासती तु सावज्जं।
अगडागणिउदएसु अ, पडणं वा तेसु वा घेप्पे ॥६०३३॥

पराहीणत्तणओ छक्काए विराहेज्ज, मोस वा भासेज्ज, अदत्त वा गेण्हेज्ज, मेहुण वा सेवेज्ज, हिरण्णादिपरिग्गह वा करेज्ज। आयविराहणा इमा – अगडे त्ति कूवे पडेज्ज, पलित्ते वा डज्झेज्ज, उदगेण वा परेज्ज, तेण वा कसाएण वा णिक्कासति तो वा तहिं घेप्पइ ॥६०३३॥

अहवा - कारणे पत्ते गेण्हेज्जा –

बितियपदं गेलण्णे, विज्जुवदेसे तहेव सिक्खाए।
एतेहिं कारणेहिं, जयणाए कप्पती घेत्तु ॥६०३४॥

वेज्जोवएसेण गिलाणट्ठा घेप्पेज्ज, कस्सति कोति वाही तेणेव उवसमति त्ति ण दोसो। गिलाणट्ठा वा वेज्जो आगतो, तस्सट्ठा वा घिप्पेज्ज, पकप्प वा सिक्खतो गहण करेज्ज ॥६०३४॥

कह ? उच्यते –

संभोइयमण्णसंभोइयाण असतीते लिंगमादीण।
पकप्पं अहिज्जमाणो, सुद्धासति कीयमादीणि ॥६०३५॥

पकप्पो सिक्खियव्वो सुत्तो अत्थतो वि सगुरुस्स पासे, असति सगुरुस्स ताहे सगणे, सगणस्स वि असति ताहे सभोतिताण सगासे सिक्खति। असति सभोतिताण ताहे अण्णसभोतियाण सगासे, तेसिं पि असतीए लिंगत्थादियाण पासे पकप्प अवज्जति। तस्स य लिंगस्स त वियडवसण हवेज्जा, सो अप्पणा चेव उप्पाएउ। अह सो उप्पाएउ सुतत्थे ण तरति दाउ ताहे स साधू उप्पाएइ सुद्ध, जति सुद्ध ण लब्भइ ताहे कीयमादि गेण्हेज्जा ॥६०३५॥

जे भिक्खू वियडं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ पामिच्चं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू वियडं परियट्टेति परियट्टावेइ परियट्टियं आहट्टु देज्जमाण पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू वियड अच्छेज्जं अणिसिट्ठं अभिहडं आहट्टु देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

एतेसि सव्व पूववत् जहा पिंडणिज्जुत्तीए, एतेसु पच्छित्त चउलहू ज च दुगुंछियपडिग्गहणे पच्छित्त भवति, ङ्क।

एमेव तिविहकरणं, पामिच्चे तह य परियट्टे ।
अच्छिज्जे अणिसिट्ठे, तिविह करणं णवरि णत्थि ॥६०३६॥

तिविह करण कृत कारित अनुमोदित च, अच्छेज्जऽणिसिट्ठेसु तिविह करण भवति, सेस सव्व बितियपद च पूववत् ॥६०३६॥

जे भिक्खू गिलाणस्सऽट्ठाए परं तिण्हं वियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

दत्तीए पमाण पसती, तिण्ह पसतीण परेण चउत्था पसती गिलाणकज्जे वि ण घेत्तव्वो, जो गेण्हति तस्स चउलहु।

जे भिक्खू गिलाणस्सा, परेण तिण्हं तु वियडदत्तीणं ।
गिण्हेज्ज आदिएज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥६०३७॥

तिण्ह दत्तीण परतो गहणे वि चउलहु। "आदिएज्ज" त्ति पिवतस्स वि चउलहु ॥६०३७॥

तिण्ह दत्तीण परतो गहणे आदियण वा इमे दोसा -

अप्पच्चओ य गरहा, मददोसा गेहिवड्ढणं खिसा ।
तिण्ह परं गेण्हते, परेण तिण्हाइयंते य ॥६०३८॥

अपच्चओ त्ति जहा एस पव्वइओ होउ वियड गिण्हति आदियति वा तहा एस अण्ण पि करेति मेहुणादिय। "गरह" त्ति एस गूण णियकुलजातितो त्ति। मददोसा-पीते पलवति वग्गइ वा। पुणो पुणो गहणे वा वियडे गेही वड्ढति। खिसा-धिरत्थु ते एरिसपव्वज्जाए त्ति ॥६०३८॥

दिट्ठं कारणगहण, तस्स पमाणं तु तिण्णि दत्तीओ ।
पातु व असागरिए, सेहादि असंलवंतो य ॥६०३९॥

तिण्णि दत्तीओ तिण्णि पसतीओ [illegible] ताओ पाउ असागारिगे अच्छति, [1]णिहुतो त्ति उम्मायते पलवति णच्चइ वा। अभावियसेहे असारिण गेहिं सद्धि उल्लावण न करेति गिहीहिं वा ॥६०३९॥

वियडत्तस्स उ बाहि, णिग्गंतु ण देंति अह बला णीति ।
जयणाए पत्तवासे, गायणे व लवंते आसमवि ॥६०४०॥

जइ जुत्तमेत्तीण अतिरित्तेण वा मत्तो वियडत्तगो ति मत्तो पराधीणओ बाहिं णिग्गच्छेज्ज तो ण देति से णिग्गतु, बला णितो "जयण" त्ति जहा ण पीडिज्जति तहा "पत्तवासे" त्ति-बज्झइ। अह पत्थामितो मोक्कलो वा गाएज्जा पलवेज्ज वा तो "आसमवि" त्ति आस मुह त पि सिविज्जति ॥६०४०॥

अववादतो तिण्ह दत्तीण अतिरित्तमवि गिण्हेज्ज -

बितियपदं गेलण्णे, विज्जुवदेसे तहेव सिक्खाते ।
गहणं अतिरित्तस्सा, वेज्जुवदेसे य आइयणं ॥६०४१॥

---

१ उन्मत्त ।

गेलण्णट्ठा वेज्जुवदेसेण सिक्खाए वा एतेहिं कारणेहिं गहणं अतिरित्तस्स आतियण पि, अतिरित्तस्स गेलण्णसिक्खाहिं विसेसतो वेज्जुवदेसेण ।

त पुण इमेसु ठाणेसु कमेण गेण्हेज्जा –

'गहण पुराणसावग, सम्म अहाभद्द दाणसड्ढे य ।
भावियकुलेसु ततो, जयणाए तत्तु परलिंगे'' ॥१॥

जे भिक्खू वियडं गहाय गामाणुगामं दूइज्जइ, दूइज्जंतं वा सातिज्जति॥सू०॥६॥

वियडेण हत्थगतेण जो गामाणुगामं दूइज्जइ गच्छइ, तस्स आणादी चउलहु च ।

कारणओ सग्गामे, सइलाभे गंतु जो परग्गामे ।
आणिज्जा ही वियडं, णिज्जा वा आणमादीणि ॥६०४२॥

कारणओ वियडं घेत्तव्वं, त पि सग्गामे ''सति'' त्ति लब्भमाणे जो परगामतो आणति, सग्गामाओ वा परगामं णेज्जा, तस्स आणादिया दोसा ॥६०४२॥

इमे य –

परिगलण पवडणे वा, अणुपंथियगंधमादि उड्डाहो ।
आहारेतरतेणा, किं लद्ध कुतूहले चेव ॥६०४३॥

परिगलने पुढवातिछक्काया विराहिज्जति, पडियस्स वा भायणभंगे य छक्कायविराहणा, अहवा – परिगलने पडियस्स वा छड्डिते अणुपथिओ वा पडिपथिओ वा गंधमाघाएज्ज, सो य उड्डाहं करेज्ज, अतरा वा आहारतेणा भायणं उग्घाडेज्जति, दट्ठु आदिएज्ज उड्डाह वा करेज्ज । इयरे त्ति उवकरण तेणा ते वा कुतूहलेण भायणं उग्घाडेज्जा, किं लद्ध ति ? ते वा उड्डाह करेज्ज ॥६०४३॥

जम्हा एवमादिया दोसा –

तम्हा खलु सग्गामे, घेत्तूणं बंधणं घण कुज्जा ।
एत्तो च्चिय उवउत्तो, गिहीण दूरेण संवरितो ॥६०४४॥

खलुसद्दो सग्गामावधारणे, स्वग्राम एव गृहीतव्य, सग्गामासति परगामातो आणियव्वं, कारणे वा परगामं णेयव्वं इमेण विहिणा – सकुडमुहभायणे ओमत्थिय सरावं घणचीरबंधणं कुज्जा, पथ उवउत्तो गच्छति, जहा णो परिगलति पक्खलति वा । गिहीण य एयतजताण हेट्ठोवाएण दूरतो गच्छति, त पि भायणं वास कप्पादिणा सुसवृत करेति ॥६०४४॥

अववादकारणेण परगामे णेति, आणवेति वा –

बितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएसे तहेव सिक्खाए ।
एतेहि कारणेहिं, जयण इमा तत्थ कायव्वा ॥६०४५॥ पूववत्

एवमादिकारणेहि गेण्हतस्स इमा जयणा –

पुराणेसु सावतेसु, व सण्णि-अहाभद्द-दाणसड्ढेसु ।
मज्झत्थकुलीणेसुं, किरियावादीसु गहणं तु ॥६०४६॥

पुव्व पुराणस्स हत्थातो घेप्पइ, तस्स असति गहिताणुव्वतसावगस्स, ततो अविरयसम्मद्दिट्ठिस्स, ततो अह ट्टगस्स ततो दाणसड्ढस्स । मज्झत्था ज णो अम्ह सासण पडिवण्णा णो अण्णेसिं, ते य जातिकुलाणा। एत्थ कुलीणो सभावट्ठितो दिट्ठे य सद्दहेत्यर्थ । क्रिया वदति क्रियावादीति वेज्जेत्यर्थ ।।६०४६।।

खेत्ततो पुण इमेसु गहण –

गिहि-कुल-पाणागारे, गहणं पुण तस्स दोहि ठाणेहिं ।
सागारियमादीहि उ, आगाढे अन्नलिंगेणं ।।६०४७।।

दोहिं ठाणेहिं गहण, गिहेत्ति पुराणादियाण गिहेसु, "पाणागार" त्ति-कल्लालावणे, गिहासइ पच्छा कल्लालावणे । 'गिहे" त्ति पुव्व सेज्जातरगिहातो आणिज्जति जे दूराणयणे दोसा ते परिहरिया भवति, से जातरगिहासति पच्छा णिवेसणतो वाडग-साहि-सग्गाम-परगामातो य । जत्थ सलिंगेण उड्डाहो तत्थ परलिंगेण गहण करेति ।।६०४७।।

अदिट्ठसस्सुतेसु, परलिंगेणेतरे सलिंगेणं ।
आसज्ज वा विदेसं, अदिट्ठपुव्वे वि लिंगेणं ।।६०४८।।

जत्थ णगरे गामे वा सो साधू ण केणइ दिट्ठो वण्णासारेहिं वा सुतो तत्थ परलिंगेण ठितो गेण्हइ । "इतरे" त्ति – जत्थ पुण सो परलिंगट्ठितो वि पच्चभिण्णज्जति तत्थ सलिंगेण वा गेण्हति । अहवा – "आसज्ज वा वि देस" – ति जत्थ देसे ण णज्जति किं एतेसिं वियड कप्प अकप्प त्ति, ण वा लोगो गरहति, तत्थ सलिंगेण गेण्हति। "अदिट्ठपुव्वे" ति-जत्थ गाम-णगरादिसु ण दिट्ठपुव्वो तत्थ वा सलिंगेण गेण्हति ।।६०४८।।

जे भिक्खू वियडं गालेइ, गालावेइ, गालियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेति पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ।।सू०।।७।।

परिपूणगादीहिं गालेति तस्स चउलहु आणादीया य दोसा ।

जे भिक्खू वियडं तू, गालिज्जा तिविहकरणजोगेण ।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधण पावे ।।६०४९।।

अप्पणो गालेइ, अण्णेण वा गालावेइ, गालेतमणुमोदेति एव तिविहकरण, सेस कठं ।

इमे दोसा –

इहरह वि ताव गंधो, किमु गालेतम्मि जं उज्झिमिया ।
खोलेसु पक्कसम्मिय,-पाणादिविराधणा चेव ।।६०५०।।

"इहरह" त्ति अगालिज्जतस्स वि गंधो, गालिज्जते पुण सुट्ठुतर गंधो खोलपक्कसेसु उज्झिज्ज-माणेसु उज्झिमिता भवति, मज्जस्स हेट्ठा थोयगिमादिकिट्टिसखोलो सुराए किण्णिमादिकिट्टिमपक्कस अण्ण च खोलपक्केसु छड्डिज्जमाणेसु मक्खिगपिपीलिगा विराधणा, मधुबिंदोवक्खाणओ य प्राणिविराधणा ।।६०५०।।

बितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएसे तहेव सिक्खाए ।
एतेहिं कारणेहिं, जयण इमा तत्थ कातव्वा ।।६०५१।।

कारणे इमाए जयणाए गेण्हेज्जा –

पुव्वपरिग्गालियस्स उ, गवेसणा पढमताए कायव्वा ।

पुव्वपरिगालियस्स व, असतीते अप्पणा गाले ॥६०५२॥

रिजु पुव्वपरित्ति कठ्य। ॥६०५२॥

सव्वे वियडसत्ता जहा णिद्दोस-सदोसा भवंति तहा आह –

कारणगहणे जयणा, दत्ती दूतिज्जगालण चेव ।

कीतादी पुण दप्पे, कज्जे वा जोगमकरेत्ता ॥६०५३॥

दत्तीसुत्त दूइज्जणासुत्त गालणासुत्त च एते सुत्ता कारणिया, एतेसु कारणसु वियड घेप्पइ, गहणे णिद्दोसो जयण करेतोऽजयण करेतस्स दोसा भवति । कोयगड पामिच्च-परियट्टि-अच्छेज्जादिया पुण सुत्ता दप्पतो पडिसिद्धा, दप्पतो गेण्हतो सदोसो, कज्जे अववादतो गेण्हतो जति तिण्णि वारा सुद्धस्स जोग ण पउजति पणगपरिहाणी वा न पउजति तो सदोसो ॥६०५३॥

जे भिक्खू चउहिं संझाहिं सज्झायं करेइ करेतं वा साइज्जइ, तं जहा पुव्वाए सझाए, पच्छिमाए संज्झाए, अवरण्हे, अड्ढरत्ते ॥सू०॥८॥

तासु जो सज्झाय करेइ तस्स चउलहु आणादिया य दोसा ।

पुव्वावरसंझाए, मज्झण्हे तह य अद्धरत्तम्मि ।

चतुसंझासज्झायं, जो कुणती आणमादीणि ॥६०५४॥

सझासु अपाढे इम कारण –

लोए वि होति गरहा, संझासु तु गुज्झगा पवियरंति ।

आवासग उवओगो, आसासो चेव खिन्नाण ॥६०५५॥

लोइयवेइसामादियाणा य सझासु पाढो गरहियो, अन्न सझासु गुज्झग त्ति देवा ते विचरति ते पमत्त छलेज्ज, सझाए सज्झायविणियट्टचित्तो आवासगो उवउत्तो भवति, सज्झायखिण्णस्स य त वेल आसासो भवति, णाणायारो य विराहितो, णाणविराहण करेनण सजमो विराहितो, जम्हा एत्तिया दोसा तम्हा णो करेज्जा ॥६०५५॥

कारणे वा करेज्ज –

बितियाऽऽगाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती कातुं ॥६०५६॥

आगाढजोगो महाकप्पसुयाइउद्दिट्ठ पडिसुणावणणिमित्त सझासु कड्ढिज्जज्जा, अहवा – आगाढकारणा सागारिगादि ॥६०५६॥

तेसिं इमा विभासा –

ज जस्स जियं सागारियम्मि णिसिभरणे जेण जग्गंति ।

अहिणवगहितम्मि भत्ते, पडिपुच्छं नत्थि उभयस्स ॥६०५७॥

"सागारिग" त्ति-सहपडिबद्धाए वसहीए ठिता तत्थ जस्स ज सुय कालिग उक्कालिग वाएइ त्ति सो त सज्झाए परियट्टेति । "[1]कालगतो" त्ति – कोइ साधू निसीए मग्रो तदट्ठा रात्रो जग्गियव्व, तत्थ जेण सुत्तेण रत्तिएण णायमादिणा कढिज्जतेण जग्गति त सज्झासु वि कड्ढिज्जति, गिलाणो वा ओसही पीओ जेण जग्गति त कढिज्जति । "[2]असति" त्ति किंचि अज्झयण कस्सइ गुरुणा समीवाओ गहित सो गुरू कालगतो, तस्स व अहिणवगहियस्स सुत्तत्थस्स अण्णतो पडिपुच्छ पि णत्थि अतो त सज्झासु वि परियट्टेति ॥६०५७॥

"[3]वोच्छेदि" त्ति अस्य व्याख्या –

वोच्छेदे तस्सेव उ, तदन्थि सेसेसु तं समुच्छिण्णे ।
अणुपेहाए अबालिओ, घोमसु यं वा वि सद्देणं ॥६०५८॥

वस्स इ आयरियस्स किंचि अज्झयण अत्थि, अण्णेसु त वोच्छिण्ण, सो सज्झासु असज्झाकाले वा परियट्टेति, मा मम पि वोच्छिज्जिहिति । अहवा – तस्स समीवातो पढतो लहु पढामित्ति सज्झासु वि पढति, मा वोच्छिजिहिति त्ति । सज्झासु कारणे अणुप्पेहियव्व । जो पुण अणुपेहाए ण सक्केति सो सद्देण वि पढेज्जा । अहवा – त घोससद्देण घोसेयव्व त पि जयणाए, जहा अण्णो अपरिणामगो ण जाणति ॥६०५८॥

जे भिक्खू कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ
पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ
पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

कालियसुयस्स उक्काले सज्झासु वा असज्झाए वा तिण्ह पुच्छाग परेण पुच्छइ तस्स चउलहु । दिट्ठिवायस्स सज्झासु असज्झाए वा सत्तण्ह परेण पुच्छतस्स ड्ड ।

तिण्हुवरि कालियस्सा, सत्तण्ह परेण दिट्ठिवायस्स ।
जे भिक्खू पुच्छाण, चउसंझं पुच्छ आणादी ॥६०५९॥

चउलु सज्झासु अण्णयरीए वा तस्स आणादी ॥६०५९॥

पुच्छाते पुण किं पमाण ?, अतो भण्णति –

पुच्छाणं परिमाणं, जावतियं पुच्छति अपुणरुत्तं ।
पुच्छेज्जा ही भिक्खू, पुच्छ णिसज्झाए चउभंगो ॥६०६०॥

अपुणरुत्त जावतिय कड्ढिउ पुच्छति सा एगा पुच्छा ।

एत्थ चउभगो –

एक्का णिसेज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ सुद्धो ।

एक्का णिसेज्जा अणेगाओ पुच्छाओ, एत्थ तिण्ह वा सत्तण्ह वा परेण चउलहुगा ।

अणेगा णिसिज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ वि सुद्धो ।

अणेगा णिसिज्जा अणेगा पुच्छा, एत्थ वि तिण्ह सत्तण्ह वा परेण पुच्छतस्स चउलहुगा ॥६०६०॥

१ गा० ६०५६ । २ गा० ६०५६ । ३ गा० ६०५६ ।

अहवा तिण्णि सिलोगा, ते तिसु णव कालिएतरे तिगा सत्त ।
जत्थ य पगयसमत्ती, जावतिय वाचिओ गिण्हे ॥६०६१॥

तिहिं सिलोगेहिं एगा पुच्छा, तिहिं पुच्छाहिं णव सिलोगा भवति, एव कालियसुयस्स एगतरं। दिट्ठिवाए सत्तसु पुच्छासु एगवीसं सिलोगा भवति । अहवा – जत्थ पगत समप्पति थोव बहु वा सा एगा पुच्छा । अहवा – जत्तिय आयरिएण तरइ उच्चारित घेत्तु सा एगा पुच्छा ॥६०६१॥

बितियागाढ सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।
एतेहिं कारणेहिं, तिण्ह सत्तण्ह व परेणं ॥६०६२॥

कम्हा दिट्ठिवाए सत्त पुच्छातो ?, अतो भण्णति –

नयवातसुहुमयाए, गणिते भंगसुहुमे णिमित्ते य ।
गंथस्स य बाहुल्ला, सत्त कया दिट्ठिवातम्मि ॥६०६३॥

णेगमादि सत्तणया, एक्केक्को य सयविहो, तेहिं सभेदा जाव दव्वपरूवणा दिट्ठिवाए कज्जति सा णयवादसुहुमया भण्णति । तह परिकम्मसुत्तेसु गणियसुहुमया, तहा परमाणुमादीसु वण्णगंधरसफासेसु एगगुण कालगादिपज्जवभगसुहुमता । तहा अट्ठगमादिणिमित्त, बहुवित्थरत्तणतो दिट्ठिवायगंथस्स य बहुअत्तणतो सत्त पुच्छाओ कताओ ॥६०६३॥

जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेतं वा साइज्जइ, तं जहा –
इदमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे ॥सू०॥११॥

रधण पयण खाण-पाण नृत्य गेय-प्रमोदे च महता महामहा तेसु जो सज्झाय करेइ तस्स चउलहु ।

जे भिक्खू चउसु महापडिवएसु सज्झाय करेइ करेतं वा साइज्जइ, तं जहा –
सुगिम्हयपाडिवए आसाढीपाडिवए
आसोयपाडिवए कत्तियपाडिवए वा ॥सू०॥१२॥

एतेसि चेव महामहाण जे चउरो पडिवयदिवसा, एतेसु वि करेतस्स चउलहु ।

चतुसुं महामहेसु, चतुपाडिवदे तहेव तेसिं च ।
जो कुज्जा सज्झायं, सो पावति आणमादीणि ॥६०६४॥ कण्ठ्या

के पुण ते महामहा ?, उच्यते—

आसाढी इदमहो, कत्तिय-सुगिम्हओ य बोधव्वो ।
एते महामहा खलु, एतेसिं चेव पाडिवया ॥६०६५॥

आसाढी—आसाढपोण्णिमाए [1]इह लाडेसु सावणपोण्णिमाए भवति इदमहो, आसोयपुण्णिमाए कत्तियपुण्णिमाए चेव, सुगिम्हातो चेत्तपुण्णिमाए । एते अतदिवसा गहिया । आदितो पुण जत्थ विसए

१ 'इह' अनेन ज्ञायते लाटदेशीयोऽय-चूर्णिकार इति ।

जतो दिवमातो महामहो पवत्तति ततो दिवसातो आरब्भ जाव अतदिवसा ताव सज्झातो ण कायव्वो । एएसि चेव पुण्णिमाण अणंतर जे बहुलपडिवगा चउरो ते वि व जेयव्वा ॥६०६५॥

पडिसिद्धकाले करेंतस्स इमे दोसा –

अन्नतरपमादजुत्तं, छलेज्ज अप्पिड्ढिओ ण पुण जुत्तं ।
अद्धोदहिट्ठिती पुण, छलेज्ज जयणोवउत्तं पि ॥६०६६॥

सरागसजतो सरागत्तणतो इंदियविसयादि अण्णतर पमादजुत्तो हवेज्ज, विसेसतो महामहेसु त पमायजुत्त पडिणीयदेवता अप्पिड्ढिया खित्तादि छलण करेज्ज । जयणाजुत्त पुण साहु जा अप्पिड्ढितो देवो अद्धोदधीओ ऊणट्ठिइ त्ति सो ण सक्केति छलेउ – अद्धसागरोवमठितिता पुण जयणाजुत्त पि छलेति, अत्थि से सामत्थ, त पि पुव्ववेरसबधसरणतो कोति छलेज्ज ॥६०६६॥

चोदगाह – "बारसविहम्मिवि तव, सब्भितर बाहिरे कुसलदिट्ठ ।
ण वि अत्थि ण वि य होही, सज्झायसमो तवोकम्म ॥"

कि महेसु सज्झासु वा पडिसिज्झति ?, आचार्याह –

कामं सुओवओगो, तवोवहाणं अणुत्तरं भणितं ।
पडिसेहितम्मि काले, तहावि खलु कम्मबंधाय ॥६०६७॥

दिट्ठ महेसु सज्झायस्स पडिसेहकारण ।

पाडिवएसु कि पडिसिज्झइ ?, उच्यते –

छणियाऽवसेसएणं, पाडिवएसु वि छणाऽणुसज्जंति ।
महवाउलत्तणेणं, असारिताणं च सम्माणो ॥६०६८॥

छणस्स उवसाहिय ज मज्जपाणादिग त सव्व णोवभुत्त, त पडिवयासु उवभजति, अतो पडिवतासु वि छणो अणुसज्जति । अण्ण च महदिणेसु वाउलत्तणतो जे य मित्तादि ण सारिता ते पडिवयासु सभारिज्जति त्ति छणो वट्टति, तेसु वि त चेव दोसा, तम्हा तेसु वि णो करेज्जा ॥६०६८॥

बितियागाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।
एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती कातुं ॥६०६९॥ कण्ठ्या

जे भिक्खू पोरिसिं सज्झायं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा साइज्जति॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू चउकालं सज्झायं न करेइ न करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

कालियसुत्तस्स चउरो सज्झायकाला, ते य चउपोरिसिणिप्फण्णा, ते उवातिणावेति त्ति – जो तेसु सज्झाय न करेइ तस्स चउलहु आणादिणा य दोसा ।

अतो अहोरत्तस्स उ, चउरो सज्झायपोरिसीओ उ ।
जे भिक्खू उवायणति, सो पावति आणमादीणि ॥६०७०॥

अहोरत्तस्स अतो अब्भतरे, सेस कण्ठ्य ॥६०७०॥

चाउक्काल सज्झाय अकरेतस्स इमे दोसा ।

पुव्वगहितं च नासति, अपुव्वगहणं कओ सि विकहाहिं ।
दिवस-निसि-आदि-चरिमासु चतुसु सेसासु भइयव्वं ॥६०७१॥

सुत्तत्थे मोत्तु देस भत्त राय इत्थिकहादिसु पमत्तो अच्छति अगुणेतस्स पुव्वगहित णासति, विकहा-पमत्तस्स य अपुव्व गहण णत्थि, तम्हा णो विकहासु रमेज्जा ।

दिवसस्स पढमचरिमासु णिसीए य पढमचरिमासु य–एयासु चउसु वि कालियसुयस्स गहण गुणण च करेज्ज । सेसासु त्ति दिवसस्स बितियाए उक्कालियसुयस्स गहण करेति अत्थ वा सुणेति, एसा चेव भयणा । ततियाए वा भिक्ख हिंडइ, अह ण हिंडति तो उक्कालिय पढति, पुव्वगहियमुक्कालिय वा गुणेति, अत्थ वा सुणेइ । णिसिस्स बिइयाए एसा चेव भयणा सुवइ वा । णिसिस्स ततियाए णिद्दाविमोक्ख करेइ, उक्कालिय गेण्हति गुणेति वा, कालिय वा सुत्तमत्थ वा करेति । एव सेसासु भयणा भावेयव्वा ॥६०७१॥

चाउक्कालियसज्झायस्स वा अकरणे इमे कारणा –

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।
अद्धाण रोहए वा, काल च पडुच्च नो कुज्जा ॥६०७२॥

अस्य व्याख्या -

सज्झायवज्जमसिवे, रायदुट्ठे भय रोहग असुद्धे ।
इतरमवि रोहमसिवे, भइतं इतरे अलं भयसु ॥६०७३॥

"सज्झायवज्जमसिवे" त्ति – लोगे असिव वा साधू अप्पणा वा गहितो तत्थ सज्झाय ण पढेंति आवस्सगादि उक्कालिय करेति । रायदुट्ठे बोहिगभए य तुण्हिक्का अच्छति, मा णज्जिहामो, तत्थ कालिग-मुक्कालिग वा ण करेंति । अहवा – "रायदुट्ठे भय" त्ति-णिव्विसया भत्तपाणे पडिसेहे य ण करेंति सज्झाय । उवकरण (सरीर) हरे दुविधभेरवे य ण करेंति, मा णज्जीहामो त्ति । रोधगे असुद्धे काले वा ण करेंति । इयरमवि आवस्सगादि उक्कालिय, जत्थ रोधगे अचियत्त असिवेण य गहिया तत्थ त पि ण करेंति । इयरे त्ति – ओमोदरिया तत्थ भयणा – जइ बितियजामादिसु वेलासु ण करेंति सज्झाय, अह ण फव्वति पच्चूसियवेलातो आदिच्चोदयाओ आरद्धा ताव हिंडति जाव अवरण्हो त्ति । गेलण्णट्ठाणेसु ' अल भयसु" त्ति-जइ गिलाणो सत्तो अद्धाणिगेण वा न खिण्णो तो करेति, अह असत्ता तो ण करेति । अहवा – गिलाण पडियरगा वा ण करेंति, कालं वा पडुच्च णो कुज्जति । असुद्धे वा काले ण करेंति । अणुपेहा सव्वत्थ अविरुद्धा ॥६०७३॥

जे भिक्खू असज्झाइए सज्झायं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जम्मि जम्मि कारणे सज्झाओ ण कीरति त सव्व असज्झाइय, त च बहुविह वक्खमाण, तत्थ जो करेइ तस्स चउलहु आणाभगो अणवत्था मिच्छत्त आयसजमविराहणा य ।

तस्सिमे भेदा –

असज्झायं च दुविहं, आतसमुत्थ च परसमुत्थं च ।
जं तत्थ परसमुत्थं, त पचविहं तु नायव्वं ॥६०७४॥

आयसमुत्थ चिट्ठउ ताव उवरिं भणिहिति अणतरसुत्ते, ज परसमुत्थ त इम पचविह ।।६०७४।।

संजमघाउप्पाते, सा दिव्वे वुग्गहे य सारीरे ।
घोसणयमेच्छरण्णो, कोड छलिओ पमाएणं ।।६०७५।।

एयम्मि पचविहे असज्झाइए जो सज्झाय करेति तस्सिमा आयसजमविराहणा । दिट्ठतो-घोसणय मेच्छरण्णो त्ति ।।६०७५।।

अस्य व्याख्या –

मेच्छभयघोसणणिवे, हियसेमा ते तु डंडिया रण्णा ।
एवं दुहओ डंडो, सुर पच्छित्त इह परे य ।।६०७६।।

खिइपतिट्ठित णगर, जियसत्तू राया । तेण सविसए घोसावित जहा – मेच्छो राया आगच्छति, त गामणगराणि मोत्तु समासण्णे दुग्गेसु ठायह, मा विणस्सिहिह । जे ठिया रण्णो वयणेण दुग्गादिसु ते ण विणट्ठा । जे पुण न ठिता ते मेच्छेसु विलुत्ता, ते पुण रण्णा आणाभगो मम कओ त्ति ज किंचि हियसेस पि त पि डडिता । एव असज्झाइए सज्झाय करेतस्स दुहतो डडो इह भवे "सुर" त्ति देवताए छलिज्जति, परभव पडुच्च णाणादिविराहणा पच्छित्त च ।।६०७६।।

इमो दिट्ठतोवणओ –

राया इव तित्थकरो, जाणवता साधु घोसणं सुत्तं ।
मेच्छो य असज्झाओ, रतणधणाइं च णाणादी ।।६०७७।।

जह राया तहा तित्थकरो, जहा जणवदजणा तहा साधू, जहा आघोसण तहा सुत्तपोरिसिकरण, जारिसा मेच्छा तारिसा असज्झाया, जहा रयणधणावहारो तहा णाणदसणचरणविणासो । त पि सव्व उवसघारेयव्व ।।६०७७।।

"[1]कोति छलिओ, पमादेण" ति अस्य विभासा –

थोवाऽवसेसपोरिसि, अज्झयणं वा वि जो कुणति सोच्चा ।
णाणादिसारहीणस्स तस्स छलणा तु संसारे ।।६०७८।।

सज्झात करेंतस्स थोवावसेसगो उद्देसगो अज्झयण वा, तो पोरिसी आगय त्ति सुता, अहवा – असज्झाइय कालवेला वा सोच्चा वि जो आउट्टियाए सज्झाय करोति सो णाणादिसारहीणो भवति । णायारत्थो य देवयाए छलिज्जति, ससारे य दीहकाल परियट्टेति, पमादेण वि करेंतो छलिज्जति चेव, दुक्ख ससारे अणुभवति ।।६०७८।।

ज त सजमोवघाति त इम तिविह –

महिया य भिण्णवासे, सचित्तरजो य संजमे तिविहे ।
दव्वे खेत्ते काले, जहियं वा जच्चिरं भव्वं ।।६०७९।।

---

1 गा० ६०७५ ।

पचविहसज्झायस्स किं कह परिहरियव्वमिति तत्पसाहगो इमो दिट्ठतो -

दुग्गादि तोसियणिवो, पचण्ह देति इच्छियपयारं।
गहिए य देति मोल्लं, जणस्स आहारवत्थादी ॥६०८०॥

एगस्स रण्णो पच पुरिसा,- ते बहुसमरलद्धविजया। अण्णया तेहिं अच्चतविसम दुग्ग गहित। तसि तुट्ठो राया। इच्छिय णगरे पयार देति ज ते किंचि असणादिग वत्थादिग वा जणस्स गेण्हति तस्स रायइय (वयणिय) सव्व राया पयच्छति ॥६०८०॥

एगेण तोसिततरो, गिहमगिहे तस्स सव्वहिं पयारो।
रत्थादीसु चउण्ह, एव पढमं तु सव्वत्थ ॥६०८१॥

तेसि पचण्ह पुरिसाण एक्केण राया तोसिततरो तस्स गिहाए रत्थासु सव्वत्थ इच्छिय-पयार पयच्छति। चउण्ह रच्छासु चेव इच्छियपयार पयच्छइ। जो एत दिण्णप्पयारे आसाएज्ज तस्स राया डड करेति। एस दिट्ठतो।

इमो उवसघारो - जहा पच पुरिसा तहा पचविहसज्झाय, जहा सो एगो अब्भहियतरो पुरिसा एव पढम सजमोवघातित सव्वहा णासातिज्जति तम्मि वट्टमाणे ण सज्झाओ ण पडिलेहणादिका काइ चिट्ठा कीरइ, इतरेसु चउसु असज्झाइएसु जहा ते चउरो पुरिसा रच्छासु चेव अणासायणिज्जा तहा तेसु सज्झाओ चेव ण कीरइ, सेसा सव्वा चिट्ठा कीरइ, आवस्सगादिउक्कालियं पढिज्जति ॥६०८१॥

[1]महियादितिविहस्स सजमोवघातिस्स इम वक्खाण -

महिया तु गब्भमासे, सच्चित्तरयो तु ईसिआयंबो।
वासे तिण्णि पगारा, बुब्बुय तव्वज्ज फुसिता य ॥६०८२॥

महियत्ति धूमिया, सा य कत्तियमग्गसिरादिसु गब्भमासेसु भवति, सा य पडणसमकाल चेव सुहुम-त्तणओ सव्व आउक्कायभावित करेति, तत्थ तक्कालसमय चेव सव्वचेट्ठा णिरुज्झति। ववहारसचित्तो पुढविकाओ आरण्णो वा उद्धओ आगतो सचित्तरओ भवति, तस्स लक्खण - वण्णतो ईसि आयबो दिसतरेसु दीसति सोवि णिरतरपातेण तिण्ह दिणाण परतो सव्व पुढविकायभावित करेति, तत्पातशकासभवश्च। भिन्नवास तिविह - बुब्बुयाइ, जत्थ वासे पडमाणे उदगबुब्बुया भवति त बुब्बुयवरिस, तेहिं वज्जित तव्वज्जिय। सुहुमफुसारेहिं पडमाणेहिं फुसिय वरिस, एतेसु जहासख तिण्णि पच-सत्तदिणपरओ सव्व आउक्कायभाविय भवइ ॥६०८२॥

सजमघायस्स सव्वभेदाण इमो चउव्विहो परिहारो - "[2]दव्वे खेत्ते" पच्छद्ध अस्य व्याख्या -

दव्वे त चिय दव्व, खेत्ते जहि पडति जच्चिरं कालं।
ठाणभासादिभावे, मोत्तुं उस्सास उम्मेस ॥६०८३॥

दव्वतो त चेव दव्व ति महिया सचित्तरयो भिन्नवास च परिहरिज्जति। "[3]जहिय व" त्ति -- जहिं खेत्ते महियादी पडति तेहिं चेव परिहरिज्जति। '[4]जच्चिर" ति - पडणकालातो आरब्भ जच्चिर

---

१ गा० ६०७६। २ गा० ६०७६। ३ गा० ६०७६। ४ गा० ६०७६।

काल' पडति तच्चिर परिहारो। "भव्व" ति—भावतो 'ठाणभासादि" त्ति—काउस्सग्ग ण करेंति, ण य भसति। आदिसद्दाओ गमणागमण पडिलेहणसज्झायादि ण करेति। "मोत्तु उस्सासउम्मेस" मोत्तु ति णो पडिसिज्झति उस्सासादिया अशक्यत्वात् जीवितव्याघातकत्वाच्च, शेषा क्रिया सवा निषिद्धयते। एस उस्सग्गपरिहारो। आतिण्ण पुण सच्चित्तरए तिण्णि भिण्णवासे तिण्णि पच सत्त, अतो पर सज्झायादि ण करेति।

अन्ने भणति – बुब्बुयावरिसे अहोरत्त, तव्वज्जे दो अहोरत्ता, फुसियवरिसे सत्त, अतो पर आउक्कायभावित सव्ववेद्वा णिज्झति ॥६०८३॥

गामत्ताणाऽऽवरिया, णिक्कारणे ठंति कज्जे जतणाए ।
हत्थऽच्छिंगुलिसण्णा, [1]पोत्तोवरिया व भासति ॥६०८४॥

णिक्कारणे वा सकप्पकबलीए पाउया [2]णिहुया सव्वब्भतरे चिट्ठति, अवस्सकायव्वे वा कज्जे वत्तव्वे वा इमा जतणा हत्थेण भूमादिअच्छिविकारण वा अगुलीए वा सण्णेति—'इम करेहि, मा वा करेहि" त्ति। अहवा—एव णाववगच्छति मुहणेत्तिय अतरिया जयणाए भासति गिलाणादिकज्जेसु वा सकप्पपाउआ गच्छति ॥६०८४॥ सजमघाति त्ति गत्त।

इदाणि – "[3]उप्पाए" त्ति दार – अब्भादिविकारवत् विश्रसा परिणामतो उत्पातो पासुमादी भवति।

पंसू य मंस रुहिरे, केस-सिल-वुट्ठि तह रयुग्घाए ।
मंसरुहिरऽहोरत्तं, अवसेसे जच्चिरं सुत्तं ॥६०८५॥

पसुवरिस ससवरिस रुधिरवरिस, केसत्ति—वालवरिस, करगादि वा सिलावरिस, रयुग्घायपयडण च। तेसि इमो परिहारो—ससरुहिर अहोरत्त सज्झाओ ण कीरइ अवसेसा पसुमादिया जच्चिर-काल पडति तत्तिय काल सुत्त णदिमादिय ण पढति ॥६०८५॥

पसुरउग्घातणे इम वक्खाण –

पंसू अचित्तरयो रयुग्घातो धूलिपडणसव्वत्तो ।
तत्थ सवाए णिव्वायए य सुत्तं परिहरंति ॥६०८६॥

धूमागारो आपडुरो रयो अचित्तो य पसू भण्णइ, महास्कन्धावारगमनसमुद्धता इव विश्रसा परिणामतो समता रेणुपतन रयुग्घातो भण्णइ अहवा – एस रओ, उग्घातो पुण पसुरता भण्णति, एतेसु बातसहितेसु असहितेसु वा सुत्तपोरिसि ण करेंति ॥६०८६॥

किं चान्यत्—

साभाविते तिण्णि दिणा, सुगिम्हते निक्खिवंति जति जोग्गं ।
तो तम्मि पडंते वी, कुणंति संवच्छरज्झायं ॥६०८७॥

एते पसुरयुग्घाता साभाविगा हवेज्ज, असाभाविका वा। तत्थ असाभाविगा जे णिग्घायभूमिकप चदोपरागादिदिव्वसहिता, एरिसेसु असाभाविगेसु कते वि उस्सग्गे ण करेति सज्झाय। 'सुगिम्हए" त्ति—

१ पोत्तनरिया इति चूर्णि। २ निर्व्यापारा। ३ गा० ६०७१।

जइ पुण चेत्तसुद्धपक्खदसमीए अवरण्हे जोग णिक्खिवति दसमीओ परेण जाव पुण्णिमाए एत्थन्तरे तिण्णि दिगा उवरुवरि अचित्तरउग्घाडावण काउस्सग्ग करेंति, तरसिमादिसु वा तिसु दिणेसु तो साभाविके पडते वि सज्झाय सत्तम्र करंति, अह न उस्सग्ग ण करंति तो साभाविगे वि पडते सज्झाय ण करेंति ॥६०८७॥ उप्पाय त्ति गय।

इदाणि "[1]सादेव्वे" त्ति – स दिव्वेण सादिव्व दिव्वकृतमित्यर्थ ।

गंधव्व दिसा विज्जुग, गज्जिते जूव जक्ख आलित्ते ।
एक्केक्कपोरिसी गज्जियं तु दो पोरिसी हणति ॥६०८८॥

गध-वणगरविउव्वण दिसाडाहकरण विज्जुभवण उक्कापडण गज्जियकरण जूवगो वक्खमाणो जक्खालित्त जक्खदित्त आगासे भवति, तत्थ गधव्वणगर जक्खदित्त च एते णियमा दिव्वकया, सेसा भयणिज्जा, जतो फुड ण णज्जति। तेण तेसिं परिहारो। एत गधव्वादिया सव्वे एक्क पोरिसिं उवहणंति, गज्जिय तु पोरिसिं दुग हणइ ॥६०८८॥

दिसिदाहो छिण्णमूलो, उक्क सरेहा पगासजुत्ता वा ।
सझा छेदावरणो, तु जूवओ सुक्के दिण तिण्णि ॥६०८९॥

अन्यतमदिगन्तरविभागे महाणगरप्रदीप्तमिवोद्योत किन्तु उवरि प्रकाशमधस्तादधकार ईदृग छिण्ण-मूला दिग्दाहा। उक्कालक्खण सदेहवण्ण रेह करती जा पडइ सा उक्का, रेहविरहिता वा उज्जोय करेंती पडति सा वि उक्का। "जूवगो" त्ति सझप्पभा य चदप्पभा जेण जुगव भवति तेण जूवगो, सा य सझप्पभा चदप्पभावरिया फिट्टती ण णज्जति सुक्कपक्खपडिवयादिसु दिणेसु सझोच्छेदे य अणज्जमाणे कालवेल ण मुणति, अतो तिण्णि दिणे पातोसिय काल ण गेण्हति तेसु तिसुवि दिणेसु पादोसियसुत्तपोरिसिं ण करेंति ॥६०८९॥

केसिं चि होतऽमोहा, उ जूयओ ताव होंति आइण्णा ।
जेसिं तु अणाइण्णा, [2]तेसिं दो पोरिसी हणति ॥६०९०॥

जगस्स सुभासुभमत्थणिमित्तुप्पादो अवितथो आदिच्चकिरणविकारजणिओ आइच्चमुदयत्थमे आयवो किण्ह सामो वा सगडुद्धिसठितो डडो अमोह त्ति एस जूवगो, सस कठ्य ॥६०९०॥

कि चान्यत् –

चदिमसूरुवरागे, णिग्घाए गुंजिते अहोरत्तं ।
संझाचतुपाडिवए, जं जहि सुगिम्हए नियमा ॥६०९१॥

चदसूरुवरागो गहण भण्णति, एव वक्खमाण साभ्रे निरभ्रे वा व्यतरकृतो महागर्जितसमो ध्वनि-निर्घात, तस्सेव विकारो गुजमानो महाध्वनि, गुजित सामण्णतो, एतेसु चउसु वि अहोरत्त सज्झाओ ण कीरइ। णिग्घातगुंजितेसु विसेसो – बितियदिणे जाव सा वेला विज्जति, णो अहोरत्तछेदेण छिज्जति, जहा अण्णेसु असज्झाईएसु ॥६०९१॥

---

१ गा० ६०७५। २ तेसिं किर पोरिसी तिन्नि। (आ० नि०)। ३ आताम्र।

सब्भावश्रो त्ति श्रणुदिते सूरिए, मज्झण्हे श्रत्थमाण, श्रड्ढरत्ते य – एयासु चउसु सज्झाय ण करेति । दोसा पुव्वुत्ता । चउण्ह महामहेसु चउसु पाडिवएसु सज्झाय ण करति पुव्वुत्त, एवं श्रण्ण पि जत्तिय जाणति "जं" ति सह जाणेज्जा । "जहि" ति गामणगरादिसु त पि तत्थ वज्जेज्ज । सुगिम्हगो पुण सव्वत्थ णियमा भवइ । एत्थ श्रणागाढजोग णियमा णिक्खिवति । श्राग ढ ण णिक्खिवति णपढति पुण ॥६०६१॥

[2]चदिम-सूरिमग त्ति श्रस्य व्याख्या –

उक्कोसेण दुवालस, श्रट्ठ जहण्णेण पोरिसी चंदे ।
सूरो जहण्ण बारस, पोरिसि उक्कोस दो श्रट्ठा ॥६०९२॥

चदोदयकाले चेव गहिश्रा, सदूसियराती‌ए चउरो, श्रण्ण च श्रहोरत्त एव दुवालस । श्रहवा – उप्पातगहण सव्वराती‌य गहण सग्गहो चेव णिव्वुडो, सदूसियराती‌ए चउरो, श्रण्ण च श्रहोरत्त एव बारस । श्रहवा – श्रजाणया श्रब्भच्छण्णे सकाले ण नज्जति किं वेल गहण ?, परिहरिता राती पभाए दिट्ठ सग्गहो णिव्वुडो, श्रण्ण च श्रहोरत्त, एव दुवालस । एव चदस्स सूरस्स श्रत्थमणगहणे सग्गहणिव्वुडो उवहयरात्तीए चउरो, श्रण्ण च श्रहोरत्त परिहरति, एव बारस ।

श्रह उदतो गहितो तो सदूसियमहोरत्तस्स श्रट्ठ, श्रण्ण च श्रहोरत्त परिहरति एव सोलस । श्रहवा – उदयवेलागहिश्रो उप्पादियगहणे सव्वदिणे गहण होउ सग्गहो चेव णिव्वुडो सदूसियश्रहोरत्तस्स श्रट्ठ, श्रण्ण च श्रहोरत्त एव सोलस । श्रहवा – श्रब्भच्छण्णे ण णज्जति किं वेल होहिति गहण, दिवसतो सकाए ण पढिय, श्रत्थमणवेलाए दिट्ठ गहण सग्गहो णिव्वुडो सदूसियस्स श्रट्ठ श्रण्ण च श्रहोरत्त, एव सोलस ॥६०९२॥

सग्गहणिव्वुड एवं, सूराती जेण होंतऽहोरत्ता ।
श्राइण्णं दिणमुक्के, सोच्चिय दिवसो य राती य ॥६०९३॥

सग्गहणिव्वुडे त श्रहोरत्त उवहत । कह ? उच्यते "सूरादी जेण श्रहोरत्ता," सूरुदयकालाश्रो जेण श्रहोरत्तस्स श्रादी भवति त परिहरित्तु सदूसित श्रण्ण पि श्रहोरत्त परिहरियव्व । इम पुण श्राइण्ण चदो गहितो रातीए चेव मुक्को, तीसे चेव राईए सेस चेव वज्जणिज्ज, जम्हा श्रागामिसूरुदए श्रहोरत्तसमत्ती । सूरस्स वि दिया गहितो दिया चेव मुक्को, तस्सेव दिवसस्स सेस राती य वज्जणिज्जा । श्रहवा-सग्गहणिव्वुडे विधी भणितो ।

ततो सीसो पुच्छति – "कह चदे दुवालस, सूरे सोलस जामा ?"

श्राचार्याह – "सूराती जेण होति श्रहोरत्ता", चदस्स णियमा श्रहोरत्तद्धे गते गहणसभवो श्रण्ण च श्रहोरत्त एव दुवालस, सूरस्स पुणो श्रहोरत्तातीए सदूसियश्रहोरत्त परिहरिय, श्रन्न पि श्रहोरत्त परिहरियव्व एव सोलस ॥६०९३॥ सादेव्वेत्ति गत ।

इदाणि [3]वुग्गहे त्ति दार –

वुग्गहडंडियमादी, संखोभे डंडिए व कालगते ।
श्रणरायए व सभए, जच्चिर णिद्दोच्चऽहोरत्तं ॥६०९४॥

"वुग्गहडडियमादि" त्ति श्रस्य व्याख्या –

सेणाहिव भोइ महयर, पुंसित्थीणं च मल्लजुद्धे वा ।
लोट्ठादि-भंडणे वा, गुज्झगुड्डाहमचियत्तं ॥६०९५॥

---

1 गा० ६०६१ । 2 गा० ६०६१ । 3 गा० ६००७ ।

डंडियस्स डंडियस्स य वुग्गहो, आदिसद्दातो सेणाहिवस्स सेणाहिवस्स य । एवं दोण्हं भोइयाणं, दोण्हं महत्तराणं, दोण्हं पुरिसाणं, दोण्हं इत्थीणं, मल्लाण वा जुद्धं पिट्ठायगलोट्ठुभंडणेण वा । आदिसद्दातो विसयपसिद्धासु [1]संसुरुलासु । विग्गहा प्रायो व्यंतरबहुला, तत्थ पमत्तं देवया छलेज्ज । "[2]उड्डाहो" हा निदुक्ख त्ति, जणो भणेज्ज – अम्हे आवइपत्ताणं इमे सज्झायं करेंति त्ति अचियत्तं हवेज्ज । विसयसंखोभो परचक्कागमे । डंडिए वा कालगए भवति । "[3]अणराए" त्ति रण्णो कालगते णिब्भएवि जाव अण्णो राया न ठविज्जति । "[4]सभए" त्ति जीवंतस्स वि रण्णो बोहिगेहिं समंततो अभिद्दुयं जच्चिरं समयं तत्तियं कालं सज्झायं ण करेंति । जद्दिवसं सुअं णिद्दोच्चं तस्स पुरतो अहोरत्तं परिहरंति ॥६०९५॥ एस डंडिए कालगते विधी ।

सेसेसु इमा विधी –

तद्दिवसभोयगादी, अंतो सत्तण्ह जाव सज्झाओ ।
अणाहस्स य हत्थसयं, दिट्ठविवित्तम्मि सुद्धं तु ॥६०९६॥

गामभोइए कालगते तद्दिवसं ति अहोरत्तं परिहरंति ।

आदिसद्दातो –

महतरपगते बहुपक्खिते, व सत्तघर अंतरमते वा ।
णिद्दुक्ख त्ति य गरहा, ण करेंति सणीयगं वा वि ॥६०९७॥

गामरट्ठमहत्तरे अधिकारणिजुत्तो बहुसम्मतो य पगतो "बहुपक्खिते" त्ति बहुसयणो वाडगसाधिअधिवो सेज्जातरो य अण्णम्मि वा अणंतरघरातो आरब्भ जाव सत्तमघर, एतेसु मएसु अहोरत्तं सज्झाओ ण कीरति । अह करेंति तो णिद्दुक्ख त्ति काउं जणो गरहति, अक्कोसेज्ज वा णिच्छुभेज्ज वा । अप्पसद्देण वा सणियं सणियं करेंति अणुपेहंति वा । जो पुण अणाहो मतो तं जति उब्भिण्णं हत्थसयं वज्जेयव्वं, अणुब्भिण्णं असज्झायं ण भवति, तह वि कुच्छियं ति काउं आयरणओ य दिट्ठं हत्थसयं वज्जिज्जति ॥६०९७॥

जइ तस्स णत्थि कोइ परिट्ठवेंतो ताहे –

सागारियादिकहणं, अणिच्छे रत्तिं वसभा विगिंचंति ।
विक्खिण्णे व समंता, जं दिट्ठं सढेतरे सुद्धा ॥६०९८॥

सागारियस्स आदिसद्दातो पुराणस्स सड्ढस्स अहाभद्दस्स वा कहिज्जति–"इमं छड्डेह, अम्हं सज्झाओ ण सुज्झइ ।" जति तेहिं छड्डियं तो सुद्धं । अह ते णेच्छंति ताहे अण्णं वसहिं [5]गम्मति । अह अण्णा वसही ण लब्भति ताहे वसभा अप्पसागारियं परिट्ठवेंति । एस अभिण्णे विधी ।

अह भिण्णं काकसाणादिएहिं समंता विक्खिण्णं तम्मि दिट्ठिविवित्तम्मि सुद्धासुद्धं असढभावं गवेसंतेहिं ज दिट्ठं तं सद्दं विवित्तं छड्डियं । "इयरं" ति अदिट्ठं तम्मि तत्थत्थे विसुद्धा सज्झायं करेंताण वि ण पच्छित्तं । एत्थ एयं पसंगतोऽभिहितं ॥६०९८॥

इयाणिं [6]सारीरं –

सारीरं पि य दुविहं, माणुस-तेरिच्छगं समासेणं ।
तेरिच्छं पि य तिविहं, जल-थल-खयरं चउद्धा तु ॥६०९९॥

---

१ भंसलासु (आ० वृ०) भंसुभलाभसु इत्यपि पाठः । २ गा० ६०९४ । ३ गा० ६०९४ । ४ गा० ६०९४ । ५ मग्गति इत्यपि पाठः । ६ गा० ६०७५ ।

एत्थ माणुम ताव चिट्ठउ, तेन्चिछ्छ नाव भणामि – त तिविध मच्छादियाण जलज, गवादियाण थलज, मयूरादियाण खहचर । एतेसिं एक्केक्क दव्वादि चउव्विह ॥६०९९॥

एक्केक्कस्म वा दव्वादिग्रो इमो चउहा परिहारो –

पंचेंदियाण दव्वे, खेत्ते सट्ठिहत्थ पोग्गलाइण्णं ।
तिकुरत्थ महंतेगा, णगरे बाहिं तु गामस्स ॥६१००॥

दव्वतो पचेदियाण रुहिरादि दव्व असज्झाइय । खेत्तग्रो सट्ठिहत्थऽब्भनरे असज्झाइय, परतो ण भवति । अहवा – खेत्ततो पोग्गलाइण्ण पोग्गल मम तेण सव्व आकिण्ण व्याप्त तस्सिमो परिहारो, तिहि कुरत्थ.हि अतरिय सुज्झति, आरतो ण सुज्झति । महतरत्थाए एक्काए वि अनरिय सुज्झति, अणतरिय दूरट्ठित ण सुज्झति । महतरत्था रायमग्गो जेण राया बलसमग्गो गच्छति देवजाणरहो वा विविधा सवहणा गच्छति, सेसा कुरत्था । एसा णगरविधी ।

गामस्स णियमा बाहिं, एत्थ गामो अविसुद्धणेगमणयदरिसणेण सीमापज्जतो, परग्गामसीमाए सुज्झतीत्यर्थ ॥६१००॥

काले तिपोरिसिऽट्ठव, भावे सुत्तं तु नंदिमादीय ।
सोणिय मंसं चम्मं, अट्ठीणि य होंति चत्तारि ॥६१०१॥

तिरिय च असज्झाइय सभवकालातो जाव ततिय पोरिसी ताव असज्झाइय, परतो सुज्झइ । अहवा अट्ठजामा असज्झाइय, ते तत्थ घायण तत्थ भवति ।

भावतो पुण परिहरति सुत्त, त च णदिमणुओगदार तदुलवेयालिय चदगवेज्झग पोरिसीमडलमादी । अहवा – "[2]चउद्धा उ" त्ति – असज्झाइत चउव्विह, मस सोणिय चम्म अट्ठि च ॥६१०१॥

मस सोणिउक्खित्तसमे इमा विधी –

अंतो बहिं च धोतं, सट्ठी हत्थाण पोरिसी तिण्णि ।
महकाये अहोरत्तं, रद्धे वूढे य सुद्धं तु ॥६१०२॥

साधुवसही सट्ठीहत्थाण अतो बहिं च धोवति । भगदर्शनमेतत् – अतो धोत अतो पक्क, अतो धोत बाहिं पक्क, बाहिं धोत वा अतो पक्क । अतग्गहणातो पढमबितिया भगा, बहिग्गहणातो ततियभगो एतेसु तिसु वि असज्झाय । जम्मि पदेसे धोत आणेउ वा रद्ध सा पदसो सट्ठीए हत्थेहिं परिहरियव्वो । कालतो तिण्णि पोरिसीओ ॥६१०२॥

बहिधोतरद्ध सुद्धो, अंतो धोयम्मि अवयवा होंति ।
महाकाए बिरालादी, अविभिण्णं के ड णेच्छंति ॥६१०३॥

एस चउत्थो भगा । एरिस जति सट्ठीए हत्थाण अब्भतर आणिय तहावि त असज्झाय ण भवति, पढम बितियभगेसु अता धावित्तु णीए रद्धे वा तम्मि धोतट्ठाणे अवयवा पडति तेण असज्झाय । ततियभगे बहिं धावित्तु अता व णीए ससमेव असज्झाइय ति । त च उक्खित्तमस आइण्णपोग्गल न भवइ । ज काकसाणादीहि अणिवारियविप्पकिण्ण णिज्जति त आतिण्णपोग्गल भाणियव्व । महाकातो पचिंदिग्रा ज [illegible]

---

२ गा० ६०९९ ।

वज्जेयव्व । खेनग्रा मट्ठि हत्था, कालता ग्रहोरत्त, तत्थ ग्रहोरत्तच्छेदो। सूरुदए रद्ध पक्क मंस ग्रसज्झाइय ण भवति जत्थ ग्रसज्झाइय पडित तेण पदेसेण उदगवाहो [1]वूढो, तम्मि पोरिसिकाले ग्रपुण्ण विसुद्ध ग्राघायण ण सुज्झति । "[2]महाकाए" त्ति ग्रस्य व्याख्या – महकाए पच्छद्ध, मूसगादी महाकायो स बिरालादिणा हतो, जति त ग्रभिण्ण चेव गिलिउ घेत्त वा सट्ठीए हत्थाण बाहिं गच्छति तो केइ ग्रायरिया ऽसज्झाय णेच्छंति, थिनपक्खा पुण ग्रसज्झाइय चेव ॥६१०३॥

ठियपक्खो पलाए सुज्झति ग्रस्य व्याख्या –

मूसादि महाकायं, मज्जारादी हताऽऽघयण केती ।
ग्रविभिण्णे गेण्हेतुं, पढति एगे जति पलाति ॥६१०४॥ गतार्था

तिरिय च ग्रसज्झायाधिकार एव इम भण्णति –

अंतो बहिं च भिण्ण, अडय बिंदू तहा विग्राता य ।
रायपह वूढ सुद्धे, परवयण साणमादीणि ॥६१०५॥

ग्रतो बहि च भिण्ण ग्रडय ति ग्रस्य व्याख्या –

ग्रंडयमुज्झिय कप्पं, ण य भूमि खणति इहरहा तिण्णि ।
ग्रसज्झाइयप्पमाणं, मच्छियपादो [3]जहिं वुड्डे ॥६१०६॥

[illegible] घुवसधीतो सट्ठीहत्थाण ग्रतो भिण्ण ग्रडए ग्रसज्झा य, बाहिभिण्णे ण भवति। ग्रहवा – साहुवसहीए ग्रतो बाहि वा ग्रडय भिन्न ति वा उज्झिय ति वा णगट्ठ, त च कप्प वा उज्झित भूमीए वा, जति कप्पे तो त कप्प सट्ठीए हत्थाण बाहि गउ धोवति ततो सुद्ध । ग्रह भूमीए भिण्ण तो भूमीए खणित्तु ण छड्डिज्जति, ण सुज्झतीत्यथ । इहरह त्ति तत्यन्थे सट्ठि हत्था तिण्णि य पोरिसीग्रो परिहरिज्जति ।

इदाणि "[4]बिंदु" त्ति ग्रसज्झाइयस्स किं बिंदुप्पमाणमेत्तेण हीणेण ग्रधिकतरेण वा ग्रसज्झाग्रो भवति ? त्ति पुच्छा ।

उच्यते – मच्छिगा ऽ पादा जहि बुड्डति त ग्रसज्झाइयप्पमाण ॥६१०६॥

इदाणि "[6]वियाय" त्ति –

अतराय तिण्णि पोरिसि, जराउगाणं जरे चुते तिण्णि ।
रायपह बिंदु गलिते, कप्पति अण्णत्थ पुण वूढे ॥६१०७॥

जरा जसि ण भवति तास पसूताण वग्गुलिमादियाण तासि पसूइकाल ग्रो ग्रारब्भ तिण्णि पोरिसीग्रो ग्रसज्झा ता मात्त ग्रहोरत्तछेद ग्रासण्णपसूयाणवि ग्रहोरत्तच्छेदेण सुज्झति । गोमादिजरायुजाण पुण जाव जर लबति ताव ग्रसज्झाइय, जरे चुते तिण्णि । जाहे जरु पडित ततो पडणकालातो ग्रारब्भ तिण्णि पहरा परिहरिज्जति । "[7]रायपह वूढसुद्ध" त्ति ग्रस्य व्याख्या – "रायपह बिंदु" पच्छद्ध, साधूवसहीए ग्रासण्णेण [illegible] तस्स तिरियचरस्स जइ [illegible] बिंदू गलिता त जइ रायपहतरिता तो सुद्धो, ग्रह रायपहे चेव बिंदू [illegible] कप्पति सज्झाग्रो कातु । ग्रह ग्रण्णम्मि पहे ग्रण्णत्थ वा पडित त जइ उदगवुड्ढिवाहेण वाह- [illegible], [illegible] ति विगय [illegible] पलीवणगेण वा दड्ढं सुज्झति ॥६१०७॥

---

[1] [illegible] । [2] गा० [illegible] । [3] जति त वुड्डे (ग्रा० टि०) । ४ गा० ६१०५ । ५ गा० ६१०५ । [6] गा० [illegible] ।

"[1]परवयण" माणमादीणि त्ति परो त्ति चोदगो, तस्स इम वयण, "जइ माणो पोग्गल समुद्दिमित्ता जाव [2]वसहिसमीवे चिट्ठइ ताव असज्झाइय । आदिसद्दातो मज्जारादी" ।

आचार्याह –

जति फुमति तहिं तुड, जति वा लेच्छारिएण संचिक्खे ।
इहरा ण होति चोदग !, वंतं वा परिणतं जम्हा ॥६१०८॥

माणो मोत्तु मम लेच्छारिएण तुडेण वसहिआसण्णेण गच्छतो, तस्स गच्छतस्स जइ तुड रुहिरमादीलित्त खोडादिसु फुसति, तो असज्झाय । अहवा – लेच्छारियतुडा वसहि-आसण्णे चिट्ठइ तहवि असज्झाइय ।

इहरह" त्ति – आहारिएण हे चोदग ! असज्झातिय ण भवति, जम्हा त आहारिय वत अवत वा आहारपरिणामेन परिणय, आहारपरिणय च असज्झाइय ण भवति, अण्ण परिणामतो मुत्त-पुरिसादि वा ॥६१०८॥ तेरिच्छ गत ।

इदाणि [3]माणुस्स –

माणुस्सयं चतुद्धा, अट्ठिं मोत्तूण सत्तमहोरत्तं ।
परियावण्णविवण्णे, सेसे तिग सत्त अट्ठेव ॥६१०९॥

त माणुस्सय असज्झाइय चउव्विह – चम्म मस रुहिर अट्ठि च । अट्ठि मोत्तु सेसस्स तिविधस्स इमो परिहारो – खेत्ततो हत्थसत, कालतो अहोरत्त, ज पुण सरीरातो चेव वणादिसु आगच्छति परियावण्ण विवण्ण वा त असज्झाइय ण भवइ । 'परियावण्ण' जहा रुहिर चेव पूयपरिणामेन ठिय, विवण्ण खदिर-कल्लसमाण रसगादिग च, सेस असज्झाइय भवति । अहवा – सेस अगारी रिउसभव तिण्णि दिणा बीयायाणे वा – जो सावो सो सत्त वा अट्ठ वा दिणे असज्झाइय भवति ॥६१०९॥

बीयायाणे कह सत्त अट्ठ वा ?, उच्यते –

रत्तुक्कडाओ इत्थी, अट्ठदिणे तेण सुक्कऽहिते ।
तिण्ह दिणाण परेणं, अणोउतं तं महारत्तं ॥६११०॥

णिसेगकाले रत्तुकडयाए इत्थिय पसवेइ तेग तस्स अट्ठ दिणा परिहरियव्वा, सुक्काधिगत्तणतो पुरिस पसवति तेण तस्स सत्त दिणा । ज पुण इत्थीए तिण्ह रिउदिणाण परेण भवति त सरोगजोणित्थीए महारत्त भवति । तस्सुस्सग्ग काउ सज्झाय करेंति । एस रुहिरे विही ॥६११०॥

ज वुत्त [4]अट्ठि मोत्तूण ति, तस्स इदाणि विधी इमो भण्णति –

दंते दिट्ठे विगिंचण, सेसट्ठी बारसेव वरिसाणि ।
झामितसुद्धे सीयाण पाणमादी य रुद्धरे ॥६१११॥

जति दतो पडितो सो पयत्ततो गवेसियव्वो जइ दिट्ठो तो हत्थसतातो परं विगिंचयव्वो । अह ण दिट्ठो तो उग्घाडकाउस्सग्ग काउ सज्झाय करेंति । सेसट्ठितेसु जीवमुक्कदिणारम्भातो हत्थसतऽब्भतरट्ठितेसु बारस वरिस असज्झातिय ॥६१११॥

---

१ गा० ६१०५ । २ साणु इत्यपि पाठ । ३ गा० ६०९९ । ४ गा० ६१०९ ।

"[1]सामितमुद्धे सीताण" त्ति अस्य व्याख्या –

मीताणे जं दड्ढं, ण तं तु मोत्तुं अणाह णिहताइं ।
आडंबरे य रुद्दे, मादिसु हेट्ठट्ठिया वारा ॥६११२॥

पुव्वद्ध, "सीयाणि" त्ति सुसाण जाणि चियगाणि विय दड्ढाणि ण त तु अट्टिन असज्झाय करेंति, जाणि पुण तत्थ अण्णत्थ वा अणाहकलेवराणि परिट्ठवियाणि, सण हाणि वा इयणादिस ।ावे 'णिहय" त्ति णिक्खिया ते असज्झातिय करेंति, "प.।" त्ति – मातगा नाम आडंबरो जक्खो हिरिमिक्को वि भण्णति तस्स हेट्ठा सज्जामनअट्ठीणि ठवि जन्ति, एव रुद्दघर, मातिघरे । कालतो बारस वरिसा । खेत्तओ हत्थसत परिहरणिज्जा ॥६११२॥

आवरमितं व वूढं, मेमे त्ट्ठिम्मि मग्गण विवेगो ।
सारीरगामपाडग, साहीउ ण णीणिय जाव ॥६११३॥

एतीए पुव्वद्धस्स इमा विभासा –

अमिवोमावयणेसु, वारस अविसोहितम्मि ण करेंति ।
झामियवूढे कीरति, आवासितसग्गिते चेव ॥६११४॥

ज सीयाणट्ठाण जत्थ वा असिवओमसताणि बहूणि उज्झियाणि । आघयण ति – ज थ वा महासगामसता बहू, एतसु ठाणेसु अविसोधीए कालतो वारस वरिसा, खेत्तओ हत्थसत परिहरति सज्झाय ण करेंतीत्यथ अह एते ठाणा दवग्गिमादिणा दड्ढा । उदगवाहा वा तण वूढो, गामणयरे वा आवासतेण अप्पणो घरट्ठाणा सोधिता । 'सेस" त्ति ज गिहीहिं न सोधित पच्छा तत्थ साधू ठिता अप्पणो वसही समतेण मग्गिता ज दिट्ठ त विगिंचित्ता अदिट्ठे वा तिण्णि दिणे उग्घाड-उस्सग्ग करेत्ता असढभावा सज्झाय करेइ ॥६११४॥

"[2]सारीरगाम" पच्छद्ध इमा विभासा –

डहरगामम्मि मते, ण करेंती जा ण णीणियं होइ ।
पुरगामे व महंते, वाडगसाही परिहरंति ॥६११५॥

"सारीर" ति मयसरीर त जाव डहरगामे ण णिप्फेडिय ताव सज्झाय ण करेंति । अह णगरे महते वा गामे तत्थ वाडगसाधीतो वा जाव ण णिप्फेडित ताव सज्झाय परिहरेंति । मा लागो निद्दुक्खेत्ति उड्डाह करेज्जा ॥६११५॥

चोदगाह – "साहुवसहिसमीवेण मतसरीरस्स जइ पुप्फवत्थादि किंचि पडति त असज्झाय ?"

आचार्य आह –

णिज्जंतं मोत्तूणं, परवयणे पुप्फमादिपडिमेहो ।
जम्हा चउप्पगारं, सारीरमओ ण वज्जेंति ॥६११६॥

मतसरीर उभओ वसधीए हत्थसयब्भतरे थ जाव णिज्जइ ताव त असज्झाइय, सेसा परवयणभणिया पुप्फाइ पडिसेहेयव्वा त असज्झाइय न भवति । जम्हा सारीरमसज्झाइय चउव्विह – सोणिय मस अट्ठिय चम्म च । अओ तेसु सज्झाओ न वज्जणिज्जो ॥६११६॥

---

१ सा० ६१११ । २ गा० ६११३ । ३ गा० ६११३ ।

एसो उ असज्झाओ, तव्वज्जियझातो तत्थिमा मेरा ।
कालपडिलेहणाए, गंडगमरुएण दिट्ठंतो ।।६११७।।

एसो सजमघातादिनो पचविहो असज्झाओ भणितो, तेहिं चेव पचहिं वज्जितो सज्झाओ भवति । तत्थ त्ति तम्मि सज्झायकाले इमा वक्खमाणा मेर त्ति समाचारी – पडिक्कमित्तु जाव वेला ण भवति ताव काल्पडिलेहणाए कयाए गहणकाले पत्ते गडगदिट्ठतो भविस्सति । गहिते सुद्धे काले पट्ठवणवेलाए मरुगदिट्ठतो भविस्सवि ।।६११७।।

स्याद्बुद्धि किमर्थं कालग्रहण ?, अत्रोच्यते –

पंचविहमसज्झायस्स जाणणट्ठाए पेहए काल ।
चरिमा चउभागवसे, सियाइ भूमिं ततो पेहे ।।६११८।।

पचविह सजमघायाइग [1]जइ काल अघेत्तु सज्झाय करेति तो चउलहुगा, तम्हा कालपडिलेहणाए इमा सामाचारी-दिवसचरिमपोरिसीए चउभागावसमाते कालग्गहणभूमीग्र। ततो पडिलेहेयव्वा । अहवा– ततो उच्चारपासवणकालभूमी य ।।६११८।।

अहियासिया तु अंतो, आसण्णे मज्झ दूर तिण्णि भवे ।
तिण्णेव अणहियासिय, अंतो [2]छच्छच्च बाहिरतो ।।६११९।।

अतो णिवेसणस्स तिण्णि उच्चारअधियासियथडिले आसण्ण-मज्झ-दूरे पडिलेहेति, अणधियासिय-थडिल्ले वि अतो एव चेव तिण्णि पडिलेहेति एव अतो थडिल्ला । बाहिं पि णिवेसणस्स एव चेव छ भवति एत्थ अधियासियदूरत्तरे अणधियासिया आसण्णतरे कायव्वा ।।६११९।।

एमेव य पासवणे, बारस चउवीसतिं तु पेहित्ता ।
कालस्स य तिण्णि भवे, अह सूरो अत्थमुवयाति ।।६१२०।।

पासवणे वि एतेणेव कमेण बारस, एते सव्वे चउव्वीस । अतुरियमसभत उवउत्तो पडिलेहित्ता पच्छा तिण्णि कालग्गहणथडिले पडिलेहेति। जहण्णेण हत्थ तरिते। "अह" त्ति अणतर थडिलपडिलेहजोगाणतर-मेव सूरो अत्थमेति, ततो आवस्सग करेंति ।।६१२०।।

तस्सिमो विधी –

अह पुण णिव्वाघायं, आवासंतो करेंति सव्वे वि ।
सड्ढादिकहणवाघाततो य पच्छा गुरू ठंति ।।६१२१।।

अहमित्यनतरे सूरत्थमणाणतरमेव आवस्सग करेंति, पुनर्विशेषणे दुविधमावस्सगकरण विसेसेति-णिव्वाघातिम वाघातिम च । जइ णिव्वाघात तो सव्वे गुरुसहिता आवस्सय करेति । अह गुरू सड्ढेसु धम्म कहेंति तो आवस्सगस्स साहूहिं सह करणिज्जस्स वाघातो भवति, जम्मि वा काले त करणिज्ज आसितस्स वाघातो भवति, ततो गुरू णिसज्जधरो य पच्छा चरित्तायारजाणट्ठा उस्सग्ग ठायति ।।६१२१।।

सेसा उ जहासत्ती, आपुच्छित्ताण ठंति सट्ठाणे ।
सुत्तत्थसरणहेतुं, आयरिए ठितम्मि देवसिय ।।६१२२।।

[1] असज्झाइयजाणणट्ठाए काल पेहाए – इइ सउक्सड । [2] छच्चचद्ध इत्यपि पाठ ।

सेसा साधू गुरुं आपुच्छित्ता गुरुट्ठाणस्स मग्गतो आसण्णदूरे अहारातिणिए जं जस्स ठाणं तत्थ पडिक्कमणाए इमा ठवणा ।

गुरू पच्छा ठायन्तो मज्झेण गन्तु सट्ठाणे ठायति ।

जे वामतो ते अग्गतर मज्झेण गन्तु सट्ठाणे ठायन्ति ।

जे दाहिणतो ते अणंतरं मज्झेण न च अग्गतो ठायन्ति ।

सुत्तत्थसरणट्ठ ताण य दुव पव ठायन्ता करेमि भन्ते सामातियमिति सुत्तं करेन्ति ।

जाहे गुरू पच्छा सामाइयं करेन्तो अस्मिन् ठिते भणंता ठिता उस्सग्गं ताहे पुव्वट्ठिया देवसिया इयारे चिंतंति ।

अण्णे भणन्ति – जाहे गुरू सामाइयं करेंति, ताहे पुव्वट्ठिता वि तं सामाइतं करेंति । सेसं कण्ठ्यं ॥६१२२॥

जो होज्ज उ असमत्थो, बालो वुड्ढो गिलाण परितंतो ।
सो विकहाए विरहिओ, ठाएज्जा जा गुरू ठंति ॥६१२३॥

परिसंता पाहुणगादि सो वि सज्झायज्झाणपरो अच्छइ, जाहे गुरू ठंति ताहे ते वि बालादिया ठंति ॥६१२३॥

एतेण विहिणा –

आवासग कातूणं, जिणोवदिट्ठं गुरूवएसेणं ।
तिण्णि थुई पडिलेहा, कालस्स इमो विही तत्थ ॥६१२४॥

जिणेहिं गणधराण उवदिट्ठं, ततो परंपरएण जाव अम्ह गुरुवएसेण आगतं, तं काउं आवस्सगं अन्ते तिण्णि थुतीतो करेंति । अहवा – एगा एगसिलोइया, बितिया बिसिलोइया ततिया तिसिलोइया, तेसिं समत्तीए कालपडिलेहणविधी इमा कायव्वा ॥६१२४॥

अच्छउ ताव विधी, इमो कालभेदो ताव वुच्चति –

दुविहो य होति कालो, वाघातिम एतरो य णायव्वो ।
वाघाओ घंघसालाए घट्टणं सड्ढकहणं वा ॥६१२५॥

पुव्वद्धं कंठं । जो अतिरित्तवसही बहुकप्पडिसेविता य सा घंघसाला, एत्तो णितअतिताण घट्टणे पडणादिया तदोसा सड्ढकहणेण वेलातिक्कमदोसा ॥६१२५॥

एवमादि –

वाघाते ततिओ सिं, दिज्जति तस्सेव ते णिवेदेंति ।
णिव्वाघाते दोण्णि उ, पुच्छंति उ काल घेच्छामो ॥६१२६॥

तम्मि वाघातिते दोण्णि जे कालपडिलेहगा णिग्गच्छति तेसिं ततिओ उवज्झायादि दिज्जति । ते कालगाहिणो आपुच्छणं सदिसावणं कालपवेयणं च सव्वं तस्सेव करेंति, एत्थ गंडगदिट्ठंतो ण भवति । इयरे उवउत्ता चिट्ठंति । सुद्धे काले तत्थेव उवज्झायस्स पवेयंति, ताहे डंडधरं बाहिं कालपडियरगा चिट्ठइ, इयरे – दुयगावि अतो पविसंति ताहे उवज्झायस्स समीवे सव्वे जुगवं पट्ठवेंति, पच्छा एगो डंडधरो अतीति, तेण पट्ठविते सज्झायं करेंति ॥६१२६॥

निव्वाघातो पच्छद्ध अस्यार्थ –

आपुच्छण कितिकम्मे, आवासित खलिय पडिय वाघाते ।
इंदिय दिसाए तारा, वासमसज्झाइयं चेव ॥६१२७॥

णिव्वाघाए दाण्णि जणा गुरु पुच्छति – काल घेच्छामो, गुरुणा अब्भणुण्णा, किंतिकम्म ति वदण दाउ डडग घेत्तु उवउत्ता आवस्सियमासज्ज करेन्ता पमज्जता य णिग्गच्छति । अतरे य जइ पक्खलति पडति वा वत्थादि वा विलग्गति किंतिकम्मादि किंचि वितह करेति, गुरू वा किंचि पडिच्छतो वितह करेति तो कालवाघातो । इमा कालभूमीए पडियरणविधी – इन्दिएहिं उवउत्ता पडियरता । 'दिस' ति जत्थ चउरोवि दिसाओ दिस्सति, उडुम्मि तिण्णि तारा जति दीसति । जइ पुण अणुवउत्ता अणिट्ठो वा इंदियविसयो । दिस त्ति दिसामोहो दिसाओ तारगाओ वा ण दीसति, वास वा पडति असज्झाइय च जात, तो कालवधो ॥६१२७॥

किंच –

जति पुण गच्छंताणं, छीतं जोतिं च तो णियत्तेति ।
णिव्वाघाते दोण्णि उ, अच्छंति दिसा णिरिक्खंता ॥६१२८॥

तेसिं चेव गुरुसमिवाता कालभूमी गच्छताण ज अतरे जति छीय जोती वा फुसइ तो णियत्तति, एवमादि कारणेहिं अव्वाहता ते णिव्वाघातेण दो वि कालभूमीए गता सडासगादि विधीए पमज्जिता णिसण्णा उवट्ठिया वा एक्केक्को दो दिसाओ णिरिक्खता अच्छति ॥६१२८॥

कि च तत्थ कालभूमीए ठिता –

सज्झायमचिंतेता, कणगं दट्ठूण तो नियट्टति ।
पत्तेय डडधारी, मा बोल गंडए उवमा ॥६१२९॥

तत्थ सज्झाय अकरेंता अच्छति, कालवेल च पडियरता । जइ गिम्हे तिण्णि, सिसिरे पच, वासासु सत्त कणगा पिक्खेज्जा तहा वि नियत्तति । अह निव्वाघाएण पत्ता कालग्गहणवेलाए ताहे जो डडधारी सो अतो पविसित्ता साहुसमीवे भणाति – बहुपडिपुण्णा कालवेला, मा बोल करेह । तत्थ [1]गडगोवमा पुव्वभणिया कज्जति ॥६१२९॥

[2]**गंडघोसिते बहुएहि सुतम्मी सेसगाण दंडो उ ।**
अह तं बहूहिं न सुयं, तो डंडो गंडए होति ॥६१३०॥

जहा लोगे गोमादिगडगेणाघोसिए बहूहि सुए थेवेसु असुए गोमादि किच्च अकरेंतो सुदडो भवति, बहूहि असुए गडगस्स डडो भवति । तहा इह वि उपसहारेयव्व ॥६१३०॥

ततो डडधरे णिग्गते कालग्गाही उट्ठेइ, सो कालग्गाही इमेरिसो –

पियधम्मो दढधम्मो, संविग्गो चेव वज्जभीरू य ।
खेयण्णो य अभीरू, काल पडिलेहए साहू ॥६१३१॥

पियधम्मो दढधम्मो य । एत्थ चउभगो, तत्थ इमा पढमो भगो – णिच्च समारभउव्विगचित्तो सविग्गो,

१ गा० ६११७ । २ आवासगे (आव० वृ०) ।

वज्ज पाव जस्स भीरू वज्जभीरू, जह। त ण भवति तहा जयति, एरिसो कालविहिजाणगो खेयण्णो, सत्तमनो अभीरू गरिमा साधू काल पडिलेहेइ पडिजग्गति – गुणहातीत्यय ।।६१३१।।

ते य त वेल पडियरंता इमेरिस काल त्ति –

कालो संझा य तहा, दो वि समप्पेंति जह समं चेव ।

तह तं तुलेंति कालं, चरिमदिसिं वा असज्झायं ।।६१३२।।

सझाए धरतीए कालग्गहणमाढत्त, त कालग्गहण सझाए ज सेस एते दो वि जहा सम समप्पेंति तहा त कालवेल तुलेंति, अहवा – तिसु उत्तरादियासु सझ गेण्हति । 'चरिम" त्ति अवरा तीए वदगय-सझाते वि गिण्हति न दोसो । ६१३२।।

सो कालग्गाही वेल तुलेत्ता कालभूमीओ सदिसावणनिमित्त गुरुपादमूल गच्छति ।

तत्थ इमा विधी –

आउत्तपुव्वभणिते, अणपुच्छा खलिय पडिय वाघाते ।

भासंतमूढसंकिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ।।६१३३।।

जहा णिगच्छमाणो आउत्तो णिग्गतो तहा पविसतो वि आउत्तो पविसति, पुव्वनिग्गतो चेव जइ अणापुच्छाए काल गेण्हति पविसतो वि जति खलति पडति वा एत्थ वि कालुवघातो । अहवा "वाघाए" त्ति किरियासु वा मूढो अभिघातो लेट्ठुइट्टालादिणा । भासतमूढपच्छद्ध – मान्यासिक उवरि वक्ष्यमाण, अहवा – एत्थ वि इमो अत्था भाणियव्वा – वदण देतो अण्ण भासतो देति वदण दुओ ण ददाति, किरियासु वा मूढो, आवत्तादिसु वा सका – "कया ग कय" त्ति, वदण देतस्स इदियविसओ वा अमणुण्णमागओ ।।६१३३।।

णिसीहिया णमोक्कारे, काउस्सग्गे य पचमगलए ।

कितिकम्म च करेत्ता, बितिओ कालं च पडियरती ।।६१३४।।

पविसतो तिण्णि णिसीहियाओ करेति, णमो खमासमणाण ति णमोक्कार करेति, इरियावहियाए पच उस्सासकालिय उस्सग्ग करेति, उस्सारिए णमो अरहताण ति पचमगल चेव कड्ढति, ताहे कितिकम्म बारसावत्त वदण देति, भणति य – सदिसह पादोसिय काल गेण्हामो, गुरुवयण गेण्हह त्ति । एव जाव कालग्गाही सदिसावेत्ता आगच्छति । ताव बितिउ त्ति डडधरो सो काल पडियरेति ।।६१३४।।

पुणो पुव्वुत्तेण विधिणा णिग्गतो कालग्गाही –

थोवावसेसियाए, संझाए ठाति उत्तराहुत्तो ।

चउवीसग दुमपुप्फिय, पुव्वि य एक्केक्क य दिसाए ।।६१३५।।

उत्तराहुत्तो उत्तराभिमुखो डडधारीवि वामपासे रिजु तिरिय डडधारी पुव्वाभिमुहो ठायति कालग्गहणणिमित्त च अट्ठुस्सास काउस्सग्ग करेति, अण्णे पचमगलिय करेति, उस्सारिए चउवीसत्थ दुमपुप्फिय सामण्णपुव्वय च, एए तिण्णि अक्खलिए अणुपेहेत्ता पच्छा पुव्वा एए चेव तिण्णि अणुपेहेइ, एव दक्खिणाए ।।६१३५।।

अवराए य गेण्हतस्स इमे उवघाया जाणियव्वा –

बिंदू य छीय परिणय, सगणे वा संकिए भवे तिण्हं ।

भासंत मूढ संकिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ।।६१३६।।

गेण्हन्तस्स जइ अग्गे उदग बिंदू पडेज्ज, अप्पणा परेण वा जति छीतं, अज्झयणं कड्ढतस्स जति अण्णो भावो परिणतो अनुपयुक्तेत्यर्थः । सगणे सगच्छे त्ति साधूण गज्जिए सका एव विज्जुतादिसु ॥६१३६॥

¹भासन पच्छद्धस्स पूर्वन्यस्तस्य इमस्य च विभासा –

मूढो य दिसज्झयणे, भासंतो वा वि गेण्हति न सुज्झे ।

अण्णं च दिसज्झयणं, संकंतोऽणिट्ठविसए य ॥६१३७॥

दिसामोहो सजातो । अहवा – मूढो दिसं पडुच्च अज्झयणं वा । कहं ?, उच्यते – पढमे उत्तराहुत्तेण ठायव्वं सो पुण पुव्वहुत्तो पढमं ठायति । अज्झयणेसु वि पढमं चउवीसत्थओ सो पुण मूढत्तणओ दुमपुप्फियं सामन्नपुव्वियं वा कड्ढति, फुडमेव जणाभिलावेण भासतो कड्ढइ, बुड्डुबुडेंतो वा गेण्हइ, एवं ण सुज्झइ । "संकतो" त्ति पुव्वं उत्तराहुत्तेण ठाउं ततो पुव्वाहुत्तेण ठायव्वं, सो पुण उत्तराओ अवराहुत्तो ठायति, अज्झयणेसु वि चउवीसत्थयाओ अण्णं चेव खुड्डियायारकहादि अज्झयणं सकमति, अहवा – सकति किं असुगीए दिसाए ठितो "ण व" त्ति ?, अज्झयणे वि किं कड्ढियं ण व त्ति ? "²इंदियविसए य अमणुण्णे" त्ति अणिट्ठो पत्तो, जहा सोइंदिएण रुदितं वनरेण वा अट्टट्टहासं कृतं, रूवे विभीसगादिविकृतं रूवं दिट्ठं, गंधे कलेवरादिगंधो, रसस्तत्रैव, स्पर्शे अग्निज्वालादि, अहवा – इट्ठेसु रागं गच्छइ अणिट्ठेसु इंदियविसएसु दोसं, एवमादि उवघायवज्जियं कालं घेत्तुं कालणिवेदणाए गुरुसमीवं गच्छति ॥६१३७॥

तस्स इमं भण्णति –

जो वच्चंतम्मि विधी, आगच्छंतम्मि होति सो चेव ।

जं एत्थं णाणत्तं, तमहं वोच्छं समासेणं ॥६१३८॥

एसा गाहा भद्दबाहुकया ।

एईए अतिदेसे कए वि सिद्धसेणखमासमणो पुव्वद्धस्स भणियं अतिदेसं वक्खाणेति –

आवस्सिया णिसीहिय, अकरण आवडण पडणजोतिक्खे ।

अपमज्जिते य भीते, छीए छिण्णे व कालवहो ॥६१३९॥

जति णितो आवस्सियं ण करेति पविसतो वा णिसीहियं, अहवा – अकरणमिति आसज्ज न करेति कालभूमीतो गुरुसमीवं पट्ठियस्स जति अंतरेण साणमज्जारादी छिंदति, सेसा पदा पुव्वभणिता । एतेसु सव्वेसु कालवधो भवति ॥६१३९॥

गोणादिकालभूमी, व होज्ज संसप्पगा व उट्ठेज्जा ।

कविहसिय विज्जु गज्जिय, उक्कालित्ते य कालवहो ॥६१४०॥

पढमयाए गुरु आपुच्छित्ता कालभूमिं गतो, जति कालभूमीए गोणं णिसण्णं संसप्पगा वा उट्ठिता पक्खेज्ज तो णियत्तए, जइ कालं पडिलेहेतस्स गेण्हतस्स वा णिवेदणाए वा गच्छतस्स कविहसियादी, एएहिं कालवधो भवति, कविहसितं णाम आगासे विकृतरूपं मुखं वाणरसरिसं हासं करेज्ज, सेसा पदा गयत्था ॥६१४०॥

कालग्गाही णिव्वाघाएण गुरुसमीवमागओ –

इरियावहिया हत्थंतरे वि मंगलनिवेदणं दारे ।

सव्वेहि वि पट्ठविए, पच्छा करणं अकरणं वा ॥६१४१॥

---

१ गा० ६१३३ । २ गा० ६१३६ ।

जइ वि गुरुस्स इत्थन्तरमित्ते कालो गहितो तहावि कालपवेदणाए इरियावहिया पडिक्कमियव्वा पचुस्स ममेन काल उस्सग्ग करइ, उस्सारिए वि पचमगल ठियएण कड्ढइ, ताहे वदण दाउ काल निवेदेति । सद्दो य उसिगकाले ति ताहे डडधर मोत्तु सेस सव्वे जुगव पट्ठवति ॥६१४१॥

कि कारण ?, उच्यत पुव्व [1]जम्मरुगादिट्ठता त्ति—

सन्निहिताण वडारो, पट्ठवित पमादि णो दए कालं ।

बाहिट्ठिते पडिचरए, पविसति ताहे य दंडधरो ॥६१४२॥

वडो वटगो विभागो एगट्ठ । आरिओ आगारितो सारितो वा एगट्ठ । वडेण आरितो वडारो, जहा सो वडारो सन्निहियाण मरुयाण लब्भति न परोक्खस्स तहा दमकहादिपमादिस्स पच्छा काल ण देति॥६१४२॥

'बाहिट्ठिते' पच्छद्ध कठ। '[2]सव्वहि वि" पच्छद्ध , अस्य व्याख्या—

पट्ठवित वदिते ताहे पुच्छति केण कि सुतं भंते ! ।

ते वि य कहंति सव्वं, जं जेण सुतं च दिट्ठं वा ॥६१४३॥

डडधरण पट्ठविते वदिए एव सव्वेहिं वि पट्ठविते पुच्छा भवति—"अज्जो केण किं सुय दिट्ठ वा ? दडधरो पुच्छति—अण्णो वा । ते वि सव्व कहेति, जति सव्वेहिं भणिय—'ण किंचि दिट्ठ सुय वा" तो सुद्ध, करति स भाय । अह एगेण वि फुड ति विज्जमादि दिट्ठ, गज्जितादि वा सुत, ततो असुद्धे ण करेति ॥६१४३॥

अह सकितो—

एक्कस्स दोण्ह वा संकितम्मि कीरइ ण कीरई तिण्हं ।

सगणम्मि संकिते पर-गणम्मि गंतु न पुच्छंति ॥६१४४॥

जति एगेण सदिद्ध सुत वा तो कीरति सज्झाओ, दोण्ह वि सदिद्धे कीरइ, तिण्ह विज्जुमादिसदेह ण कीरइ सज्झाओ तिण्ह अण्णोण्णसदेहे कीरइ, सगणसकिते परगणवयणतो सज्झाओ ण कायव्वो । खेत्तविभागेण तेसिं चेव असज्झाइयसभवो ॥६१४४॥

"ज [3]णत्थ णाणत्त तमह वोच्छ समासेण" ति अस्यार्थ —

कालचउक्के णाणत्तगं तु पादोसियाए सव्वे वि ।

समयं पट्ठवयती, सेसेसु समं व विसमं वा ॥६१४५॥

एय सव्व पादोसिकाले भणिय । इदाणिं चउसु कालेसु किंचि सामण्ण, किं चि विसेसिय भणामि- पादोसिए डडधर एक्क मोत्तु सेसा सव्वे जुगव पट्ठवेति । सेसेसु तिसु अड्ढरत्त वेरत्तिय पाभातिए य सम वा विसम वा पट्ठवेति ॥६१४५॥

कि चान्यत्—

इंदियमाउत्ताणं, हणाति कणगा उ तिण्णि उक्कोसं ।

वासासु य तिण्णि दिसा, उदुबद्धे तारगा तिण्णि ॥६१४६॥

---

१ गा० ६११७ । २ गा० ६१४१ । ३ गा० ६१३८ ।

मुट्ठु इंदियउवत्तेहिं सव्वकाले पडिजागरियव्वा घेतव्वा । कणगेसु कीलसखाकओ विसेसओ ? भण्णति – तिण्णि [1]सिग्घमुवहणंति त्ति तेण उक्कोस भण्णति, चिरेण उवघातो त्ति तेण सत्त जहण्णे, सेस सं भम ॥६१४६॥

अस्य व्याख्या –

कणगा हणंति कालं, ति पंच सत्तेव गिंसिसिरवासे ।
उक्का उ सरेहागा, पगासजुत्ताव नायव्वा ॥६१४७॥

कणगा गिम्हे सिसिरे पत्र वासासु सत्त उवहणंति, उक्का एक्का चेव उवहणति काल कणगो सण्हरहो पगासविरहितो य, उक्का महतरेहा पगासकारिणी य, अहवा – रेहविरहितोवि फुलिंगो पहासकारो उक्का चेव ॥६१४७॥

'[2]वासासु य तिण्णि दिसा" अस्य व्याख्या –

वासासु व तिण्णि दिसा, हवंति पाभातियम्मि कालम्मि ।
सेसेसु तिसु वि चउरो, उडुम्मि चतुरो चतुदिसिं पि ॥६१४८॥

जत्थ ठितो वासकाले तिण्णि विदिसा पेक्खइ, तत्थ ठितो पभातिय काल गेण्हति, सेसेसु तिसु वि कालेसु वासासु चेव । जत्थ ठितो चउरो दिसाविभागे पच्छति तत्थ ठितो गेण्हइ ॥६१४८॥

"[3]उदुबद्धे तारगा तिण्णि" ति अस्य व्याख्या –

तिसु तिण्णि तारगाओ, उडुम्मि पाभाइए अदिट्ठे वि ।
वासासु अतारागा, चउरो छन्ने निविट्ठो वि ॥६१४९॥

तिसु कालेसु पाउसिते अड्ढरत्तिए य जहण्णेण जति तिण्णि तारगा पेक्खति तो गेण्हंति, उडुबद्धे चेव अब्भादिसथडे जति वि एक्क पि तार ण पेक्खति तहा वि पभातिय काल गेण्हति, वासाकाले पुण चउरो वि काला अब्भसथडे तारासु अदीसतीसु गिण्हति ॥६१४८॥

"[4]छण्णे णिविट्ठो वि" त्ति अस्य व्याख्या –

ठागासति बिंदूसु व, गेण्हति विट्ठो वि पच्छिमं कालं ।
पडियरति बहिं एक्को, गेण्हति अंतठिओ एक्को ॥६१५०॥

जति वसहिस्स बाहिं कालगाहिस्स ठाणो णत्थि ताहे अतो छण्णे उद्धट्ठितो गेण्हति, अह उद्धट्ठियस्स वि अतो ठाओ णत्थि ताहे अतो छण्णे चेव णिविट्ठो गेण्हति । बाहिं ठितो य एक्को पडियरति, वासबिंदूसु पडतीसु णियमा अतो ठिओ गिण्हइ, तत्थ वि उद्धट्ठिओ निसण्णो वा, नवर – पडियरगो वि चेव ठिओ पडियरइ । एस पाभाइए गच्छुवग्गहट्ठा अववायविही, सेसा काला ठागासति न घेत्तव्वा आइण्णओ वा जाणियव्व ॥६१५०॥

कस्स कालस्स क दिस अभिमुहेहि पुव्व ठायव्वमिति भण्णति –

पादोसिय अड्ढरत्ते, उत्तरदिसि पुव्वपेहए कालं ।
वेरत्तियम्मि भयणा, पुव्वदिसा पच्छिमे काले ॥६१५१॥

---

१ गा० गिम्हेउ, इत्यपि पाठ । २ गा० ६१४६ । ३ गा० ६१४६ । ४ गा० ६१४६ ।

पादोसिए अड्ढरत्तिए णियमा उत्तरमुहो ठाति, वेरत्तिए भयणि ति इच्छा, उत्तरमुहो पुव्वमुहो वा, पाभातिए पुव्व – णियमा पुव्वमुहो ॥६१५१॥

इदाणि कालग्गहण पमाण भण्णति –

कालचउक्कं उक्कोसएण जहण्णेण तिगं तु बोधव्वं ।
बितियपदम्मि दुगं तु, मातिट्ठाणा विमुक्काण ॥६१५२॥

उस्सग्गे उक्कोसेण चउरो काला घेप्पंति, उस्सग्गे चेव – जहण्णेण तिग भण्णति । "बितियपद" ति – अववादो तत्थ कालदुग भवति, अस्य यावित कारणे अगृण्हानस्येत्यर्थ । अहवा – उक्कोसेण चउक्क भण्णति । अहवा – जहण्णे हाणिपदे तिग भवति, एक्कम्मि अगहिते इत्यर्थ । बितिए हाणिपदे दुग भवति, द्वयोरग्रहणादित्यर्थ । एव अमायाविणो तिण्णि वा अगेण्हतस्स एक्को भवति । अहवा – मायाविमुक्तस्य कारणे एकमपि काल अ गृण्हत न दोष , प्रायश्चित्त वा न भवति ॥६१५२॥

कह पुण कालचउक्क ?, उच्यते –

फिडितम्मि अद्धरत्ते, कालं घेत्तु सुवंति जागरिता ।
ताहे गुरू गुणंती, चउत्थे सव्वे गुरू सुवति ॥६१५३॥

पादोसिय काल घेत्तु पोरिसिं काउ पुण्णपोरिसीए सुत्तपाढी सुवति, अत्थचिंतगा उक्कालियपाढिणो य जागरति जाव अड्ढरत्तो । ततो फिडिए अड्ढरत्ते काल घेत्तु ते जागरिता सुवति, ताहे गुरू उट्ठिता गुणति जाव चरिमो जामो पत्तो । चरिमे जामे सव्वे उट्ठित्ता वेरत्तिय घेत्तु सज्झय करेंति ताहे गुरू सुवति । पत्ते पाभातिते काले जो पभातियकाल घेच्छिहिति सो कालस्स पडिक्कमिउ पाभाइयकाल गेण्हइ, सेसा कालवेलाए कालस्स पडिक्कमति, तओ आवस्सय करेंति । एव चउरो काला भवति ॥६१५३॥

तिण्णि कह ?, उच्यते – पाभातिते अगहिते सेसा तिण्णि भवे ।

अहवा –

गहितम्मि अद्धरत्ते, वेरत्तिय अगहिते भवे तिण्णि ।
वेरत्तिय अद्धरत्ते, अतिउवओगा भवे दुन्नि ॥६१५४॥

वेरत्तिए अग्गहिए सेसेसु गहितेसु तिण्णि, अड्ढरत्तिए वा अगहिते तिण्णि, पादोसिए वा अग्गहिते तिण्णि ।

दोण्णि कह ?, उच्यते ।

पादोसियअड्ढरत्तिएसु गहिएसु सेसेसु अगहिएसु दोण्णि भवे ।

अहवा – पादोसिए वेरत्तिए य गहिते दोण्णि ।

अहवा – पादोसितपभातितेसु गहिएसु सेसेसु अगहिएसु दोण्णि, एस कप्पो विकप्पे । पादोसिएण चेव अणुवहतेण उवओगतो सुपडिजग्गिएण सव्वकाले पढति ण दोसो ।

अहवा – अड्ढरत्तियवेरत्तियगहिते दोण्णि ।

अघवा – अढरत्तियपभातिएसु गहितेसु दोण्णि ।

अहवा – वेरत्तियपभातिएसु दोण्णि । जया एक्को ततो अण्णतरो गेण्हति ।

कालचउक्ककारणा इमे – कालचउक्कग्गहण उस्सग्गतो विही चेव ।

अहवा – पाओसिए गहिए उवहते अड्ढरत्ते घेत्तु सज्झाय करेंति तम्मि वि उवहते वेरत्तिय घेत्तु सज्झाय करेंति, पाभातितो दिवसट्ठा घेत्तव्वो चेव एवं कालचउक्क दिट्ठ। अणुवहते पुण पाउसिते सुपडिजग्गिते सव्वरातिं पढति अड्ढरत्तिएण वि वेरत्तिय पढति, वेरत्तिएण अणुवहते सुपडिजग्गितेण पाभातियमसुद्धे दिट्ठ दिवसतो वि पढति।

कालचउक्के अग्गहणकारणा इमे – पादोसिय ण गेण्हति, असिवादिकारणतो ण सुज्झति वा, पादोसिएण वा सुपडिजग्गितेण पढति त्ति ण गेण्हइ, वेरत्तिय कारणता ण सुज्झति वा पादोसिय अड्ढरत्तिएण वा पढति त्ति ण गेण्हति, पाभातित ण गेण्हति, कारणतो ण सुज्झति वा ॥६१५४॥

इदाणि पाभातितकालग्गहणे विधिपत्तेयं भणामि –

पाभाइतम्मि काले, सचिक्खे तिण्णि छीयरुण्णाइं।
परवयणे खरमादी, पावासिय एवमादीणि ॥६१५५॥

पाभातियम्मि काले गहणविधी य।

तत्थ गहणविधी इमा –

णवकालवेलसेसे, उवग्गहिय [1]अट्ठया पडिक्कमते।
ण पडिक्कमते वेगो, नववारहते धुवमसज्झाओ ॥६१५६॥

दिवसतो सज्झायविरहियाण देसादिकहासंभवे वज्जणट्ठा, मेहावीतराग य पलिभगवज्जणट्ठा, एवं सव्वेसिमणुग्गहट्ठा णवकालग्गहणकाला पाभातिए अब्भणुण्णाया, अतो णवकालग्गहवेलाहि पाभातियकालग्गाही कालस्स पडिक्कमति, सेसा वि त वेलं उवउत्ता चिट्ठति कालस्स त वेल पडिक्कमति वा ण वा। एगो णियमा ण पडिक्कमइ, जइ छीयरुयादीहिं न सुज्झिहिति तो सो चेव वेरत्तिओ पडिग्गहिओ होहिति त्ति, सो वि पडिक्कतेसु गुरुस्स काल वेदित्ता अणुदिए सूरिए कालस्स पडिक्कमते, जति य घेप्पमाणो णववारा उवहओ कालो तो णज्जति जहा धुवमसज्झाइयमत्थि, न करेंति सज्झाय ॥६१५६॥

नववारग्गहणविधी इमो।

"सचिक्ख तिण्णि छीयरुण्णाणि" त्ति अस्य व्याख्या –

एक्केक्को तिण्णि वारा, छीतादिहतम्मि गेण्हती कालं।
चोदेति खरो बारस, अणिट्ठविसए य कालवहो ॥६१५७॥

एक्कस्स गेण्हतो छीयरुयादिहते सचिक्खति त्ति गहणा विरमतीत्यर्थः, पुणो गेण्हइ, एवं तिण्णि वारा। ततो परं अण्णो अण्णम्मि थंडिले तिण्णि वारा। तस्स वि उवहते अण्णो अण्णम्मि थंडिले तिण्णि वारा। तिण्ह असतीते दोण्णि जणा णववाराओ पूरेंति। दोण्ह वि असतीए एक्को चेव णववाराओ पूरेति। थंडिलेसु वि असवातो तिसु दोसु वा एक्कम्मि वा गेण्हति।

"[2]परवयणे खरमादि" त्ति अस्य व्याख्या – 'चोदेति खरो पच्छद्ध।

चोदगाह –

"जइ रुदितमणिट्ठं कालवहो ततो खरेण रडिते बारस वरिसे उवहम्मउ। अण्णेसु वि अणिट्ठइंदियविसएसु एवं चेव कालवहो भवति ॥६१५७॥

---

१ उवगहितट्ठयाए इत्यपि पाठ। २ गा० ६१५५।

आचार्याह —

चोदग माणुसणिट्ठे, कालवहो सेसगाण तु पहारे ।
पावासियाए पुव्वं, पण्णवणमणिच्छे उग्घाडे ॥६१५८॥

माणुसस्स अणिट्ठे कालवहो, सेसगतिरिया तेसिं जति अणिट्ठो पहारसद्दो सुणिज्जति तो कालवहो ।

"[1]पावासिय" अस्य व्याख्या – पावासिया पच्छद्ध, जति पभातियकालग्गहणवेलाए पवासिय-भज्जा पतिणो गुण सभरन्ती दिणे दिणे रुवेज्जा ता तीए रुवणवेलाए पुव्वतरो कालो घेत्तव्वो । अह सा वि पच्चूसे रुवेज्ज ताहे दिवा गतु पण्णविज्जति, पण्णवणमणिच्छाए उग्घाडणकाउस्सग्गो कीरति ॥६१५८॥

"[2]एवमादीणि त्ति अस्य व्याख्या —

वीसरसद्दरुवंते, अव्वत्तग-डिभगम्मि मा गिण्हे ।
गोसे दरपट्ठविते, [3]तिगुण च्छीयऽण्णहिं पेहे ॥६१५९॥

अच्चायासेण रुवण त वीसरस्सर भण्णति, त उवहणते । ज पुण महुरसद्द घोलमाण च नोवहणइ । जाव अजपिर ताव अव्वत्त, त अण्णेगवि विस्सरसरेण उवहणति, महतउस्सभररोवणेण वि उवहणति । पाभातिगकालगहणविधी गया, इयाणि पाभातियट्ठवण विधी –

"गोसे दर" पच्छद्ध, गोसि त्ति उदिते आदिच्चे दिसावलोय करेत्ता पट्ठवेंति । दरपट्ठविति त्ति अद्ध पट्ठविते जति छीयादिणा भग्ग पट्ठवण अण्णो दिसावलोग करेत्ता तत्थेव पट्ठवेंति, एव तितियवाराए वि ॥६१५९॥

दिसावलोयकरणे इम कारण –

आइण्णपिसित महिगा, पेहंता तिण्णि तिण्णि ठाणाइ ।
णववार खुते कालो, हतो त्ति पढमाए ण करेंति ॥६१६०॥

आइण्णपिसिय आतिण्णपोग्गल त काकमादीहि आणिय होज्ज, महिया वा पडिउमारद्धा, एवमादि एगट्ठाणे तयो वारा उवहते हत्थसयत्रा हिं अण्ण ठाण गतु पेहति पडिलेहति पट्ठवेंति त्ति वुत्त भवति, तत्थ वि पुव्वुत्तविहाणेण तिण्णि वारा पट्ठवेंति । एव बितियट्ठाणे वि असुद्धे ततो वि हत्थसय अण्ण ठाण गतु तिण्णि वारा पुव्वुत्तविहाणेण पट्ठवेंति, जइ सुद्ध तो करेंति सज्झाय णववारा । खुत्तादिणा हते णियमा हतो कालो, पढमाए पोरिसीए ण करेंति सज्झाय ॥६१६०॥

पट्ठवितम्मि सिलोगे, छीते पडिलेह तिण्णि अण्णत्थ ।
सोणित मुत्त पुरीसे, घाणालोगं परिहरिज्जा ॥६१६१॥

जया पट्ठवणातो तिण्णि दु अज्झयणा सम्मत्ता तदा उवरि एगो सिलोगो कड्डियव्वो, तम्मि समत्ते पट्ठवणे समप्पति ॥६१६१॥ "[4]तव्वज्जो झानो" बितियपादो गतत्थो ।

"[5]सोणिय त्ति अस्य व्याख्या –

आलोगम्मि चिलिमिली, गंधे अण्णत्थ गतु पकरेंति ।
वाघातिम कालम्मी, गडगमरुगा णवरि णत्थि ॥६१६२॥

---

[1] गा० ६१५५ । [2] गा० ६१५५ । [3] छीए छीए तिगी पेहे (आव०वृ०) । [4] गा० ६१६१ ।
[5] गा० ६११७ ।

जत्थ सज्झायिय करेंतेहिं सोणियचिक्किका दिस्सति तत्थ ण करेंति सज्झाय, कडग चिलिमिलो वा अंतरं दाउं करेति। जत्थ पुण सज्झाय चेव करेंताण मुत्तपुरीसकलेवरादियाण य गंधो, अण्णम्मि वा असुभगंधे आगच्छते तत्थ सज्झाय ण करेंति, अण्णतथ गत करेंति। अण्ण पि बंधणसेहणादि आलोग परिहरिज्जा। एयं सव्व णिव्वाघातकाले भणित। वाघातिमकाले वि एव चेव। णवर – गंडगमरुअदिट्ठता ण भवति ॥६१६२॥

एतेसामण्णतरे, असज्झाते जो करेइ सज्झाय।
सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधणं पावे ॥६१६३॥

बितियागाढे सागारियादि कालगत अहव वोच्छेदे।
एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती काउ ॥६१६४॥

दो वि कठाओ ॥६१६३, ६४॥

जे भिक्खू अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अप्पणो सरीरसमुत्थे असज्झातिते सज्झाओ अप्पणा ण कायव्वो, परस्स पुण कायव्वो, परस्स पुण वायणा दायव्वा। महतेसु गच्छेसु अव्वाउलत्तणओ समणीण य णिच्चोउयसभवो मा सज्झाओ ण भविस्सति, तेण वायणसुत्ते विही भण्णति।

आयसमुत्थमसज्झाइयस्स इमे भेदा –

अव्वाउलाण णिच्चोउयाण मा होज्ज निच्चऽसज्झाओ।
अरिसा भगदलादिसु, इति वायणसुत्तसंबधो ॥६१६५॥

आतसमुत्थमसज्झाइयं तु एगविहं होति दुविहं वा।
एगविहं समणाण, दुविहं पुण होति समणीण ॥६१६६॥

एगविह समणाण त च व्रणे भवति, समणीण दुविह व्रणे उदुसभवे च ॥६१६६॥

इम व्रणे विहाण –

धोतम्मि य निप्पगले, बंधा तिण्णेव होंति उक्कोसा।
परिगलमाणे जयणा, दुविहम्मि य होति कायव्वा ॥६१६७॥

पढम चिय व्रणो हत्थसयस्स बाहिरतो धोविउ णिप्पगलो कतो ततो परिगलते तिण्णि बंधा उक्कोसेण करेंतो वाएति। दुविह व्रणसभव उउय च, दुविहे वि एव पट्टगजयणा कायव्वा ॥६१६७॥

समणो उ वणे व भगंदले व बंधेक्कका उ वाएति।
तह वि गलंते छारं, दाउं दो तिण्णि वा बंधे ॥६१६८॥

"व्रणे धोयणिप्पगले हत्थसयबाहिरतो पट्टग दाउ वाएइ, परिगलमाणेण भिण्णे तम्मि पट्टगे तस्सेव उवरि छार दाउ पुणो पट्टग देति वातेति य, एव ततिय पि पट्टग बंधेज्जा वायण च देज्ज, ततो पर परिगलमाणे हत्थसयबाहिर गतु व्रण पट्टगे य धोविउ पुणो एतेणेव क्कमेण वाएति। अहवा – अण्णत्थ गतु पढति ॥६१६८॥

एमेव य समणीणं, वणम्मि इतरम्मि सत्तबंधा उ ।
तह वि य अठायमाणे, धोऊणं अहव अण्णत्थ ॥६१६९॥

इयरनि उडुअ एव चेव, णवर – सत्तबधा उक्कोसेण कायव्वा, तह वि अट्ठते हत्थसयबाहिरगो धाविउ पणो वाएनि, अहवा – अण्णत्थ पढनि ॥६१६९॥

एतेमामण्णतरे, असज्झाए अप्पणो व सज्झायं ।
जो कुणति अजयणाए, सो पावति आणमादीणि ॥६१७०॥

आणादिया य दोसा भवनि ।

इमे य –

सुयनाणम्मि य भत्ती, लोगविरुद्धं पमत्तछलणा य ।
विज्जामाहण वइगुण्ण धम्मयाए य मा कुणसु ॥६१७१॥

सुयणाणे अणुवचारतो अभत्ती भवति । अहवा – सुयणाणभत्तिरागेण असज्जातिने सज्झाय मा कुणसु, उवदेसो एस-ज लोगधम्मविरुद्ध च त ण कायव्व । अविहीए पमत्तो लब्भनि त देवया छलेज्ज । जहा विज्जामाहणवइगुण्णयाए विद्या न सिज्झनि तहा इह पि कम्मखओ न भवइ । वैगुण्य वैधर्मता – विपरीतभावेत्यथ । "धम्मयाए य" सुयधम्मस्स एस धम्मो ज असज्झाइए सज्झायवज्जण ण करेंनो सुयणाणायार विराहइ, तम्हा मा कुणसु ॥६१७१॥

चोदकाह – 'जनि दतअट्ठिमसमोणियादी असज्झाया, णणु देहो एयमनो चेव, कह तेण सज्झाय करेह ?"

आचार्याह –

कामं देहावयवा, दंतादी अवजुता तह विवज्जा ।
अणवजुता उ ण वज्जा, इति लोगे उत्तरे चेवं ॥६१७२॥

काम चोदगाभिप्पायअणुमयत्थे सच्च, तम्मयो देहोवि । सरीराओ अवजुत त्ति पृथग्भावा ते वज्जणिज्जा, जे पुण अणवजुया तत्थत्था ते ण वज्जणिज्जा, इति उपप्रदर्शने । एव लोके दृष्ट, लोकोत्तरेऽप्येवमित्यथ ॥६१७२॥

किं चान्यत् –

अब्भंतरमललित्तो, वि कुणति देवाण अच्चणं लोए ।
बाहिरमललित्तो पुण, ण कुणइ अवणेइ य ततो णं ॥६१७३॥

अब्भतरा मूत्रपुरीषादी, तेहिं चेव बाहिरे उवलित्तो कुणइ तो अवण्ण करेइ ॥६१७३॥

कि चान्यत् –

आउट्टियावराहं, सन्निहिता ण खमए जहा पडिमा ।
इय परलोए दंडो, पमत्तछलणा य इति आणा ॥६१७४॥

जा य पडिमा सण्णिहिय त्ति देवयाअधिट्ठिता, सा जति कोइ अणाढिएणं आउट्टित त्ति जाणतो बाहिरमललित्तो त पडिम छिवति, अच्चण वा से कुणइ तो ण खमइ, खेत्तादि करेइ, रोग च जणेइ, मारेइ वा। इय त्ति – एव जो अस भाइए सज्भ य करेति तस्स णाणायारविराहणाए कम्मबधो, एस से पच्छाइओ दडो, इह लोग पमत्त देवता छलेज्ज स्यात् । आणादिविराधणा वा धुवा चेव ॥६१७४॥

कोइ इमेहि अप्पसत्थकारणेहि असज्झाइए सज्झाय करेज्ज –

रागा दोसा मोहा, असज्झाए जो करेज्ज सज्झायं ।
आसायणा तु का से, को वा भणितो अणायारो ॥६१७५॥

रागेण दोसेण वा करेज्ज। अहवा – दरिसणमोहमोहितो भणेज्ज – का अमुत्तस्स णाणस्स आसायणा ? को वा तस्स अणायारो ? – नास्तीत्यर्थ ॥६१७५॥

एतेसि इमा विभासा –

गणिसद्दमाइमहितो, रागे दोसेण ण सहती सद्दं ।
सव्वमसज्झायमय, एमादी होति मोहाओ ॥६१७६॥

महिओ त्ति हृष्टतुष्टनदितो, परेण गणिवायगो वाहरिज्जतो भवति, तदभिलासी असज्झातिए एव सज्झाय करेइ, एव रागे। दोसेण – कि वा गणी वाहरिज्जति वायगो ? अह पि अधिज्जामि जेण एयस्स पडिसवत्तिभूतो भवामि, जम्हा जीवसरीरावयवो – असज्झायमय न श्रद्दधातीत्यर्थ ॥६१७६॥

इमे दोसा –

उम्मायं च लभेज्जा, रोगायंकं च पाउणे दीहं ।
तित्थकरभासियाओ, खिप्प धम्माओ भंसेज्जा ॥६१७७॥

खित्तादिगो उम्मातो, चिरकालिगो रोगो, आसुघाती आयको – एस वा पावेज्ज, धम्माओ भसो, मिच्छादिट्ठी वा भवति, चरित्ताओ वा परिवडति ॥६१७७॥

इह लोए फलमेयं, परलोए फलं न देंति विज्जाओ ।
आसायणा सुयस्स य, कुव्वति दीहं तु ससार ॥६१७८॥

सुयणाणायारविवरीयकारी जो सो णाणावरणिज्ज कम्म बधति, तदुदयाओ य विज्जाओ कयोवचाराओ वि फल ण देंति-ण सिद्धच तीत्यर्थ, विधीए अकरण परिभवो एव सुतासादणा, अविधीए वट्टतो णियमा अट्ठ कम्मपगतीओ बधइ, हस्सट्ठितियाओ दीहठिईओ करेइ, मदाणुभावा य तिव्वाणुभावाओ करेइ अप्पपदेसाओ य बहुपदेसाओ करेति, एवकारी य णियमा दीह ससार णिव्वत्तेति। अहवा – णाणायारविराहणाए दसणविराहणा, णाणदसणविराहणाहिं णियमा चरणविराहणा। एव तिण्ह विराहणाए अमोक्खो, अमोक्खे णियमा ससारो ॥६१७८॥

बितियागाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।
एएहिं कारणेहिं, कप्पति जयणाए काउं जे ॥६१७९॥ पूर्ववत्

सव्वत्थ अणुप्पेहा अप्रतिसिद्धादित्यर्थ ।

जे भिक्खू हेट्ठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता उवरिल्लाइं समोसरणाइं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

आवासगमादीयं, सुयणाणं जाव बिंदुसाराओ ।
उक्कमओ वाएंतो, पावति आणाइणो दोसा ॥६१८०॥

जं जस्स आदीए तं तस्स हेट्ठिल्लं, जं जस्स उवरिल्लं तं तस्स उवरिल्लं, जहा दसवेयालियस्स आवस्सगं हेट्ठिल्लं, उत्तरज्झयणाण दसवेयालियं हेट्ठिल्लं, एवं णेयं जाव बिंदुसारेत्ति ॥६१८०॥

सुत्तत्थ तदुभयाणं, ओसरणं अहव भावमादीणं ।
तं पुण नियमा अंगं, सुयखंधो अहव अज्झयणं ॥६१८१॥

समोसरणं णाम मेलओ, सो य सुत्तत्थाणं, अहवा – जीवादि णवपदत्थभावाण । अहवा – दव्वखेत्तकालभावा, एए जत्थ समोसढा सव्वे अत्थित्ति वुत्तं भवति, तं समोसरणं भण्णति ।

तं पुण किं होज्ज ? उच्यते – अंगं, सुयक्खंधो, अज्झयणं, उद्देसगो । अंगं जहा आयारो तं अवाएत्ता सुयगडंगं वाएति । सुयक्खंधो – जहा आवस्सयं तं अवाएत्ता दसवेयालियसुयक्खंधं वाएति । अज्झयणं जहा सामातितं अवाएत्ता चउवीसत्थयं वाएति, अहवा – सत्थपरिण्णं अवाएत्ता लोगविजयं वाएति । उद्देसगेसु जहा सत्थ-परिण्णाए पढमं सामन्नउद्देसियं अवाएत्ता पुढविक्काउद्देसियं बितियं वाएति । एवं सुत्तेसु वि दट्ठव्वं । अहवा – दोसु सुयक्खंधेसु जहा बंभचेरे अवाएत्ता आयारग्गे वाएति । सव्वत्थ उक्कमतो । एवं तस्स आणादिया दोसा चउलहुगा य, अत्थे चउगुरू भण्णति, पमत्तं देवया छलेज्ज ॥६१८१॥

इमो य दोसो –

उवरिसुयमसद्दहणं, हेट्ठिल्लेहि य अभावितमतिस्स ।
ण य तं भुज्जो गेण्हति, हाणी अण्णेसु वि अवण्णो ॥६१८२॥

हेट्ठिल्ला उस्सग्गसुता तेहिं अभावितस्स उवरिल्ला अववादसुया ते ण सद्दहति अतिपरिणामगो भवति, पच्छा वा उस्सग्गं न रोचेइ अतिक्कामेयं ति काउं तं ण गेण्हति । अण्णं उवरिं गेण्हति एवं आदिसुत्तस्स हाणी तामसित्थं । आदिसुत्तवज्जितो उवरिसु अट्ठाणेण य पयत्तेण बहुस्सुतो भण्णति, पुच्छिज्जमाणो य पुच्छं ण णिव्वहति, जारिसो एस अणायगो तारिसा अण्णे वि एवं अण्णेसिं पि अवण्णो भवति, जम्हा एवमादी दोसा तम्हा परिवाडीए दायव्वं ॥६१८२॥

इमो अववातो –

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुजोगे य ।
सुत्तत्थ तदुभए वा, उक्कमओ वा वि वाएज्जा ॥६१८३॥

थियधम्म-दढधम्मस्स, निस्सग्गतो परिणामगस्स, सविग्गसभावस्स, विणीयस्स परममेहाविणो – पुरिसस्स कालियसुत्ते पुव्वगए य मा वोच्छिज्जउत्ति उक्कमेण वि देज्ज ॥६१८३॥

जे भिक्खू णवबंभचेराइं अवाएत्ता उवरियसुयं वाएइ वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

णवबंभचेरग्गहणेण सव्वो आयारो गहितो, अहवा – सव्वा चरणाणुओगो न अवाएत्ता उत्तमसुत वाएन्ति, तस्स आणादिया दोसा चउलहु च ॥६१८२॥

किं पुण त उत्तमसुत ? उच्यते –

छेयसुयमुत्तमसुयं, अहवा वी दिट्ठिवाओ भण्णइ उ ।
जं तहि सुत्ते सुत्ते, वण्णिज्जइ चउह अणुओगो ॥६१८४॥

पुव्वद्ध कठ। अहवा - बंभचेरादी आयार अवाएत्ता धम्माणुओग इसिभासियादि वाएति अहवा – सूरपण्णत्तियाइगणियाणुओग वाएति, अहवा – दिट्ठिवात दवियाणुओग वाएति, अहवा – जदा चरणाणुओगो वातितो तदा धम्माणुयोग अवाएत्ता गणियाणुयोग वाएति, एव उक्कमो चारणियाए सव्वो वि भासियव्वो, एव सुत्ते ।

अत्थे वि चरणाणुओगस्स अत्थ अकहेत्ता धम्मादियाण अत्थ कहेति ॰ ॰ । आदेसओ वा चउगुरु ।

छेदसुय कम्हा उत्तमसुत्त ?, भण्णति – जम्हा एत्थ सपायच्छित्तो विधी भण्णति, जम्हा य तेण चरणविसुद्धी करेति, तम्हा त उत्तमसुत ।

दिट्ठिवाओ कम्हा ?, उच्यते – जम्हा तत्थ सुत्ते चउरो अणुओगा वण्णिज्जति, सव्वाहिं णयविहीहिं दव्वा दसिज्जति, विविधा य इड्डीओ अतिसता य उप्पज्जति, तम्हा त उत्तमसुत । एव सुत्तस्स उक्कमवायणा वज्जिया ॥६१८३॥

अत्थस्स कह भाणियव्व ?, उच्यते –

अपुहुत्ते अणुओगो, चत्तारि दुवार भासई एगो ।
पुहुत्ताणुओगकरणे, ते अत्थ तओ उ वुच्छिन्ना ॥६१८५॥ कठ्या

अहवा – सुत्तवायण पडुच्च कमो भण्णति णो अट्ठ पट्ठवण ।

कम्हा ?, जम्हा सुत्ते सुत्ते चउरो अणुओगा दसिज्जति।

उक्त च –

अपुहुत्ते व कहेंते, पुहुत्ते वुक्कमेण वायंयतम्मि ।
पुव्वभणिता उ दोसा, वोच्छेदादी मुणेयव्वा ॥६१८६॥ कठ्या

णवर – वोच्छिज्जति एगसुत्ते चउण्हमणुओगाण जा कहणविधी सा पुहत्तकरणेण वोच्छिण्णा, ण सपय पवत्तइ णज्जइ वा, अहवा – तेसिं अत्थाण कहणसरूवेण एगसुत्ते ववत्थाण वोच्छिण्ण पृथक् स्थापित मित्यर्थ ॥६१८५॥

केण पुहत्तीकय ?, उच्यते –

बलवुड्ढिमेहाधारणाहाणी णाउ विज्झ दुब्बलियपूसमित्त च पडुच्च –

देविंदवदिएहिं, महाणुभागेहि रक्खिअज्जेहिं ।
जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८७॥ कठ्या

के पुण ते चउरो अणुओगा ?, उच्यते –

कालियसुयं च इसिभासियाणि तइयाए सूरपण्णत्ती ।
जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८८॥ कठ्या

अहवा – किं कारणं णयवज्जितो चरणाणुओगो पढमं दारठविय ?, उच्यते –

णयवज्जिओ वि हु अलं, दुक्खक्खयकारओ सुविहियाणं ।
चरणकरणाणुओगो, तेण कयमिणं पढमदारं ॥६१८९॥ कण्ठ्या

शिष्याह – "कालियसुयं आयारादि एक्कारस अंगा, तत्थ पकप्पो आयारगतो ।
जे पुण अंगबाहिरा छेयसुयज्झयणा ते कत्थ अणुओगे वत्तव्वा ? उच्यते –

जं च महाकप्पसुयं, जाणि य सेसाइं छेदसुत्ताइं ।
चरणकरणाणुयोगो, त्ति कालियछेओवगयाणि य ॥६१९०॥

आवस्सय दसवेयालिय चरणधम्मगणियदवियाण पुहत्ताणुओगे ।

कमठवे कारणं इमं –

अपुहत्ते वि हु चरणं, पढमं वण्णिज्जते ततो धम्मो ।
गणित दवियाणि वि ततो, सो चेव गमो पुहत्ते वी ॥६१९१॥ कण्ठ्या

तमु पुण जुगवं वण्णिज्जमाणसु इमा विधी –

एक्केक्कम्मिउ सुत्ते, चउण्ह दाराण आसि तु विभासा ।
दारे दारे य नया, गाहगगेण्हतए पप्प ॥६१९२॥

सुत्ते सुत्ते चउरो दारा त्ति अणुओगा, पुणो एक्केक्को अणुओगो णएहिं चिंतिज्जति, ते य नया गाहग पडुच्च गिण्हतग वा सव्वेवित्थरेहिं दट्ठव्वा –

जइ गाहगो णातु समत्थो गिण्हतगो वि समत्था तो सव्वणएहिं वित्थरेणवि भासियव्वं, बितियभंगे गेण्हतगवसेण वत्तव्वं, ततियभंगे जत्तियं वुत्तं तस्स धारणसमत्थो तत्तियं भासति, चरिमे दोण्णि वि जं सुत्ताणुरूवं अपुहत्ते पुहत्ते वा ॥६१९२॥

ते चउरो अणुओगा कहं विभासिज्जति ?, उच्यते –

समत त्ति होति चरणं, समभावम्मि य ठितस्स धम्मो उ ।
काले तिकालविसयं, दविए वि गुणो णु दव्वणू ॥६१९३॥

तुलाधरणं व समभावकरणं । चरणसमभावट्ठियस्स णियमा विसुद्धिसरूवो धम्मो भवति । काले णियमा तिकालविसयं चरणं, जम्हा समयखेत्ते कालविरहितं न किंचिमत्थि । अहवा – तिकालविसयं ति पचत्थिकाया जहा धुवे णितियया सासती तहा चरणं भुवि च भवति भविस्सति य । दव्वाणुओगे चरणचिंता ।

किं दव्वो गुणो त्ति ? दव्वट्ठिताभिप्पाएण चरणं दव्वं, पज्जवट्ठिताभिप्पाएण चरणं गुणे, अहवा – पढमतो सामाइयगुणं पडिवत्तीतो पुव्वमेव चरणं लब्भति, चरणट्ठितस्स धम्माणुओगो लभति, चरण-धम्मट्ठियस्स गणियाणुओगो दिज्जति, ततो तिअणुओगभावितथिरमतिस्स दव्वाणुओगो य ण्यविधीहिं दसिज्जति ॥६१९३॥

इदं च वर्ण्यते –

एत्थं पुण एक्केक्के, दारम्मि गुणा य होंतऽवाया य ।
गुणदोसदिट्ठसारो, णियत्तत्ति सुहं पवत्तत्ति य ॥६१९४॥

"त्थ त्ति एतेसिं अणुओगाण अत्थकहणे, पुण विसेसणे।
किं विसेसेति ?, एक्केक्के अणुओगे गुणा दरिसिज्जति।

आवाय त्ति — दोसा य कह ?, उच्यते — पडिसिद्ध आयरतस्स विहिं अकरेतस्स य इहपरलोइयदोसा, पडिसिद्धवज्जेतस्स विहि करेतस्स इहपरलोइया गुणा। चरणाणुवचयभवण गुणसारो, चरणविघातो कम्मुवचयभवण च दोससारो, एव गुणदोसदिट्ठसारो दोसट्ठाणेसु सुह णिवत्तति, गुणठाणेसु य सुह पवत्तते। अहवा — णयवादेसु एगतग्गाह दिट्ठदोसो सुह णिवत्तेति, अणेगतगाहे य दिट्ठगुणो सुह पवत्तति ॥६१६४॥

अतो भण्णइ —

अपुहुत्ते य कहेंते, पुहुत्ते वुक्कमेण वायर्यतम्मि ।
पुव्वभणिता उ दोसा, वोच्छेदादी मुणेयव्वा ॥६१६५॥

अणुओगाण अपुहत्तकाले पुहत्त विणा कारणे ण कायव्व, पुहत्ते णाकारणेण उक्कमकरण कायव्व। अहवा — करति पडिसिद्ध नो इमातो आदिसुत्ते जे वोच्छेदादिया दोसा वुत्ता ते भवति ॥६१६५॥

आयारे अणहीए, चउण्ह दाराण अण्णतरगं तु ।
जे भिक्खू वाएती, सो पावति आणमादीणि ॥६१६६॥

सुयकडादी चरणाणुओगे दट्ठव्वो, सेस कठ।

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।
सुत्तत्थजाणएणं, अप्पा बहुयं तु णायव्वं ॥६१६७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥
जे भिक्खू पत्तंण वाएइ वाएंतं ण वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

अपात्र अयोग्य अभाजनमित्यर्थ, तप्पडिपक्खो पत्त।

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥
जे भिक्खू पत्तं ण वाएति ण वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

अप्राप्तक क्रमानधीतश्रुतमित्यर्थ, पडिपक्खो पत्त, आणादी चउलहु वा। एते चउरो वि सुत्ता एगट्ठा वक्खाणिज्जति।

केरिस अपात्र ? उच्यते —

तिंतिणिए चलचित्ते, गाणंगणिए य दुव्बलचरित्ते ।
आयरिय पारिभासी, वामावट्टे य पिसुणे य ॥६१६८॥

तितिणीइ त्ति अस्य व्याख्या — दुविधो तितिणो दव्वे भावे य।

तेंदुरुयदारुयं पिव, अग्गिहितं तिडितिडेति दिवसं पि ।
अह दव्वतिंतिणो भावतो य आहारुवहिसेज्जासु ॥६१६६॥

ज अप्पणो खुड्ड तिंतिणिडेति त दव्वतिंतिण । भावतिंतिणा दुविहो वयणे रसे य, वयणे तिंतिणो कयाकज्जसु किंचि भणितो वादितो वा दिवस पि तिडितिडेतो अच्छति । रसतिंतिणो तिविहो – आहार उवहि सेज्जासु ॥६१९९॥

तत्थ आहारे इमो—

अंतोवहिमजोयण, आहार बाहि खीरदहिमादी ।
अंतो तु होति तिविहा, भायण हत्थे मुहे चेव ॥६२००॥

आहारो दुविधा – बाहि अन्तो य । तत्थ बाहि खीर दधि वा लभिता हिंडतो चेव त खीर कलममालिओदण उप्पाएतो खडमादि वा सजोएतो बाहि सजोयण करेति ।

अतो त्ति वसहीए, सा तिविधा – भायण हत्थे मुहे त्ति वा । तत्थ भायणे – जत्थ कलममालिओदणो तत्थ खीर दधि वा पक्खिवति हत्थे तलाहणादिणा पिंडविगतिमादिय हत्थट्ठिय वेढेता मुहे पक्खिवति, पुव्व मुहे तलाहणादि पक्खिविता पच्छा पिंडविगति पक्खिवति ॥६२००॥

एमेव उवहिसेज्जा, गुणोवगारी य जस्स जो होति ।
सो तेण जो अलंतो, तदभावे तिंतिणो णाम ॥६२०१॥

उक्काम अत्तरकप्प लद्धु उक्काम चेव चोलपट्टक उप्पाएत्ता तेण सह परिभोगेण सजोएति । एव सेसोवहि पि, एव सज्ज अकवाड लद्धु कवाडेण सह सजोएति ।

ज जस्स आहारादि तस्स गुणावकारी अलभतो तिंतिणा भवति ॥६२०१॥

इदाणि [१]चलचित्त त्ति अस्य व्याख्या –

गति ठाण भास भावे, लहुओ मासो य होति एक्केक्के ।
आणाइणो य दोसा विराहणा सजमाताए ॥६२०२॥

चपलो गतिमादिना चउव्विहो, चउसु वि पत्तेय मासलहु पच्छित्त ॥६१०२॥

तत्थ गतिट्ठाणचवलाण इमा विभासा –

दावद्दविओ गतिचवलो उ थाणचवलो इमो तिविहो ।
कुड्डादसइं फुसती, भमति व पादे व णिच्छुभति ॥६२०३॥

गतिचवलो दुय गच्छति – तुरितगामीत्यर्थ । णिसण्णो पट्टिबाहुऊरूकरचरणादिएहिं कुड्डथभादिएहिं णेगसो फुसइ, णिसण्णो य हत्थो आसण असुचता ससता भ्रमति । हत्थपादाण पुणो पुणो य सकोयण विक्खेव व करेति, गायस्स वा कप ॥६२०३॥

[१]भासाचवलो इमो –

भासचवलो चउद्धा, असत्ति अलियं असोहणं वा वि ।
असभाजोग्गमसब्भं, अणहित तु असमिक्खं ॥६२०४॥

---

१ गा० १६६७ ।

असब्भप्पलावी असमिक्खियप्पलावी अदेसकालप्पलावी । असत्ति, अलियं जहा गो अश्व ब्रवीति, अथवा – असत्ति असोभण च असब्भावत्थ, जहा श्यामाकतंदुलमात्रोऽयमात्मा । अपडिता जे ते असब्भा तेसिं जं जं जोग्गं तं तं असब्भ ।

अहवा – जा विदुसभा न भवति सा असब्भा, तीए जं जोग्गं तं असब्भं, तं च ग्राम्यवचनं कर्कश कटुकं निष्ठुरं जकारादिकं वा ।

बुद्धीए अणूहिय पुव्वावरं इहपरलोयगुणदोसं वा जो सहसा भणइ, सो असमिक्खियप्पलावी ॥६२०४॥

अदेसकालप्पलावी इमो –

कज्जविवत्तिं दट्ठूण भणति पुव्वं मते तु विण्णातं ।
एवमिणं ति भविस्सति, अदेसकालप्पलावी तु ॥६२०५॥

अदेसकालप्पलावी-जहा भायणं पडिक्कमियं अट्ठकरणं पि से कयं लेवितं रूढं, ततो पमाएण तं भग्गं ताहे सो अदेसकालप्पलावी – "मए पुव्वं चेव णायं, जहा एयं भज्जिहिति" ॥६२०५॥

इमो [2]भावचवलो –

जं जं सुयमत्थो वा, उद्दिट्ठं तस्स पारमप्पत्तो ।
अण्णोण्णसुतदुमाणं, पल्लवगाही उ भावचलो ॥६२०६॥ कण्ठ्या

इदाणिं [3]गाणगणितो –

छम्मासे अपूरेत्ता, गुरुगा बारससमा तु चतुलहुगा ।
तेण परं मासो उ, गाणगणि कारणे भइतो ॥६२०७॥

णिक्कारणे गणातो अण्णं गणं संकमतो गाणगणिओ, सो य उवसंपण्णो छम्मासे अपूरित्ता गच्छति तो चउगुरु, बारसवरिसे अपूरित्ता गच्छइ तो चउलहुगा, बारसण्हं वरिसाणं परतो गच्छतस्स मासलहुं । एवं णिक्कारणे गाणगणितो । कारणे भतितो, अत्र भयणा सेवाए गाणगणियत्तं कारणिज्ज । दारं ॥६२०७॥

इदाणिं [4]दुब्बलचरणो –

मूलगुण उत्तरगुणे, पडिसेवति पणगमादि जा चरिमं ।
धितिबलपरिहीणो खलु, दुब्बलचरणो अणट्ठाए ॥६२०८॥

सव्वजहण्णो चरणावराहो जहन्नं पणगं भवति, तदादी जाव चरिमं ति पारंचितावराहं पडिसेवितो अणट्ठा चरणदुब्बले ॥६२०८॥

किं च –

पंचमहव्वयभेदो, छक्कायवहो तु तेणऽणुण्णातो ।
सुहसीलवियत्ताणं, कहेति जो पवयणरहस्सं ॥६२०९॥

सुहे सीलं व्यक्तं येषां ते सुहसीलवियत्ता, ते पासत्थादी मंदधम्मा । अहवा – मोक्खसुहे सील जं तम्मि विगतो आया जेसिं ते सुहसीलवियत्ता ॥६२०९॥

१ गा० ६२०२ । २ गा० ६२०२ । ३ गा० ६१९७ । ४ गा० ६१९७ ।

आयरियपारिभासी इमो—

डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्मेहो दमग मंदबुद्धी य ।
अवि यऽप्पलाभलद्धी, सीसो परिभवति आयरिय ॥६२१०॥

इम डहरगादिपदभावसुजुत्त आयरिय कोइ आयबद्धो सूयाए असूयाए वा भणति । तत्थ सूया पर-भाव सत्तववदेसेग भगति जहा अज्ज वि डहरा अम्हे, के आयरियत्तस्स जोग्गा ? असूया पर हीणभावजुत्त फुडमेव भणति । जहा को वि वयपरिगतो ति परूबुद्धी डहर गुरु भणाति—अज्ज वि तुम थणदुद्धगधियमुहो रूवतो भत्त मगामि, केरिसम आयरियत्त ते ? एव उत्तमकुलो हीणाहियकुल, मेहावी मदमेह, ईसरो पव्वतिओ दरिद्दपव्वतिय, बुद्धिसपण्णो मदबुद्धि, लद्धिसपण्णो मदलद्धि । दार ॥६२१०॥

इदाणि [2]वामावट्टो—

एहि भणितो त्ति वच्चति, वच्चसु भणिओ त्ति तो समुल्लियति ।
ज जह भणितो न तह, अकरेंतो वामवट्टो उ ॥६२११॥

वाम विवट्टति त्ति वामवट्टो, विवरीयकारीत्यथ । दार ।.६२११॥

इदाणि [3]पिसुणो—

पीतीसुण्णो पिसुणो, गुरुगादि चउण्ह जाव लहुओ य ।
अहवा संतासते, लहुओ लहुगा गिहं गुरुगा ॥६२१२॥

अलिगतरागि अक्खते पीतिसुण्ण करेति त्ति पिसुणो, प्रीतिविच्छेद करेतीत्यथ । तत्थ जइ आयरिओ पिसुणत्त करेइ तो चउगुरु, उवज्झायस्स चउलहु भिक्खुस्स मासगुरु, खुड्डुस्स मासलहु । अहवा—सामण्णतो जति सजतो सजएसु पिसुणत्त करेइ तत्थ सतेण करेंतस्स मासलहु, असतेण चउलहुगा । अह सजतो गिहत्थेसु पिसुणत्त करेइ एते चेव पच्छित्ता गुरुगा भाणियव्वा, मासगुरु सते, असते ॰॰ ॥६२१२॥

अहवा—इमे अपात्रा अप्राप्ताश्च इह भण्णति, किंचि अव्वत्तस्स वि एत्येव भण्णति—

आदीअदिट्ठभावे, अकडसमायारिए तरुणधम्मे ।
गव्वित पइण्ण णिण्हयि, छेदसुते वज्जिते अत्थं ॥६२१३॥

"[4]आदीअदिट्ठभाव" त्ति अस्य व्याख्या—

आवासगमादीया, सूयकडा जाव आदिमा भावा ।
ते जेण होंतऽदिट्ठा, अदिट्ठभावो भवति एसो ॥६२१४॥ कथ्या

"[5]अकडसामायारि" त्ति अस्य व्याख्या—

दुविहा सामायारी, उवसंपद मडली य वोधव्वा ।
अणलोइतम्मि गुरुगा, मंडलिसामायारिं अओ वोच्छं ॥६२१५॥

१ गा० ६१९७ । २ गा० ६१९७ । ३ गा० ६१९७ । ४ गा० ६२०७ । ५ गा० ६२१३ ।

उवसंपदाए तिविधा—णाणोवसंपदा दंसणे य चरणे य। तं अण्णगणातो आगय अणालोयावेत्ता अणुवसंपण्णं वा जं परिभुंजति वाएइ वा तस्स चउगुरु। मंडलिसामायारी दुविधा—सुत्तमंडली अत्थमंडली य ॥६२१५॥

तेसु इमा विधी –

सुत्तम्मि होंति भयणा, पमाणतो या वि होइ भयणाओ।
अत्थम्मि तु जावतिया, सुणेंति थोवेसु अन्ने वि ॥६२१६॥

दो चेव निसिज्जाओ, अक्खाणेक्का वितिज्जिया गुरुणो।
दो चेव मत्तया खलु, गुरुणो खेले य पासवणे ॥६२१७॥

मज्जण निसेज्ज अक्खा, कितिकम्मुस्सग्गवंदणं जेट्ठे।
परियागजातिसु य सुणण समत्ते भासती जो तु ॥६२१८॥

सुत्तमंडलीए णिसेज्जा कज्जति वा ण वा, वसभाणुगो एगकप्पे चिट्ठितो वाएय त्ति। अहवा – भयणा सद्दे कंबलाओ देंति वा न वा। अधवा – पमाणतो भयणा, जाहे गुरू णिसण्णो ताहे तस्स विहिणा कितिकम्मं बारसावत्तं देंति, पच्छा अणुओगस्स पाठवणं उस्सग्गं करति, तं उस्सग्गं पारेत्ता ततो गुरुं दिट्ठविहिं अक्खेसु करेत्ता पच्छा जेट्ठस्स वंदणयं देति, जहा जेट्ठो परियागजाईसु ण घेत्तव्वो। सुणेत्ताण जो गहणधारणाजुत्तो समत्ते वक्खाणे जो भासती—पडिभणतीत्यर्थः सो जेट्ठो, ततो सुणेत्ता कालवेलाए अणुओगं विसज्जेत्ता गुरुस्स वंदणं देंति, पुणो वंदित्ता कालस्स पडिक्कमति ॥६२१८॥

अवितहकरणे सुद्धा, वितहकरेंताण मासियं लहुगं।
अक्खनिसिज्जा लहुगा, सेसेसु वि मासियं लहुगं ॥६२१९॥

जं सदोसं तं वितहकरणं, तत्थ मासलहुं, अक्खणिसिज्जाए विणा अत्थं कहेतस्स सुणेंताण चउलहु, सेसेसु वि पमज्जणादि अकरणे मासलहु चेव, एवं सव्वं अवितहं सामायारिं जो न करइ सो अकडसामायारी।

इदाणिं "[1]तरुणधम्मे" त्ति –

तिण्हारेण समाणं, होति पकप्पम्मि तरुणधम्मो तु।
पंचण्ह दसाकप्पे, जस्स व जो जत्तिओ कालो ॥६२२०॥

"सम" त्ति वरिसा, पकप्पो णिसीहज्झयणं। तरुणो अविपक्कं, जस्स वा सुत्तस्स जो कालो भणितो तं अपूरेंतो तरुणधम्मो भवति। दारं ॥६२२०॥

इदाणिं '[2]गव्विय" त्ति, अविणीतो णियमा गव्वितो त्ति।

अतो भणति –

पुरिमम्मि दुव्विणीए, विणयविहाणं ण किंचि आइक्खे।
न वि दिज्जति आभरणं, पलियत्तियकण्णहत्थस्स ॥६२२१॥

विणयविहाणं सुयं, पलियत्तिं तं छिण्णं। सेसं कंठ्यं।

---

१ गा० ६२१ । २ गा० ६२१३ ।

मद्दवकरणं णाणं, तेणेव य जे मदं समुवियंति ।
ऊणगभायणसरिसा, अगदो वि विसायते तेसिं ॥६२२२॥ कण्ठ्या

इदाणि [1]"पइण्णो त्ति, सो दुविहो पइण्णपण्हो पइण्णविज्जो य –

सोतु अणभिगयाणं, कहेति असुगं कहिज्जए अत्थं ।
एस तु पइण्णपण्हो, पइण्णविज्जो उ सव्व पि ॥६२२३॥

गुरुसमीव सुयेना अणभिगनाण कहेति । अगधीयसुत्रा अगीतो अपरिणामगो य – एतेसि उद्देसुद्देस कधितो पइण्णपण्णा भण्णइ । जो पुण आदिरतेण सव्व कहेति सो पइण्णविज्जो ॥६२२३॥

तेसि कहतस्स इमे दोसा –

अप्पच्चओ अकित्ती, जिणाण ओवातमइलणा चेव ।
दुल्लभबोहीयत्तं, पावंति पइण्णगागरणा ॥६२२४॥

सो अपात्र अप्राप्त, अव्यक्ताना च काले अविधीए छेदसुनादि अणस्हस्स न कहिज्जत अप्पच्चय करति । कह ? उच्यते – एत च्चिय पुव्व उस्सग्गे पडिसेह कधिता इह अववादे अणुण्णा कहेति, एव अप्पच्चओ अविस्सासा भवति, एते वि धम्मकारिणो ण भवतीत्यथ । पडिसिद्धसमायरेण व्रतभगो व्रतभगकारिणो त्ति अकित्ती । जिणाण आणा ओवातो भण्णति, तस्स मतिलणा पडिसिद्धस्स अण्ण कहतेण पुव्वावरविरुद्ध उम्मत्तवयण च दसिय । सुयधम्म च विराहेतो दुल्लभबोधि णिव्वत्तेइ पइण्णपण्हो पइण्णविज्जो वा ।। दार ॥६२२४॥

इयाणि [2]णिण्हयि त्ति –

सुत्तत्थतदुभयाइं, जो घेत्तु निण्हवे तमायरियं ।
लहु गुरुगा सुत्त अत्थे, गेरुयनायं अबोही य ॥६२२५॥

सुत्तस्स वायणायरिय णिण्हवति ०० । अत्थस्स वायणायरिय णिण्हवति ०० । "गेरुय" त्ति परिव्राजको, जहा तेण सो ण्हाविओ णिण्हविओ पडिओ य असण्णातो । एव इह णिण्हवेतस्स छलणा, परलोगे अबोधिलाभो । एते सव्वे तितिणिगादिगा अदिट्ठभावादिगा य अप्पत्तभूता काउ अवायणिज्जा ॥६२२५॥

किं अकज्ज ?, उच्यते –

उवहम्मति विण्णाणे, न कहेयव्वं सुत च अत्थं वा ।
न मणी सतसाहस्सो, आवज्जति कोच्छुभासस्स ॥६२२६॥

उवहय त्ति – सदोस स्वसमुत्था मति, गुरूवदेसेण जा मती त विण्णाण । अहवा – मतो चेव विण्णाण । भासो त्ति – सकुनो । कोच्छुभो मणी सतसाहस्सो कोच्छुभासस्स अयोग्यत्वात् णो विज्जइ ॥६२२६॥

एव जम्हा तितिणिगादि अजोग्गा –

तम्हा ण कहेयव्वं, आयरिएणं तु पवयणरहस्सं ।
खेत्तं कालं पुरिसं, नाऊण पगासए गुज्झं ॥६२२७॥

---

१ गा० ६२१३ । २ गा० ६२१३ ।

पवयणरहस्स अववादपद सव्व वा छेदसुत्त । अववायतो खेत्तकालपुरिसभाव च णाउ अपात्र पि वाएज्ज । खेत्तओ अद्धाणे लद्धिसपण्णो समत्था गच्छुवग्गहकरोत्ति काउ अपात्र त पि वाएज्जति । एव काले वि ओमादिसु परिणामपुरिसो वा वाइज्जति । भावे गिलाणादियाण उवग्गहकरो गुरुस्स वाऽसहायस्स सहाओ । वोच्छेते वा असइ पत्ते अपत्ते वि वाएज्जा । एवमादिकारणेसु अरत्तदुट्ठो पवयणरहस्स पवाएज्ज ॥६२२७॥

एते होंति अपत्ता, तव्विवरीता हवंति पत्ता उ ।
वाएंते य अपत्त, पत्तमवाएंते आणादी ॥६२२८॥

जे एते तिंतिणिगादी अपत्ता, एतेसिं पडिपक्खभूता सव्वे पात्राणि भवति । तम्हा अपात्रे बहू दोसा तम्हा ण वाएयव्व, पात्र वाएयव्व, अण्णहा करणे आणाइया दोसा ॥६२२८॥

तेसु विमतेसु इम पच्छित्त –

अव्वत्ते य अपत्ते, लहुगा लहुगा य होंति अप्पत्ते ।
लहुगा य दव्वतिंतिणे, रसतिंतिणे होंतऽणुग्घाया ॥६२२९॥

वयसा अव्वत्त अपात्त अप्राप्त उवकरण तिंतिणि च एते वाएतस्स चउलहुगा । रसत्ति आहारतिंतिणे चउगुरुगा भवति, सा उस्सग्गणिच्छिउ ॥६२२९॥

मरज्ज सह विज्जाए, कालेणं आगते विदू ।
अप्पत्तं च ण वातेज्जा, पत्तं च ण विमाणए ॥६२३०॥

कालेण आगए त्ति आधानकालादारभ्य प्रतिसमय कालेनागत यावन्मरणसमय, अत्रान्तरे अपात्र न वाचयेत्, पात्र च न विमानयेदिति ॥६२३०॥

अपात्रस्य इमो अववातो –

बितियपदं गेलण्णे, अद्धाणसहाय असति वोच्छेदे ।
एतेहि कारणेहिं, वाएज्ज विदू अपत्तं पि ॥६२३१॥

जहा पूर्वं तहा वक्तव्य ।

अहवा – अपात्रे अण्ण इम अववादकरण –

वाएंतस्स परिजितं, अण्णं पडिपुच्छगं च मे णत्थि ।
मा वोच्छिज्जतु सव्वं, वोच्छेदे पदीवदिट्ठतो ॥६२३२॥

जस्स समीवातो गहिय सो मतो, अण्णओ तस्स पडिपुच्छग पि णत्थि, अतो परिजयट्ठा अपात्र पि वाएज्जा । सय वा मरतो वत्तस्स अभावे मा सव्व सव्वहा वोच्छिज्जउत्ति, वोच्छिण्णे पदीवदिट्ठतो ण भवति, तम्हा अपत्त वाएज्ज। अपत्ताओ पत्तेसु सचरिस्सति पदीवदिट्ठतेण – जह दीवा दीवसय० कठ्या ॥६२३२॥

जो पात्र ण वाएति तस्सिमे दोसा –

अयसो पवयणहाणी, सुत्तत्थाण तहेव वोच्छेदो ।
पत्तं तु अवाएंते, मच्छरिवाते सपक्खे वा ॥६२३३॥

अवाणस्स अयसो त्ति – एस दुद्धादी ईहति वा किंचि, मुहा वा सव्व कितिकम्म कारवेत्ति, भावमगहेण वा अकज्ज तए गच्छो से सयहा फुट्टा, एवमादि अयसो। पवयण वा उव्वण्णो, तस्स हाणी। कह ?, आगममुण्णे नित्थे ण पव्वयनि कोनि। सेस कठ ॥६२३३॥

कारणेन पात्रमपि न वाचयेत् –

दव्व खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तहा समासज्ज ।
एतेहिं कारणेहिं, पत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२३४॥

'दव्वे खेत्ते य" त्ति अस्य व्याख्या –

आहारादीणऽसती, अहवा आयंबिलस्स तिविहस्स ।
खेत्ते अद्धाणादी, जत्थ सज्झाओ ण सुज्झेज्जा ॥६२३५॥

आयबिलवाराए आयबिलस्स असति ण वाएति, तिविह – ओदणकुम्मासमत्तुगा वा। खेत्तओ अद्धाणपडिवण्णो ण वाएति, जत्थ वा खेत्ते सज्झाओ ण सुज्झति, जहा वइदोसभगवती ण सुज्झति ॥६२३५॥

कालभावपुरिसे य इमा विभासा –

असिवोमाईकाले, असुद्धकाले व भावगेलण्णे ।
आतगत परगतं वा पुरिसो पुण जोगमसमत्थो ॥६२३६॥

असिवकाले ओमकाले य सुद्धे वा काले असज्झ इए ण वाएज्जा। भावे अप्पणा गिलाणो "परगय व" त्ति वाइज्जमाणे वा गेलण्ण णाउ, अहवा – परगिलाणवेयावच्चवावडे पुरिसो वा जोगस्स असमत्थो ण वाइज्जइ, एवमादिकारणहिं पत्तो वि ण वाइज्जइ ॥६२३६॥

जे भिक्खू अव्वत्तं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वत्तं न वाएइ, न वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२४॥

अव्वंजणजातो खलु, अव्वत्तो सोलसण्ह वरिसेणं ।
तव्विवरीतो वत्तो, वातेतियरेण आणादी ॥६२३७॥

जाव कक्खादिसु रोमसभवो न भवति ताव अव्वत्तो, तस्सभवे वत्तो। अहवा – जाव सोलसवरिसो ताव अव्वत्तो, परतो वत्तो। जइ अव्वत्त वाएति इयर ति वत्त न वाएति। तो आणादिया दोसा चउलहु च ॥६२३७॥

अव्वत्ते इमो अववादो –

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुयोगे य ।
सुत्तत्थ जाणएणं, अप्पाबहुय मुणेयव्वं ॥६२३८॥

अववादे वत्तो इमेहिं कारणेहि न वाएज्जा –

दव्व खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तहा समासज्ज ।
एतेहिं कारणेहिं, वत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२३९॥ पूर्ववत

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ, वाएंत वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू पत्तं न वाएइ न वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२६॥

अप्राप्त एयस्स अत्थो अपात्रसूत्रे गत एव, "[1]अदिट्ठ भावे" त्ति । तहा वि इह असुण्णत्थं भण्णति अव्वत्तसुत्तम्म ।

अप्राप्तसूत्रे चउभंगो भाणियव्वो –

परियाएण सुतेण य, वत्तमवत्ते चउक्क भयणा उ ।
अव्वत्तं वाएते, वत्तमवाएंति आणादी ॥६२४०॥

परियाओ दुविहो – जम्मणओ पवज्जाए य । जम्मणओ सोलसण्ह वरिसाण आरतो अव्वत्तो, पव्वज्जाए तिण्ह वरिसाण पकप्पस्स अव्वत्तो । जो वा जस्स सुत्तस्स कालो वुत्तो त अपावेतो अव्वत्तो, सुएण आवस्सगे अणधीए दसवेयालीए अव्वत्तो, दसवेयालीए अणधीए उत्तरज्झयणाण अव्वत्तो, एव सर्वत्र ।

एत्थ परियायसुत्ते चउभंगो कायव्वो । पढमभंगो दोसु वि वत्तो बितिओ सुएण अव्वत्तो ततिओ वएण अव्वत्तो, चरिमो दोहि वि । अव्वत्ते वाएतस्स पढमभंगिल्ल अवाएतस्स आणादिया य दोसा चउलहु च ॥६२४०॥

अप्राप्तो पि वाएयव्वो इमेहिं कारणेहि –

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगए कालियाणुयोगे य ।
एएहिं कारणेहिं, अव्वत्तमवि पवाएज्जा ॥६२४१॥ पूर्ववत्

प्राप्त पि न वाएइ, इमेहि कारणेहिं –

दव्वं खेत्तं कालं, भाव पुरिसं तहा समासज्ज ।
एएहि कारणेहिं, पत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२४२॥ पूर्ववत्

अव्वत्ते अप्रात्तछेदसुत वाएज्जमाणे इद दोसदसग उदाहरण –

आमे घडे निहित्तं, जहा जलं तं घडं विणासेति ।
इय सिद्धंतरहस्सं, अप्पाहार विणासेइ ॥६२४३॥

णिहित पक्खित्त, सिट्ठ कहिय । अप्पा आहारता जत्थ त अप्पाहार, अप्पधारणसामर्थ्यमित्यर्थ ।

जे भिक्खू दोण्हं सरिसगाणं एक्कं संचिक्खावेइ, एक्कं न संचिक्खावेइ, एक्कं वाएइ, एक्कं न वाएइ, तं करंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

सरिस त्ति तुल्ला, तेसिं उ तुल्लत्तण वक्खमाण । त सरिस एक्क वाएइ, एक्क न सचिक्खावेति, तस्स आणादिया दोसा चउलहु च ।

एगं सचिक्खाए, एग तु तहि पवायए जो उ ।
दोण्हं तु सरिसयाणं, सो पावति आणमादीणि ॥६२४४॥ गतार्था

---

[1] गा० ६२१३ ।

साहव्व इमेहि—

संविग्गा समणुण्णा, परिणामग दुविह भूमिपत्ता य ।
सरिस अदाणे रागो, बाहिरयं णिज्जरा लाभो ॥६२४५॥

दो वि संविग्गा सति संविग्गत्ते समणुण्णत्ति, दो वि समोइना सति संविग्गसमणुण्णत्ते, दोवि परिणामगा सति संविग्गसमणुण्ण परिणामगत्त । दो वि दुविधभूमीपत्ता । दुविधभूमी – वएण सुएण य । वएण वजगजानक। सुएण जस्स सुत्तस्स जावइए परियाए वायणा वुत्ता त दो वि पत्ता, जहा आयारस्स तिण्णि सवच्छराणि, सूयगडदमाण पचसवच्छराणि, णवमादिसरिमाण एक्क सचिक्खावेइ एक्क वाएइ सुत्ते ० ० । अत्थे ० ० । सरिसाण चेव एक्कस्स अदाण दासा लब्भति, बितियस्स दाणे रागो लब्भति । जस्स ण दिज्जति सो बाहिरभाव गच्छइ, तप्पच्चय च णिज्जर ण लब्भति, अण्ण च सो पदोस गच्छति, पदुट्ठो वा ज काहिति त पावेण ॥६२४५॥

भवे कारण जेण एक्क सचिक्खावज्ज—

दव्व खेत्तं कालं, भाव पुरिसं तहा ससामज्ज ।
एएहि कारणेहिं, संचिक्खाए पवाए वा ॥६२४६॥

दव्वखेत्तकालभावाण इमा विभासा—

आयबिलणिव्वितियं, एगस्स सिया ण होज्ज बितियस्स ।
एमेव खेत्तकाले, भावेण ण तिण्ण हट्ठेक्को ॥६२४७॥

दव्व आयबिल णिव्वितिय वा असणादि दोण्ह वि ण पहुप्पति, एव कक्खडखेत्ते वि असणादिग ण पहुप्पति, ओमकाले वि दोण्ह ण लब्भति भावे एक्को ण तिण्णो त्ति गिलाणा, हट्ठे त्ति अगिलाणो, त वादेति गिलाण सचिक्खावइ ॥६२४७॥

अहवा सयं गिलाणो, असमत्थो दोण्ह वायणं दाउं ।
संविग्गादिगुणजुओ, असहु पुरिसो य रायादी ॥६२४८॥

पुव्वद्ध कठ । अहवा – भावतो सविग्गादिगुणजुत्ताण वि तत्थेक्को असहू । असहु त्ति सभावतो चेव जोगस्स असमत्थो राया च रायमती, एवमादी पुरिसो कुसुयभावितो जाव भाविज्जति ताव सचिक्खाविज्जति ॥६२४८॥

जो धरिज्जति, सो इम वुत्त धारिज्जति –

अण्णत्थ वा वि णिज्जति, भण्णति समत्ते वि तुज्झ वि दलिस्सं ।
अण्णं ण वि वाइज्जति, परिकम्म सहं तु कारेंति ॥६२४९॥

जइ वा असहू तो त परिकम्मणेण सहू करेंति जाव, ताव धरेंति । इयर पुण वाएइ, सेस कठ ।

जे भिक्खू आयरिय-उवज्झाएहिं अविदिन्नं गिर आइयइ,
आइयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

गिर त्ति वागी वयण, न पुण सुत्ते चरणे वा। जो त आयरिय-उवज्झाएहिं अदत्त गेण्हति तत्थ सुत्ते ड्ढु । अत्थे ड्ढा । चरणे मूलुत्तरगुणसु अणेगविह पच्छित्त ॥६२४६॥

दुविहमदत्ता उ गिरा, सुत्त पडुच्चा तहेव य चरित्तम्मि ।
सुत्तत्थेसु सुतम्मि, भासादोसे चरित्तम्मि ॥६२५०॥

जा सुत्ते गिरा सा दुविधा – सुत्ते अत्थे वा। चरणे सावज्जदोसजुत्ता भासा ॥६२५०॥

कह पुण सो अदिण्ण आइयत्ति ?, उच्यते –

रातिणियगारवेणं, बहुस्सुतमतेण अन्नतो वा वि ।
गतु अपुच्छमाणो, उभयं पऽण्णावदेसेणं ॥६२५१॥

तस्स किंचि सुयत्थसंदिट्ठ, सो सव्वरातिणिओ ह ति गारवेण ओमे ण पुच्छति, सीमत्त वा न करेइ, सव्वबहुसुओ वा ह भणामि, कहमण्ण पुच्छिस्स एवमादिगारवट्ठितो अण्णतो वि ण गच्छति, गतो वा ण पुच्छति, ताह जत्थ सुत्तत्थाणि वाइज्जति तत्थ चिलिमिलिकुडकडतरिओ वा ठिओ अण्णावदेसेण वा गतागत करेंतो सुणेति, उभय पि अण्णावदेसेण ॥६२५१॥

एसा सुत्त अदत्ता, होति चरित्ते तु जा ससावज्जा ।
गारत्थियभासा वा, ढड्ढर पलिकुंचिता वा वि ॥६२५२॥

चरित्ते ढड्ढरसर करेति, आलायणकाले पलिउचेति, कताकत वा अत्थे पलिकुचति । सस कठ ॥६२५२॥

बितिओ वि य आएसो, तवतेणादीणि पंच तु पदाणि ।
जे भिक्खू आतियती, सो पावति आणमादीणि ॥६२५३॥

तवतेणे वतितेणे, रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य, कुव्वई देवकिव्विस ॥ (दश० अ० ५ गा० ४६)

एतेसिं इमा विभासा –

खमओ सि ? आम मोण, करेति को वा वि पुच्छति जतीणं ।
धम्मकहि-वादि-वयणे, रूवे णीयल्लपडिमा वा ॥६२५४॥

सभावदुब्बलो भिक्खागओ अण्णत्थ वा पुच्छिओ "तुम सो खमओ त्ति भते ?" ताहे सो भणति-आम, मोणेण वा अच्छति । अहवा भणति – को जतीसु खमण पुच्छ । वइतेणे त्ति "तुम सो धम्मकही वादी णेमित्तिओ गणी वायगो वा ?" एत्थ वि भणति – आम तुण्हिक्को वा अच्छति त्ति । भणाति रूवे – 'तुम अम्ह सयणा सि ?" अहवा – 'तुम सो पडिम पडिवण्णमासी ?" एत्थेव तहेव तुण्हिक्कादी अच्छति॥६२५४॥

बाहिरठवणागलिओ, परपच्चयकारणाओ आयारे ।
महुराहरणं तु तहिं, भावे गोविंदपव्वज्जा ॥६२५५॥

आयारतेणे मथुरा कोडयइल्ला उदाहरण ते भावसुण्णा । परप्पईतिणिमित्त बाहिरकिरियासु सुट्ठु उज्जता ज ते आयारतणा । भावतेणो जहा गोविदवायगो वादे णिज्जिओ सिद्ध तहरणट्ठयाए पव्वज्जम-

ब्भुवगतो, पच्छा सम्मत्त पडिवण्णो। एवमादि गिगाण अदिन्नाण णो गहण कायव्व। एक्क माव गिगब्भसो कन्ना भवति। मुसाव.दादिया च चरणब्भमदोसा ॥६२५५॥

एतेसामण्णतरं, गिरं अदत्तं तु आतिए जो तु।
सो आणा अणवत्थ, मिच्छत्त विराधण पावे ॥६२५६॥ कण्ठ्या

आवण्णसट्ठाण पच्छित्त च ॥

भवे कारण न अदत्त पि आदिएज्जा –

बितियपदमणप्पज्झे, आतिए अविकोविते व अप्पज्झे।
दुहाइ संजमट्ठा, दुल्लभदव्वे य जाणमवी ॥६२५७॥

खित्तादिचित्तो वा आदिएज्ज, सहो वा अजाणता, 'दुट्ठाइ'' त्ति उवसपन्नाण त्ति न देइ तस्स, उवसपण्णो अणुवसपण्णो वा जत्र ग्रणेइ वक्खाणेइ वा कस्सति तत्थ कुडुतरिओ सुणति गयागय व करेंतो। ''संजमहेउ व'' त्ति अच्छिता कइ मिया दिट्ठ त्ति पुच्छिओ, दिट्ठा वि न दिट्ठ त्ति भणेज्ज। अन्य वा संजय भासात भासिज्जमाणा स.गारिया संजयभासाओ गेण्हेज्जा तत्थ अविदिण्णाते गारत्थिगभासाए भासेज्जा। आयरियस्स गिलाणस्स वा सयपागेण वा सहस्सपागेण वा दुल्लभदव्वेण कज्ज तदट्ठा णिमित्त पउजेज्ज, अण्ण वा किंचि सयवयण भणेज्ज, तदट्ठा चेव तेणादि वा पचपद भणेज्ज ॥६२५७॥

जे भिक्खू अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएइ,
वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा पडिच्छइ
पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खू पासत्थं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू पासत्थं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू ओसन्नं वाएइ, वाएत वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू ओसन्नं पडिच्छइ, पडिच्छतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खू कुसील वाएइ, वाएत वा सातिज्जइ ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खू कुसीलं पडिच्छइ पडिच्छंत वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खू नितियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खू नितियं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खू संसत्तं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खू संसत्त पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४०॥

तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासिय परिहारट्ठाण उग्घातियं।

एतेसिं वायण देति पडिच्छति । मासेणो वा सव्वेसु ग्रहाच्छंदवज्जिएसु चउलहु, ग्रहवा – ग्रत्थे ङ्कु । ग्रहाच्छंदे चउगुरु सुत्ते ग्रत्थे फुं ।

अण्णपासंडी य गिही, सुहसीलं वा वि जो पवाएज्जा ।
ग्रहव पडिच्छति तेसिं, चाउम्मासाग्रो पोरिसिं ।।६२५८।।

पोरिसि त्ति सुत्तपोरिसिं ग्रत्थपोरिसिं वादेंतस्स, तेसिं वा समीवातो पोरिसिं करेंतस्स, ग्रहवा – एक्को पोरिसिं वाएन्तस्स ।

ग्रणेगासु इम –

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेदो पहावती ।
छेदेण छिण्णपरियाए, ततो मूलं ततो दुगं ।।६२५६।।

सत्तदिवसे चउलहु तवो, ततो एक्क दिवस चउलहुच्छेदो, ततो एक्केक्कदिवस मूलणवट्ठपारंचिया । ग्रहवा – तवो तहेव चउलहु छेदो सत्तदिवसे । सेसा एक्केक्कदिवस । ग्रहवा – तवो तहेव छगुरुछेदो सत्तदिवसे, सेसा एक्केक्क । ग्रहवा – चउलहु तवो सत्तदिवसे, ततो चउगुरू तवो सत्तदिवसे ?, ततो छल्लहू तवो सत्तदिवसे, ततो छग्गुरू तवो सत्तदिवसे, ततो एते चेव छेदो सत्त सत्त दिवसे, ततो मूलऽणवट्ठपारचिया एक्केक्कदिणं । ग्रहवा – ते च्चेव चउलहुगादि वा सत्त दिवसिगा, ततो छेदा लहुपणगादिगा सत्त सत्त दिवसिगा सत्त दिवसे णेयव्वा जाव छग्गुरू, ततो मूलऽणवट्ठपारचिया एक्केक्कदिवस ।।६२५६।।

गिहिग्रण्णतित्थिएसु इमे दोसा –

मिच्छत्तथिरीकरणं, तित्थस्सोभावणा य गेण्हंते ।
देंते पवंचकरणं, तेणेवऽक्खेवकरणं च ।।६२६०।।

कह मिच्छत्त थिरत्तर ?, उच्यते – ते त दट्ठु तेसिं समीवे गच्छत मिच्छद्दिट्ठी चिंतेति – इमे चेव पहाणतरा जाता, एते वि एतेसिं समीवे सिक्खति । लोगो दट्ठु भणाति – एतेसिं ग्रप्पणो ग्रागमो णत्थि, परसतिताणि सिक्खति । निस्सार पवयणति ग्रोभावणा । ग्रह तेसिं देति तो ते सद्दसत्थादिभाविता महाजणमध्ये वट्ट चोर खुज्जाविलियासणए करीसए पिलुग्रए त्ति एवमादिपवचण करेति उड्डाह च । ग्रहवा – तेणेव सिक्खिएण ग्रक्खेवे त्ति चोयण करेज्ज दूसेज्ज वा ।।६२६०।।

गिहिग्रण्णतित्थियाणं, एए दोसा उ देंत गेण्हंते ।
गहण-पडिच्छणदोसा, पासत्थादीण पुव्वुत्ता ।।६२६१।।

कण्ठ्या । णवर – पासत्थादिसु गहणपडिच्छणदोसा जे ते पण्णरसमे उद्देसगे वुत्ता ते दट्ठव्वा । वदण-पससणादिया तेरसमे । जम्हा एते दोसा तम्हा गिहिग्रण्णतित्थिया वा ण वाएयव्वा ।।६२६१।। परपासंडिलक्खण – जो ग्रण्णाण मिच्छत्त कुव्वतो कुतित्थिए वण्णेति, जिणवयण च णाभिगच्छति सो परपासडी ।

जो पुण गिहि-ग्रण्णतित्थिग्रो वा इमेरिसो –

णाणे चरणे परूवण, कुणति गिही ग्रहव ग्रण्णपासंडी ।
एएहि संपउत्तो, जिणवयणं सो सपासंडी ।।६२६२।।

णाणदसणचरित्ताणि परूवेति, जिणवयण च रोएति सो सपासडी चेव, सो वाइज्जइ ज तस्स जोग्ग ।

एएहि संपउत्तो, जिणवयणमण्ण सोग्गतिं जाति ।
एएहि विप्पमुक्को, गच्छति गति अण्णतित्थीणं ॥६२६३॥

जो अण्णतित्थियाणुरूवागिती त गच्छति । सेस कठ्य ।

भवे कारण वाएज्जा वि –

पव्वज्जाए अभिमुह, वाएति गिही अहव अण्णपासंडी ।
अववायविहारं वा ओसण्णुवगंतुकामं वा ॥६२६४॥

गिहि अण्णपासंडि वा पव्वज्जाभिमुह सावग वा छज्जीवणिय त्ति जाव सुत्तना, अत्थना जाव पिंडेसणा, एस गिहत्थादिसु अववादो । इमो पासत्थादिसु अवव दो त्ति उवसपदा उज्जयविहारीण उवसपण्णो जो पासत्थादी सो अववादविहारठितो त वा वाएज्ज । अहवा – पासत्थ दिग ग जो सविग्गविहार उव गतुकामो – अब्भुट्ठिउकाम इत्यर्थ । त वा पासत्थादिभावरहित चेव वाएज्जा, ज व अब्भुट्ठति ॥६२६४।

एव वायणा दिट्ठा, तेसि समीवाओ गहण कह होज्ज ?, उच्यते –

बितियपद समुच्छेदे, देसाहीते तहा पकप्पम्मि ।
अण्णस्स व असतीए, पडिक्कमते व जयणाए ॥६२६५॥

जस्स भिक्खुस्स सिद्धपरियाओ वट्टति, सिद्धपरियाओ णाम जस्स तिण्णि वरिसाणि परियायस्स सपुण्णाणि, तस्स य आयारपकप्पो अधिज्जियव्वो । आयरिया य कालगता, एसेव समुच्छेदो, अहवा – कस्सइ साहुस्स आयारपकप्पस्स देसाण अणधीत समुच्छेदो य जातो, एतेसि सव्वो आयारपकप्पो पढमस्स बितियस्स देसो ३ वस्स अहिज्जियव्वो ॥६२६५॥

सो कस्स पासे अहिज्जियव्वो ?, उच्यते –

संविग्गमसविग्गे, पच्छाकड सिद्धपुत्त सारूवी ।
पडिकंते अब्भुठिते, असती अण्णत्थ तत्थेव ॥६२६६॥

सगच्छे चेव जे गीयत्था, तेसि असति परगच्छे सविग्गमणुन्नसगासे, तस्स असति ताहे अण्णस्स, "[1]अण्णस्स वि असतीए" त्ति अण्णसभोइयस्स वि असति णिआदिउक्कमेण असविग्गेसु । तेसु वि णितियादिट्ठाणाओ आवकहाए पडिक्कमावितो, अणिच्छि जाव अहिज्जइ ताव पडिक्कमावित्ता तहावि अगिच्छे तस्स व सगासे अहिज्जइ । सव्वत्थ वदणादीणि ण हावेइ । एसेव जयणा । तेसि असतीए पच्छाकडा त्ति जेण चारित्त पच्छाकड उनिक्खता भिक्ख हिंडइ वा न वा ।

सारूविगो पुण सुक्किल्लवत्थपरिहिओ सडमसिह धरेइ अभज्जगो अ पत्तादिसु भिक्ख हिंडइ ।

अण्णे भणंति – पच्छाकडा सिद्धपुत्ता चेव, जे असिहा ते सारूविगा । एतेसि सगासे सारूविगाइ पच्छाणुलोमेण अधिज्जति, तेसु सारूविगादिसु पडिक्कते अब्भुट्ठिए त्ति सामातियकडो अतारोपिता अब्भुट्ठिओ, अहवा – पच्छाकडादिएसु पडिक्कतेसु । एते सव्वे पासत्थादिया पच्छाकडादिया य अण्ण खेत्त णेउ पडिक्कमाविज्जति, अणिच्छेसु तत्थ त्ति ॥६२६६॥

"[2]देसाहीते" त्ति अस्य व्याख्या –

देसो सुत्तमहीय, न तु अत्थतो व असमत्ती ।
असति मणुण्णमणुण्णे, इतरेतरपक्खियमपक्खी ॥६२६७॥

१ गा० ६२६५ । २ गा० ६२६५ ।

पुव्वद्ध कंठ। 'अमति अणुण्णमणुण्णे" त्ति पय गयत्थ ति। "इतरेतर" त्ति असति णितियाण इतरे समत्ता, तेसिं असति इतरे कुसीला एय गेयव्व, एसो वि अत्थो गतो चेव। तेसु वि जे पुव्व सविग्गपक्खिता पच्छा सविग्गपक्खिएसु इमेरिसा जे पच्छाकडादिया मुडगा ते। पच्छाकडादिया जावज्जीवाए पडिक्क मःविज्जति, जावज्जीवमणिच्छेसु जाव अहिज्जति ॥६२६७॥

तहवि अणिच्छेसु –

मुंडं च धरेमाणे, सिहं च फेडंत णिच्छ समिहे वी ।
लिंगेण असागरिए, ण वंदणादीणि हावेति ॥६२६८॥

जति मुड धरति ता रयोहरणादी दव्वलिंग दिज्जति जाव उद्देसाती करेइ, ससिहस्स वि सिह फेडेतु एमेव दव्वलिंग दिज्जति, सिह वा णो इच्छति फेडउ तो ससिहस्सेव पासे अधिज्जति, सलिंगे ठिओ चेव असागारिए पदेसे सुयपूय त्ति काउ वदणाइ सव्व ण हावेइ, तेण विचारेयव्व ॥६२६८॥

पच्छाकडयस्स पासत्थादियस्स वा जस्स पासे अधिज्जति।

तत्थ वेयावच्चकरणे इमो विही –

आहार उवहि सेज्जा, एसणमादीसु होति जतियव्वं ।
अणुमोयण कारावण, सिक्खति पदम्मि सो सुद्धो ॥६२६९॥

जति तस्स आहारादिया अत्थि ता पहाण। अह णत्थि ताहे सव्व अप्पणा एसणिज्ज आहाराति उप्पाएव्व ॥६२६९॥

अप्पणा असमत्थो –

चोदेति से परिवारं, अकरेमाणे भणाति वा सड्ढे ।
अव्वोच्छित्तिकरस्स उ, सुयभत्तीए कुणह पूयं ॥६२७०॥
दुविहासती य तेसिं, आहारादी करेंति सव्वं तो ।
पणहाणी य जयंतो, अत्तट्ठाए वि एमेव ॥६२७१॥

जो तस्स परिवारो, पासत्थादियाण वा सीसपरिवारो, सड्ढा वि सता ण करेति, असता वा णत्थि सड्ढा, एव असतीए सो सिक्खगो आहारादी सव्व पणगपरिहाणीते जयणाते तस्स विसोहिकोडीहिं सय करेंतो सुज्झति। अप्पणो वि एमेव पुव्व सुद्ध गेण्हति, असति सुद्धस्स पच्छा विसोहिकोडीहिं गेण्हतो सिक्खइ। अववादपदेण विसुज्झइ ॥६२७१॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए एगूणवीसइमो उद्देसओ समत्तो ॥

विंशतितम उद्देशकः

भणिओ एगूणवीसइमो उद्देसओ । इदाणि वीसइमो भण्णइ । तस्सिमो संबंधो –

हत्थादि-वायणंते, पडिसेहे वितहमायरंतस्स ।
वीसे दाणाऽऽरोवण, मासादी जाव छम्मासा ।।६२७२।।

पगतस्स हत्थकम्मसुत्त जाव वायणंत सुत्त, एत्थ वितहमायरतस्स दिट्ठमेय एगूणविसाए वि उद्देसेसु आवज्जणपच्छित्तं, तेसिं आवण्णाण वीसतिमउद्देसे दाणपच्छित्तेण ववहारो भण्णति – दाणत्तेण पच्छित्तस्स आरोवणा दाण रोवणा । आरोवणत्ति – चडावणा, अहवा – जं दव्वादिपुरिसविभागेण दाण सा आरोवणा । तं च कस्स ? कह ? आयरियमुवज्झायाण कताकतकरणाणं, भिक्खूण वि गीतमगीताण, थिरकयकरणसंघयण-संपण्णाणेतराण य गच्छगताण च सव्वेसिं तेसिं इह दाणपच्छित्तं भण्णइ, तं च इह सुत्ततो मासादी जाव छम्मासा जो पणगादिभिण्णमासता, ते वि अत्थतो भाणियव्वा ।। २७२।।

एतेण संबंधेणागयस्स इम पढमसुत्तं –

जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा-
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं,
पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ।।सू०।।१।।

जे णिद्देसे, भिदिर् विदारणे, क्षुध इति कर्मण आख्या, तं भिनत्तीति भिक्षु, भिक्षणशीलो वा भिक्षु, भिक्खाभोगी वा भिक्खू । मासाभिणिप्फन्नं मासि । यथा – कौशिक, द्रौणिक । अहवा – माणेसणातो वा मासो, जम्हा समयादिकालमाणाई असति तम्हा मासे समयावलियमुहुत्ता माणा तत्रान्तर्गतादित्यर्थ । अहवा – दव्वखेत्तकालभावमासा असतीति मासो । दव्वतो जत्तिया दव्वा मासेण असति, खेत्तओ जावत्तिय खेत्त मासेण असति । कालतो तीस दिवसा, भावतो जावतिया सुत्तत्थादिया भावा मासेण गेण्हति । परिहरण – परिहारो वज्जण त्ति वुत्तं भवति । अहवा – परिहारो वहण त्ति वुत्त भवति, तं प्रायश्चित्तं । ष्ठा गतिनिवृत्तौ तिष्ठन्त्य-स्मिन्निति स्थानं इह प्रायश्चित्तमेव ठाणं, तं प्रायश्चित्तठाणं अणेगप्पगारं मूलुत्तरदप्पकप्पजयाजय भेदप्रभेदभिण्णं भवति । आङ् मर्यादा वचने, लोकृ दर्शने, आलोयणा णाम जहा अप्पणो जाणति तहा परस्स पागडं करेइ । परि सव्वतो भावे कुच कौटिल्ये, तस्स पलिकुंचणे त्ति रूवं भवति, रलयोरैक्यम् इति कृत्वा, न पलिकुंचणा अपलिकुंचणा, तस्सेव अपलिकुंचिय आलोएमाणस्स मासियं लहुगं गुरुगं वा पडिसेवणा-णिप्फण्णं दिज्जति । जो पुण पलिकुंचिय आलोएइ तस्स जं दिज्जति पलिउंचणमासो य सगाणिप्फण्णो गुरुगो दिज्जति । एस सुत्तत्थो ।

इदाणिं एसेवत्थो सुत्तफासियणिज्जुत्तीए वित्थरेणं भण्णति –

जे त्ति व से त्ति व के त्ति व, णिद्देसा होंति एवमादीया ।
भिक्खुस्स परूवणया, जे त्ति कश्रो होति णिद्देसो ॥६२७३॥

जे त्ति वा, से त्ति वा, के त्ति वा एवमादी । णिद्देसवायगा भवंति । जे-कारस्स णिद्देसदरिसणं – "जे असंतएणं अभक्खाणेणं अभक्खाइ" इत्यादि । से-गारो जहा – "से गामंसि वा" इत्यादि । के-कारो जहा – "कयरे आगच्छति दित्ते रूवे" इत्यादि ।

चोदगाह – किं कारणं सेसणिद्देसे मोत्तुं जेकारेणं निद्देसं करेइ ?

आचार्याह – एत्थ कारणं भण्णइ – सेगारस्स णिद्देसो पुव्वपगतापेक्खो जहा – "भिक्खू वा" इत्यादि । ककारो संसयपुच्छाए वा भवति, जहा – "किं कस्स केण व कहं केवचिरं कइविहं" इत्यादि । जेगारो पुण अणिद्दिट्ठवायगुद्देसे जहा – "जेणेव जं पडुच्च" इत्यादि, अहवा – जहा इमो चेव जेगारो उस्सग्गववायट्ठिएण पडिसेवियं व त्ति न निद्दिट्ठं गुरुं लहुं वा जयणाजयणाहिं वा तेण जेगारेण निद्देसो कृतेत्यर्थः अहवा – जेकारेण अनिद्दिट्ठभिक्खुस्सट्ठा निद्देसो ॥६२७३॥

सो भिक्खू चउव्विहो इमो –

नामं ठवणा भिक्खू, दव्वभिक्खू य भावभिक्खू य ।
दव्वे सरीरभविश्रो, भावेण उ संजतो भिक्खू ॥६२७४॥

नाम भिक्खू, जस्स भिक्खूत्ति नामं कयं ।

ठवणा भिक्खू चित्रकर्मलिहितो ।

दव्व भिक्खू दुविधो, आगमतो नो आगमतो य । आगमतो जाणए अणुवओगो दव्वमिति वचनात् । नोआगमओ जाणगादितिविधो, दोण्णि वि भामित्ता तव्वतिरित्तो एगभवियादितिविधो, एगभविओ णाम जो णेरइयतिरिए य – मणुयदेवेसु वा अणंतरं उव्वट्टित्ता जत्थ भिक्खू भविस्सति तत्थ उववज्जिहिति, बद्धाउओ णाम जत्थ भिक्खू भविस्सइ तत्थ आउयं बद्धं, अभिमुहणामगोत्तो णाम जत्थ भिक्खू भविस्सति जत्थ उववज्जिउकामो समोहतो पदेसा णिच्छूढा । अहवा – सयणधणादिपरिच्चइयं पव्वज्जाभिमुहो गच्छमाणो । एओ दव्वभिक्खू ।

इदाणिं भावभिक्खू । सो दुविधो – आगमतो णो आगमतो य । आगमतो जाणए भिक्खुसद्दोपयुत्ते, णो आगमतो इहलोगणिप्पिवासो संवेगभावितमती संजमकरणुज्जतो भावभिक्खू ॥६२७४॥

चोदगाह – त्वयोक्तम् –

भिक्खणसीलो भिक्खू, अण्णे वि ण ते अणऽण्णवित्तित्ता ।
णिप्पिसिएणं णातं, पिसितालंभेण सेसाउ ॥६२७५॥

"भिक्खाहारो वा भिक्खू", एवमन्ये रक्तपटादयोऽपि – भिक्षवो भवन्ति" ।

आचार्याह – न ते भिक्षवः । कुतः ?, येन तेषां भिक्षावृत्तिनिरुपधा न भवति । आहूतमपि आधाकर्मदोषयुक्ता च तेषां वृत्तिः प्रलंबादि, अन्यान्यवृत्तयश्च नेन ते भिक्षवो न भवन्ति । तस्मात् साधव एव भिक्षवो भवन्ति, येन साधूनामाधाकर्मादिदोषवर्जिता निरुपधा वृत्तिः । "अणण्णवितित्ता" – अणण्ण-

वृतयश्च भिक्षा मुक्त्वा नास्त्यन्या साधूना वृत्ति । एत्थ आयरिओ णिप्पिसिएण दिट्ठत करेति, सपिसिय जो भुजति सो सपिसिओ, जो ण भुजति सो णिप्पिसिओ । "पिसियालभेण सेसा य" त्ति – जे पुण भणति – "णिव्वि (प्पि) सा वय जाव पिसियस्स अलाभो" त्ति, एव भणता सेसा न निप्पिसिया भवतीत्यर्थ ।।६२७५।।

इमे वि एयस्सेव अत्थस्स समाहणा दिट्ठता –

अविहिंस बंभचारी, पोसहिय अमज्जमंसियाऽचोरा ।
सति लंभ परिच्चाती, होति तदक्खा ण पुण सेसा ।।६२७६।।

अहवा काइ भणेज्जा – अहिसगोऽह जाव मिए ण पस्सामि ।

अण्णो कोति भणेज्ज – बभचारी अह जाव मे इत्थी ण पडुप्पज्जति ।

अहवा एव भणेज्ज – आहारपोसही ह जाव मे आहारो ण पडुप्पज्जइ।

अहवा कोति भणेज्ज – अमज्जमसवृत्ती ह जाव मज्जमसे ण लहामि ।

अहवा कोति भणेज्ज – अचोरक्कवृत्ती ह जाव परच्छिद्र न लभामि ।

एते असतिलभपरिच्चागिणोवि णो तदक्खा भवति, तेण अत्थेण अक्खा जेसिं भवति ते तदक्खा अहिंसगा इत्यर्थ, सेसा अनिवृत्तचित्तास्तदाख्या न भवति, ते उ रक्तपटादयो न भवति भिक्षव ससावद्य-भिक्षामनिलभपरित्यागिन साधव एव भिक्षवो भवन्ति । "सेसे" त्ति भिक्खग्गहणे वा साधूण चरगादियाण इमो विसेसो ।।६२७६।।

भणति –

अहवा एसणासुद्धं, जहा गेण्हंति भिक्खुणो ।
भिक्खं णेवं कुलिंगत्था, भिक्खजीवी वि ते जती ।।६२७७।।

"एसणासुद्ध" ति – उग्गमादिसुद्ध, पच्छाणुपुव्विग्गहण वा एय, सेस कठ। अहवा – ते चरगादि-कुलिगी न केवल भिक्षुवृत्त्युपजीवी ।।६२७७।।

जाव इमाणि य भुजति –

दगमुद्देसियं चेव, कंदमूलफलाणि य ।
सयं गाहा परत्तो य, गेण्हंता कह भिक्खुणो ।।६२७८।।

"दग ति – उदग, "उद्देसिय" ति तमुद्दिश्य कृत, "कद" इति मूल कदादी, पद्मिन्यादि मूला, आम्रादि फला, एयाणि स्वय गेण्हता कह भिक्खुणो भवति ? इत्युक्त भवति ।।६२७८।।

जो पुण सण्णिच्छियभिक्खू इमेरिसी वृत्ती भवति –

अच्चित्ता एसणिज्जा य, मिता काले परिक्खिता ।
जहालद्धविसुद्धा य, एसा वित्ती उ भिक्खुणो ।।६२७९।।

अगरहिता अगरहियकुलेसु वा भत्तिबहुमाणपुव्वं वा दिज्जमाणी अचित्ता बातालीसदोसविसुद्धा एसणिज्जा भत्तट्ठप्पमाणजुत्ता मिता। "काले" त्ति दिवा। अहवा – गामणगरदेसकाले। अहवा ततियापोरिसीए

दायगादिदोसविसुद्धा। परिक्खिना "जहालद्धा" णाम सजोयणादिदोसवज्जिता, एरिसवृत्तिणो भिक्खू भवति ॥६२७९॥ "भिक्खणसीले" त्ति गतं।

इदाणिं "[1]भिनत्ति" त्ति भिक्खु—"भिदिर्" विदारणे, "क्षुध" इति कमग आख्यात, त भिनत्तीति भिक्षु, एष भेदको गृहीत सो दुविहस्स भवति—दव्वस्स य भावस्स य। भेदकग्रहणाच्च तज्जातीय द्वयं सूचित—भेदण भेत्तव्वं च।

जतो भण्णति—"दव्वे य भाव" गाहा।

तत्थ—

दव्वे य भाव भेयग, भेदण भेत्तव्वगं च तिविहं तु।
णाणाति भाव-भेयण, कम्म खुहेगट्ठतं भेज्जं ॥६२८०॥

दव्वे तिविहो—दव्वभेदको दव्वभेयणाणि दव्वभेयव्वं। दव्वभेदका रहकारादि दव्वभेदणाणि परसुमादीणि, दव्वता भेत्तव्वं कट्ठमादियं। भावे भावभेदका भिक्खु भावभेदणाणि णाणादीणि भावभेत्तव्वं कम्म ति वा, खुह ति वा वोण्ण ति वा, कलुस ति वा वज्ज ति वा, वेर ति वा, पंका ति वा मलो ति वा, एते एगट्ठिता। एवं जाव भेज्ज भवति ॥६२८०॥

इमानि भिक्षोरेकार्थिकानि शक्रेन्द्रपुरन्दरवत् भिक्खु त्ति वा जति त्ति वा खमग त्ति वा तवस्मि त्ति वा भवते त्ति वा।

एतेसि इमा व्याख्या—

भिंदंतो वा वि खुधं, भिक्खू जयमाणओ जई होइ।
तवसंजमे तवस्सी, भवं खवेंतो भवंतो त्ति ॥६२८१॥

भिनत्तति भिक्खु। यती प्रयत्ने। तप सन्तापे, तप अस्यास्तीति तपस्वी। अहवा—अधिकरणाभिधानादिद सूचित—तपसि भव तापस। अहवा—तप सयमासना तवस्सी नारकादिभवाणमत करेंतो भवतो। नारकादिभवे वा क्षपयतीति क्षपक, एत्थ भावभिक्खुणा अधिकारो ॥६२८१॥ भिक्खु त्ति गयं।

इदाणिं मासो तस्स णामादिछक्कओ णिक्खेवो—

नामं ठवणा दविए, खेत्ते काले तहेव भावे य।
मासस्स परूवणया, पगतं पुण कालमासेणं ॥६२८२॥

णामठवणाओ गताओ, दव्वमासो दुविहो—आगमओ णोआगमओ। आगमओ जाणओ अणुवउत्तो। णो आगमतो जाणगसरीय भविगसरीर, जाणगभवियअइरित्तो इमो—

दव्वे भविओ णिव्वित्तिओ य खेत्तम्मि जम्मि वण्णणया।
काले जहि वण्णिज्जइ, णक्खत्तादी व पंचविहो ॥६२८३॥

भविओ त्ति एगभविओ बद्धाउ अभिमुहणामगोत्तो य। अहवा—ज्ञशरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्त। "णिव्वित्तिओ" त्ति—मूलगुणणिव्वित्तितो उत्तरगुणणिव्वित्तिओ य। तत्थ मूलगुणणिव्वत्ती जेहिं जीवेहिं तप्पढमताए णामगोत्तस्स कम्मस्स उदएण मासदव्वस्स उदएण मासदव्वपाउग्गाइ दव्वाइ गहियाइ।

---

1 सू० 1 चू०।

उत्तरगुणणिव्वत्तणाणिव्वत्तितो चित्रकम्मणि मासत्थ वा लिहितो। जम्मि खेत्ते मासकप्पो कीरइ, जम्मि वा खेत्ते ठविज्जइ जम्मि वा खेत्ते वण्णिज्जइ, सो खेत्तमासो। कालमासो जम्मि वा कालमासो ठाविज्जइ। अहवा – कालमासो सावणभद्दवयादी। अहवा – सनक्खत्तणिप्फण्णो णक्खत्तादी पचविहो इमो – णक्खत्तो चदो उडु आइच्चो अभिवड्डिअो य ॥६२८३॥

तत्थ णक्खत्तचदा इमे –

अहोरत्ते सत्तवीसं, तिसत्तसत्तट्ठिभाग णक्खत्तो।
चंदो अउणत्तीस बिसट्ठि भागा य बत्तीसं ॥६२८४॥

णक्खत्तमासो सत्तावीस अहोरत्तो, "तिसत्त" त्ति एक्कवीस च सत्तसट्ठिभागा – एस लक्खणओ य परिमाणओ य णक्खत्तमासो। चदमासो अउणत्तीस अहोरत्ते बत्तीस च बिसट्ठिभागे ॥६२८४॥

उडुमासो तीसदिणो, आइच्चो तीस होइ अद्धं च।
अभिवड्ढितो य मासो, पगतं पुण कम्ममासेणं ॥६२८५॥

उडुमासो तीस चेव पुण्णा दिणा। आदिच्चमासो तीस दिणा दिणद्ध च। अभिवड्ढितो अहिमासगो भण्णति। एतेसि पचण्ह पदाण इह पगत ति अधिकारो कम्ममासेण, कम्ममासो त्ति उडुमासो ॥६२८५॥

अभिवड्ढियस्स इम पमाण –

एक्कत्तीसं च दिणा, दिणभागसयं तहेक्कवीसं च।
अभिवड्ढिओ उ मासो, चउवीससतेण छेदेणं ॥६२८६॥

एगत्तीस दिवसा, दिवसस्स चउवीससयखडियस्स इगवीसुत्तर $\frac{१२१}{१२४}$ च भागसत एय अधिमासगप्पमाण ति। एतेसि च णक्खत्तादीयाण मासाण उप्पत्ती इमा भण्णति –

अभीइमादी चदो चार चरमाणो जाव उत्तरासाढाण अत गअो ताव अट्ठारससता तीसुत्तरा सत्तसट्ठी भागाण भवति, एतावता सव्वणक्खत्तमडल भवति। $\frac{१८३०}{६७}$। एतेसि सत्तसट्ठीए चेव भागो, भागलद्ध सत्तावीस अहोरत्ता अहोरत्तस्स य इगवीस सत्तसट्ठिभागा २७ $\frac{२१}{६७}$ एस णक्खत्तमासो परिमाणलक्खणओ। अहवा – एय चेव फुडतर भण्णति – अभियस्स चदयोगो इगवीस सत्तसट्ठिभागा। अवरे छण्णक्खत्ता पण्णरस मुहुत्ता भोगाओ एतेसि छण्ह सतभिसा भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा य। एतेसि छण्ह तिण्णि अहोरत्ता।

अण्णे छण्णक्खत्ता पणयालमुहुत्तभोगी त जहा – तिण्णि उत्तरा, पुणव्वसु, रोहिणी, विसाहा य। एते णव अहोरत्ता। तिण्ह मज्झे मेलित्ता बारस जाता।

अण्णे पण्णरस णक्खत्ता तीसमुहुत्तभोगी, त जहा – अस्सिणी, कित्तिया, मिगसिर, पुस्स, मघा तिन्नि पुव्वा, हत्थ, चित्ता, अणुराहा, मूल, सवण, धणिट्ठा, रेवती य, एते पण्णरस अहोरत्ता। बारस मिलिता जाया सत्तावीस सव्वे। रुक्खमडलपरिभोगकालो णक्खत्तमासो भण्णति।

इदाणि चदमासो तस्स णिदरिसण, तजहा – सावण बहुलपडिवयातो आरब्भ जाव सावणपोण्णिमा समत्तो – एस परिमाणतो चदमासो। एव भद्दवतादितो वि सेसा दट्ठव्वा। लक्खणओ पुण आसाढपोण्णिमाए वतिक्कताए सावणबहुलपडिवयाए रुद्दमुहुत्तसमयपढमाओ अभितिस्स भोगो पवत्तति चदेण सह। इमो णव मुहुत्ते चउवीस बिसट्ठिभागे छावट्ठि सत्तसट्ठि चोण्णियाओ य।

एते इमेण विहिणा भवति — जे अभीयस्स इगवीस सत्तसट्ठी भागा ते सह च्छेदेण बासट्ठीए गुणिता जाता तेरससया बिउत्तरा. असमाण छेदो इगतालीस सता चउप्पण्णा ($\frac{२१}{६७}$ + ६२ = $\frac{१३०२}{४१५४}$) तेण भागे ण देइ त्ति असा तीसगुणा कायव्वा, १३०२ + ३० = ३९०६०

४१५४

$$९ \frac{१६७४}{४१५४} + ६२ = \frac{१०३९८८}{४१५४} \quad ६२ = \frac{१६७४}{५७} = २४\frac{६६}{६७}$$

तेहि भागेहिते लद्ध नव मुहुत्ता, ९ सेस बासट्ठीए गुणयव्व, एत्थ उ वट्टो (छेदो) कज्जति-बासट्ठिभागेण, एक्कतालीससताण चउप्पण्णाण बासट्ठिभागेण सत्तसट्ठी $\frac{६४}{६७}$ भवति, एक्केण गुणित एत्तिय ९ चेव सत्त सट्ठीए ६७ भागे हिते लद्ध चउवीस बासट्ठिभागा $\frac{२४}{६२}$ छावट्ठ च सेसचुण्णीया भागा $\frac{६६}{६७}$ । एत्थ अभीति – भोगे सवणादिया सव्वे णक्खत्तभोगा छोढव्वा जाव उत्तरासाढाण असपत्तो, तत्थ इमा रासी जाता अट्ठसया एगूणविसुत्तरा ८१९ मुहुत्ताण, चउव्वीस च बासट्ठिभागे $\frac{२४}{६२}$ छावट्ठि चुण्णीया भागा । ६६ एत्थ पुणो अभीतिभोगो य छोढव्वो, सवणभोगा य सम्मत्तो ३०, धणिट्ठाण य छव्वीस २६ मुहुत्ता बायालीस बावट्ठिभागा दो य चुण्णिया ४२, ६२, २ भागा, ताहे इमो रासी, एयम्मि ८८४, ९०, ६२, १३२, ६७ भुत्ते । सावणपोण्णिमा सम्मत्ता ।

एत्थ चउतीसुत्तरसयस्स सत्तसट्ठीए भागो हायव्वो, दो लद्धा, ते उवरि पक्खित्ता, जाता बाणउतीए बावट्ठिभाग त्ति काउ बावट्ठिए भातिता एक्को लद्धो सो उवरि पक्खित्तो, सेसा तीस बावट्ठिभागा ठिता ८८५ जे पचासीया अट्ठसया मुहुत्ताण तेसि ३० तीसाए भागा लद्धा एगूणतीस अहोरत्ता, जे सेसा पण्णरसा मुहुत्ता ते ६२ बासट्ठीए गुणिता जाता णवसया तीसुत्तरा, एत्थ जे ते सेसा तीस बावट्ठिभागा ते पक्खित्ता जाया णवसया सट्ठी ९६० । एयस्स भागो तीसाए, लद्धा बत्तीस, बिसट्ठिभागा एते अउणत्तीसाए अहोरत्ताण हेट्ठा ठविया विसट्ठित्ता छेदसहिता । एव एसो चंदमासो अउणत्तीस दिवसा बिसट्ठिभागा य बत्तीस भवति ।

इदाणि उडुमासो भण्णति – एक्क अहोरत्त बुद्धीए बावट्ठि भागे छेत्ता तस्स एक्कसट्ठी भागा चदगतीए तेहिं समत्ती भवति ।

कह पुण ?, उच्यते – जति अट्ठारसहिं अहोरत्तसएहिं सट्ठेहिं अट्ठारसतीसुत्तरासया लब्भति तो एक्केण अहोरत्तेण किं लब्भामो । एव तेरासियकम्मे कते आगय एगसट्ठिह बावट्ठिभागा $\frac{६१}{६२}$ अहो रत्तस्स, एसा एक्कसट्ठी तीसाए तिहीहिं मासा भवति त्ति तीसाए गुणयव्वा, ताहे इमा रासी जातो १८३० । एयस्स एगसट्ठीए भागो हायव्वो लद्धा तीस तिही, एसा एव उडुमासो णिप्फण्णो एस चेव कम्ममासो, सहाणमासो य भण्णति । एस चेव रासी बावट्ठिहिता चदमासा वि लब्भति ।

इदाणि आइच्चमासो भण्णइ । सो इमेण विहिणा आणेयव्वो – आदिच्चो पुस्सभागे चउसु अहोरत्तेसु अट्ठारससु य मुहुत्तेसु दक्षिणायण पवत्तति, सो य अप्पणो चारेण सव्वणक्खत्त-मडलचार चरित्ता जाव पुणो पुस्सस्स अट्ठ अहोरत्ता चउव्वीस मुहुत्ता भुत्ता ।

एस सव्वो आइच्चस्स णक्खत्तभोगकालो पिंडेयव्वो, इमेण विहिणा –

सयभिसयभरणीओ, अद्दा अस्सेस साति जेट्ठा य ।
वच्चति मुहुत्ते एक्कवीसति छच्च अहोरत्ते ॥
तिण्णुत्तरा विसाहा, पुणव्वसू रोहिणी य बोधव्वा ।
गच्छति मुहुत्ते तिण्णि चेव वीस च अहोरत्ते ॥

अवसेसा णक्खत्ता, पण्णरस वि सूरसहगया जंति ।
बारस चेव मुहुत्ते, तेरसय समे अहोरत्ते ॥
अभिजि छच्च मुहुत्ते, चत्तारि य केवले अहोरत्ते ।
सूरेण समं गच्छइ, एत्तो करणं च वोच्छामि ॥

एय सव्व मेलिय इमा अहोरत्तरासी भवति ॥३६६॥

एय आदिच्च वरिसं । एयस्स बारसहि भागा भागलद्ध आदिच्चमासो । अहवा – पचगुणस्स सट्ठीए भागा भागलद्ध तीसं अहोरत्ता, अहोरत्तस्स य अद्ध, एस आदिच्चमासो पमाणओ लक्खणतो य । एत्थ वि सव्वमासा अप्पणा भागहारेहिं उप्पज्जति ।

इदाणि अभिवड्डिओ –

छच्चेव अतीरत्ता, हवंति चदम्मि वासम्मि ।
बारसमासेणते, अट्ठाइज्जेहि पूरितो मासो ॥
एवमभिवड्डितो खलु, तेरसमासो उ बोधव्वो ॥

वपमिति वाक्यशेष ।

सट्ठीए अतीताए, होति तु अधिमासगो जुगद्धम्मि ।
बावीसे पव्वसते, होई बितिओ जुगतम्मि ॥

अहवा – एक्खत्तादीमासाण दिणाण य ण इमातो पचविहातो पमाणवरिसदिवसरासीतो अट्ठारस-सततीसुत्तराओ आणिज्जति । तसु पचप्पमाणा वरिसा इमे – चद चद अभिवड्डिय पुणो चद अभिवड्डिय । तत्थिम करण – चदमासा एगूणतीस २६ दिवस, दिवसस्स य बासट्ठिभागा बत्तीस $\frac{३२}{६२}$, एस चद मासो ।

बारमासवरिस ति – एस बारसगुणो कज्जति, ताहे इम भवति अउयाला तिण्णिसया दिवसाण, बिसट्ठिभागाण य तिण्णिसया चुलसीया, ते बावट्ठी भइया लद्धा छद्दिवसा, ते उवरि पक्खित्ता जाता तिण्णि सता चउप्पण्णा, ३५४ समा बारस, ते च्छेयसा अद्धेण उवट्टिता जाया एगतीस भागा $\frac{१२}{३१}$, एय चदवरिसपमाण । 'तिण्णि चदवरिस त्ति तो तिगुण कज्जति तिगुणकय इम भवति बासट्ठहिय दिणसहस्स, एगतीसविभागा य अट्ठारस[1] । एय तिण्ह चदवरिसाण पमाण । एत्तो अभिवड्डियकरण भण्णति सो एक्कतीस दिणाति एक्कवीससय चउवीससय भागाण, एरिस "बारस मासा वरिस" त्ति काउ बारसहिं गुणेयव्वा, गुणिए इमो रासी, तिण्णि सया बोहत्तरा दिणाण चउवीससया भागा चोदससया बावण्णा[2], छेदेण भातिते लद्धा एक्कारस, ते उवरिं छूढा जाता तिण्णिसया दिवसाण तेसीया हिट्ठा अट्ठासीति सेसगा, ते सच्छेया चउहिं उवट्टिता जाया एक्कतीस-सभागा बावीस, एय अभिविड्ढियवरिसप्पमाण ।

"दो अभिवड्ढियवरिस" ति [3]एस रासी दोहिं गुणेयव्वो, दोहिं गुणिए इमो रासी सत्तसया छावट्ठा दिवसाण इगतीस भागा य चवोयाला ए एक्कतीसभातियालद्धो तत्थेक्को, सो उवरिं छूढो, जाया सत्तसया सत्तट्ठा एक्कतीसतिभागा य तेरसा । ७६७, $\frac{१३}{३१}$ । एस अभिवड्ढियवरिसरासी पुव्वभणियचदवरिसरासिस्स मेलितो । कह ?, उच्यते – दिवसा दिवसेसु, भागा भागेसु । ताहे पचवरिसरासी "सरत्तविसुद्धो भवइ उ" अट्ठारससया तीसुत्तरा ॥१८३०॥ एस धुवरासी ठाविज्जति । एयाओ धुवरासीओ सव्वमासा णक्खत्तादिया उप्पाइज्जंति अप्पप्पणो भागहारेहिं ।

१–१० २ / १८ / ३१ । २–३१ / १२१ / १२४ ३७२ / १४५२ / १२४ । ३–३८३ $\frac{२२}{३१}$ ।

जओ भणित—

भा-ससि-रितु-सूरमासा, सत्तट्ठि वि एगसट्ठि सट्ठी य ।
अभिवड्ढियस्स तेरस, भागाण सत्त चोयाला ॥६२८७॥

सत्तट्ठिं णक्खत्ते, छेदे बावट्ठिमेव चंदम्मि ।
एगट्ठि अ उडुम्मि सट्ठी पुण होइ आइच्चे ॥६२८८॥

सत्तसया चोयाला, तेरसभागाण होंति नायव्वा ।
अभिवड्ढियस्स एसो, नियमा छेदो मुणेयव्वो ॥६२८९॥

अट्ठारसया तीसुत्तरा उ ते तेरसेसु संगुणिता ।
चोयाल सत्तभइया, छावट्ठतिगिवट्ठिया य फलं ॥६२९०॥

भा इति णक्खत्तमासो, ससि त्ति चदमासो, रिउ त्ति वा कम्ममासो वा एगट्ठ, सूरमासो य, एतेसिं मासाण जहासख भागहारा इमेरिसा—सत्तसट्ठी बिसट्ठि एगसट्ठी सट्ठी य अभिवड्ढिउ मासस्स भागहारो सत्तसया चोयाला तेरसभागेण । एतेसिं इमा उप्पत्ती जइ तेरसेहिं चदमासेहिं बारस अभिवड्ढियमासा लब्भति तो बावट्ठीए चदमासेहिं कति अभिवड्ढियमासा लभिस्सामो एव तेरासिए कते आगत सत्तावण्णमासो मासस्स य तिण्णि तेरसभागा, एते पुणो सवण्णिया जाता सत्तसया चोयाला तेरसभागाण त्ति, एतेहिं अट्ठारसण्ह सयाण तीसुत्तराण तेरसगुणिताण २३७९० भागो हायव्वो, लद्ध एक्कतीस दिणा, सेस सत्तसया छव्विसा ते उहि उवट्टिया जाया सय एक्कवीसुत्तर असाण, छेदे वि सय चउवीसुत्तर, एस अभिवड्ढियवरिसबारसभागो अधिमासगो । जो पुण ससिसूरगतिविसेसणिप्फण्णो अधिमासगो सो अउणत्तीस दिणा बिसट्ठिभागा य बत्तीस भवति ।

कह ?, उच्यते—"ससिणो य जो विसेसो आइच्चस्स य हवेज्ज मासस्स तीसाए सगुणितो अधिमासओ चदो । आइच्चमासो तीस दिणा तीसा य सट्ठिभागा, चदमासो अउणत्तीस दिणा बिसट्ठिभागा य बत्तीस । एतेसिं विसेसे कते सेससमुद्धरित एक्कतीस बासट्ठिभागा अण्णे तीस चेव बासट्ठिभागा एते उवट्ठिया परोप्पर छेदगुणकाउ एगस्स सरिसच्छेदो नेट्ठो असेसु पक्खित्ता तेसु वि च्छेय सवट्ठिएसु एगसट्ठि बासट्ठि भागा (उ) जाया अहोरत्तस्स, एस एक्को तिही सोमगतीए सो तीसगुणितो बिसट्ठिभागिओ चदमासपरिमाणणिप्फण्णो अहिमासगो भवति ।

अहवा — इमेण विहिणा कायव्व — जइ एक्केण आइच्चमासेण एक्का सोमतिही लब्भति तो तीसाए आदिच्चमासेहिं कतितिही लभामो आगत तीस सोमतिहीओ, एस आदिच्चचदवरिसअभिवड्ढियछम्मास य प्रतिदिन प्रतिमास च कला वड्ढमाणी तीसाए मासेसु मासो पूरति त्ति, एसो अधिमासगो चदमासप्पमाणो चदो अधिमासगो भण्णति, एय चेव अभिवड्ढि पडुच्च अभिवड्ढियवरिस भण्णति ।

भणिय च सूरपण्णत्तीए—"तेरस य चदमासो एसो अभिवड्ढिओ त्ति णायव्वो" वर्षमिति वाक्यशेष । तस्स बारसभागो अधिमासगो अभिवड्ढियवर्षमासेत्यर्थ । अथवा — अधिमासगप्पमाण इम एगतीस दिणा अउणतीस मुहुत्ता बिसट्ठि भागा एस सतरसा, एते कह भवति ? उच्यते — ज एगवीस उत्तरसय असाण तीसगुण कायव्व तस्स भागो सयेण चउवीसउत्तरेण भागलद्ध अउणतीस मुहुत्ता, सेसस्स अद्धे ताव दो, तत्थ बिसट्ठि भागा सत्तरस भवति, एव वा एकतीसदिणसहिय अधिकमासपमाण । एसो पचविहो कालमासो भण्णति ॥६२९०॥

इदाणि भावमासो सो दुविहो आगमतो णो आगमतो य –

मूलादिवेदओ खलु, भावे जो वा वियाणतो तस्स ।
न हि अग्गिणाणओऽग्गी-णाणं भावो ततोऽणण्णो ॥६२९१॥

जो जीवा धण्ण-मास-मूल कंद-पत्त पुप्फ फलादि वेदति सो भावमासो, जो वा आगमतो उवउत्तो म स इति पदत्थज ओ ।

चोदगाह – "ण हि अग्गिणाणओ अग्गि" त्ति नत्वग्निज्ञानोपयोगत आत्मा अग्न्याख्यो भवति ।

एवमुक्ते चोदकेनाचार्याह – 'णाण भावो ततो णऽण्णो" त्ति णाण ति ज्ञान, भाव अधिगम उपयोग इत्यनर्थान्तरमिति कृत्वा अग्निद्रव्योपयुक्त आत्मा तस्मादग्निद्रव्यभावादन्यो न भवति ॥६२९१॥

एत्थ छव्विहा मासणिक्खेवो, कालमासेण अधिकारो तत्थ वि उडुमासेण, सेसा सीसस्स विकोवणट्ठा भणिया मासे त्ति गयं ।

इदाणि "[1]परिहारे" त्ति तस्स इमो णिक्खेवो –

णामं ठवणा दविए, परिगम परिहरण वज्जणोग्गहे चेव ।
भावावण्ण सुद्धे, णव परिहारस्स नामाइं ॥६२९२॥

भावपरिहारो दुविधो कज्जति (आवण्णपरिहारो सुद्धो य) आवण्णपरिहारितो एस चरित्तायारो । अहवा – भावपरिहारितो दुविधो पसत्थो अप्पसत्थो य । पसत्थे जो अण्णाणमिच्छादि परिहरति, अपसत्थो जो णाणदंसणचरित्ताणि परिहरति । एव भावे तिविहे कज्जमाणे दसविहो परिहारनिक्खेवो भवति[2] ॥६२९२॥

तेसिं इमा व्याख्या – णामठवणातो गतातो, वतिरित्तो दव्वपरिहारो ।

कटगमादी दव्वे, गिरिनदिमादीसु परिरओ होति ।
परिहरण धरण भोगे, लोउत्तर वज्ज इत्तरिए ॥६२९३॥
लोगे जह माता ऊ, पुत्तं परिहरति एवमादी उ ।
लोउत्तरपरिहारो, दुविहो परिभोग धरणे य ॥६२९४॥

जो कण्टगादीणि परिहरति आदिग्गहणेण खाणू विसप्पादी । परिगमपरिहारो णाम जो गिरिं नदिं वा परिहरन्तो जाति आदिग्गहणातो समुद्दमडविं वा । परिगमो त्ति वा पज्जहारो त्ति वा परिरओ त्ति वा एगट्ठं । परिहरण परिहारो दुविहो लोइओ लोउत्तरो य । तत्थ लोगे इमो – 'लोगे जह" पुव्वद्ध कंठं ।

लोउत्तरपरिहारो दुविहो – परिभोगे धरणे य । परिभोगे परिभुंजति पाउणिज्जतीत्यर्थं । धारणपरिहारो नाम जं संगोविज्जति पडिलेहिज्जति य ण य परिभुंजति ।

[1] सू० १ । "[2]भावपरिहारो दुविहो य पसत्थो । अपसत्थो जो अन्नाणमिच्छिद्दिट्ठी परिहरति आवण्णपरिहारितो एव नवविधोभवति, भावसामान्यतो अट्ठविधो भवति । अहवा – सुद्ध परिहारितो एस अणइयारो, आवन्न परिहारितो एस चरित्तायारो ।" एष पाठ स्तावद् टाइपप्रकितप्रतौ टिप्पणीरूपेण सूचित ।

दुविहा – तोदआ लाउत्तरिआ य । लाउआ इत्तरिआ आवकहिआ य । इत्तरिआ सूयगमनगादिदसदिवसवज्जण, आवकहिता तरा ग वस्स , तीआ दुविहा – इत्तरिआ आवकहिआ य । तत्थ इत्तरिआ सज्जायस्सागअभिगमसड्ढ दि आवकहितो र तविता । अहवा - अट्ठारस पुरिसेसु ।'

अणुग्गहपरिहारो –

खोडादिभंगऽणुग्गह, भावे आवण्ण सुद्धपरिहारे ।

मामादी आवण्णो, तेण तु पगत न अन्नेहि ॥६२९५॥

"खाडभगा' ति वा, "उक्कोडभगा' त्ति वा, "अक्खाडभगा" त्ति वा एगट्ठ, आड मयादाया । खोड णाम ज रायकुलस्स हिरण्णादि दव्व दायव्व वट्टिकाणि पर परिगयग चाभडादिय ण य चोल्लगादिपि ताण तस्स भगा खाडभगा, त रायणुग्गहेग सज्जायाग भजना एक्क दा तिण्णि वा सवत्ति जावतिय अणुग्गहा न करेति तत्तिय काल सा दव्वादिसु परिहरिज्जति तावत् का न न दाप्यतेत्यर्थ । एस अणुग्गह परिहारा । भावपरिहारो दुविहा – आवण्णपरिहारा सुद्धपरिहारा य । तत्थ सुद्धपरिहारा जा वि सुद्धा पचयाम अणुत्तर धम्म परिहरइ – करातीत्यर्थ । विसुद्धपरिहारकप्पो वा घेप्पइ । आवण्णपरिहारो पुण जो मासिय वा जाव छम्मासिय वा पायच्छित्त आवण्णा तण सो सपच्छित्ती असुद्धा अ विसुद्धचरणेहि साहूहि परिहरिज्जति । इह तण अहिकारो ण सेसेहि (अधिकारो) [1]विकात्रगट्ठा पुण परूविया ॥६२९६॥

इदाणि [1]ठाण, तस्सिमो चोद्दसविहो निक्खेवा –

नामं ठवणा दविए, खेत्तद्धा उड्ढओ विरति वसही ।

संजम पग्गह जोहो, अचल गणण संघणा भावे ॥६२९६॥

णामठवणातो गयाओ, जाणगसरीर भवियवइरित्त दव्वट्ठाण इम –

सचित्तादी दव्वे, खेत्ते गामादि अद्धदुविहा उ ।

तिरियनरे कायठिती, भवठिति चेवावसेसाण ॥६२९७॥

सच्चित्तदव्वट्ठाण अचित्त मीस । सचित्तदव्वट्ठाण तिविध – दुपय चउप्पय अपय । दुपयट्ठाण जिणे जत्थ मणूसा उवविसति तत्थ ठाण जायति, चउप्पदाण पि एव चेव, अपदाण पि जत्थ गरुय फल निक्खिप्पइ तत्थ ठाण सजायति । अचित्त जत्थ फलगाणि साहजतादि णा निक्खिप्पति तत्थ ठाण । एतेसि चेव दुपदादियाण ससलक्किनाण पूववत् घडस्स वा जलभरियस्स ठाण (मीस) । खेत्त गामणगरादिय तंमि ठाण खेत्तट्ठाण, अहवा – खेत्ता गामणगरादियाण ठाण ।

अद्धा काल इत्यर्थ, सो दुविधो उवलक्खितो जीवेस अजीवसु य । अजीवेसु जा जस्स ठिई । ससारिजीवेसु दुविधा ठिई – कायठिई भवठिती य, तत्थ तिरियणरेसु अणेगभवग्गहणसभवातो कायठिई, सेसाण ति – देवनारगाण एगभवसचिट्ठणा भवठिई अहवा – कालट्ठाण समयावलियादि णेय ॥६२९८॥

---

१ सू० ५ ।

ठाण निसीय तुअट्टण, उट्ठाती विरति सव्व देसे य।
संजमठाणमसंखा, पग्गह लोगोत्तर दो पणगा ॥६२९८॥

"ठाणं" ति तज्जातीयग्गहणातो निसीयणतुयट्टणं वि गहिता, तेसिं उद्धट्ठाणं आदि तं पुण काउस्सग्गं णिसीयणं उवविसणं तुयट्टणं सयणं ति। "विरति" ठाणं दुविधं—देसे सव्वे य, तत्थ देसे सावयाणं अणुव्वयाणं पंच, सव्वे साधूणं महव्वया पंच। "संजमट्ठाणं उवसमओ जस्स वा जं आवस्सहट्ठाणं। "संजमठाणं" ति वा अज्झवसायठाणं ति वा परिणामठाणं ति वा एगट्ठं। एत्थ पढमसंजमट्ठाणे पज्जय-परिमाणं सव्वागासपदेसग्गं सव्वागासपदेसेहिं अणंतगुणितं पढमं संजमट्ठाणं पज्जवग्गेणं भवति। ततो बितियादि-संजमट्ठाणा उवरुवरिविसुद्धीए अणंतभागाहिगा णेया, एवं लक्खणा सामण्णतो संजमठाणा असंखेज्जा। विभागतो सामातियछेदसंजमठाणा दो वि सरिसा असंखेज्जे ठाणे गच्छंति, ततो परिहारसहिता ते चेव असंखेज्जठाणे गच्छंति, ताहे परिहारितो वोच्छिज्जति। ततुवरि सामातियछेदोवट्ठावणिया अण्णे असंखेज्जठाणे गच्छंति, ताहे ते वोच्छिज्जंति। ततुवरि सुहुमसंपरायसंजमठाणा केवलकालतो अंतोमुहुत्तिया असंखेज्जा भवति, ततो अणंतगुणं एगं अहक्खायसंजमट्ठाणं भवति। इमा ठवणा। "पग्गहठाणं" दुविहं – लोइयं, इतरं लोउत्तरं। "दो पणग" त्ति लोइयं पंचविहं ॥६२९८॥

तं जहा –

रायाऽमच्च पुरोहिय, सेट्ठी सेणावती य लोगम्मि।
आयरियादी उत्तर, पग्गहणं होइ उ निरोहो ॥६२९९॥

राया जुवराया अमच्चा सेट्ठी पुरोहितो। उत्तरं पग्गहे ठाणं पंचविहं – आयरिए उवज्झाए पवत्ति थेरा गणावच्छेदए। प्रकर्षेण ग्रहः, प्रकृष्टो वा ग्रहः, प्रधानस्य वा ग्रहणं प्रग्रह इत्यर्थः ॥६२९९॥

इदाणिं जोहट्ठाणं पंचविहं इमं—

आलीढ पच्चलीढे, वेसाहे मंडले समपदे य।
अचले य निरयकाले, गणणे एगादि जा कोडी ॥६३००॥

वामुरुअ अग्गओ काउं दाहिणं पिट्ठतो वामहत्थेण धणुं घेत्तूण दाहीणेण [4]अपगच्छइ त्ति आलीढं। तं चिय विवरीयं पच्चालीढं। आलीढं अंतो पण्हितातो काउं अग्गतले बाहिं जं रहट्ठिओ वा जुज्झइ तं वइसाहं। जाणूरुजंघे य मंडले काउं जं जुज्झइ तं मंडलं। जं पुण तेसु चेव जाणूरुसु आयतेसु समपादट्ठितो जुज्झति तं समपादं। अण्णे भणंति—जं एतेसिं चेव ठाणाणं जहासंभवं चलियठितो पासतो पिट्ठतो वा जुज्झति तं छट्ठं चलियणं सं ठाणं।

"[5]अचलट्ठाणं" णाम जहा – परमाणुपोग्गलेण भंते! निरेए कालतो केवचिरं होति?, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखेज्जा उस्सप्पिणि ओसप्पिणीओ। निरेया निश्चल इत्यर्थः। एवं दुपदेसादियाण वि वत्तव्वं। "[6]गणण" त्ति गणियं, तस्स ठाणा अणेगविहा, जहा एकं दह सतं सहस्सं दससहस्साइं सयसहस्सं दहशतसहस्साइं कोडी। उवरिं पि जहासंभवं भाणियव्वं ॥६३००॥

१ गा० ६२९५। २ गा० ६२९५। ३ गा० ६२९५। ४ पश्चान्मुखमासरति। ५ गा० ६२९५
६ गा० ६२९५।

इदाणि "[1]संघणा" सा दुविहा – दव्वे भाव य।

पुणो एक्केक्का दुविहा—छिण्णसंघणा अछिण्णसंघणा य।

तत्थ दव्वे "छिण्णमछिण्णसंघणा" इमा—

रज्जूमादि अछिण्ण, कंचुगमादीण छिण्णसंधणया।
सेढिदुगं अच्छिण्णं, अपुव्वगहणं तु भावम्मि ॥६३०१॥

सीमाओ ओदइय, गयस्स सीमगमणं पुणो छिण्ण।
अपसत्थं पसत्थं वा भावे पगतं तु छिन्नेणं ॥६३०२॥

ज सूत्र वा मुज वा रज्जु अच्छिण्ण सवेति सा अच्छिण्णसंधणा। अण्णोण्णखंडाण इमा छिण्णसंधणा जहा कंचुगादीण। भावसंघणा दुविहा – छिण्णा अच्छिण्णा य, तत्थ अच्छिण्णसंघणाए सेढिदुग उवसामग सेढी खवगसेढी य। उवसामगसेढीए पविट्ठो अणताणुबंधिपभिइ आढत्तो उवसामेउ न थक्कइ ताव जाव सव्व मोहणिज्ज उवसामित। खवगसेढीए वि एव चेव अपुव्वभावग्गहण करेंतो न थक्कइ ताव जाव सव्व मोह खविय। एसा अच्छिण्णसंघणा। एव अपसत्थाओ वि पसत्थसम्मत्तभाव सकतस्स ज पुणो अप्पसत्थमिच्छत्ता-दिभ व सकमति। एसा अपसत्थछिण्णभावसंघणा।

अहवा – भावट्ठाण ओदइय-उवसमिय-खइय खओवसमिय परिणामिय सन्निवाइयाण अप्पप्पणो भाव-सरूवठाण भण्णइ। एत्थ अधिकारो भावट्ठाणेण, तत्थ वि छिण्णभावसंघणाए।

कह ? उच्यते – जेण सो पसत्थभावाओ अपसत्थ भाव गओ, तत्थ य मासियानि आवण्णा, पुणो आलोयणापरिणओ पसत्थ चव साव सधेति ॥६३०२॥

इयाणि पडिसेवणा, सा इमा दुविहा –

मूलुत्तर पडिसेवण, मूले पंचविह उत्तरे दसहा।
एक्केक्का वि य दुविहा, दप्पे कप्पे य नायव्वा ॥६३०३॥

मूलगुणातियारपडिसेवणा उत्तरगुणाइयारपडिसेवणा य। मूलगुणातियारे पाणातिवायादि पचविहा। उत्तरगुणेसु दसविहा इमा – पिंडस्स जा विसोही, समितीतो ६, भावणाओ य ७, तवो दुविहो ८, पडिमा ९, अभिग्गहा १०।

अहवा – अणागयमतिक्कत कोडिसहिय णियट्टिय चेव सागारमणागार परिमाणकड णिरवसेसं सकेय अद्धापच्चक्खाण चेति।

अहवा – उत्तरगुणेसु अणेगविहा पडिसेवणा कोहातिया। मूलुत्तरेसु दुविहा पडिसेवणा। सा पुणो एक्केक्का दुविहा – दप्पेण कप्पेण वा ॥६३०३॥ दप्पकप्पा पुव्वभणिता।

सीसो पुच्छति –

किह भिक्खू जयमाणो, आवज्जति मासियं तु परिहारं।
कंटगपहे व छलणा, भिक्खू वि तहा विहरमाणो ॥६३०४॥

पुव्वद्ध कठ आयरियो भणति – कटगपहे व पच्छद्ध कठ ॥६३०४॥

किं चान्यत् –

निक्खम्मि उदग्गवेगे, विसमम्मि वि विज्जलम्मि वच्चंतो ।
कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जह पावती पडणं ॥६३०५॥ पूर्ववत्

दृष्टान्तोपसंहार –

तह समणसुविहियाणं, सव्वपयत्तेण वी जयंताणं ।
कम्मोदयपच्चतिया, विराहणा कस्सइ हवेज्जा ॥६३०६॥
अण्णा वि हु पडिसेवा, सा उण कम्मोदएण जा जतणा ।
सा कम्मक्खयकरणी, दप्पाऽजय कम्मजणणी उ ॥६३०७॥ पूर्ववत्

पुणरप्याह चोदक – किमेका तेनैव कर्मोदयप्रत्यया प्रतिसेवना उतान्योऽपि कश्चित्प्रतिसेवनाया अभिभव ? उच्यते, अस्तीति ब्रूम । यतमानस्य य. कल्पिका प्रतिसेवना सा कर्मोदयप्रत्यया न भवति, ण य तत्थ कम्मबन्धो, जतो त पडिसेवतस्स वि कम्मखओ भवति । जा पुण दप्पेण कप्पेण वा पत्ते अजयणाए पडिसेवणा सा कम्म जणेति – कर्मबन्ध करोतीत्यर्थ ।

यतश्चैव तत इद सिद्ध भवति –

पडिसेवणा वि कम्मोदएण कम्ममवि तं निमित्तागं ।
अण्णोण्णहेउसिद्धी, तेसिं बीयंकुराण व ॥६३०८॥

कण्ठ्या । पडिसेवणाए हेऊ (कम्मोदयो कम्मोदयहेऊ) पडिसेवणा, एवमेषामन्यान्यहेतुत्व तस्यापि प्रसाधको दृष्टान्त – यथा बीजांकुरयो ॥६३०८॥

दिट्ठा पडिसेवणा कम्महेतू पमादमूला या, सा य खेत्तओ कह हुज्जा ?, उवस्सये बहिं वा वियारादि-णिग्गयस्स । कालतो दिया वा रातो वा । भावओ दप्पेण वा कप्पेण वा अजयणाए पडिसेवति । मासातिअति-चारपत्तेण संवेगमुवगएण आलोयणा पउजियव्वा । इम च चिततेण णज्जति केवल जीवितघातो भविस्सति ससल्लमरणेण दीहसंसारी भवति त्ति काउ भण्णति -

तं ण खमं खु पमादो, मुहुत्तमवि अच्छितुं ससल्लेणं ।
आयरियपादमूले, गंतूणं उद्धरे सल्लं ॥६३०९॥

आलोयणाविहाणेण पच्छित्तकरणेण य अतियारसल्लं उद्धरति विसोधयतीत्यर्थ, ॥६३०९॥

जम्हा ससल्लो न सिज्झति, उद्धरियसल्लो य सिज्झइ ।

तम्हा तेण इमं चिंतियव्वं –

अहयं च सावराही, आसो इव पत्थिओ गुरुसगासं ।
वइतग्गामे संखडिपत्ते आलोयणा तिविहा ॥६३१०॥

अप्पाण अतियारसल्लसल्लिय गाउ तस्स विसोहणट्ठ गुरुसमीवे पत्थितो । कह च ?, उच्यते अश्ववत् । त च गुरुसमीव गच्छतो वइयाए खद्धादाणियगामे वा संखडीए वा अपडिबज्झतो गच्छइ, गुरुसमीव पत्तो आलोयण देति, सा य आलोयणा तिविहा इमा – विहारालोयणा, उवसपयालोयणा, अवराहालोयणा य ॥६३१०॥

आमे इव औपम्ये अस्य व्याख्या –

णिग्घुज्जुगती आमो, अणुवत्तति सारहिं ण अत्ताणं ।
इय संजममणुवत्तति, वइयाइ अवक्किओ साहू ।।६३११।।

णिग्घ मंद वा उज्जुक्क वा वक्क वा सारहिस्स छंदमणुवत्तमाणो गच्छति, णो य अप्पछंदण चारिप्पणिय वा अणुयत्तइ। एवं साधू वि जहा जहा संजमो भवति तहा तहा संजममणुवत्तमाणो गच्छइ, णो वइयादिसु मायामोक्खट्ठया पडिबज्झता वइयादिसु वा ण वक्केण पहेण गच्छति। आलोयणपरिणओ जति वि अणालोतिए कालं करेति तहावि आराहगो विसुद्धत्वात् ।।६३११।।

तत्थ विहारालोयणा इमा –

आलोयणापरिणओ, सम्मं संपट्ठिओ गुरुसगासे ।
जइ अंतरा उ कालं, करेज्ज आराहओ तहऽवि ।।६३१२।।

पक्खिय चउ संवच्छर, उक्कोस बारसण्ह वरिसाणं ।
समणुण्णा आयरिया, फड्डगपतिया वि विगडेंति ।।६३१३।।

सभोतिया आयरिया पक्खिए आलोएंति, रायणियस्स ।

राइणितो वि ओमरातिणियस्स आलोएति ।

जति पुण राइणिओ ओमो व अगीयत्थो चाउम्मासिए आलोएति । तत्थ वि असतीते संवच्छरिए आलोएति । तत्थ वि असतीते जत्थ मिलति गीयत्थस्स उक्कोसेण बारसहिं वरिसेहिं दूरातो वि गीयत्थसमीवं गंतुं आलोएयव्वं । फड्डगपतिया वि आगंतु पक्खियादिसु मूलायरियस्स आलोएंति ।।६३१३।।

तं पुण ओहविभागे, दरभुत्ते ओह जाव भिण्णो उ ।
तेण परेण विभाओ, संभमसत्थादिसुं भइतं ।।६३१४।।

तं विहारालोयणं ओहेण विभागेण वा दति । तत्थ ओहेण जे साधू समणुण्णा "दरभुत्ते" त्ति भोत्तुं आढत्ताण पाहुणगा आगता ते आगंतुगा ओहेण आलोएंति, जइ य अतियारो पणग दस पण्णरस वीस भिण्णमासा य तो ओहालोयणं दाउं भुंजंति । अह भिण्णमासातो परेण अइयारो मासादितो भवति तो वीसु समुद्दिसित्ता विभागेण आलोएंति । "संभमसत्थादिसु भतियं" ति संभमो अग्गिसंभमादि सत्थेण वा समं गच्छंताण अंतरा सत्थसण्णिवेसे पाहुणया आगया होज्ज, सत्थो य चलिउकामो, ते य मासादिआवण्णा, भायणाणि य णत्थि जेसु वीसुं समुद्दिसिस्संति, ताहे ओहेण आलोएत्ता एक्कट्ठ समुद्दिसित्ता पच्छा विभागेण आलोयव्वं विस्तारेणेत्यर्थः ।।६३१४।।

इदाणि आलोयणाए कालनियमो भण्णति –

ओहे एगदिवसिया, विभागतो एगऽणेगदिवसा तु ।
रत्तिं पि दिवसओ वा, विभागओ ओहओ दिवसे ।।६३१५।।

ओहालोयणा णियमा एक्कदिवसिता, अप्पावराहत्तणओ आसण्णभोयणकालत्तणओ य । विभागालोयणा एगदिवसिया वा होज्ज, अणेगदिवसिया वा होज्ज ।

रह पुण अणेगदिवसिया वा होज्ज ? बहुप्रवर इत्तणओ । बहु आलोएयव्व आयरिया वावडा होज्जा, ण वहु वल पडिच्छति । आलावगा वा वावडा होज्ज । एव अणेगदिवसिता भवति । विभागालोयणा नियमा दिवसतो रति वा भवति । ओहालोयणा णियमा दिवसतो, जेण रातो ण भुजति ॥६३१५॥

ओहालोयणाए इम विहाण—

अप्पा मूलगुणेसुं, विराहणा अप्पउत्तरगुणेसुं ।
अप्पा पासत्थाइसु, दाणग्गह संपओगोहा ॥६३१६॥

कण्ठा, एव आलोएत्ता मडलीए एक्कट्ठ समुद्दिसति ॥६३१६॥

विहारविभागालोयणाए इम कालविहाण –

भिक्खाति-णिग्गएसु, रहिते विगडेति फड्डगवती उ ।
सव्वसमक्खं केती, ते वीसरियं तु कहयति ॥६३१७॥

आदिग्गहणेण वियारभूमि विहारभूमि वा जाहे साधु सपडिच्छया णिग्गया ताहे फड्डगपती एगाणियस्स आयरियस्स आलोएति ।

कइ आयरिया भणति – जह फड्डगपती सहादियाण सव्वसमक्ख आलोएति ।

किं कारण ?, उच्यते – ज किंचि विस्सरिय पद होज्ज त ते सारेहिति – कहयतीत्यर्थ ।

त पुण कहिं आलोएति ? काए वा परिवाडीए ? अत उच्यते –

मूलगुण पढमकाया, तेसु वि पढम तु पथमादीसु ।
पादप्पमज्जणादी, बितियं उल्लादि पंथे वा ॥६३१८॥

दुविहो अवराहो — मूलगुणावराहो उत्तरगुणावराहो य । एत्थ पढम मूलगुणा आलोएयव्वा, तेसु वि मूलगुणेसु पढम पाणातिवातो तत्थ वि पढम पुढविक्कायविराधणे जा पथे वच्चतेण विराहणा कया, थडिल्लाओ अथडिल्ल अथडिल्लाओ वा थडिल्ल सकमतेण पदा ण पमज्जिता, ससरक्खे मट्टियादिहत्थमत्तेहिं वा भिक्खग्गहण कत एवमादि पुढविकायविराहण आलोएति । ततो आउक्काए उदउल्लेहिं हत्थेहिं मत्तेहिं भिक्खग्गहण कय पथे वा अजयणाए उदगमुत्तिण्णो, एवमादि आउक्काए ॥६३१८॥

ततिए पतिट्ठियादी, अभिधारणवीयणादि वायुम्मि ।
बीतादिघट्ट पंचमे, इंदिय अणुवातिओ छट्ठे ॥६३१९॥

ततिए त्ति तेउक्काए परपरादिपतिट्ठियगहिय सजातिसमहीए वा ठितो एवमादि तेउक्काए । वाउकाए ज घम्मत्तेण बाहिं णिग्गतु वातो अभिधारेउ भत्तादि सरीर वा वीयणादिणा वीविय, एवमादि वाउक्काए । पचमे वणस्सतिकाए बीयादिसघट्टणा कया, भिक्खादि वा गहित, एवमादि वणस्सतिकाए । "छट्ठे" त्ति तसकाए, तत्य इदियाणुवातेण आलोए, पुव्व बेइदियाइयार ततो तेइदि-चउरिंदि पचदियाइयार । एवमादि पाणातिवाओ ॥६३१९॥

दुब्भासियहसितादी, बितिए ततिए अजाइतो गहणे ।
घट्टण-पुव्वरतादी, इंदिय आलोग मेहुणे ॥६३२०॥

बितिए मुसावाए, तत्थ किंचि दुब्भासित भणितं, हासेण मुसावाओ भणिओ, एवमादि मुसावाए। ततिए त्ति अदत्तादाणे, तत्थ अणाभोगेण तणडगलादि गहियं होज्जा, उग्गह वा अणणुण्णवेत्ता कातियादि वोसिरियं होज्ज, एवमादि अदिण्णादाणे। मेहुणे, चरित्तं महिलादिसु जणसम्मद्दे इत्थिसंघट्टणफासो सातिज्जिओ होज्ज, पुव्वरयकीलियं वा अणुसरियं होज्ज इत्थीण वा वयणाणि मणोहराणि इंदियाणि दट्ठु ईसि त्ति राग गतो होज्ज, एवमादि मेहुणे ॥६३२०॥

मुच्छातिरित्त पचमे, छट्ठे लेवाड अगय सुठादि ।
उत्तरभिक्खऽविसोही, असमितत्तं च समितीसु ॥६३२१॥

परिग्गहे उवकरणादिसु मुच्छा कया होज्ज अतिरित्तावहो वा गहितो होज्ज। "पचमे" त्ति परिग्गह एवमादि। 'छट्ठ' त्ति राईभोयणे, तत्थ लेवाडपरिवासा कया होज्ज अगत किंचि सुठमादि वा सण्णिहियं किंचि परिभुत्तं होज्ज, एवमादि रातीभोयणे। एवमादि मूलगुणेसु आलोयणा। उत्तरगुणेसु अविसुद्धभिक्खग्गहणं कयं होज्ज, समितीसु वा असमिता होज्ज, गुत्तीसु वा अगुत्तो ॥६३२१॥

संतम्मि य बलविरिए, तवोवहाणम्मि जं न उज्जमियं ।
एस विहारवियडणा, वोच्छं उवसपणाणत्त ॥६३२२॥

कण्ठ्या। गता विहारालोयणा।

इदाणिं उवसपदालोयणा भण्णति –

एगमणेगा दिवसेसु होति ओहेण पदविभागो य ।
उवसपयावराहे, णायमणायं परिच्छंति ॥६३२३॥

सा उवसपदालोयणा समणुण्णाण वा असमणुण्णाण वा, तत्थ समणुण्णाण सगामे समणुण्णो उवसपज्जतो दुगणिमित्त उवसपज्जति ॥६३२३॥

जतो भण्णति –

समणुण्णदुगणिमित्तं, उवसंपज्जंते होइ एमेव ।
असमणुण्णेणं णवरि, विभागतो कारणे भइत ॥६३२४॥

सुत्तट्ठा दसणचरित्तट्ठा जेण त चरण प्रति सरिसा चेव। "एमेव" त्ति जहा विहारालोयणा तहा उवसपदालोयण देंतो एगदिवसेण वा अणेगदिवसेसु वा ओहेण वा पदविभागेण वा एव समणुण्णे उवसपदालोयण देति। "अण्ण" इति अण्णसभोइओ असमणुण्णो वा असविग्गो तेसु अण्णत्थ उवसपज्जतेसु तिगनिमित्त उवसपदा णाणदसणचरित्तट्ठा, विभागालोयणा य, ण ओहतो। सभमसत्थादिसु वा कारणेसु ओहेण वि देति एस भयणा। अवराहे वि एव जा विसेसो भण्णिहिति सा उवसपज्जमाणो दुविहो — णाओ अणाओ वा, जत्थ जो णज्जति सो ण परिक्खिज्जति, जो ण णज्जति सो आवस्सगाईहिं पएहिं परिक्खिज्जति। एय उवरि वक्खमाण ॥६३२४॥

ठियरातो उवसपय, अवराह दिवसओ परत्थम्मि ।
उव्वाते तद्दिवसं, तिण्हं तु वइक्कमे गुरुगा ॥६३२५॥

उवसमपदालोयणा सा (ओहेण) विभागेण वा (ओहेण) सा दिवसतो, न रातो । जा पुण अवराहाऽऽलोयणा सा विभागेण दिवसतो, न राता । दिवसतो वि विट्ठिवति वाताविदामवज्जिते "पसत्थे" खत्तादिसु य पसत्थेसु, तय पि वक्खमाण अवराहे वि आलोयणा अववादकारणे भतियव्वा ॥६३२५॥

"उव्वातो" त्ति पच्छद्ध अस्य व्याख्या –

पढमदिणे म विफाले, लहुओ वितिय गुरु ततियए लहुगा ।
तम्म विकहणे ते च्चिय, सुद्धमसुद्धो इमेहिं तु ॥६३२६॥

असमणुण्णो जो उवसपज्जणट्ठयाए आगओ अ यरिओ त जति पढमदिवसे ण विफालेति न पुच्छती इत्थ । कुतो आगतो ? कहिं वा गच्छति ? किं णिमित्त वा आगतो ?" एव अपुच्छमाणस्स तद्दिवस मासलहु, बितियदिवसे जति ण पुच्छति चउलहु, "तिण्ह तु वइक्कमे गुरुगा' इति चउत्थदिवसे जति ण पुच्छति छ्ल्ल ।

सो वि पुच्छिओ भणति – 'कहेहामि" मासलहु, बितियदिवसे मासलहु, ततियदिवसे ४ (ल), चउत्थदिवसे अकहतस्स चउगुरुगा । अहवा – "तद्दिवसे" त्ति पढमदिवस "उव्वाते" श्रान्ता इति कृत्वा ण पुच्छितो आयरिओ सुद्धो । अह बितियदिवसे ण पुच्छति तो मासगुरु । ततिए ण पुच्छति चउलहु, चउत्थे दिवसे चउगुरु । एव तेण पुच्छिएण वा अक्खाय जेण कज्जेण आगओ । तस्स पुण आगतुगस्स आगमो सुद्धो असुद्धो वा हवेज्ज, एत्थ चत्तारि भगा । इमेग विहणा भग कायव्वा – णिग्गमण पि आगमण पि असुद्ध । एव चउरो भगा कायव्वा । तत्थ णिग्गमो इमेहिं कारणेहिं असुद्धो भवति ॥६३२६॥

अहिकरण[1] विगति[2] जोए[3], पडिणीए[4] थद्ध[5] लुद्ध[6] णिद्धम्मे[7] ।
अलमाणु[8]बद्धवेरो[9], सच्छंदमती[10] परिहियव्वे ॥६३२७॥

अहिकरणे" त्ति अस्य व्याख्या –

गिहिसंजयअहिकरणे, लहुगा गुरुगा तस्स अप्पणो छेदो ।
विगती ण देति घेत्तुं, भोत्तुद्धरितं च गहिते वि ॥६३२८॥

जति गिहत्थेण सम अहिकरण काउ आगओ त आयरिओ सगिण्हइ तो चउलहुगा । अह सजएण सम अहिकरण काउ आगत सगिण्हइ तो चउगुरुगा, तस्स पुण आगतुगस्स पचराइदिओ छेदो । अहवा - पुट्ठो अपुट्ठो वा इम भणेज्ज – "विगति" त्ति ' विगती ण" पच्छद्ध ॥६३२८॥

किं च –

ण य वज्जिया य देहो, पगतीए दुब्बलो अहं भंते ! ।
तब्भावितस्स एण्हिं, ण य गहणं धारणं कत्तो ॥६३२९॥

सो य आयरिओ विगतिगिण्हणाए ण देति जोगवाहीण । "गहिय" त्ति अण्णेहिं भुत्तुद्धरिय त रि नाणुजाणइ, किं वा भगव अम्हे ण पव्वजितवसभस्स तुल्ला, अण्ण च अम्हे सभावेणेव दुब्बला विगतीए बलामो अण्ण च अम्हे विगतिभावियदेहा इदाणिं तस्स अभावे ण बलामो, ण य सुत्तत्थे घेत्तु समत्था, पुव्वगहिए वि धरितु समत्था ण भवामो ॥६३२९॥

१ गा० ६३२७ । २ गा० ६३२८ ।

"जोगे पडिणीए" त्ति दो दारे जुगवं वक्खाणेति –

एगतरणिव्विगती, जोगो पच्चत्थिको व तहि साहू ।
चुक्कखलितेसु गेण्हति, छिड्डाणि कहेति तं गुरुणं ॥६३३०॥

पुच्छिओ भणाति – तस्स आयरियस्स एगतरउवासगं जोगं वुज्भइ एगतरं आयंबिलं वा, जोगवाहिस्स वा ते आयरिया विगति ण विसज्जति, एवमादि कक्खडो जोगो त्ति तेण आगओ । पुच्छिओ व भणेज्ज – तम्मि गच्छे एगो साधू मम "पच्चत्थिगो" त्ति – पडिणीओ । कहं चि साम एगजोगे चुक्कंति, वीसरिए खलिए वि दुगंडिलहादिकं गेण्हति, अच्चत्थं खरंटेति, चुक्कखलिताणि वा अवराहपदच्छिड्डाणि गेण्हति, से य गुरूण कहेति, पच्छा ते गुरवो मे खरिंटेति । अहवा – अणाभोगा चुक्कखलिताणि भण्णंति, जं पुण आभोगओ असामायारिं करेंत तं छिड्डं भण्णति । ६३३०॥

इदाणि 'थद्ध-लुद्ध" दो वि भण्णंति –

चंकमणादी उट्ठण, कडिगहणे भाओ णत्थि थद्धे य ।
उक्कोस सयं भुंजति, देंतऽण्णेसिं तु लुद्धे व ॥६३३१॥

आयरिया जइ वि चंकमणं करंति तहा वि अब्भुट्ठेयव्वा आदिग्गहणातो जइ वि काइयभूमिं गच्छंति आगच्छंति वा, एवमादि तत्थ अब्भुट्ठंताण अम्ह कडीओ वाएण गहिताओ, अब्भुट्ठाणपलिमंथेण य अम्ह सज्झाओ तत्थ ण सरति । अह ण अब्भुट्ठेमो तो पच्छित्तं देंति खरंटेंति वा, एवं थद्धो भणाति ।

जो लुद्धो सो भणाति – जं उक्कसयं किंचि वि सिहरिणिलड्डुगादि लब्भति तं अप्पणा भुंजति, अण्णसिं वा बाल वुड्ढ दुब्बल पाहुणगाण वा देति, अम्हे ण लभामो, लुद्धो एवं भणाति ॥६३३१॥

"णिद्धम्म अलसे" दो वि जुगवं भणाति –

आवासियमज्जणया, अकरण अति उग्गडंड णिद्धम्मे ।
बालादट्ठा दीहा, भिक्खाऽलसिओ य उब्भामं ॥६३३२॥

जो णिद्धमो सो पुच्छिओ भणति – जइ कहिं चि आवसिता निसीहिया वा ण कज्जति ण पमज्जति वा, णितो पविसंतो वा । डंडगादि वा णिक्खिवतो ण पमज्जति, तो आयरिया "उग्गो" – दुट्ठत्ति वुत्तं भवति, पच्छित्तं देंति, अहवा – उग्गं पच्छित्तडंडं देति णिरणुकंपा इत्यर्थः ।

जो आलसिओ सो भणाति – अप्पणो पज्जत्ते वि बालवुड्ढाण अट्ठाए दीहा भिक्खायरिया तम्मि गच्छे हिंडिज्जइ, खुड्डलकं कक्खडं वा तं खेत्तं दिणे दिणे 'उब्भाम" ति भिक्खायरियं गम्मइ प्रतिदिनं ग्रामान्तरं गम्यत इत्यर्थः ।

अपज्जत्ते आगया गुरु भणति – "किमिह वसहीए सहाणसो जं अपज्जत्ते आगता ? वच्चह पुणो, हिंडह खेत्तं, कालो भायणं च पहुप्पह," एवमादि दीहभिक्खायरियाए [1]भत्थितो आगतोमित्ति ॥६३३२॥

अणुबद्धवेरो य सच्छंदो य दो वि जुगवं भणाति –

पाणसुणगा य भुंजंति, एक्कउ असंखडेवमणुबद्धो ।
एक्कल्लस्स ण लब्भा, चलितुं एवं तु सच्छंदो ॥६३३३॥

---

१ भर्त्सित ।

अणबद्धवेरो भणाति – थेव वा बहु वा असखड काउ जहा सुणगा पाणा वा परोप्पर तक्खणादेव – एवर भायणे भजनि एव तत्थ सजया वि, णवर – मिच्छादुक्कड दाविज्जनि । अम्हे उ ण सवकेमो हियत्थेण सल्लेण नेहि सम ससुप्मिउ । एव आगओ अणबद्धवेरो भणाति ।

जो सच्छन्दो सो भणाति – सण्णाभूमि पि एगागियस्स गतु ण दति, णियमा सघाडसहिएहिं गतव्व । न असहमाणो आगओ ह । एते अधिकरणादिए पदे आयरिता सोउ परिच्चयइ, न सगृण्हातीत्यथ ।।६३३३।।

अधिकरणादिएहि पदेहिं आगयस्स इम पच्छित्त –

समणऽधिकरणे पडिणीय लुद्ध अणुबद्धवेरे चउगुरुगा ।
सेसाण होंति लहुगा, एमेव पडिच्छमाणस्स ।।६३३४।।

जो समणेहि सममधिकरण काउ आगतो, जो य भणाति–तत्थ मे पडिणीतो साहू, जो य लुद्धो, जो अणुबद्धवरो, एतेसु चउसु चउगुरुगा सेसेसु ऊसु गिहिअधिकरणे य चउलहुगा । जो य आयरिओ एते पडिच्छति तस्स वि एव चेव पच्छित्ता ।।६३३४।।

अहवा – जे एते दोसा वुत्ता एतेसि एक्केण वि णागओ होज्ज ।

इमेहि दोसेहि आगओ होज्ज –

अहवा एगेऽपरिणते, अप्पाहारे य थेरए ।
गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ।।६३३५।।

एस सोलससे व्याख्यातो, तथापि इहोच्यते –

एक्कल्लं मोत्तूणं वत्थादिअकप्पिएहि सहितं वा ।
सो उ परिसा व थेरा, अहऽण्णसेहादि वट्टावे ।।६३३६।।

आयरिय एगागि मोत्तु ण गतव्व, असणवत्थादिअकप्पिया सेहसहिय च मोत्तु ण गतव्व । "अप्पाहारो" णाम जो आयरिओ सकियसुत्तत्था, त चेव पुच्छिउ वायण देति, तारिस वि मोत्तु ण गतव्व । "थेर" ति अजगम गुरु, परिसा वा से थेरा, तेसि सेहाण थेराण य अह चेव वट्टावगो आसि ।।६३३६।।

तत्थ गिलाणो एगो, जप्पसरीरो तु होति बहुरोगी ।
णिद्धम्मा गुरु-आणं, न करेंति ममं पमोत्तूणं ।।६३३७।।

तत्थ वा गच्छे एगो जरादिणा गिलाणो, तस्स अह चेव वट्टावगो आसी । बहूहिं साहारणरोगेहि जप्पसरीरो भणति तस्सवि अह चेव वट्टावगो आसी । मदधम्मा गुरु आण न करेति मम पुण एगस्स करेंति । सजय गिहीहिं वा सह अधिकरण काउ आगतो, गुरुस्स वा केणइ सह अहिकरण वट्टति ।।६३३७।।

एतारिसं विउसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।
सीसपडिच्छायरिए, पायच्छित्तं विहिज्जती ।।६३३८।।

पुव्वद्ध कठ । एरिस मोत्तु जइ सीसो आगओ पडिच्छओ वा, जो य पडिच्छइ आयरिओ तेसिं इम पच्छित्त ।।६३३८।।

एगो गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुगा उ सीसगादीण ।
सेसे सीसे गुरुगा, लहुय पडिच्छे गुरू सरिसं ।।६३३९।।

जो एगागि गुरु मोत्तु आगओ, गिलाण वा मोत्तु, अधिकरण वा काउ आगओ, एतेसु सीसस्स पडिच्छ-गस्स पडिच्छग, तस्स य आयरियस्स तिण्हवि चउगुरुगा। जेण अण्णे सेसा अपरिणय अप्पाहार थेर बहुरोग मदधम्मा य एतेसु जइ सीमा आगओ चउगुरुगा, अह पडिच्छतो ता चउलहुगा, गुरुस्स भयणा। "सरिस व" त्ति जइ सीम सेगहति तो चउगुरुगा, पडिच्छगे चउलहुगा ॥६३९॥

अहवा पाहुडे इम –

सीमपडिच्छे पाहुड, छेदो राइंदियाणि पंचेव ।
आयरियस्स उ गुरुगा, दो चेव पडिच्छमाणस्स ॥६३४०॥

सीसस्स पडिच्छगस्स वा अहिकरण काउ अण्णगच्छे सकसतस्स पंचराइदिअ छेदो भवति, पुरुस पडिच्छमाणस्स चउगुरुगा। एते पढमभगे णिग्गम-दोसा भणिता, आगमो वि से असुद्धा भवति, वइयादिसु पडिवज्जतो आगतो तत्थ वि पच्छित्त वत्तव्व ॥६३४०॥ एस पढमभगो गतो, बितियभगो वि एरिसो चेव, णवर आगमो सुद्धो।

इमे उक्कमेण ततिय-चउत्थभगा –

एतद्दोसविमुक्कं, वतियादी अपडिबद्धमायायं ।
दाऊण व पच्छित्तं, पडिबद्ध वी पडिच्छेज्जा ॥६३४१॥

इमो चउत्थो भगो। एतेसु जे अधिकरणादी णिग्गमदोसा तेसु वज्जितो आगमणदोसेसु य वइयादिसु अपडिबज्झतमागओ जो, एस चउत्थभगिल्लो सुद्धो।

ततियभगे णिग्गमदोसेसु सुद्धो आगमणदोसेसु वइयादिसु जो पडिबज्झतो आगओ त ण पडिच्छति। अववादतो वा तस्स पच्छित्त दाउ पडिच्छति, ण दोषेत्यथ ॥६३४१॥

सुद्धं पडिच्छिऊण, अपरिच्छिण्णे लहुग तिण्णि दिवसाइं ।
सीसे आयरिए वा, पारिच्छा तत्थिमा होति ॥६३४२॥

यथोक्तदोषरहित सुद्ध पडिच्छित्ता तिण्णि दिवसाणि परिक्खियव्वो कि धम्मसहितो ण व त्ति, जइ ण परिक्खति तो चउलहुगा, अण्णायरियाभिप्रायेण वा मासलहु। सा पुण परिक्खा उभयो पि भवति ॥६३४२॥

एत्थ पढम ताव तस्स परिक्खा भण्णति –

आवासग सज्झाए, पडिलेहण भुंजणे य भासाए ।
वीयारे गेलन्ने, भिक्खग्गहणे परिच्छति ॥६३४३॥

केई पुव्वणिसिद्धा, केई सारेंति तं न सारेंति ।
संविग्गो सिक्ख मग्गति, मुत्तावलिमो अणाहोऽहं ॥६३४४॥

केइ त्ति साहू अवराहपदा वा सबज्झति, तस्स उवसपदकालाओ पुव्वणिसिद्धा 'अज्जो ! इम इम च न कायव्व", जत्थ जइ पमादेति ते सारिज्जति त्ति वुत्त भवति, णो उवसपज्जमाण तेसु णिसिद्धपदेसु वट्टमाण सारेंति ॥६३४४॥

तत्थ आवस्सए ताव इमेण विहिणा परिक्खिज्जइ –

हीणाहियविवरीए, मति च बले पुव्वगते चोदेति ।
अप्पणए चोदेती, न ममं ति इहं सुहं वसितुं ॥६३४५॥

हीण णाम काउस्सग्गसुत्ताणि दरकड्ढिताणि करता अण्णेहिं साधूहिं चिरवोसट्ठेहिं वोसिरइ अधिक नाम काउस्सग्गसुत्ताणि अतितुरितं कड्ढेत्ता अणुप्पेहणट्ठाए पुव्वमेव वोसिरइ, उस्सारिए वि रायणिएण पच्छा उस्सारेति, विवरीए त्ति पाओसियकाउस्सग्गा पभातिए जहा करेति, पभाइए वि पादोसिए ज करेति ।

अहवा – सूरे अत्थमिते चेव णिव्वाघाते सह आयरिएण सव्वसाहूहिं पडिक्कमियव्वं, अह आयरियाण सड्ढातिधम्मकहा व घाता होज्ज तो बालवुड्ढगिलाणअसहु णिसेज्जधर च मोत्तु सेसा सुत्तत्थ-ज्झरणट्ठा काउस्सग्गेण ठायंति, जे पुण मति बले पुव्व काउस्सग्गे गाट्ठंति थेरा तेसु अप्पणाए चोदेति, जो पुण परिक्खिज्जइ सो ण चोइज्जइ पमादेतो । तहे जइ सो एव च मति "सुट्ठु अ मे ण पडिचोदेति, सुहं अच्छामि" सो पजरभग्गो णायव्वो, ण पडिच्छियव्वो ॥६३४५॥

अह पुण स ते ण पचोदेति त्ति काउ "[1]सविग्गो सिक्ख मग्गति" पच्छद्ध अस्य व्याख्या –

जो पुण चोइज्जंतो, दट्टूण ततो नियत्तती ठाणा ।
भणति अहं भे चत्तो, चोदेह ममं पि सीदंतं ॥६३४६॥

जति पुण सो भण्णति जेसुठाणेसु अहं पमादेमि तेसु चेव ठाणेसु अप्पणो सीसा पमादेमाणा पडिचो-इज्जति, अह तु ण पडिचोइज्जामि 'अणाहोऽहं" – परिचत्तो ताहे सविग्गविहार इच्छतो आसेवणभिक्ख मग्गतो अप्पणो चेव ततो ठाणाओ णियत्तति, अहवा – छिण्णमुत्तावलिपगासाणि असूणि विणिमुयमाणे आयरियाण पादेसु पडिओ भणाति – मा मं मरणमुवगयं पडिच्चयह, मम पि सीदत चोएह ॥६३४६॥ एसा ताव आवस्सय पडुच्च, परिक्खा गता ।

इदाणि सज्झाय-पडिलेहण-भुजण भासदारा पडुच्च परिक्खा भण्णति –

पडिलेहणसज्झाए, एमेव य हीण अहिय विवरीए ।
दोसेहि वा वि भुजति, गारत्थियढड्ढरा भासा ॥६३४७॥

पडिलेहणकालतो हीण अहियं वा करेति अहवा – खोडगादीहं हीण अहियं वा करेति, विवरीयं णाम मुहपोत्तियादी पडिलेहेति, अहवा – पए रयहरण त्ति पच्छिम पडिलेहेति, अवरण्हे पढमं अप्पणो – पडिलेहेत्ता सेहगिलाणपरिण्णि पच्छा आयरियस्स एव वा विवरीय । सज्झाए वि हीण – अणागताए कालवेलाए कालस्स पडिक्कमति, अहिय अतिच्छिताए कालवेलाए कालस्स पडिक्कमति, वदणातिकिरियं हीणातिरित्त करेइ, विवरीय पोरिसिपाढ उग्घाडकालियपोरिसीए परियट्टति, वा विवरीय करेइ, [2]सत्तविह-आलोवणविहीने ण भुजति, कायसिगालक्खतियादिदोसेहि वा भुजति, सुरसरादिदोसेहिं वा भुजति, सावज्जादि भासा वा भासति, एतेसु चोदणा तहव भाणियव्वा जहा आवस्सए भणिता ॥६३४७॥

सेसाणि तिण्णि दाराणि एगगाहाए वक्खाणेति –

थंडिल्लसमायारी, हावेति अतरंतगं न पडिजग्गे ।
अभणिओ भिक्ख ण हिंडइ, अणेसणादी व पेल्लेति ॥६३४८॥

---

[1] गा० ६३४४ । [2] गा० आलोकादिविधिना सूत्रोक्तेन न भुक्ते ।

रतिन्ने य दसणज्जणा इगनगहणा दिसापलागादिसामायारिं परिहावेति, गिलाणं ण पडिजग्गइ गिलाणस्स वा ग्रत्नमत्तादि वेयावच्चं ण करेंति भिक्खं ण हिंडड, दरहिंडता वा सण्णियट्टट, कालेग वा उग्घाएंति, अणेसणीए वा गेण्हंति ॥६३४८॥

तस्स पुण इमाओ ठाणाओ आगमो होज्ज –

जयमाणपरिहवेंते, आगमण तस्स दोहि ठाणेहि ।
पंजरभग्गअभिमुहे, आवासयमादि आयरिए ॥६३४९॥

सो जयमाणगाण मूलाओ आगमो होज्ज, परिहवेनाण वा मूलाओ आगओ होज्ज, परिहविता नाम पासत्थादी, तत्थ जो जयमाणाण मूलाओ आगतो सो णाणदसणट्ठाए वा आगतो, पंजरभग्गो वा आगतो। जो पुण परिहवेंताण मूलाओ आगतो सो चरित्तट्ठाए उज्जमिउकामो। अहवा - अणुज्जमिउकामो वि णाणदसणट्ठाए। अहवा – जो जयमाणेहिंतो आगओ सो पंजरभग्गो, जो पुण परिहवतेहिंतो आगतो सो पंजराभिमुहो। एतेसु दोसु वि आगएसु आयरिएण आवस्सयादिपरिच्छा कायव्वा ॥६३४९॥

आह पंजर इति कोऽर्थः ? अत उच्यते –

पणगादि संगहो होति पंजरो जाय सारणऽण्णोण्णं ।
पच्छित्तचमढणादी, णिवारणा सउणिदिट्ठंतो ॥६३५०॥

आयरिओ उवज्झातो पवत्ती थेरो गणावच्छेतितो एतेहिं पंचहिं परिग्गहितो गच्छो पंजरो भण्णति, आदिग्गहणाओ भिक्खु वसह वुड्ढ खुड्डगा य घेप्पंति। अहवा – जं आयरियादी परोप्पर चोदंति मित्त मधुर सोवालंभ वा खरफरुसादीहिं वा चमढेता पच्छित्तदाणेण य असामायारीओ णियत्तिं त्ति एसो वा पंजरो। पंजरभग्गो पुण एयं चेव असहतो गच्छाओ णीति। "गच्छम्मि केई पुरिसा कारग गाहा कठा।

"जह सउण पंजरे दुक्खं अच्छंति तहा" –

एत्थ सउणदिट्ठतो कज्जति – जहा पंजरत्थस्स सउणस्स सलागादीहि सच्छंदगमणं णिवारिज्जति एवं आयरियादि पुरिसगच्छपंजरे सारणसलागादिय सामायारिं उम्मग्गगमणं णिवारिज्जति। एत्थ जे सविग्गाण मूलाओ णाणदसणट्ठाए आगता, जे य परिहवेंतेण मूलाओ आगया चरित्तट्ठा एते संगेण्हियव्वा। जे पुण पंजरभग्गा णाणदसणट्ठाए आगता, जे परिहवेताण मूलाओ णाणदसणट्ठाए आगया, एते न संगिण्हियव्वा ॥६३५०॥

एत्थ जे संगिण्हियव्वा ते एगो वा होज्ज, अणेगा वा।

जतो भणति –

ते [1]पुण एगमणेगाणेगाणं सारणं जहा कप्पे ।
उवसंपद आउट्टे, अविउट्टे अण्णहिं गच्छे ॥६३५१॥

तत्थ जे अणेगा तेसिं सीदताण सारणा जहा कप्पे भणिता "उवदेसो सारणा चेव ततिता पडिसारणा" इच्चादि, 'घट्टिज्जत वत्थ अतिरुत्तणकुसुमिली जता" इच्चादि। जो पुण एगो सो असामायारिं करेंतो चोदितो जइ आउट्टितो तस्स उवसंपदा भवति, 'अविउट्ट" त्ति – जति ण आउट्टितो, भण्णति "अण्णहि गच्छे" त्ति ॥६३५१॥ एसा आगयाण परिच्छा गता।

---

१ "जे पुण" इति चूर्णौ।

अहवा – एय पच्छद्धं – अण्णहा भणाति – तेण वि आगतुगा गच्छा परिच्छियव्वो आवस्सगमादीहिं पुव्वत पयदाणेहिं। पच्छिल्लगाण जति किंचि आवस्सगदारेहिं सीदत पस्सइ तो आयरियातीण कहेति, जति या कहिए सम्म आउट्टति ति त स घु चोदति पच्छित्त च से दति तो तत्थ उवसपदा। अह कहित सो आयरिओ तसिणीओ अच्छति भणति वा – किं तुज्भ, सो सम्म आउट्टति ? तो अविउट्टे आयरिए अण्णहिं गच्छति अन्यत्रोपसम्पन्नेत्यर्थ, ॥६३५१॥

ततियभगिल्ले इमा पडिच्छणविही –

णिग्गमणे परिसुद्धो, आगमणे असुद्धे देति पच्छित्तं।
णिग्गमण अपरिसुद्धे, इमा उ जयणा तहिं होति ॥६३५२॥

ततियभगिल्लस्स वइयादिसु पडिबद्धस्स सुद्धस्स ज आवण्णो त पच्छित्त दाउ पडिच्छति। जति पुण पढमबितिज्जेण वा भगेण अहिकरणादीहिं एगे अपरिणयादीहिं वा आगता, जे य पजरभग्गा, जे परिहावतसु ग दसगट्ठाते आगता ते ण सगिण्हियव्वा, न य फुड पडिसेहिज्जति ॥६३५२॥

तत्थ इमा पडिसेहणजयणा –

णत्थि संकियसंघाडमंडली भिक्ख बाहिरगणयणे।
पच्छित्त विओसग्गे, णिग्गयसुत्तस्स छण्णेणं ॥६३५३॥

"णत्थि सकिय" अस्य व्याख्या –

णत्थेयं मे जमिच्छह, सुत्तं मए आम संकियं तं तु।
न य संकियं तु दिज्जइ, णिस्संकसुते गवेसाहि ॥६३५४॥

ज एत सुत्तत्थ तुब्भे इच्छह एय मम णत्थि। अह सो भणाति – अण्णसमीवे सुत मए जहा तुब्भ एय अत्थि, अहवा भणाति – मए चेव तुम वायण देता सुता। आयरिओ भणाति – आम ति सच्च, इदाणि त मे सकित जात, ण य दाणजोग्गा, ण य सकियसुत्तत्थ दिज्जति, आगमे पडिसिद्ध, गच्छ अण्णतो जत्थ णिस्सक सुत ॥६३५४॥

तं सघाडए त्ति जो सघाडयस्स उव्वयाति सो भण्णति –

एक्कल्लेण ण लब्भा, वीयारादी वि जयण सच्छंदे।
भोयणसुत्ते मंडलि, अपढंते वी णिओअंति ॥६३५५॥

अह एरिसा सामायारी णो सघाडएण विणा लब्भति सण्णभूमिमादि णिग्गतु, एसा सच्छदेण जयणा। "मडलि" त्ति जो सो अणुबद्धवेरत्तणेण आगतो सो इमाए जयणाए पडिसेहिज्जति। जो य सुत्तमडलीए उव्वियाति, 'भोयण" पच्छद्ध, अम्ह सामायारी अवस्स मडलीते समुद्दिसियव्व, सुत्तत्थमडलीसु जति ण पढति ण सुणेति वा तहावि मडलीए उवविट्ठो अच्छति, ण सच्छदेण अच्छिउ लब्भति ॥६३५५॥

अलसं भणाति बाहि, जति हिंडसि अम्ह एत्थ बालाती।
पच्छित्तं हाडहड, अवि उस्सग्ग तहा विगती ॥६३५६॥

---

१ गा० ६२५३। २ गा० ६२५३। ३ गा० ६२५३।

"बहिरिणयरे" त्ति जो आलम्बियरनरोण अ गन्ता सा इमाए पडिसेहिज्जति अलमितो भणति – अम्ह एत्थ मज्झेन्ने बार गिलाए वुड्ढावि हिंडन्ति, जति सि दिग भिक्ख यरिय करेसि तो अन्य पच्छिन्नति। जो निधम्मो "अइउग्गदन्ता मायरिआत्ति" एत्ति क गाहि आगतो सा इमाए जयणाए पडिसेहिज्जति सा अम्ह सामायारी जइ दुगमज्जियादीणि करति ता ति अम्ह ह डण्ड पच्छित्तं दिज्जति हाडहड णाम तक्काल चेव दिज्जति – क तहगा करन्ति। "अविउस्सगो" त्ति जो सा अविगती गायुजागति त्ति आगओ, सा भण्णति-अम्ह सामायारी जागवाहिगा विगतिकाउस्सग्ग अकरेतेण पढिय-व। "तह" त्ति –

कि चान्यत् – अम्ह साम च री जागवाहिगा ऽजागवाहिगा वा विगता न गृहीतव्या इत्यर्थ। अहवा – 'तह' त्ति ज सा कारण दीवति तस्स तहेव प्रतिनाम उवण्णसिज्जति ॥६३५६॥

एत्थ चोदग आह –

तत्थ भवे मायमोसो, एवं तु भवे अणज्जवजुतस्स ।
वुत्तं च उज्जुभते, सोही तेलोक्कदंसीहि ॥६३५७॥

तत्रेति या एता णिग्गम असुद्ध उव एण पडिसेहणा भणिता। अत्र कस्यचिन्मति स्यात् – एव पडिसेहतस्स माया भवति मुसावाय च भवति जा विज्जमाण सुत णत्थि त्ति भगति सच्चिय वा, एव स्स इह दिस अणज्जव अणिच्चत कम्म णा म य मुसावयणा य जुत्तो भवति अणज्जवयणजुत्ता वा, उक्त च "सोही उज्जुअभूतस्स य" धारण – तिलोकोज्य त च अज्जव अकरेस तस्स सतनमोही ण भवति।

आचार्याह – मायामुसावओ य, जतो कारण मायामुसावातातो य अणणुघायो। इम च कारण, णिग्गमसु म असुद्ध त उव यपडिसेहो कप्प ॥६३५७॥

कि च –

एसा उ अगीयत्थे, जयणा गीते वि जुञ्जती जं तु ।
विहंसकरं डहरा, मच्छरिवादो य फुडरुक्खे ॥६३५८॥

एव अगीयत्था पडिसेहिज्जति, गीयत्था पुण फुड चेव भण्णति, ते सामायारी जाणता किह अप्पत्तिय दास वा बहेति, तेसु वि य ज मातामुसावादकारण जुज्जति त च कायव्व। अगीयत्थाण पुण "डहर" त्ति फुड भण्णमाण विद्दसकर भवति, चिंतति य, एत मच्छरभावेण ण देति सुत्तत्थे। सपक्खजणे य त एव प्रमाणेण मच्छरभावो भवति। सब्भूयदोसुच्चरण फुड णेहवज्जिय रुक्ख, अहवा – फुडमेव रुक्ख त च अधिकरणादि रगादिणा वा दोसेण आगतो त्ति ण पडिच्छ सो, एत्थ मच्छरभाव अयसो सप जति ॥६३५८॥

एतेसिं पडिच्छाण इमो अववातो –

णिग्गमसुद्धमुवाए ण वारितं गेण्हती ममाउट्टं ।
अहिकरण पडिणिअऽणुबद्धे, एगागि जढं ण संगिण्हे ॥६३५९॥

अत्र सकारलोपो द्रष्टव्य, एव णिग्गमो असुद्धो जस्स सो उवाएण जयणाए वारिओ ण पडिच्छत इत्यर्थ। अहवा – दोसा जहा वारणाओ ण उप्पज्जति तहा उवाएण वारितो प्रतिषिद्ध इत्यर्थ। पडिसिद्धो जइ सा भणइ "मिच्छामि दुक्कड, ण पुणो एव क ह, ज वा भणह त करमि, मुक्को मे पावभावो दुरगइवड्ढणो इहलोए वि गरहितो" एव आउट्टो गेण्हियव्वो। तत्थ वि इमा ण गेण्हियव्वो जो अधिकरण काउमागतो, जो य पडिणीओ त्ति भणता, जो य अणुबद्धरोसा जेण आयरिआ एगादि भावेण ज.. ॥६३५९॥

---

१ गा० ६२.. । २ गा० ६२५३ । ३ उत्त० अ० ३ गा० १२ ।

पडिणीए इमो अववादो –

पडिणीयम्मि वि भयणा, गिहम्मि आयरियमादिदुट्ठम्मि ।
संजयपडिणीए पुण, ण होंति तं खाम भयणा वा ॥६३६०॥

इमा भयणा, काति गिहत्था आयरियस्स पदुट्ठा आदिग्गहणेण उवज्झाय-पवत्ति थेर-गणावच्छेदग-भिक्खूण, सो उवसंपज्जंत वि णावसमति, तस्स पुण आगतो ण गिण्हियव्वो । जइ पुण संजता से पदुट्ठा पडिणीय त्ति भण्णति तो ण गहइ उवसंपदं, ण पडिच्छिज्जति त्ति वुत्तं भवति । अहवा सो भण्णति – गच्छ, त खामेउ आगच्छ । जइ वुत्तो गतु त ग त खमेति तो ण पडिच्छिज्जति, गयस्स वा सो ण खमति तो पच्छागतो पडिच्छिज्जति । अहवा सो भण्णेज्ज – मए आगच्छमाणेण खामितो ण खमति तो पडिच्छियव्वो चेव एसा भयणा ॥६३६०॥

इदाणिं जे अविसुद्धणिग्गमा – उवसंपज्जं वारिता ते ण गच्छति, जे य विसुद्धणिग्गमा पडिच्छिता वि सीदंति तस्सि वोसिरणविही इमा ।

"णिग्गयदुत्तस्स छण्णेण" त्ति वयणं, जय भिक्खादिगता होति तदा छड्डेत्ता गच्छति । सुत्तस्स वि अ यरिदा भिक्खगा साकार पव्वज्ज वि राते पदमरं णिग्गीए संवेन्ना तस्स पुण अक्खेवणा कहा कहिज्जति ताव जाव णिद्दावसगतो जह पासुत्तो ताहे सतता उट्ठावेता त सुत्त छड्डेत्ता वच्चति । छण्णेण ति अप्पसा-गारियं तस्स सतेन, नो अपरिणयाण सप्पक्खियाण । वच्चता य य कहति जहा ण्सिसयव्व, मा रहस्स भेद कारिति । एमेव चेव पच्छा सम उट्ठा आगता जा य सुद्धणिग्गता य एते दसणाइयाण ति एगट्ठा आगता पडिच्छियव्वा ।

तत्थ दसण णाणेसु पुव्वद्धगहितो इमो विधी –

वत्तणा संधणा चेव, गहणं सुत्तत्थ तदुभए ।
वेयावच्चे खमणे, काले आवकहादि य ॥६३६१॥

एते वत्तणादियदा सगच्छे असतीए ववखेवेण वा णत्थि परगच्छे पुण जत्थ वत्तणादिया णियमा अत्थि तत्थ उवसंपदा । पुव्वगहियस्स पुणो पुणो अब्भसणा वत्तणा, पुव्वगहियविसरियस्स मुक्कसारणा संधणा, अपुव्वस्स गहणं, एते तिण्णि विगप्पा सुत्ते, अत्थे वि तिण्णि उभए वि तिण्णि एए णव विगप्पा । उत्तरचरणावसंपदट्ठा उवसंपज्जतो वेयावच्चकरणखमणकरणट्ठया वा उपसंपज्जति, ते पुण वेयावच्चखमणे कालतो आवकहाते त्ति जावज्जीवं करेइ, आदिग्गहणाओ इत्तरियं वा कालं करेज्ज ॥६३६१॥

तत्थ दसणणाणा इमे, इमा य तेसु विही –

दंसणणाणे सुत्तत्थ तदुभए वत्तणादि एक्केक्के ।
उवसंपदा चरित्ते, वेयावच्चे य खमणे य ॥६३६२॥

दसणविसोहया जे सुत्ता सत्थाणि वा तेसु सुत्तेसु वत्तणा संधणा गहणं, एवं अत्थे तिग, तदुभए तिग, "एक्केक्के" त्ति – एवं दसणे णवविगप्पा, आयारादिए य णाणे एव चेव विगप्पा । चरित्तोवसंपया इमा दुविहा – वेयावच्चट्ठता खमणट्ठा वा ॥६३६२॥

सुद्धं पुण अपडिच्छतस्स इमं पच्छित्तं –

सुद्धपडिच्छणे लहुगा, अकरेंते सारणा अणापुच्छा ।
तीसु वि मासो लहुओ, वत्तणादीसु ठाणेसु ॥६३६३॥

ज गुरुमग म सुत्त य त मे गहित गुरूहि अणुण्णाओ, विहीए आपुच्छिना वइदादिसु अपडिवज्झा। आगता, परिच्छितो सुद्धो य जो त न पडिच्छति आयरिओ तस्स चउलहु ।

जो विदू पण्णो वत्तणाणिमित्त मा जति वत्तण ण करेति तो से मासलहु, एव सघणगहणेसु वि ।

आयरिओ वि जइ त उवसपण्ण दूराविसु अच्छत ण सारेति, ण चोदति तस्स वि वत्तणादिसु ठाणेसु मासलहु ।

अत्थे पुण अकरेत-असमाणताण तिसु वि वत्तणादिसु ठाणेसु पत्तेय मासगुरु । उभए वि पच्छित्त । जम्हा एते दोस तम्हा गुरुणा सारेयव्वा – "अज्जा ! जदट्ठ आगतो त वत्तणादिक न करेसि" ॥६३६३॥

"अणापुच्छ" त्ति अस्य व्याख्या –

अणणुण्णाऽणुण्णाते, देंत पडिच्छंत भंगचउरो तु ।

भंगतिए मासलहु, दुहतोऽणुण्णाते सुद्धो उ ॥६३६४॥

अणुण्णाओ अणणुण्णातेण सह वत्तण करेति, एव चउभगो कायव्वो, एव सतणागहणेसु वि चउभगो, एत्थ आदिल्लेसु तिसु भगेसु देते गेण्हताण सुत्ते मासलहु । तत्कालविसेसित अत्थे मासगुरु । चउत्थभगो पुण दुहतोऽणुण्णातत्तणओ सुद्धा ॥६३६४ णाणे त्ति गय ।

इदाणि दसण –

एमेव दंसणे वी, वत्तणमादी पदा उ जह णाणे ।

सगणामतण-खमण, अणिच्छमाण त उ णिओए ॥६३६५॥ पुव्वद्ध कठ

इदाणि चरित्तोवसपदा सा दुविधा – वेयावच्चे खमणे य ।

तत्थ वेयावच्चोवसपदाए इमा कारावणविही –

तुल्लेसु जो सलद्धी, अण्णस्स व वारएण इच्छंते ।

तुल्लेसु य आवकही, तस्साणुमते व इत्तरिए ॥६३६६॥

आयरियाण एक्को गच्छे वेयावच्चकरो, अवरो अण्णगणातो पच्छा आगतो भणति – अह मे वेयावच्च करेमि, तत्थ कतरो कारविज्जति ?, "तुल्लेसु" तत्थ जति दो वि तुल्ला कालतो वि इत्तरिया तत्थेगो सलद्धी सो कारविज्जति, अहवा – दो वि आवकही तत्थ वि जो सलद्धी सो कारविज्जति । अह दो वि इत्तरिया दो वि सलद्धिया, एत्थ आगतुगो उवज्झायदीण अण्णस्स वेयावच्च कारविज्जति, भणिय च – "उवज्झायवेयावच्च करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।" अहवा – जति वत्थव्वो वेयावच्चकरो इच्छति तो वारोवारेण कारविज्जति, आगतुगो वा काल पडिक्खा विज्जति जाव पुव्विल्लस्स इत्तरकालो समप्पइ, आवकहीसु वि दोसु सलद्धिएसु एव वारय मोत्तु। अहवा – एक्को इत्तरिओ एक्को आवकही "तुल्लेसु" त्ति लद्धीए एत्थ आवकही कारविज्जति, इत्तरिओ अण्णस्स सण्णिउज्जति, अहवा – सो वत्थव्वो आवकही भणति तुम ताव वीसमाहि एव वुत्तो जति इच्छति तो तस्स अणुमते आगतु इत्तरिओ कारविज्जइ, तम्मि अणिच्छे णो कारविज्जति, सो समत्ते गच्छिहिति, पच्छा इयरो ण काहिति, तओ आयरिओ उभयभट्ठो भविस्सइ । अह इत्तरिओ आवकहितो य य दो वि अलद्धिसपण्णा तत्थ आवकहिणा कारेयव्व, इयरो अण्णस्स सण्णिउज्जति विसज्जिज्जइ वा । अह

इत्तरिश्रो सलद्धी, श्रावकही भण्णति – "वीसमाहि ता तुम एस इत्तरिश्रो सलद्धी करेतु, पच्छा तुम चेव काहिसि।" अणिच्छे एसो चेव काहिति, इत्तरिश्रो अण्णस्स ता कारविज्जति, दो वि वा सवृत्ता करेंति। अह इत्तरिश्रो अलद्धी श्रावकही सलद्धी एत्थ श्रावकहिणा कारवेयव्व, इत्तरिश्रो अण्णस्स कारविज्जइ, अणिच्छे पडिसेहिज्जइ ॥६३६६॥

अह वत्थव्ववेयावच्चकरेण अणुण्णाश्रो कारवेइ, तस्स अणापुच्छाए अण्ण वेयावच्चकर ठवति तो इमे दोसा –

अणणुण्णाते लहुगा, अचियत्तमसाह जोग्गदाणादी ।
णिज्जर महती हु भवे, तवस्सिमादीण उ करेंते ॥६३६७॥

वत्थव्व-श्रावकहि वयावच्चकरस्स अणापुच्छा श्रागतु इत्तिरिया वेयावच्चकर ठावेति, अणणुण्णातो वा वेयावच्चकर ठवेइ तो चउलहुगा।

अण्णे भणति – अणापुच्छाए वेयावच्चकरे ठविए मासलहु, अणणुण्णातो वेयावच्चकारवणे चउलहु। वत्थव्ववेयावच्चकरस्स वा अचियत्त, अचियत्तेण वा असखड करेज्जा। 'असाह" त्ति – ण कहेति सो पुव्ववेयावच्चकरा उक्कट्ठा जेसु कुलेसु श्रायरियादीण पाउग्ग लब्भति ते ण कहेति, सङ्कुलाणि वा ण कहेज्ज, तम्हा सो इत्तरिश्रो भण्णति – खमगादितवस्सीण तुम करेहि, तेसिं पि कज्जमाणे महती णिज्जरा भवति ॥६३६७॥ वेयावच्चे त्ति गय।

इदाणि "[1]खमण" त्ति –

तत्थिम गाहापच्छद्ध "सगणामतण" इत्यादि, जो अण्णगणाश्रो खमणट्ठयाश्रो उवसपज्जति सो दुविहो – अविगिट्ठो विगिट्ठो। अट्ठमादि विगिट्ठो, दोसु वि उवसपज्जतेसु सगणो श्रायरिएण श्रामतेयव्वो श्रापुच्छियव्वो त्ति वुत्त भवति – अज्जो ! एस खमणकरणट्ठया श्रागतो कि पडिच्छिज्जति उश्र पडिसिज्झउ त्ति, तेसि अणुमए पडिच्छिज्जइ अणिच्छेसु पडिसिज्झइ। ण वा ते अणिच्छमाणे तस्स वेयावच्चे बला णिश्रोएति ॥६३६७॥

जो पडिच्छिश्रो सो पुच्छियव्वो – तुम किं अविगिट्ठ करेसि विगिट्ठ वा ? तेण एगतरे कहिते पुणो पुच्छिज्जइ – तुम अविगिट्ठ करेतो पारणदिणे करिसो भवसि ? सो भणइ – गिलाणोवमो, ण य सज्झाय पडिलेहणादियाण जोगाण समत्थो भवामि।

तस्सिमो उवदेसो –

अविकिट्ठकिलामंतं, भणंति मा खम करेहि सज्झायं ।
सक्का किलामिउं जे, विकिट्ठेणं तहिं वितरे ॥६३६८॥

अविगिट्ठतवकरणकिलामत भणति – (मा) तुम खमण करेहि, ण वट्टति तव खमण काउ, सज्झायकरणे वेयावच्चे वा उज्जुत्तो भवाहि, सज्झायमणिज्जत विसज्जेयव्वो। अह गिलाणोवमो ण भवति ततो पडिच्छियव्वो।

जो पुण विकिट्ठखमश्रो सो जइ ण किलिस्सति – सज्झायपडिलेहणादि जोगे य सव्वे सयमेव अहीणमतिरित्ते करेति – सो पडिच्छियव्वो।

जो पुण विगिट्ठेण किलिस्सति तत्थिम गाहापच्छद्ध – "सक्का किलामिउ" सक्का इति युक्त, जइ वि विगिट्ठतवकरणे गिलाणोवमो भवति तहावि तत्थ वितरति त्ति तत्करणे अणुजाणतीत्यर्थ ॥६३६८॥

१ गा० ६३६२ । २ गा० ६३६५ ।

विगिट्ठतवकरणे जो गिलाणोवमो भवति तत्थिमा सामायारी –

अण्णपडिच्छणे लहुगा, गुरुग गिलाणोवमे अडते य ।
पडिलेहण संथारग, पाणग तह मत्तगतिगम्मि ॥६३६९॥

अस्य विभाषा –

दोण्णेकतरे खमणे, अण्णपडिच्छंतऽसंथरे आणा ।
अप्पत्तिय परितावण, सुत्ते हाणऽण्णहिं वतिमो ॥६३७०॥

"दोण्ह" ति – तम्मि अविगि_विगिट्ठाण अण्णतरो खमओ होज्ज, अहवा – विगिट्ठो अगिलाणोवमो होज्ज। एतेसि खमगाण अण्णयरे खमगे गच्छे विज्जमाणे जति आयरिओ अण्ण खमग गच्छे अणापुच्छाए पडिच्छति तो चउलहु।

दोण्ह वि खमगाण जुगव पारणदिणे पज्जत्तपारणगस्स असथरण हवेज्ज ।

दुगादिखमगवेयावच्चकरणे वावडाण वेलातिक्कमे वेयावच्चकरणे असथरण हवेज्ज ।

असथरता य ज एसणादि पेलेज्ज तण्णिप्फण्ण पावति आणादिणो य दोसा। असथरे य अकज्जमाणे व परितावणादि दुक्ख हवेज्जा, सिस्सपडिच्छगा वि चितेज्जा – इह अण्णोण्णखमगवेयावच्चकरणेण अम्ह सुत्तत्थपरिहाणी, अतो अण्ण गण "वइमो" त्ति – गच्छेज्ज, ॥६३७०॥

गणअणापुच्छाए खमगे पडिच्छिते गणे य अकरेमाणे आयरियस्स य इम पच्छित्त दोसा य।

"[१]गुरुग गिलाणोवमे अडते य" अस्य व्याख्या –

गेलण्णतुल्ल गुरुगा, अडंते परितावणादि सयं करणे ।
णेसण-गहणागहणे, दुगट्ठ हिंडंत मुच्छा य ॥६३७१॥

तेसु गच्छिल्लगेसु वेयावच्च अकरतेसु जइ खमगो गिलाणोवमो जाओ ता आयरियस्स चउगुरुगा, "अडते" "सय" "दुगट्ठ" त्ति भत्तपाणट्ठा वा सयमेव हिंडतो खुहापिपासादि सीउण्हेण वा पडिलेहणादिकिरिय वा सयमेव करेंतो परिस्समेण ज अणागाढादि परियाविज्जति, मुच्छादि वा पावति, तत्थ चउलहुगादि जाव चरिम पावति। परियाविज्जतो अणेसणिज्ज गेण्हति, एत्थ वि गुरुस्स तण्णिप्फण्ण, अह ण गेण्हति तो बहु अडतस्स परियावणादि णिप्फण्ण ॥६३७१॥

सीसो पुच्छति – कि तस्स चउव्विहाहारविसयस्स कायव्व ।

आचार्याह – "[२]पडिलेहण" पच्छद्ध, उवगरण से पडिलेहियव्व, सथारगो से कायव्वो, पाणग से आणेउ दिज्जति, पारणदिणे भत्त पि से आणेउ दिज्जति। उच्चारपासवणखेलमत्तगो य एते तिण्णि ढोइज्जति परिट्ठविज्जति य, जम्हा एवमादि दोसा गणिणो तम्हा गच्छ आपुच्छित्ता समणुण्णाते खमग पडिच्छति।

अह णत्थि गच्छे खमगो तो पडिच्छियव्वो चेव, पडिच्छियस्स य सव्व सव्वपयत्तेण कायव्व णिज्जरट्ठा। त परिक्खासुद्ध जा तिण्णि दिवसे किमागतो त्ति अणापुच्छिता अणालोवेत्ता

१ गा० ६३६९। २ गा० ६३६९।

वा मवसावेनि नो इम पच्छित साववाद भण्णइ –

पढमदिणाणापुच्छे, लहुगो गुरुगा य हुंति बितियम्मि ।

ततियम्मि होंति लहुगा, तिण्हं तु वतिक्कमे गुरुगा ॥६३७२॥

पढमदिणे मासलहु ति, बितिए मासगुरु, ततिए चउलहु ति, परम्रो चउत्थादिदिण्णेसु चउगुरुगा ॥६३७२॥

अववातो – अतो कज्जे तिण्णि दिणा बहुतर च काल त सवसावेता वि अपच्छित्ती ।

जतो भण्णति –

कज्जे भत्तपरिण्णा, गिलाण राया य धम्मकह वादी ।

छम्मासा उक्कोसा, तेसिं तु वतिकमे गुरुगा ॥६३७३॥

कुल गण सघकज्जेहिं वावडो आयरितो भत्तपच्चक्खातो वा साधू तस्स लोगो एति, तत्थ आयरिओ धम्मकहकहणेण वावडो गिलाणकज्जेण वावडो, राया वा धम्मट्ठी एइ, तस्स धम्मो कहेयव्वो, वादी वा णिगिण्हियव्वो, एवमादिकारणेहिं वावडो आयरिओ होज्ज, एव जाव छम्मासा ण पुच्छेज्ज, आलोयण वा ण पडिच्छेज्ज, ॥६३७३॥

एवमादिकज्जवावडो वा इम जयण करेज्ज –

अण्णेण पडिच्छावे, तस्सऽमति सयं पडिच्छए रत्तिं ।

उत्तरवीमंसाए, खिण्णो वा णिसि पि ण पविसे ॥६३७४॥

जइ अत्थि अण्णो गीयत्थो आलोयणारिहो सो सदिस्सिज्जति-तुम पुच्छिज्जसि आलोयण पडिच्छाहि । अह णत्थि गीयत्थो ताहे सयमेव रत्तिं आलोयणा पडिच्छियव्वा । अह परप्पवादिणिगिण्हट्ठा जहा सिरिगुत्तस्स छलुगस्स पराजयट्ठा उत्तरवीमस करेंतस्स रातो त्ति परिच्छणा णत्थि, दिवा परिस्समकिण्णो वा रातो सुवति एव रातो वि ण पडिच्छति जाव उक्कोस छम्मासा । जति य छम्मासे पुण्णे ण पुच्छति आलोयण वा ण पडिच्छति तो [1]चउगुरुगा भवति ।

अण्णे भणति – छण्ह परतो पढमे दिणे मासलहु, बितिए मासगुरु, ततिए चउलहु, परतो चउगुरु ति ॥६३७४॥

अधवा एत्थ वि अववातावतो भण्णति –

दोही तिहि वा दिणेहिं, जति छिज्जति तो ण होति पच्छित्तं ।

तेण परमणुण्णवणा, कुलादि रण्णो व दीवंति ॥६३७५॥

जति छण्ह मासाण परतो णिरुत्त दोहिं तीहिं वा दिणेहिं कज्जसमत्ती भवति तो तेसु वि पच्छित्त न भवति, अह तेसु वि कज्जसमत्ती न भवति ताहे छम्मासासमत्तीए चेव कुलादिया अणुण्णविज्जेति रण्णो वा दीविज्जति त्ति ''अह कल्ले इमेण कज्जेण अक्खणितो णो आगमिस्स ति, विदित भवतु तुज्झ, परप्पवाइणो वा'' । जइ एव न कहेति तो चउगुरुगा ॥६३७५॥

---

१ गा० ६३७३ ।

सोवि सुद्धो आलोयगो विउझनो कह आलोयण करेति ? उच्यते—

आलोयण तह चेव तु, मूलुत्तर णवरि विगडिते इमं तु ।
इत्थं सारण चोयण, निवेयण ते वि एमेव ॥६३७६॥

"तह चेव" त्ति जहा सभोइयाण विहारालोयणाए भणिय तहा भाणियव्व । "मूलुत्तरे" त्ति – पुव्व मूलगुणातियार, णवर-इमो विसेसो, "विगडिए" त्ति आलोए एगतो ठिता विभिण्णे वा साहुणो वदित्ता भणाति – आलोयणा मे दिण्णा, इच्छामि सारण वारण चोयण च मे काउ । तेहिं वि पडिभाणियव्व-तुम पि अज्जो ! अम्ह सारेज्जासि चोएज्जासि य ॥६३७६॥ उवसपदालोयणा गया ।

इदाणि अवराहालोयणा यत्र प्रकृत –

एमेव य अवराहे, किं ते ण कया तहिं चिय विसोही ।
अहिगरणादि कहयती, गीतत्थो वा तहिं णत्थि ॥६३७७॥

"एमेव" त्ति जहा विहारउवसपदालोयणासु विही भणितो तहेव इम पि जाव पुट्ठो वा भणति – अह अवराहालोयगो आगतो ।

ताहे आयरिएहिं भाणियव्व – किं ते ण कया तेहि चिय विसोधी ?, ततो कहेति अधिकरण मे कय तत्थ, आदिग्गहणेण विगति सघाडगादी कधेति । अहवा भणति – तत्थ गीतत्थो णत्थि, ॥६३७७॥

एत्थ अहिकरणादिअविसुद्धकरणेसु आयरिएण भाणियव्वो –

ण वि य इहं परियरगा, खुल खेत्तं उग्गमवि य पच्छित्तं ।
संकितमादी व पदे, जहक्कमं ते तह विभासे ॥६३७८॥

पडियरगा नाम अवराहावण्णस्स पच्छित्ते दिण्णे गिलायमाणस्स णत्थि वेयावच्चगरा । खुलत्तेण णाम मदभिक्ख जत्थ वा घयादि उवग्गहदव्व न लब्भति, एत्थ वा न धम्मसड्ढी लोगो । अहवा भणाइ – अम्हे उग्ग पच्छित्त देमो ।

"णत्थि सकिय" – (गाथा ६३५३)

"सकियमादी य पए" त्ति ।

हेट्ठा व्याख्याता एव व्याख्येया इत्यर्थ । इइ सकियस्स अत्थ ण याणामि, किह पच्छित्त दिज्जति ? विस्सरिय वा पच्छित्त, एव सकियादिपदा जहक्कमेण पच्छित्ताभिलावेण भाणियव्वा । अहवा—ते सकितादि-पदे "जहक्कम" त्ति—जहासभव ते विभासिज्जति ॥६३७८॥

एव असुद्ध पडिसेहेत्ता सुद्ध पडिच्छति । तस्स विही ज त हेट्ठा भणिय—"[1]अवराहे दिवसतो पसत्थम्मि" त इदाणि भण्णति ।

अवराहालोयणा णियमा विभागेण दिवसतो दव्वादिसु देति, जतो भण्णति—

दव्वादि चतुरभिग्गह, पसत्थमपसत्थ ते दुहेक्केक्का ।
अपसत्थे वज्जेउं, आलोयणमो पसत्थेसु ॥६३७९॥

दव्वखेत्तकालभाव च अभिगिज्झ देति, एते य दव्वादिया पसत्था वा अपसत्था वा होज्जा, अप्पसत्थादीणि वज्जेत्ता पसत्थेहिं आलोएयव्व ॥६३७९॥

---

१ गा० ६३२५ ।

एत्थ पढमे अपसत्था –

भग्गघरे [1]कुड्डेसु य, रासीसु य जे दुमा य अमणुण्णा ।
तत्थ ण आलोएज्जा, तप्पडिपक्खे दिसा तिण्णि ॥६३८०॥

जत्थ खभतुलाकुड्डादि किंचि पडित तं भग्गघर, कुड्डगहणातो वा भिण्णकुड्डेसु, पाठातरेण वा रुद्दघर ॥६३८०॥

एयं अप्पसत्थखेत्तग्गहणं, रासिदुमग्गहणं अप्पसत्थदव्वग्गहणं । अस्य व्याख्या –

अमणुण्णधण्णरासी, अमणुण्णदुमा य होंति दव्वम्मि ।
भग्गघर रुद्द ऊसर-पवात दड्ढादि खेत्तम्मि ॥६३८१॥

अमणुण्णधण्णा तिलमासकोद्दवादी । अमणुण्णदुमा एते –

णिप्पत्त कंटइल्ले, विज्जुहते खार कडुय दड्ढे य ।
अय तब तउय कयवर, दव्वे धण्णा य अपसत्था ॥६३८२॥

सभावतो करीरपलासादिया वा अण्णे पत्तसाडकाले णिप्पत्ता, अग्घाडगवत्थुलमोक्खादिया खाररुक्खा, रोहिणिकुडगणिंबादिया कडुरुक्खा, अयादि लोहदव्वा, अप्पसत्थ रासी सव्वे वज्जणिज्जा, अगारतुसभुसचीवरादी अणेगदव्वणिगरो कयवरो, मासतिलकोद्दवादिया अपसत्था धण्णा, एते दव्वओ भणिता

खेत्तओ भग्गघरादि रुद्दघर महादेवघर दुग्गमादि घरा य, जत्थ वा भुसकुट्ट हिरण्णादिकुट्टो वा, ऊसर त्ति ऊसरभूमी, छिण्णटका तटी प्रपात, दवादिदड्ढा वा भूमी, जत्थ एयं खेत्तओ अप्पसत्थं ॥६३८२॥

इमं कालतो –

पडिकुट्ठेल्लगदिवसे, वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च ।
छट्ठिं चउत्थि बारसिं च दोण्हं पि पक्खाण ॥६३८३॥ कठ्या

भावतो इमं अप्पसत्थं –

संझागतं रविगतं, विड्डेरं सग्गहं विलंबिं च ।
[2]राहुहतं गहभिण्णं, च वज्जए सत्त णक्खत्ते ॥६३८४॥

जम्मि उदिते सूरो उदेति तं संझागतं, जत्थ सूरो ठितो तं रविगतं, जं सूरस्स पिट्ठतो अणंतरं तं विलंबी ।

अण्णे भणंति – जं सूरस्स पिट्ठतो अग्गतो वा अणंतरं तं संझागयं । जं पुण पिट्ठतो सूरगतातो तं ति त (?) विलंबी । जं जत्थ गमणकम्मसमारंभादिसु अणभिहियं तं विड्डेरं विगतद्वारमित्यर्थः । जं क्रूरग्रहेणाक्रान्तं तं सग्गहं, जत्थ रविससीण गहणं आसी तं राहुहतं, मज्झेण जस्स गहो गतो तं गहभिण्णं, एते सत्त वि णक्खत्ता चंदजोगजुत्ता आलोयणादिसु सव्वपयत्तेण वज्जणिज्जा ॥६३८४॥

एतेसु इमं फलं –

संझागतम्मि कलहो, होति कुभत्तं विलंबिणक्खत्ते ।
विड्डेरे परविजयो, आइच्चगते अणेव्वाणी ॥६३८५॥

---

[1] रुद्देसु इत्यपि पाठः । [2] राहुगत इत्यपि पाठः ।

जं मग्गहम्मि कीरइ, णक्खत्ते तत्थ वुग्गहो होति ।
राहुहतम्मि य मरणं, गहभिण्णे सोणिउग्गालो ॥६३८६॥

एयातो दोवि कठातो । एते अप्पसत्थदव्वादिया । एतेसु णो आलोएज्जा ॥६३८६॥

तप्पडिपक्खे दव्वे, खेत्ते उच्छुवण चेइयघरे वा ।
गंभीर साणुणादी, पयाहिणावत्तउदए उ ॥६३८७॥

तप्पडिपक्ख त्ति – अप्पसत्थाण दव्वादियाण प्रतिपक्षा पसत्था दव्वादिया तेसु आलोएज्ज । तत्थ दव्वे सालिमादिपसत्थधण्णरासीसु, हिरण्ण-सुवण्ण मणि रयण-बितियर विदुमरासिसमीवे वा, खेत्तओ उच्छुकरण-समीवे मालिकरणे चेतियघरे पत्तपुप्फलोववेते वा आराम गभीरे, जत्थ वा खेत्ते पडिसद्दो भवति त साणुणाती जत्थ वा णदीए पदाहिणावत्त उदग वहति पउमसरे वा ॥६३८७॥

कालतो –

उत्तदिणसेसकाले, उद्दट्ठाणा गहा य भावम्मि ।
पुव्वदिस उत्तरा वा, चरतिया जाव णवपुव्वी ॥६३८८॥

उक्तदिगा अट्ठमीमादीने वज्जेत्ता सेसा बितियादी दिवसा पसत्था, तेसु वि व्यतिवातादि दोसवज्जितेसु पसत्थकरणमुहुत्तेसु, भावतो उच्चट्ठाणगतेसु गहेसु – रविस्स [1]मेसो उच्चो, सोमस्स [2]वसभो, अगारस्स [10]मगरो, बुहस्स [6]कण्णा, विहस्सतिस्स [4]कक्कडओ, [12]मीणो सुक्कस्स, [7]तुलो सणिच्छरस्स । सव्वेसि गहाण अप्पणा उच्चट्ठाणातो ज सत्तम त णीय । अहवा – भावतो पसत्थ बुहा सुक्को वहस्सती ससी य । एतेसि रासि-होरा द्रेक्काणअसतसु वा उदिएसु सोम्मग्गहबलाइएसु य आलोएज्जा । सो पुण आलोएतो आलोयणारिहा वा तिण्ह दिसाण अन्नयरीए अभिमुहो ठाति उत्तरा पुव्ववरतिया य, सा इमा जाए दिसाए तित्थकरो केवली मणपज्जवणाणी ओहिणाणी चोद्दसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा जुगे पहाणो आयरिओ जत्तो विहरत्ति तत्तो हुत्ता पडिच्छति आलोएति वा ॥६३८८॥

आलोएतस्स इमा सामायारी –

णिसेज्जाऽसति पडिहारिय कितिकम्म काउ पंजलुक्कुडओ ।
बहुपडिसेवऽरिसेसु य, अणुण्णवेउं णिसज्जगतो ॥६३८९॥

अप्पणिसेज्जकप्पेहि अपरिभुत्तेहिं परिभुत्तेहि णिसेज्ज करेति असति अप्पणिसेज्जाण अण्णस्स सतिया पडिहारकप्पा घेत्तु करेति। तत्थ जति आयरिओ पुव्वहुत्तो णिसीयति तो आलोयगो दाहिणओ, उत्तरा-हुत्तो णिसीयति तो इयरो वामतो पुव्वहुत्तो ठाति चरति य । दिसाभिमुहो ठावितो विहीए बारसावत्त वदण दाउ कयजली उस्सग्गउक्कुडुयठिओ आलोएइ । जइ पुण तस्स बहुपडिसेवणत्ताओ चिरेण आलोयणा समप्पिहिइ, न सक्केइ तच्चिर उक्कुडुओ ठाउ, अरिसालुयस्स अरिसाओ खुभेज्जा, तो गुरु अणुण्णवेत्ता णिसिज्जाए उवग्गहिय पादपुंछणे वा जहारुहे ठाविओ आलोएति ॥६३८९॥

कि पुण त आलोइज्जति ?, उच्यते – चउव्विह इद दव्वादी –

चेयणमचित्तदव्वे, जणवयमग्गे य होति खेत्तम्मि ।
णिसिदिण-सुभिक्ख-दुब्भिक्खकाल-भावम्मि हिट्ठितरे ॥६३९०॥

दव्वतो अचित्त सचित्त मीस वा अकप्पिय किंचि पडिसेविय होज्जा। खेत्तओ जणवते वा अद्धाणे वा। कालतो दिया वा राम्रो वा सुभिक्खे वा दुब्भिक्खे वा। भावतो हट्ठेण वा गिलाणेण वा, जयणाए अजयणाए वा, दप्पओ कप्पओ वा ॥६३९०॥

आलोयणाए इमे गुणा –

लहुताल्हादीजणयं, अप्पपरणियत्ति अज्जवं सोही।

दुक्करकरणं विणओ, णिस्सल्लत्तं च सोहिगुणा ॥६३९१॥

जहा भारवाहो ओहरियभरोव्व आलोइए उद्धरियसल्लो लहू भवति, अतियारघम्मतवियस्स चित्तस्स आलोयणाए णिस्सल्लो चित्तस्स प्रल्हादण जनयति पल्हादित्ति वुत्त भवति, आलोयणकरणओ सय दोसेहि णियत्तति त पामित्ता अण्णे वि आलोयणाभिमुहा भवति, अतियारपसगतो वि णियत्तिया भवति, ज रहे परिसेवित परस्स आलोएतेण अज्जव त्ति अमायावित्त कय भवति, अतियारपकमलिणस्स अप्पणो चरणस्स वा साही कता भवति दुक्करकरण च।

कह ? उच्यते – ण दुक्कर ज पडिसेवित, त दुक्कर ज आलोइयति, अहवा – ज पडिसेवित त जीवस्स ससारसुहाणुकूल न दुक्कर, तओ ज चित्तनिव्वित्तिकरण त दुक्करकरण ति अप्पतेण गुरुस्स विणओ कतो भवति, चरित्तविणओ वा एस कओ भवति, ससल्लो य अप्पा णिसल्लो कओ। आलोयण त्ति वा सेहिन्ति वा एगट्ठ ॥६३९१॥

तेण पुण आलोयतेण मायामयविप्पमुक्केण –

जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ।

तं तह आलोएज्जा, मायामयविप्पमुक्को उ ॥६३९२॥ कण्ठ्या

जो आलोयणारिहो सो इमो दुविहो –

आगमसुयववहारी, आगमतो छव्विहो उ ववहारी।

केवलि मणोहि चोद्दस, दस णव पुव्वी य णायव्वा ॥६३९३॥

आगमववहारी सुयववहारी य तत्थ जो सो आगमववहारी सो छव्विहो इमो – केवलणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी चोद्दसपुव्वी अभिण्णदसपुव्वी णवपुव्वी य। एते आगमववहारी पच्चक्खणाणिणो जेण जहा अइयारो कतो त तहा अतियार जाणति ॥६३९ ॥

त च आगमववहारिस्स आलोएज्जमाणे जति आलोयगो पडिकुचति –

पम्हुट्ठे पडिसारण, अप्पडिवज्जंतगं ण खलु सारे।

जति पडिवज्जति सारे, दुविहऽतियारं वि पच्चक्खी ॥६३९४॥

"पम्हुट्ठे" त्ति – विस्सरिए त पच्चक्खणाणी णाउ "पडिसारिज्जइ" त्ति –

ताहे भणाति – अमुग ते विस्सरित त आलोएहि।

अह जाणइ – ण पडिवज्जति तो ण पडिसारेइ। दुविहो अइयारो मूलगुणाइयारो उत्तरगुणाइयारो य। एव पच्चक्खणाणी सम्म आउट्टस्स देति पच्छित्त, अणाउट्टतस्स ण देति ॥६३९४॥

एते पच्चक्खववहारी वुत्ता –

सेमा जे ते इमे सुयववहारी –

कप्प-पकप्पा तु सुते, आलोयावेति ते उ तिक्खुत्तो ।

सरिसत्थेऽपलिउंची, विसरिम पडिकुंचितं जाणे ॥६३९५॥

"कप्पो" त्ति दसाकप्पववहारा, 'पकप्पो" त्ति णिसीह, तुशब्दान्महाकप्पमुत्त महाणिसीह णिज्जुत्तीपेढियधरा य, एवमादि सव्वे सुयववहारिणो । ते य सुयववहारी एगवारालोइए पलिउचिते अपलिउचिए वा विसेस ण याणति, तेण कारणेण "तिक्खुत्तो" त्ति णियमा तिण्णि वारे आलोयावेति । एक्क-वारा भणाति – "ण सुटठु मए अवधारिय," "णिद्दावसगओ" । ततियवाराए भणाति "अणुवउत्तेण किंचि णो अवधारिय, पुणो आलोएहि" । जति तिहि वारहि सरिस चेव आलानिय तो णायव्व अपलिउची । अह विसरिस वुल्लुवतो य आलोएति तो पलिउचिय जाणियव्व ॥६३९५॥

तत्थ जो पलिउची सो इमेण अस्मदिट्ठतेण चोयय वो –

आसेण य दिट्ठंतो, चउव्विहा तिण्णि दडिएण जहा ।

सुद्धस्स होति मासो, पलिउंचिते त चिम चऽन्न ॥६३९६॥

दव्वादिचउव्विहपडिसेवणापलिउची आगममुयववहारादीहि भाणियव्वा ।

सुणेहि अज्जो ! उदाहरण, जहा – एक्कस्स रण्णो आसो सव्वलक्खणजुत्तो धावण-पवण-समत्थो, तस्स आसस्स गुणेण अजेयो सो राया । सामतराइणो य सव्वे अज्जो आणावेति ।

ताहे सामतरायाणो अप्पप्पणो सभासु भणति – अत्थि कोइ एरिसो पुरिसो, जो त हरित्ता आणेति ? सव्वेहि भणिय – सो पुरिमपजरत्थो चिट्ठति, गच्छति वा, ण सक्कति हाउ । एगस्स रण्णो एगेण पुरिसेण भणिय – जइ सो मारेयव्वो तो मारेमि त्ति ।

ताहे रण्णा भणिय – "मा अह तस्स वा भवतु, वावादेहि" त्ति । तओ तत्थ गतो सो ।

तेण य छण्णपदेसट्ठितेण पडिक्करूव धणुहकडस्स अते क्षुद्रकीकटक लाएत्ता विद्धो आसो, त इसिया कडग आहणित्ता पडिय, क्षुद्रकीकटकोवि आससरीरमणुपविट्ठो, सो पभूअजव-जोगासण चरतो वि तेण अव्वत्तसल्लेण वाहिज्जमाणो परिहाइउमाढत्तो ।

ताहे वेज्जस्स अक्खातो, वेज्जेण दिट्ठो, भणिय च – णत्थि से कोति धाउविसवादरोगो, अत्थि से कोइ अव्वत्तसल्लो ।

ताहे वेज्जेण जमगसमग पुरिसेहि कद्दमेण आलिपाविओ सो आसो, सो सल्लपएसो अतिउण्हत्तणतो पढम सुक्को, त फाडेत्ता अवणीओ क्षुद्रकीकटकसल्लो, सो य पण्णत्तो । बितिओ एव अणुद्धरियसल्लो मतो ।

इदाणि उवसहारो – जहा सो आसो अणुद्धरियसल्लो वल ण गेण्हइ, असमत्थो य जुद्धे मतो य, एव तुम पि ससल्लो करतो किरियकलाव सजमवुड्ढि णा करेसि, ण य कम्मणो जय करेसि, अजए य कम्मणो अणेगाणि जम्मणमरणाणि पाविहिसि, णो य मोक्खत्थ साहहिसि, तम्हा सव्व सम्म आलोएहिति ।

अहवा चउव्विहा आलोवगा – अपलिउचिए पलिउचिय – एतेसि चउण्ह भगाण पढमततिये सुद्धभावस्स मासमावन्नस्स मासो चेव पच्छित्त, बितियचउत्थेसु माइणा त च आवण्णमासिय इम च अण्ण मासगुरु मायाणिप्फण्ण मासिय ॥६३९६॥

स्यान्मति — "किं तिण्ण आलोयणाण अ.रतो माई णोवलब्भति तो (जओ) तिण्णिवारा आलोयाविज्जति ?

आचार्य आह — एग-दुवारा सुद्धि स्पष्टा न उवलब्भति मायीति, तहावि फुडतर उवलद्धिनिमित्त तिन्नि वारा आलोयाविज्जति पुव्व च मायाणिप्फण्ण मासगुरु दिज्जति त्ति ।

एत्थ इमो दिट्ठतो "[1]तिण्णि दडिएण जहा" अस्य व्याख्या —

अट्ठुप्पत्ती विमरिम,-णिवेयणे दंड पच्छ ववहारो ।
इति लोउत्तरियम्मि वि, कुंचितभावं तु दंडेति ॥६३६७॥

अथस्य उत्पत्तिरर्थो व्यवहारादुत्पद्यत इति अट्ठुप्पती ववहारो भण्णति–जहा कोइ पुरिसो अण्णातितो रायकरण उवट्ठितो णिवेदेति–अह देवदत्तेण अण्णातितो, ताहे करण (पई) पुच्छति–कह तुज्झ कलहो समुट्ठितो?, ताहे सो कहेति। कहिए करणपती भणति – पुणो कहेहि, कहिए पुण ततियवारा कहाविज्जइ, जति तिसु वि सरिस तो जाणति-सब्भावो कहिओ, अह विसरिस तो जाणति करणपती एस पलिउचिय कहेइ त्ति । कीस राजकुले मुसावाय भणति ? प्रतारेति त्ति पुव्व डडिज्जति, पच्छा जइ ववहारे जियति तो पुणो डडिज्जइ । एव सो मायावी वि डडोवहतो कीरति । इय एव लोउत्तरे वि अग्ह तिण्णि वारा आलोयावेत्ता जइ पलिउची कीस माय करेहि त्ति तो मायापच्चओ मासगुरू से दिजति पुव्व, पुणो वि से पच्छा ज आवण्णा त दिज्जति, एव चेव सो सुज्झति, णत्थि से अण्णो सोधणप्पगारो इति ॥६३६७॥

अह आगमववहारी पच्चक्खणाणपच्चयतो पलिउचिय अपलिउचिय वा जाणति । जे पुण सुतववहारी, ते कह दुरवलक्ख असुभ पलिउचियभाव अतोगत जाणति ? अत उच्यते —

आगारेहि सरेहि य, पुव्वावरवाहयाहि य गिराहिं ।
नाउं कुंचितभावं, परोक्खणाणी ववहरंति ॥६३६८॥

आलोयगस्स आगारो ण सविग्गभावोवदसगो, सरोवि से [2]अव्वत्तमविट्ठो खुभियगग्गरो, पुव्वावर वाहता य गिरा । आलोयतो भणाति — अकप्पिय मे जयणाए पडिसेविय, ण य तियपरियट्ट काउ त गहिय ति, एवमादिकारणेहि कुचियभाव णाउ पच्छा आलोयगेण य आलोतिते फुडीकए । एव परोक्खणाणी ववहार ववहरति ॥६३६८॥

जे भिक्खू दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं ॥सू०॥२॥

अस्य व्याख्या—द्वाभ्या मासाभ्या निष्पन्न दोमासिय, सेस जहा मासियसुत्ते । णवर—इमो विसेसो, पलिउचिते ततिओ गुरुमासो दिज्जति ।

दोमासादिपलिउक्तितेसु जहक्कम इमे दिट्ठता—

कुंचित सल्ले मालागारे मेहे पलिकुंचिते तिगट्ठाणा ।
पचगमा णेयव्वा, वहूहि [3]उक्खड्डमड्डाहिं ॥६३६९॥

---

१ गा० ६३६६ । २ अच्चतविपट्ठो = अव्यक्तमविस्पष्ट । ३ पुन पुनरित्यथ ।

दोमासिगपलिकुंचियस्स कुंचितो दिट्ठंतो दिज्जति – कुंचितो तावसो, फलाण अट्ठाए अडवि गओ। तेण णदीए सय मओ मच्छो दिट्ठो। तेण सो अप्पसागारिय एइत्ता खाइतो। तस्स तेण अणुचियाहारेण अजीरतेणागाढ गेलण्ण जात।

तेण वेज्जो त पुच्छति – किं ते खाइय ? जओ रोगो उप्पण्णो।

तावसो भणाति – फलाइ मोत्तु अण्ण ण किंचि खाइय।

वेज्जो भणइ – "कदादीहि णिक्कमानिय ते सरीर, घय पिवाहि त्ति। तेण पीय सुट्ठुतर गिलाणीभूतो।

पुणो पुच्छिओ, वेज्जेण भणिय – "सम्म कहेहि"।

कहित तेण – मच्छो मे खाइतो।

वेज्जेण ससोहण-वमण विरेयणकिरियाहि णिक्कसाएत्ता लद्धीओ कओ।

इसो उवणओ – जो पलिउचति तस्स पच्छित्तकिरिया णो सक्केति सुद्ध काउ, सम्म पुण अतियाररोग आलोए तो तस्स पच्छित्ते सुहकिरिया काउ सक्केति ॥६३९९॥

जे भिक्खू तेमासियं पडिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं ॥सू०॥३॥

अत्रापि मासिकव्याख्या एव, नवर – त्रिभिर्मासै निष्पन्न त्रैमासिक, पलिउ चिए चउत्थो स सो गुरुओ दिज्जति।

पलिउचणे य इमो [1]मल्लदिट्ठंतो कज्जति। दो रायाणो सगाम सगामेंति। तस्स एक्कस्स रण्णो एक्को मणूसो सूरत्तणेग अतीववल्लभो। सो य बहूहि सल्लेहि सल्लिओ। ते तस्स सल्लाइ वेज्जो अवणेति, अवणिज्जमाणेहि अतीव दुक्खविज्जइ, एकम्मि से अगे सल्लो विज्जमाणो तेण विगूहितो वेज्जस्स दुक्खाविज्जिहामि त्ति। सो य तेण सल्लेण विवट्टमाणेण बल णो गिण्हति, दुब्बलो भवति, पुणो तेण पुच्छिज्जमाणेण णिवद्धे कहित णीणिओ सल्लो, पच्छा बलव जातो। एत्थ वि उवणओ पूर्ववत्।

जे भिक्खू चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवेत्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चाउमासिय
पलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासिय ॥सू०॥४॥

अत्रापि तदेव व्याख्यान, णवर – पलिउचणाणिप्फण्णो पचमो गुरुअमासो दिज्जति।

इमो य [2]मालाकारदिट्ठंतो – दो मालाकारा कोमुदिवारे पुप्फाणि बहूणि उवणित्ता गहेत्ता विहीए उवट्ठिता। तत्थेगेण कयगेसु उवट्ठितेसु पागडा कया, तेहि णाउ तेसि मोल्ल दिण्ण, बहू य लाभो लद्धो। जेण पुण ण कयाणि पागडाणि, तस्स न कोइ कयगो अल्लीणो, ते तत्थेव विणट्ठा, ण य लाभो लद्धो। एव जो मूलगुणउत्तरगुणावराहा ण पागडेति सो पच्छित्त, णिव्वाणलाभ च ण लभति।

१ गा० ६३९९। २ गा० ६३९९।

जे भिक्खू पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं पलिउंचिय आलोएमाणस्स छम्मासियं ।।सू०।।५।।

तथैव व्याख्यान, णाणत्त इम – पलिउंचिए छट्ठो मासो गुरुओ दिज्जति ।

इमो य से [1]मेहदिट्ठंतो दिज्जति –

चत्तारि मेह गाहा –

गज्जित्ता णामेगे णो वासित्ता, चउभंगा कायव्वा, एवं तुमं पि आलोएमि त्ति गज्जिता णिसज्जकरण वंदणदाणण उज्जमित्ता आलोवेउमाढत्तो णो अवराहपाणियं मुंचसि, जम्हा पलिउंचण करेसि, तम्हा मा विफलं गज्जितं करेहि, सम्मं आलोएहि त्ति ।

"[2]तिगट्ठाणे" त्ति अस्य व्याख्या – पलिउंचिए आउट्टे ममाणे सुतववहारी पुणो तिण्णि वारा आलोयाविति, जइ पुणो तिहिं वार हिं सरिसं आलोतियं तो जाणति – "एस सम्मं आउट्टो, जं मे दायव्वं तं दंति" ।

अह विसरिसं तो भणति – अण्णत्थ सोहिं करेहि, णाहं तव सक्केमि एग्गिमियाए अणिच्छिय-आलोयणाए सब्भाव अयाणतो सोहिं काउं ।

अहवा सीसो पुच्छति – "एते मासादि छम्मासंता पायच्छित्तठाणा कुओ पत्ता ?"

आचार्याह – "तिगट्ठाणे" त्ति, उग्गमुप्पादणेसणासु जं अकप्पपडिसेवणाए अणायारकरणं तेण एते मासादिछम्मासंता पायच्छित्तट्ठाणा पत्ता इति । अहवा – णाणाइतिगाणायारेहितो । अहवा – आहार-उवहिसेज्जा अकप्पिएहितो ।

इदाणि छम्मासियसुत्तस्स अतिदेसकरणं इमं – जम्हा पंचमासिए पलिउंचिए छम्मासा दिट्ठा, तस्सु आरोवण विहाणं जं, तं चेव छम्मासपडिसेवणाए वि, तम्हा छम्मासियसुत्तं ण पढंति, अतिदेसं करेति ।

तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ।।सू०।।६।।

"तेण" त्ति तस्स पंचमासियस्स पुरओ छम्मासियं भवति, तम्मि पडिसेविए आलोयणाकाले जति अपलिउंचिय आलोएति तो छम्मासित, पलिउंचिय आलोइए वि ते चेव छम्मासा, जहा मासादिसु पलिउंचिए य मायाणिप्फण्णो गुरुओ मासो आवत्तीओ अहिगो दिज्जइ तहा छम्मासावत्तीए भवतीत्यर्थ ।

कम्हा ? उच्यते – जम्हा जियकप्पो इमो । जस्स तित्थकरस्स जं उक्कोस्सं तवकरणं तस्स तित्थे तमेव उक्कोसं पच्छित्तदाणं सेससाधूण भवति । सत्तिजुत्तेण वि परतो तवो ण कायव्वो, आसायणभया, चरिमतित्थकरस्स य अम्ह सव्वुक्कोसा छम्मासिया तवभूमी सूत्रखंड गत ।

जे भिक्खू बहुसो वि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ।।सू०।।७।।

१ गा० ६३९९ । २ गा० ६३९९ । ३ चूर्णिकृता त्वेद पश्चिमसूत्रांशत्वेन गृहीतम् ।

जे भिक्खू बहुसो वि दोमासियं परिहाट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासिय
पलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासिय ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू बहुसो वि तिमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउचिय आलोएमाणस्स तिमासिय
पलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू बहुसो वि चउमासियं परिहाट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं पलिउंचिय आलोएमाणस्स
पंचमासियं ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू बहुसो वि पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्ज
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं
पलिउंचिय आलएमाणस्स छम्मासिय ॥सू०॥११॥

[1]तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥सू०॥१२॥

अत्र पचानामपि सूत्राणा सूत्रक गाथापश्चार्धमपि दिश्यते "पच[2]" इति सख्या, "गमा" इति सूत्रप्रकारो, ते य मासदुमासादि, "[3]णेयव्वे' त्ति वयणुच्चारणमग्गेण, 'बहूहिं" त्ति – बहुस सुत्ता।

"[4]उखड्डुमड्डाहि" ति बहुस वक्खाण, उखड्डुमड्ड त्ति वा बहुसो त्ति वा भूयो भूयो त्ति वा पुणो पुणो त्ति वा एगट्ठ। एषा पचानामपि बहुसूत्राणमयमथ – त्रिप्रभृतिबहुत्व तिण्णि वारा मासिय पडिसेवेत्ता अपलिउ चिय आलोएइ एक्क चेव मासिय दिज्जइ, अह पलिउ चिय आलोएति तो बितितो मासो मायाणिप्फण्णो गुरुगो दिज्जति एव दोमासिय पि।

णवर – ततिओ मासो मायाणिप्फण्णो गुरुओ मासो दिज्जति। तेमासिए तिण्णि मासा, चउत्थो मायाणिप्फण्णो गुरुओ दिज्जति।

चाउम्मासिए चत्तारि मासा, पचमो मायाणिप्फण्णो गुरुओ दिज्जति।

पचमासिए पच, छट्ठो मायाणिप्फण्णो। तेण पर पलिउचिते वा ते च्चेव छम्मासा, एतत्सूत्र-मुक्तार्थमेव। एव मासादिसु एगपडिसेवणसुत्ते पचसु मासादिसु बहुसु पडिसेवणसुत्तेसु पचसु वक्खाणिएसु।

अत्र चोदकाह – 'तुम्हे रागदोसी''।

किं चान्यत् सूत्र –

चोदग मा गद्दभत्ति कोट्ठारतिगं दुवे य खल्लाडा।
अद्धाणसेवितम्मि, सव्वेसु वि घेत्तुणं दिण्णं ॥६४००॥

---

१ दशमसूत्रांशो गृहीतश्चूर्णिकृता। २ गा० ६३९९। ३ गा० ६३९९। ४ गा० ६३९९।

बहुएसु एक्कदाणे, रागो दोसो य एगदाणे उ ।
चोदग एवमगीए, गीयम्मि व अजतमेवम्मि ॥६४०१॥

आचार्याह –

कम्हा अम्हे रागद्दोसी ?

पुणो चोदगाह – पुव्वद्ध – "बहुएसु" त्ति, बहुससुत्ते मासियट्ठाणेसु वि बहुसो सेविएसु एक्कदाणे रागो, एक्कसि ज सेवित त चेव पडिपुण्ण एक्क देताण तम्मि से द्वेषो भवति ।

आयरिओ भणति – "चोदग एवमगीत" पच्छद्ध, ज आदिसुत्तेसु पचसु पडिसेवित त चेव दिज्जति ।य अगीयत्थस्स एव दिज्जति । ज पुण बहुससुत्तेसु दाण भणिय, एय जो गीयत्थो कारणे अजयणाए सेवति, तस्सेद दिज्जति ॥६४०१॥

सगलबहुससुत्ताण विसमपडिसेवणासु समदाणपसाहणट्ठा इमो दिट्ठतो दिज्जति –

जो जतिएण रोगो, पसमति तं देंति भेसगं वेज्जा ।
एवागमसुतनाणी, त देंति विसुज्झते जेणं ॥६४०२॥ कण्ठ्या

आचार्य एवाह, "[1]सुत्त" त्ति अस्य व्याख्या –

अवि य हु सुत्ते भणियं, सुत्तं विसमं ति मा भणसु एव ।
संभवति ण सो हेतू, अत्ता जेणालियं बूया ॥६४०३॥

आयरिओ भणइ – न वय रागदोसिल्ला, जेग सुत्त चेव फुड समदाण भणति ।

[2]चोदगो त्ति चोदगो भणति, "ज तुमे भणति सुत्ते वुत्त ति, त चेव सुत्त विसम ति, जेण आदिपच-सगलसुत्ताणि पच य बहुससुत्ताणि पुव्वावरविरुद्धाणि, जतो एतेसि दोण्ह वि पचगसुत्ताण विसमा पडिसेवणा सम दाण" ति ।

आयरिओ भणइ – 'चोदग ! जे तुम भणसि सुत्त विसम ति त "[3]मा" अस्य व्याख्या, मा भणसु एव ति । सेस कठ । "वीतरागो हि सर्वज्ञ " श्लोक ॥६४०३॥

पुणो सीसो भणइ – भगव ! णणु विसमा पडिसेवणा वत्थू कह वा विसमवत्थूसु सुद्धी समा भवति ?

उच्यते –

कामं विसमा वत्थू, तुल्ला सोहि तधावि खलु तेसिं ।
पंच वणि तिपंच खरा, अतुल्लमुल्ला उ आहरणं ॥६४०४॥

"काम" अणुमयत्थे, 'खलु" सद्दो इम अवधारेति, विसमवत्थुपडिसेवणासु वि भवति चेव तुल्ला सुद्धी, सा य समा चेव, समसुद्धिपसाहणत्थ दिट्ठतो इमो, "[4]गद्दभे' त्ति अस्य व्याख्या – "पचवणि" पच्छद्ध, जहा – पच वणिया समभागसमाइत्ता ववहरति, तेसि अण्णया कयाइ समुप्पण्ण जहा विरिचामो । सव्वम्मि विभत्ते खरा विभयामो त्ति, ते य "तिपचक्खरा" –पण्णरस त्ति वुत्त भवति, ते य विसमभरवहा विसममोल्ला ॥६४०४॥

---

१ गा० ६४०० । २ गा० ६४०० । ३ गा० ६४०० । ४ गा० ६४०० ।

ते सम्मं विभज्जंता तिण्णि आवडंति, मुल्लतो पुण अतुल्लमुल्ला भवंति ।

ताहे ते –

विणिउत्तभंड भंडण, मा भंडह एत्थ एगो सट्ठीए ।
दो तीस तिण्णि वीसग, चउ पण्णर पंच बारसगा ।।६४०५।।

[1]"विणिउत्तभंडि" त्ति सभंडोवकरणे–विभत्ते विक्कीतं रासभणिमित्त भंडिउमारद्धा । असमत्था य समं अप्पणा विभातियं अण्णं कुसलमुवट्ठिता, तेण य भणिता – "मा भंडह, अहं भे समं विभयामि, कहेहि किं को वहति ? कस्स किं मुल्लं ? ति ।

तेहिं कहियं – एत्थ एक्को रासभो सट्ठिमोल्लो, सट्ठिं च पलसते वहति, दो पत्तेयं तीसमुल्ला तीसपलसत्तो वाहिणो, एवं तिण्णि वीसा, चत्तारि पण्णरसा, पंच बारसा एवं कहिए । तेण मुल्लसमा विभत्ता, एगस्स एगो सट्ठिमुल्लो दिण्णो, बितियवणियस्स तीसा दो, ततियस्स बीसा तिण्णि, चउत्थस्स पण्णरसमुल्ला चउरो, पंचमस्स पंच बारसमुल्ला । विसमवत्थूसु वि तेण सममुल्ला कया, ण य सो विभयंतो रागदोसिल्लो, ण य वणियाणं अत्थि हाणी ।।६४०५।।

एयस्स इमो उवसंघारो –

कुसलविभागसरिसओ, गुरू य साहू य होंति वणिया वा ।
रासभसमा य मासा, मोल्लं पुण रागदोसा तु ।।६४०६।। कंठ्या

णवरं – "मुल्लं पुण रागदोसा उ" त्ति – जहा रासभदव्वगुणवुड्ढिहाणीओ मुल्लस्स वुड्ढिहाणी तहा भावे रागद्दोसवुड्ढीहाणीजनितपडिसेवणाहितो पच्छित्तस्स वुड्ढिहाणी भवतीत्यर्थः । जतो तिव्वरागद्दोसज्झवसाण सेवते मासट्ठाणे मासो चेव दिज्जति, मदभावस्स दोसु मासियट्ठाणेसु पण्णरस पण्णरस घेत्तुं मासो दिज्जइ, एवं तिसु दस दस घेत्तुं मासो दिज्जइ, चउसु पत्तेयं अद्धट्ठमा राइंदिया घेत्तुं दिज्जंति, पंचसु छ छ घेत्तुं मासो दिज्जति, एवं सगलट्ठमासा चेत्ति सुत्ते वि बहुससुत्ते य कारणा अजयणपडिसेविणो रागादिवुड्ढिहाणीतो य उवउज्ज बहुवित्थरभणियव्वं । "[2]अद्धाणसेवितम्मि" त्ति – गीयत्थेण अद्धाणातिकारणे जं सेवितं अजयणाए तत्थ बहू मासा आवण्णो, एतेण एक्कसरा चेव आलोइदा तत्थ गुरुणा अजयणसुद्धीणिमित्तं तस्सऽण्णेसिं च अणवत्थणिवारणत्थं सव्वेसिं मासाणं समविसमेण वा दिवसग्गहणेण दिवसो घेत्तुं एक्को मासो दिण्णो । अगीयत्थो वि जो मंदणुभावो बहुमासे सेवित्ता तिव्वज्झवसाणो वा ण दुट्ठकयादीहिं आलोइते, तेण णायं एस एक्केण चेव मासेण सुज्झति, तहावि अगीयत्था परिणामओ वा चिंतेज्ज – दोमासियादि आवण्णो हं कहं एक्केण मासेण सुज्झिस्सामि त्ति ताहे पच्चयकरणट्ठताए सुतववहारी सव्वसफलमासकरणत्थं सव्वेसु दिवसे घेत्तुं एक्कमासं दलाति । आगमववहारी पुण ण दो वि मासा सफला करेइ एक्कं चेव दलाति, बितियं मासं झोसेति, जो पुण तिव्वज्झवसाणे णिक्कारणपडिसेवी तस्स मासादिआवण्णस्स मासादि चेव पडिपुण्णं दिज्जति । एवं अगीयगीयत्थाण णिक्कारणे वा पुढो ।।६४०६।।

पायच्छित्ते दिण्णे सिस्सायरियाणं पुच्छुत्तरगाहा इमा –

वीसुं दिण्णे पुच्छा, दिट्ठंतो तत्थ डंडलइतेणं ।
डंडो रक्खा तेसिं, भयजणगो चेव सेसाणं ।।६४०७।।

---

१ गा० ६४०० । २ गा० ६४०० ।

सीसु पृथक् पृच्छति–अगीतगीताण णिक्कारणकारणे वा किं वि सरिसं पच्छित्तं दिण्णं ति ? ।।६४०७।।

एत्थ "[1]कोट्ठागारे" त्ति वयणं, अस्य व्याख्या –

'दिट्ठंतो तत्थ दंडलइएण" त्ति अस्य व्याख्या –

डंडतिग तु पुरतिगे, ठवित पच्चंतपरनिवारोहे ।
भत्तट्ठं तीसतीसं, कुंभग्गहमागमो जेत्तु ।।६४०८।।

सुणेहि चोदग –"एगस्स अहिवरण्णो पच्चतियराया वियट्ठो। अहिवरण्णा तस्स आसण्ण-पुरेसु तिण्णि दंडा विसज्जिता, गच्छह णगराणि रक्खह। एतेसु पत्तेयं णगरेसु तेसु पच्चतिराइणो न आगतुं रोहिता। तेहि य गेहिएहि खीणभत्तेहि, जे तेसु पुरेसु अहिवरण्णो कोट्ठागारा तेहितो पत्तेयं धण्णस्स तीसं तीसं कुंभा गहिया। तेहिं य सो पच्चतियराओ जितो। आगता रण्णो समीवं, कहितं, तुट्ठो राया।

पुणो तेहि कहियं–तुज्झ कज्जं करतेहि अन्नं खइयं।

रण्णा चिंतियं–जइ एतेसिं डंडो ण कज्जति, तो मे पुणो पुणो उप्पण्णपयोणेहि कोट्ठागारा विलुंपिहिंति, ण य एतेसिं अण्णेसि च भयं भवति।

तम्हा "[2]दंडो" पच्छद्धं, अस्य व्याख्या –

कामं ममेतं कज्जं, कतवित्तीएहि कीस मे गहितं ।
एस पमादो तुब्भं, दस दस कुंभे वहह दंडं ।।६४०९।।

सव्वं मम कज्जं तहावि कयवित्तीहिं कीस भे धण्णं गहियं ?, एस तुम्ह पमादो। तेसिं अणवत्थपसंगणिवारणत्थं दंडं वत्तेति, देह मे धण्णं ति। एवं भणित्ता पुणो राया अणुग्गहं करेति, वीसं वीसं कुंभा तुब्भे मुक्का, दस दस कुंभे छुब्भह कोट्ठागारे ।।६४०९।।

"[3]रक्खा" त्ति तेहि ते छूढा, चिंतियं च –"अम्हेहिं रण्णो कज्जं कयं, तहावि डंडिया, ण पुणो एवं करिस्सामो"। अण्णेसिं पि भयं जायं, एस दिट्ठंतो।

इमो उवसंहारो–

तित्थंकर रायाणो, जइणो दंडा य काय कोट्ठारा ।
असिवादि उग्गहा पुण, अजयपमादारुवण दंडो ।।६४१०।।

तित्थकरा रायत्थाणीया, साधू डंडत्थाणीया, छक्कायत्थाणीया कोट्ठागारा, विग्गहत्थाणीयाणि असिवादीणि। गीयत्थस्स अजयणाए पसंगवारणाणिमित्तं मासादीहिं बहुसो सेवितेहिं तेहिं एक्को मासो दिज्जति अगीयत्थस्स पुण पमादवारणाणिमित्तं दोहिं मासेहिं दुमासो दिण्णो। अहवा – दो वि सफला काउं मासो चेव दंडो दिण्णो ।।६४१०।।

चोदगो भणइ –

बहुएहि वि मासेहिं, एगो जति दिज्जती तु पच्छित्तं ।
एवं बहु सेवित्ता, एक्कसि विगडेमि चोदेति ।।६४११।।

---

1 गा० ६४०० । 2 गा० ६४०७ । 3 गा० ६४०७ ।

जति गीयत्थस्स कारणा अजयणाए बहूहिं मासिएहिं सेविएहिं एक्कसराए आलोइय ति काउ एक्को मासो दिज्जति, तया अम्हे वि बहुमासे पडिसेवित्ता एक्कसरगा आलोयामो, तो एक्कमासो लब्भामो ॥६४११॥

एत्थ आयरिओ भणइ –

मा वद एवं एक्कसि, विगडेमो सुबहुए वि सेवित्ता ।
लब्भिमि एवं चोदग, देंतो खल्लाड खडुगं वा ॥६४१२॥
खल्लाडगम्मि खडुगा, दिण्णा तंबोलियस्स एक्केण ।
सक्कारेत्ता जुयल, दिण्णं बितिएण वोरवितो ॥६४१३॥

"[1]दुवे य खल्लाड" ति दिट्ठन करेइ,

एक्को खल्लाडो तबोलियवाणियओ पण्ण विक्केति । सो एक्केण [2]चारभडचोट्टेण पण्णे मग्गितो । तेण न दिण्णा । थेवेसु वा दिण्णेसु रुसिएण चारभडचोट्टेण खल्लाडसिरे खलुक्का दिण्णा, "टक्कर" त्ति वुत्त भवति ।

वणिएण चितिय – "जइ कलहेमि ता मे रूसितो मारेज्ज, तो उवायेण सो वेरणिज्जायण करेमि" । वणिएण उट्ठेत्ता हट्ठो समाइच्छ वत्थजुयल च से दिण्ण, पाएसु पडितो, महत से तबोल ।

चारभडचोट्टो पुच्छति – "कि कज्ज तुम न रुट्ठो, पेच्छग मम पूएसि, पाएसु य पडसि" त्ति । वणिएण भणिय – "सव्वखल्लाडाण एस ठिई, परम सुह च उप्पज्जइ" ।

चारभडचोट्टेण चितिय – "लद्धो मे जीवणोवाओ ।

ताहे तेण चितिय – "तस्स एरिसस्स खडुक्क देमि, जो मे अदरिद्द करेज्ज" । ताहे तेण ठक्कुरस्स दिण्णा, तेण मारितो ॥६४१३॥

एवं तुमं पि चोदग, एक्कसि पडिसेविऊण मासेण ।
मुच्चिहिसी बितियं पुण, लब्भिहिसी छेदमूलं तु पच्छित्तं ॥६४१४॥

चोदग ! तुम पि एक्कसि पडिसेविए मासिएण मुक्को, आउट्टियाए बहु सेवतो छेद मूल वा लब्भिहिसि । अण्ण च सो चोट्टो एक्क मरण पत्तो, तुम पुण ससारे अणेगमरणाइ पाविहिसि ॥६४१४॥

कि चान्यत् ? इम च तुम ण याणसि –

ढिण्णमदिण्णो दंडो, हितदुहजणणो उ दोण्ह वग्गाण ।
साहूणं दिण्णसुहो, अढिण्णसुक्खो गिहत्थाणं ॥६४१५॥

दो वग्गा इमे – साहुवग्गो गिहत्थवग्गो य । साहुवग्गे पच्छित्तदडो दिज्जतो सुह जणेति, अदिज्जतो दुक्ख करेति । गिहिवग्गे एय चेव विवरीय भवति ॥६४१५॥

कह ?, उच्यते –

उद्धियदंडो साहू, अचिरेण उवेति सासयं ठाणं ।
सो च्चियऽणुद्धियदंडो, [4]संसारपकड्ढओ होति ॥६४१६॥

---

१ गा० ६४०० । २ पोट्टेण (व्यव०) । ३ व्यवहारे 'छेद' इति पद नास्ति, तुशब्दात् छेदो गृहीत । ४ पवट्टओ (व्यव०) ।

पच्छित्तेण जया उद्धित पाव भवति तदा विसुद्धचरणो मुक्ख पावति । अविसुद्धचरणो पुण अप्पाण ससार, तेण कड्डति – नयतीत्यर्थ । ससारभाव वा अप्पाण, तेण "कड्ढति" – आकर्षतीत्यर्थ ॥६४१६॥

गिहत्था पुण –

उद्धियदंडो गिहत्थो, असण-वसण-रहिओ दुही होति ।
सो च्चियऽणुद्धियदंडो, असण-वसण-भोगवं होति ॥६४१७॥

"असण" भत्त, "वत्थ" वसण, तेसि णासाति । डडिओ पुण तेसिं अभागी, अडडिओ पुण भोगी य भवति । जम्हा एव साधूण पच्छित्तदडो दिण्णो सुहो, तम्हा जो जेण सुज्झइ तस्स त एगमणेगमासिय वा अणुरूव दायव्वमिति ॥६४१७॥

जे भिक्खू मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासिय वा
पंचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाण
पडिसेवित्ता आलोएज्जा –
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासिय वा दोमासिय वा
तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा
चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा
तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥सू०॥१३॥

सूत्रे उच्चारिते शिष्याह –

कसिणारुवणा पढमे, बितिए बहुसो वि सेविता सरिसा ।
संजोगो पुण ततिए, तत्थंतिमसुत्त वल्लीव ॥६४१८॥

सिस्सो भणति – मासिगादिसु पचसु सगलसुत्तगमेसु कसिणारूवणे त्ति ज सेवित त चेव सव्व दिण्ण, ण किंचि विज्झोसित । आदिमा पच वि सगलसुत्तगमा सगलसुत्तसामण्णओ एक्क सुत्त भवति ।

"बितिय" त्ति – बहुसाभिधाणसामण्णतो पच वि बहुससुत्ता बितियसुत्त भवति, तत्थ य सरिसावराहा मासादी बहुपडिसेविता ते य झोसियसेसा पढमसुत्तसमा चेव दिण्णा । एव एगदोसु सुत्तेसु इमो ततियसुत्तारभो किमत्थ भण्णति ?

आचार्याह – बहुवित्थरततियसुत्तप्पदरिसणत्थ, जतो भण्णति – "सजोगो पुण" पच्छद्ध ।

अहवा – सुत्ते उच्चारिते सिस्साह "णणु मासदुमासादिया पुव्वाभिहिता किं पुणो भण्णति' ?,

आचार्याह – ण तुम सुत्ताभिप्पाय जाणसि –

कसिणारुवणा पढमे, बितिए बहुसो वि सेविता सरिसा ।
संजोगो पुण ततिए, तत्थंतिमसुत्त वल्लीव ॥६४१९॥ कठ्या पूर्ववत्

जे अत्थतो सजोगसुत्ता भगविकप्पा वा तेसि भाणियव्वे इमो विही –

आदिमसुत्ते भणिते, पढमे सेसा कमेण सजोगा ।
अतिल्ले पुण भणिए, आतिल्ला अत्थओ पुव्व ॥१॥

मज्झे गहिए जे सेसगा तु ते उभयतो भवे णेया ।
तेसि पुव्वापुव्व, सेसा य ततो कमेण तु ।।२।।

विभासा – जत्थ सुतादिसजोगेसु भगेसु वा आदिल्ला सुत्ते भणिता तत्थ सेसा कमेण अत्थतो पच्छा भाणियव्वा । अह सुत्ते अतिल्ला पुव्व भणिया तत्थ अत्थतो आदिल्ला पुव्व भाणियव्वा । मह सुत्ते मज्झगहण कय तो अत्थओ सजोगा उभयो वि भाणियव्वा । इम ततिय सुत्त छव्वीसतिभेदभिण्ण, तत्थ अतिम पचमसजोगे सुत्त इम सुत्तेण गहिय, जे आदिमविगप्पा ते वल्लिदिट्ठतसामत्थओ गेज्झा, जहा वल्ली अग्गे घेत्तु आघट्टिता सव्वा समूलमज्झा आघट्टिज्जइ एव एतेण अतिमपचगसजोगसुत्तेण सव्वे आदिमा दुगादी सयोगा गहिया भवति, अतोऽयमिद सूत्रमारब्ध ।

तत्थ इमे दसदुगसजोगा, त जहा –

जे भिक्खू मासिय च दोमासिय च परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्ज अपलिउचिय आलोएमाणस्स मासिय च दोमासिय च

पलिउचिय आलोएमाणस्स दोमासिय तेमासिय च उच्चारेयव्व ।

जे भिक्खू मासिय च तेमासिय च । जे भिक्खू मासिय चउम्मासिय च ।

जे भिक्खू मासिय पचमासिय च । एव दो मासिय तेमासिय चाउम्मासिय पचमासिय च णेयव्व, तेमासिए चाउम्मासिय पचमासिया णेयव्वा, चाउम्मासिए पचमासिय णेयव्व, एते दस दुगसजोगा, एव तियसजोगे दस, चउक्कसजोगेण पच, एगो पचगसजोगो ।।६४१६।।

सो य इमेण सुत्तेणेव गहितो –

जे भिक्खू बहुसो वि मासियं वा, बहुसो वि दोमासियं वा बहुसो वि तेमासियं वा बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि पचमासियं वा एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयर परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचिय (बहुसो वि) आलोएमाणस्स मासियं वा दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा देज्जा ।
पलिउंचिय (बहुसो वि) आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा ।।सू०।।१४।।

एव चउत्थसुत्त ।

इमा से णिज्जुत्ती –

जे भिक्खू बहुसो मासियाइ सुत्तं विभासियव्वं तु ।
दोमासिय तेमासिय, कयाइ एक्कुत्तरा वुड्ढी ।।६४२०।।

बहुसो त्ति – त्रिप्रभृति बहुत्व । किं पुण त ?, बहुसो पडिसेवित मासियट्ठाण ति वुत्त भवति । "विभास" त्ति – व्याख्या, सा य कायव्वा, जहा बहु सगलसुत्ते तहा बहु सजोगसुत्ते वीत्यर्थ । जहा मासियट्ठाणा बहुपडिसेवाते कया तहा दोमासियतेमासियट्ठाणा वि, एव चउपचमासिया वि दट्ठव्वा, एगुत्तरवुड्ढीए तेसिं दुगादिसजोगा गहिता, सुत्ते पुण पचसजोगो गहिओ । जहा ततियसुत्ते अतिम-

सजोगेण दुगाइसजोगा गहिया तहा बहुससजोगसुत्ते वि अतिमसजोगेण दुगादि वा सजोगा सूइया । इह पि ते चेव छव्वीस सजोगसुत्ता, णवर – बहुसाभिहाणेण कायव्वा, एव एतेसु चउसु सुत्तेसु सभेदभिण्णेसु बावट्ठि सुत्ता भणिया । एते य उग्घायाणुग्घाएहि अविसेसिता भणिता ।।६४२०।।

इदाणि पुण एतेसि चेव विशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते —

उग्घाताणुग्घाते, मूलुत्तरदप्पकप्पतो या वि ।
संजोगा कायव्वा, पत्तेगं मीसगा चेव ।।६४२१।।

सगलसुत्ता पच, बहुससुत्ता पच, सगलसुत्ते य सजोगसुत्ता छव्वीस, बहुससुत्ते य सजोगसुत्ता छव्वीस । एते बावट्ठि सुत्ता उग्घायाभिहाणेण णेयव्वा । एते चेव बावट्ठि सुत्ता अणुग्घायाभिहाणेण णेयव्वा । एता तिण्णि बावट्ठीओ छासीय सुत्तसय । एत्थ तीस असजोगसुत्ता, सेसछपण्णसय पत्तेग सजोगसुत्ताण भवति ।

इदाणि उग्घाताणुग्घातमीसगाभिहाणेण सजोगसुत्ता भाणियव्वा ।

तेसिं इमो उच्चारणविही —

जे भिक्खू उग्घायमासियं च पलिउचियं च आलोए उग्घातमासियं च अणुग्घायदोमासियं च ।

एव उग्घायमासिय अमुयतेहि अणुग्घायदोमासियादि वि भाणियव्वा ।

एव चेव अणुग्घातमासिते उग्घायतो य दुगादिसजोगा भाणियव्वा ।।६४२१।।

एत्थ इम एगदुगादिपडिसेवणपगारदरिसणत्थ एगदुगादिसजोगफलआगतकरणदरिसणत्थ च भण्णति —

एत्थ पडिसेवणाओ, एक्कगदुगतिगचउक्कपणएहि ।
दस दस पंचग एक्कग, अदुग अणेगाओ णेयाओ ।।६४२२।।

'एत्थ" त्ति — अतिक्कते सजोगसुत्तसमूहे, अहवा – उग्घाताणुग्घातसजोगे वा वक्खमाणे मासदुमासिएसु एगादिपडिसेवणप्रकारा भवतीत्यर्थ । तत्थ उग्घातिएसु एक्कपडिसेवणाते पचप्पगारा ते य सुत्तसिद्धा चेव, तेण पच्छद्धेण न गहिया, दुगसजोगे दस, तिगसजोगे दस, चउक्कसजोगे पच, पचगसजोगे एक्को, एव अणुग्घातेसु वि एते पत्तेगसजोगा ।

इदाणि एतेसि मीसगसजोगो भण्णति – एत्थ एक्कादि उग्घातिगसजोगट्ठाणा पच वि अणुग्घातियसजोगेण पचगेण गुणित्ता जहासख इमे जाता ।

पणुवीस पण्णासा पण्णासा पणवीस पच य, एव उग्घातियाण एग दु-ति-चउ-पचसजोगेसु अणुग्घातियाण य एक्कगजोगे जात पणपण्णसय ।

पुणो उग्घातियाण एग दु-ति-चउ पचसजोगा अणुग्घातियदुगसजोगेहि दसहि गुणिया जहासख इमे जाता पण्णासा ।

सत, पुणो सत, पुणो पण्णासा, दस य, एव उग्घातियाण सव्वसजोगा अणुग्घातियाण दुगसजोगेहि मिलिया तिण्णि सया दसुत्तरा भवति ।

पुणो उग्घातियाण सव्वसजोगा अणुग्घातियतिगसजोगेहिं दसहि गुणिया तहि जहासख जाता पण्णासा, सत, सत, पण्णासा, दस य, एते वि सव्वे मिलिया दसुत्तरा तिण्णिसया भवति ।

पुणो उग्घातियसव्वसजोगो अणुग्घातियचउक्कसजोगेहिं पचहि गुणिता जाता जहासख पणुवीस पण्णासा पणुवीस पच य, एय पि मिलिय पणपण्णसय भवति ।

पुणो उग्घातियसव्वसजोगा अणुग्घातियसव्वसजोगेण एक्केण गुणिता जहासख पच दस दस पच एक्को य, एते सव्वे एक्कतीस, एव उग्घाताणुग्घातसगलसव्वसुत्ताण सखेवो णव सया एक्कसट्ठा ।

इदाणि बहुस्सुत्तेसु वि मीसा सुत्त सजोगा एतेण चेव विहिणा णव सया एगसट्ठा भवति, सव्वे मीसगसुत्ता सपिडिता अउणवीस सया बावीसुत्तरा भवति, एते चेव आदिमछासीसतसहिया एक्कवीस सय अट्ठुत्तरा भवति । जम्हा दुविहो अवराहो – मूलगुणे उत्तरगुणे वा, तम्हा एते सव्वे सगलसुत्ता सजोगजुता य मूलगुणावराहाभिहाणेण लद्धा, उत्तरगुणावराहाभिहाणेण वि एत्तिया चेव, जम्हा एव तम्हा एस रासी दोहि गुणितो जातो चत्तारि सहस्सा दो य सया सोलसुत्तरा ।

जम्हा एतेसु मूलुत्तरगुणेसु दप्पतो कप्पतो य अजयणाए अवराहो लब्भति तम्हा एस रासी पुणो दुगुणो कज्जति, कते य इम भवति – अट्ठ सहस्सा चत्तारि सता य बत्तीसाहिया भवति । एत्थ जा मीसगसुत्तसखा सा ततियचउत्थसुत्तेहितो उप्पण्णा सखेवओ भणिता ।

त चेव बहुवित्थर दरिसतो आयरिओ भणति "अदुव अणेगाओ णेयाओ" त्ति अथवा – ण केवल पडिसेवणाए एते सजोगसुत्तप्पगारा भवति ।

अण्णे वि अण्णण पगारेण पडिसेवणाए अणेगसुत्तप्पगारा भवति ता य पडिसेवणाओ "णेयाओ" त्ति णायव्वा इत्यर्थ ।

तेसु णिदरिसण इम –

जे भिक्खू पचराइदिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउचिय आलोएमाणस्स पच राइदिय ।

पलिउचिय आलोएमाणस्स सपचराइ मासिग दसग ।

एव दस पण्णरस वीस पणुवीसराइदिएसु वि सव्व भाणियव्व ।

एव बहुसाभिलावेण भाणियव्वा, एतेसु वि सजोगे सुत्ता भाणियव्वा ।

एव सामण्णतो भणितेसु पच्छा उग्घाताणुग्घायमूलुत्तरदप्पकप्पेसु अट्ठ सहस्सा चत्तारि सया य बत्तीससहिता पुव्वभिहाणेण अणूणमइरित्ता कायव्वा, एत्थ पणगादिराइदिया मासदुमासादिएहि सह ण चारेयव्वा, जम्हा उवरि पचमासातिरेगसुत्त भण्णिहिति, त च सातिरेग पणगादि सजोगा भवन्ति, स सयोगसूत्रैव भविष्यतीत्यर्थ ।

एत्थ चोदगो सगलबहुससजोगसुत्तेसु विगोवितमती भण्णति – "णणु बहुससुत्तावत्तिसु दुमासादिसुत्ता भणिया, अहवा – जत्थ परट्ठाणवुड्ढी दिट्ठा तत्थ दुमासादिया आवत्ती भवतीत्यत्र निदरिसण जहा एत्थेव दसमुद्दे सगे लतियसुत्ते तिविहे तवगेलणद्धाणे असथडे भणिय ।

एग दुग तिण्णि मासा, चउमासा पचमासा छम्मासा ।
सव्वे वि होति लहुगा, एगुत्तरवुड्ढिता जेण ॥

एव दुमासादिया एते आवत्तिसभवातो भवतीत्यर्थ । अहवा जम्हा बहुसु मासिएसु अपलिउचिय आलोएमाणस्स मासिय चेव दिट्ठ, दुमासियादिएसु वि अपलिउचिय आलोएमाणस्स दुमासातिया चेव, तम्हा वा दुमासादिसुत्ता पुढो कया, ता य आवत्तीओ एगादिदोमासदुट्ठदव्वाभावसकिलेसाओ वा भवति ।

तत्थ दव्वे सागारियपिडे मासियं, सागारियपिडे हडे दोमासियं, सागारियपिंडाहडउदउल्ले तेमासियं सागारियपिंडुद्दुमियउदउल्लाहडे चाउम्मासियं, सागारियपिंडुद्दुमिय उदउल्लाहडे पुढविमसचित्तपरंपरणिक्खित्ते य पंचमासियं, तम्मि चेव वयणसंथवसंजुत्ते छम्मासियं ।

भावतो मदति वतरज्झवसाण पडिसेवणातो मासदुमासादी आवत्तीतो भवति, अहवा – भावओ इमा चउभंगासेवणा

जं भिक्खू मासिए मासियं, मासिए अणेगमासियं ।

अणेगमासिए मासियं, अणेगमासिए अणेगमासियं ।

एवं मासस्स दुमासादिट्ठाणेहि वि सह चउभंगा कायव्वा ।

पच्छा दुमासादियाण वि सट्ठाण-परट्ठाणेहि चउभंगा कायव्वा ।

एत्थ पण्णरस चउभंगा भवंति ।

पढमचउभंगे बितियचउभंगादिसु सीसो इमं पुच्छति –

जहमण्णे बहुसो मासियाइं सेवित्तु वुड्ढती उवरिं ।
तह हेट्ठा परिहायति, दुविहं तिविहं च आम ती ॥६४२३॥
दुविहं च दोसु मासेसु मासो जाव सुद्धो तिविहं च ।
तिसु मासो जाव सुद्धो चसद्दा चतुसु पंचसु छसुत्ति एमेव ॥६४२४॥

"जह" त्ति जेण पगारेण अहं मण्णामि – चितेमि त्ति (अहं) मासियं पडिसेवेत्ता बहुसो मासियाइं सट्ठाणे पावति त्ति वुत्तं भवति, एवं मासियं सेवित्ता उवरि एगुत्तरवुड्ढी एग दुग ति चउ जाव पारंचियं पावति त्ति मण्णामि । किं वा हं मण्णे 'तह" त्ति एतेण पगारेण मासियं पडिसेवित्ता भिण्णमासादी 'हेट्ठाहुत्ति परिहाणी भवति जाव "पणगं" ति, अहवा – पारंचिओ 'हेट्ठाउ" त्ति परिहाणी जाव पणगं ति, "दुविहं" त्ति एवं दोमासियाठाणे वि पडिसेवित्ते उवरि वड्ढी जाव पारंचियं पावति, हेट्ठाओ वि मासादिपरिहाणी जाव पणगं ति, पारंचियाओ जाव पणगं ति, तिविहं चेति तिमासिए एवं उवरिहुत्ती वड्ढी हेट्ठाहुत्ति य परिहाणी भाणियव्वा, चसद्दाओ एवं सव्वपच्छित्तठाणेसु कायव्वं ।

आयरिओ भणति – "आम" ति,, आमशब्द अनुमतार्थो द्रष्टव्य ॥६४२४॥

पुणरप्याह चोदक –

केण पुण कारणेण, जिणपण्णत्ताणि काणि पुण ताणि ।
जिण जाणंते ताइं, चोदग पुच्छा बहुं णाउं ॥६४२५॥

चोदगो पुच्छति – केण कारणेण मासादीठाणे पडिसेविते पच्छित्तस्स वुड्ढी हाणी वा भवति त्ति ।

आयरिओ भणति – जिणपण्णत्ताणि वुड्ढिहाणि भावकरणाणि ।

सीसो पुच्छति – काणि पुण ताणि भावकरणाणि ।

आयरिओ भणति – रागद्दोसाणुवत्त्वरिवुड्ढीए मासियठाणपडिसेवणाते वि पच्छित्तवुड्ढी भवति, पच्छा वा हरिमायतस्स पच्छित्तवुड्ढी भवति सिंहव्यापादकस्येव । तेसिं चेव रागदोसादिहाणीए पच्छित्ते वि हाणी दट्ठव्वा, पच्छा वा हा दुट्ठक्तादीहिं भवति, शृगालव्यापादकस्येव ।

पुणो नोदको पुच्छति – जे मासिगादिठाणा पच्छित्ता ते आलोयकमुहातो चेव जे पुण रागादि भाववड्ढिणिप्फण्णा ते कह उवलब्भंति ?

आयरिओ भणइ – जिणा जाणंति ताइ, ते य जिणा केवलि-ओहि-मणपज्जव-चोद्दस दस णवपुव्वी य, एते णियमा जाणति – रागादिएहिं जहा वुड्ढी हाणी वा भवति, ज वा पच्छित्तमावण्णो जेण वा विसुज्झति पणगादित्तिट्ठाणपडिसेवणाए वि जाव पारंचियं देंति, पारंचियावत्तिठाणपडिसेविए वि परिहाणीए जाव पणग देंति ।

पुणो चोदगाह – जे छउमत्था कप्पपकप्पववहारधारी ते किं न जाणति ?, वुड्ढिहाणिणिप्फण्ण वा पच्छित्त कह वा जाणति ?

आचार्याह – ते वि जाणति तदुभइट्ठसुयणाणप्पमाणतो तिक्खुत्तो आलोयावेउ मासियमावण्णो बहुसु वा मासिएसु मासिय चेव देति ।

एत्थ पुणो चोदग पुच्छा – 'बहु मासिय" त्ति ज भणह, एयमह णाउमिच्छामि ॥६४२५॥

आचार्याह –

तिविहं च होइ बहुगं, जहण्णगं मज्झिमं च उक्कोसं ।
जहण्णेण तिण्णी बहुगा, पंचमयुक्कोम चुलसीता ॥६४२६॥

जे सुत्तणिबद्धा मासिया ते पडुच्च बहु तिविहं जहन्नमज्झिमुक्कोस, तत्थ जहण्ण तिण्णि मासा, उक्कोसेण पचमाससया चुलसीया, जे पुण चउरादी ठाणा पचसया तेसीया, एय मज्झिम बहु ॥६४२६॥

इदाणि जहा पच्छित्त दिज्जति तहा भण्णति, तहा मासिकादि जाव छम्मासा तात्र विणा ठवणारोवणाए सुत्तेण व दिज्जंति, सत्तमासिगादिगा पुणो मज्झिमा पच्छित्ता ।

उक्कोस च जहा दिज्जति तहा इमेहि दारेहि भण्णति –

ठवणा[1]संचय[2]रासी[3], माणाइ[4] पभू[5] य केत्तिया सिद्धा ।
दिट्ठा णिसीहनामे, सव्वे वि तहा अणाचारा ॥६४२७॥ दार

'ठवणासचय" त्ति दार, ठविज्जतीति ठवणा, ठवणग्गहणाओ य आरोवणा एत्थ गहिता, आ मज्जायाए रोवणा मासादि जाव छम्मासियादाण मित्यर्थ ।

"सचय" त्ति ठवणारोवणापगारेहिं अण्णोण्णमासेहिंतो दिण्ण सचिणितो जम्हा छम्मासा दिज्जति तम्हा छण्ह मासाण सचय त्ति सण्णा । अधवा – "सचय" त्ति ठवणारोवणाहि जे सचयमासा लद्धा ते ठवणारोवणप्पगारेण छम्मासा काउ दायव्वा ॥६४२७॥

इमेसि पुरिसाण –

बहुपडिसेविय सो या-वि अगीओ अवि य अपरिणामो वि ।
अहवा अतिपरिणामो, तप्पच्चयकारणा ठवण ॥६४२८॥

जेण अगीयत्थपुरिसेण बहुमासिठाण पडिसेवित अण्ण च अपरिणामगो अधवा – सो चेव अगीयत्थो अतिपरिणामगो, एतेसि दोण्ह वि पुरिसाण पच्चयकरणत्थ ठवणारोवणप्पगारेण छम्मासियपच्छित्त दिज्जति ॥६४२८॥

जे पुण एतेसिं पडिवक्खभूता पुरिसा तेसिं णो ठवणप्पगारेण दिज्जति ।

जओ भण्णति –

एगम्मिऽणेगदाणे, णेगेसु य 'एगणेगणेगा वा ।
ज दिज्जति तं गेण्हति, गीतमगीओ तु परिणामी ॥६४२६॥

चउभगविगप्पेण पच्छित्तदाणपढमभगे इमे गीयो अगीये परिणामगो अपरिणामगो अतिपरिणामगो य सव्वे सम्म पडिवज्जति, बितियादिभगेसु गीतो अगीतो वा परिणामगो एते दो वि ज जहा दिज्जति त तहा सम्म पडिवज्जति ।

चोदगाह – 'पच्छिमो णणु पढमसरिसो जतो अणेगेसु अणेगा चेव दिण्णा सव्वे इत्यर्थं", ।

आचार्याह – ण एव सुणेहि – जह महतधण्णरासीतो कस्स ति धण्णकुडवे दायव्वे, ज तत्थ कुडवे ठाति त दिज्जति, ज तत्थ न मायति त परिसडइ, एव सत्तादिमासपडिसेवणाए ण सत्तादिमासो चेव दिज्जति छम्मासाहिय पडिसाडित्ता 'अणेग" त्ति छम्मासा दिज्जति, अववादओ चउवुड्ढीए पचमासा दिज्जति, एव णो पढमभग इत्यर्थः ॥६४२६॥

अगीतो जो अपरिणामगो सो ततियभगे इम आसकेज्ज –

बहुएसु एगदाणे, सो च्चिय सुद्धो ण सेसगा मासा ।
अपरिणते तु संका, सफला मासा कता तेणं ॥६४३०॥

जइ बहुसु मासिएसु पडिसेविएसु थेव एक्को मासो दिज्जति तो सो अगीतो अपरिणामगो चित्तेणा सकिज्ज भासेज्ज वा जो मे दिण्णो मासो सो सुद्धो, सेसा जे मासा ते मे न सुद्धा तेण तस्स सामकपरिहरणत्थ सव्वमासाण ठवणारोवणप्पकारेण सम-विसम दिवसगहणेण सफलीकरण कय इत्यर्थः ॥ ४३०॥

बितियभगेसु ठवणारोवणमतरेण पच्छित्तदाणेण इमे दोसा –

ठवणामेत्तं आरोवण त्ति इति णाउमतिपरीणामो ।
कुज्जा तु अतिपसंगं, बहुगं सेवित्तु मा बियडे ॥६४३१॥

"ठवण" त्ति असब्भावठवणा, "मात्र" श द तुल्यवाची, असब्भावठवणाए तुल्य अपरमार्थभूत ज त भण्णति ठवणामेत्त, त च "आरोवण" त्ति इति उपप्रदर्शने, एव अतिपरिणामगो चितेज्जा भासेज्ज वा । अधवा – अकप्पसेवणाए वा पसग करेज्ज, अणुट्ठियाए वा बहुमासादिठाणे सेवित्ता आलोएज्ज, जम्हा बितियभगे बहु पच्छित्त ततियभगे थोव इत्यर्थः । जम्हा एते दोसा तम्हा ठवणारोवणप्पगारेण सव्वे मासा सफल करेत्ता छम्मासे दिज्जा से ॥६४३१॥

इदाणि ठवणारोवणप्पगारो भण्णति ।

तस्सिमे चउरो भेदा –

ठवणा वीसिग पक्खिग, पंचिग एगाहिता य णायव्वा ।
आरोवणा वि पक्खिग, पंचिग तह पंचिगेगाहा ॥६४३२॥

---

१ एगदाणमेगेण (व्यवहार भाष्य) ।

ठवणाठाणा चउरो, तेसिं आइभेदा इमे – वीसिया ठवणा, पक्खिया ठवणा, पचिया ठवणा, एगाहिया ठवणा। आरोवणा वि पक्खियारोवणा, पचियारोवणा, एगाहिया य आरोवणा ॥६४३२॥

ण णज्जए का आरोवणा, काय ठवणत्ति, कस्स जाणणत्थ इम भण्णति –

वीसाए अद्धमास, पक्खे पचाहमारुहेज्जाहि।
पचाहे पचाहं, एगाहे चेव एगाहं ॥६४३३॥

वीसाए ठवणा पक्खिआदी आरोवणा, पक्खियाए ठवणाए पचियादी आरोवणा, पचियादी ठवणाए पचियादी आरोवणा, पक्खियाए ठवणाए एगादियादि आरोवणा ॥६४३३॥

जहण्णुक्कोसदरिसणत्थ इम भण्णइ –

ठवणा होति जहण्णा, वीसं राइंदियाइ पुण्णाइं।
पण्णट्ठं चेव सयं, ठवणा उक्कोसिया होति ॥६४३४॥

सव्वजहण्णा ठवणा वीस राइदिया, ततो अण्णा पणवीसइ राइदिया, ततो अन्ना तीस राइदिया, एव पच पच वुड्ढीए णेयव्व जाव तीसइमा उक्कोसिया ठवणा पणट्ठ राइदियसत, ॥६४३४॥

एव आरोवणाए वि इमाओ –

आरोवणा जहण्णा, पनरसराइंदियाइ पुण्णाइं।
उक्कोसं सट्ठसय, दोहि वि पक्खेवओ पच ॥६४३५॥

"दोहिं वि" त्ति ठवणासु पच पच उत्तर करेतेण जहण्णाओ उक्कोसा पावेयव्वा इत्यथ ॥६४३५॥

आदियाण तिण्ह ठवणारोवणाण इम उत्तरलक्खण –

पंचण्हं परिवुड्ढी, ओवड्ढी चेव होति पचण्ह।
एतेण पमाणेणं, नेयव्वं जाव चरिमं ति ॥६४३६॥

जो पुण एक्किया ठवणारोवणाओ तेसिं उत्तर एक्को चेव परिठवति, उवरुवरि वुड्ढि उत्तर ओवड्ढि त्ति तीसतिमाओ ठाणाओ हेट्ठा पच्छाणुपुव्वीए हाणी जाव पढमठाण ति। एतेण पचगेण वा प्रमाणेन ताव णेयव्व जाव चरिम ति, पच्छिमा ठवणारोवणातो उक्कोसा इत्यथ। एक्केक्के ठवणाठाणे उक्कोसारोवणा जाणियव्वा ॥६४३६॥

लक्खण इम –

जाव ठवण उद्दिट्ठा, छम्मासा ऊणगा भवे ताए।
आरोवण उक्कोसा, तीसे ठवणाए णायव्वा ॥६४३७॥

छण्ह मासाण असीय दिवससत भवति, त ठवेत्ता पच्छा जाए ठवणाए पत्थइ अतिल्ल आरोवण जाणियत्तए त इच्छियठवण असीताओ दिवससयाओ सोहेज्जा, ज तत्थ सेस सा तीसे ठवणाए उक्कोसा आरोवणा भवतीत्यर्थ। जहा वीसियठवणा असीयसतातो सुच्चा सेस सट्ठ सत, त वीसितठवणाए उक्कोसिया आरोवणा, पक्खिया से जहण्णा। सेसाओ से अट्ठावीस अजहण्णुक्कोसा भवति। एव असीतातो सताओ पणुवीसिया ठवणा सोहिया सेस पणपण्ण सय पणुवीसियाए ठवणाए उक्कोसिया आरोवणा भवति, वीसिया से जहण्णा। सेसाओ से सत्तावीसमजहण्णुक्कोसिया। एव तीसादिसु वि उक्कोसारोवणलक्खण णयव्व ॥६४३७॥

इदाणिं उक्कोसठवणालक्खणं –

आरोवण उद्दिट्ठा, छम्मासा ऊणगा भवे ताए ।
आरोवणाए तीसे, ठवणा उक्कोसिया होति ॥६४३८॥

जहा पक्खिता आरोवणा असीतातो सताओ सुद्धा, सेसं पणसट्ठ सतं तं पक्खियआरोवणाए उक्कोसा ठवणा भवति, वीसिया से जहण्णा, सेसं अट्ठावीसं अजहण्णुक्कोसा भवति ।

एवं बितिए आरोवणाठाणे आढत्ते अतिरूत्तं तीसइमं ठाणं फिट्टति ।

ततिए आरोवणाठाणे आढत्ते एगूणतीसतिमं ठवणाठाणं फिट्टति, एवं एक्केक्के उवरिं उवरिं आरोवणाठाणे ठवणाण ओवड्ढीए एक्केक्कं ठाणं हुसेज्जा, जाव सट्ठिसयारोवणाए वीसिया चेव एक्का ठवणा भवतीत्यर्थ ॥६४३८॥

पढमे ठवणारोवणठाणे ठाणसखा इमा –

तीसं ठवणाठाणा, तीसं आरोवणाए ठाणाइं ।
ठवणाणं संवेहो, चत्तारि सया य पण्णट्ठा ॥६४३९॥

तीसं ठवणादिं काउं पंचुत्तरवुड्ढीए जाव पणसट्ठसतं ताव तीसं ठवणठाणा भवति, आरोवणासु वि पण्णरसाइं काउं पंचुत्तरवुड्ढीए चेव जाव सट्ठिसयं ताव तीसं चेव आरोवणाठाणा भवति, एतेसिं ठवणारोवणाण परोप्परं "संवेहो" त्ति संजोगा, तेसिं संजोगाण संखा इमा – चत्तारि सता पंचसट्ठा भवति ।

कहं ?, उच्यते – वीसियठवणाए पण्णरसादियारोवणठाणा जाव सट्ठं सयं ताव छम्मासाणयण-करणं कज्जति ।

एवं वीसियठवणाए तीसं आरोवणसंवेहा भवति ।

एवं पणुवीसियठवणाए पण्णरसादिया आरोवणठाणा णेयव्वा, जाव पणपण्णसयारोवण त्ति, एत्थ एक्कं आरोवणठाणं हुसितं ।

एवं तीसियठवणाए पण्णरसादि णेया जाव पण्णासं सतं, एत्थ दो आरोवणठाणा हुसिता ।

एवं उवरिठवणाए आरोवणा ओवड्ढीए एक्केक्कं ठाणं हुसेज्जा, जाव पणसट्ठसयठवणाए एक्का चेव पण्णरसिया आरोवणा भवतीत्यर्थः ॥६४३९॥

एयस्स ठवणारोवणसंवेहस्स सवग्गफलाण य णिमित्तं आयरिएहिं इमो सुहुमो सेढिग उवाओ उद्दिट्ठो –

गच्छुत्तरसंवग्गे, उत्तरहीणम्मि पक्खिवे आदी ।
अंतिमधणमादिजुयं, गच्छद्धगुणं तु सव्वधणं ॥६४४०॥

एतीए गाहाए इमा परिभासा गणियकरणं च, जम्हा पढमं आरोवणठाणं संवेहओ एक्कं लभति तम्हा तं चेव एक्कं आदी, जम्हा एक्कुत्तरवड्ढीए बितियादिआरोवणठाणा सव्वे लभति तम्हा पढमठवणाए उत्तरं पि एक्को चेव, जम्हा य पढमठवणाठाणवुड्ढीए तीसं ठाणा भवति तम्हा पढमठवणाए तीसं गच्छो ।

बितियाए ठवणारोवणठाणे तेत्तीसं गच्छो ।

ततियाए ठवणारोवणट्ठाणे पणतीसं गच्छो ।

चउत्थे ठवणारोवणट्ठाणे अउणासीतं सयं गच्छो ।

एतेसिं गच्छाण इमो आणयणोवाओ – ठवणारोवणविजुत्ता छम्मासा पचभागभत्तीया जे रूपजुता ठवणापदा तेसु चरिमादेसभागिक्को। छम्मासदिवसाण असीतसय त पढमेहि ठवणारोवणदिवसेहि विजुअ कज्जति, सेसस्स पचहि भागो हीरइ जे तत्थ लद्धा ते रूवजुता कगा, जावतियाते एवतिया पत्तेय ठवणारोवणपदा भवति। एत करण आदिल्लेसु ठवणारोवणठाणेसु। चरिमे पुण ठवणारोवणठाणे एसेव आदेसो, णवर एक्केण भागो हायव्वो त्ति।

इदाणि गणियकरण एक्को आदी, एक्को उत्तर, तीस गच्छो। गच्छो उत्तरेण सविग्गउ त्ति – गुणितो तीसा चेव जाता "उत्तरहीणे" त्ति – तीसाओ एक्को उत्तर पाडित जाया अउणत्तीसा। तम्मि आदि पक्खित्ता एक्को जाता तीसा चेव, एव वीसियाए ठवणाए, अत धण सह आदिल्लेहि लद्ध ति वुत्त भवति। आदी एक्को सो तीसाए पक्खित्तो जाता एक्कतीसा। 'गच्छद्ध" पण्णरस तेहि गुणिया एक्कतीसा जाता चत्तारि य सया पण्णट्ठा, पढमे ठवणारोवणट्ठाणे त सव्वधण ति। ॥६४०॥

अथवाऽयमन्यो विकल्प –

दो रासी ठावेज्जा, रूवं पुण पक्खिवेहि एगत्तो।
जुत्तो य देइ अद्धं, तेण गुण जाण सकलियं ॥६४१॥

दो रासि त्ति उवरि हेट्ठा य, तीसे ठवियाए एक्कत्थ रूव पक्खित्त जो रासी तत्थ "अद्ध देति" – तस्स अद्ध घेत्तव्व तेणद्धेण इतरो रासी गुणेयव्वो, एव वा सव्वसवेधफल देति ॥६४१॥

इदाणि सव्वट्ठवणारोवणाण दिवसमासाण य लक्खण सव्वाणुवातो भण्णति—

दिवसा पचहि भतिता, दुरूवहीणा हवंति मासाओ।
मासा दुरूवसहिता, पचगुणा ते भवे दिवसा ॥६४२॥

अस्यार्थ – "दिवस" त्ति वीसियठवणा दिवसा पण्णरसादियारोवणादिवसा य।

इम णिदरिसण – वीसियाए ठवणा पचहि भाए हिते भागलद्धा चत्तारि, ततो दोण्णि रूवा छेडिया जाया दोण्णि मासा, पण्णरसियाए आरोवणाए पचहि भागेहिते भागलद्धा तिण्णि मासा ते दुरूवहीणा कया जाओ एक्कमासो त्ति –।

इम दिवसलक्खण—एते वि य मासा लद्धा ते दुरूवसहिया काउ पचगुणा कायव्वा, ताहे मासेहिंतो दिवसग्ग पुव्विल्लपमाणसम आगच्छइ, एव सेसासु वि सव्वासु ठवणारोवणासु कायव्व ॥६४२॥

इयाणि जहा ठवणाहि छम्मासा काउ पच्छित्त दिज्जति तहा भण्णति

पढमा ठवणा वीसा, पढमा आरोवणा भवे पक्खो।
तेरसहिं मासेहिं, पंच तु राइंदिया झोसो ॥६४३॥

वीसियठवणा पण्णरसियारोवणाहि एयाओ कतिहिं मासेहिं सेविएहिं णिप्फण्णातो होज्ज ? दिट्ठ तेरसहि,

कह ? उच्यते –

ठवणारोवणदिवसमाणाउ विसोहित्तु ज सेस । इच्छियारोवणाए भाए असुज्झमाणे खिवे झोसो। छण्हमासाण असीत दिवसत भवति, तओ वीसिया ठवणा पन्नरसिया य आरोवणा सोहेयव्वा, सेस

पणयालसय, एयस्स पण्णरसियाए आरोवणाए भागो दायव्वो, जओ अद्ध भाग न देति त्ति ततोऽझोसो पक्खियव्वो, इम झोसपक्खेवलक्खण—"जत्तियमेत्तण सो सुद्ध भाग पयच्छए रासी, तत्तियमेत्त पक्खिव अकसिणरोवणाए झोसग्ग"। झोस त्ति वा समकरण ति वा एगट्ठ, एत्थ पचज्झोसा पक्खित्ता, पच्छा भागे हिते भागलद्ध दससा, एत्थ इम [1]करणलक्खणगाहापुव्वद्धेण भणइ—आरोवणा जतिभी ततिहि गुणाते करेज्ज भागलद्धा। ज एत्थ "पढम" त्ति – आरोवणा ततो एक्केण गुणिता दस दस चेव भवति, एत्थ—ठवणारोवणासहिता सचयमासा हवति "एवतिय" त्ति—पुव्वभणितमासाण य करणेण ठवणाए दो मासा आरोवणाए एक्को मासो, एते दससु पक्खित्ता जाया तेरस सचयमासा।

इदाणि इच्छामो णाउ "कत्तो कि गहिय ? ति, ठवणामासे ततो फेडेइ"।

सीसो पुच्छइ – तेरसण्ह सचयमासाण किं कत्तो मासाओ गहित जेण छम्मासा जाया ? कह वा करण कत ?

भण्णति – तेरसण्ह मासाण दोण्णि ठवणामासा फेडिता, तत्थ सुद्धा सेसा एक्कारस मासा जाता, एत्थ करण इम – "[2]जतिसु ठवणाए माससतियभाग करेइ ति पचगुण", तत्थ आरोवणाए एक्को मासो एक्कभागकत एक्कारस चेव ते तिपचगुण त्ति कायव्वा, तिण्णि य पच पण्णरस, तेहिं एक्कारसगुणिता जाता पचसट्ठ सय, एत्थ दोण्णि ठवणामासा पुव्वकरणेण दिवसे काउ पक्खित्ता वीस, जात पचासीत सय, एत्थ पचराइदिया झोसो कओ, सेस असीय सय।

अहवा – किंचि विसेसेण एय चेव अहऽण्णगाहा भण्णति – तेरसण्ह सचयमासाण इच्छामो णाउ एक्केक्काओ मासाओ कि गहिय जेण छम्मासा ? जता भण्णति – तेरसण्ह मासाण तिण्णि ठवणारोवणामासा फेडिता जाता तत्थ सुद्धा सेसा दस मासा, एएहिंतो एक्केक्काओ मासाओ अद्धमासो अद्धमासो गहितो, एते पच मासा, दोहिं ठवणामासेहिंतो दस दस रा दिया गहिता, आरोवणमासो एक्को, ताओ पक्खो गहितो, पच झोसो कओ। क प्रत्यय ? एत्थ गाहा – "[3]जइभि भवे आरुवणा" गाहा, एसा पढमठवणा, पढमसणेण करणलक्खण भणिय, आरोवणभागलद्धमासाण पण्णरसहिं गुणेयव्वा, ते दस मासा पण्णरसहिं गुणिता जाता पण्णासुत्तरसत, एतत्तो पचज्झोसा सोहितो सेस पणयाल सत। एत्थ ठवणारोवणादिवसा पक्खित्ता जाय असीय सय ॥६४४२॥

पढमा ठवणा वीसा, बितिया आरोवणा भवे वीसा।
अट्ठारस मासेहिं, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४४४॥

एया ठवणारोवणाओ असीयसयाओ सोहिया सेस चत्तालीससय, एयस्स वीसियाए आरोवणाए भागे भागलद्ध सत्त मासा आरोवणा, पुव्व करणेण "दोहिं मासेहिं णिप्फण्ण" ति काउ सत्तमासा दोहिं गुणेयव्वा जाता चोदसमासा, "दिवसा पचहिं भइया" गाहा ॥६४४३॥

एतेण करणेण दो ठवणामासा दो य आरोवणमासा णिप्फण्णा एए चत्तारि वि चोद्दसण्ह मेलिता जाता अट्ठारस मासा, कसिणा णाम जत्थ झोसो णत्थि। "कातो मासातो किं गहिय" ति एत्थ लक्खण जति एक्कातो मासातो णिप्फण्णा आरोवणा तो सेवियमासेहिंतो ठवणारोवणमासा सोहेयव्वा, अह दुगादि-मासेहिंतो णिप्फण्णा आरोवणा तो सेवियमासेहिंतो ठवणमासा चेव सोहेयव्वा णो आरोवणमासत्ति। इमा य बितियआरोवणा दोहिं मासेहिं णिप्फण्ण त्ति काउ अट्ठारसण्ह मासाण मज्झातो दोण्णि ठवणामासा सोहिता,

---

१ गा० आरूवणा जति मासा ततिभाग त करेति पचगुण ६४८४। २ गा० आरूवणा जइ मासा, सइभाग त करेति पचगुण ६४८४। ३ गा० ६४८५।

सेसा सोलस मासा। 'दोहिं मासेहि आरोवणा णिप्फण्ण'' त्ति काउ सोलस दुहा कायव्वा, एक्को अट्ठओ उवरिं बितिओ अट्ठओ हेट्ठा।

किं कारण एव कज्जति ?, उच्यते जओ इम भण्णाति –

"जतिभि भवे आरुवणा, तति भाग तस्स पण्णरसहिं गुणिए।

सेस पचहिं गुणिए, ठवणदिणजुता उ छम्मासा" ॥

पढमातो अट्ठगातो पक्खो पक्खो गहितो बितियातो अट्ठगातो पच पच राइदिया गहिता, ठवणामासेहितो दस दस राईदिया गहिता।

क प्रत्यय ? उच्यते – 'जइभि भवे आरुवणा'' गाहा जे सचयमासातो ठवणामाससुद्धा जइत्थी आरोवणा आरोवणातो वा जति मासा णिप्फण्णा ततिभागा कज्जति बितियआरोवणा दो वा आरोवणामास त्ति तेण सोलसमासा दुहा कता अट्ठ एत्थ एक्कम्मि अट्ठगे पण्णरसपच्छित्तराइदियागहिय त्ति पण्णरसगुणो कतो उ जात वीसुत्तर सय। बितियट्ठगाओ पच पच गहिय त्ति पच गुणितो जातो चत्तालीसा चत्तालीसा वीसुत्तरे सते पक्खित्ता जात सट्ठसय, एत्थ अवणीय ठवणमासाण दोण्ह दस दस राइदिय गहिय त्ति ते वीस पक्खित्ता जाय असीयसय ॥६४४४॥

पढमा ठवणा वीसा, ततिया आरोवणा उ पणुवीसा।

तेवीसा मासेहिं, पक्खो तु तहिं भवे झोसो ॥६४४५॥

एयाओ ठवणारोवणाओ असीयसताओ सुद्धा, सेस पणतीस सय। एयस्स पणुवीसारोवणाए भागो हायव्वो, जम्हा सुद्ध भाग ण देति तम्हा पक्ख पक्खिवित्ता भागलद्धा छम्मासा, तिहिं मासेहिं आरोवणा णिप्फण्णा तम्हा छम्मासातिगुणा कता जाया अट्ठारस मासा, ठवणारोवणमासपुव्वकरणेण उप्पाएत्ता तत्थेव पक्खित्ता जाता तेवीस सचयमासा।

एत्थ इच्छामो णाउ "कतो मासाओ कि पच्छित्त गहिय" ? उच्यते – सेवितमासेहितो दो ठवणामासा सोहिया, सेसा एक्कवीस मासा, एते तिहा ठविज्जति तिन्निसत्तगा पुजा कया तत्थ पढमपुजातो पक्खो पक्खो गहितो, अन्नेहिं दोहि सत्तगपुजेहिं पच पच राइदिया गहिया। दोहिं ठवणामासेहितो दस दस राइंदिया गहिया। क प्रत्यय ?, पढमसत्तग पण्णरसगुण काउ पक्खो सोहेयव्वो सेस णउती, सेसा दो सत्तगपुजा मेलिया चउदस भवति, एते चोद्दस पचगुणिया सत्तरी हवति, सत्तरी णउतीए मेलिया सट्ठ सत भवति, एत्थ वीस ठवणादिवसा पक्खित्ता ज त असीत सत ॥६४४५॥

एव एया गमिया, गाहाओ होति आणुपुव्वीए।

एएण कमेण भवे, चत्तारि सया उ पन्नट्ठा ॥६४४६॥

एव वीसियठवण अमुयतेण उवरुवरिं आरोवणाए पच पच पक्खिवतेण णेयव्व जाव अतिमा आरोवणा, एयासु इम करणविहाण कायव्व – असीयातो दिवससयाओ ठवणारोवणदिवसा सोहेयव्वा, पच्छा सेसस्स इच्छिआरावणाए भागो हायव्वो, जइ सुद्ध भाग ण देइ तो जावति ण सुज्झइ तावतिओ झोसो पक्खियव्वो पच्छा भागेहित भागलद्धा मासा जइहि मासेहिं आरोवणा णिप्फण्णा ततिहिं य भागलद्धा मासा गुणयव्वा, ठवणारोवणमासा तत्थेव पक्खियव्वा। एव पडिसेवणामासग्ग जाणियव्व। एत्थ ज इच्छति णाउ कतो मासाओ किं गहिय त हे सचयमासेहितो ठवणा सोहिता सेसा जे मासा ते जइहिं मसेहिं आरोवणा णिप्फण्णा तइए पुजे करेंति, तेसु एक्कातो पुजातो अद्धमासो अद्धमासो गहिओ, त पुण पण्णरसहि गुण, सेसा जे पजा ते एक्केहिं मिलित्ता तसु एक्केक्कातो मासातो पच पच राइदिया गहिया, एव सव्वत्थ

१ गा० ६४८५।

सेयालेउ कायव्व, एते दिणा मासीकता परोप्परमासाण मेलियव्वा, जइ भोसो पक्खित्तो तो सोहेयव्वो, ठवणामासा एत्थेव पक्खियव्वा एव छम्मासा भवति ।

क प्रत्यय ? पडिसेवणाणिमित्त जातो पुजातो अद्धमासो गहिओ त पुज पण्णरसहिं गुणिते सेसा पुजा एक वा जावतिय गहिय तावतिएण गुणेत्ता तत्थेव पक्खिवियव्वा, जति भोसो पक्खित्तो तो सोहेयव्वो, सेसठवणामासो दुरूवसहिओ काउ पचहिं गुणेत्ता ते दिवसा पक्खियव्वा ।

एव असीत दिवससत भवति ।

एव पणुवीसियाए ठवणाए पक्खियादिआरोवणातो कायव्वातो जाव पणपण्ण सत ।

एव तीसियाए वि ठवणाए पक्खियादियारोवणाओ जाव पण्णास सत भवति ।

एव ठवणाओ पणगवड्ढीए णेयव्वाओ जाव चरिमट्ठवणा आरोवणाओ पुण पणगहाणीए हावियव्वाओ जाव पक्खिया आरोवण त्ति । एयाओ सव्वाओ एतेण पुव्वभणियलक्खणेण पुहत्तिया काउ चत्तारि सया पण्णट्ठा गाहाण कायव्वा ॥६४४६॥ इति पढम ठवणारोवणट्ठाण सम्मत्त ।

इदाणि बितिय ठवणारोवणट्ठाण भण्णति—

दो रासी ठावेज्जा, रूवं पुण पक्खिवेहि एगत्तो ।
जुत्तो य देइ अद्धं, तेण गुणं जाण संकलियं ॥६४४७॥
तेत्तीसं ठवणपदा, तेत्तीसारोवणाए ठाणाइं ।
ठवणाणं संवेहो, पंचेव सया तु एगट्ठा ॥६४४८॥

कह तेत्तीस ठवणारोवणट्ठाणा भवति ?, उच्यते असीयातो दिवससतातो पढमा पक्खिया-ठवणा, पढमा य पचिया आरोवणा, एया सोहेत्ता सेसस्स पचहिं भागो, भागलद्ध बत्तीसा, तत्थ रूव पक्खित्त गुणिय भवति, एस गच्छो एक्को आदी एक्को उत्तर "गच्छुत्तर" गाहा ॥ (उ० २०—६४४१) पूर्ववत् ॥ तेत्तीस काउ पचसया एक्कसट्ठा भवति ॥६४४८॥

पढमा ठवणा पक्खो, पढमा आरोवणा भवे पंच ।
चोत्तीसा मासेहिं, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४४९॥

असीयाओ सयाओ एया ठवणारोवणाओ सोहेत्ता सेसस्स पचहिं भागो, भागलद्धा बत्तीस मासा, आरोवणा एक्काओ मासाओ णिप्फण्णति काउ एक्केण गुणिया, एत्तिया चेव, पण्णरसियाए ठवणाए पचहिं भागे भागलद्ध तिण्णि मासा, ते दुरूवहीणा कया जाव एक्को मासो । पचियाए वि आरोवणाए पचहिं भागो भागलद्ध एक्को मासो, एत्थ णत्थि दुरूवहीण तहा वि एत्थ मासो चेव घेप्पति, एए दो वि ठवणारोवणामासा बत्तीसाए मेलिया जाया चोत्तीस मासा ।

इच्छामो नाउ कत्तो कि गहिय ?, बत्तीसाए मासेहिं पच पच राइदिया गहिया, ठवणारोवण-मासेहिंतो ठवणारोवणदिवसा गहिया ।

क प्रत्यय ?, बत्तीसमासा पचहिं गुणिया काउ ठवणारोवणादिवसा पक्खित्ता असीय सत भवति । एक्क वा ठवणामास फेडित्ता तेत्तीस पचगुणा कायव्वा, ठवणादिवसजुत्ता य छम्मासा भवति ॥६४४९॥

---

१ पहोउया इत्यपि पाठ ।

पढमा ठवणा पक्खो, बितिया आरोवणा भवे दस ऊ ।
अट्ठारसहिं मासेहिं, पच य राइंदिया झोमो ॥६४५०॥

असीयातो सयाओ एयाओ ठवणारोवणाओ सोहेत्ता सेसे पच झोमे पक्खिवित्ता दसियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध सोलस मासा, आरोवणा एक्कातो मासाता णिप्फण्ण त्ति काउ एक्केण गुणिय जाता सोलस चेव, पण्णरसियाए ठवणाए पचहिं भागो भागलद्ध तिण्णि दुरूवहीणा कया जातो एक्को मासो, दसियाए आरोवणाए पचहिं भागो भागलद्ध दोण्णि, जत्थ दुरूवहीण न होइ आगास वा भवति तत्थ वि एक्को मासो नायव्वो, तेण एत्थ वि एक्को मासो, एते दो वि ठवणारोवण मासा सोलसण्ह मेलिता जाता अट्ठारस सचयमासा ।

कतो मासाओ कि गहिय ?, अट्ठारसण्ह मासाण सोलसहिं मासहिंतो दस दस राइदिया गहिया, ठवणारोवणमासेहिंतो ठवणा दिवसा गहिता ।

क प्रत्यय ?, सोलस मासा दस गुणा काउ, पच उ झोसो सोहियव्वो, सेसा ठवणारोवणदिवसा पक्खित्ता जाय असीय सय ।

अहवा – अट्ठारसण्ह एक्क वा ठवणामास फेडेत्ता दसगुणा कायव्वा, झोसो पच साहियव्वो, ठवणादिण सहिता छम्मासा हवति ॥६४५०॥

पढमा ठवणा पक्खो, ततिया आरोवणा भवे पक्खो ।
बारसहिं मासेहिं, एसा बितिया भवे कसिणा ॥६४५१॥

असीतातो सतातो एयाओ ठवणा सोहेत्ता सेस पन्नास सय, एयस्स पण्णरसियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध दस मासा, आरोवणा एक्काओ मासाओ णिप्फण्ण त्ति एक्केण गुणिय एत्तिय चेव, एत्थ दोण्णि ठवणारोवणमासा पक्खित्ता जाता बारस मासा ।

कतो कि गहिय ?, एक्केक्काओ मासाओ पक्खो गहिओ ।

क प्रत्यय ?, बारस मासा पण्णरसहिं गुणिया जात असीय सत, एत्थ सव्वत्थ सम गहण ॥६४५१॥

एवं एता गमिया, गाहाओ होंति आणुपुव्वीए ।
एएण कमेण भवे, पंचेव सया उ एगट्ठा ॥६४५२॥

एव पक्खिय ठवण अमुयतेण आरोवणाए उवरुवरि पच पच पक्खिवतेण आरोवणासु एक्केक्क ठाण परिहरितेण ताव णेयव्व जाव तित्तीसतिमा आरोवण त्ति । ताहे वीसिय ठवण अमुयतेण एव चेव णेयव्व जाव बत्तीसइमा आरोवणा । एव ठवणासु पच पच पक्खिवतेण आरोवणासु एक्केक्क ठाण परिहरतेण णेयव्व जाव पहोउयपुहत्तियकरणेण गाहाण पचसया एगमट्ठा जाता । सव्वत्थ जतीहिं मासेहिं आरोवणाणिप्फण्णा ततीहिं भागलद्ध गुणेयव्व सेस उवउज्जित्ता भणियव्व ॥६४५२॥ बितियठवणारोवण सम्मत्त ।

इदाणि ततिय भण्णति –

पणतीसं ठवणपदा, पणतीमारोवणाए ठाणाइं ।
ठवणाणं संवेहो, छ च्चेव सया भवे तीसा ॥६४५३॥

असीतातो सयाओ पंचिया ठवणा पंचिया आरोवणा य, एयाओ सोहेयव्वाओ, सेस सत्तरि सय, एयस्स पचहिं भागा भागलद्ध चोत्तीस एव पक्खित्त जाय पणतीस, एक्को आदिए एक्कोत्तर पणतीसतो गच्छो। गच्छुत्तर गाहा (उ० २०, ६४४०) पूववत् गणिएण आणेयव्वा छ मता तीसुत्तरा ॥६४५३॥

पढमा ठवणा पंच य, पढमा आरोवणा भवे पंच ।
छत्तीसा मासेहिं, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४५४॥

असातातो सयाओ पंचिय ठवणा पंचिया उ आरोवणा सोहिया सेस सत्तरि सत, एयस्स पंचियाए आरोवणातो भागो, भागलद्ध चोत्तीस मासा आरोवणा एक्काओ मासाओ णिप्फण्ण ति काउं एक्केण गुणिय एत्तिय चेव, पचयाए ठवणाए पचहिं भागलद्ध एक्को मासो, जत्थ दुरूवहीणा ण होंति तत्थ उ हवति साभाविय त्ति य वयणाओ एक्क एव मासो भवति । एव आरोवणाए वि, दोण्णि मासा चोत्तीसाए मेलिता जाया छत्तीस मासा ।

काओ किं गहियं ?, एक्केक्काओ मासाओ पच पच दिवसा गहिया एत्थ वि सव्वत्थ सम गहण ।

क प्रत्यय ?, छत्तीसहि मासेहिं पच गुणियव्वा जात असीय सत । अहवा – छत्तीसण्ह मासाण एक्को ठवणामासो फेडितो, सेसा पणतीस, ते पचगुणा ठवणदिवसजुता छम्मासा भवति ॥६४५४॥

पढमा ठवणा पंचा, बितिया आरोवणा भवे दस तू ।
एगूणवीस मासेहि पंच राइंदिया झोसो ॥६४५५॥

असीयातो सतातो पंचिया ठवणा दसिया आरोवणा एतातो ठवणारोवणाओ सो सुद्धेत्ता सेस पणसट्ठि सय, एत्थ पचज्झोसो पक्खित्तो, जात सत्तरि सय, एयस्स दसियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध सत्तरस मासा आरोवणा, एक्केक्कातो मासाओ णिप्फण्ण त्ति काउ एक्केण गुणिय एत्तिय चेव, ठवणादिवसा पचहिं भइया साभाविता मासो, आरोवणातो वि एक्को मासो, एते दो मासा सत्तरसण्ह मेलिता जाता एक्कोणवीस मासा ।

कतो किं गहियं ? ठवणामासातो पच राइदिया गहिया सेसेहिं अट्ठारसहिं मासेहिं एक्केक्कातो मासाओ दस दस राइदिया गहिता ।

क प्रत्यय ?, अट्ठारस दसगुणिता जात असीत दिवससत, एतातो पचतो झोसो सुद्धो, सेस पचसत्तरिसत, पच ठवणादिवसा मेलिता जात असीत दिवससत ॥६४५५॥

पढमा ठवणा पंचा, ततिया आरोवणा भवे पक्खो ।
तेरसहिं मासेहिं, पंच उ राइंदिया ज्झोसो ॥६४५६॥

असीतातो दिवससतातो पंचिय ठवण पण्णरसिय आरोवण एयाओ ठवणारोवणाओ सोहेत्ता सेस सट्ठि सय पच झोस पक्खिवित्ता पक्खित्तातो आरोवणातो भागो भागलद्ध एक्कारस आरोवणा, एक्काओ मासाओ णिप्फन्न त्ति काउ एक्केण गुणिय एत्तिय चेव पुव्वकरणेण ठवणारोवणमासे करेत्ता भागलद्धा दो मासा एते एक्कारसण्ह मेलिता जाता तेरस सचयमासा ।

कतो किं गहियं ?, बारसमासेहिं अद्धमासो गहिओ तेरसमासातो ठवणामासाओ पच राइदिया गहिता ।

क प्रत्यय ?, बारस पण्णरसेहि गुणित्ता पच झोसेहिं सोहेत्ता सेस पचहत्तर सत पच ठवणा दिवसा मेलिता जाय असीय सय ॥६४५६॥

एवं एत्ता गमिया, गाहाओ होंति आणुपुव्वीए ।
एएण कमेण भवे, छ च्चेव सयाइ तीसाइं ॥६४५७॥

एव पचिय ठवण अमुयनेण आरोवणाए पंच पंच उवरुवरिं पक्खिववतेण णेयव्वं जाव पणतीसइमा आरोवणा, ताहे पुणो दसिय ठवण काउ एव चेव नयव्व जाव चउतीसइमा आरोवणा ।

एव ठवणारोवणासु पच पच पक्खिववतेण एक्केक्क ठाण परिहावेतेण नेयव्व जतीहिं मासेहिं आरोवणा णिप्फण्णा तनीहिं भागलद्ध गुणेय व, सस उवउज्जित्ता णेयव्व ॥६४५७॥ ततियठवणारोवण ठाण गय ।

इदाणि चउत्थ भण्णति –

अउणासीतं ठवणाण सतं आरोवणाण तह चेव ।
सोलस चेव सहस्सा, दसुत्तरसयं च संवेहो ॥६४५८॥

कह ? उच्यते – असीतातो दिवससतातो पढमाठवणारोवणाओ एक्कियाओ सोहेयव्वाओ, सेस अट्ठहत्तरिसत, एयस्स एक्कियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध एत्तिय चेव रूवेण पक्खित्ते अउणासीत सय भवति ।

इयाणि संवेहकरणे इमे भण्णति – 'गच्छुत्तर' गाहा, एक्को आतो, एक्को उत्तर, अउणासीय सत गच्छो, पुव्ववत् गणिते कते आगत सोलसहस्साणि सत च दसुत्तर ॥६४५८॥

पढमा ठवणा एक्को, पढमा आरोवणा भवे एक्को ।
आसीतं माससत, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४५९॥

असीतातो सतातो एक्किया ठवण , एक्किया य आरोवणा सोहित्ता सेस अट्ठहत्तरसत एक्कियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध एत्तिय चेव । एत्थ एक्को ठवणामासो एगो आरोवणामासो पक्खित्ता जात असीय माससत ।

काओ कि गहिय?, एक्केक्काओ मासाओ एक्को दिवसो गहितो, एत्थ वि सव्वत्थ समग्गहण ॥६४५९॥

पढमा ठवणा एक्को, बितिया आरोवणा भवे दोण्णि ।
एक्काणउतीमासेहि, एक्को उ तहिं भवे झोसो ॥६४६०॥

एयाओ ठवणारोवणाओ असीतातो सयातो साहेत्ता सेस सत्तहत्तरि सय एयस्स अट्ठाए दुतियाए आरोवणाए भागो एक्क झोस पक्खिवित्ता भागलद्ध एगूणणउतिमासा एत्थ ठवणामासो आरोवणामासो य पक्खित्ता जाता एक्काणउति मासा ।

कातो कि गहिय ?, ठवणा मासा एत्थवि सव्वथाहतो एक्को दिवसो गहितो, णउतिमासेहिं दो दो वि दिवसा गहिता ।

क प्रत्यय ?, सचयमासेहिंतो ठवणामासो फेडितो सेसा णउईतो दोहिं गुणिया जाय असीय सय, एयातो एक्को सुद्धो सेस अउणासीत सत, एक्को ठवणादिवसो पक्खित्तो, एत्थ जाय असीत सत ॥६४६०॥

पढमा ठवणा एक्को, ततिया आरोवणा भवे तिन्नि ।
इगसट्ठीमासेहिं, एक्को उ तहिं भवेज्झोसो ॥६४६१॥

तहेव काउ जाव एक्कसट्ठि सचयमासा ।

काओ कि गहिय ? ठवणामासातो एक्केक्को दिवसो गहिओ, सेसेहिं सट्ठीए मासेहि तिण्णि तिण्णि राइ दिया गहिया ।

क प्रत्यय ? एक्कसट्ठिमासेहि एक्को ठवणामासो फेडितो सेसा सट्ठि, ते तिहिं गुणिता जात असीय दिवससत एक्को झोसा सुद्धो, सेस एगूणासीत सत, एक्को ठवणा दिवसो पक्खित्तो जाय असीय सत ॥६४६१॥

एवं खलु गमिताणं, गाहाण होंति सोलससहस्सा ।
सतमेक्कं च दसहिय, नेयव्वं आणुपुव्वीए ॥६४६२॥

एव एक्किय ठवण असुयतेण आरोवणाए उवरुवरि ठाणे एक्कसारोवयतेण ताव णेयव्व जाव चरिमा असुणासीयसयारोवणा ।

एव दुगिगादिठवणासु वि एगादि आरोवणा णेयव्वा ता जाव जस्स चरिम ति । एयाओ सव्वाओ पुव्वकयविहिणा कायव्वा जाव एक्केक्कपाहा (हो) इगणिबद्धरासिगगाहाण सोलस सहस्सा सत च दसुत्तर पुण्ण ति । एयासु ठवणारोवणासु मासकरण करेंतेण एगादियासु जाव चउरो पचसु भाग अदेत मासो चेव घेतव्वो ।

एव [1]पण्णरसगादिसु दुरूवे असुज्झते दसादिसु य दुरूवे असुद्धे आगासे जाते एक्को चेव मासो घेतव्वो, जाव चउदस, पण्णरसोवरि विकला जाव उणवीसाए वि एक्कातो मासातो णिप्फण्ण त्ति दट्ठव्वा ।

एव एक्कवीसादिसु केवलपणभागविसुद्धदुरूवहीणकयमासप्पमाणेहितो णिप्फण्णा दट्ठव्वा ।

एव सव्वत्थ सकलकरण करेंतेण कायव्व ।

अह भिण्णय ठवणारोवणकरण इच्छति तो इम कायव्व—एक्कियठवणाए एगादिआरोवणातो जाव पण्णरस ताव सगलकरण चेव कायव्व, जत्थ एक्किया ठवणा सोलसिया आरोवणा एता दो वि असीत-सतातो सुद्धा, सेस तेसट्ठिसत, एयस्स सोलसहिं भागो भाग सुद्ध ण देति त्ति तेरसपक्खित्ता भागलद्ध एक्कारस, ते ठविता, सगलच्छेदसहिया इम ११ । सोलसियारोवणाए पचहि भागो भागलद्ध तिण्णि, ते दुरूवहीणा कता सेसो एक्को मासो मासस्स य एक्को पचभागो । एस वण्णिओ मासो पचगुणो असो पक्खित्तो जाया छ पच भागा, एक्कियठवणाए वि हेट्ठा पचभागो छेदो दिण्णो १ ।

इदाणि आरोवणा भागलद्ध त आरोवणासासगुण कायव्व, ति काउ असा असगुणो छेदो छेदगुणो छहिं एक्कारसगुणिता पचहि एक्को गुणितो जाया छावट्ठि पच भागा ठवणारोवणमासस्सिय त्ति कायव्वा, एत्थ एक्को ठवणा पच भागो, छच्च आरोवण पचभागा पक्खित्ता, जाया सचयमासाण तेहुत्तरि पच भागा — ७३/५ ।

कत्तो कि गहिय ति ?, एक्को ठवणभागो फेडितो सेस आरोवणभागपरावत्तीए असा असगुणा, छेदो छेदगुणो भागे हिए ज लद्ध त दोसु ठाणेसु ठविय तत्थेगो रासी पण्णरसगुणो, बितितो आरोवणाए जति विगला दिवसा असीतेहिं गुणितो पक्खित्तो य ठवणादिवसजुत्तो झोसपरिसुद्धो असीय सत भवति, एव सत्तरस अट्ठारस अउणवीसियासु वि कायव्व, णवर—बितियरासी दोहि तीहिं चउहि गुणेयव्वो, वीसियाए

1 पगगा इत्यपि पाठ ।

सगलकरण कायव्व इगवीसियाए वि सव्व एय चेव कायव्व, णवर – ठवणभागफेडिएसु ज सेस त आरोवणभाग परावत्तिय गुणिय भागहियलद्धे तिसु ठाणेसु ठायव्व, तत्थेक्को रासी पण्णरसगुणो, बितिओ विगलदिवसगुणो, ततिओ पचगुणो, सव्वे एक्कट्ठा मेलिता ठवणदिणजुत्ता झोप'विसुद्धा असीत सत भवति।

एव बावीसियासु वि कायव्व, एगतीसादिसु वि एव, णवर – जइ वि विकलमासो लब्भति तति ठाणत्थ ठवेयव्व, आरोवणभागहियलद्ध जत्थ दो रासी ठाविता तत्थ एगो पण्णरसगुणो, बितितो णियमा-विगलदिवसगुणो, किं च सचयमासभागेहितो सचयठवणभागफेडियव्वा पक्खिवतेण पुण जइ ठवणादिणा तति सगला पक्खिवियव्वा मास वा दुरूवसहिय पचगुण असगहिय काउ पक्खिवेज्जा।

एव बितियादिठवणासु वि सोलसियादिआरोवणातो उवउज्ज कायव्वाओ इति ॥६४६२॥ ठवणासचए त्ति दार गत।

इदाणिं [1]रासि त्ति दार।

एस पच्छित्तरासी कओ उप्पण्णो ? अत उच्यते –

असमाहीठाणा खलु, सबला य परिस्सहा य मोहम्मि ।
पलिओवम सागरोवम, परमाणु तओ असंखेज्जा ॥६४६३॥

वीसाए असमाहिठाणेहिं, खलुसद्दो सभावणत्थे, किं सभावयति "असखिज्जेहिं वा असमाहि-ठाणेहिं" त्ति, एव एक्कवीसाए सबलेहिं, बावीसाए परिसहेहिं, अट्ठावीसतिविधाओ वा मोहणिज्जातो, अहवा–तीसाए मोहणिज्जठाणेहितो, एतेहि असजमठाणेहिं एस पच्छित्तरासी उप्पण्णो ।

सीसो पुच्छति – कत्तिया ते असजमठाणाइ ?, जत्तिया पलिओवमे वालग्गा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे। तो जत्तिया सागरोवमे वालग्गा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । तो सागरोवमवालग्गाण एक्केक्क वालग्ग असखेज्जखड कय । ते य खडा सववहारियपरमाणुमेत्ता, एवतिया असजमठाणा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, "ततो" त्ति एतेहितो असखेज्जगुणा दट्ठव्वा ।

अण्णे भणंति – "सुहुमपरमाणुमेत्ता खडा कता" । ते य अणता भवति, त न भवति, जतो असजमठाणा असखेज्जलोगागासमेत्ता भवति, सजमठाणा वि एत्तिया चेव ॥६४६३॥

[2]जे जत्तिया उ॰॰ गाहा ॥६४६४॥ कठ्या

रासित्ति॰ ॰ गाहा ॥६४६५॥ रासि त्ति गत ।

इदाणिं [3]"माण" त्ति, मीयते अनेनेति मान परिच्छेदो । त दुविह – दव्वे भावे य । दव्वे प्रस्थकादि ।

भावे इम –

बारस अट्ठग छक्कग, माणं भणितं जिणेहि सोहिकरं ।
तेण परं जे मासा, संभहण्णंता परिसडंति ॥६४६६॥

तित्थकरेहिं विविह पायच्छित्तमाण दिट्ठ, पढमतित्थकरस्स बारसमासा, मज्झिमतित्थकराण अट्ठ-मासा, वद्धमाणसामिणो छम्मासा, एत्तो अब्भहिय ण दिज्जति, बहुएहिं पडिसेवित पि एत्तिय चेव दिज्जति,

---

१ गा० ६४२७ । २–६४६४, ६५ अकमिते द्वे गाथे चूर्ण्यामुपरिनिर्दिष्टाकारेणैव समुल्लिखिते, मूल भाष्यप्रतौ तु न कोऽपि निर्देश । ३ गा० ६४२७ ।

धम्मयाए सुज्झति। जहा पत्थए मविज्जते ताव मविज्जति जाव तस्स सिहा आरुहति, सेस आरुभिज्जत पि अधिक परिसडति। एव छण्ह मासाण ज अधिय पडिसेवित त ठवणारोवणप्पगारेण सहण्णमाण परिसडति तित्थकरआणा य एमा अणुपालियव्व त्ति, जहा रण्णो अप्पणो रज्जे ज माण प्रतिष्ठापित जो ततो माणातो अतिरेगमूल वा करेति सो अवराही डडिज्जति, एव जो तित्थकराण आण कोवेति सो दीहसारी ॥६४६६॥ माण त्ति गय।

इदाणि "[1]पभु त्ति" पच्छित्ते दायव्वे पभु त्ति वा जोग्गो त्ति वा एगट्ठ।

को पुण सो ?, इमो –

केवल-मणपज्जवणाणिणो य तत्तो य ओहिनाणजिणा।
चोद्दस-दस-नवपुव्वी, कप्पधर-पकप्पधारी य ॥६४६८॥

केवलणाणी, मणपज्जवणाणी, ओहीणाणी, जिणसद्दो शुद्धावधिप्रदशक, चोद्दसपुव्वी, अभिण्णदस-पुव्वी, भिण्णेसु ओवड्ढीए जाव णवमपुव्वस्स ततिय आयारवत्थु कप्पववहारधरा, पकप्पो त्ति णिसीहऽज्झयण ॥६४६७॥

किं च –

घेप्पति चसद्देणं, णिज्जुत्तीसुत्तपेढियधरा य।
आणाधारणजीते, य होंति पभुणो य पच्छित्ते ॥६४६८॥

भद्दबाहुकयणिज्जुत्तीगाहासुत्तधरा णिसीहकप्पववहारपेढगाहासुत्तधरा य, अहवा—सुत्त धरति सुत्तधरा जे महाणिसीह महाकप्पसुतादि अज्झयणे य धरेंति। "आण" त्ति आणाववहारी धारणाववहारी जीयववहारी एते पच्छित्तदाणे पहुणो भवति ॥६४६८॥ पभु त्ति गत।

इदाणि "[2]केवत्तिया सिद्ध" त्ति दार।

सीसो पुच्छति – "केवतिया पच्छित्ता ?"

आयरियाह – दुविह पच्छित्तदरिसण – अत्यतो सुत्ततो अ। अत्थतो अपरिमाणा, सुत्ततो इहऽज्झयणे इमे –

अणुग्घाइयमासाणं, दो चेव सया हवंति बावन्ना।
तिण्णि सया बत्तीसा, होंति उग्घाइयाणं पि ॥६४६९॥

पढमुद्देसते अणुग्घातियमासातो सखित्ता दोण्णि सया बावण्णा भवते, बितिय ततिय-चउत्थ-पच-मुद्देसतेसु मासलहुआ पच्छित्ता ते सखित्ता तिण्णि सया बत्तीसा भवति ॥६४६९॥

पंच सता चुलसीता, सव्वेसि मासियाण बोद्धव्वा।
तेण पर वोच्छामि, चाउम्मासाण संखेवो ॥६४७०॥

उग्घातियमासाण अणुग्घातियमासाण एक्कतो सखित्ताण पच सया चुलसीता भवति। अतो पर चाउम्मासिते भणामि ॥६४७०॥

---

१ गा० ६४२७। २ गा० ६४२७।

छच्च सया चोयाला, चाउम्मासा य होतऽणुग्धाया ।
सत्त सया चउवीसा, चाउम्मासाण उग्घाया ॥६४७१॥

छट्ठ-सत्तम-अट्ठम णवम-दसम-एक्कारसमुद्देसए य चाउम्मासिया अणुग्घातिया छ सया चोयाला वुत्ता। (एतेसिं सव्वसखेवो) बारस-तेरस चोद्दस पन्नरस सोलस सत्तरस-अट्ठारस-एगुणवीसुद्देसएसु उग्घाया चउमासिया सत्त सता चउवीस वुत्ता (एतेसिं सव्वसखेवो) ॥६४७१॥

तेरस सय अट्ठट्ठा, चाउम्मासाण होंति सव्वेसिं ।
तेण परं वोच्छामि, सव्वसमासेण सखेवं ॥६४७२॥

चउलहुगाण वा चउगुरुगाण च सव्वसखेवो तेरस सता अट्ठसट्ठा, अतो पर मासचउमासाण सव्वसखेवग भणामि ॥६४७२॥

णव य सया य सहस्सं, ठाणाणं पडिवत्तिओ ।
बावन्नट्ठाणाइं, सत्तरि आरोवणा कसिणा ॥६४७३॥

सहस्स णव सता बावन्नहिया मासादीना प्रायश्चित्तस्थानानामित्यर्थ । "सत्तरि आरोवणा कसिणाउ" त्ति, को अस्याभिसबध ? उच्यते सुणु एसव सबधो 'केत्तिया सिद्ध" त्ति, केवतिता आरोवणाओ जहण्णाओ सिद्धा, उक्कोसा य सिद्धा, एव अजहण्णमणुक्कोसा य कसिणा अकसिणाओ य ।

तत्थ पढमे ठवणारोवणठाणे एक्का जहण्णा, वी (ती) स उक्कोसा, चत्तारिसया चउत्तीसा अजहण्ण मणुक्कोसाण ।

बितिया ठवणारोवणठाणे एक्का जहण्णा, तत्तीस उक्कोसा, सत्तवीसधिया पचसया मज्झाण ।

ततियठाणे एक्का जहण्णा पणतीस उक्कोसा, पचसया चउणउया मज्झाण ।

चउत्थे ठाणे एक्का जहण्णा, अउणासीत सय उक्कोसाण, पण्णरस सहस्सा णव य सया तीसुत्तर मज्झाण

पढमे ठवणारोवणठाणे सत्तरियारोवणा कसिणा झोसविरहिय त्ति वुत्त भवति ॥६४७३॥

ता य इमा—

सव्वासि ठवणाणं, उक्कोसारोवणा भवे कसिणा ।
सेसा चत्ता कसिणा, ता खलु णियमा अणुक्कोसा ॥६४७४॥

पढमे ठवणारोवणठाणे तीस ठाणाणि, तत्थ एक्केक्काए ठवणाए अतिल्ला आरोवणा उक्कोसिता भवति, सा य णियमा झोसविरहिया, एयाओ तीस, एतासिं मज्झा जातो आरोवणाओ झोसविरहिताओ ताओ चत्तालीस भवति, एया उक्कोसियाण मेलिताओ सत्तरि भवति, ॥६४७४।

कतराओ पुण ताओ चत्तालीस झोसविरहिताओ ? उच्यते—

वीसाए तू वीसं, चत्तसमीती य तिण्णि कसिणाओ ।
तीसाए पक्खपणुवीस तीस पण्णास पणसतरी ॥६४७५॥

वीसियाए ठवणाए वीसिया आरोवणा चत्तालीसिया असीता, एयाओ तिण्णि कसिणातो । तीसियाते ठवणाए इमातो पच आरोवणातो अझोसियातो पक्खिता पणवीसिता तीसिता पण्णासिया पचसत्तरीया॥६४७५॥

चत्ताए वीम पणतीस सत्तरी चेव तिण्णि कसिणाओ ।
पणतालाए पक्खो, पणताला चेव दो कसिणा ॥६४७६॥

पण्णाए पण्णट्ठी, पणपण्णाए तु पण्णवीसा तु ।
सट्ठिठवणाए पक्खो, वीसा तीसा य चत्ता य ॥६४७७॥

चत्तालीसियाए ठवणाए इमाते तिण्णि आरोवणाओ कसिणाता – वीसिता पणतीसिया सत्तरिया । पणयालीसट्ठवणाए इमाओ दोण्णि आरोवणा कसिणातो पक्खिता पणयाला य आरोवणा कसिणा (पणपण्णाए ठवणाए इमाते तिण्णि आरोवणाओ कसिणाओ – पण्णवीसा, पणपण्णा पणट्ठी ।) सट्ठिक्किताते [1]ठवणाते इमा चत्तारि आरोवणा कसिणा – पक्खिया वीसिया तीसिया चत्तालीसिया य ॥६४७७॥

सयरीए पणपण्णा, तत्तो पणसत्तरी य पन्नरसा ।
पणतीसा असितीए, वीसा पणुवीस पन्ना य ॥६४७८॥

सत्तरीए ठवणाए एक्का पणपण्णिया आरोवणा कसिणा । पणपन्नसत्तरियाए ठवणाए दो आरोवणा कसिणातो – पक्खिता पणतीसिया य । असीतिक्कियाए ठवणाए इमाओ तिण्णि आरोवणाओ कसिणाओ – वीसिया पणुवीसिया पण्णासिया य ॥६४७८॥

णउतीए पक्ख तीसा, पणताला चेव तिण्णि कसिणाओ ।
सतियाए वीस चत्ता, पचुत्तर पक्ख पणुवीसा ॥६४७९॥

दस उत्तर सतियाए पणतीसा वीस उत्तरे पक्खो ।
वीसा तीसा य तहा, कसिणाओ तिण्णि [2]वीसऽहिए ॥६४८०॥

णउतियाए ठवणाए तिण्णि आरोवणा कसिणा – पक्खिया तीसिया पणयालीसिया य । सतियाए ठवणाए दोन्नि आरोवणा कसिणा – वीसिया चत्तालीसिया य । पचुत्तरसतियाए ठवणाए दोन्नि आरोवणा कसिणा – पक्खिया पणुवीसिया य ॥६४७९॥

दसुत्तरगाहा दसुत्तरसतियाए ठवणाए एक्का पणतीसिया आरोवणा कसिणा । वीसुत्तरसतिया ठवणाए तिण्णि आरोवणा (कसिणा –) पक्खिया वीसिया तीसिया ॥६४८०॥

तीसुत्तरे पणुवीसा, पणतीसे पक्खिया भवे कसिणा ।
चत्ताले एगवीसा, पण्णासे पक्खिया कसिणा ॥६४८१॥

वीसियठवणाए तू, एयाओ हवंति सत्तरी कसिणा ।
सेसाणऽवि जा जत्तिय, नाऊणं ता भणिज्जाहि ॥६४८२॥

तीसुत्तरसतियाए ठवणाए एक्का पणुवीसिया आरोवणा कसिणा । पणतीसुत्तरसतियाए ठवणाए एक्केक्का पक्खिया आरोवणा कसिणा । चत्तालुत्तरसतियाए ठवणाए एगवीसा आरोवणा कसिणा । पण पण्णासुत्तरसतियाए एक्का पक्खिया आरोवणा कसिणा । एवं एयाओ सत्तरि कसिणाओ । सेसा पचाणउया तिण्णि सया ते अकसिणाओ भवंति । सेसासुवि तिसु ठवणआरोवणठाणेसु उवउज्जिऊण कसिणाऽकसिणप्पमाण भाणियव्वं ॥६४८२ ।

१–१ सत्तरियाते ठवणाए एक्का पन्नट्ठिता आरोवणा कसिणा । २ वीयाए (व्यव०) ।

अतो परं जेण एयाण सव्वासि सरूवं वण्णिज्जति तं भणामि –

सव्वासिं ठवणाणं, एत्तो सामण्णलक्खणं वोच्छं ।
मासग्गे भोसग्गे, हीणाहीणे य गहणे य ॥६४८३॥

"सव्वासि' त्ति – चउसु ठवणारोवणठाणेसु जातो ठवणारोवणाओ अण्णोण्णाणुवेहओ भवति ताओ य जहा णज्जति तहा तेसिं "सामण्ण" त्ति – पिंडिय अविसिट्ठ सखेवओ य लक्खणं भणामि – लक्खिज्जति ताण सरूवो जेण तं लक्खणं । "मासग्गे" त्ति – पडिसेवित, सचयमासाणामग्गं परिमाणमित्यर्थः । 'झोसग्गि" त्ति – सेवितमासाण उप्पत्तिणिमित्तमेव आरोवणादिवसेहिं भागे हीरमाणे कित्तिय पक्खेव काउं सुद्ध भाग दाहिति त्ति एयस्स लक्खणं भणियव्वं । "हीण" त्ति विसमग्गहणं तं सचयमासेहिं कहं भवतीत्यर्थः । अहीणग्गहणं नाम समग्गहणमित्यर्थः ॥६४८३॥

आरुवणा जति मासा, ततिभागं तं करे ति पंचगुणं ।
सेसं पचहिं गुणिए, ठवणदिणजुत्ता उ छम्मासा ॥६४८४॥

आरोवणाए जतिमासलद्धा सचयमासा ठवणामाससुद्धसेसा तइभागे काय वा, तत्थेगो भागो "तिपचगुणो" त्ति – पण्णरसगुणो कायव्वो, सेसा भागा सपिंडिया पचगुणा काय वा, ठवणा दिण जुता जति अहिया तो झोसविसुद्धा छम्मासा भवति, एयं कम्मं पण्णरसादिसु आरोवणासु कायव्वं, एगादिआरोवणासु पुण जाव चोद्दस ताव आरोवणदिणेहिं चेव गुणेयव्वं ॥६४८४॥

जतिमि (मि) भवे आरुवणा, ततिभागं तस्स पण्णरसहि गुणे ।
ठवणारोवणसहिता, छम्मासा होति नायव्वा ॥६४८५॥

"जतिभि" त्ति – जतित्थी आरोवणा पढम-बितिय-ततियादि वा, तत्थ जे सचया मासा लद्धा ते ठवणारोवणमासविसुद्धा जतित्थिया आरोवणा तत्तियभागत्था ते करेयव्वा, जति एगभागत्था तो पण्णरसगुणा ठवणारोवणसहिता झोसविसुद्धा छम्मासा भवति । अध णेगभागत्था तो एगभागो पण्णरसगुणो सेसा पचगुणा ठवणारोवणदिणसहिया छम्मासा क्वचिदेव वक्तव्य ॥६४८५॥

गुणकारेण कसिणाकसिणजाणणत्थं इमं भण्णति –

जेण तु पदेण गुणिता, होऊणं सो ण होति गुणकारो ।
तस्सुवरिं जेण गुणे, होति समो सो तु गुणकारो ॥६४८६॥

"पदेण" त्ति – एगदुगतिगादितेहिं, जेण आरोवणा "गुणिया होउ" त्ति – गुणिता सतीत्यर्थः । अहवा – ठवणादिणसजुत्ता 'होउ" त्ति ऊणा अहिया वा भवति त्ति, सो तस्स गुणकारो ण भवति, जहा पक्खिया आरोवणा दसहिं गुणिता वीसियठवणासजुत्ता ऊणा छम्मासा, एक्कारसगुणा अहिया भवति तो णायव्वं एतेसिं कसिणकरणं न होइ नास्त्येवेत्यर्थः । अकसिणत्वात्, "तस्सुवरिं" त्ति एक्कारसण्हं उवरिं ओमत्थग परिहाणीए पक्खिया आरोवणा "जेण गुणे" त्ति दसगुणिता तीसिय ठवणा होइ । "समो" त्ति छम्मासितो रासी, एत्थ सो दसको समकरणं पडुच्च गुणकारो भवतीत्यर्थः ।

एवं णवहिं अट्ठहिं सत्तहिं छहिं पचहिं चउहिं तीहिं बीहिं एक्केण य पक्खितं आरोवणं गुणउं जीए ठवणाए सजुत्ता छम्मासा भवति तत्थ सो गुणकारो णायव्वो तावतिया य पक्खियाए कसिणा लब्भति । एवं वीसियआरोवणादि, णवरं – अट्ठभागाओ ओमत्थियगुणकारो कायव्वो, एवं सेसाओ वि सव्वाओ

गुणकारेहिं वेयालियव्वाओ । अथवा—"जेण पदेण" एतीए गाहाए इम वक्खाग—जति दोहिं गुणा आरोवणा-दिवसेहिं पक्खित्तेहिं असीत सत ण पूरेति तो सो समकरणे गुणकारो ण भवति, ताहे समकरणत्थ तदुवरि तिमासादीण गुणकारणेहिं वेयालेयव्व ताव जाव जेण गुणिते ठवणाए पक्खित्ताए असीय सय भवइ, सो गुणकारो कसिणारोवणणिमित्त समो भवति । अह सव्वगुणकारा वेयालिए ऊण अहिय वा असीय सत भवति ताहे णायव्व ण एस गुणकारो, अकसिणा य एस णायव्व ति ।।६४८६।।

अहवा सव्वकसिणजाणणत्थ इम भण्णइ –

जतिहि गुणा आरोवणा, ठवणाए जुता हवति छम्मासा ।
तावतियारुवणाओ, हवंति सरिसाभिलावाओ ।।६४८७।।

जति गुणा आरोवणठवणाए पक्खित्ताए असीय सत भवति सा आरोवणा कसिणा णायव्वा, तव्विवरीया सव्वा अकसिणा, तेसु इम करण – जेण गुणा आरोवणा ठवणादिणसजुत्ता जत्तिएण ऊणा अहिया वा भवति त चेव तत्थ झोसग्ग, अकसिणा एसा णायव्वा ।।६४८७।।

किं च आलोयगमुहातो पडिसेवियमासग्ग सोउ त म सग्ग जाए ठवणाए सचयमाससम भवति त ठवणारोवण ठवेति ।

नत्थिम करण – उदाहरण, जहा—अट्ठावण्ण मासा आलोयगमुहातो उवलद्धा, तत्थ आयरिएण वीसिया ठवणा पण्णासमसतिमा आरोवणा ठविता, एयासि ठवणारोवणाण सत्तर दिवससत छम्मासिय असीयदिवससतमाणातो सुद्ध, सेसा दस एतेसि पण्णास सतित्थी आरो-वणाए भागो ण सुज्झति त्ति चत्ताल सत पक्खित्त, भागे हिते एक्को लद्धो, एसो एक्को अट्ठावीस-तिमआरोवणत्ति अट्ठावीसारोवणमास त्ति वा अट्ठावीसगुणो कतो जाता अट्ठावीस चेव ।

एत्थ चेव इम भण्णति –

ठवणारोवणदिवसे, णाऊण तो भणाहि मासग्गं ।
जं च समं त कसिण, जेणहियं तं च झोसग्गं ।।६४८८।।

ठवणारोवणाण मासे णाउ ताहे सचयमासग्ग भणेज्जाह, "एवतित" ति – दो ठवणामासा अट्ठावीस आरोवणमासा एते तीस, एते अट्ठावीसाए मेलियाए जाया अट्ठावण्ण सचयमासा, एव सव्वत्थ सचयमासग्ग भाणियव्व । जत्थ पुण आरोवणाए भागे हीरमाणे झोसविरहिय सम सुज्झति त कसिणति समेत्यर्थः, जत्थ पुण ण सुज्झति तत्थ जावतिएण चेव सुज्झति तावतिय चेव सझोसग्ग जाणियव्व ।।६४८८।।

ठवणारोवणदिवसेहिं मासुप्पादणकरण इम –

जत्थ उ दुरूवहीणा, ण होंति तत्थ उ भवंति साभावी ।
एगादी जा चोद्दस, एगाओ सेस दुगहीणा ।।६४८९।।

सव्वासि ठवणारोवणाण दिवसेहिंतो मासुप्पादणे तो णियमा पचहिं भागो हायव्वा, भागे हिते ज लद्ध त णियमा दुरूवहीण कायव्व, जत्थ दुरूवहीण ण होज्जा जहा एग दियासु ठवणासु जत्थ वा दुरूवहीण कते आगास भवति जहा दसराइदियासु तासु साभाविय" त्ति – ण तेसि कात्ति विकत्ती कज्जति, तत्तिया चेव ते तेहिं सचयमासा ठवणामासा परिसुद्धा गुणेयव्व त्ति, अहवा—"साभाविय" त्ति – ते एगादिसभाव भेदभिण्णा व सव्वे एक्कातो मासातो णिप्फण्णा इति, एव जाव चोद्दसिता आरोवणा ततो पर सेसासु पण्णरसियासु दुगहीणकरण लब्भति ।।६४८९।।

विकल्लेसु सकलकरणत्थ भण्णति –

उवरिं तु पंच भइते, जे सेसा के इ तत्थ दिवसा उ ।
ते सव्वे एगाओ, मासाओ होंति णायव्वा ॥६६६०॥

पण्णरसियाए उवरि सोलसमादियासु ठवणासु पचहि भागे हिते उवरि भागलद्धे सेसा एक्कगमादी दीसति, ते लद्धाण पूरणमेव णायव्वा, ण तेसि किचि सकलकरणे पुढो करण वज्जति, सो चेव एक्को मासो इत्यथ ॥६४९०॥

कह पुण ठवणारोवणमासेहि सव्व सचयमासेहि वा दिवसग्गहण कज्जति ?

एत्थ इम भण्णति –

होति समे समगहण, तह वि य पडिसेवणा व नाऊणं ।
हीणं वा अहिय वा, सव्वत्थ सम च गेण्हेज्जा ॥६४९१॥

होति सामण्णे ठवणारोवणाण दिवसमाण समे तेसु सम दिवसग्गहण भवति, सेसेसु मासेसु सम विसम वा ।

कह ? उच्यते – जहा सत्तिया ठवणा सत्तिया चेव आरोवणा, एत्थ पुव्वकरणेण छव्वीस सचय-मासा लब्भति, एत्थ ठवणारोवणमासेसु सत्तसत्तदिणा गहिया, जे पुण आरोवणाहि लद्धा मासा चउवीस तेसु एक्कातो मासाओ पच दिणा गहिता तम्हा दो तत्थ झोसा पडिता, सेसा जे तेवीस तेसु सत्त चेव दिणा गहिता।

एव समासु ठवणारोवणासु समग्गहण दिट्ठ, अण्णासु कत्थति जइ विसम ठवणारोवणदिवसमा । "तह वि य" त्ति—ण पुव्वकरण कर्तव्य । "पडिसेवणा" – पडिसेवणमासा भण्णति, ते य जे ठवणारोवणाए भागे हिते लब्भति ते पडिसेवणमासा ते णाउ जहा छम्मासा पूरति तहा ठवणारोवणासु हीणमतिरित्त वा दिवसग्गहण कायव्व । कत्थ ति ठवणादिहीण आरोवणाए अहिय । अण्णत्थ आरोवणाए हीण ठवणाए अहिय । जहा वीसियासु ठवणारोवणासु वीसियाठवणाए दस दस दिवसा गहिता, दोसु आरोवणामासेसु दुहाविभत्तेसु एक्कातो आरोवणामासातो पण्णरस गहिता बितियातो पच । एव अण्णासु वि भावेयव्व । "सव्वत्थ सम च गेण्हिज्ज" त्ति – जे आरोवणाहि हियभागलद्धा मासा जे य ठवणारोवणामासा सव्वेहितो गहण जहा पक्खिय-ठवणाए पक्खियाए आरोवणाए, एव पचितासु ठवणारोवणासु, तहा एक्कियासु ठवणारोवणासु दुगादिसु य ॥६४९१॥

विसमा आरोवणाए, गहणं विसमं तु होइ नायव्वं ।
सरिसे वि सेवितम्मि, जह झोसो तह खलु विसुज्झे ॥६४९२॥

जाओ ठवणातो दिवसमाणेण परोप्परतो विसमातो तासु जे सचयमासा लद्धा तेसु पडिसेवतेण जति विसरिसावराहसेवण कत तहवि दिवसग्गहण करतेहि विसम चेव दिवसग्गहण कायव्व, तासु इमा सविस मत्तणतो चेव विसमग्गहण भवति, एव विसमकसिणासु गहण दिट्ठ जा पुण विसमाऽकसिणासु गहण तत्थ य दिवसग्गहण करेतेण जहा झोसा विसुज्झति तहा कायव्व, "खलु" अवधारणे, झोसविसमार्थे, विशेष-प्रदर्शनार्थे वा ॥६४९२॥

एवं खलु ठवणाओ, आरुवणाओ समासओ होति ।
ताहि गुणा तावइया, नायव्व तहेव भोसो य ॥६४९३॥

आरोवणाओ समासओ त्ति सखेवओ भणिया, अहवा – पाढतर "आरोवणाओ विसेसओ होति" त्ति – एतेसि विसेसो हीणाहियदिवसग्गहणेण णायव्वो । अहवा – पाढतर "आरुवणाओ विसेसिता होति" त्ति ।

कह पुण ठवणाओ आरोवणाहितो विसेसिज्जति ?, उच्यते – जहा ठवणमाससुद्धे सेसमासा आरोवणमाससरिसभागकया ते पण्णरसपणगुणा य कया आरोवणादिणेहि वा गुणिया जाया एव आरोवणादिवसपरिमाणलद्ध तहा ठवणदिणपक्खेवेण छम्मासा पूरति त्ति सह पूरणवत्, एव ठवणादिणेहि विसेसिज्जतीत्यर्थ । "ताहि गुणा तावइय" त्ति – एग-दु तिमादिएहि सखाहि आरोवणा गुणिया ठवणादिणसजुआ जावतियासु छम्मासा भवति तावतिया उ कसिणा भवतीत्यर्थ । अथवा – "ताहि गुणा तावइय" त्ति – इच्छियठवणारोवणदिणेहि असीयसयपरिसुद्धेहि सेसस्स इच्छियारोवणाए भागे हिते जे लद्धा ते एगादि आरोवणमाससखाहि गणिया ठवणारोवणमाससजुआ "तावतिय" त्ति – सचयमासा भवति । अहवा – जत्थ सखित्ततर ठवणारोवणाहि विणा आरोवणकम्म काउ इच्छति तत्थ असीयसयस्स आलोयणमुहाओ जे उवलद्धा पडिसेवियमासा तेहि भागो हायव्वो, ते चेव सचया मासा, जइ सव्व सुद्ध तो कसिण णायव्व, ज च भागलद्ध त एक्केक्कमासातो दिवसग्गहण दट्ठव्व ।

क प्रत्यय ? उच्यते – जतो ताहि चेव भागहारगरासीहि भागलद्ध गुणित तावतिय त्ति असीय सत भवति, अह पडिसेवणमासेहि भागे हीरमाणे किंचि नत्थि विकल भवति ततो त भागलद्ध भागहारगसखमित्तेहि ठाणेहि णायव्व, तत्थ एक्कभागविकल पक्खिवे सेसा भागतोहि गुणति, जावतिता भागा तावतिमेत्तो रासी भागहारगुणो कज्जति, जो य विगलमस्सिस्सो भागो सो य तत्थ पक्खित्तो ताहे तावतिया चेव भवंति – असीतसतमित्यर्थं । "णायव्व तहेव झोसो य" त्ति – आरोवणाए भागे हीरमाणे असुज्झमाणे जो छेद स विसेसो झोसो णायव्वो ॥६४९३॥

कसिणाए रुवणाए, समगहणं तेसु होइ मासेसु ।
आरुवण अकसिणाए, विसम झोसो जह विसुज्झे ॥६४९४॥

जा कसिणा आरोवणा सा झोसविरहिय त्ति वुत्त भवति, तत्थ आरोवणभागहाररहियलद्धमासा जे तेसु एगभागत्थेसु सम दिवसग्गहण अह दुगादिभागत्थतो पत्तेय भागेसु समग्गहण दट्ठव्व, अकसिणारोवणातो णियमा तेसु मासेसु विसमग्गहण, न पुण विसमग्गह झोसवसेण भवति जहा झोसो विसुज्झतीत्यर्थ ॥६४९४॥

इद दिवसग्गहणलक्खण –

जइ इच्छसि नाऊण ठवणारुवणा य तह य मासहि ।
किं गहिय तद्दिवसा, मासेहिं तो हरे भाग ॥१॥
ठवणारुवणादिवसाण सतमासेहि सो य (भागो) हायव्वो ।
लद्ध दिवसा जाणे, सेस जाणेज्ज तब्भागा ॥२॥
जति णत्थि ठवणआरोवणा य णज्झति सेविता मासा ।
सेवियमासेहिं भए (वे) आसीय लद्धिमोग्गहिय ॥३॥ गतार्था

एवं तु समासेण, भणियं सामण्णलक्खण बीय ।
एएण लक्खणेणं, भोसेगव्वाओ सव्वाओ ॥६४६५॥ कंठ्या

कसिणाकसिणा एता, सिद्धा उ भवे पकप्पनामम्मि ।
चउरो य अतिक्कमादी, सुद्धा तत्थेव अज्झयणे ॥६४६६॥

पकप्पो त्ति णिसीह, सेस पुव्वद्धस्स कंठ । णिसीहणाम त्ति गय । इदाणि "सव्वे य तहा अतियारे" त्ति, अइयारगहणातो चउरो अतिक्कमादि दट्ठव्वा, तेवि तत्थेव णिसीहज्झयणे सपायच्छित्तसरूवा सिद्धा ॥६४६५॥

सव्वो एस पच्छित्तगणो अतिक्कमादिसु भवति । ते य अतिक्कमादी इमे –

अतिक्कमे वतिक्कमे चेव अतियारे तह अणाचारे ।
गुरुओ य अतीयारो, गुरुगतरो उ अणायारो ॥६४६७॥

अनिक्कमादियाण इम णिदरिसण – आहाकम्मेण णिमतिओ पडिसुणणे अतिक्कमे वट्टति, तग्गहणणिमित्त पयभेद करेइ वइक्कमे वट्टति, त गेण्हतो अतियारे वट्टति, त भुजतो अणायारे वट्टति । एतेसु जहक्कम पच्छित्त इम – ००० ङ्क । एते तवकालविसेसिता । अतियारठाणा अतिक्कमो गुरु, अनिक्कमतो वतिक्कमो गुरुतर ठाण, तओ वि गुरुओ अइयारो, ततो वि गुरुयतरो अणायारो । एव दोसट्ठाणपच्छित्त-कम्मबधेहि गुरुतरो क्रमश ॥६४६६॥

चोदकाह –

तत्थ भवे ण तु सुत्ते, अतिक्कमादी उ वण्णिया के ति ।
चोदग सुत्ते सुत्ते, अतिक्कमादी उ जोएज्जा ॥६४६८॥

चोदको भणति – तत्थ त्ति हत्थादिवायणतसुत्तगणेसु ण कत्थ ति अतिक्कमादी सुत्त वण्णिता दिट्ठा ? ।

आयरियो भणति – हे चोदग ! णायव्व सव्वसुत्तेसु अतिक्कमादी ण तुमे दिट्ठा ?, "जोएज्ज" ति आयरिएण भाणियव्वा ॥६४६८॥

जतो भण्णति –

सव्वे वि य पच्छित्ता, जे सुत्ते ते पडुच्चऽणायारं ।
थेराण भवे कप्पे, जिणकप्पे चतुसु वि पदेसु ॥६४६६॥

सव्वेसु वि अतिक्कमादिसु चउसु वि पदेसु थेरकप्पियाण पच्छित्ता णत्थि त्ति काउ ते जे पच्छित्ता सुत्ते भणिता ते सव्वे थेरकप्पियाण अणायार पडुच्च भणिया ।

कह ? उच्यते – जति पडिसुत्ते पदभेदातो णियत्त त्ति गहिय वा परिट्ठवेति तहावि सुज्झति, अह भुजति तो अणायारे वट्टतस्स पच्छित्त भवति । जिणकप्पियाण पुण अतिक्कमादिसु चउसु वि पदेसु पच्छित्त भवति, ण पुण एव काहिति ॥६४६६॥

अत्राह "जनि एव णिसीहे सिद्ध तो णिसीह् कतो सिद्ध ?" उच्यते –

णिसीहं णवमा पुव्वा, पच्चक्खाणस्स ततियवत्थूओ।
आयारनामधेज्जा, वीसतिमा पाहुडच्छेदा ॥६५००॥

पुव्वगतेऽन्तो पच्चक्खाणपुव्व णाम णवमपुव्व, तस्स वीस वत्थु वत्थु त्ति वत्थुभूत वीस अत्थाधिकारा, तेसु ततिय आयारणामविज्ज ज वत्थु तस्स वीस पाहुडच्छेदा परिमाणपरिच्छिण्णा, प्राभृतवत् अर्थच्छेदा पाहुडछेदा भण्णति, तेसु वि ज वीसतिम पाहुडछेद ततो णिसीह सिद्ध ॥६५००॥

चोदकाह् – सव्व साधूक्त, किन्तु –

पत्तेयं पत्तेय, पदे पदे भासिऊण अवराहे।
तो केण कारणेणं, दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०१॥

एगूणवीसाए उद्दसएसु पदेसु पदेसु पत्तेय पत्तेय केसु वि मासलहू पच्छित्ता, केसु वि मासगुरु, केसु वि चउलहु, केसु वि चउगुरु, एव सुत्तओ, अत्थओ पुण अवराहपदेसु पत्तेय पणगादि जाव पारचिय दात तह मगलबहुससुत्तपदविधि पत्तेय पत्तेय च दसेउ दारुदडगायपुछसलोमणिल्लोममादि सुत्तपदा पत्तेय वण्णेउ तो किं दोसा एगत्तमावण्णा ?, एगत्त णाम बहुसमासपदावण्णेसु एक्क चेव देह, अहवा – बहूहिं तहारिहेसु एक्क चेव छम्मास देह, गुरुसु वा लहु देह, लहुसु वा गुरुय, मासिए वा दुमासादि जाव पारचिय देह, पारचिए वा हेट्ठाहुत्त जाव पणग देह, त मा एव एगत्त करेह, जहा पत्तेय परूवणा आवत्ती य तहा पत्तेय दाण पि करेह, कारण वा वच्च ॥६ ०१॥

आचार्याह – सुणेहि एगत्तकारण –

जिण[1] चोद्दस[2] जातीए[3], आलोयण[4] दुब्बले[5] य आयरिए[6]।
एतेण कारणेणं, दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०२॥

जिण पडुच्च चोद्दसपुव्विमादि पडुच्च, एगा जाईए पडुच्च, पलिउचण आलोयण पडुच्च, दुब्बले पडुच्च, आयरिय पडुच्च, एते जिणादिए पडुच्च दोसाण एगत्त भवति ॥६५०२॥

एत्थ जिणादिएसु छसु जहक्कमेण इमे दिट्ठता –

घयकुडवो य जिणस्सा, चोद्दसपुव्विस्स नालिया होति।
दव्वे एगमणेगे, णिसज्ज एगा अणेगा य ॥६५०३॥

जिणेसु घयकुडदिट्ठतो, चोद्दसपुव्वीसु य णालियदिट्ठतो, जाईए एग अणेगदव्वदिट्ठतो, आलोयणाए एगाणेगणिसज्जदिट्ठतो, ॥६५०३॥

तत्थ जिण पडुच्च जहा दोसा एगत्तमावण्णा तहा वेज्जपउत्तेण घयकुडदिट्ठतेण भण्णति –

उप्पत्ती रोगाणं, तस्समणे ओसहे य विब्भंगी।
णाउं तिविहामइणं, देति तहा ओसहगणं तु ॥६५०४॥

"उप्पत्ति" त्ति रोगाण णिदाणकरण, तदित्यनेन रोगो सबज्झति, "समणे" त्ति रोगप्रशमन रोगापहारीत्यथ । तस्स किं (तोसहत) रोगपसमण ओसह, त जहावणातु विभगी, "विभगि" त्ति भगेण

ठित भगी तच्च नाण, ततो विगत त विभगी, सो य मिच्छद्दिट्ठी उप्पण्णओही भण्णति । "तिविहो" त्ति वाता पित्ता सिभओ वा तेसिं वा समवायातो सण्णिवातितो भवति । "आमइण" त्ति आमतो रोगो, सो आमतो जस्स अत्थि सो आमती मणुस्सो भण्णति, तस्स सो विभगी सव्वदव्वादिकिरिय जाणतो एगो रोगो ओसहसामत्थ जाणतो रोगिणो उवसमपण्णस्स तहा त घयाइतोसहगण देति जहा सेसो वातातिरोगो असेसा फिट्टति ।।६४०४।।

ओसहपयाणे य इमो चउभगो –

एगेणेगो छिज्जति, एगेण अणेग णेगहिं एक्को ।
णेगेहि पि अणेगा, पडिसेवा एव मासेहिं ।।६५०५।।

एक्कोसहेण छिज्जंति केति कुविता वि तिन्नि वातादी ।
बहुएहिं वि छिज्जंती, बहूहि एक्केक्कओ वा वि ।।६५०६।।

जहा एगेण घयकुडेण एगो वायातिरोगो छिज्जति, तहा एक्केण घयकुडेण "अणेगे" त्ति तिण्णि वायाइखुभिया मदणभावा छिज्जति त्ति । 'बहुएहि वि छिज्जति" त्ति बहुएहि वि घयकुडेहिं बहु चेव वायातीखुभियाइ छिज्जति । एस चरिमभगो । "बहूहि एक्केक्कओ वा वि" त्ति बहूहिं घयकुडेहिं अच्चत्थमवगाढो एक्केक्को वायाइ वाही छिज्जति । एस ततियभगो । एव जेण मासारुहेहिं रागाइएहिं मासो सेवितो सो मासेण सुज्झइ त्ति, जिणा तस्स मास चेव देति । बितियभगे बहुमासा पडिसेवित्ता मदाणुभावेण हा दुट्ठुकयादीहि य पयणुकया जहा मासेणेव सुज्झति त्ति जिणा तस्स चेव मास देति, जेण वा पणगादिणा सुज्झति त देति । ततियभगे तिव्वज्झवसाणसवितें मासे रागादीहिं वा हरिसायनस्स मासेण ण सुज्झति त्ति जिणा णाउ दुमासादी देति, रागुवरवरि वड्ढिते जाव पारचिय देति । चरिमभगो पुण पढमसरिच्छो । अहवा – बहुसु सचयमासेसु जिणा छम्मास चेव देति ठवणारोवणवज्ज, एव अणेगेसु वि ओसहेसु चउभगो भाणियव्वो ।।६५०६।।

इमो दिट्ठतोवणतो –

धण्णंतरितुल्लो जिणो, णायव्वो आतुरोवमो साहू ।
रागा इव अवराहा, ओसहसरिसा य पच्छित्ता ।।६५०७।।

जहा धण्णतरी तहा जिणो, जहा रोगी तहा साहू सावराधी, जहा ते रोगा तहा ते मुलुत्तर गुणावराहा, जहा ताणि ओसहाणि तहा मासादी पच्छित्ता । एव जिणा णाउ जत्तिएणेव सुज्झति तत्तिय चेव देति । एव जिण च पडुच्च दोसा एगत्तमावण्णा ।।६५०७।।

इदाणि [1]चोद्दसपुव्वि पडुच्च जहा दोसाण एगत्त तहा भण्णति –

एसेव य दिट्ठंतो, विब्भंगिकतेहि वेज्जसत्थेहिं ।
भिसजा करेति किरियं, सोहंति तहेव पुव्वधरा ।।६५०८।।

जहा विभगी रोगोसह चउभगा विकप्पेण अवितह किरिय करेति । "भिसज" त्ति – वेज्जा ते वि तहा विभगीकयवेज्जितसत्थाणुसारेण चउविकप्पेण अवितह रोगावणयणकिरिय करेंति । "एसेव दिट्ठतो" त्ति – एमेव चोद्दसपुव्वीण दिट्ठतो कज्जति, जहा ते वेज्जा तहा चोद्दसपुव्वधरा, परिहाणीए जाव पुव्वधरा, परिहाणि णाम णवपुव्वततियवत्थु ति, एए वि जिणाभिहितागमाणुसारओ जिणा इव अवितह जेण विसुज्झति त चेव पच्छित्त देति ।।६५०८।।

---

1 गा० ६५०२ ।

चोदकाह – "जिगा केवलणाणसामत्थनो पच्चक्ख रागादियाण वड्ढोवड्ढि पस्सता तहा पच्छित्त देंति, चाद्दसपुव्वी अपच्छुतो कहिं दिज्ज" ?

अत्रोच्यते –

णालीत परूवणता, जह तीइ गतो उ णज्जती कालो ।
तह पुव्वधरा भाव, जाणंती सुज्झते जेणं ॥६५०६॥

"णालीत" त्ति – घडितो उदगगलणोवलक्खित्तो कालो, तीए य घडियाए परूवणा कायव्वा, जहा [1]पलित्तयंकए कालणाणे, जहा तीए दिव रातिकालस्स य किं गत सेस वा णज्जति तहा पुव्वधरा दुरूवलक्ख भाव आगमप्पमाणतो जाणति, भावे य णाए जेण पच्छित्तेण सुज्झति [2]तम्मत्त हीणमहिय वा चउभग विगप्पेग जिगा इव पुव्वधरा वि देति, एव चोद्दसपुव्वीए पडुच्च दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०६॥ चोद्दसपुव्वीण णालिय त्ति गय ।

इदाणिं जाति पडुच्च दोसा जहा एगत्तमावण्णा तहा भण्णति । अत्र वावय [3]"दव्वे एगमणेग" त्ति, जाती दुविहा – पच्छित्तजाती दव्वजाती य ।

एत्थ इमे भण्णति –

मासचउमासिएहिं, बहूहि एगं तु दिज्जए सरिसं ।
असणादी दव्वाओ, विसरिसवत्थूओ जं गुरुगं ॥६५१०॥

तत्थ पच्छित्तेक्कजातिय बहूसु लहुमासिएसु सरिसत्तणओ – [4]धम्मयए एक्क चेव मास दिज्जति, एक्क गुरुअ दिज्जति, लहुगुरुसजोगे गुरुअ एक्क ओहाडण दिज्जति, एव दु-ति-चउ-पच-छम्मासिएसु वि सव्वेसु वा आवण्णस्स छम्मासिय एक्क दिज्जति । दव्वेगजातीए 'असणादी" पच्छद्ध, एक्कम्मि वा दव्वे अणेगेसु वा दव्वेसु अणेगा पच्छित्ता, "तत्थिवक्कदव्व" त्ति – असण त अणेगदोसपुट्ठणिप्फसिण, जहा त असण रायपिडो आहडो उदउल्लो आहाकम्मिओ य, एत्य एक्क चेव ओहाडण गुरुतर आहाकम्मियणिप्फण्ण चउगुरु दिज्जति, "अणेगदव्वेसु वि' ति – असण आहाकम्मिय, पाण बीयादिवणस्सतिसघट्ट, खातिम पूतिम, सातिम उद्देसिय, अहवा–अणेगदव्वा एक्क असण आहाकम्मिय अण्ण असण कीयगड, अण्ण ठविय एव पाणादिया वि भाणियव्वा, एत्थ विसरिसवत्थुसु ज आहाकम्मादि गुरुतर त दिज्जति सेसा तदतभावपविट्ठा दट्ठव्वा । एत्थ केति अगारिदिट्ठत वहेति, "दोसु वि अविरोहो" त्ति – अम्हे आलोयणाए भणिहामो, एव जातीए एगत्तमावण्णा दोसा, एत्थ धम्मताए सुज्झति । अहवा – जहा अतिपक्कावणयणपयुत्तो खारजोगो सेसमल पि सोहेति तहा ओहाडणपच्छित्त पि ससेपच्छित्ते सोहेति ॥६५१०॥ "[5]जातीए' 'दव्वे एगमणेगे" त्ति पय गय ।

इदाणिं [6]आलोयणादिया तिण्णि दारा भण्णति, तेसि इमे दिट्ठता –

आगारिय दिट्ठंतो, एगमणेगे य तेण अवराहा ।
भंडी चउक्कभगो, सामियपत्ते य तेणम्मि ॥६५११॥

आलोयणाए आगारिदिट्ठतो, तेण दिट्ठता य । दुब्बले भडिदिट्ठतो । आयरिए सामित्तपत्त, तेग दिट्ठतो ॥६५११॥

---

१ पादलित्तसूरिकृते । २ त सम । ३ गा० ६२७ । ४ मदपरिणामतया, इत्यपि पाठ । ५ गा० ६५०२ । ६ गा० ६५०३ ।

तत्थ आलोयणविगप्पा इमे –

णिमेज्जा य वियडणे, एगमणेगा य होति चउभंगो।
वीसरिओसण्णपदे, बिति तति चरिमे सिया दो वि ॥६५१२॥

"वियडण" त्ति – आलोयणा – एक्का णिसिज्जा, एक्का आलोयणा, एव चउभगो। तत्थ पढमो विधीए अविग्घेण असेसाइयारे आलोयगस्स।

बितिओ पम्हट्ठाइयारस्स मायाविणो वा, आलोचियवदिएसु पुणो पच्छा सम्मालोयणपरिणयस्स गुरुम्मि तह णिविट्ठे चेव वदण दाउ आलोवेति तस्स भवति।

ततियभगो बहुणा कालेण उस्सण्णवराहपदस्स वहुपडिसेविस्स वा एगदिण आलोयण अवधारेंतस्स, अहवा – गुरुम्मि वा काइगभूमिगतपच्छागते तत्थ णिसीदण णिमेज्जा एक्का एव आलोयणा भवति।

चरिमभगे दो वि सभवत्ति अवराहा विस्मरण उस्सण्णपदत्तण च ॥६५१२॥

एत्थ चउसु वि भगेसु अमायाविणो अणेगावराहस्सऽवि गुरुनर एक्क पच्छित्त इमेण अगारिदिट्ठतेण –

एगावराहडंडे, अण्णे वि कहेतऽगारि हं मती।
एवं णेगपदेसु वि, डडो लोउत्तरे एगो ॥६५१३॥

जहा एगो रहगारो। तस्स भज्जाए बहू अवराहा कया, ण य भत्तुणा णायव्वा। अण्णया घर अवाउडदार मोत्तु पमायओ मेज्झिलियघरे ठिता। तत्थ य घरे साणो पविट्ठो। तस्समय च भत्ता आगओ। तेण दिट्ठो। पच्छा सा अगारी आगया। त अवराहि त्ति काउ पिट्टिउमारद्धो। सा वि चिंतेइ अण्णे वि मे बहू अवराहा अत्थि, ते वि मे णाउ एमम पुणो पिट्टेहिति त्ति [1]इमेण मे ते सव्वे कहेमि।

भणाति –

गावी पीता वासी, त हारिता भायणं पि ते भिण्ण।
अज्जेव ममं सुहत, करेहि पडवो वि ते हरिओ ॥६५१४॥

गावी वच्छेण पीया, कसभायणमण्ण वा भग्ग, एवमादिअवराहे स एक्कसरा कहिएसु तेण सा त एक्कवार पिट्टिता। एव लोउत्तरे वि अणेगावराहपदावण्णेसु एगो पच्छित्तदडो अविरुद्धो। ॥६५१४॥

अधवा – एत्थेव आलोयणत्थे इमो दिट्ठतो –

णेगासु चोरियासु, मारणडंडो न सेसगा डंडा।
एवं णेगपदेसु वि, एगो डंडो ण उ विरुद्धो ॥६५१५॥

एगो चोरो। तेण य बहुगाणीना चोरिया कयाओ। कस्स ति भायण हरिय, कस्स ति पडओ, कस्स ति हिरण्ण, कस्स ति सुवण्ण। अण्णया तेण राउले खत्त खय, रयणा गहिया, गहिओ य सो आरक्खेण रण्णो उवट्ठविओ।

१ इच्छे (इयाणिं)।

तस्समय अण्णे उवट्ठिना भणति – अम्ह वि एतेण हड ति।

रण्णा रयणहारि त्ति काउ सेसचोरियाओ य णाउ तस्स मारणदडो एक्को आणत्तो, सेसचोरियदडा तत्थेव पविट्ठा।

एव लोउत्तरे वि अणेगपदेसु एगडडो अभिकुट्ठो।

बितियभगे मायाविणो पुणो आलोएतस्स अण्ण ति पच्छित्त दिज्जति। एव जत्तिया वारा माई आलोएति तत्तिया पच्छित्ता।

ततियभगे असढस्स जद्दिवस आलोयणा [1]समप्पति तद्दिवस एगपच्छित्त दिज्जति।

चरिमभगे तेण णिसेज्जा कया आलोइय च भणति य सम्मत्ता मम आलोयणा, दिण्ण पच्छित्त, उट्ठिता गुरू, पुणो सभरिय तक्खण चेव णिसज्ज काउ पुणो य आलोइय, ताहे गुरू असढस्स भणति त चेव ते पच्छित्त, असढभावा अण्ण ण देइ। अहवा – साधूण देवसियालोयणकाले गुरूण अणेग णिसिज्जा साधूण अणेगा आलोयणाओ, एव आलोयण पडुच्च एगत्तमावण्णा ॥६५१५॥

इदाणि [2]दुब्बल पडुच्च भण्णति। तत्थ [3]भडीचउक्कभगदिट्ठतो। भडी बलिया बइल्ला बलिया, एव चउक्कभगो। पढमभगे बहु आरुभिज्जति, सेसेसु तिसु भगेसु इमा विभासा – बितिय भगे ज बइल्ला सक्कति कड्ढिउ तत्तिय आरुभिज्जति। ततियभगे जेण भडी ण भज्जति। चरिमभगे उभय पि जत्तिय तरति तत्तिय आरुभिज्जति।

एयस्सिमो उवणओ –

संघयण जह सगडं, धिती उ धुज्जेहि होति उवणीतो।
बिय तिय चरिमे भंगे, तं दिज्जति ज तरति वोढुं ॥६५१६॥

सगडसरिच्छ सघयण धितियबल बइल्लतुल्ल, एत्थ वि चउभगो। पढमे सव्व दिज्जति, बितिए धितिअणुरूव, ततिए सघयणाणुरूव, चरिमे उभयाणुरूव, ज तरति तत्तिय दिज्जति ॥६५१६॥ एव दुब्बल पडुच्च दोमाण एगत्त।

इदाणि [4]आयरिय पडुच्च भण्णति "[5]सामिपत्तेयत्तेणम्मि" त्ति –

णिवमरण मूलदेवो, आसऽहिवासे य पट्ठि ण तु डंडो।
संकप्पियगुरुदंडो, मुचति ज वा तरति वोढुं ॥६५१७॥

एगत्थ णगरे राया अपुत्तो मओ, तत्थ य रायचिंतगेहि देवयाराहणणिमित्त अस्सो य हत्थी य अहियासिओ। इओ य – मूलदेवो चोरिय करेतो गहिओ, तेहि रज्जचितगेहि वज्झो आणत्तो, णगर हिंडाविज्जति। इतो य अस्स हत्थी मुक्का, अट्ठारसपयतिपरिवारो दिट्ठो मूलदेवो। अस्सेण हेसिय पट्ठी च उड्डिया, हत्थिणा गुलुगुलाविय गधोदग च करेण घेत्तु अभिसित्तो खधे य उड्डिओ, सामुद्दपाढएहि य आइट्ठो एस राय त्ति। तस्स चोरियअवराहा सव्वे मुक्का रज्जे ठविओ। एस दिट्ठतो।

इमो उवणओ – एगस्स बहुसुयस्स अहवा – पच्छित्तदडो गुरुसमप्पितो गच्छे आयरिओ कालगतो, सो य साधू आयरियजोग्गो त्ति आयरिओ ठविओ, विगडच्छेयसुत्तत्थतदुभयादीहि सगहो कायव्वो, ताहे ज सक्केति वोढु त दिज्जति, अह ण सक्केति तो से सव्व मुचति, एव दोमा एगत्तमावण्णा ॥६५१७॥

१ समप्पति, इत्यपि पाठ। २ गा० ६५०२। ३ गा० ६५११। ४ गा० ६५०२। ५ गा० ६५११।

चोदगाह – साधूक्त दोसेगत्तकारण, कि इमाए एद्दहमेत्तीए ठवणारोवणआए द्रुविकट्ठीए इना पच इनो दस त्ति पच्छित्ता घेत्तु दिज्जति, जुत्त गुरुणा आगममणुसरित्ता ज पच्छित्त आरुह त ठवणारोवणभनरेण एक्कमरा हदि इम पच्छित्त एव दिज्जउ।

आचार्याह –

चोदग पुरिमा दुविहा, वणिए मरुए णिहीण दिट्ठंतो।
दोण्ह वि पच्चयकरणं, सव्वे सफला कया मासा ॥६५१८॥
मरुगसमाणो उ गुरू, मुइज्जति मुच्चते य मे सव्वं।
साहू वणिओ व जहा, वाहिज्जति सव्वपच्छित्तं ॥६५१९॥
सुबहूहि वि मासेहिं, छण्हं मासाण परं न दायव्वं।
अविकोवितस्स एव, विकोविए अण्णहा होति ॥६५२०॥
वीसं वीसं भंडी, वणमरुसव्वाओ तुल्ल भंडीओ।
वीसतिभाओ सुक्कं, मरुगसरिच्छो इय अगीओ ॥६५२१॥

हे चोदग ! पुरिसा दुविहा गीया अगीयत्था य। तत्थ गीयत्थाण अगीयपरिणामगाण य आवण्णाण जतिय दायव्व त विणा आकड्ढिविकड्ढीए दिज्जति।

तत्थ दिट्ठतो वणिएण। तस्स वीस भडीओ एगजातियभडभरियाओ य सव्वाओ समभराओ, तस्स य गच्छतो सुकठाणे सुकिओ उवट्ठितो – "सुक देहि" त्ति।

वणिओ भणति कि दायव्व ?

सुकिनो भण्णति – वीसतिभाओ।

ताहे तेण वणिएण सुकिण्ण य परिच्छित्ता, मा ओरुहणपच्चारुहणतेसु वक्खेवो [1]भविस्सति त्ति काउ एक्का भडी सुके दिण्णा।

एव सव्वेसि गीयत्थाण अगीयपरिणामगाण य विणा आकड्ढिविकड्ढीए दिज्जति।

जे पुण अगीयत्था अपरिणामगा य अतिपरिणामगा य ते जति छण्ह मासाण परेण आवण्णा, तेसि दोण्ह वि पच्चयकरणट्ठा सव्वे मासा ठवणारोवणविहाणेण सफला काउ दिज्जति।

एत्थ दिट्ठतो – मुक्खमरुओ, तस्स वीस भडीओ एक्कभडतुल्लभराओ। सुकितेण भणिओ – एक्कभडीभड दाउ वच्चसु, किमहोतारणवक्खेवेण।

मुक्खमरुओ भणति – ओहरेत्ता एक्केक्काओ वीसतिभागो गेण्हसु, सकिएण तस्स पच्चयट्ठा ओहरेत्ता एक्केक्किओ वीसतिभागो गहितो।

मरुगसरिच्छा अगीता, सुक्कियसरिसा गुरू ॥६५१८-२१॥

अहवा – णिहिदिट्ठतो इमेसु कज्जेसु अकज्जेसु य जताजत्सु उवसघरिज्जति, जओ इम भण्णति –

---

१ हवउ (व्यव०)

अहवा वणिमरुएण य, णिहिलंभणिवेदणे वणियदंडो ।
मरुए पूयविसज्जण, इय कज्जमकज्ज जतमजते ॥६५२२॥

एक्केण वणिएण णिही उक्खणिओ, न अण्णेहि णाउ रण्णो णिवेइय, वणिओ दंडिओ णिही य से हडो । एव मरुगण वि णिही लद्धो । रण्णो णिवेइओ । रण्णा पुच्छिओ । तेण सव्व कहिय । मरुओ पुज्जो त्ति काउ सो से णिही दक्खिणा दिण्णा ।

'इय" त्ति – एव जो कज्जे जयणाकारी तस्स सव्व मरुगस्सेव मुच्चति । जो य कज्जे अजयणकारी, जे य अकज्जे (जयणाकारी य अजयणाकारी) वा एतेसु [वारपत्तेसु] वणिगस्सेव पच्छित्त दिज्जति । णवर – कज्जे अजयणाकारिस्स लहुतर दिज्जति ॥६५२२॥

अहवा – ज हिट्ठा भणिय जहा आयरियस्स सव्व मोत्तव्व त कीस आयरिओ मुच्चति ? कीस वा सेसा वाहिज्जति ? एत्थ वा णिहिदिट्ठतो ।

जतो इम भण्णइ –

मरुगसमाणो उ गुरू, पूइज्जति मुच्चते य से सव्वं ।
साहू वणिओ व जहा, वाहिज्जति सव्वपच्छित्तं ॥६५२३॥

उवसधारो आयरिएण कायव्वो पर्ववत् । आयरियस्स गच्छोवग्गह करतस्स सव्व पच्छित्त फिट्टइ, सेस कठ ॥६५२३॥

पुनरप्याह चोदक – ज तुब्भे सुत्तखण्ड पण्णवेह इम – "तेण पर पलिउचिए वा अपलिउचिए वा ते चेव छम्मासा", त किं एस सव्वस्सेव णियमो अह पुरिसविभागेण त भण्णइ ।

आचार्याह –

सुबहूहि वि मासेहिं, [1]छण्हं मासाण परं न दायव्वं ।
अविकोवितस्स एवं, विकोविए अण्णहा होति ॥६५२४॥

तवारिहेहिं बहूहि मासेहि छम्मासाण पर न दिज्जति, सव्वस्सेव एस णियमो, एत्थ कारण जम्हा अम्ह वद्धमाणसामिणो एव चेव पर पमाण ठवित, छम्मासपरतो बहुसु वि मासेसु आवण्णेसु सव्वे मासा ठवणारोवणप्पगारेण सफला काउ अविकोवियस्स एव दिज्जति । जो पुण विक्कोवितो तस्स "अण्णह" त्ति विणा ठवणारोवणाए छम्मासा चेव दिज्जति, सेस अतिरित्त सव्व छडिज्जति ।

चोदकाह – "जति भगवया तवारिहे उक्कोस छम्मासा दिट्ठा तो छम्मासातिरित्तमाससेवीण छेदादि किं न दिज्जति" ?

आचार्याह – "सुबहूहि" गाहा – जो अगीयत्थो अपरिणामतो अतिपरिणामतो वा छेदस्स वा अणरिहो छेदादि वा जो ण सद्दहति एतेसिं छम्मासो वरिसबहूहिं वि मासेहिं आवण्णाण छम्मासा चेव ठवणारोवणप्पगारेण दिज्जति । 'अवि' पदत्थसभावणे एते अविकोविता जति वि छेदमूलातिपत्ता तहा वि छेदो मूल वा ण दिज्जति, तवो चेव दिज्जति ।

अहवा – अवि पदत्थसभावणे, जति पुण अविकोवितो वि आउट्टियाए पंचिंदिय घातेति दप्पेण वा मेहुण सेवति, तो से छेदो वा मूल वा दिज्जति । जे पुण एगिंदियादिविराहणा अजयणसेवाए वा निक्कारणसेवाए

[1] गा० ६५२० ।

वा अभिक्खमवाए वा छेदमूला पत्ता ते अविकोवियस्स ण दिज्जति, तेसु छम्मासा चेव दिज्जति । जो पुण विकोविनो तस्स "अण्णह" त्ति छम्मासोवरि बहुसु मासेसु वा आवण्णस्स उग्घातिय । बितियवाराए अणुग्घातिय दिज्जति, छेदो ण दिज्जति । ततियवाराए छदो वि दिज्जति मूल ण दिज्जति ।.६५२४।।

को पुरिसो पुण विकोवितो अविकोवितो वा ? भण्णति –

गीओ विकोवितो खलु, कयपच्छित्तो सिया अगीओ वि ।

छम्मासियपट्ठवणा, एतस्स सेसाण पक्खेवो ।.६५२५।।

पुव्वद्ध कठ । जो वा भणिओ – 'अज्जो ! जइ भुज्जो भुज्जो सेविहिसि तो ते च्छेद मूल वा दाहामो", एसा वि विकोविदा भण्णति एसो वि विकोविदववहारेण ववहारियव्वो । एतेसि चेव विवरीता जो य पढमताए पच्छित्त पडिवज्जते – एते अविकोविआ भण्णति । एत्थ जो विकोवितो सो जति छसु मासेसु पट्ठवितेसु अतरा जति वि मासियादि पडिसवति त तस्स पुव्वठवियछम्मासस्स जे सेसा मासा दिणा वा अच्छति ताण मज्झे पक्खेवो अणुग्गहकसिणेण णिरणुग्गहकसिणण वा कज्जति ।।.६५२५।।

एव वक्खमाण "[१]णिहीण दिट्ठतो" त्ति एयस्स इम वा वक्खाण –

अहवा महानिहिम्मि, जो उवचारो स चेव थोवे वि ।

विणयादुपचारो पुण, छम्मासे तहेव मासे वि ।।६५२६।।

अहवेत्यय विकल्प, महाणिहि उक्खममाणे जारिसो उवयारो कीरइ तारिसो थेवे वि णिहिम्मि, एव अवराहालोयणाए जारिसो छम्मासावराहालोयणाए निमिज्जादि विणओवयारो कीरइ तारिसो मासिए वि आदिग्गहणाओ दव्वादिसु तारिसो य पसत्थेसु चेव प्रयत्नो ।।६५२६।।

सीसो पुच्छति – "एव तवच्छेदमूलारुह पच्छित्त कओ उप्पज्जइ ?।"

गुरू भणइ –

मूलतिचारेहितो, पच्छित्तं होति उत्तरेहि वा ।

तम्हा खलु मूलगुणे, नऽडक्कमे उत्तरगुणे वा ।।६५२७।।

पाणवहादीहिं वा उत्तरगुणेहि विराहिएहि एय पच्छित्त भवइ तम्हा मूलगुणा ण विराहेयव्वा उत्तरगुणा वा ।।६५२७।।

चोदगो भणइ – 'वा" सद्दोवादाणतो इमा अत्थावत्ती उवलक्खिज्जति –

मूलव्वयातिचारा, जयसुद्धा चरणभंसगा होंति ।

उत्तरगुणातिचारा, जिणसासणे किं पडिक्कुट्ठा ।।६५२८।।

जति मूलगुणातियारा चेव चरणभसका भवति तो साहूण उत्तरगुणातियारा चरणअवराहगा होता साहूण जिणसासणे कि पडिसिद्धा ?, तेपि पडिसेधो णिरत्थगो पावति ।.६५२८।।

अह इम होज्ज –

उत्तरगुणातिचारा, जयसुद्धा चरणभंसगा होंति ।

मूलव्वयातिचारा, जिणसासणे किं पडिक्कुट्ठा ? ।।६५२९।।

---

१ गा० ६५१८ ।

अह तुब्भे भणह – उत्तरगुणाइयारा चरणभ्रंसका होंति तो मूलगुणाइयारा साधूण मा पडिसिज्झतु अविराहणत्वाच्च, पडिसेविज्जतु, ण दोसो ।।६५२९।।

आयरियो भणइ –

मूलगुण उत्तरगुणा, जम्हा भसंति चरणसेढीओ ।
तम्हा जिणेहि दोन्नि वि, पडिसिद्धा सव्वसाहूणं ।।६५३०।।

मूलुत्तरगुणा जम्हा दो वि पडिसेविज्जमाणा चरणसेढीओ भ्रंशंति, तेण कारणेण दोण्ह वि अतिचरण जिणेहिं पडिसिद्ध । जं पुण 'वाकारओ" अन्यार्थवत्ति घोसेह, तत्थ वाकारो इमं दरिसेइ – मूलगुणा वि पडिसेविज्जमाणा चरणाओ भंसंति, उत्तरगुणा वि पडिसेविज्जमाणा चरणाओ भंसंति, दो वि वा जुगवं सेवमाणा चरणाओ भंसंति । अहवा – वागारो इमं अत्थं दरिसेइ – मूलगुणेहिं पडिसेविज्जमाणेहिं मूलगुणा ताव हता चेव उत्तरगुणा वि हम्मंति, उत्तरगुणेहिं पडिसेविज्जतेहिं उत्तरगुणा ताव पडिसेविते चेव हता, मूलगुणा वि हता लब्भंति ।।६५३०।।

कहं ?, उच्यते इमेण दिट्ठंतसामत्थेण –

अग्गघातो हणे मूलं, मूलघातो य अग्गगं ।
छक्कायसंजमो जाव, ताव ऽणुसज्जणा दोण्हं ।।६५३१।।

जहा तालदुमस्स अग्गसूतीए हताए मूलो हतो चेव, मूले वि हते अग्गसूती हता, एवं मूलुत्तरगुणेसु वि उवसंहारो ।

एत्थ चोदगाह – "जति, मूलुत्तरगुणातो अण्णोण्णविणासो तो णत्थि को य पवयणे मूलुत्तरगुणधारी ।

कम्हा ? जम्हा णत्थि कोति सो संजतो जो मूलुत्तरगुणाण अण्णयरं ण पडिसेवति, अण्णयरपडिसेवणाए य दोण्ह वि मूलुत्तराण अभावो दुण्ह वि अभावे सामादियादिसंजमस्स अभावो, संजमस्स अभावे पंचण्ह णियंठाण अभावो, एवं ते सव्वं चारित्तातो भंसो लब्भति, अचरित्तं वा तित्थं भवति सुण्णं वा पवयणमिति ।।६५३१।।

आचार्याह – "छक्काय" पच्छद्ध एयस्स इमा वक्खा –

जा संजमता [1]जीवेसु ताव मूलगुणउत्तरगुणा य ।
इत्तरिय छेद संजम, नियंठ बकुसा य पडिसेवी ।।६५३२।।

"भूतेसु" त्ति – जाव छसु जीवणिकायेसु संजमता लब्भति ताव "दोण्ह" त्ति मूलुत्तरगुणाण अणुसज्जणा लब्भति, ताव इत्तरसामाइयसंजमस्स छेदोवट्ठावणियस्स य अणुसज्जणा लब्भति । जाव य दो संजमा लब्भंति ताव बउसणियंठो पडिसेवणाणियंठो य अणुसज्जति । तम्हा णो सुण्णं पवयणं, ण वा अचरित्ती, ण वा मूलुत्तरपडिसेवाए सव्वं चारित्ताओ भंसो भवति ।।६५३२।।

मूलुत्तरपडिसेवाए चरित्तब्भंसे इमो विसेसो –

मूलगुण दइयसगडे, उत्तरगुण मंडवे सरिसवायी ।
छक्कायरक्खणट्ठा, दोसु वि सुद्धे चरणसुद्धी ।।६५३३।।

---

१ भूतेसु (चू०) ।

मूलगुणे दो दिट्ठंता – दतितो सगडं चं, उत्तरगुणा वि एतेसु दसेयव्वा। उत्तरगुणेसु मंडवदिट्ठंतो, एत्थ वि मूलगुणा दंसेयव्वा। तत्थ दतिते उदगभरिते जइ पंचमहद्दारा जुगवं मुंचंति तो तक्खणा रिक्को दतितो भवति। अह पंचमहद्दाराण अण्णयरदारं एक्कं मुंचति तो कमेण रिक्को भवति। तस्सेव दतितस्स जे अण्णे सुहुमछिद्दा तेसु गलमाणेसु चिरकालेण रिक्को भवति।

एवं महव्वएसु वि उवसंहारेयव्वं। भणंति य गुरवो एगवयभगे सर्वव्रतभंगो भवति, एस णिच्छयतो, ववहारतो पुण तमेवेक्कं भग्गं, एगभंगेण कमेण चरित्तं गलइ।

अण्णे भणंति – दप्पतो चउत्थासेवणे सव्वचरित्तभंगो, सेसेसु पुण अभिक्खासेवाए महल्लऽतियारे वा भंगो भवति।

सगडस्स पंच मूलंगा – दो चक्का, दो उद्धी, अक्खो य। तेहिं अविणट्ठेहिं उत्तरंगेहिं या वज्ज-कीलकलोहपट्टादीहिं य समग्गं सगडं भारवहणखमं भवति पलोट्टए य। अह तेसिं मूलगाणं एक्कं पि भज्जति तो न भारखमं भवति ण पलोट्टए य। सेसेहिं उत्तरंगेहिं केहिं चि विणा सगडं भारक्खमं पलोट्टति य। बहूहिं पुण उत्तरंगेहिं वि विसंघातितं ण तहा भारक्खमं पलोट्टति य।

एवं चरणे वि मूलुत्तरगुणजुत्तो साधू चरणभरं उव्वहति, सव्वो उवणओ कायव्वो। उत्तरगुण-विराहणाए पुण चिरकालेण चारित्तं भज्जति।

कथं ?, उच्यते – मंडवदिट्ठंतेणं जहा एरंडमंडवो, तत्थ एगदुगादिसरिसवपक्खेवेण बहूहिं पक्खित्तेहिं मंडवभंगो न भवति, अह तत्थ महल्लसिलापक्खेवो कज्जति तो तक्खणा भज्जति, एवं चारित्तमंडवो बहूहिं उत्तरगुणेहिं कालओ य चिरेण भज्जति, मूलगुणातियारसिलाहिं पुण सज्जं चेव भज्जति, आतिग्गहणाओ सिगय-सालि-तंदुलाइं। जम्हा एवं मूलगुणपडिसेवाए खिप्पं, उत्तरगुणपडिसेवाए य चिरेण चारित्तभंगो भवति, तम्हा मूलुत्तरगुणा नो अइक्कमेज्जा। कम्हा ?, उच्यते – "छक्कायरक्खणट्ठा", छक्कायरक्खणे "दो वि" त्ति – मूलुत्तरगुणा सुद्धा भवंति, तेसु य सुद्धेसु णियमा चरित्तसुद्धी, चरित्तसुद्धीओ य अभिलसिताराहणा भवति ॥६५३३॥

शिष्याह–"पाणवहादिया पंच मूलगुणा ते णज्जंते, उत्तरगुणा न याणामो। ते के केवतिया वा" ?

अतो भण्णति –

पिंडस्स जा विसुद्धी, समितीओ भावणा तवो दुविहो।
पडिमा अभिग्गहा वि य, उत्तरगुण मो वियाणाहि ॥६५३४॥

एतेसिं कमेण इमा संखा –

तिग बाताला अट्ठ य, पणुवीसा बार बारस च्चेव।
छण्णउदी दव्वादी, अभिग्गहा उत्तरगुणा उ ॥६५३५॥

पिंडविसोही तिविहा – उग्गमो उप्पादणा एसणा य। तत्थुग्गमो सोलसविहो, उप्पादणा सोलसविहा, एसणा दसविहा, एते बायालीसं। इरियादियाओ पंच, मणातियाओ तिण्णि, एयातो अट्ठ समितीओ। महव्वयभावणाओ पणवीसं। तवो दुविहो – अब्भिंतरो बाहिरो य, एक्केक्को छव्विहो य एस दुवालसविहो। भिक्खुपडिमाओ दुवालस, एते सव्वे णवणउतिं भेदा। अह इरियादियाओ पंच समितीओ कज्जंति तो छण्णउइं भेदा भवंति। अभिग्गहा संखेवओ चउव्विहा – दव्वखेत्तकालभावभिण्णा अहवा – एक्कं चेव अभिग्गहं दव्वखेत्तकालभावविसिट्ठं गेण्हइ, अभिग्गहा य परिमाणओ अणियतत्ति तेण ण एतेसु

पक्खित्ता, ण वा परिमाणमभिहित ।।६५३५।। एव मखेवतो भणिता उत्तरगुणा तेऽतिपसगतो भणिय ।

इदाणि पगत भण्णति – ज नि हेट्ठा एगूणवीसाए उद्देसएसु पच्छित्त वण्णिय तस्सिमे पुरिसेसु ग्रावत्तिविमेसा –

णिग्गयवट्टंता या, सचइया खलु तहा असचइता ।
एक्केक्का ते दुविहा, उग्घात तहा अणुग्घाता ।।६५३६।।

जे ते पायच्छित्त वहनगा ते दुविहा – "णिग्गता वट्टमाणा य ।" णिग्गया णाम जे तव वोलीणा छेदादिपत्ता, वट्टता णाम जे तवे चेव वट्टति । तत्थ जे वट्टता ते पुणो दुविहा – "सचतिता असचइया य ।"

सचतिता णाम जे छण्ह मासाण परेण पच्छित्त पत्ता त मत्तमासादि जाव ग्रासीत सत मासाण ति नेसिं ठवणारोवणविसेसेण दिवसा घेत्तु छम्मासो णिप्फाएत्ता दिज्जति ।

असचइता णाम जे माम दुमास तिमास चउ-पच-छम्मासिए वा वट्टति ।

एते सचइया असचइया पुणो एक्केक्का दुविधा – उग्घाया अणुग्घाइया य । उग्घाय त्ति लहुगा अणुग्घाय त्ति गुरुगा ।।६५३६।।

सचयासचइएसु उग्घाताणुग्घाएसु इमो पट्ठवणविही –

मासाइ असंचइए, संचइए छहि उ होइ पट्ठवणा ।
तेरस पदऽसंचहिए, संचति एक्कारस पदाइं ।।६५३७।।

तत्थ असचतिते जो मास ग्रावण्णो तस्स मासेण चेव पट्ठवणा, एव दुमासावण्णस्स दोमासिया पट्ठवणा, एव जाव छम्मासावण्णस्स छम्मासिता पट्ठवणा । जो पुण सचइयावण्णो तस्स णियमा छहिं चेव मासएहिं पट्ठवणा । पट्ठवणा णाम दाण । त दाणमसचयसचएसु जहासख तेरसपद एक्कारसपद च ।।६५३७।।

कह तेरसपदा एक्कारस वा ?, उच्यते –

तवतिगं छेदतिगं, मूलतिगं अणवट्ठाणतिगं च ।
चरिमं च एगसरयं, पढमं तववज्जियं बितियं ।।६५३८।।

असचए तेरस पदा इमे – असचए उग्घायमासमावण्णस्स पढम मासो दिज्जति, बितियवारे उग्घाय-चउमासो दिज्जति, तइयवारे उग्घाय छमासतव दिज्जइ । ते वि उग्घाततवे उग्घाता चेव दिज्जति ततो, पर तिन्नि वारा छेद, ततो पर तिण्णि वारा मूल ततो पर तिण्णि वारा अणवट्ठ, ततो पर "चरिम" ति – पारचिय त । "एगसरग" ति एक्क वार दिज्जति । असचए अणुग्घातिए वि एव चेव तेरसपदा भाणि-यव्वा । "पढम" ति – असचतित एय गय । "तववज्जित बितिय" ति – पढमतवदुग ज तेण वज्जिय । "बितिय" ति सचतिय एक्कारसपदिय भवति । ग्रहवा – "पढमतववज्जित बितिय" ति – पढमतवदुग ज तेण वज्जिय 'बितिय" ति सचतिय एक्कारसपदिय भवति, ।।६५३८।।

ते एक्कारस पदा सचतिए, उग्घातिए इमे -

छेदतिग मूलतिगं, अणवट्ठतिग च चरिममेगं च ।
संवट्टितावराहे, एक्कारस पदा उ संचइए ।।६५३९।।

"सवट्टितावराहे" त्ति – जं ठवणारोवणप्पगारेण बहुमासेहिंतो दिणा घेत्तु ते सवट्टिता एक्कं छम्मासियं णिप्फातियं तं सवट्टितावराहो भण्णति, तं एक्कं दाउं ततो परं छेदादिणा पूर्ववत्। एवं सचइए उग्घातिए एक्कारसपदा, अणुग्घातिते वि एवं चेव एक्कारस पदा भवति। ॥६५३९॥

एयं पच्छित्तं जे वहति पुरिसा ते तिविहा इमे –

आततर परतरे वा, आततरे अभिमुहे य निक्खित्ते।
एक्केक्कमसंचतिए, संचति उग्घातऽणुग्घाते ॥६५४०॥

पढमो आयतरो परतरोवि। बितिओ आततरो णो परतरो। ततितो परतरो णो आततरो। अण्णे पुण अण्णतरतरं चउत्थं भणंति, सो य भद्दबाहुकयणिज्जुतिअभिप्पायतो ण सम्मओ।

कम्हा ? उच्यते – जम्हा सो जइ इच्छिय करेति तो आयतरसमो दट्ठव्वो, अह वेयावच्चं करेति तो परतरसमो दट्ठव्वोति, तम्हा णत्थि चउत्थो पुरिसभेदो। जे पुण चउत्थं पुरिसभेदं भणंति ते पुरिसभेदविकप्पोवलभाओ अत्थतो उण अणंतगमपज्जवत्तणतो अविरोहियत्तणओ य सभवतीत्यर्थ। एतेसिं इमं सरूवं-पढमो सो तवबलिओ जाव छम्मासखमणं पि काउं समत्थो, तं च तवं करेंतो आयरियाइवेयावच्चं पि करेति, सलद्धित्तणतो, तेण एस उभयतरो। आयतरो पुण तवबलिओ वेयावच्चलद्धी से णत्थि। परतरस्स पच्छित्तकरणे सामत्थं णत्थि वेयावच्चकरणलद्धी से अत्थि। चउत्थस्स पुण अण्णतरस्स तववेयावच्चेसु दोसु वि सामत्थं अत्थि, णवरं – जुगवं ण सक्केति काउं, तवं करेंतो वेयावच्चं ण सक्केति, वेयावच्चं वा करेंतो तवं ण सक्केति, एवं अण्णतरतरो क्रमात् करोतीत्यर्थ। एत्थ जो उभयतरो आयतरो य एते दो वि णियमा पच्छित्तवहणाभिमुहा भवंति, ततिए पुण जाव वेयावच्चं करेति ताव सपच्छित्तं णिक्खित्तं कज्जति। एत्थ एक्केक्के पुरिसे पच्छित्तं जं वहेति तं वा णिक्खित्तं। तं सचइयं वा पुणो एक्केक्कं दुविहं – उग्घातं अणुग्घातं ति। ॥६५४०॥ एवं सखेवओ परूवितं।

इदाणिं एमेवत्थो सवित्थरो भण्णति।

तत्थ जो पढमो उभयतरो त्ति तस्स आयरिया इमं दिट्ठंत कप्पति –

मास जुयल हरिसुप्पत्ती, सोऽदियमाइ इंदिया पंच।
मासो दुगतिगमासो, चउमासो पंचमासो य ॥६५४१॥

एक्को सेवगपुरिसो रायं उल्लग्गति, सो य राया तस्स वित्तिं ण देति। अण्णया तेण राया कम्हि य कारणे परितोसिओ, ततो परं तेण रण्णा तस्स तुट्ठेण पतिदिवसं सुवण्णमासतो वित्ती कता, पहाणं च से वत्थजुयलं दिण्णं।

एवं तस्स उभयतरस्स दुहा हरिसो जातो, एक्कं मे पायच्छित्तदाणेण अतियारमलिणो अप्पा सोहिओ, बितियं गुरूहिं वेयावच्चे णिज्जुत्तो णिज्जरा मे भविस्सति त्ति। एवं सो पायच्छित्तं वहंतो वेयावच्चं करेंतो अण्णं पि पायच्छित्तं आवज्जेज्ज।

कहं ? उच्यते –

सोऽदियमादीण इंदियाण पचण्हं अण्णतरेण आतिग्गहणातो कोहादीहिं वाऽऽवज्जेज्ज, तं पुण थोवं पणगादी जाव वीसतिरातिदियं, बहु पारंचियाति, ओमत्थगपरिहाणीए जाव मासियं, एत्थ थोवे बहुए वा आवण्णस्स भिण्णमासो दिज्जइ ॥६५४१॥

कम्हा ? उच्यते –

तववलिओ सो जम्हा, तेण व अप्पे वि दिज्जए बहुगं ।
परतरओ पुण जम्हा, दिज्जति बहुए वि ता अप्प ॥६५४२॥

जम्हा सो पायच्छित्तवोढरणे धितिसंघयणबलितो 'तेण व" त्ति – तेण किल कारणेण पणगादी अप्प वि आवण्णस्स बहुभिण्णमासा दिज्जति । जम्हा पुण सो आयरियादि पर वेयावच्चकरणेण अन्ने तारेइ तेण से आरचियादि बहु पच्छित्त आवण्णस्स थोव भिण्णमासो दिज्जति । थोवे बहुए वि आवण्णस्स भिण्णमास दाणे कारण भणिय – दुदियादीहिं पुणो पुणो आवज्जतस्स आवत्तीकमो भण्णति – "२मासो दुगति" पच्छद्ध, मासग्गहणेण भिण्णमासो सगलमासो य गहिओ ॥६५४२॥

एतेसि च भिण्णमासादियाण आवत्तीदाणे इम परिमाण –

[1]वीसऽट्ठारस लहु गुरु, भिण्णाणं मासियाण आवण्णो ।
सत्तारस पण्णारस, [2]लहुगुरुगा मासिया होंति ॥६५४३॥

सो उभयतरगो पट्ठावियपच्छित्त वहतो वेयावच्च च करेतो जति थोव बहु वा उग्घायमणुग्घाय वा आवण्णो तो तस्स जति उग्घातित पट्ठवित तो से उग्घ निते चेव भिण्णमासो दिज्जति, जति पुणो वि अवज्जितो से पुणोवि भिण्णमासा दिज्जति, एव वीस वारा भिण्णमासो दायव्वो । जइ वीसातो परेण आवज्जेज्ज ततो से थोवे बहुए वा लहुस सा सत्तर वारा दिज्जति, एत्थ थोव पणगादिभिण्णमासत, बहु पुण मासादिय रचिय त एव दुमासादिसु वि, निट्ठल्लठ णा थोव उवरिमठाणा बहू भाणियव्वा । ॥६५४३॥

सत्तरसण्ह मासियाण उवरि जतो पुणो वि आवज्जति तो [3]"दुगतिगमासो' त्ति अस्य व्याख्या –

उग्घातियमासाण, सत्तरसेव य अणमुयतेणं ।
णेयव्व दोण्णि तिण्णि य, गुरुगा पुण होंति पण्णरस ॥६५४४॥

दोमासिय पि उग्घातिय सत्तरसवारा दिज्जति जइ पुणो वि आवज्जइ तो तेमासिय पि सत्तर-वारा दिज्जति ॥६५४४॥

सत्तचउक्का उग्घाइयाण पचेव होतऽणुग्घाया ।
पच लहुगा उ पच उ, गुरुगा पुण पंचगा तिण्णि ॥६५४५॥

सतरसमु तेमासिएसु अइक्कतेसु जति पुणो आवज्जति तो चउलहुअ सतवारा दिज्जति, तओ वि पर जइ पुणो वि आवज्जति तो पचमासिय लहुअ पचवारा दिज्जति, जइ पुणो आवज्जइ तो छल्लहुय एक्क वार दिज्जइ, एत्थ अण्णे पचमासियठाणाओ उवरि छम्मासिय न परूविति, पचमासितोवरि छेयतिय भणति, त न भवति, जम्हा एम्म पच्छित्तवड्ढी अणतराणतरठाणवड्ढीए दिट्ठा तम्हा छम्मासिय वत्तव्व। छम्मासोवरि जइ पुणो आवज्जति तो तिण्णि वारा तहू चेव छेदो दायव्वो । एम अविसिट्ठो वा तिण्णि वारा छल्लहू छेदो ।

---

१ गा० ६५४१ । २ गा० ६५४५ चू० । ३ गा ६५४५ ।

अहवा – ज चेव तवतिय त चेव छेदतिय ति मासब्भतर चउमासब्भतर छम्मासब्भतर च, जम्हा एव तम्हा भिण्णमासादिछम्मास तेसु छिण्णेसु छेदतिय अतिक्कत भवति, ततो वि जति पर आवज्जति तो तिण्णि वारा मूल दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जइ तो तिण्णि वारा अणवट्ठ दिज्जति ।

जइ पुणो आवज्जइ तो एक्क वार पारचिय पावति । एव असचतिय उग्घातिय गत ।

जइ पुण असचतिय अणुग्घातिय पट्ठविय तो एयाओ चेव अइक्कतगाहाओ सिघावलोयणेण अणुसरियव्वा । इमेण अत्थेण सा चेव उभयतरगो पच्छित्त वहतो वेयावच्च करेतो आवज्जइ अप्प बहुअ वा तो से गुरुआ भिण्णमासा दिज्जति ।

पुणो आवज्जतस्स सो अट्ठारसवारा दिज्जति ।

ततो पर पण्णरसवारा दिज्जति ।

ततो पर पण्णरसवारा मासिय गुरुअ दिज्जति ।

ततो पर पण्णरस्स चेव वारा दोमासिय गुरुअ दिज्जति ।

ततो पर पण्णरसवारा तेमासिय गुरुअ दिज्जति ।

ततो वि जइ पर आवज्जइ तो चउमासिय गुरु पचवारा दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जति पचमासिय तिण्णिवारा दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जइ तो एक्क वार छग्गुरुअ दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जइ तो छेदतिग, ततो मूलतिग, ततो अणवट्ठतिग, ततो पर एक्क पारचिय, एव असचतित अणुग्घातित ॥६५४५॥

एत्थ असचतिते उग्घायाणुग्घायावत्तिठाणलक्खण इम –

उक्कोसाउ पयाओ, ठाणे ठाणे दुवे परिहवेज्जा ।
एवं दुगपरिहाणी, नेयव्वा जाव तिण्णेव ॥६५४६॥

उक्कोसा उग्घातिया वीस भिण्णमासपदा भवति, तहितो दो पडिया, जाया अट्ठारस, ते उक्कोसा अणुग्घातियभिण्णमासा भवति, एव मास-दुमास तिमास चउम्मास-पचमासठाणेसु ॥६५४६॥ एते आवत्तिठाणा भणिया –

दोण्ह पुण एतेसि इमेण विहिणा –

बारस दस नव चेव तु, सत्तेव जहण्णगाइ ठाणाइ ।
वीसऽट्ठारस सत्तर, पण्णरहाणी मुणेयव्वा ॥६५४७॥

ये सेसा वीसा भिण्णमासाण अट्ठ झोसिय पच्छद्धेण जुत्तेहिता झोसियति ते गहिया, पुव्वद्धेण झोसियसेसा गहिया ॥६५४७॥

के पुण झोसिज्जति ? इमे –

अट्ठट्ठ उ अवणेत्ता, सेसा दिज्जंति जाव तु तिमासो ।
जत्थऽट्ठकावहारो, न होति तं झोसए सव्वं ॥६५४८॥

वीसा भिण्णमासाण अट्ठ झोसिया सेसा बारस भवति, एते वि बारस तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।

अट्ठारसण्ह अट्ठ झोसित्ता सेसा दस भवति, एते दस तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।
सत्तरसण्ह अट्ठ झोसित्ता सेसा णव भवन्ति, ते वि तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।
पण्णरसण्ह अट्ठ झोसित्ता सेसा सत्त भवति, ते वि तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।

वीसियादि अट्ठ झोसित्ता सेसा बारसादिया जहण्णठाणा भाणियव्वा । जत्थ पुण अट्ठ ण पूरेज्ज जहा चउमासपचमासेसु तत्थ सव्व चेव झोसिज्जति । अट्ठ त्ति – अट्ठमासिया मज्झिमा तवभूमी एतीए अणुग्गह-करण ति अतो अट्ठभागहारेण झोसणा कता, जे बारसादिया जहण्णठाणा ते वि ठवणारोवणप्पगारेण छम्मासे काउ साणुग्गह णिरणुग्गह वा आरोविज्जति ।।६५४८।।

जतो भण्णति –

छहि दिवसेहि गतेहिं, छण्ह मासाण होंति पक्खेवो ।
छहि चेव य सेसेहि, छण्हं मासाण पक्खेवो ।।६५४९।।

एतीए पच्छद्धस्स इमो अत्थो –

जे ते झोसियसेसा, छम्मासा तत्थ पट्ठवित्ताण ।
छद्दिवसूणे छोढु, छम्मासे सेसपक्खेवो ।।६५५०।।

अट्ठ ववहारे (भागहारे) कते जे तज्झोसियसेसा बारसादिया तेसु वि ठवणारोवणप्पगारेण अधित पडिमाडेत्ता जे णिप्फातिणा छम्मासा ते तत्थ पट्ठवित णति "तत्थ" त्ति – जे ते पुव्वपट्ठविता छम्मासा ते छहिं दिवसेहिं ऊणा वूढा सेसा छद्दिणा अच्छति, तेसु चेव छसु दिवसेसु जे ते पच्छिमा छम्मासा तेसिं पक्खेवो कज्जति । किं वुत्त भवति ? तेहि चेव छहिं दिवसेहिं पच्छिल्लेहिं पच्छित्त छम्मासित खमण त्ति, एव दुल्लधि त्ति सघयण त्ति – वसिऊण पट्ठवित्ताण सगलअणुग्गहकसिण कत भवति छहिं दिवसेहिं गहिएहि ति ।।६५५०।।

एव तस्स पुव्वद्धस्स इम वक्खाण –

अहवा छहि दिवसेहिं, गतेहि जति सेवती तु छम्मासे ।
तत्थेव तेसिखेवो, छद्दिणसेसेसु वि तहेव ।।६५५१।।

ज छम्मासिय पट्ठवित तस्स छदिवसा वूढा, तेहिं अण्णे छम्मासा आवण्णो ताहे पुव्वपट्ठविय-छम्मासस्स पचमासा चउवीस च दिवसा झामिज्जति, तत्थ पच्छिमछम्मासा पक्खिप्पति, त पि छद्दिवसूण वहति, एव पि सगलाणुग्गहकसिण भवति । अह छसु दिवसेसु वूढेसु अण्ण छम्मासिय वहति तो णिरणुग्गह पच्छित्त, एव छद्दिणा छच्च मासा भवति । छद्दिणसेसेसु तहेव त्ति – धितिसघयणबलियस्स णिरणुग्गह-कसिण भावेयव्व ।

कह ?, उच्यते – जाहे छद्दिवसूणा छम्मासा वूढा ताहे अण्ण छम्मासिय आवण्णा ते छद्दिणा झोसिता पच्छिम छम्मासित पट्ठवित त सव्व वहति ।।६५५१।।

एवं बारस मासा, छद्दिवसूणा उ जेट्ठपट्ठवणा ।
छद्दिवसगतेऽणुग्गह, णिरणुग्गह छागते खेवो ।।६५५२।।

एव कालतो बारसमासा छहिं दिवसेहिं ऊणा "जेट्ठ" त्ति उक्कोसा पट्ठवणा भवति, अतो पर तवारिहे उक्कोसतरा णत्थि, एत्थ साणुग्गहणिरणुग्गहेसु वा इमो पच्छद्धणियमो – ज आदीए छहिं दिवसेहिं

गएहिं अण्ण छम्मासित आरोविज्जति त णियमा सव्व साणुग्गह। ज पुण अवसाणे छहिं दिवसेहिं सेसेहिं ते छद्दिसा झोसेत्ता अण्ण छम्मासिय आरोविज्जति त पि णियमा णिरणुग्गहकसिण। एव अणुग्घातिए वि एव ताव असचयिए वि, उग्घाताणुग्घाते (वि) एव। णवर – तस्स आदिमा तवा नत्थि, नियमा छम्मासिय आरोविज्जति, त पि साणुग्गहणिरणुग्गह पूववत् ॥६५५२॥

एत्थ साणुग्गहणिरणुग्गहदाणे चोदगाह –

चोदेति रागदोसे, दुब्बलबलिए य जाणए चक्खू।
भिण्णे खधग्गिम्मि य, मासचउम्मासिए चेडे ॥६५५३॥

चोदगो भणति – "भगव ! तुब्भे रागद्दोसिया। कह ?, उच्यते – जस्स छद्दिवसूणा छम्मासा झोसेह तम्मि भे रागो जाणइ त्ति, जहा एस बलव वेयावच्च करेउ वेयावच्चुवगारगहिया य साणुग्गह पच्छित्त देह। जस्स पुण पचसु मासेसु चउवीसाए य दिणसु वूढेसु छद्दिणे झोसेत्ता तवोखीणस्स वि अण्णे छम्मासे आरोवेह, तत्थे वि "जाणए" त्ति जाणह, जहा एस अतीवतवज्झोसितदेहो ण सक्केति वेयावच्च काउ तेण से णिरणुग्गह पच्छित्त देह, एव च करेता तुब्भे चक्खुमेट करेह, चक्खुमेंटा णाम एक्क अच्छि उम्मिल्लेति, बितिय णिमिल्लति। एव एक्क साणुग्गहकरणेण जीवावेह, बितिय णिरणुग्गह करणेण मारेह। किं च एक्कस्स किलाम पेक्खह, बितियस्स ण पेक्खह" त्ति।

आचार्याह – "भिन्न" त्ति पच्छद्ध, ण वय रागद्दोसिया, सुणेहि अग्गिदिट्ठत, – दोदारय-दिट्ठत च।

"भिण्णे" त्ति जहा अग्गी अहरुत्तरेहि पाडित्तमेत्तो जति तम्मि महल्लकट्ठपक्खेवो कज्जति तो सो ते डहिउ अपच्चलो सिग्घ विद्दाति – उज्झाति त्ति वुत्त भवति। अह सो सहिणकट्ठछगण-मादीहि चुण्णेहि थोव थोवेहि सधुक्किज्जति तो सो ण विद्दाति, पच्छा जाहे खधग्गी विपुलो जातो ताहे विउल पि इधण डहिउ समत्थो भवति। एव तस्स छसु मासेसु पट्ठवियमेत्तेसु छसु दिवसेसु गएसु य जइ अण्ण छम्मासिय दिज्जति सो वि अहुणब्भिण्णअग्गिव्व विद्दाइ – विसाद वा गच्छति, जस्स पुण छद्दिणसेसे पट्ठविज्जति सो तवलद्धिबलाभिहाणो कतकरणत्तणतो ण विद्दाति, पुणो वि विउलतववहणसमत्थो भवति, खधग्गीवत्। अहवा –

इमो दुचेडदिट्ठतो।

मासजातचेडो चउमासिओ य। तस्स जति मासजातचेडस्स जावतिओ चउमासजात-चेडस्स पीहगादि आहारो तत्तिओ दिज्जति तो सो अतिमेत्ताहारेण अजीरतेण विणस्सति। चउमासजातचेडस्स वि जति मासजातचेडस्स जो आहारो तावत्तियमेत्तो दिज्जति तो सो वि अप्पाहारत्तणतो अप्पाण ण सधारेति, खिज्जति वा।

एव जस्स आदीए साणुग्गह कत सो मासितचेडतुल्लो असमत्थो बहुपच्छित्त करेउ। जस्स अवसाणे णिरणुग्गह सो वि चउमासियचेडतुल्लो पच्छित्तकरणसहो अप्पेण ण सुज्झति। एव अम्ह देताण रागो दोसो वा ण भवति ॥६५५३॥ गतो णायपरतरो।

इदाणि [1]अण्णतरतरो, सो एयस्सेव अणुसरिसो त्ति काउ उक्कमेण भण्णति – तस्स इम सरूव।

---

१ गा० ६५४० चू०।

जहा दो कावोडीओ एगखधेण वोढु ण सक्केति – तहा सो वि पच्छित्त वेयावच्च च काउ ण तरति, सो य सचतिय असचतिय वा आवण्णो गुरूण य वेयावच्चकरो णत्थि ताहे से त आवण्ण णिक्खित्त कज्जति, गुरूण ताव वेयावच्च करेंतो ज आवज्जति त सेस सव्व झोसिज्जति, वेयावच्चे समत्ते त णिक्खित्त वाहिज्जति, त वहतस्स जमावज्जति त इमेण विहिणा दिज्जति –

सत्त चउक्का उग्घाइयाण पचेव होतऽणुग्घाता ।
पच लहुगा उ पंच उ, गुरुगा पुण पचगा तिण्णि ॥६५५४॥
सत्तारस पण्णारस, निक्खेवो होति मासियाणं पि ।
वीसट्ठारस भिण्णे, तेण परं णिक्खिवणया उ ॥६५५५॥

एतेसि अत्थो विचित्तवक्खाणसभवातो बितियगाहापच्छाणुपुव्वीआ पुव्व भणियव्वो, जति से असचए उग्घातिय पट्ठविय तो पुव्वविहिणा लहू वीस भिण्णमासा, ततो सत्तरस मासा लहु, एव दुमासतिमासलहू वि, ताहे बितियगाहत्थो सत्त चउलहू, ततो पच मासलहू तिण्णि ततो छेदमूलणवट्ठतिगो पारचिय चेक्क । अह से अणुग्घात पट्ठवित ताहे अट्ठारस गुरुभिण्णमासा पण्णरस मासगुरु एव दुगतिगमासा वि, ततो पच चउगुरू, ततो पच मासगा तिण्णि गुरुगा, ततो तिण्णि छेदादी । एव सचइए वि उग्घाया-णुग्घाए, णवर – आदिमतत्रा ण दिज्जति । एत्थ वि अट्ठगापहारादि पूर्ववत् ॥६५५५॥

एक्के आयरिया एव वक्खाणेति । अण्णे पुण भणति – अण्णतरतरे जो त्रायतरो तस्सिम –

सत्त चउक्का० गाहा ।

व्याख्येया पूववत्, परतो से छेदादी । अण्णतरतरे जो परतरो तस्सिम –

सत्त रस पण्णारस० गाहा ।

थोवे बहुए वा आवण्णस्स सत्तरस तेमासिया "णिक्खेवो" त्ति पुव्व दायव्वा, ततो दुमासिया सत्तरस, ततो मासिया सत्तरस, ततो भिण्णमासा लहू वीस णिक्खिवियव्वा इत्यर्थं । अतो "पर" ति छेदादिअणुग्घातिए वि तिमासिया य पण्णरस भाणियव्वा अट्ठारस भिण्णमासा । अतो पर छेदादी ॥६५५७॥

एव अण्णतरतरगतो –

इदाणि [1]आयतरस्स वि पट्ठविय असचतिय सचतिय वा, त पि एक्केक्क उग्घात-मणुग्घात वा, त वहतो जति थोव बहु वा इादयादीहि आवज्जति तो इम दाण –

आततरमादियाणं, मासा लहु गुरुग सत्त पंचेव ।
चउ तिग चाउम्मासा, त्तो य चउव्विहो भेदो ॥६५५६॥

आततरो जस्स वेयावच्चकरणलद्धी णत्थि, आदिसद्दातो परतरे य विही भणीहामि, तत्थ आततरे आवण्णे सत्तवारा मासिय लहुय दिज्जति, जइ पुणो आवज्जति तो चत्तारि वारा चउलहुय दिज्जति, जइ पुणो वि आवजइ तो छेदतिय, एव मूलतिय, अणवट्ठतित, एक्क पारचिय । एव अणुग्घातिए वि, णवर – पचवारा मासित गुरुअ दिज्जति, तिण्णि वारा चउगुरुअ दिज्जति, "ततोय चउव्विहो भेदो" त्ति छेदमूलअणवट्ठ पारचिय, एत्थ छेदमूलअणवट्ठा तिगतिगा दट्ठव्वा, गतो आयतरो ॥६५५६॥

[1] गा० ६५४० ।

इदाणि [1]परतरो, सो य जस्स वेयाच्चकरणलद्धी अत्थि सो य सव्वहा पच्छित्तस्स अतरो ण भवति, जम्हा णिव्वितितादिता तरनि काउ तम्हा एत्थ वि एगखध्फावोडीदिट्ठतो भाणियव्वो, ज च आवण्णो म णिक्खित्त कज्जति, जाव वेयावच्च करेति, वेयावच्च करतो ज आवज्जति त से सव्व झोसिज्जति, वेयावच्च समत्ते त से पुव्व णिक्खित्त पट्ठविज्जति । त च वहुतस्म जइ इदियादीहिं आवज्जति ।

तत्थ दाणे इमातो दो गाहाओ परोप्परभाववक्खाणे भावट्ठियाओ एगत्थाओ –

सत्त य मासा उग्घाइयाण छ च्चेव होतऽणुग्घाया ।
पंचेव य चतुलहुगा, चतुगुरुगा होति चत्तारि ॥६५५७॥
आवण्णो इंदिएहिं, परतरए झोसणा ततो परेणं ।
मासा सत्त य छच्च य, पणग चउक्क चउ चउक्कं ॥६५५८॥

तस्स परतरस्स सचइयासचइयाए वा उग्घाताणुग्घातीए वा पट्ठविते पुणो थोवबहुए वा आवण्णस्स सत्त वारा मासिय लहुअ दिज्जति, पुव्वगमेण पचवारा चउलहुअ दिज्जति, ततो छेदतिय मूलतिय अणवट्ठतिय एक्क पारचिय । अह अणुग्घातिय पट्ठविय तो उग्घातिय अणुग्घातिय वा थेव बहुअ वा आवण्णस्स छव्वारा मासिय गुरुअ दिज्जति, चत्तारि वारा चउगुरु दिज्जति, ततो छेदतिय मूलतिय एक्क पारचिय ॥६५५८॥

"झोसणा ततो परेण" ति अस्य व्याख्या –

तं चेव पुव्वभणियं, परतरए णत्थि एगखंधादी ।
दो जोए अचएंते, वेयावच्चट्ठिया झोसो ॥६५५९॥

"पुव्वभणिय" त्ति – ज अण्णतरतरे भणिय त चेव परतरे वि भाणियव्व, त च उच्यते – कावोडिदिट्ठतेण दो जाए ण सक्कते काउ पायच्छित्त वेयावच्च च ततो से वेयावच्चकरणारभकाततो परेण जाव वेयावच्च करेति ताव ज आवज्जति त से सव्व परोपकारे त्ति काउ झोसिज्जइ, एव एस तवो भणितो, जे जत्थ भिण्णमासादिया मासाइ वा तवट्ठाणा भणिया ते चेव छेदे पत्ते छेदा कायव्वा ततो वारा, ततो पर मूल ॥६५५९॥

केरिसस्स दिज्जति ? अतो भण्णइ –

तवतीयमसद्दहए, तवबलिए चेव होति परियाए ।
दुब्बल अपरीणामे, अत्थिर अबहुस्सुए मूलं ॥६५६०॥

मासादि जाव छम्मासा तव जो वोलिणो – तवेण णो सुज्झति त्ति वुत्त भवइ, अणवट्ठपारचियतवाणि वा अतिच्छिनो समत्तेत्यर्थ । देसच्छेद पि अतिच्छितो – तेण वि ण सुज्झति त्ति तस्स वि मूल, तवेण पाव सुज्झति त्ति । तव जो ण सद्दहति, अहवा – असद्दहमाण त्ति मिच्छादिट्ठी वतेसु ठवितो पच्छा सम्मत्त पडिवन्नस्स सम्म आउट्टस्स मूल, जहा गोविंदवायगस्स । तवबलितो जो तवेण ण किलिस्सइ, तव काहामि त्ति पडिसेवति तस्स मूल । छम्मासिएण वा तवे दिण्णे भणाति – समत्थो ह अण्ण पि मे देहि तस्स वि मूल । छेदे वा दिज्जमाणे जस्स य परियागो ण पूरेति इत्यर्थ । अहवा – छेद परियागा समत्रुटति । अहवा भणाति – रातिणिओ ह बहुणा विच्छिन्तेण परियागो मे अत्थि दीहो तस्स वि परियागगव्वियस्स मूल । दुव्वलो धितिसघयणेहिं तव च काउमसमत्थो बहु च आवण्णो तस्स वि मूल । अपरिणामतो भणाति – जो सो तुब्भेहिं

नवो दिण्णो एतेण णाहु सुज्झो तस्स वि मूल । अथिरो जो धितिदुब्बलत्तणओ पुणो पुणो पडिसेवति, अबहुसुओ अगीयत्थो सो य अणवट्ठपारंचिय वा आवण्णो सव्वेसु एसु मूल दिज्जति ।।६५६०।।

पुणरवि आयरिओ विसेस दरिसिउकामो ज हेट्ठा भणिअ त पुणो चोदेति ।

इम –

जह मण्णे एगमासियं, सेविऊण एगेण सो उ णिग्गच्छे ।
तह मण्णे एगमासियं, सेविऊण णिग्गच्छते दोहिं ।।६५६१।। कठा

आयरिओ भणति – आम, एस मासिय पडुच्च आदिल्लगमो गहितो, एतेण सेसा वि गमा सूचिता ।

जहा मास सेवित्ता मासे "णिग्गच्छइ" त्ति – सुज्झति भणिय भवति, तहा मास सेवित्ता दोहिं मासेहिं णिग्गच्छति त्ति ।

एव मास सेवित्ता तिहिं णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता चउहिं, मास सेवित्ता पचहिं णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता छेदेण णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता मूलेण णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता अणवट्ठेण णिग्गच्छइ मास सेवित्ता पारचिएण णिग्गच्छइ ।

दो-मासिय सेवित्ता दोमासिएण णिग्गच्छे दोमासिय सेवित्ता जाव चरिमेण णिग्गच्छे ।

तेमासिय सेवित्ता जाव चरमेण णिग्गच्छे ।

एव चउमासियाए वि सट्ठाणपरट्ठाणेहिं भासियव्व जाव चरिमेण णिग्गच्छे । एव पचमासिए वि जाव चरिमेण णिग्गच्छे ।

एव छम्मासियाएवि जाव चरिमेण वि णिग्गच्छे । छेदे वि जाव चरमेण णिग्गच्छे । मूले वि जाव चरिमेण णिग्गच्छे । अणवट्ठ सेवित्ता अणवट्ठेण णिग्गच्छे, अणवट्ठ सेवित्ता चरिमेण णिग्गच्छे ।।६५६ ।।

एव विसमारोवण दट्ठु सीसो भणति – मासे सेविए ज मास चेव देइ त आवत्ति सम दाण । ज पुण मासे सेविए दुमासो वि छेदादि देह त कह को वात्र हेतु ?

आचार्याह –

जिण णिल्लेवण कुडए, मासे अपलिकुंचमाणे सट्ठाणं ।
मासेहि विसुज्झिहिती, तो देंति गुरूवएसेण ।।६५६२।।

जिणा केवलिणो, जिणग्गहणा ओही मणपज्जव चोद्दस दस नव पुव्वी य गहिता, एते सकिलेस-विसोहीओ जाणिऊण अवराहणिप्फण्ण मासिय जाव णिप्फण्ण वा दुमासादि जेण जेण विसुज्झति त देंति, तत्थ मासारुहअज्झवसाणठिएण मासे पडिसेवि अपलिउचिय आलोएमाणस्स सट्ठाण ति मास चेव देंति, अहवा – आलोएति पलिउचिय दुमासादियाण वा जे अरिहा अज्झवसाणठाणा तत्थ य ठिएण मासो पडिसेवितो तो एस दुमासादिमासेहिं विसुज्झिहिइ त्ति ताहे जिणा सुतववहारिणो वा गुरूवदेसेण अधिग देंति पच्छित्त ।

तत्थिमो दिट्ठतो – "णिल्लेवण कुडए" त्ति, णिल्लेवगो त्ति रयगो, सो जहा – जलकुडेहिं वत्थ धोवति तहा दिट्ठतो कज्जति ।

अहवा – "लेवो" त्ति वत्थमलो, "कुडो" त्ति घडो जलभरितो, एत्थ चउभगो इमेण विहिणा कायव्वो – एक्क वत्थ एक्केण जलकुडेण णिल्लेव कज्जति, एव चउभगो ।।६५६२।।

तत्थ पढमबितियभगेसु वक्खाण इम –

एक्कुत्तरिया घडछक्कएण छेदाति होति णिग्गमणं ।
एतेहिं दोसवुड्ढी, उप्पज्जति रागदोसेहिं ॥६५६३॥

"एगुत्तरिया घडछक्कएण" ति अस्य व्याख्या –

अप्पमलो होति सुची, कोति पडो जलकुडेण एगेण ।
मलपरिवड्ढी य भवे, कुडपरिवड्ढी य जाव छ तू ॥६५६४॥

कोइ अप्पमलो पडो पविट्ठो एगेण जलकुडेण घरे चेव धोवति, गतो पढमभगो। इमो बितियभगो "मलपरिवड्ढीय" त्ति, जो ततो वि मलिणतरो कठिणमलो वा दो वि दोहिं जलकुडेहिं धोव्वति, एव जहा जहा मलपरिवड्ढी भवति तहा तहा एगुत्तरजलकुडपरिवुड्ढी कज्जति, "जाव" अभिप्रेतार्थं, समेहिं जलकुडेहिं छहिं घडेहिं चेव धोव्वति ॥६५६४॥

"[1]छेदादि होति निग्गमण" त्ति अस्य व्याख्या –

तेण परं सरितादी, गंतु सोधेंति बहुतरमलं तु ।
मलणाणत्तेण भवे, आयचण-जत्त-णाणत्तं ॥६५६५॥

जे ततो वि मलिणतरा, सरित्त त्ति णदी, ताए गतु धोव्वति, आदिमद्दाओ हृद-कूव-तडागादिसु । बितिगादिपदेसु जहा जहा मलणाणत्त तहा तहा "आयचणजत्तणाणत्त" ति – आयचण णाम गोमुत्त पसुलेड ऊसादि उसमादी तम्मि णाणत्त बहुतर पधानतर च करे ति, जतो पयत्तो प्रयत्नो, तत्थ वि अच्छोडपिट्टणादिसु प्रयत्नततर करोतीत्यथ ॥६५६५॥

चरिमततियभगेसु इमं वक्खाण –

बहुएहिं जलकुडेहिं, बहूणि वत्थाणि काणि यि विसुज्झे ।
अप्पमलाणि बहूणि वि, काणिति सुज्झंति एगेणं ॥६५६६॥

पुव्वद्धेण चरिमभगो, पच्छद्धेण च ततियभगो, सेस कठ ।

इदाणि चउभगे वत्थजलकुडदिट्ठतो जा भणितो तस्स उवसहारो भण्णति – 'जस्स मासिय येन त पडिसेवेत्ता" जो मासेण विसुज्झनीति तस्स मास चेव देति। अण्णस्स पुण मासिय पडिसेवतो एतेहिं रागदोसेहिं तिव्वतरेहिं बहुतरा उप्पज्जति, 'दोसवड्ढि' त्ति – कम्मवड्ढी, तव्विसुद्ध बहुतर पच्छित्त दु ति-चउ पच-छम्मासिय वा देंति। अण्णस्स मासिए त्ति – रागदोसज्झवसाणासेविए सरितादिसरिच्छेव बहुतर छेदादि ॥६४६६॥

भगव! से जहा से रागदोसवुड्ढीनो पच्छित्ते वुड्ढी दिट्ठा। किमेव रागदोसहाणीतो पायच्छित्ते हाणी ? इत्याह –

जह मण्णे दसमं सेविऊण णिग्गच्छे तु दसमेणं ।
तह मण्णे दसम सेविऊण एगेण णिग्गच्छे ॥६५६७॥

---

१ गा० ६५४३ ।

"दसम" ति – पारचियं त सेवित्ता तेणेव 'णिग्गच्छइ" त्ति – विसुज्झतीत्यर्थः । तहा दसम सेवित्ता णवमेण णिग्गच्छइ, णवम – अणवट्ठ ?

आयरिओ – "आम ति अणुमयत्थे भवति ।

अण्णे भणति – 'एगेण णिग्गच्छे", "एगेण" ति मासेण । एत्थ ओवुड्ढीए अणवत्थातिता सव्वे-दट्ठव्वा जाव पणग णिव्वितियं वा ॥६५६७॥

अपरितुष्टमना शिष्य पुनरप्याह – "बहुसुत्त दिट्ठ बहुसु मासेसु पडिसेवितेसु अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासा चेव दिट्ठो, णो बहूणि मासियाणि सेवित्ता सुत्तेणेव बहू मासा दिण्ण त्ति ।

अतो पुच्छा इमा –

जह मण्णे बहुसो मासियाणि सेवित्तु एगेण णिग्गच्छे ।
तह मण्णे बहुसो मासियाइ सेवित्तु बहूहि णिग्गच्छे ॥६५६८॥

अत्राप्याचार्येण आम इत्यनुमतार्थे वक्तव्य, किं बहुणा रागदोसावक्खित्तो एक्केक्कावलिट्ठाणे सव्व-पच्छित्तारोवणट्ठाणा दट्ठव्वा ॥६५६८॥

इहापि केचित् बहुमसूत्रे प्रत्येकार्थे इम गाथाद्वय पठति –

एगुत्तरिया घडछक्कएणं छेदादि होति णिग्गमणं ।
एएहिं दोसवड्ढी, उप्पज्जति रागदोसेहिं ॥६५६९॥
जिणणिल्लेवणकुडए, मासे अपलिकुंचमाणे सट्ठाणं ।
मासेहि विसुज्झिहिती, तो देंति जिणोवएसेणं ॥६५७०॥

इह एयासु पच्छित्तवुड्ढी भाणिऊण पूर्ववत् पुणो एतासु चेव हाणी भाणियव्वा इति ।

पुनरप्याह चोदक –

पत्तेयं पत्तेयं, पदे पदे भाणिऊण अवराहे ।
तो केण कारणेण, हीणब्भहिया व पट्ठवणा ॥६५७१॥

सुत्तपदेसु पत्तेय अवराहे भणिऊण पच्छित्त च ततो किं पुणो अत्थेण थोए बहुय, बहुए वा थोवपच्छित्त देह, सव्वहा वा झोस करेह एतीए हीणब्भतियपट्ठवणाए को हेतु ? ॥६५७१॥

आचार्याह –

मण परमोहि जिणं वा, चोद्दस दसपुव्विं च णवपुव्विं ।
थेरेव समासज्जा, ऊणऽब्भहिया व पट्ठवणा ॥६५७२॥

ते परमाहिजिणादिया पच्चक्खणाणिणो पच्चक्ख रागदोसहाणी वुड्ढी वा पेक्खति, कम्मबधो य ण दव्वपडिसेवणाणुरूवो रागदोसाणुरूवो भवति अतो पच्चक्खणाणिणो रागदोसाणुरूव हीणमहियं वा पट्ठवयति – ददतीत्यर्थ ।

शिष्याह – "प्रत्यक्षज्ञानिना युक्तमेतत्, ये पुन स्थविरास्ते कथ रागद्वेषवृद्धि पश्येयु" ।

आचार्याह – हाणिं ताव इमेण आगारभासितेण थेरा जाणति ॥६५७२॥

हा दुट्ठु कयं हा दुट्ठु कारियं दुट्ठु अणुमयं मे त्ति ।
अतो अंतो डज्झति, पच्छात्तावेण वेवंतो ॥६५७३॥

प्राणातिपातादि कृत्वा उत्तर काल अत पश्चात्तापकरणेन च दह्यते, तत् पश्चात्तापकरणेन – वेपते कपतेत्यर्थ । अत्रोदाहरण गोव्यापादकवत् ॥६५७३॥

वुड्ढि पुण इमेहिं जाणति –

जिणपण्णत्ते भावे, असद्दहंतस्स पत्तियं तस्स ।
हरिस वि व वेदंतो, तहा तहा वड्ढते उवरिं ॥६५७४॥

जिर्णेहिं जीवादिका भावा प्रकर्षेण प्रतिभेदेन वा श्रोतृजने ज्ञापिता ये ते प्रतिज्ञापिता तेषु अश्रद्दधान जहा जमालीवत् । ण पत्तिय अपत्तिय तेसु जिणपण्णत्तेसुवि अप्रीर्ति कुर्वाणस्येत्यर्थ । सर्वथा वा अप्रतिपत्ति अपत्तिय वा त महानिधिलाभहर्षमिव वेदनो, अहवा – हर्षागतमिव पाप कुर्वतो तक्कारणहर्षतो वेपते च यथा ।

यथा स्वचित्तेन जनाभिस्तुतो वा हर्षं गच्छति तथा प्रकृतिस्थितिप्रदेशानुभावा उपरुपरि करोति वर्धयतीत्यर्थ । अत्रोदाहरण सिंहव्यापादकवत् ॥६५७४॥

इदाणि पत्रमछट्ठ सुत्ताण इमो सम्बन्धो भणति – णिसीहस्स पच्छिमे उद्देसगे तिविहभेदा सुत्ता तजहा – आवत्तिसुत्ता, आलोयणविधिसुत्ता, आरोवणा सुत्ता य । एएमि एक्केक्के भेदे दस दस सुत्ता, सव्वे तीस सुत्ता, तत्थ आवत्तिसुत्ता जे दस तेसिं चउरो सुत्तेणेव भणिता । इमे अत्थतो छ भाणियव्वा त जहा – सातिरेगसुत्त १ बहुसो सातिरेगसुत्त २ सातिरेगसजोगसुत्त ३ बहुसो सातिरेगसजोगसुत्त ४ णवम सगलस्स सातिरेगस्स य सजोगे सुत्त ५ दसम बहुसस्स बहुमसाइरेगस्स य सजोग सुत्त ६ एव एतेसु दससु आवत्तिसुत्तेसु भणिएसु तेणेव विहिणा दस आलोयणासुत्ता भाणियव्वा, तेसु वि आदिमेसु अट्ठसुत्तेसु अत्थतो भणिएसु इम णवमसुत्त । तत्थ वि अत्थतो एग-दुग-तिगसजोगेसु भणिएसु इम चउक्कसजोगे अतिल्लचउक्कसजोगसुत्त –

जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा
पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा
एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा –
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चउम्मासियं वा, साइरेगं वा
पंचमासियं वा, साइरेगं वा ।
पलिउंचिय आलोएमाणस्स पचमासियं वा साइरेगं वा, छम्मासियं वा,
तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा॥सू०॥१५॥

इदाणि छट्ठ बहुससुत्त च उच्चारियव्व, त च दसमेसु चउक्कसजोगे अतिल्लचउक्कसजोगे सुत्त इमेण विहिणा उच्चारियव्व –

जे भिक्खू बहुसो वि चाउम्मासिय वा बहुसो वि साइरेग चाउम्मासिय वा
बहुसो वि पंचमासिय वा, बहुसो वि साइरेगपंचमासिय वा

एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा,
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स बहुसो वि चाउम्मासियं वा
बहुसो वि साइरेगं वा, बहुसो वि पंचमासियं वा, बहुसो वि साइरेगं वा
पलिउंचिय आलोएमाणस्स बहुसो वि पंचमासियं वा
बहुसो वि साइरेगं वा, बहुसो वि छम्मासियं वा
तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥सू॥१६॥

एतेसिं आलोयणसुत्ताण अत्थो पूर्ववत्। इमो विसेसो –

एत्तो णिक्कायणा मासियाण जह घोसण पुहविपालो ।
दंतपुरे कासीया, आहरणं तत्थ कायव्वं ॥६५७५॥

"एत्तो" त्ति अत पर आलोयणाविहाण भण्णइ। "णिक्कायणा" णाम मासादि पडिसेवित जाव आलोयणारिहस्स ण कज्जति ताव अणिक्कातिय भण्णात।

अधवा – त मासादि पडिसेवित आलोयणविहीए गुरवो णाउं ज मासातिआरोवणाए वि हीणधियाए वा जहारुहाए आरोवणाए आरोवयति त णिक्कातित भण्णइ।

अथवा – केरिसस्स आलोइज्जइ त्ति एव इमेण दिट्ठतेण णिक्काइज्जइ।

"दतपुर दतवक्के, सच्चवती दोहले य वणयरए।
धणमित्त-धणसिरीए, पउमसिरी चेव दढमित्ते॥

जारिसस्स आलोइज्जति तत्थोदाहरण इम –

दतपुर णगर, दतवक्को राया, तस्स सच्चवती देवी। तस्स दोहलओ –"जति ह सच्चदतमए पासाए कीलिज्जा।" रण्णो कहिय।

रण्णा अमच्चो आणत्तो – "सिग्घ मे दते उवट्ठवेसि।" तेण वि णयरे घोसावित – जो रण्णो दते कीणति ण देति वा घरे सते तस्स सारीरो दडो।

तत्थ णगरे धणमित्तो सत्थवाहो, तस्स य दो भज्जाओ – धणसिरी पउमसिरी य। अण्णया तासिं दोण्ह वि भडण जात। तत्थ धणसिरीए पउमसिरी भणिया – कि तुम गव्वमुव्वहसि? किं तए सच्चवतीए अहिगो दतमओ पासादो कतो?

ताहे पउमसिरीए असग्गाहो गहितो –"जति मे दतमओ पासादो ण कज्जति, तो मे अल जीविएण।" ण देति धणमित्तस्स आलाव।

तस्स वयसो दढमित्तो णाम। तस्स कहिय।

तेण भणिया –'अह ते कालहीण इच्छ पूरेमि" छड्डाविया असग्गह।

ताहे सो दढमित्तो वणचरादीए सम्माणसगहिए करेति।

तेहिं भणिय – "कि आणेमो, कि वा पयच्छामो"

तेण भणिय – "दते मे देह"। तेहिं य ते दता खडपूलगेहिं गोविता। सगड भरिय, णयरद्दारे य पवेसिज्जताण गोणाऽऽकड्ढितो दतो पडिओ, "चोरो" त्ति सहोडो वणयरो गहितो।

रायपुरिसेहिं पुच्छिज्जति कस्सेते दता, सो ण साहति। एत्थतरे दढमित्तेण भणिय–"मम एए दता, एस मे कम्मकरो।" वणचरो मुक्को, दढमित्तो गहितो। सो रण्णातो पुच्छितो–'कस्सेते दता ?" सो भणति "मम" ति। एत्थतरे दढमित्त गहिय णाउ धणमित्तो ग्रागत्तो।

रण्णो पुरतो भणाति – "मम एते दता, मम दड सारीर वा णिग्गह करेहि" त्ति।

दढमित्तो वि भणाति – "ग्रहमेय ण जाणामि, मम सतिता दता, मम णिग्गह करेहि" त्ति, एव ते ग्रण्णुण्णावराहरक्खणट्ठिया णिरवराही रण्णा भणिया – 'ग्रभग्रो। भूयत्थ कहेह।"

तेहिं सव्व जहाभूय कहिय।

रण्णा तुट्ठेण मुक्का, उस्सु का।

जहा सो दढमित्तो णिरवलावी ग्रवि य मरणमब्भुवगतो ण य परावराहो सिट्ठो, तहाऽऽलोयणारिहेण ग्रपरिसाटिणा भवियव्व। जहा सो धणमित्तो भूयत्थ कहेति ममेसोवराहो त्ति एव ग्रालोयगेण मूलुत्तरावराहा ग्रपलिउचमाणे जहट्ठिया कहेयव्वा ॥६५७५॥

पचमे य सुत्ते इमो य विसेसो दसिज्जति –

पणगातिरेग जा पणवीससुत्तम्मि पंचमे विसेसो।
ग्रालोयणारिऽऽहालोयग्रो य ग्रालोयणा चेव ॥६५७६॥

एतीए पुव्वद्धस्स इम वक्खाण –

ग्रहवा पणएणऽहिग्रो, मासो दसपक्खवीसभिण्णेणं।
संजोगा कायव्वा, लहुगुरुमासेहि य ग्रणेगा ॥६५७७॥

"ग्रहवे" त्यय विकप्पवाची। क पुन विकल्प ?, उच्यते – पणगातिता ठाणा ग्रतियारतो व णिप्फण्णा – भावग्रो वा निष्पन्ना भवतीत्यथ। पचमे सुत्ते इमो विसेसो – मासो लहुपणगदसगातिरित्तो य कायव्वो, एव दस पण्णरस वीस भिण्णमासातिरित्तो य। एव दोमासादिया वि पणगादियातिरित्ता कायव्वा। पुणो पणगादिएहिं लहुगुरुएहिं लहुमीसगसजोगसुत्ता कायव्वा, इमेण विहिणा –

जे भिक्खू गुरुगलहुगपणगातिरेगमासिय परिहारट्ठाण इत्यादि।
जे भिक्खू लहुगपणगदसगातिरेगमासित परिहारट्ठाण इत्यादि।
जे भिक्खू लहुगपणगगुरुदसगसातिरेगमासिय परिहारट्ठाण इत्यादि।
एव मासिय लहुपणग च ग्रमुयतेण भाणियव्व जाव गुरुभिण्णमासो त्ति।
ततो मासिय गुरुपणग च ग्रमुयतेण भाणियव्व जाव गुरुभिण्णमासो त्ति।
एव मासिय ग्रमुयतेण पणगादियाण सव्वे दुगसजोगा भाणियव्वा।

ततो मासिगस्सेव पणगादियाण सव्वे तिगसजोगा चउक्कादिसजोगा य जाव दसगसजोगो ताव सव्वे भाणियव्वा।

ततो मासगुरु ग्रमुचतेण पण दसग पण्णरस वीसभिण्णमासताण लहुगुरुभेदभिण्णाण दुगादिसजोगा जाव दसगसजोगा ताव सव्वे कायव्वा। एव दोमासियादिठाणेसु वि लहुगपणगादीयाण सव्वे सजोगा कायव्वा। एव ग्रणेगा सजोगा भवतीत्यथ। एव पचमे विसेसो उवउज्जिय सवित्थरतो भाणियव्वो। इमे य एत्थ पचमे सुत्ते ग्रालोयणारिहा भाणियव्वा –

२　　３　４　५
[1]आयारव आहारव, ववहारोव्वीलए पकुव्वी य ।
६　７　८
णिज्जवगवायदंसी, अपरिस्सावी य अट्ठमए ॥

पंचविह आयार जो मुणइ आयरइ वा सम्म सो आयारव ।
आलोइज्जमाण जो सभेद सव्व अवधारेति सो आहारव ।
पंचविह आगमादि ववहार जो मुणइ सम्म सो ववहारव ।
आलोयय गूहत जो महुरादिवयणपयोगेहिं तहा भणइ जहा सम्म आलोएति सो उव्वीलगो ।
आलोइए जो पच्छित्त कारवेति सो पकुव्वी ।
जहा णिव्वहइ तहा पायच्छित्त कारवेति सो णिज्जवगो ।

अणालोएतस्स पलिउचतस्स वा पच्छित्त च अकरेतस्स ससारे जम्मणमरणादीदुल्लभबोहीयत्त पर-लोगावाए दरिसेति, इहलोगे च ओमासिवादी, सो अवायदंसी ।

आलोइय जो ण परिस्सवति अण्णस्स ण कहेति त्ति वुत्त भवति सो अपरिस्सावी । एरिसो आलोयणारिहो ।

इमेरिसो आलोयगो – [2]"जाती कुल" गाहा । जातीए कुलेण य सपण्णो अकिच्च ण करेति ॥१॥ काउण वा सम्म कहेति ॥२॥ विणीयो णिसेज्जादिविणय सव्व करेति, सम्म च आलोएति ॥३॥ णाणी णाणाणुमारेण आलोएइ ॥४॥ अमुगसुत्तेण वा मे पच्छित्त दिण्ण सुद्धो अहमिति दसणेण सद्दहति ॥५॥ एव चारित्त भवति, सपण्णो पुणो अतियार ण करेति, अणालोतिए वा चरित्त णो सुज्झति त्ति सम्म आलोएइ ॥६॥ खमादिजुत्तो खमी, गुरुमादीहिं वा चोतितो कम्हे ति फरुस ण भणति, सम्म पडिवज्जति, ज पच्छित्त आरोविज्जति त सम्म वहतीति ॥७॥ दतो इदिय णोइदिएहिं वा दतो ।८। अपलिउचमाणो आलोएति वहति वा अमायी ।।९।। आलोएत्ता णो पच्छा परितप्पइ, दुट्ठु मे आलोइय ति अपच्छायावी ॥१०॥ एरिसगुणजुत्तो आलोयगो ।

इमे आलोयगस्स आलोयणादोसा –

१　　२　　３　４　५
"[3]आगपइत्ता अणुमाणइत्ता, ज दिट्ठ बायर च सुहुम वा ।
६　७　८　९　१०
छण्ण सद्दाउलग बहुजण अव्वत्त तस्सेवी" ॥१॥

वेयावच्चकरणेहि आयरिय आराहेत्ता आलोयण देति ॥१॥

"चरम थोव एम पच्छित्त दाहिति ण वा दाहिति" पुव्वामेव आयरिय अणुणेति – "दुब्बलो ह थोव मे पच्छित्त देज्जह" ॥२॥

जो अतियारो अण्णेण कज्जमाणो दिट्ठो त आलोएति, इयर नो आलोएति ॥३॥

"बायर" – महता अवराहा ते आलोएति, सुहुमा णो ॥४॥

अहवा – सुहुमे आलोएति नो बायरे ।

जो सुहुमे आलोएति सो कह बायरे ण आलोएति, जो वा बायरे स कह सुहुमे नालोए त्ति ।५।

"छण्ण" ति – तहा अवराहे अप्पसद्देण उच्चरइ जहा अप्पणा चेव सुणेति, णो गुरु ।६।

"सद्दाकुल" ति – महतेण सद्देण वा आलोएति जहा अगीयातिणो वि सुणति ।७।

१ व्यव० उ० १ गा० ३३८ । २ व्यव० उ० १ गा० ३३९ – ३४० । ३ व्यव० उ० १ गा० ३४२ ।

बहुजणमज्झे वा आलोएति अहवा एक्कस्स आलोएति पुणो अण्णेसिं आलोएति ॥८॥

"अव्वत्तो" अगीयत्थो तस्स आलोएति ॥६।

"तस्सेव" त्ति—जो आयरिओ तेहिं चेव अवराहपदेहिं वट्टति तस्सालोएति, 'एस मे अतियार तुल्ले ण दाहिति, ण वा मे खरंटेहिति" ॥१०॥ त्ति ॥६५७७॥

इदाणि आलोयणविधी भण्णति—

आलोयणाविहाणं, तं चेव दव्वखेत्तकाले य ।
भावे सुद्धमसुद्धे, ससणिद्धे साइरेगाइं ॥६५७८॥

आलोयणाविहाणं जं पढमसुत्ते वुत्तं तं चेव सव्वं सवित्थरं इह दव्वखेत्तकालभावेहिं पडिसेवितं भाणियव्वं, पसत्थेहिं वा दव्वखेत्तकालभावेहिं आलोएयव्वं पडिसेवितं पुण भावतो सुद्धेण वा असुद्धेण अप्पच्छित्ती सप्पच्छित्ती वा । असुद्धेण सपायच्छित्तं, तं च पायच्छित्तं इह सुत्ते सातिरेगमासो केण भवति ?, उच्यते – "ससणिद्धे सातिरेगा" इति ॥६५७८॥

अस्य व्याख्या –

ससणिद्ध बीयघट्टे, काएसुं मीसएसु परिठविते ।
इतर सुहुमे सरक्खे, पणगा एमादिया होंति ॥६५७६॥

ससणिद्धेहिं हत्थमत्तेहिं भिक्खं गेण्हते पणगं, एवं जति बीयसंघट्टपरित्तकाएसु वा मीसेसु परंपरट्ठवियं इत्तरट्ठवियं वा सुहुमपाहुडियं वा ससरक्खेहिं वा हत्थमत्तेहिं गेण्हति । एवमादिअवराहेसु पणगं भवइ । एत्थ इमं णिदरिसणं—सागारियपिंडं ससणिद्धहत्थेहिं गेण्हतो सातिरेगमासियं भवति, एवं परित्तकाय अणंतर-णिक्खित्तं बीयसंघट्टं च गेण्हतो, एवमादिमासियं अवराहो पणगातिरित्तो मासो भवति ॥६५७६॥

तं च आलोयणारिहो इमेण विहिणा जाणइ देति वा –

ससिणिद्धमादि अहियं, तु परोक्खी सो उ देंति अहियं तु ।
हीणाहिय तुल्लं वा, नाउं भावं च पच्चक्खी ॥६५८०॥

जो परोक्खणाणी आलोयणारिहो सो आलोयगमुहाओ पणगातिरित्तं मासं सोच्चा पणगातिरित्तं चेव मासं देति, जो पुण पच्चक्खणाणी सो पणगातिरित्ते वि मासे आलोइए रागदोसभावाणुरूवं कम्मबंधं जाणिऊण हीणं अहियं वा पडिसेवणतुल्लं वा पायच्छित्तं देइ ।

इदाणि आलोयणसुत्ते वि जाहे सगलसुत्ता, बहुससुत्ता वा सगलसंजोगसुत्ता, बहुससंजोगसुत्ता य, एते चउरो सभेदा भणिया भवंति – ताहे जे पुव्वणिद्दिट्ठा पंचम छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसुत्ता, ते अत्थतो भणामि ।

तत्थ पंचमं इमं – 'जे भिक्खू सातिरेगमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेगबिमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेगतिमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेगं चउमासियं परिहारट्ठाणं ।

सातिरेगं पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउंचियं आलोएमाणस्स –

साइरेगमासिय साइरेगदोमासिय साइरेगतिमासिय साइरेगचउमासिय।
साइरेगपचमासिय ।
पलिउचिय आलोएमाणस्स साइरेगदोमासित, सातिरेगतिमासित।
सातिरेगचउमासित सातिरेगपचमासिय च"। एते पच सामण्णसुत्ता।

एव पच सातिरेगउग्घातियाण वि भाणियव्वा, सातिरेग अणुग्घातियाण वि पच, एते पण्णरस वि पचम सातिरेगसुत्त। एव चेव छट्ठ सुत्त बहुसाभिलावेण णेयव्व।

इदाणि एतेसि चेव दोण्ह वि सुत्ताण पत्तेय पत्तेय सजोगा कायव्वा, जहा पढमबितिय-सुत्तेसु तहा कायव्वा, ताहे सत्तमट्ठमा सुत्ता भवति। सत्तमे सुत्ते णव सुत्ता एगट्ठा ण भवति। सातिरेग-समलसुत्ताण सजोगसुत्ताण सव्वसुत्तपिंडय च उप्पण्ण सुत्तसहस्स। बहुससातिरेगसुत्तेसु वि एव चेव एत्तिया भवति। एते सव्वे एक्कतो पिंडिया एकवीस सया अट्ठुत्तरा, मूलुत्तरेहिं गुणिया बायालीस सता सोलसुत्तरा। दप्पकप्पेहिं गुणिता अट्ठसहस्सा चउरो य सता बत्तीसा भवति। एव आइमेसु चउसु सुत्तेसु अट्ठसहस्स चउरो य सत्ता बत्तीसा भवति। अट्ठसु वि सुत्तेसु सव्वग्ग सोलससहस्सा अट्ठसता चउसटठा भवति। एति त्ति आवत्ति सुत्ता आलोयणासुत्तेसु वि एत्तिया चेव, आरोवणसुत्तेसु वि एत्तिया चेव, तम्हा एस रासी तीहिं गुणितो पण्णास सहस्सा पच सता बाणउआ भवति ।।६५८०।।

इदाणि णवम सुत्त, त च सगलाण साहियाण य सजोगे भवति, तत्थ आदिमा चउरो सगल-सुत्ता पचमादिया अट्ठता चउरो साहियसुत्ता।

एतेसि सगलसाहियाण सजोगविधिप्रदर्शनार्थमिदमाह –

एत्थ पडिसेवणाओ, एक्कग-दुग-तिग-चउक्क-पणएहिं।
छक्कग-सत्तग-अट्ठग,-णवग-दसहिं च णेगाओ ।।६५८१।।

'एत्थ" त्ति सगलसाहियसजोगसुत्ता णवमे पडिसेवणागारा इमे एगादिया दस य, तेहिं कायव्वा त जहा –

मासित, सातिरेगमासित।
दोमासित सातिरेगदोमासित।
तेमासित, सातिरेगतेमासित।
चउमासित, सातिरेगचउमासित।
पचमासित, सातिरेगपचमासित।

एतेसिं उच्चारणविधी इमा —

जे भिक्खू मासिय परिहारट्ठाण   सेस पूर्ववत्।
जे भिक्खू सातिरेगमासिय जाव अपलिउचिय आलोए, सातिरेगमासिय।
जे सातिरेगदोमासिय जाव अपलिउचिय आलोए सातिरेगदोमासिय।
एव तेमासियादिया वि वत्तव्वा एगादिसजोगा भाणियव्वा ।।६५८१।।

जहासख च तेसि एगादियाण इमे आगयफला –

दस चेव य पणयाला, वीसा य सयं च दो दसहिगाइं।
दोण्णि सया बावण्णा, दसुत्तरा दोण्णि य सताओ ।।६५८२।।

वीसा य सयं पणयालीमा दस चेव होति एक्को य ।
तेवीस च सहस्सं, अदुव अणेगाउ णेआओ ॥६५८३॥

एत्थ करणोवाओ इमो – एगादेगुत्तरिया पदसखपमाणओ ठवेज्जाहि, गुणगारा जस्स जेत्तियाणि पदाणि ते एगुत्तरवड्डिता ठवेऊण तेसिं हेट्ठा ताणि चेव विवरीयाणि ठवेयव्वाणि ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१

एत्थ उवरिमा गुणगारा हिट्ठिमो रासी भागहारो, तेसिं हेट्ठाओ विवरीओ । एत्थ एक्कगसजोग इच्छतेण अण्ण सगलरूव ठवेऊण अतिल्लेण दसगुणकारएण गुणेयव्व ताहे अतिल्लेग एक्कभागहारेण भागो हायव्वो, भागहारभागलद्ध दस एतेसिं एक्कसजोगा दस लद्धा, एते एगते ठविया । दुगसजोग इच्छतेण एते दस णवहि गुणिता दोहि भागेहिंतो लद्धा, दुगसजोगा पणयाल, एव ठाणट्ठाणे पडिरासियगुणियहियभाग लद्धफला जाणियव्वा । तिगसजोगे वीसुत्तर सय, चउक्कसजोगे दो सता दसुत्तरा, पचमजोगेण दो सता बावन्ना, छक्कगसजोगे दो मया दसुत्तरा, सत्तगसजोगे सय वीसुत्तर, अट्ठगसजोगेण पणयालीस णवसजोगेण दस, दससजोगेण एक्को, सव्वेसिं सखेवो तेवीस सहस्स ।

"अदुव" त्ति अहवा – "अणेगाउ" त्ति अणेगे पडिसेवणादिसुत्तभेदा णेयव्वा ज्ञेया वा ।

कह ? उच्यते – एते सामण्णतो भणिया, एते चेव उग्घायाणुग्घाते मूलुत्तरदप्पकप्पेहिं गुणेयव्वा । अघवा – तीसपदाण इमा रयणा कायव्वा, त जहा – मासिय पचदिणातिरेगमासिय, दसदिणाइरेगमासिय, पनरसदिणाइरेगमासिय, वीसदिणातिरेगमासिय, भिण्णदिणातिरेगमासिय, एव दुमासे तिमासे चउमासे पचमासे य एक्केक्के छट्ठाणा कायव्वा । एते पच छक्कातीस ठाणा । एतेसु वि करण पूर्ववत् कायव्व ।

सव्वागयफलाण सपिडियाण इमा सुत्तसखा भवति –

[1]कोडिसय सत्तऽहिय, सत्ततीस व होति लक्खाई ।
ईयालीस सहस्सा, अट्ठसया अहिय तेवीसा ॥

एत्थ वि सामण्णुग्घाताणुग्घातमीसमूलुत्तरदप्पकप्पभेदभिन्ना कायव्वा । णवर – जत्थ मीसो तत्थ उग्घातिया सजोगा एगादिया ठवेउ अणुग्घातिया वि एगादिसजोगा पुढो ठवेउ, ताहे उग्घायएक्कगसजोएण सव्वे एगादिअणुग्घाता जोगा गुणिता । एव मीसगसजोगे एक्कगसजोगफला भवति, एव दुग-तिग-चउक्क पचक-सजोगेहिं गुणिता दुगादी सफला भवति एएण लक्खणेण सव्वत्थ मासफला आणेयव्वा, इम निदिरसण–उग्घातियस्स दसहिं एक्कगजोगेहिं दस अणुग्घाता गुणिया हवति । सत तु एक्कगसजोगे अणुग्घातातिगकएहिं पणयालीस दु अणुग्घाता गुणिता अद्धपचमसता जाता दुगाण अणुग्घाए बारससय इगवीससय पणुवीस-वीसा इक्कवीससय बारससय अद्धपचसता य एग सत दस य । एते अणुग्घाताण सजोगा एक्कगादिया सव्वे ते सम्मिलिता तीससहिया दोण्णिसया दससहस्सा य ।

अहुणा –

"उग्घातितदुगएहिं, पणयालीसाए सव्वसजोगा ।
अणुग्घातियाण गुणिया, एक्कादितिमेत्तिया रासी ॥
एक्के चउसतपण्णा, पणुवीसा दो सहस्स दुग जोगे ।
चउप्पण्णसया नव सहस्स चउसयपन्नास चउजोगे ॥

---

[1] व्यव० उ० गा० ३५३ ।

सेसा उवरि मुहुत्ता, णेयव्वा दस य पणचत्ता।
एते सव्वे मिलिया छायालसहस्स होति पणतीसा॥
उग्घातियदुअएहि, सव्वग्गेय अणुग्घाते।
अहणुग्घात दुएहि, पणयालिसएण सव्वसजोगा॥
अणुग्घातियाण गुणिया, एक्कादितिमेत्तिया रासी।
बारस चउप्पण्णसया, चउसया चोद्दसय सहस्स नियजोए॥
पणुवीससहस्साइ दो य सया हुति चउजोगे।
चत्तऽहिता दोण्णि सता, तीससहस्सा य पचसजोगे॥
सेसा उवरिमुहुत्ता, जा वीसऽधिय सय दसए।
उग्घातितसजोगा णुग्घाति य एक्कगातिसजोगा॥
सत्त सया सट्ठऽहिया, बावीस सहस्स लक्खो य।
इगवास सया एगे, चउणउति सता दुगम्मि पण्णऽहिया॥
तिगजोगेऽणुग्घाता, पणुवीस सहस दो य सया।
चउचत्तसहस्स सत, चउजोगपणम्मि दुसय बावण्णा॥
सेसा उवरिमुहुत्ता, दसगम्मि दसुत्तरा दोण्णि।
एव उग्घाय चउक्कएण अधिग सत दसगेण॥
एगादि अणुग्घाता, गुणियफला सव्विमो रासी।
अट्ठसया तीसहिया चोद्दससयसहस्स दोइ लक्खाइ॥
कायव्वमेसगेसु वि, एव सव्वफला पिडरासी य।

उग्घाताणुग्घातमीसेगसुत्तसव्वसखेवो इमो –

मीसगसुत्तसमासे, छायाल सहस्स दस य लक्खाइ।
पचसय अउणतीसा, दस पद सखित्तसखेवो॥

एव कएसु जे सगलसाहिया सजोगा लब्भति ते णवमसुत्तभेदा भवति, जे पुण सेसा ते सगलसुत्तभेदा वा माधितसुत्तभेदा वा इत्यर्थ। एव बहुससुत्ते वि दसमे वक्खाण सखा य अपरिसेसा भाणियव्वा। णवर – बहुसाभिलावो भाणियव्वो, एते य दस सुत्ता बहुभगाकुला णो इह सव्वभगेहिं भणिया, ते य न भणिया अतिवित्थरोत्ति काउ जे न भणिया ते उवउज्जिउ गुरुवदेसतो वा भणेज्जाहि त्ति। गया आलोयणसुत्ता।

इदाणि आरोवणसुत्ता तत्थवि आदिमा अट्ठसुत्ता सवित्थरा पूर्ववत्।

इदाणि णवम दसमा, तेसु वि एगादिसजोगा पूर्ववत्।

अतिल्लचउक्कसजोगे इमे सुत्ता –

जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा
पंचमासियं वा सातिरेगपंचमासियं वा
एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा।
अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्ज ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं,
ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया-
पुव्विं पडिसेविय पुव्विं आलोइय, पुव्विं पडिसेविय पच्छा आलोइयं,

पच्छा पडिसेवियं पुव्विं आलोइय, पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइयं।
अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं,
पलिउंचिए अपलिउंचिय, पलिउंचिए पलिउंचियं,
अपलिउंचिए अपलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेय सकय
माहणिय जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
से वि कसिणे तत्थेव आरुहियव्वे सिया ।।सू०।।१७।।

जे भिक्खू बहुसो वि चाउम्मासिय वा बहुसो वि साइरेगचउम्मासिय वा
पंचमासियं वा सातिरेगपंचमासिय वा
एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा।
अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं
ठविए वि पडिसेवित्ता मे वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया
अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउ चियं,
पलिउ चिए अपलिउंचिय, पलिउंचिए पलिउ चिय,
अपलिउंचिए अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मव्वमेय सकयं
साहणिय जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विममाणे पडिसेवेइ
से वि कमिणे तत्थेव आरुहेयव्वे मिया । एय पलिउचिए ।।सू।।१८।।

जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा
पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा
एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा।
पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडिय
ठविए वि पडिमेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया
अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचिय,
पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउ चिए पलिउ चिय,
पलिउ चिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकय
साहणिय जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विममाणे पडिसेवेइ
से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे मिया ।।सू०।।१९।।

जे भिक्खू बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेगचाउम्मासियं वा,
पंचमासिय वा साइरेगपंचमासिय वा
एएसिं परिहारट्ठाणाण अन्नयरं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा।

पलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं
ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया
अपलिउंचिए अपलिउंचियं, अपलिउंचिए पलिउंचियं,
पलिउंचिए अपलिउंचियं, पलिउंचिए पलिउंचियं।
पलिउंचिए पलिउंचियं आलोएमाणस्स सव्वमेयं सकयं
साहणिय जे एयाए पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥सू०॥२०॥

(इत्यादि सर्वं उच्चारेयव्व, एव बहुसो वि सुत्त उच्चारेयव्व) एते वि तहेव वक्खाणेयव्वा। यदि सा एव व्याख्या को विशेष? अत उच्यते – हेट्ठिमसुत्तेसु परिहारतवो ण भणिओ।

इह परिहारतवो वि भाणिज्जइ –

को भंते! परियाओ, सुत्तत्थाभिग्गहो तवोकम्मं।
कक्खडमकक्खडेसु, सुद्धतवे मंडवा दोण्णि ॥६५८४॥

"को भंते" अस्य व्याख्या –

गीयमगीओ गीओ, अहं ति किं वत्थु कासवसि (कस्स तवस्स) जोग्गो।
अगीतो त्ति य भणिते, थिरमथिर तवे य कयजोग्गो ॥६५८५॥

सो अतियारपत्तो आलोए पुच्छिज्जइ – किं तुम गीतो अगीतो वा?

जति भणइ – अह गीतो, तो पुणा पुच्छिज्जइ त्ति – तुम किं वत्थु त्ति, आयरिओ उवज्झाओ बमभाति वा?

अण्णतरे कहिए पुणो पुच्छिज्जति – "कस्स तवस्स जोगो" त्ति – किं तव काउ अच्छिहसि? कस्स वा तवस्स समर्थेत्यर्थ।

अह सो भणति – अह अगीतो, तो पुच्छिज्जति – किं तुम थिरो अथिरो त्ति?

थिरो णाम धितिसंघयणेहिं बलव, अहवा – दरिसणे पव्वज्जाए वा थिरो अचलेत्यर्थ। इतरो पुण अथिरो।

जइ भणाति – थिरो हं, तो पुच्छिज्जइ "तवे कयजोगो" त्ति कक्खडतवेहिं संभावितो अभावितो वा कृताभ्यासेत्यर्थ।

जति भावितो तो से परिहारतवो दिज्जति, इयरस्स सुद्धतवो ॥६५८५॥

जो सो एव पुच्छिज्जइ साधू सो सगणिच्चतो अण्णगणातो वा आगतो –

सगणम्मि णत्थि पुच्छा, अण्णगणा आगतं व जं जाणे।
परियाओ जम्मदिक्खा, अउणत्तीस वीस कोडी य ॥६५८६॥

जो सगणिच्चो, जो य परगणाओ गीतादिभावेहिं णज्जति, एते ण पुच्छिज्जइ। जो परगणाऽऽगओ ण णज्जति। परियाओ दुविहो – जम्मपरियाओ दिक्खपरियाओ य। जम्मपरियाओ जहण्णेण अउणत्तीस वासा, उक्कोसेण जा देसूणा पुव्वकोडी। दिक्खपरियाओ जहण्णेण वीस वासा, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥६५८६॥

इदाणि सुत्तत्थाणे –

णवमस्स ततियवत्थुं, जहण्ण उक्कोसऊणगा दसओ ।
सुत्तत्थभिग्गहा पुण, दव्वादि तवो रयणमादी ॥६५८७॥

सुत्तत्थेण जहण्णेण जेण अधीय णवमस्स ततिय आयारवत्थु, उक्कोसेण जाव ऊणगा दसपुव्वा, समत्तदसपुव्वादियाण परिहारतवो ण दिज्जति ।

कम्हा ? जम्हा वायणादिपचविहसज्झायविहाण चेव तेसिं महततर कम्मणिज्जरठाण । किं च सगलसुयणाणी महत ठाण णो परिहारतवविहाणेण विमाणिज्जति । किं च अणालावादिपदेसु य सुयस्स अभत्ती भवति । अभिग्गहा दव्वादिया ।

दव्वतो जहा – मए अज्जकुम्मासा घेत्तव्वा तक्कादि वा एकदव्व ।

खेत्ततो – एलुय विक्खभित्ता ।

कालतो – ततियाए पोरुसीए ।

भावतो – हसती रुवती वा ।

तवो य रयणावलिमादि, सीह [1]निक्कीलियादि ।

एवमादिगुणजुत्तस्स परिहारतवो दिज्जति । एवमादिगुणविप्पहीणे पुण सुद्धतवो दिज्जति । परिहारतवो कक्खडो दुश्चरेत्यथ । अकक्खडो सुद्धतवो सुकरेत्यथ ॥६५८७॥

सीसो पुच्छति – कम्हा गीतादिगुणजुत्तस्स परिहारो, इतरस्स य सुद्धतवो ?

आयरिओ भणइ – एत्थ दोहिं मडवेहि दिट्ठत करेइ । सेलमडवेण एरडमडवेण य जुत्तो ।

जं मायति तं छुब्भति, सेलमए मंडवे ण एरंडे ।
उभयबलिए वि एवं, परिहारो दुब्बले सुद्धो ॥६५८८॥

जावतिय मायति तावतित सेलमडवे छुब्भति तहा वि न भज्जति । एरडमडवो पुण जावतिय खमति तावतित छुब्भति । एव "उभय" त्ति जो धितीए सरीरेण य सघयणसपण्णो गीतादिगुणजुत्तो य तस्स परिहारतवो दिज्जति । "दुब्बलो" त्ति धितीए सघयणेण वा उभयेण वा दुब्बलो, तस्स सुद्धतवो दिज्जति ॥६५८८॥

परिहारसुद्धतवाण प्रायश्चित्त विसेसओ दिज्जति, ततो भन्नति –

अविसिट्ठा आवत्ती, सुद्धतवे तह य होति परिहारे ।
वत्थुं पुण आसज्जा, दिज्जति इतरो व इतरो वा ॥६५८९॥

परिहारतवे सुद्धतवे य अविसिट्ठा "आवत्ति" त्ति दोण्णि जणा तुल्ल आवत्तिठाण आवण्णा । तत्थ "वत्थु आसज्ज" त्ति – धितिसघयणसपण्ण पुरिसवत्थु णाउ । "इयरो" ति परिहारो तवो दिज्जति। ज पुणो धितिसघयणेहिं हीण पुरिसवत्थु तस्स ताए चेव आवत्तीए "इयरो" त्ति सुद्धतवो दिज्जति । एत्थ अण्णोण्णा विक्खत्तो इयरसद्दा ठिता ॥६५८९॥

एत्थ एगावत्तीए विसमदाणपसाहणत्थं इमो दिट्ठतो -

वमण-विरेयणमादी, कक्खडकिरिया जहाऽऽउरे बलिए ।
कीरति न दुब्बलम्मि वि, अह दिट्ठंतो तवे दुविहो ॥६५९०॥

---

१ वि (व्यव०) ।

जहा दो जणा सरिसरोगाभिभूया, तस्स जो आउरो बलव सरीरेण तस्स वमणविरेयणादिका कक्खडादिकिरिया कज्जति। दुब्बलो वि जहा सन्नति तहा अकक्खडा किरिया कज्जति। "अह" त्ति – अय दिट्ठतो तवे दुविहो उवसहारणिज्जो – कक्खडकिरियसमाणो परिहारतवो, सुद्धतवो अकक्खडकिरियसमाणो ॥६५९०॥

जेसिं णियमा सुद्धतवो परिहारतवो वा दिज्जति तन्नियमार्थमिदमुच्यते –

सुद्धतवो अज्जाणं, अगीयत्थे दुब्बले असंघयणे।
धितिबलिए य समण्णा-गयमव्वेसिं पि परिहारो ॥६५९१॥

दुब्बलो धितीए अणुवचितदेहो रोगादिणा, असघयणो त्ति – आदिल्लेहिं तिहिं सघयणेहिं वज्जितो, एतेसिं सुद्धतवो दिज्जति। जो धितीए बलव वज्जकुड्डसमाणो, जो य सघयणेहिं समण्णागओ आइल्लेहिं सघयणभावेहिं जुत्तो त्ति वुत्त भवति, गीतात्तिगुणेहिं वा समण्णागओ युक्त इत्यथ, सव्वेसिं तेसिं परिहारतवो दिज्जति, ॥६५९१॥

तस्सिमो विधी – "ठवणिज्ज ठवइत्ता" सुत्तपद, ज तेण सह णायरिज्जति त ठवणिज्ज, त सव्व गच्छसमक्ख ठविज्जइ त्ति – परूविज्जति। अधवा – सव्वा चेव तस्स सामायारी ठवणिज्जा – परूवणिज्जा इत्यर्थ ।

कह पुण त ठविज्जति ?, उच्यते –

विउसग्गो जाणणट्ठा, ठवणा भी (ती) ए य दोसु ठवितेसु।
अगडे णदी य राया, दिट्ठंतो भीय आसत्थो ॥६५९२॥

तस्स परिहारतव आवज्जतो आदावेव उस्सग्गो कीरइ। कह ?, उच्यते – गुरू पुव्वदिसाभिमुहो वा उत्तरदिसाभिमुहो वा चरतदिसाभिमुहो वा चेइयाण वा अभिमुहो। एव परिहारतवो वि। णवर – गुरुस्स वामपासे ईसिं पिट्ठतो ते दुवग्गा वि भणति – "परिहारतववज्जणट्ठा करेमि काउस्सग्ग निरुवसग्गवत्तियाए" इत्यादि ताव भणति जाव वोसिरामी ति। पणवीसुस्सासकाल सुभज्झवसिता ठिच्चा चउवीसत्थय वा चिंतेउ णमोक्कारेण पारेत्ता अक्खलिय चउवीसत्थ उच्चरति ॥६५९२॥

एत्थ सीसो पुच्छति – एस उस्सग्गो किं निमित्त कीरइ ?, उच्यते – साधूण जाणणट्ठा कीरइ। अहवा –

निरुवस्सग्गनिमित्तं, भयजणणट्ठा य सेसगाणं च।
तस्सऽप्पणो य गुरुणो, य साहए होति पडिवत्ती ॥६५९३॥

पुव्वद्ध कठ। सुभेसु तिहिकरणमुहुत्तेसु ताराचद्रबलेसु य अप्पणो गुरुस्स य जहा साहग भवति तहा परिहारतव पडिवज्जइ, ॥६५९३॥ काउस्सग्गकरणाणतर ठवणा ठविज्जइ, तत्थ आदावेव त परिहारित गुरू भणति –

कप्पट्ठिओ अहं ते, अणुपरिहारी य एस ते गीतो।
पुव्विं कयपरिहारो, तस्सऽसतियरो वि दढदेहो ॥६५९४॥

कप्पट्ठाती अह ते, जाव ते परिहारकप्पो ताव अह ते वदणवायणादिसु सहजो ते सेससाहगो। एत्थ कप्पसद्दो कालवाची। अहवा – कप्पभावट्ठितो, अह ते वदणावायणादिसु कप्पो अपरिहार्य इत्यर्थ ।

शेषा साधव परिहार्या । अण्ण च से एस गीयत्थो साधू पुव्व कतपरिहारत्तणओ जाणगो "अणुपरिहारि" त्ति भिक्खादि जतो जतो परिहारी गच्छति, ततो ततो अणुपिट्ठतो गच्छइ ति अणुपरिहारी भण्णइ । अहवा – परिहारस्स अणु थोव पडिलेहणादिसु साहेज्ज करेती ति अणुपरिहारी भण्णति । "तस्सऽसति" त्ति – जेण पुव्व परिहारतवो कतो तस्सासति इयरो त्ति अकयपरिहारो वि गीयत्थो दढसघयणो अणुपरिहारी ठविज्जति ॥६५६४॥

ठवण ठवेतो आयरितो सेससाधू इम भणाति—

एस तवं पडिवज्जति, न किं चि आलवति मा य आलवह ।
अत्तट्ठचिंतगस्सा, वाघातो (भे) न कायव्वो ॥६५६५॥

सबालवुड्ढ गच्छ गुरू आमतेउ भणाति—एस साधू परिहारतव पडिवज्जति, न एस किंचि आलवति, तुब्भे वि एय मा आलवेज्जह । अप्पणो अट्ठो अत्तट्ठो, सो य भत्तादिओ, त अप्पणो [1]पर चिंतेति ण बालादिताण ति । अहवा – णिच्छयनो अत्तट्ठो अतियारमलिण अप्पाण जहुत्तेण पच्छित्तेण विधिणा अणतिचरतो विसोहेतीति अत्तट्ठचिंतगो । एयस्स भे वाघातो इमेहि पदेहिं न कायव्वो ॥६६६५॥

आलावण पडिपुच्छण, परियट्टुट्ठाण वंदणग मत्ते ।
पडिलेहण संघाडग, भत्तदाण संभुंजणा चेव ॥६५६६॥

हे देवदत्त [1] इत्यादि आलावो गतार्थ । एस तुब्भे सुत्तमत्थ वा किंचि ण पुच्छति, एय मा पुच्छेज्जह १, एव एस तुब्भेहिं सह सुत्त अत्थ वा ण परियट्टेति २, कालवेलादिसु वा न उट्ठवेति ३, एस तुब्भ वदणय ण करेति ४, उच्चारपासवणखेलमत्तए ण वा देति ओहियमत्तग वा ५, ण य उवकरणादि किं चि पडिलेहेति ६, ण वा एस तुब्भ संघाडगभाव करेति ७, ण वा भत्तपाण देति ८, ण वा एस तुब्भेहिं सह भुंजेति ९, तुब्भे वि एयस्स एते अत्थे मा करेज्जह १०, एव दसहिं पदेहिं गच्छेण सो वज्जितो सो वि गच्छ वज्जेति ॥६६६६॥

जति गच्छवासी एते पदे अतिचरति तो इम पच्छित्त—

संघाडगा उ जाव तु, लहुओ मासो दसण्ह उ पदाणं ।
लहुगा य भत्तपाणे, संभुंजणे होंतऽणुग्घाया ॥६५६७॥

दसण्ह पदाण आलावणपदातो आढत्त जाव अट्ठम संघाडगपदे ताव मासलहु पच्छित्त, जति भत्तपाणं देति तो चउलहुगा, अह भुंजति तो चउगुरुगा ॥६५६७॥

एतेसु चेव परिहारियस्स इम—

संघाडगा उ जाव तु, गुरुओ मासो दसण्ह उ पदाणं ।
भत्ते पाणे संभुंजणे य परिहारिए गुरुगा ॥६५६८॥

आलवणपदातो जाव संघाडपद, एते अतिचरतस्स परिहारियस्स मासगुरु, अह भत्त देति संभुंजति वा तो दोसु वि चउगुरुगा भवति ॥६५६८॥

---

१ एवार्थं ।

कप्पट्ठितो सो इम करेति –

कितिकम्मं तु पडिच्छति, परिण्णपडिपुच्छणं पि से देति ।
सो वि य गुरुमुवचिट्ठति, उदंतमवि पुच्छितो कहए ।।६५९६।।

कितिकम्म ति वंदण, तं जति परिहारितो देति तो गुरू पडिच्छति, आलोयण पि पडिच्छति, परिण्ण त्ति – पच्चूसे अवरण्हे वा पच्चक्खाण से करेति, सुत्तत्थे पडिपुच्छं देति । "सो वि य" त्ति – परिहारितो "गुरू" आयरिया तं अब्भुट्ठाणादिविणएण "उवचिट्ठति" – विणय करोतीत्यर्थ । "उदत" – सरीरवट्टमाणी वत्ता तं गुरुणा पुच्छितो कहेति ।।६५९६।।

एवं ठवणाए ठवियाए "[1]दोसु ठविएसु" त्ति – कप्पट्ठिते अणुपरिहारिए य । सो परिहारिओ कयाइ भीतो होज्ज "कहमहं आलावणादीहिं गच्छवज्जितो एगागी इमं उग्गतवं काहामि ? एत्तियं वा कालं गमिस्सामि ?" त्ति एवं भीओ [2]अगडादिदिट्ठतेहिं आसासेयव्वो ।

जहा – कोति अगडे पडितो कहमुत्तरिस्सामि त्ति भीओ ताहे सो तडत्थेहिं आसासिज्जति – मा तुम बीहेहि, वयं तुमं उत्तारेमो, एस रज्जू आणिज्जइ, एवमासासिउ णिब्भओ थाहं बंधति । अह सो भण्णति – "मओ एस वराओ, ण एयं कोइ उत्तारेइ", ताहे सो णिरासो अंगे मुयति, मरति य । एवं परिहारितो वि आसासेयव्वो ।

जहा कोइ [3]णदीए अणुसोयं वत्ततो भीओ ताहे सो तडत्थेहिं आसासितो थाहं [4]बंधइ । अणासासितो णिरासो भया मरति ।

जहा वा कस्सइ [5]राया रुट्ठो ताहे भीओ मारिज्जिहामि त्ति ताहे सो अण्णेहिं आसासिज्जति – "मा बीहेहि, राया वि अन्नायं न करेति", एवं सो न विद्दाति । अह सो भण्णति – "विणट्ठो सि' ताहे विपज्जति ।

एवं परिहारित्तो वि भाणियव्वो – मा भीहि, अहं ते वंदणदायणादिसु कप्पट्ठितो एस ते तवोकिलंतस्स असमत्थस्स अणुपरिहारिओ । एवं आसासिता तवं वहतो किलामिओ विरियायारं अहावेतो परिहारितो अण्णतरं किरियं काउमसमत्थो अणुपरिहारियस्स पुरओ इमं भणाति –

उट्ठेज्ज णिसीएज्जा, भिक्खं हिंडेज्ज भंडगं पेहे ।
कुवियं पियबंधवस्स व, करेइ इतरो वि तुसिणीओ ।।६६००।।

जइ उट्ठेउं ण सक्कति ताहे भण्णइ उट्ठेज्जामि, ताहे अणुपरिहारितो उट्ठवेइ । एवं णिसिएज्जामि । भिक्खायरियाए जं ण सक्केति तं भिक्खग्गहणादि सव्वं करेति । अह सव्वहा भिक्खं हिंडिउं ण सक्केति ताहे भणाति – भिक्खं हिंडिज्जामि । एवं उत्तरे अणुपरिहारितो से हिंडिउ देति, भंडगापेहणे वि साहज्जं करेति, सव्वं वा पडिलेहति । जहा कोवि प्रियबधुस्स कुवितो जं से करणिज्जं तं सव्वं तुण्हिक्को करेति तहा "इयरो" त्ति – अणुपरिहारी परिहारियस्स सव्वं करणिज्जं तुसिणीओ करेति ।।६६००।।

चोदगाह – जइ भयं से उप्पज्जइ, एरिसी वा अवत्था भवति, ता किं पच्छित्तं कज्जति ?

किं चाह –

अवमो व रायदंडो, ण य एवं च होइ पच्छित्तं ।
संकर सरिसव सकडे, मंडव वत्थेण दिट्ठंता ।।६६०१।।

---

१ गा० ६५९२ । २ गा० ६५९२ । ३ गा० ६५९२ । ४ पप्पति, इत्यपि पाठ । ५ गा० ६५९२ ।

जहा अवसेहिं रायदंडो छुब्भति, किमेव पच्छित्त पि ?

आचार्याह – ण एव रायदडो विव अवसेहि वि वोढव्वो, पच्छित्त सवसेहि इच्छातो वोढव्व चरणविसुद्धिणिमित्त । अहवा – एव जहा अवसस्स रायदडो छुब्भति, जति ण छुब्भति तो दोसो भवति। पच्छित्त पि अवस्स वोढव्व, जति ण वहति तो चरणविसुद्धी ण भवति ।

पुनरप्याह चोदक – 'बहु आवण्ण छुब्भउ, थेव पच्छित्त कि छुब्भइ ? किं तत्तिलएण होहिति" त्ति ।

आयरिओ भणइ – "सकर" पच्छद्ध । सकर त्ति –

जहा सारणीए खेत्ते पज्जिज्जते एक्क वि तिण्ण लग्गत णो अवणीय, तण्णिस्साए अण्णे लग्गा, तेसि णिस्साए पत्तकट्ठमादीवि, एव तम्मि सोते रुद्धे विसोय गय जल कुसारढढणादी पज्जेत्ति ण छेत्त सुक्खसस्स । एव चरणसोते पच्छित्तसकरेसु असोहिज्जते सव्वहा चरणणासो भवति । एव णाउ ज जहा आवज्जति त तहा सोहेयव्व ।

जहा वा मडवे एक्को सरिसवो पक्खित्तो सो णावणीओ, अण्णो वि, एव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं होहिहि सो सरिसवो जेण पक्खित्तेण मडवो भज्जिहिति ।

एव थेवथेवेण आवण्णेण असोहिज्जनेण चरित्तमडवो वि भज्जिहति ।

जहा भडीए एक्को पासाणो वलयिओ, जहा सरिसवस्स विभासा तहा भडीए वि। अहवा – भडीए एक्क दारुअ भग्ग, त ण सठवित, एव अण्ण पि, एव सव्वा भडी भग्गा ।

एव चरित्तभडीए वि उवसहारो ।

जहा वा सुद्धे वत्थे कज्जलविदू पडिओ, सो ण धोओ, अण्णो वि पडितो सो ण धोतो, एव पडतेहिं अधोयतेहि सव्व त वत्थ कज्जलवण्ण जाय ।

एव सुद्ध चरित्त थेवथेवावत्तीहिं असोहिज्जनीहिं सव्वहा अचरित्ती भवति ।।६६०१।।

एव दिट्ठतेहिं पच्छित्तदाणकारणे पसाहिते चोदक –

अणुकंपिता व चत्ता, अहवा सोही न विज्जते तेमि ।
कप्पट्ठगभंडीए, दिट्ठंतो धम्मगा सुद्धो ।।६६०२।।

चोदगो भणति – एगावत्तीए जस्स सुद्धतव देह, सो भे अणुकपितो रागो य । तत्थ जस्स परिहार सो भे चत्तो दोमो य तत्थ । अहवा – परलोग पडुच्च परिहारतवी अणुकपिओ चरणसुद्धीओ सुद्धतवी चत्तो चरित्तस्स असुद्धत्तणतो ।

अहवा – जइ परिहारतवेण सुद्धी तो सुद्धतवइत्ताण सोही ण विज्जति । अह सुद्धतवेण विसुद्धो भवति ता परिहारतवकक्खडकरण सव्व णिरत्थय ।

एत्थ आयरिया कप्पट्ठगभडीए महल्लभडीए य दिट्ठत करेति ।

जहा कप्पट्ठा अप्पणो सगडियाए ववहरति, सकज्जणिप्फत्ति च करेति, णो तरति महल्लभडीए, कज्ज ति काउ ण वा महल्लभडीए आरोविज्जति । अह आरोविज्जति तो सा भज्जति, कज्ज च ण सिज्झति । एव महल्लगा वि कप्पट्ठगभडीए कज्ज ण करेति, अह करेति तो पलिमथो, सकज्जसिद्धी य ण भवति ।

एव सुद्धतवेणेव सुद्धी भवति, परिहारतवेण णेव भवइ ।

कह ? उच्यते – "[1]धम्मया सुद्धो" त्ति अस्य व्याख्या –

जो जं काउ समत्थो, सो तेण विसुज्झते अमढभावो ।
गूहितबलो ण सुज्झति, धम्मसभावो त्ति एगट्ठा ॥६६०३॥

जो साधू "ज" ति सुद्धतव परिहारतव वा काउ समत्थो भवति स साधू तेणेव तवेण सुज्झति । अमढभावत्तणओ नि स्ववीर्यं प्रतिमाया अकुव्वमाणो स्वधर्मव्यवस्थितत्वाच्च, जो पुण स्ववीर्यं गूहति सो न सुज्झति, जतो तस्स धम्मो त्ति वा, सभावो त्ति वा, दो वि एगट्ठा ॥६६०३॥

एतेसु शुद्धपरिहारतवविशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते –

सुद्धतवे परिहारिय, आलंवणादीसु कक्खडे इतरे ।
कप्पट्ठिय अणुपरियट्टण वेयावच्चकरणे य ॥६६०४॥

सीसो पुच्छति – सुद्धतवपरिहारतवाण कतरो कक्खडो वा, अक्कखडो वा ?

आयरियो भणति – सुद्धतवो आलवणादिहिं अकक्खडो, इयरो त्ति परिहारतवो सो अणालवणादीहिं कक्खडो। जो पुण तवकालो, तवकरण वा त दोसु वि तुल्ल । आवण्णपरिहार पवण्णस्स जे कप्पट्ठितअणुपरिहारिया ठविया तेहिं करणिज्ज "[2]वेयावडिय" त्ति सुत्तपद ॥६६०४॥

कि पुण त वेयावडिय, ज कायव्व ?, अत उच्यते –

वेयावच्चे तिविहे, अप्पाणम्मि य परे तदुभए य ।
अणुसट्ठि उवालंभे, उवग्गहो चेव तिविहम्मि ॥६६०५॥

दव्वेण भावेण वा ज अप्पणो परस्स वा उवकारकरण त सव्व वेयावच्च । त च तिविह – अणुसट्ठी, उवालभो, उवग्गहो य। उवदेसपदाणमणुसट्ठी श्रुतिकरण वा अणुसट्ठी । सा तिविहा – आय-पर-उभयाणुसट्ठी, अत्ताणुसट्ठी जो अत्ताण अणुसासति, पराणुसट्ठी जो पर अणुसासति, परेण वा अणुसट्ठी ॥६६०५॥

अणुसट्ठीय सुभद्दा, उवलंभम्मि य मिगावती देवी ।
आयरिओ दोसु वि उवग्गहेसु सव्वत्थ आयरिओ ॥६६०६॥

पराणुसट्ठीए जहा चपानयरीए सुभद्दा णागरजणे अणुसट्ठा "धण्णा सपुण्णा सि" त्ति । उभयाणुसट्ठी जो अत्ताण पर च अणुसासति ॥६६०६॥

एव तिविह पि अणुसट्ठि इमेण गाथाजुयलत्थेण अणुसरेज्जा –

दंडसुलभम्मि लोए, मा अ मतिं कुणसु दंडिओ मि त्ति ।
एस दुलहो उ दंडो, भवदंडणिवारणो जीव ॥६६०७॥

कण्ठ्या । ण केवल एस दडो भवणिवारगो, अपि चात्माऽनाचारमलिनो विशोधित ॥६६०७॥

अवि य हु विसोहितो ते, अप्पाऽणायारमतिलिओ जीव ।
इति अप्प परे उभए, अणुसट्ठि थुइ त्ति एगट्ठा ॥६६०८॥

---

१ गा० ६६०२ । २ सू० १७ ।

साधु कय ते ज अप्पाऽणायारमलिणो विसोधितो त्ति एव वुच्चति। सेस कठ ॥६६०८॥

इदाणि '[1]उवलभो" त्ति – अणायारकरणोवलभातो, साधुणा ताव एस पदाण उवालभो भण्णति। सो वि तिविहो – अप्पाणऽपरे तदुभए य। ज अप्पणा चेव अप्पाण उवालभति, जहा –

तुमए चेव कतमिणं, न सुद्धकारिस्स दिज्जते दडो ।
इह मुक्को वि ण मुच्चसि, परत्थ अह हो उवालभो ॥६६०९॥

आयरियादणा जो परेण उवालब्भति जहा मियावती देवी अज्जचदणाए उवालद्धा "अकालचारिणि" त्ति काउ। उभयउवालभो जा अप्पणा अप्पाण उवालभति आयरियादिणा य उवालब्भति, अहवा – गुरुणा उवलब्भमाणो त गुरुवयण सम्म पडिवज्जनो पच्चुयरति, एम उभयउवालभो ॥६६०९॥

इदाणि उवग्गहो, "[2]उवग्गहो चेव तिविहम्मि" त्ति दव्वतो णामेगे उवग्गहो ना भावओ, नो दव्वओ भावओ, एगे दव्वतो वि भावतो वि, चउत्थो सुण्णो।

तइयभगविभासा इमा – "[3]आयरिओ दोसु" पच्छद्ध।

अस्य व्याख्या –

दव्वेण य भावेण य, उवग्गहो दव्वे अण्णपाणादी ।
भावे पडिपुच्छादी, करेति जं वा गिलाणस्स ॥६६१०॥

कप्पट्ठितो अणुपरिहारिओ वा असमत्थस्स असणाती आणेउ देति। भावे आयरिओ सुत्ते अत्थे वा पडिपुच्छ देइ। अहवा – ज गिलाणस्स कज्जंत मो भावस्सुवग्गहो ॥६६१०॥

अहवा "[4]दोसु वि उवग्गहेसु त्ति अस्य व्याख्या –

परिहार ऽणुपरिहारी, दुविहेण उवग्गहेण आयरिओ ।
उवगिण्हति सव्वं वा, मबालवुड्ढाउलं गच्छं ॥६६११॥

परिहारिय अणुपरिहारिय च एते दो वि दुविहेण त्रि दव्वभावोवग्गहेण उवगेण्हति। '[5]सव्वस्सायरिओ" त्ति परिहारियस्स अपरिहारियस्स अणुपरिहारियस्स सबालवुड्ढस्स य गच्छस्स दव्वभावेहिं सव्वहा उवग्गह करेति ॥६६११॥

एव परिहारियस्स परिहारतवेण गिलायमाणस्स पुव्व अणुसट्ठी कज्जति, ततो उवालभो दिज्जति, पच्छा से उवग्गह कज्जति।

भणिय च –

"दाण दवावण कारावणे य करणे य कयमणुण्णा य।
उवहियमणुवहियविधि जाणाहि उवग्गह एय" ॥१॥

अणुसट्ठि-उवालभ-उवग्गहे तिसु वि पदसु अट्ठभगा कायव्वा, जतो भण्णति –

अहवाऽणुसट्ठुवालंभुवग्गहे कुणति तिन्नि वि गुरू से ।
सव्वस्स वा गणस्सा, अणुसट्ठादीणि सो कुणति ॥६६१२॥

---

१ गा० ६६०५। २ गा० ६६०५। ३ गा० ६६०६। ४ गा० ६६०६। ५ गा० ६६०६।

एम अट्ठमो भगो, आदिल्लेसु वि सत्तसु जत्तिय चेव भणति करेति वा । अहवा – ण केवल परिहारियस्स करेति "सो" त्ति – आयरिओ सव्वस्स गणस्स अट्ठभगीए अणुसट्ठिमादीणि करेति, अहवा – "सो" त्ति – परिहारिओ, गणस्स करोतीत्यर्थ ॥६६१२॥

अत्र चोदक –

आयरिओ केरिसओ, इहलोए केरिसो व परलोए ।
इहलोए अ सारणिओ, परलोए फुडं भणंतो उ ॥६६१३॥

छम्मासिय अणुग्गहकसिण जो एम उवग्गहकरो आयरिओ त चेव णाउमिच्छे केरिसो इहलोगे परलोए वा हितकरो ?

आचार्याह – आयरिओ चउव्विहो इमो – इहलोगहिते णामेगो परलोगे । एव चउभगो । पढमबितियभगवक्खाण पच्छद्ध । इहलोग पडुच्च जो य सारेति, आहारवत्थपत्तादिय च जोग्ग देति । परलोगहितो जो पमादतस्स चोयण करेइ, ण वत्थपत्तादिय देति । उभयहितो जो चोदेति, वत्थादिय च देति । चउत्थो उभयरहिओ ॥६६१३॥

चोदगाह – "णणु जो भद्दमभावत्तणओ ण चोएति, सो इहलोए इच्छिज्जति । जो पुण खरफरुस भणतो चडरुद्राचार्यवत् चोदेति, ण सो इच्छिज्जति" ।

आचार्याह –

जीहाए विलिहंतो, ण भद्दतो जत्थ सारणा णत्थि ।
दंडेण वि ताडतो, स भद्दतो सारणा जत्थ ॥६६१४॥ कठा

एत्थ कारणमिण –

जह सरणमुवगयाणं, जीवियववरोवणं णरो कुणति ।
एवं सारणियाणं, आयरिओ असारओ गच्छे ॥६६१५॥

साधू कह सरणमुवगया ?, उच्यते – जेण पक्खे पक्खे भणति – "इच्छामि खमासमणो !, कताइ च मे कितिकम्माइ" इत्यादि जाव "तुब्भ तवतेय सिरीओ (ए) चाउरताओ ससारकताराओ साहत्थ (ट्टु) णित्थरिस्सामि" त्ति कट्टु एव सरणमुवगता अचोदेतो परिच्चयइ ॥६६१५॥

तम्हा ततियभगिल्लो आयरिओ परिहारियस्स अणुसट्ठा तिविह वेयावच्च करेति, कारवेइ अणुमण्णति य । एव वेयावच्चे कीरमाणे ज पडिसेवति आवज्जतीत्यश । "[1]से वि कसिणे तत्थेव आरुभियव्वे", एव सुत्त पद कसिण णाम कृत्स्न निरवशेष ।

त इम छव्विह –

पडिसेवणा य सचय, आरुवण अणुग्गहे य बोधव्वे ।
अणुघात णिरवसेसे, कसिणं पुण छव्विहं होति ॥६६१६॥

---

१ सू० १७ ।

पारंचि[1] सतमसीतं[2] छम्मासारुवणा[3] छद्दिणगतेहिं[4] ।
कालकणिरंतरं[5] वा अणूणमहिय[6] भवे छट्टं ॥६६१७॥

एषा यथासख्येन इमा विभासा –

पडिसेवणाकसिण पारचिय, सचयकसिण असीय माससय, आरुवणकसिण छम्मासिय, अणुग्गहक सिण णाम छण्ह मासाण आरोवियाण छद्दिवसा गता ताहे अण्णो छम्मासो आवण्णो ताहे ज तेण अद्धवूढ त झोसित ज पच्छा आवण्ण छम्मासित त वहति, एत्थ पच मासा चउव्वीस च दिवसा जेण झोसिया । एय अणुग्गहकसिण । एत्थेव णिरणुग्गहकसिण भाणियव्व, जहा छम्मासिय पट्ठविए पच मासा चउवीस च दिवसा वूढा ताहे अण्ण छम्मासिय आवण्णो ताहे त वहति पुव्विल्लस्स छद्दिणा झोसो । अणग्घायकसिण ज कालग जहा मासगुरुगादि ।

अहवा – ज णिरतर दाण एत्थ मासलहुगादी वि णिरतर दिज्जमाण अणुग्घात भवति, अहवा – अणुग्घातिय तिविह – कालगुरु तवगुरु उभयगुरु – कालगुरु ज गिम्हादिकक्खडे काले दिज्जति, तवगुरु ज अट्ठमादि दिज्जति णिरतर वा । उभयगुरु ज गिम्हे णिरतर च । णिरवसेसकसिण णाम ज आवण्णा त सव्व अणूणमतिरित्त दिज्जति ॥६६१७॥

एत्थ कयरेण कसिणेण त आरुभियव्व ? उच्यते –

एत्तो समारुभेज्जा, अणुग्गहकसिणेण छिण्णसेसम्मि ।
आलोयणं सुणेज्जा, पुरिसज्जातं च विन्नाय ॥६६१८॥

एत्तो त्ति छव्विह (कसिणाण अणुग्गह) कसिणेण आरुभेयव्व पुव्विल्लस्स वि ण सेसदिवसेसु, त च आलोयण सुणेत्ता हा दुट्ठुकतादि पुरिसजाय च धितिसघयणेहिं दुब्बल एव विण्णाय जति छम्मासिय आवण्णो तो छसु दिवसेसु गतेसु आरोविज्जति । अह तिव्वज्झवसिएण पडिसेवित रागायत्तेण आलोचित्त धितिसघयणेहिं य बलवतो से णिरणुग्गह आरोविज्जति "छद्दिणसेस" त्ति ॥६६१८॥

इयाणि पडिसेवणाआलोयणासु चउभगे इम सुत्तखड उच्चारेयव्व – "[1]पुव्व पडिसेविय पुव्व आलोतिय" इत्यादि, अस्यार्थ –

पुव्वाणुपुव्वी दुविहा, पडिसेवणता तहेव आलोए ।
पडिसेवण आलोयण, पुव्विं पच्छा उ चउभंगो ॥६६१९॥

'पुव्वाणुपुव्वि" त्ति अस्यार्थ – पूर्वस्य य अनुपूवश्च स पूर्वानुपूव ,

एत्थ णिदरिसणं – एकस्स दो अणु, ते य तिगस्स पुव्वा दुगस्स तिन्नि अणु ते य चउक्कगस्स पुव्वा, एव सवत्र ।

अहवा – पूर्वं वा अनुपूर्वं स एव पूर्वानुपूर्वी, अनेन अधिकार, जेण ज पुव्व पडिसेवित आलोयणकाले तमेव पुव्व आलोचित ति ।

अधवा – सामयिगी सण्णा, जाव अणुपरिवाडी सा पुव्वाणुपुव्वी भण्णति, सा य दुविहा – पडिसेवणाए आलोयणाए य । एयासु पडिसेवणा आलोयणासु पुव्वापच्छुच्चरणविकप्पेण चउभगो कायव्वो ॥६६१९॥

---

१ सू० १७ ।

जहा सुत्ते भगभावणा इमा –

पुव्वाणुपुव्वि पढमो, विवरीए बितियततियए गुरुओ ।
आयरियकारणा पुण, पच्छा पुच्छा य सुण्णो उ ॥६६२०॥

पुव्वाणुपुव्वी पढम त्ति एस पढमो भगो, अस्य व्याख्या –

पच्छित्तऽणुपुव्वीए जयणा पडिसेवणा य अणुपुव्वी ।
एमेव वियडणादी, बितिय-ततियमादिणो गुरुओ ॥६६२१॥
पुव्वं गुरूणि पडिसेविऊण पच्छा लहूणि सेवित्ता ।
लहुए पुव्विं कधयति, मा मे दो देज्ज पच्छित्ते ॥६६२२॥

पुव्वद्ध ज गीयत्थकारणे लहुगुरुपणगादिजयणाए पच्छित्तणुपुव्वि अवलबतो पडिसेवति । एस पडिसेवणाणुपुव्वी । वियडण त्ति आलोयणाणुपुव्वी, सा वि एव चेव ज जहा पडिसेवित तहा चेव आलोएति त्ति एस पढमभगो ।

विवरीतो वितिओ– 'पुव्व पडिसेवित पच्छा आलोइय" ति एस बितियभगो ।

ततिओ वि पच्छा पडिसेवित पुव्व आलोइय ति, एएसु बिइयततियभगेसु ज आवण्णो त दिज्जति, मायाविणो य काउ मायाणिप्फण्ण चउगुरुओ मासो दिज्जति । एतेसु वि ततियभगेसु भावना इमा, एत्थ गुरु त्ति बृहद् द्रष्टव्यम्, लघु अल्पमिति, सो अ मासलहु आदि देति, पुव्व सेविऊण पणगादिया पच्छा पडिसेविए पुव्व कहयति, मासादिया पुण पच्छा कहयति ।

स्यात् किमेव कहयति ?, उच्यते–आसकया "मा मे दो देज्ज पच्छित्ते" त्ति अजयणणिप्फण्ण अतियारणिप्फण्ण च देति ॥६६२२॥

अहवाऽजतपडिसेवि, त्ति नेव दाहिंति मज्झ पच्छित्तं ।
इति दो मज्झिमभंगा, चरिमो पुण पढमसरिसो उ ॥६६२३॥

बितियभगे वा करेति इम चित्ते – "पणगादिआलोयण सोउ" "अजयणपडिसेवि" त्ति गुरुणे ण दाहिति, पच्छित्त अप्प वा दाहिति" एव मायिस्स मज्झिमदोभगसभवो भवति । अहवा–विसेसतो ततियभगऽत्थो इमो – "आयरियकारणा" (गा० ६६२०) पच्छद्ध, आयरियादिकारणेण अण्ण गतुकामो आयरिए वा गतुकामो आयरिय भणति –इच्छामि भते तुब्भेहिं अब्भणुण्णाओ इमेण कारणेण अमुग विगतिं एवतिय काल आहारेत्तए । एव तत्थ गीयत्था सभवाओ पुव्व आलोएत्ता पच्छा पडिसेवति । अहवा – तृतीयभगो शून्यो मतव्य । चरिमभगो पढमभगसरिच्छो चेव णायव्वो ॥६६२३॥

एत्थ जम्हा पढमचरिमा दो वि भगा अपलिकुचियाभावे बितिय ततिय पलिकुचिताभावे तम्हा इमे अपलिउचियभावे चउभगसुत्तखड आगत ।

'अपलिउचिते अपलिउचित्त' इत्यादि चउभगसुत्त उच्चारेयव्व ।

पलिउंचण चउभंगो, वाहो गोणी य पढमओ सुद्धो ।
तं चेव य मच्छरिए, सहसा पलिउंचमाणे उ ॥६६२४॥

पलिउचण इत्यर्थं प्रतिषेधदर्शनाथ । जहा सूत्रे तहा चउभगो क्वचित् सूत्रे आदिचरिमा भगा मज्झिमा अत्थतो वत्तव्वा ।

अस्मिन् सूत्रे चउभगे रहिते वा भिक्खुणिदिट्ठतेहिं वक्खाण किज्जइ ।

जहा कोइ वाहो कस्सइ इस्सरस्स कयवित्तीओ मस उवाणेति । अण्णया सो वाहो सु दर मस घेत्तु इस्सरते सपत्थितो, चितेइ य सव्वेत मम इस्सरस्स दायव्वमिति । पत्तो इस्सरसमीव, तेण ईसरण सुट्ठुमेण आभट्ठो-स्वागत सुस्वागत उवविसाहि त्ति, मज्ज च पातितो, वाहेण य तुट्ठेण सव्व त मस जहा चिंतित दिण्ण ।

एव को ति सावराही आलोइउकामो आयरियमगास पट्ठितो चिंतेति य सुहुमबादरा सव्वे अतियारा आलोइयव्व त्ति पत्तो आयरियसमीव । आयरिएण वि सुट्ठु आढातितो – "धण्णो सपुण्णो आसि । त न दुक्कर ज पडिसेवित, त दुक्कर ज सम्म आलोइज्जति ।" एव अप्फालिएण सव्व जहा चिंतिय आलोइय, सुद्धो य, एस पढमभगो ।

इदाणि बितियभगो, "त चेव य मच्छरिय" त्ति पच्छद्ध –

खरंटणभीओ रुट्ठो, सक्कारं देंति ततियए सेसं ।
भिक्खुणि वाह चउत्थो, सहसा पलिउंचमाणो उ ॥६६२५॥

पढमपातो त बितियभगे "त चेव" त्ति – तहेव वाहो आगओ, जहा पढमभगे अपलिउच-माणो त्ति, तेण वि इस्सरेण कारणे वा मच्छरो से उप्पातितो, "सहस" त्ति – पुव्वावर अणालोवेउ "कीस उस्सूरे आगतो" ? त्ति । तेण खरटिएण भीओ पुव्वेण रुट्ठेण य पलिउचिय ण सव्व मस दिण्ण, पलिउचमाणे बितियभगो भवति ।

आलोयगो वि आगओ । पुच्छिओ – केण कारणेण आगओ त्ति ? भणिय – अवराह आलोइउ । आयरिएण खरटितो । कीस तहा विहरिय जहा अवराह पावह ?, आलोएतो वा खरटितो, तेण वि ण सम्म आलोतित । एस गतो बितियभगो ।

इदाणि ततियभगो – "सक्कार देति ततियए सेस" ति – तहेव वाहो सपट्ठितो मस घेत्तु, पुव्वमसमाणिय पलिउचियचित्तो चिंतेइ ण सव्व मस मए दायव्वमिति । पत्तो इस्सरसमीव, इस्सरेण सुट्ठु आढातितो, तेण से सव्व मस दिण्ण ।

एव आलोयगो वि सपट्ठिओ पडिपहिय साहु पुच्छति – "अमुग आयरिय मज्झेण आगतो सि ?" भणति – "आम" । "केरिसो सो सुहाभिगमो ण व" त्ति ? तेण भणिय – "दुरभिगमो" । तहेव तेण चिंतिय–न सम्म मए आलोइयव्व ति । आगतो गुरु समीव तेण सम्ममाढातितो पुच्छितो य किमागमण ?, तेण भणिय आलोएउ । ताहे आयरिएण सुट्ठु उववूहिओ धण्णो सि विभासा, तेण तुट्ठेण सम्म आलोचित । एस ततियभगो गतो ।

इदाणि चउत्थभगो – "भिक्खुणिवाह" पच्छद्ध, चउत्थभगो तहेव आगतो जहा ततियभगे पलिउचमाणो, णवर – आगओ इस्सरेण खरटितो, तेण खरटिएण पुव्वपलिउचियभावेण य सम्म ण दिण्ण, एव आलोयगे वि उवणओ कायव्वो ।

१ गा० ६६२४ ।

इमो गोणीए चउभंगदिट्ठतो। जहा गोणी दोहिउकामा पण्हुया आगया, सामिणा उव-वूहिता गोभत्तेण, कड्डुनिता, धूमादीहिं य उवग्गहिया, पलिमत्ताए णिउत्ता सव्व पण्हुता। एव आलोयगविभासा वि।

बितिया आगआ, ण आढिया, पारद्धा य पहारेहिं, तीए ण दिण्ण सव्व खीर। आलोयगेहिं तहे उवणग्रो। तनिया गूहनी दोहेउकामा आगया उवज्झिना प लमेत्ताए णिउत्ता सव्व पण्हुया, एव आलोयगविभासा वि। चउत्था गूहनी आगना, सामिणा य पहारेहि पारद्धा, ण सव्व पण्हुया, आलोयगो वि तहेव त उवणग्रो।

इदाणि भिक्खुणिदिट्ठतो – का इ भिक्खुणी कस्स इ पुव्वपरिचियस्स घर गता, तीए तिरिक्खे [1]खोरग दिट्ठ गहिय च तीए, पच्छा से परिणयभावे अप्पेमि त्ति घर गता, तेहिं आढाइता, सा तुट्ठा तीए दिण्ण ॥१॥

अण्णाए गहिय चितिय च नाए दाहामि त्ति घर गता, सा य न आढाइया, तेहिं खरटिया य, तीए न दिण्ण ॥२॥

ततियाए वि गहिय चिनिय च नाएण दायव्व ति, घर गता, सुस्वागता, आसणादीहिं आढातिया, तीए दिण्ण ॥३॥

चउत्थाए गहिय चितिय च णाएण दायव्व ति, घर गता, णाढाइया खरटिता, ण दिण्ण ॥ छ ॥ "भिक्खुणि वाह चउत्थो त्ति" भिक्खुणिवाहगोणिसु य एक्केक्क चउभगो, तेसु चउत्थे भगे पलिउचमाणेसु वि स्वामिना स्वाथभ्र शिना सहसा अणादरो कता खरटणा वा पयुत्ताए ततो तेहिं तथा चितिय [मे] तहेव पलिउचितमित्यर्थ ॥६६२५॥

पडिरूवगोवसहारो इमो –

इस्सरसरिसो उ गुरू, साहू वाहो पडिसेवणा भंस ।
णूमणता पलिउंचण, सक्कारो वीलणा होति ॥६६२६॥ कठ्या

सुत्तखड इम – "अपलिउचि" इत्यादि, अस्यार्थ –

आलोयण त्ति य पुणो, जा एस अकुंचिया उभयओ वि ।
स च्चेव होति सोही, तत्थे य मेरा इमा होति ॥६६२७॥

आलोयमाणो अपलिउचिय जो आलोएति ' उभउ" त्ति – अपलिउचियसकप्पेण अपलिउचिय चेव आलोतित, अहवा – पडिसेवणाणुलोमेण पच्छित्ताणुलोमेण य "सच्चेव होइ सोधि" त्ति – जो एम अपलिउचिय अपलिउचिय आलोएइ सोऽमाडणिप्फण्णो तो सुद्धेत्यथ । पुनर्विशेषणे। कि विशिनष्टि?, उच्यते– आलोएतस्स आलोयणारिह प्रति तत्थ या मेर त्ति सामाचारी इत्यर्थ । त आमणगाभिग्गहेण अतियरतस्स पच्छित्त भणति एव विसेसेति ॥६६२७॥ अथवा – एसा आलोयणा आयरियसिस्सभावे भवति।

तेसिं सामाचारी इमा –

आयरिए कह सोही, सीहाणुग-वसभ-कोल्लुगाणूए ।
अहवा वि सभावेणं, णिम्मंसुगे मासिगा तिण्णि ॥६६२८॥

---

१ कचोलक।

जया आलोयणारिहायरिए आलोयगा आलोयण पउजति तदा कस्स कह सुद्धी असुद्धी वा भवति ? उच्यते – आयरियो तिविहो – सीहाणुगो वसहाणुगो [1]कोल्लुगाणुगो ।

तत्थ जो महतणिसिज्जाए ठितो सुत्तमत्थ वाएति चिट्ठइ वा सो सीहाणुगो ।

जो एक्कमि कप्पे ठितो वाएति चिट्ठइ वा सो वसहाणुगो ।

जो रयहरणणिसेज्जाए उवग्गहियपादपुछणे वा ठितो वाएति चिट्ठति वा सो कोल्लुगाणुगो ।

एव वसहभिक्खुगो वि विकप्पेयव्वा, एव आलोयगा वि आयरियवसहभिक्खुणो विकप्पेयव्वा । णवर – कोल्हुगाणुगे विसेसो – सदा णिसेज्जाए पादपुछणे वा उक्कुडुओ वा आलोएति, जइ उक्कुडुओ आलोएति तो सुद्धो । णिसेज्जपादपुछणेसु भयणा । "अहवा – वि सभावेण णिम्मसुग" त्ति – अहवेत्यय नियमप्रदशनाथ । स्वको भाव स्वभाव, कोति आयरिओ वसभो वा सभावेण कोल्लुगाणुगो हवेज्ज । अहवा – धम्मसद्धाए कोइ नेच्छति सिज्जाए उवविट्ठिउ, तस्स निसिज्जा कायव्वा ण कायव्वा ?, उच्यते – जो होउ सो होउ तस्स णिसिज्ज काउ आलोयगेण आलोएयव्व, जइ ण करेइ तो पच्छित्त पावइ ।

एत्थ दिट्ठतो णिमसुगेण रण्णा ।

जहा एक्को राया णिमसु, णत्थि से किंचि सरीरे रोम ति । तस्स कासवगो कयवित्ती, णत्थि से रोम ति काउ परिभवेण न कताइ कम्मिज्जणाए उवट्ठाति । अण्णया रण्णा भणिय – आणहि छुरभड, कम्मिजाहि त्ति । तेण आणिय उग्घाडिय, दिट्ठ पमादतो अपडिजग्गणाए सव्व कट्टिय, एस म परिभवति । रुट्ठेण रण्णा सव्वस्सहरणो कतो, वित्ती य छिण्णा, अण्णो य ठविओ, सो य सत्तमे दिवसे छुरभड सज्जेत्ता उवट्ठाति, सुट्ठेण रण्णा वित्तो सवड्ढिता भोगाभागी य जातो । एव जा णिसेज्ज करेति सो इहलोगे जस पावति, परलोगे वि कम्म णेज्जरणातो सिद्धि पावति, जो पुण निसिज्ज न करेति सो पायच्छित्तदड पावति । इम – "मासिया तिण्णि" जत्थ आयरियाती सरिसो सरिसाणुअस्स आलोएइ । तत्थ तिण्णि मासिया । सीहाणुस्स आयरियस्स सीहाणुगो चेव आयरिओ आलोएति । एय एक्कमासिय । वसभस्स वसभाणुगस्स वसभो चेव वसभाणुगो आलोइए । एव बितिय मासिय । भिक्खुस्स कोल्लुगाणुगो आलोएइ । एव ततिय मासिय । एय सट्ठाणे पच्छित्त ॥६६२८॥

इदाणि सट्ठाणपरट्ठाणजाणणत्थ तेसु चेव पच्छित्त वत्तुकामो इदमाह –

सट्ठाणाणुग केई, परठाणाणुग य केइ गुरुगादी ।

सनिसिज्जाए कप्पो, पुच्छ निसिज्जा व उक्कुडए ॥६६२९॥

"सट्ठाणाणुग केइ" त्ति – आयरियस्स सच्छोभगा निषद्या सन्निषद्या, तट्ठियस्स सीहा सट्ठाणगा सीहाणुगत्त सट्ठाण, तस्स परट्ठाणाणुगत्तण कप्पपुछगादीसु वसभकोल्लुगाणुयत्तणा ।

वसभस्स सट्ठाणाणुगत्त कप्पे वसभाणुगत्त तस्स परट्ठाणाणुगत्तण सणिसेज्जपुछणादिसु सीहाणुग कोल्लुगाणुगत्तणा ।

भिक्खुस्स सट्ठाण णुगत्तण पादपुछग णिसेज्ज उक्कुडुअत्तणेग कोल्लुगाणुगत्तण, तस्य परट्ठाणाणुगत्तण सणिसेज्ज, कप्पे य सीहाणुगवसहाणुगत्तणा ।

सीहाणुगस्स आयरियस्स सीहाणुगो आयरिओ आलोएइ, एसो पढमो गमओ ।

---

[1] शृगाल ।

सीहाणुगस्स आयरियस्स वसभाणुगो आयरिओ आलोएति, एस बितितो गमओ।

सीहाणुगस्स आयरियस्स कोल्लुगाणुगो आयरिओ आलोयण देति, एस ततिओ।

इदाणिं वसभाणग आयरिय काउ ते चेव आयरिया सीह-वसभ-कोल्लुगाणुगा तिण्णि आलोयगा एते वि तिण्णि गमा [पुणो कोल्लुगाणुगा तिण्णि आलोयगा, एते वि तिण्णि गमा] पुणो कोल्लुगाणुग आयरिय काउ ते चेव सीह वसभा कोल्लुगा तिण्णि आलोयगा। एते तिण्णि सव्वे एते णवगमा जाया ॥६६२९॥

एतेसि जहासखेण इम पच्छित्त –

मासो दोण्णि य सुद्धा, चउलहु लहुओ य अंतिमो सुद्धो।
गुरुगा लहुआ लहुओ, भेदा गणिणो णव गणिम्मि ॥६६३०॥

०।सु।सु।ड्ड।०।सु।ड्डा।ड्ड।०। कोल्लुगस्स कोल्लुगो आलोयगो पादपुछणणिसेज्जासु सरिसासणे मासलहु। अह उक्कुडुओ तो सुद्धो चेव। एते णवभेदा। आयरिए आलोयणारिहा आयरिएसु चेव आलोयगेसु आयरियस्स आलोयगस्स एते पच्छित्ता तवकालेहिं गुरुआ। एय तिण्ह आयरियाण सीहवसहकोल्लुगाण वसभा वि णव आलोएतगा। एतेसिं पि ते चेव पच्छित्ता, णवर – तवगुरु काललहु एव तिण्ह आयरियाण सीह-वसभ-कोल्लुगाण भिक्खुणा वि णव आलाएतगा। एएसिं पि ते चेव पच्छित्ता नवर – तवलहुगा कालगुरू ॥६६३०॥

दोहि वि गुरुगा एते, गुरुम्मि णियमा तवेण कालेण।
वसभम्मि य तवगुरुगा, कालगुरू होंति भिक्खुम्मि ॥६६३१॥

गतार्थं एव आलोयणारिह आयरिय पडुच्च आयरिय-वसभ-भिक्खुआलोयगेहिं सत्तावीस पच्छित्त ठाणा वुत्ता।

इयाणिं वसभस्स आलोयणारिहस्स सीह-वसभ-कोल्हुगाणुगस्स पुव्वक्कमेण नव आयरिया आलोयगा।

तेसिं इम पच्छित्त जहासखेण –

एमेव य वसभस्स वि, आयरियादीसु नवसु ठाणेसु।
नवरं चउलहुगा पुण, तस्सादी छल्लहू अंते ॥६६३२॥

चउलहुगा [1]ड्ड॥ [2]०॥ [3]सु॥ [4]ण्का॥ [5]०॥ [6]सु। [7]र्फु॥ [8]ड्ड॥ [9]०॥ गुरुगस्स एते पच्छित्ता "दोहि वि" गाहा वसभाण वि णवण्ह आलोएतगाण एते चेव पच्छित्ता, णवर – तवगुरुगा काललहू, भिक्खूण वि णवण्ह आलोएतगाण एते चेव पच्छित्ता। नवर – तवलहुगा कालगुरू ॥६६३२॥

क्वचित् पाठातर –

लहुया लहुओ सुद्धो, गुरुगा लहुगो य अंतिमो सुद्धो।
छल्लहु चउलहु लहुओ, वसभस्स तु णवसु ठाणेसु ॥६६३३॥

दोहि वि गुरुगा एते, गुरुम्मि नियमा तवेण कालेणं।
वसहम्मि वि तवगुरुगा, कालगुरू होंति भिक्खुम्मि ॥६६३४॥

एमेव य भिक्खुस्स वि, आलोएंतस्स णवसु ठाणेसु।
चउगुरुगा पुण आदी, छग्गुरुगा तस्स अंतम्मि ॥६६३५॥

एव वसभस्स वि आलोयणारिहस्स अविणयप्रतिपत्तौ इम पच्छित्त। आयरियस्स णवविहस्स आलोयगस्स आदिमट्ठाओ वसहभिक्खूग वि णवविहाण। आदिमीहाणुगे चउलहु मज्झिमे चउगुरु, अतिल्ले छल्लहु, वसभ णुगेसु दोसु मासलहु, अतिल्ले चउलहु दो कोल्लुगा सुद्धा, अतिल्ले मासलहु। सेस पूववत्। भिक्खुस्स आलोयणारिहस्स सीहाणुगादिभेदस्स णव आयरिया सीहाणुगादि भेदभिण्णा आलोयगा। एव च वसभा णव आलोएन्तगा, भिक्खुणो वि णव आलोएतगाण, तत्थ जे आयरिया णव आलोयगा।

एतेसि पच्छित्त। जहासखेण इम –

चउगुरु चउलहु सुद्धो, छल्लहु चउगुरुग अंतिमो सुद्धो।
छग्गुरु चउगुरु लहुओ, भिखुस्स तु नवसु ठाणेसु ॥६६३६॥

ङ्का, ङ्क, सु, फ्, ङ्का, सु, र्फा, ङ्का, ०।

दोहि वि गुरुगा एते, गुरुम्मि नियमा तवेण कालेणं।
वसभम्मि वि तवगुरुगा, कालगुरू होति भिक्खुम्मि ॥६६३७॥

आयरियस्स एते पच्छित्ता तवेण कालेण वि गुरुगा, वसभाण वि णवण्ह आलोएन्तगाण एते चेव पच्छित्ता, नवर – तवगुरुगा काललहुगा, भिक्खूण वि णवण्ह आलोएतगाण एते चेव पच्छित्ता णवर – तवलहुगा कालगुरुगा। क्वचित् पाठान्तर – "एमेव य भिक्खू" गाहा – भिक्खुम्म तिविधभेदभिण्णस्स आलोयणारिहस्स आयरियवसभभिक्खुणो आलोएतगा। णव भेदा पूववत्। आइट्ठाणे सीहाणुगे चउगुरु, मज्झट्ठाणसीहाणुगे छल्लहु, अतट्ठाणसीहाणुगे छग्गुरु। सेस पूर्ववत् ॥६६३७॥

पच्छित्तदाणलक्खण अविनयप्रतिपत्तौ इम –

सव्वत्थ वि सट्ठाण, अणुमुयंतस्स चउगुरू होति।
विसमासण णीयतरे, अकारणे अविहिए मासो ॥६६३८॥

'सव्वत्थ" त्ति सर्वालोचनारिहस्याविनयप्रतिपत्तौ इम आलोणारिहो जारिसे आसणे णिविट्ठो आलोयगो वि जति तारिस आसण अमुचतो आलोएति तत्तुल्य एव स्थितेत्यर्थं। तो चउगुरु पच्छित्त। अह विसमे अधिकतीतो छल्लहु छग्गुरु वा स्थानापेक्षयेत्यथ। अह विसमे णीयतरे ठितो मासलहु, अय अकारणे णिसीएइ तस्स पच्छित्त। आलोयणकाले सेसप्रविहीसु वि अप्पमज्जणादीसु मासलहु चेव ॥६६३८॥

इम अववादतो भण्णति -

सव्वत्थ वि सट्ठाणं, अणुमुयंतस्स मासिय लहुय।
परठाणम्मि य सुद्धो, जति उच्चतरे भवे इतरो ॥६६३९॥

आलोएन्तो वि कारणे जति सट्ठाण ण मुचति, सट्ठाण णाम सरिससरिसाण आयरिय वसह भिक्खुणो य सरिसाणुगो होउ आलोएन्ति त्ति तो मासलहु अह णीयतरट्ठाणट्ठितो आलोएति तो सव्वत्थ सुज्झति। सीहाणुगस्स वसभकोल्लुगा परट्ठाण। कोल्लुगस्स कोल्लुगो चेव उक्कुडुओ परट्ठाण। "इयरो" त्ति आलोयणारिहो जति उच्चतरे ठितो आलोयगो कारणे णीयतरे आसणे णिसीयतो सुज्झतीत्यर्थ। एव विभागतो एक्कासीति-विभागेण पच्छित्त वुत्त ॥६६३९॥

इम ओहेण एवविह पच्छित्त भण्णति—

चउगुरुग मासो या, मासो छल्लहुग चउगुरू मासो ।
छग्गुरु छल्लहु चउगुरु, बितियादेसे भवे सोही ॥६६४०॥

सीहाणुगो होउ सीहाणुगस्स आलोएति चाउगुरु, सीहाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति मासलहू, सीहाणुगस्स कोल्लुगाणुओ होउ मासलहू वसभाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छल्लहू, वसभाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति चउगुरु, वसभाणुगस्स कोल्लुगाणुगो मासलहु कोल्लुगाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छग्गुरु, कोल्लुगाणुस्स वसभाणुगो छल्लहू, कोल्लुगाणुगस्स कोल्लुगाणुगो चउगुरु, एस बितियादेसे सोधी भणिया ॥६६४०॥

तेण आलोयगेण अपलिउचिय अपलिउचिय आलोइय, वीप्सा कृता, निरवशेष सवमालोचित, "सवमेत" ति। अधवा—"सव्वमेय" ति ज अवराहावण्ण ज च पलिउचणाणिप्फण्ण अण्ण च किं चि आलोयणकाले असमायारणिप्फण्ण सव्वमेत स्वकृत । "सगड" "साहणिय" त्ति एक्कतो काउ से मासादि पट्ठविज्जति जाव छम्मासा । अहवा – "साहणिय" त्ति ज छम्मासातिरित्त त परिसाडेऊण झोसेत्ता छम्मासादित्यथ । "जे" त्ति य साधू, "एयाए" त्ति या उक्ता [विधि] प्राक्कृतस्य अपराधस्य स्थापना "पट्ठवणा", अहवा – प्रकर्षेण कृतस्य स्थापना । अहवा – अविशुद्धचारित्र तु आत्मा अमायावित्वेन आलोचनाविधानेन उद्धृत्य विसुद्धे चारित्रे प्रकर्षेण स्थापित । अहवा – "पट्ठवणाए" त्ति प्रारभ, य एष आलोचनाविधि प्रायश्चित्त-दानविधिश्च अनेन प्रस्थापित प्रवर्तित इत्यर्थ । "पट्ठविय" त्ति तदेव यथारह प्रायश्चित्तकरणत्वेनारोपित, य एव प्रायश्चित्तकरणत्वेन स्थापित । "णिव्विसमाणो" त पच्छित्त वहतो कुव्वमाणेत्यथ । त वहतो प्रमादतो विसयकसाएहिं जइ अण्ण "पडिसेवति" त्ति ततो पडिसेवणाओ "से वि" त्ति ज से पच्छित्त त "कसिण" त्ति सव्व । अहवा – अणुग्गहकसिणेण वा "तत्थेव" त्ति पुव्वपट्ठविए पच्छित्ते आरोवेयव्व चडावेयव्व ति वुत्त भवति । "सिय" त्ति अवधारणे दट्ठव्वो । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ती—

मासादी पट्ठविते, जं अण्णं सेवती तगं सव्वं ।
साहणिऊणं मासा, छद्दिज्जंतेतरे झोसो ॥६६४१॥

ज छम्मासातिरित्त त एगतर तस्स झोसमेस इमाए गाहाए सुत्ते गतत्थ । "पट्ठविए" त्ति ज पद तस्सिमे भेदा

दुविहा पट्ठवणा खलु, एगमणेगा य होतऽणेगा य ।
तवतिग परियत्ततिगं, तेरस उ जाणि त पताई ॥६६४२॥

—प्रकृतं समाप्तम् ।

सा पायच्छित्तपट्ठवणा दुविधा – एगा अणेगा वा, तत्थ जा सचइया सा णियमा छम्मासिया एग विधा । सा य दुविधा – उग्घाताणुग्घाता वा। अहवा – केसिं चि मएण एगविधा मासियादीण अण्णतरठाण पट्ठवणा । तत्थ जा अणेगविहा सा इमा – "तवतिग" पच्छद्ध । तत्थ पणगादिभिण्णमासतेसु परिहारतवो ण भवति, मासादिसु भवतीत्यर्थ । मासिय एक्क तवठाण, दुमासादि जाव चाउम्मासिय बितिय तवट्ठाण, पणमासछम्मासिय तइय तवट्ठाण ति, एते वि उग्घाताणुग्घाता वा, 'परियत्ततिग' णाम पव्वज्जा परियागस्स जत्थ परावत्ती भवति त परियत्ततिग त च छेदतिग, छेदो वि उग्घाताणुग्घाता वा,मूलतिग, अणवट्ठतिग, एक्क

च पारंचियं, एयाणि तवतिगसहिताणि जाणि तेरस पदाणि । एसा पारंचियवज्जिया अणेगविहा पट्ठवणा भवतीत्यर्थः । अहवा —"जाणि य पदाणि" त्ति एते एक्कारस पदा गहिता, एतेसु तव पारंचिया एगविधा, छेदादितिगं अणेगविधा पट्ठवणा भवतीत्यर्थः ।

एते हिट्ठा सिद्धा किं निमित्तं इह पुणो उच्चरिज्जंति ? उच्यते — स्मरणार्थं । अहवा — जं एवं पट्ठवियं पडिसेवति तं कसिणं अणुग्गहेण वा णिरणुग्गहेण वा आरोविज्जति, उग्घाते उग्घायं, अणुग्घाए अणुग्घायं, अस्य ज्ञापनार्थमुच्चरितमित्यर्थः, अहवा — कसिणमप्यारोप्यमानं त्रयोदशैकादशभिर्वा पदैरारोप्यते, अस्य ज्ञापनार्थमुच्चरितमित्यर्थः । "अपलिउंचितं" ति एयं पढमभंगसुत्तं गतं ।

बितियभंगसुत्तं पि एवं चेव, णवरं — उच्चारणा से इमा — "अपलिउंचिते पलिउंचितं आलोए-माणस्स जाव सिया" ।

ततियभंगसुत्तं पि एवं चेव । णवरं — उच्चारणा से इमा — "पलिउंचिते अपलिउंचितं आलोए-माणस्स जाव सिया" ।

चउत्थभंगसुत्तं पि एवं चेव, तस्स उच्चारणा सुत्तेणेव भणिया — "जे भिक्खू चाउम्मासियं वा सातिरेगचाउम्मासियं वा जाव सिया ।" जहा एते सुत्ता चउभंगविगप्पेण भणिया एवं मासिगदोमासिगा वि सुत्ता उवउज्जिऊण वित्थरओ चउभंगविभागेण भाणियव्वा । एवं बहुससुत्ता वि चउभंगवाहादिदिट्ठंतेसु भाणियव्वा । पढमा दस आवत्तिसुत्ता भणिया । पुणो दस ते चेव किं विसेसविसिट्ठा आलोयणसुत्ता भणिया ?, एवं एए वीसं सुत्ता सप्रभेदा सम्मत्ता । सम्मत्तं च एत्थ ठवणारोवणपगयं ॥६६४२॥

एयाणि पच्छित्ताणि सो वहंतो अण्णं आवज्जेज्ज, सो वि तत्थेव "आरुहेयव्व" त्ति जं वुत्तं तस्स आरोवणे कति भेदा ?, उच्यते — पंचभेदा ।

इमे —

पट्ठविता ठविता या, कसिणाकसिणा तहेव हाडहडा ।
आरोवण पंचविहा, पायच्छित्तं पुरिसजाते ॥६६४३॥
पट्ठविया य वहंते, वेयावच्चट्ठिता ठवितगा उ ।
कसिणा झोसविरहिता जहिं झोसो सा अकसिणा तू ॥६६४४॥

एषां व्याख्या — जं च वहति पच्छित्तं सा पट्ठवितिका भण्णति, ठविया णाम जं आवण्णो तं से ठवियं कज्जति ।

किं निमित्तं ?, उच्यते — सो वेयावच्चकरणलद्धिसंपण्णो जाव आयरियादीण वेयावच्चं करेति ताव से तं ठवितं कज्जति, दो जोगे काउं असमत्थो सो वेयावच्चे समत्ते तं काहिति त्ति, एव ठविया । कसिणा णाम जत्थ झोसो न कीरइ, अकसिणा नाम जत्थ किंचि झोसिज्जति ॥६६४४॥

हाडहडा तिविधा — सज्जा ठविया पट्ठविता य । तत्थ सज्जा इमा —

उग्घायमणुग्घायो, मासाइ तवो उ दिज्जते सज्जं ।

मासदुमासादियं उग्घातमणुग्घातियं वा जं आवण्णो तं जत्थ सिज्जं दिज्जति ण कालमपेक्खंति सा सज्जा । इमा ठविया —

मासादी णिक्खित्ते, जं सेसं तं अणुग्घायं ॥६६४५॥

ज पुण मासादि आवण्ण णिक्खित्त ति वेयावच्चट्ठया ठविय कज्जति सा ठविया, तम्मि य ठवियसेस ति ज अण्ण उग्घातमणुग्घात वा आवज्जति त सव्व अणुग्घात कज्जति । कम्हा ?, जम्हा सो अतिप्पमादी ॥६६४५॥

इमा पट्ठविया –

छम्मासादि वहंते, अंतरे आवण्णे जा तु आरुवणा ।
सो होति अणुग्घाता, तिण्णि विकप्पा तु चरिमाए ॥६६४६॥

छम्मासिय वहतो आदिग्गहणाओ पचमासिय चउमासिय तेमासिय दोमासिय मासिय वा वहतो अण्ण ज अतरा आवज्जति उग्घात अणुग्घात वा त से साणुग्गहेण णिरणुग्गहेण वा आरोविज्जमाण अणुग्घात आरोविज्जति । कारण पूर्ववत् । हाडहडाए एते तिण्णि विगप्पा ॥६६४६॥

सा पुण जहण्ण उक्कोस मज्जिमा होति तिण्णि उ विकप्पा ।
मासो छम्मासा वा, अजहण्णुक्कोस जे मज्झे ॥६६४७॥

सा हाडहडा छुब्भमाणी तिविधा – जहण्णादिगा, तत्थ मासगुरू जहण्णा, उक्कोसा छग्गुरू, एतेसि दोण्ह वि मज्झे जा सा अजहण्णमणुक्कोसा इमा दोमासिय गुरुग, तिमासिय गुरुग, चउमासिय गुरुय, पचमासिय गुरुय ति । एसा आरोवणा पचविहा समासओ भणिया ॥६६४७॥

इदाणि मासादी पट्ठविए ज अण्ण अनरा पडिसेवति मासादी तत्थ ज जम्मि दिवसग्गहणप्पमाण भण्णति पट्ठविगाठविगा सरूव जनो भण्णति सुत्तमागय –

छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्त तेण परं सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२१॥

पचमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२२॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारण अहीणमतिरित्तं तेण पर सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२३॥

तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२४॥

दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२५॥

मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२६॥

सर्वं सहितासूत्र उच्चारेउ पदच्छेद काउ इमा पदत्थोपग्गहो "षडिति" सख्या । मानासनान्मास, अन्यानि मानानि समयावलिकादीनि असतीति मास, मानानि वा द्रव्यक्षत्रादीन्यसतीति मास । मासोऽस्य परिमाण मासमर्हति वा, मासनिष्पन्न वा मासिक । परिह्रियते इति परिहार, परिहरण वजनमित्यथ । अहवा – परिहरण परिहार, अहवा – परिह्रियते वज्यते च अस्मात् परिहार । 'ष्ठा गतिनिवृत्तौ" तिष्ठन्त्यस्मिन्निति स्थान । परिहारस्य स्थान परिहार स्थान । "पट्ठविते" त्ति आदिकम्मणोदीरणभूतैश्वर्येष्वि ति कृत्वा प्रारब्ध यत् स्थापित अद्धवूढ ति भणिय होइ । न गच्छन्तीत्यगा वृक्षा इत्यथ । अगै कृत अगार गृहमित्यर्थ । नास्य अगार विद्यते इत्यनगार । अतस्य च अतर मज्झ अतर ति भण्णति । द्विमासो अस्य परिमाण दोमासिय । परिहारस्य स्थान स्थान प्रतिषेवित्वा, "प्रति" प्रतिदानयो प्रतिमन्निधानयोवस्तु वस्तु प्रति मूलउत्तरगुणदप्पकप्प जयणमेवाकरण, क्त्वा प्रत्यय, पूवस्य परेण सह सबधमिच्छति कृत्वा अन्यत् किमपि कर्तव्य तदपेक्षते । आङमर्यादाया, "लोकृ दशने", मर्यादयालोचन दातव्य आलोचन दशयेदित्यर्थ । अथ इत्यय निपात, अपरा णाम जा सा पुव्वि भणिता सतो जा अण्णा सा अपरा । विंशतिरिति सख्या । रजत इति रात्रि, सा च रागस्वभावा उभयोरपि विद्यते, रात्री उभयग्रहणार्थं, अहवा – अहोरात्रपरिसमाप्तिरत्र भवतीति कृत्वा रात्रिग्रहण, अन्योन्यप्रतिबद्धत्वात् इतरेतरग्रहणात् सिद्धिरिति । आरोविज्जतीति कृत्वा आरोवणा । पुव्व-पायच्छित्ते छुब्भति, अहवा – उवरिं चडाविज्जतित्ति भणिय होइ । कस्स ? तस्स साहुस्स ज भणिय पायच्छित्त दिज्जति, "आदिमज्झावसाणेसु" – तस्स छम्मासियस्स परिहारट्ठाणस्स तिसु तिभागेसु जत्थ जत्थ पडिसेवति दो मासिय तत्थ तत्थ वीसतिरातिता आरोवणा आरुभेयव्वा । सह अत्थेण सत्थ, सह हेउणा सहेउ, सह कारणेण सकारण । किं भणिय होति – तस्स जतो णिप्फत्ति प्रभव, प्रसूति, त तस्स अत्थोत्ति वा हेउ त्ति वा कारण ति वा एगट्ठ । जहा सुत्तस्स अत्थाओ प्रसूति उत्पत्तिरित्यथ । जहा व ततुभ्य पट, मृत्पिडात् घट, एव एसा वीसतिरातिया आरोवणा जतो णिप्फण्णा तीए त से अत्थो त्ति वा, हेतु - कारण, एगट्ठा दिट्ठा । दोमासियाए पडिसेवणाए वीसिया आरोवणा, सा पुण सअट्ठा अहीणमतिरित्ता कितिया होइ ?

आयरितो सयमेव पुच्छितो भणति – "तेण पर सवीसतिराया दो मासा"। "तेण" त्ति – तेण मूलवत्थुणा सह आरोवणापरिमाण भवति, आवत्तिमाण न आरोवणामाण, पर अण्ण चेव ज भणिय होति तेण सअट्ठ सहेउ सकारण त मानमधिकृत्य, त पुण सवीसतिराया दोमासा सह वीसाएहि सवीसतिराया दोमासा ।

कि पुण दोमासियाए पडिसेवणाए वीसतिरपि आरोवणा?, उच्यते – लक्षणोक्तत्वात्, तत्थ लक्खण दिवसा पक्खित्तगमासा आणिज्जति, मासा वि पेक्खिऊण दिवसा आणिज्जति।

गाहा – "दिवसा पचहि भतिता दुरूवहीणा हवति मासाओ।
मासा दुरूवसहिया, पचगुणा ते भवे दिवसा॥" एसा लक्खणगाहा

एएण कारणेण दोहिं मासेहि आवन्नेहिं वीसतिरातिया आरोवणा।

अहवा – इमो अण्णो वि आएसो सअट्ठ सहेउ, सकारण अहीणमतिरित्तमिति, तस्स अणगारस्स उभयतरगादीकारण णाऊण पढमपडिसेवणाए साणुग्गह वीसतिरातिया आरोवणा दिज्जति, जति तह वि ण ठाएज्ज, तो से तेण परेण सूत्रादेसो चेव सवीसतिरायदोमासा।

कह ? जा सा वीसतिरातिया आरोवणा सा सकप्पिया ण ताव दिज्जति, तेण वि पुणो दोमासिय त पडिसेवित तस्स पढम साणुग्गह कीरइ, बीए सहोढोत्ति काऊण ते चेव दो मासा णिरणुग्गहा दिण्णा तेण पर सवीसतिराता दो मासा।

एव पचमासिए वि पट्ठविते त चेव सव्व भाणियव्व। एव चाउम्मासिए तेमासिए एयाणि सव्वाणि दोमासिएण सम भाणियव्वाणि, णवर – छम्मासिया सचतिया वा असचतिया होज्ज, पचमासिया असचतिय पट्ठवितसुत्ता गता।

इयाणि ठवियसुत्ता – जे ते सवीसतिरातिता दो मासा ते कारण पडुच्च ठविया आसी ते कारणे णिट्ठिते पट्ठविज्जति।

सवीसतिराइयं दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सदसराया तिण्णिमासा ॥सू०॥२७॥

सदसरायतेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं चत्तारि मासा ॥सू०॥२८॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सवीसइराया चत्तारि मासा ॥सू०॥२९॥

सवीसइरायचाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं सदसराया पंच मासा ॥सू०॥३०॥

सदसरायपंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं छम्मासा ॥सू०॥३१॥

तेसु पट्ठवितेसु जति पुणो पडिसेवेज्जा अण्णे अ दो मासा तत्थ वीसतिरातिया आरोवणा आदी मज्झे पज्जवसाणे, सह अट्ठेण सअट्ठं सहेउं सकारणं।

इह अत्थो जो आदिपट्ठवणा सवीसतिरातिया दो मासा। तेण परं दसरातो दो मासा, दसराता तिण्णि मासा पट्ठविए।

जइ पुणो वि दो मासा पडिसेवेज्ज ताहे साणुग्गह वीसतिराया दिज्जति जाव तेण परं चत्तारि मासा, एवं ताव णेयं जाव तेण परं छम्मासा। अहवा – केवलि मण ओहि चोद्दस णवपुव्विणो य तस्स साधुणो भाव जाणिऊण, इमो सवीसतिराएहिं दोहिं मासेहिं सुज्झिहिति त्ति ताहे सवीसतिराया दो मासा से पट्ठविज्जति।

जति पुणो वि दो मासा पडिसेवेज्ज तत्थ वि तहेव, तेण परं दस राया तिण्णि मासा।

एवं पुणो वीसतिरातिया छुब्भतेहिं जाव ते परं छम्मासा अणुग्गहट्ठवणा चेव थोवे वा बहुए वा आवण्णे वीस वीस दिणा आरुभेयव्वा पडिसेवणा पडिसेवणा, जाव छम्मासा। एवं ताव छम्मासादिपट्ठविए दुमासपडिसेविए कारणं भणियं। एवं ते सूत्रा पट्ठवियाठवियाण गया।

इदाणि अत्थवसओ सुत्ता –

छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३२॥

पंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३३॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३४॥

तेमासियं परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३५॥

दोमासियं परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारण अहीणमइरित्तं तेण पर दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३६॥

मासिय परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३७॥

छम्मासिय पंचमासिय चाउम्मासिय तेमासिय दोमासिय मासिय सव्वा लक्खणाओ पत्ताओ लक्खण पुण मज्झे गहिए आदिमा अंतिमा य सजोगा ते भाणियव्वा, जहा छम्मासियादिपट्ठवणा पट्ठविते दोमासियस्स सजोगो भणितो तहा एतेसि पि सव्वासि सजोगो भाणियव्वो ।

तेण इम अत्थसुत्त – "छम्मासिय परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अतरा छम्मासिय चेव परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा चत्तालीसइराइया आरोवणा आदी जाव तेण पर सचत्तालीसतिराया छम्मासा", अत्थो पूववत् ।

एव पचमासित परिहारट्ठाण पट्ठविते छम्मासिय पडिसेवति ।

एव चाउम्मासिय पट्ठविए पडिसेवति, तेमासिय पट्ठविए पडिसेवति, दोमासिय पट्ठविए पडिसेवति, मासिय पट्ठविए पडिसेवति । एए छ पडिसेवति । छ वि सुत्ता इह णत्थि । किं कारण जेण छम्मासाण परेण ण दिज्जति ? ठविया य सचत्त ला छम्मासा, तेण ठविता सुत्ता नत्थि । इदाणि छम्मासिए पट्ठविए अतरा पचमासित पडिसेवति । अहावरा वीसतिराितया आरोवणा आदि मज्झावसाणे जाव तेण पर सपचराया छम्मासा एव पचमासे पट्ठविते पचमास पडिसेवइ । चाउम्मासिए वि पचमासा, तेमासिए वि पचमासा, दोमासिए वि पचमासा, मासिते वि पचमासा एत्थ वि ठविया सुत्ता णत्थि, जेण सपचराया छम्मासे ति । छम्मासिए पट्ठविए अतरा चाउम्मासित पडिसेवेज्जा, अहावरा तीसति जाव तेण पर पचमासा, एव पचमासित चउमासित तेमासिय दोमासिय मासिए वि पट्ठविए चउमासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा ती (वी) सतिरातिता आरोवणा जाव तेण पर पचमासा ठविता ।

सुत्त एत्थ अत्थि – पचमासिय परिहारट्ठाण पट्ठविते चाउमासित परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा ती (वी) सतिरातिता आरोवणा जाव तेण पर छम्मासो । अत्थो पूर्ववत् । सुत्ता छम्मासिय परिहारट्ठाण पडिसेविते अणगारे अतरा तेमासित परिहारट्ठाण आलोएज्जा, अहावरा पणुवीसतिराइदिया आरोवणा आदी जाव तेण पर पचूणा चत्तारि मासा पचमासिते पट्ठविए, चउमासिते पट्ठविए, तेमासिते

पट्ठविए, दोमासिए मासिए परिहारट्ठाण पट्ठविते, तेमासित परिहारट्ठाण पडिसेवेज्ज जाव तेण पर पचूणा चत्तारि मासा ठविता ।

सुत्ता – पचूणचउम्मासिय परिहारट्ठाण पट्ठविते अतरा तेमासित परिहारट्ठाण, अहावरा पणुवीसा आरोवणा जाव तेण पर छम्मासा सवीसतिराया चत्तारिमासा, सवीसतिराय चाउम्मासिय परिहार अतरा तेमासिय, अहावरा पणुवीसा आरोवणा जाव ते अद्धछम्मासा अद्धछम्मासिय पट्टवइ । पट्ठविए अणगारे अतरा तेमासिय आलोए०, अहावरा पणुवीसराएदियारोवणा तेण पर छम्मासा ।

कि कारण सदसराया छम्मासा ण भणिया ? उच्यते – सातिरेगा छम्मासा णागेविज्जति त्ति तेण सदसराया छम्मासा ण भणति। इदाणिं मासियसजोगसुत्ता लक्खणपत्ता सुत्तेण चेव भण्णति छम्मासिय-परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अतरा मासिय परिहारट्ठाण पडिसेविए आलोए, अहावरा पक्खिया आरोवणा आदी मज्झावसाणे साट्ठ सहेउ सकारण अहीणमइरित्त तेण पर दिवड्ढो मासो एव पचमासिय पट्ठविते तेमासिय पट्ठविते मासिय पट्ठविते अतरा मासिय जाव तेण पर दिवड्ढो मासो ।

ठविया सुत्ता –

दिवड्ढमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारण अहीणमइरित्त तेण परं दो मासा ॥सू०॥३८॥

दोमासिय परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अंतरा मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारण अहीणमइरित्तं तेण परं अड्ढाइज्जा मासा ॥सू०॥३९॥

अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं तिण्णि मासा ॥सू०॥४०॥

तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण पर अद्धुट्ठा मासा ॥सू०॥४१॥

अद्धुट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं चत्तारि मासा ॥सू०॥४२॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारण अहीणमइरित्तं तेण परं अड्ढपंचमा मासा ॥सू०॥४३॥

अड्ढपंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं पंचमासा ॥सू०॥४४॥

पंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं अद्धछट्ठा मासा ॥सू०॥४५॥

अद्धछट्ठमासियं परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं छम्मासा ॥सू०॥४६॥

एवं छम्मासादिपट्ठविते जं जं पडिसेवित्ता आरोवणा ठविया य विकला सट्ठाणवड्ढीए भाणिया जाव छम्मासा।

इदाणिं सगलठवियाए मासादिया १।२।३।४।५।६। सट्ठाणवड्ढिया णेयव्वा जाव छम्मासा, ताहे परट्ठाणे वड्ढी भवति।

तत्थ सट्ठाणवड्ढी इमा – जहा – मासियठवियपट्ठविए मासियं सेवित्ता पक्खिया जाव दिवड्ढ मासा एवं आरोवण पक्खिय वड्ढं तेण ताव णेयव्वं जाव छम्मासा। एयं सट्ठाणवड्ढियं।

इमं परट्ठाणवड्ढियं – जहा – ठविए दोमासियं पडिसेवित्ता वीसतिरातिया आरोवणा, जाव वीसतिरातो मासो, एवं वीसतियाखेवेण णायव्वं जाव छम्मासा, एवं मासिते ठवियपट्ठविते तेमासियं पडिसेवित्ता पण्णवीसारोवणा जाव छम्मासा।

मासियठवियपट्ठविए चउम्मासं पडिसेवित्ता तीसियं आरोवणाए जाव छम्मासा।

मासियठवियपट्ठविए पंचमासियं पडिसेवित्ता पणतीसं आरोवणाए जाव छम्मासा।

मासियठवियपट्ठविए छम्मासियं पडिसेवित्ता चत्तालीसराइंदियारोवणाए जाव छम्मासा।

एवं मासियपट्ठवणाए परट्ठाणवड्ढी भणिया।

एवं दोमासियादिसु वि पट्ठविएसु सट्ठाणवड्ढिं भणिऊण पच्छा परट्ठाणवड्ढी भणियव्वा, सव्वत्थ जाव छम्मासा। एसा एक्कगसंजोगवड्ढी सट्ठाणपरट्ठाणेसु भणिया।

इदाणि दुगमजोगे सट्ठाणपरट्ठाणवड्डि दुविह भणामि –

मासियठवियपट्ठविए मासिय पडिसेवेज्ज पक्खियआरोवणा तेण पर दिवड्ढो मासो ।

दिवड्ढठविते पट्ठविते दो मासो पडिसेवेज्ज वीसिया आरोवणा तेण पर पचरातो तिण्णि (दोण्णि) मासा । सपचरातो दो मासा ठविए पट्ठविते तिमासिय पडिसेवित्ता पक्खिया आरोवणा, तेण पर सवीसराया दो मासा ठवियपट्ठविए दोमासिय पडिसेवित्ता वीसिया आरोवणा, तेण पर सदसराइ तिण्णि मासा ।

एव पुणो मासिय, पुणो दोमासिय, एगतरा सव्वत्थ दुगसजोगवड्ढी दुविहा भाणियव्वा जाव छम्मासा ।

एव मासिय-तेमासिए य दुगसजोगो, पुणो मासे चउमासे य । पुणो मासे पचमासे य (पुणो मासे) छम्मासे य ।

दुगसजोगे जत्थ जाए आरोवणाते पक्खित्ताए छम्मासा अतिरित्ता भवति तत्थ छ च्चेव मासा वत्तव्वा परओ न वत्तव्वा । कारण त चेव पूववत् । एव जत्तिया मासियाए ठवियाए दुगसजोगा त भाणिऊण ताहे मासियाए चेव ठवियपट्ठवियाए तियसजोगो चउक्कसजोगा पचसजोगा य भाणियव्वा, तेण छक्कसजोगो णत्थि, कारण त चेव । ताहे दोमासठवियाए दुगसजोगवड्ढी दुविहा भाणियव्वा – सा य लक्खणेण पत्ता, सुत्तेण चेव भण्णति । एत्तिय गतूण सुत्त णिवडित ।

त च इम –

दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं अड्ढाइज्जा मासा ॥सू०॥४७॥

अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं सपंचराइया तिण्णि मासा ॥सू०॥४८॥

सपंचरायतेमासियं परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अंतरा मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा, आइमज्झावसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारण अहीणमइरित्तं तेण परं सवीसतिराया तिण्णि मासा ॥सू०॥४९॥

सवीसतिरायतेमासिय परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा,

आइमज्झावसाणे, सग्रट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
सदसराया चत्तारि मासा ॥सू०॥५०॥

सदसरायचाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सग्रट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्त तेण परं
पचूणा पंचमासा ॥सू०॥५१॥

पंचूणपंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्झावसाणे, सग्रट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्त तेण परं
अद्धछट्ठा मासा ॥सू०॥५२॥

अद्धछट्ठमासिय परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
अपडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सग्रट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
छम्मासा ॥सू०॥५३॥

दसणचरित्तजुत्तो, जुत्तो गुत्तीसु सज्जणहिएसु ।
नामेण विसाहगणी, महत्तरओ गुणाण मजूसा ॥१॥
कित्तीकतिपिणद्धो, जसपत्तो (दो) पडहो तिसागरनिरुद्धो ।
पुणरुत्त भमइ महि, ससिव्व गगण गुण तस्स ॥२॥
तस्स लिहिय निसीह, धम्मधुराधरणपवरपुज्जस्स ।
आरोग्ग धारणिज्ज, सिस्सपसिस्सोवभोज्ज च ॥३॥

(एव एक्केवक अतरेत्ता ताव णेयव्व जाव छम्मासा, एव एयस्स वि सव्वदुगसजोगादि भाणियव्वा) एव तेमासियठवियपट्ठविए दुविधा समतिग चउ पच छ, परे णत्थि, एव चाउ० । १।२।३।४। ना । फु । परे णत्थि । एव पचमासियजोगा १।२।३। छ्क । ना । फु । परतो णत्थि, कारण त चेव। सव्वे वि जहा लक्खणेण भाणियव्वा, एते दुगसजोगादीण सजोगा सट्ठाणवड्ढिना भाणियव्वा परट्ठाणवड्ढिया य ।

"सट्ठाणवड्ढिय" त्ति किं भणिय होति ? जे मासियठवियपट्ठवियमासिय चेव आदि काऊण सजोगा होति ते सट्ठाणवड्ढिता एव दो ति चउ पचमासिए ।

इमे परट्ठाणवड्ढता – जे मासिय ठवियपट्ठविए दोमासिय वा तिमासिय वा चउमासिय वा पचमासिय वा आदी काऊण सजोगा कीरति । एसा परट्ठाणवड्ढी ।

एयासि अत्था चोदणाए कारणाणि य जहा पढमठवियाण एव पढमसुत्तस्स पट्ठवणाए पडिसेवणा य भणिया ।

इदाणिं बितियसुत्तस्स बहुसस्स इमा विधी – छम्मासिय परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे अतरा बहुसो वि मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आदिमज्झावसाणे सअट्ठ

सहेउ सकारण, अहीणमइरित्त तेण पर दिवड्ढो मासो, एव पचमासिए पट्ठविते मासिया पडिसेवणा चउम्मासिए पचमासिया, तेमासिए पट्ठविए मासिए पट्ठविए, दोमासिते पट्ठविए, मासिया पडिसेवणा, पक्खिया आरोवणा एव ठवितगा सुत्ता वि दिवड्ढमासादि भाणियव्वा। त चेव निरवसेस बहुसाऽभिलावेण सव्व भाणेयव्व। एव दस सुत्ता सुत्तकमेण चेव भाणियव्वा। नवर – पट्ठवणे छ वा पच वा चत्तारि वा तिण्णि वा दो व, एक्को वा पडिसेवणट्ठाणेसु त चेव सव्वत्थ। सेस जहा कसिणसुत्ते तहा ठविते य पट्ठविए य, सुत्ता वि तह चेव तेसिं सजोगा वि तह चेव कायव्वा।

जो वि को वि विसेसो वि बुद्धीए उवउज्जिऊण भाणियव्वो इमानो जतगातो –

फुं ना क्क ३ २ १।

फुं फुं फु फुं फुं फुं।

ना ना ना ना ना ना।

क्क क्क क्क क्क क्क क्क।

३ ३ ३ ३ ३ ३।

२ २ २ २ २ २।

१ १ १ १ १ १।

एव पट्ठवितिगा सुत्ता समत्ता।

इदाणि इह अज्झयणे सुत्तावत्तिपरिमाणदुवारेण पच्छित्तवहतगा भण्णति।

जतो भण्णति –

एक्कूणवीसतिविभासियम्मि हत्थादिवायण तस्म।
आरोवणरासिस्स तु, वहंतया होतिमे पुरिसा ॥६६४८॥

जे भिक्खू हत्थकम्म करेइ – इच्चादिसुत्तातो जाव एगूणवीसतिमुद्देसगअतसुत्ते वायणसुत्त, एतेसु एगूणवीसुद्देसेसु जो पच्छित्तरासी विभासिओ तस्स पच्छित्तस्स वहतया इमे पुरिसा ॥६६४८॥

कयकरणा इतरे या, सावेक्खा खलु तहेव णिरवेक्खा।
णिरवेक्खा जिणमादी, सावेक्खा आयरियमादी ॥६६४९॥

कयकरणा जेहिं चउत्थछट्ठमादी तवो कतो। 'इतरे" त्ति – अकयकरणा। जे कयकरणा ते दुविहा – सावेक्खा णिरवेक्खा य। तत्थ णिरवेक्खा जिण दिया, ते सरीरगच्छादिणिरवेक्खणतो णिरवेक्खा। आदि-सद्दातो सुद्धपरिहारिया अहालदिया पडिमापडिवण्णा एते णियमा कयकरणा इत्यथ। जे पुण सरीरगच्छे य सावेक्खा ते तिविहा - "आयरियादी", आदिसद्दातो उवज्झाया भिक्खू य ॥६६५०॥

अकयकरणा वि दुविहा, अणभिगता अभिगता य बोधव्वा।
जं सेवती अभिगतो, अणभिगते अत्थिरे इच्छा ॥६६५०॥

जे अकयकरणा ते दुविधा – अणभिगता इयरे य। तत्थ अणभिगता णाम अगहियसुत्तत्था। इयर त्ति – 'अभिगता", ते य गहियसुत्तत्था। एत्थ जो कयकरणो धितिसघयणजुत्तो अभिगतो य सो ज सेवति त चेव से पच्छित्त दिज्जति। जो पुण अणभिगतो अथिरो अकयकरणो धितिसघयणादिहीणो तस्स ज आवण्णो त वा दिज्जति हुसिय वा अण्ण हुसियतर वा "इच्छ" त्ति – जाव से झोसो वा इत्यथ ॥६६४९॥

एव सखेवओ भणिय।

इम वित्थरतो -

अहवा सावेक्खितरे, णिरवेक्खो णियमसा उ कयकरणा।
इतरे कताऽकता वा, थिराऽथिरा णवरि गीयत्था ॥६६५१॥

'इयरि" त्ति– णिरवेक्खा, ते एगविहा णियमा कयकरणादिगुणोववुत्ता, पुणो "इयर" ति– सावेक्खा, ते तिविहा आयरियाती। तत्थ आयरियउवज्झाया कयकरण – अकयकरणा भाणियव्वा, ते चेव णियमा अभिगता थिरा य। भिक्खू अभिगता अणभिगता वा। पुणो एक्केक्का थिरा अथिरा भाणियव्वा। पुणो कयकरणअकयकरणभेदेण य भिंदियव्वा। एत्थ थिराथिरत्ति ज वुत्त जात्र चरगादिएहिं दसणातो परीसहोवसग्गेहिं वा चरणातो अतिक्वखडपच्छित्तदाणेण वा भावतो ण चालिज्जति सो थिरो, इतरो अथिरो। एव विकप्पिएसु पच्छद्धभावणा आयरियादी सव्वे कयकरणअकयकरणा भाणियव्वा। णवर – भिक्खुपक्खे थिराथिरगीतमगीयत्था य भाणियव्वा ॥६६५१॥

इम कयकरणेतराण वक्खाण -

छट्ठट्ठमादिएहिं, कयकरणा ते उ उभयपरियारा।
अभिगत कयकरणत्तं, जोगा य तवारिहा केई ॥६६५२॥

छट्ठट्ठमादितवो जेहिं कतो कयकरणा, ते उ "उभयपरियाए" त्ति – गिहत्थपरियाए सामन्नपरियाए वा, ते कयकरणा, इयरे अकयकरणा। जे ते अभिगता तेसिं केइ आयरिया कतकरण इच्छति। कम्हा ? जम्हा तेहिं आयरियजोगा वूढा महाकप्पसुतादीण।

सीसो चोदेति – जे ते णिरवेक्खा – तेसिं एक्को चेव भेदो। जे पुण सावेक्खा तेसिं किं णिमित्त तिविधो भेदो – "इमो आयरिओ" "इमो उवज्झाओ" इमो भिक्खू" ?

आयरियाह – जे ते आयरियउवज्झाया ते णियमा गीयत्था, जे भिक्खू ते गीयत्था अगीयत्था वा, एवमादिभेददरिसणत्थ भेदो कतो ॥६६५२॥

अथवा – तत्थ तिविधभेदे जो गीयभेदो सो इम जाणइ –

कारणमकारणं वा, जयणाऽजयणा य तत्थ गीयत्थे।
एएण कारणेणं, आयरियादी भवे तिविहा ॥६६५३॥ कण्ठ्या

अधवा सावेक्खपुरिसभेदकरणे इम कारण –

कज्जमकज्ज जताऽजत, अविजाणंतो अगीओ जं सेवे।
सो होति तस्स दप्पो, गीते दप्पाजते दोसा ॥६६५४॥

अगीओ ण जाणति – इम कज्ज इम अकज्ज, इमा जयणा, इमा अजयणा। एव अजाणतस्स जा सेवा सा सव्वा दप्पो चेव उवलब्भति, तम्हा तस्स दप्पणिप्फण्ण पच्छित्त [1]दिज्जति। गीयो पुण एय सव्व जाणइ तम्हा तस्स दप्पणिप्फण्ण अजयणणिप्फण्ण वा दायव्व। अहवा – जहा लोगे जुवरायादिवत्थुविसेसे दडविसेसो भवति, तथा इह लोउत्तरे आयरियादीण आसेवणदडो अण्णण्णो भवति, तण तिविधभेदो कओ ॥६६५४॥

सा य वत्थुविसेसओ इमा आवत्ती – [2]सव्वजिट्ठा आवत्ती पारचिय, तत्थ णिरवेक्खपारचिय-करणेऽसभवतो सुन्न, आयरिए कयकरणे पारचिय, अकयकरणे अणवट्ठ। उवज्झाए कयकरणे अकयकरणे मूल।

१ दायव्व। २ सव्वेसिंपि अविसिट्ठा, इत्यपि पाठ।

भिक्खुम्मि गीते थिरे कयकरणे अणवट्ठ, अकयकरणे छेदा। अथिरे कयकरणे छेदो, अथिरे अकय करणे छग्गुरू। भिक्खुम्मि अगीते थिरे कयकरणे छग्गुरु अकयकरणे छल्लहू अथिरे कतकरणे छल्लहू अकय-करणे चउगुरू। एस एक्को आदेसो।

इमो बितियो – पारंचियआवत्तीए चेव करणे आयरिए अणवट्ठ, अकयकरणे मूल, उवज्झाए कयकरणे मूल, अकयकरणे छेदो। एव अड्ढोवकतीए णेय व जाव भिक्खुम्मि अगीते अथिरे अकयकरणे चउलहुआ। एव अणवट्ठे वि दो आदेसा भाणितव्वा। णवर – तेसि अता चउलहु मासगुरु य। एत्थ वि णिरवेक्खे अणवट्ठासभवतो सुण्ण।

इदाणि मूल –

सव्वेसिं अविसिट्ठा, आवत्ती तेण पढमता मूलं।
सावेक्खे गुरुमूलं, कतमकते छेदमादी तु ॥६६५५॥

सव्वेसि णिरवेक्खादीण मूल आवण्णा, तत्थ जे णिरवेक्खा ते ज चेव आवन्ना त चेव दिज्जइ, जेण कारणेण ते णिग्गुग्गहा। सावेक्खाण पुण दाणे इमो विही णायव्वो –

सावेक्खस्स आयरियस्स कयकरणस्स मूल, अकयकरणस्स छेदो।

उवज्झायस्स कयकरणस्म छेदो, अकयकरणे छग्गुरु।

भिक्खुस्स अभिगयस्स थिरस्स कयकरणस्स छग्गुरुता, अकयकरणस्स छल्लहुया।

अथिरस्स कयकरणस्स छल्लहुआ, तस्सेवाकयकरणस्स चउगुरुगा।

अणभिगयस्स थिरस्स कयकरणस्स चउगुरुगा अकयकरणस्स चउलहुआ।

अथिरस्स कयकरणस्स चउलहुआ, तस्सेव अकयकरणस्स मासगुरु। मूलमावण्णो एव मासगुरू ठाति।

छेदावण्णे छेदाओ आढत्त एतेसु चेव पुरिसठाणेसु अड्ढोवकतीए मासलहुए ठाति। छग्गुरुगातो गुरुए भिन्नमासे ठाति।

चउलहुआतो छल्लहुए मासे ठाति। चउगुरुआओ गुरुए वीसराइदिए ठाति। चउलहुआतो वीसराइदिए लहुए ठाति।

मासगुरुआओ पण्णरसराइदिए गुरुए ठाति। मासलहुआओ पण्णरसराइदिए लहुए ठाति।

भिन्नमासगुरुआतो दसराइदिए गुरुए ठाति। भिण्णमासलहुआतो दसराइदिए लहुए ठाति

वीसरायगुरुआतो पचराइदिए गुरुए ठाइ। वीसरायलहुआतो पचरायलहुए ठाति।

पण्णरसरायगुरुआतो दसमे ठाति। पण्णरसरायलहुआतो अट्ठमे ठाति।

दसराइदिएगुरुआतो छट्ठे ठाति। दसराइदियलहुआतो चउत्थे ठाति।

पचराइदियातो आयबिले ठाति। एव पचराइदियलहुआतो एक्कासणते ठाति। दसमातो पुरिमड्ढे ठाति।

अट्ठमातो निव्वितते ठाति। एव अड्ढोक्कतीए सव्व णेयव्व।

एत्थ एक्के आयरिया – चरिमाढत्त अड्ढोक्कतीए लहुपणए ठाति दसमादिपदे ण ठायति। अण्णे चरिमाढत्त अड्ढोवकतीए पणगोवरि दसम छट्ठ-चउत्था जाव एगभत्तपुरिमड्ढ जाव णिव्वितिए ठायति ॥६६५५॥

आदेशान्तरप्रदर्शनार्थमिदमाह –

पढमस्स होति मूल, बितिए मूलं च छेद छग्गुरुगा।
जयणाए होति सुद्धा, अजयण गुरुगा तिविहभेदो ॥६६५६॥

पढमो त्ति – जिणकप्पिओ, तस्स अववादाभावा मूल एव। "बितितो" त्ति – सावेक्खो कयकरणो आयरिओ, तस्स मूलावत्तीए मूल चेव। "वा" विकल्पे। छेदो वा भवति।

अस्य व्याख्या –

सावेक्खो त्ति व काउं, गुरुस्स कडजोगिणो भवे छेदो ।
अकयकरणम्मि छग्गुरु, अट्ठोक्कतीए णेयव्वं ॥६६५७॥

एस आयरियउवज्झाएसु अववादो । जो य भिक्खू गीतो थिरो कयकरणो य, अगीयपक्खे थिरो कयकरणा य, एतेसिं पि एसो चेव अववादो ।

जे मेसा भिक्खुपक्खे तेसि इमो अववातो –

अकयकरणा य गीया, जे य अगीयाऽकता य अथिरा य ।
तेसावत्ति अणंतर, बहुअंतरिया व झोसो वा ॥६६५८॥

जे भिक्खू गीयपक्खे दोण्णि अकयकरणा, चसद्दातो गीतो अथिरो कयकरणो य ।

जे अगीयपक्खे अकयकरणा दोण्णि, जो य अगीयो थिरो कयकरणो य । एतेसिं आवत्तीतो ज अण्णतर दुगादिबहुअतर वा सव्वतिम वा दिज्जति, सव्वहा वा झोसो कज्जति । "[1]जयणाए" पच्छद्ध – सव्वावत्तिठाणेसु गीयत्थो कारणे जयणाए अरत्तो अदुट्ठो य पडिसेवतो सुद्धो ।

जो पुण अजयणकारी तस्स अजयणणिप्फण्ण पुरिसभेदतो इम तिविह, आयरियस्स चउगुरु, उवज्झायस्स चउलहु, भिक्खुस्स मासगुरु । एतेण कारणेण तिविधो पुरिसभेदो कृत इत्यर्थ ॥६६५८॥

सीसो पुच्छति – "किं निमित्त एस आयरियादिभेदेण विसमा सोही भणिता" ?

उच्यते –

दोसविभवाणुरूवो, लोए डंडो उ किमुत उत्तरिए ।
तित्थुच्छेदो इहरा, णिराणुकंपा ण वि य सोही ॥६६५९॥

जहा लोगे ण सव्वदोसेसु सरिसो दडो, अप्पमहतदोसाणुरूवो डडो दिज्जति किं च लोगे पुरिसा गुरूवो विभवाणुरूवो य डडो दिज्जति, जो जत्तिय खमति, एव जति लोगे अणुकंपिणो होउ घरसाराणुरूव डड देति, तो किमुत लोगुत्तरे वि अणुकपपरायणहिं सुट्ठुतर अणुकपा कायव्वा । अण्ण च जइ जो ज खमति तस्स त जति ण दिज्जति तो तित्थच्छेदादिया दोसा पच्छित्तकरणअसत्ता उण्णिक्खमति, किं च अबल पडुच्च निग्घिणता कक्खडपच्छित्तकरणपराभग्गस्स चरणसुद्धी ण भवति, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा जुत्त पुरिसभेदओ सोही ॥६६५९॥

"[2]जयणाए होति सुद्धा अजयणगुरुगा तिविहभेदो" त्ति एयस्स पच्छद्धस्स इम वक्खाण – तिविधभेदो त्ति आयरिय उवज्झाय भिक्खूण य । उस्सग्गतो ताव सव्वसि गेलण्णे सुद्धेण कायव्व । अह सुद्ध ण लब्भन्ति तो कारणाऽवलबिणा पणगादिजयणातो असुद्धेण करता कारवेता य सुद्धा ।

"अजयणगुरुग" त्ति अस्य व्याख्या –

सुद्धालंभे अगीते, अजयणकरणे भवे गुरुगा ।
कुज्जा व अतिपसंगं, असेवमाणे व अममाही ॥६६६०॥

१ गा० ६६५६ । २ गा० ६६५६ ।

अपरिणामगा अतिपरिणामगा य जे तेसिं सुद्धस्स अलभे जति अजयणाए करेति, अहवा – एत्थ अजयणा – तहा असमंजसतो करेति जहा ते जाणंति कहंति वा तेसिं असुद्ध ति, तो चउगुरुअ पच्छित्तं। इमे य दोसा भवंति, अतिपरिणामगो अतिप्पसंगं करेज्ज, अपरिणामगो वा अकप्पियं ति असेवंतो अणगाढाइ-परितावणा असमाहिमरणं वा ॥६६६०॥

किं चान्यत् –

तिविधे तेइच्छम्मि, उज्जुगवाउलण साहणा चेव ।
पण्णवणा मइच्छंते, दिट्ठंतो भंडिपोतेहिं ॥६६६१॥

आयरियादितिविधे पुरिसभेदे, अहवा – तिविधा तेइच्छा वातिया पित्तिता सिंभिता, तासु सुद्धालभे अकप्पिएण कीरमाणे आयरिय-उवज्झाय-गीयभिक्खूण य 'उज्जुय' ति – फुडमेव सीसति एयं "अकप्पियं" ति जं वा जहा गहियं। कम्हा ? जम्हा ते उस्सग्गववादतो जोग्गाजोग्गं जाणंति, ण च जोग्गं तं आयरंति। जे पुण अगीता अपरिणामगा अतिपरिणामगा य तेसिं अकप्पियं ति ण कहिज्जति।

अह ते भणेज्ज – कतो एयं ति ? ताहे कहिज्जति-अमुगगिहाओ त्ति वाकुलिज्जति, जहा से अकप्पिए वि कप्पियबुद्धी उप्पज्जतीत्यर्थः।

अह तेहिं णायं – ताहे तेसिं 'असुद्ध" ति फुडं साहिज्जति। अहवा – तेहिं सयमेव णायं तेसिं इमं साहिज्जति – "जं गिलाणेहिं अकप्पियं विधीए सेविज्जति तं णिद्दोसं, अण्णं च अप्पेण बहुमेसिज्जा एयं पडियलक्खणं। गिलाण गिलाणपडिकम्मे य अकिज्जमाणे जति मरति तो असंजतो बहुतरं कम्मं बंधति, तेगिच्छे पुण कए चिरं जीवंतो सामण्णं करेंतो लहुं कम्मं खवेति, अन्नं च कताइ तेणेव भवेण सिज्झेज्ज।"

उक्तं च – "अत्थि णं भंते लवसत्तमा देवा" इत्यादि आलावका। एवं जो तरुणो बहूण य साहुमाहुणीण उवग्गहं काहिति, सो एवं पण्णविज्जति।

अह पण्णवितो वि अकप्पियं ण इच्छति, ताहे से भंडीपोतेहिं दिट्ठंतो कज्जति।

जो भंडी पोतो वा थोवसंठवणाए संठवितो वहति सो संठविज्जति। अह अतीवविसण्णदारु तो ण संठविज्जति।

एवं तुमं पि गिलाणो अकप्पियसंठवणाए संठवितो बहुं संजमं काहिति, जो पुण वुड्ढो तरुणो वा अतीवरोगघच्छो अतिगिच्छो सो जति अप्पणा भणाति – "अणासगं करेमि" त्ति तस्स अणुमती कज्जति, अप्पणाऽभणतस्स "साहिज्जति" त्ति धम्मो कहिज्जति, पण्णविज्जइ य 'अणासगं करेहि" त्ति।

इदाणिं तेणेव करणिज्जं अह णेच्छति अणासगं, ताहे से भंडीपोतगं दिट्ठंता कज्जति, सो भण्णति – तुमं अतो विसन्नदारुतुल्लो आरोहणं करेहि त्ति। "जा एगदेसे अदढा तु भंडी" वृत्तं कंठं ॥६६६१॥

एवं कारणे जयणासेवणा वण्णिता, अजयणं करेंतस्स आरोवणा य। अहवा – सावेक्खा दस आयरियादिपुरिसा कज्जति।

कहं ? उच्यते – जे भिक्खू गीयत्थो सो दुविहो कज्जति।

कहं ? उच्यते – कयकरणो अकयकरणो य। थिराथिरो ण कज्जति।

एवं दस काउं इमा अण्णा आरोवणा भणति –

णिव्वियगितिय पुरिमड्ढे, एक्कासण अंबिले अभत्तट्ठे ।
पण दस पण्णर वीसा, तत्तो य भवे पणुव्वीसा ॥६६६२॥

मासो लहुओ गुरुओ, चउरो लहुगा य होंति गुरुगा य ।
छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥६६६३॥

आयरियादी सव्वे पंचरातिंदिय आवण्णा, तेसिं इमं दाणं –

आयरियस्स कयकरणस्स तं चेव दाणं, अकयकरणस्स अभत्तट्ठो ।

उवज्झायस्स कयकरणस्स अभत्तट्ठो, अकयकरणस्स आयंबिलं ।

भिक्खुस्स अभिगतस्स कयकरणस्स आयंबिलं, अकयकरणस्स एक्कासणयं ।

भिक्खुस्स अणभिगयस्स अथिरकयकरणस्स अकयकरणस्स णिव्वितियं अहवा – अणभिगतअथिरस्स इच्छा । एवं दसराइंदिएसु आढत्तं हेट्ठाहुत्तं पुरिमड्ढे ठाइ, पण्णरससु आढत्तं एक्कासणगे ठाति, वीसाए आढत्तं आयंबिले ठाति, भिण्णमासे आढत्तं अभत्तट्ठे ठाति, मासगे आरद्धं पंचसु रातिंदिएसु ठाति, एवं दोमासिकं तेमासिकं चउमासिकं पंचमासिकं छम्मासिकं छेदं मूलं अणवट्ठं पारंचिए आरद्धं सव्वेसु हेट्ठाहुत्तं ओसारेयव्वं तेहिं चेव पदेहिं । सव्वेते तवारिहलहुगा भणिया ॥६६६३॥

एसेव गमो णियमा, मासदुमासादिए उ संजोए ।
उग्घायमणुग्घाए मीसं मीसाइरेगे य ॥६६६४॥

एवं मासादिसगलसुत्तारोवणाओ भाणियव्वा, एवं उग्घाइएसु सव्वहा भाणिएसु अणुग्घातिएसु वि एवं भाणियव्वा, तहा उग्घायाणुग्घायमीससंजोगेसु वि भाणियव्वा । एवं मासादिगा जाव छम्मासा पणगसातिरेगेहिं भाणियव्वा । पुणो ते चेव गुरुगा पणगमासातिरेगेहिं ताहे उग्घायाणुग्घायपणगमासातिरेगेहिं तो दसराय उग्घाताणुग्घायसातिरेगमीसा य भाणियव्वा । एवं जाव भिण्णमासातिरेगेहिं ति । एवं सव्वावत्तिसु उवउज्ज दाणं दातव्वमिति ॥६६६४॥

एसेव गमो नियमा, समणीणं दुगविवज्जिओ होइ ।
आयरियादीण जहा, पवत्तिणिमादीण वि तहेव ॥६६६५॥

एवं संजतीण पि सव्वं भाणियव्वं । णवरं – तासिं दुगवज्जियं ति अणवट्ठपारंचियदाणं णत्थि ।

आवत्तीओ पुण तासिं अत्थि, से सव्वावत्ताओ दाणाणि य अत्थि । णवरं – परिहारो ण किंचि, जहा पुरिसाणं आयरियादिट्ठाणेसु भणियं तहा तासिं पवत्तिणिमादिठाणेसु भाणियव्वं ॥६६६५॥

इदाणिं आयरिओ सिस्साण सिस्सिणीण च इमं णिसीहज्झयणं हिययम्मि थिरं भवउ त्ति णिकायणत्थं इमं भणइ –

चउहा णिसीहकप्पो, सद्दहणा आयरण गहण सोही ।
सद्दहण बहुविहा पुण, ओहणिसीहे विभागो य ॥६६६६॥

अहवा – जं एयं पंचमचूलाए वुत्तं सव्वं एयं समासतो चउव्विहं ।

जतो भणति—"चउ०" गाहा ॥६६६६॥ चउव्विहो निसीहकप्पो त जहा – सद्दहणकप्पो, आयरणकप्पो, गहणकप्पो, सोहिकप्पो य । तत्थ जा सद्दहणा सा दुविहा—ओहे विभागे य ॥६६६६॥

एक्केक्का अणेगविहा इमा –

ओहणिसीहं पुण, हो ति पेढिया सुत्तमो विभाओ उ ।
उस्सग्गो वा ओहो, अववाओ होति उ विभागो ॥६६६७॥

ओघ समास सामान्यमित्यनर्थान्तर, त च णिसीहपेढिया णामणिप्फण्णो णिक्खेवो उ (ओह)ग्गहणादित्यर्थ । विभजन विभाग विस्तर इत्यर्थ । सवीसाए उद्देसतेहिं जो सुत्तसगहो सुत्तत्थो य । अहवा – उस्सग्गो ओहो, तस्यापवाद विभाग ॥६६६७॥

अहवा –

उस्सग्गो वा उ ओहो, आणादिपसगमो विभागो उ ।
वत्थुं पप्प विभागो, अविसिट्ठावज्जणा ओहो ॥६६६८॥

सुत्ते सुत्ते ज उस्सग्गदरिसण त ओहो, ज पुण सुत्ते सुत्ते आणाऽणवत्थमिच्छत्तविराहणा य विभाग-दरिसण सो विभागो, अहवा – आयरियादिपुरिसवत्थुभेदेण ज भणिय सो विभागो, जो पुण अविसिट्ठा आवत्ती सो ओहो ॥ ६६८॥

अहवा –

पडिसेहो वा ओहो, तक्करणाऽऽणाति होइ वित्थारो ।
आया संजम भइता, तस्स य भेदा बहुविकप्पा ॥६६६९॥

"ण कप्पइ" त्ति काउ ज ज पडिसिद्ध सो सव्वो ओहो, तस्स पडिसिद्धस्स करणाणुण्णा जा आणादिणो य भेदा । एस सव्वो वित्थरो त्ति विभागो सवित्थरो पुण भाणियव्वो । णिक्कारण अविधिपडिसेवण णियमा आणाभगो अणवत्था य, मिच्छत्त च – 'ण जहावादी तहाकारि" त्ति विराहणाओ आयसजमविराहणाओ भयणिज्जा—कयावि भवति ण वा । जहा करकम्मकरणे आयविराहणा भवति ण वा, सजमे णियमा भवति, पमत्तस्स य पडमाणस्स आयविराहणा, तस्सेव पाणाइवायअसपत्तीए णो सजमविराहणा । एव "तस्स" त्ति विराहणाए सप्रभेदा । एव बहुविकप्पा अणेगप्रकारा उवउज्ज भाणियव्वा । एव विभागो ॥६६६९॥

अहवा सुत्तनिबंधो, ओहो अत्थो उ होति वित्थारो ।
अविसेसो त्ति व ओहो, जो तु विसेसो स वित्थारो ॥६६७०॥

सुत्तमेत्तप्रतिबद्ध, जहा पढमसुत्ते करकम्मकरणे मासगुरु । एस ओहो । सेसो अत्थो जहा – पढमपोरिसीए करकम्मकरणे मूल, बितिए छेदो, ततिए छग्गुरू, चउत्थीए चउगुरु, पचमीए मासगुरु । एस विभागो । एव पढमसुत्ते । एव चेव सव्वसुत्तेसु जो अणुवादी अत्थो सव्वो विभागो । अहवा – ज दव्वादि पुरिसविसेसेण अविसेसिज्जति सो ओहो । दव्वादिपुरिसविसिट्ठ पुण सव्व वित्थरो । एय सव्व ज वुत्त सद्धाणसद्दहतस्स सद्दहणकप्पो ॥६६७०॥

इदाणि इमो [1]आयरणकप्पो –

जे भणिता उ पकप्पे, पुव्वावरवाहता भवे सुत्ता ।
सो तह समायरतो, सव्वो सो आयरणकप्पो ।।६६७१।।

जे पकप्पे एगूणवीसाते उद्दसगेहिं पुव्वावरवाहया सुत्ता अत्था वा भणिता ते तहेव समायरतस्स आयरणकप्पो भवति । एत्थ पुव्वो उस्सग्गो, अवरो अववादो । एते परोप्परवाहता – एतेसिं सट्ठाणे सेवणा कतव्वेत्यर्थ ।।६६७१।।

उस्सग्गे अववायं, आयरमाणो विराहओ होति ।
अववाए पुण पत्ते, उस्सग्गनिसेवओ भइओ ।।६६७२।।

कण्ठ्या । भयणा कह ? उच्यते – जो धितिसंघयणसंपण्णो सो अववायठाणे पत्ते वि उस्सग्ग करेंतो सुद्धो, जो पुण धितिसंघयणहीणो अववायट्ठाणे उस्सग्ग करेइ सो विराहणं पावति । एस भयणागतो आय (क) रणकप्पो ।।६६७२।।

इदाणि [2]गहणकप्पो –

सुत्तत्थतदुभयाणं, गहण बहुमाणविणयमच्छेरं ।
उक्कुडु-णिसेज्ज-अंजलि-गहितागहितम्मि य पणामो ।।६६७३।।

सुत्त अत्थ उभय वा गेण्हतेण भत्तिबहुमाणाब्भुट्ठाणातिविणओ पयुंजियव्वो । "अच्छेर" त्ति आश्चर्यं मन्यते – 'अहो ! इमेसु सुत्तत्थपदेसु एरिसा अविकला भावा णज्जति', अहवा – आश्चर्यभूत विणय करोति तिव्वभावसंपण्णो अण्णेसिं पि संवेग जणतो, अत्थे णियमा संण्णिसिज्ज करेति, सुत्ते वि करेति, वायणायरियइच्छाए वा सुणेति, उक्कुडुओ ठितो रयहरणणिसेज्जाए वा णिच्चकयंजली । एवं पुच्छमाणे वि सुत्त पुण कयकच्छमो पढति, जया पुण आलावयं मग्गति तया कयंजली कयप्पणामो य, किं च अग सुयक्खंध अज्झयण उद्दसगा अत्थाहिगारा सुत्तवक्के य गुरुणा दिण्णे समत्ते वा । गहिए त्ति अवधारिएण अणवधारिते वा सिस्सेण पणामो कायव्वो ।।६६७३।।

इदाणि "[3]सोधिकप्पो" त्ति सोधि प्रायश्चित्त त द्रव्यादिपुरुषभेदेन कल्पते य स सोधिकल्प, जो आवण्णाण पच्छित्तेण सोधि करोतीत्यर्थ । केरिसो सो ? उच्यते – केवल मण ओहि चोद्दस णवपुव्वी य ।

सीसो भणति – तित्थकरादिणो चोद्दसपुव्वादिया य जुत्त सोहिकरा, जम्हा ते जाणति जेण विसुज्झइ त्ति, तेसु वोच्छिण्णेसु सोही वि वोच्छिण्णा ? ।

आचार्याह –

का स जिणपुव्वधरा, करिंसु सोधिं तहा वि खलु एण्हि ।
चोद्दसपुव्वणिबद्धो, गणपरियट्टी पकप्पधरो ।।६६७४।।

पुव्वद्ध कंठ । इम पकप्पज्झयण चोद्दसपुव्वीहिं णिबद्ध, त जो गणपरिवट्टी सुतत्थे धरेति सो वि सोधिकरो भवति । अहवा – चोद्दसपुव्वेहितो णिज्जूहिओ एस पकप्पो णिबद्धो, तद्धारी सोऽधिकारीत्यर्थ ।।६६७४।।

[1] गा० ६६६५ । [2] गा० ६६६६ । [3] गा० ६६६६ ।

कि चान्यत् –

उग्घायमणुग्घाया, मासचउम्मासिया उ पच्छित्ता ।
पुव्वगते च्चिय एते, णिज्जूढा जे पकप्पम्मि ॥६६७५॥

जे उग्घायादिया पच्छित्ता जेसु अवराहेसु पुव्वगए सुत्ते अत्थे वा भणिता ते चेव पुव्वगतसिद्धा इह पि पकप्पज्झयणे णिज्जूढा तेसु चेव अवराहेसु त्ति, जम्हा एव तम्हा पकप्पधारी सोहिकरो त्ति सिद्ध ॥६६७५॥

सो पकप्पधारी कतिभेदो केरिसो वा गणपरिवट्टी इच्छिज्जति ? उच्यते –

तिविहो य पकप्पधरो, सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव ।
सुत्तधरवज्जियाण, तिगदुगपरियट्टणा गच्छे ॥६६७६॥

सुत्त णामेगे धरेति णो अत्थ, अत्थ णामेगे धरेति णो सुत्त ।

एगे सुत्त पि धरेति अत्थ पि, एगे णो सुत्त धरेति णो अत्थ ।

एत्थ चउत्थो पकप्पधरणे सुण्णेति अवत्थु चेव, सेसतिगभगे पढमभगिल्लो वि । जम्हा एते गणपरिवट्टी पच्छित्तदाणे असमत्थो त्ति । त सुत्तधर वज्जेत्ता तइयभगधरो गणपरिवट्टी अणुन्नातो । तस्सासति बितियभगिल्लो वि जम्हा एकभेदेण पच्छित्तदाणे समत्था तम्हा ण वोच्छिण्ण पच्छित्त देतगा य ६६७६॥

आह-- 'कि कारण पच्छित्त दिज्जति ?''

आचार्याह –

पच्छित्तेण विसोही, पमायबहुयस्स होइ जीवस्स ।
तेण तदंकुसभूतं, चरित्तिणो चरणरक्खट्ठा ॥६६७७॥

जहा मत्तगओ अवसो उम्मग्गगामी वा अकुसेण धरिज्ज – एव चरित्तिणो चरण मलिण पच्छित्तेण सुज्झति इदियादिपमादसु अ पयट्टमाणो पच्छित्तेण अकुसभूतेन निवारिज्जति चरणरक्खणट्ठा ॥६६७७॥

ज च भणसि "पच्छित्त वोच्छिण्ण" ति तत्थ पच्छित्ताभावे इमे दोसा –

पायच्छित्ते असंतम्मि, चरित्त पि ण चिट्ठती ।
चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे नो संचरित्तया ॥६६७८॥

चरित्तम्मि असंतम्मि, निव्वाण पि ण गच्छती ।
निव्वाणम्मि असतम्मि, सव्वा दिक्खा निरत्थया ॥६६७९॥ कण्ठ्या

तम्हा पकप्पधारिणो देंतगा अत्थि, पच्छित्त च देयमप्यत्थि, दातृदेयसबधात् । त च पच्छित्त दसविह आलोयणादि सिद्ध ।

तेसि सेस जम्मि वोच्छिण्ण, ज वा अणुसज्जति त भणामि –

दस ता अणुसज्जंती, चोद्दसपुव्वी य जाव संघयण ।
दोसु वि वोच्छिण्णेसुं, अट्ठविहं जाव तित्थं तु ॥६६८०॥

त दसविध ताव अणुसज्जति जाव चोद्दसपुव्विणो, चोद्दसपुव्विणो वि ताव अणुसज्जति जाव पढमसघयण, चोद्दसपुव्वा य थूलभद्दे वोच्छिण्णा । अणवट्ठपारंचियतवपच्छित्ता वि दो तत्थेव वोच्छिण्णा । तेसु य दोसु वोच्छिण्णेसु सेस आलोयणादि जाव मूल, एयं अट्ठविहं पि जाव तित्थ ताव अणुसज्जिहिति । लिंग-खेत्तकालअणवट्ठपारचिया य । लिंगे दव्वे भावे, दव्वेऽणला, भावे – अणुवरता, खेत्ते – जो जत्थ दूसति, कालतो जाव अणुचरतो त्ति ।।६६८०।।

अहवा दुविहं पच्छित्त – ओहणिप्फण्ण वित्थारणिप्फण्ण च –

ओहेण उ सट्ठाण, सट्ठाणविभागतो य वित्थारो ।
चरणविसुद्धिनिमित्तं, पच्छित्त तू पुरिसजाते ।।६६८१।।

तत्थ ओहणिप्फण्ण सट्ठाण, "सट्ठाण" ति ज सुत्ते णिबद्ध, त च उद्देसगस्स अतसुत्ते निद्दिसति ।।६६८१।।

सुत्ते सुत्ते पुण णिबधो इमो, जहा –

कम्मादीणं करणं, सयं तु सातिज्जणा भवे दुविहा ।
कारावण अणुमोयण, ठाणा ओहेण तिण्णेते ।।६६८२।।

जे भिक्खू सयमेव हत्थकम्म करेइ तस्स मासगुरु । साइज्जणा य दुविहा – कारावणा अणुमती य । एयासु मासगुरुगा । एते तिण्णि वि ओहणिबद्धाओ पच्छित्त । एयाओ पर ज विभागेण दसिज्जति सुत्तसूचित त सव्व वित्थारो । एव बहुविहं वण्णेत्ता जत्थ जत्थ सुत्तनिवाता सो ओहो सेस वित्थारो । त ओहविभागे पच्छित्त पडिसेवणपगार जाणित्ता आयरियादिपुरिसविसेस जाणित्ता मलिणविसोधिणिमित्त च दति ।।६६८२।।

कि चान्यत् – इह णिसीहज्झयणे सुत्ते उस्सग्गववाया दट्ठव्वा ।

तेसु इमा अणायरणविधी –

हत्थादिवायणंतं, उस्सग्गेऽववातिय करेमाणो ।
अववाते उस्सग्गं, आसायण दीहसंसारी ।।६६८३।।

हत्थकम्मकरण आदिसुत्तातो आरब्भ जाव एगूणवीसइमस्स चरिमस्स चरिम वायणासुत्त, एत्थ जो उस्सग्गठाणे अववाद करेति अववादे वा जो उस्सग्ग करेति सो तित्थकरआणाणाए वट्टति, दीहसंसारियत्त च णिव्वत्तेइ । जम्हा एते दोसा तम्हा उस्सग्गे उस्सग्ग करेज्जा, अववादे अववाद ।।६६८ ।।

अहवा – छेदसुत्तेसु सुत्ते सुत्ते इमो चउव्विहो अत्थोवेक्खो विधीए दसिज्जति –

पडिसेहो अववाओ, अणुण्णजतणा य होइ णायव्वा ।
सुत्ते सुत्ते चउहा, अणुओगविही समक्खाया ।।६६८४।।
पडिसेहो जा आणा, मिच्छऽणवत्थो विराहणाऽवातो ।
बितियपदं च अणुण्णा, जयणा अप्पाबहूण च ।।६६८५।।

पुव्वद्धस्स जहासख इमा वक्खा – पडिसेहो णाम जा आणा उस्सग्गववायत्थाणीय च सूत्रमित्यर्थ । अववादो णाम दोसो, त दोसठाण पडिसेवतस्स मिच्छत्त भवति, अण्णस्स जणेति, अणवत्थ च पयट्टेति,

आयसजमविराहण च पावति । अणण्णा णाम बितियपद, अपवादपदमित्यर्थ । जयणा नाम अववादे पत्ते मचिंतेउ ज ज अप्पतरदोसठाण त त णच्चा सेवति । जत्थ पुण बहुतरो दोसो त णच्चा वज्जेति । एव सव्वेसु सुत्तेसु अत्थो दसिज्जति ।।६६८५।।

आयावाए इमो विसेसो भण्णति –

देवतपमत्तवज्जा, आतावातो य होति भतियव्वा ।
चित्तवतिपुढविठाणादिएसु चोदेंत कलहो उ ।।६६८६।।

सव्वपमायठाणेसु पमत्तभाव देवता छलेज्ज अतो त देवयपच्चय "वज्जे त्ता" मोत्तु इत्यथ, मेसा जा आयावाया पमत्तभावस्स चिंतिज्जति । ते "भइयव्व" ति — भवति वा ण वा ति । केसुइ पमायठाणेसु भवति, केसु वि न भवति । अधवा — सव्वप्पमादठाणेसु आयावातो इमेण पगारेण वितियव्वो, जहा — चित्तमताए पुढवीए ठाणणिसीदणादि करेंतो चोदितो तत्थ कलह करेज्जा, परोप्पर असहनाण जुद्धे अप्फिडियाण आयविराहणा होज्ज, एव सवत्र ।।६६८६।।

एव आयावाएण भणिए समप्पिउकामे अज्झयणे आयरितो सखेवतो उवदेसमाह –

अवराहपदा सव्वे, वज्जेयव्वा य णिच्छओ एस ।
पुरिसादिपंचगं पुण, पडुच्चऽणुण्णा उ केसिं चि ।।६६८७।।

सुत्तभणिया अत्थभणिता वा जे अवराहपदा ते सव्वे वज्जणिज्जा । एस णिच्छयत्थो । तेसिं चेव अवराहपदाण पुरिसपवग पडुच्च केसि चि अणुण्णा भणिता । ते इमे पच — आयरिओ उवज्झाओ भिक्खू थेरो खुड्डो य । आदिसद्दातो सजतीसु वि पवग । केति 'पचग" ति गणावच्छेतिए छोढु पच भणति, त न भवति अव्यापृतत्वात् ।।६६८७।।

किं चान्यत् –

जति वि ण होज्ज अवाओ, गेण्हणदिट्ठादिया उ अवराहा ।
परितावणमादीया, आणादि ण णिप्फला तह वि ।।६६८८।।

जइ वि अवराहपदेसु ठियस्स आतावातो ण भवेज्जा, गेण्हण — कड्ढणादिया वा ण होज्ज, दिट्ठे मका धाडियभोतियादिया वा ण होज्ज, परितावमहादुक्खे एवमादिया न होज्ज । एवमादिअववादअभावे वि आणाभगऽणवत्थादियाण णिप्फल त्ति अवस्स तेसु दोसो भवति त्ति ।।६६८८।।

अहवा को तस्स गुणो, अवायवत्थूणि जाणि सेवंतो ।
मुच्चेज्ज अवायाओ, जतिरिच्छा मा ण तं सुकयं ।।६६८९।।

पमादिणो अववादठाणेसु पवत्तमाणस्स ज आयावायो ण भवति स तस्य गुणो न भवति, "जतिरिच्छा सा" – घुणक्खरसिद्धि व्व दट्ठव्वा, सुकत त ण भवति, पुव्वावरगुणदोसालयणमित्यथ । तत्र भावप्राणातिपात न फलवत्, ज अपायच्छित्त दट्ठव्व ।।६६८९।।

सीसो पुच्छति – भगव ! पमायमूलो बधो भवति, पमत्तो य असजतो लब्भति ।

आचार्याह – आम ।

पुणो सीसो पुच्छति – "जइ एव तो किं दोण्ह पमादअजयत्तणतो आवण्ण अणावण्णाण तुल्लपच्छित्त ण भवति" ?

आचार्याह –

काम पमादमूलो, बंधो दोण्ह वि तहा वि अजयाण ।
वहगस्स होति दंडो, कायणुवाया ण इतरस्स ॥६६९०॥

"काम' अणुमयत्थे, पमादमूलबधो, जति वि ते दो वि "अजयाण" ति – पमादभावे वट्टति तहावि जो तत्थ 'वहगो'' त्ति – पाणातिवाय आवण्णो तस्स पुढवादिपरित्ताणतकायाणुवातेण दडो भवति, इंदियअणुवादेण वा । "इयरस्स" त्ति – अणावण्णस्स त कायाणवायपच्छित्त ण भवति, पमायपच्चय वा भवति ॥६६९०॥

पुनरप्याह चोदक – "ततियचउत्थुद्देसगेसु सीसदुवारादिसुत्ता तुल्लाभिहाणा चरिमुद्देसगे य आवत्तिमाइया एवमादिसुत्ताण तुल्लत्तणतो णणु पुणरुत्तदोसो भवति ?" ।

आचार्याह –

जति वि य तुल्लऽभिधाणा, अवराहपदा पकप्पमज्झयणे ।
तहवि पुणरुत्तदोसो, ण पावती अत्थणाणत्ता ॥६६९१॥

"अवराहपय" त्ति – अवराहणिबद्धसुत्तपदा अत्थणाणत्त उद्देसगाधिकारातो वत्तव्व अत्थाधिकार-वसातो वा सेस कठ ॥६६९१॥

सूत्रनिबद्धप्रदर्शनार्थमाह –

पडिसेविताणि पुव्व, जो ताणि करेति एत्थ सुत्तं तु ।
हत्थादिवायणंतं, दाणं पुण तस्स चरिमम्मि ॥६६९२॥

पुव्व जाणि आयार-सूयकडादिसु पडिसिद्धाणि ताणि जो पडिसिद्धाणि करेति आयरतीत्यथ । एत्थ एगूणवीसाए उद्देसगेसु हत्थादिवायणतसुत्तेसु आवत्ति पच्छित्तनिबधो कतो, तेसि च आवत्तीण विसतिमुद्देसेण दाण भणिय ॥६६९२॥

कि च उस्सग्गववादविराहण करेतस्स दोषप्रदर्शनार्थमाह –

आणाभंगे णाणं, ण होइ अणवत्थमिच्छदिट्ठी उ ।
विरतीविराहणाए, तिण्णि वि जुत्तस्स तु भवंति ॥६६९३॥

तित्थकरुवदिट्ठविधिमकरेतस्स तित्थकराणाभगो, आणाभगे य णाणी ण भवति त्ति अण्णाणी भवति, "अणवत्थमिच्छत्तो" त्ति – भूयो पयट्टे अणवत्था, अणवट्ठियत्त त इच्छतो अभिलसतस्स दिट्ठी त्ति सम्मदिट्ठी ण भवति उस्सुत्तमायरतो य वट्टति । "विरती विराहणाए", विरती चरित्त त विराहेतस्स अचरित्तित्व भवतीत्यथ । जम्हा एव तम्हा सम्म चरणजुत्तस्स तित्थकराणाए वा सम्म जुत्तस्स, तिण्णि वि णाणदसणचरणाणि भवति ॥६६९३॥

सदृगार्थस्य विशेषप्रदर्शनार्थं विसदृगार्थस्य च अविशेषप्रदर्शनार्थमिदमाह –

अविसेसे वि विसेसो, विसेसपक्खे वि होति अविसेसो ।
आवज्जणदाणाणं, पडुच्च पुरिमे य गुरुमादी ॥६६९४॥

अविसेसे विसेसो इमो, जहा – दो जणा पुढविकायविराहगा, तेसि तुल्ल पच्छित्त ण भवति।

कह ?, उच्यते – एक्कस्स आवत्ति पडुच्च चउलहु, वितियस्स दाण पडुच्च आयाम। अहवा – पुढविकायविराहण त्ति अविसेसो, इत्थ विसेसो कज्जति – सचित्ते चउलहु, एव दाणे विसेसो कायव्वो।

विसेसपक्खे कह अविसेसो ?, उच्यते – दप्पओ एक्केण एक्को पचिदिओ घातितो, बितिएण दो तिण्णि वा, दोण्ह वि मूल। अहवा – एक्केण तिव्वज्झवसाणेण मूलमावन्ति, बितिएण मदज्झवसाणेण चरिम, दोण्ह वि अणवट्ठ, पुरिसेसु वा गुरुआदिठाणेसु थितिसघयणादि वा अविक्खिउ दव्वादि वा पडुच्च बहुधा गमणठाणदलबादिसुत्तेसु विसेसविसेसा दट्ठव्वा ॥६६६४॥

सीसो पुच्छति – "भगव ! तुब्भे सुत्ते अवाय दरिसेह, तत्थ जो अवायभीतो पावोवरति करेति तस्स कि साहुत्त णिज्जरा वा अत्थि ?, जो वा सभाववेरग्गजुत्तो पावोवरति करेति तस्स किं ततो विपुलतरा वा णिज्जरा भवति ?"

आचार्याह –

जो वि य अवायसंकी, पावातो नियत्तए तहवि साहू ।
कि पुण पावोवरती, निसग्गवेरग्गजुत्तस्स ॥६६६५॥

किमित्यतिशये, पुनर्विशेषणे, कि विशेषयति ? उच्यते – अपायाशकिन समीपान्निसर्ग स्वभाव अकृत्रिमो भाव, य एव वैराग्ययुक्त पापादुपरति करोति तस्स अतिशयेन महतरेण विपुलतरा णिज्जरा भवति। सेस कठ ॥६६६५॥

सीसो पुच्छति – "सव्वसुत्तेसु अववादा अववादो, अववादमतरेण वा जयणाऽजयणा उ भणिता तासि किं सरूव लक्खण वा ?"

उच्यते –

रागद्दोसविउत्तो, जोगो असढस्स होति जयणा उ ।
रागद्दोसाणुगतो, जो जोगो सा अजयणा उ ॥६६६६॥

असढभावस्स अववादपत्तस्स जो अकप्पपडिसेवणे जोगो तत्थिम रागदोसवियुत्तत्तण सा जयणा जयणालक्खण च एय चेव। एयविवरीया अजयणा, अजयणालक्खण च एय चेव ॥६६६६॥

पुनरप्याह – कि कारण सुत्ते सुत्ते अवाया भण्णति ?, उच्यते –

पाव अवायभीतो, पावायतणाइ परिहरति लोओ ।
तेण अवातो बहुहा, पदे पदे देसितो सुत्ते ॥६६६७॥

जहा लोगो अवायभीओ पावायरणे वज्जेति तहा लोगुत्तरे वि इहपरलोगावायभीतो पाव ण काहिनि, तेण सुत्ते सुत्ते बहुविधा अवाया देसिया ॥६६६७॥

शिष्याह – 'भगव ! तुब्भेहि थेरकप्पे उस्सग्गऽववाया देसिया दप्पकप्पपडिसेवणातो वि दसिता, किमेव जिणकप्पे वि भवति ?" न, इत्युच्यते – जम्हा ते एगतेण उस्सग्गठिया तम्हा तेसि अववादो णत्थि, कप्पिया वि पडिसेवणा णत्थि, किमग पुण दप्पिया ?,

जतो भणति –

दुग्गविसमे वि न खलति, जो पथे सो समे कहण्णु खले ।
कज्जे विऽवज्जवज्जी, स कहं सेवेज्ज दप्पेणं ।।६६६८।।

पूर्वार्धे दिट्ठतो कठो, पच्छद्धे दिट्ठतियो अत्थो । "कज्ज" ति – अववादठाणपत्ते वि अववादो "अवज्ज"मिति पाव, त जो वज्जेति, स दप्पेण कह पाव सेवेज्जा ? ।।६६६८।।

इदाणि अणुओगधरो अप्पणो गारवणिरिहरणत्थ सोताराण य लज्जाणिरिहरणत्थ आह –

अम्हे वि एतधम्मा, आसी वट्टंति जत्थ सोतारा ।
इतिगारवलहुकरणं, कहए ण य सावए लज्जा ।।६६६६।।

अणुओगकही चिंतेति भणाति वा – अम्हे वि एस एव चेव गुरुसमीवातो सोयव्वधम्मा आसि, जत्थ सपद सोतारा वट्टति । 'इति" उवप्पदरिसणे एव "अणुओगधरो अह" मिति अप्पणो ज गारव त णिरिहरति । 'ण य सावए" त्ति, जे सोयारा तेहिं वि सुणतेहिं चिंतियव्व "एस गणधरारद्धो सोतव्वकप्पो गरपरेण आगते' त्ति ण उ ण लज्जा कायव्वा ।।६६६६।।

एत्थ पुणऽज्झयणे इमेहि पगारेहि अत्थऽधिकारा गया –

पच्छित्तऽणुवाएणं कातऽणुवातेण के ति अहिगारा ।
उवहिसरीरऽणुवाया, भावणुवादे ण य कहिं पि ।।६७००।।

पच्छित्ताणुवाते णए जहा सव्वे मासगुरुमुत्ता पढमगुद्देसे अणुवत्तिया, बितियादिसु मासलहू, छट्ठादिसु चउगुरु, बारसमादिसु चउलहू । अहवा – पच्छित्तणुवातो पणगादिगो जाव चरिम, जहा दगतीरे असघसघातिमेसु, एवमादि कायणुवाएण, जहा – पेढियाए पुढवादिकाएसु भणिय । अहवा – छक्काय चउसु लहुगा ।। गाहा ।।

एवमादिसु उवहिअणुवातो जहण्णमज्झिमुक्कोसो, तेसु जहा सख – पणगमासचउमासो । अहवा – अहाकडस्स परिकम्मा बहुकम्म ति । सरीरअणुवातो जहा – वज्जरिसभनाराचसघयणातिगो ।

अहवा – वि दिव्वमणुयतिरियसरीरा सच्चित्तेतरा पडिमाजुत्ताणि वा विमियचित्ताए वा बेइदियसरीरादिगा । भावाणुवायतो, जहा – सप्पभेदा णाणदसणचरित्तायारा । अहवा – परितावमहादुक्खादिगा एवमादि ।।६७००।।

क्वचिदीदृशा

णेगविहकुसुमपुप्फोवयारसरिसा उ केइ अहिगारा ।
सस्सवतिभूमिभावित-गुणसतिवप्पे पकप्पम्मि ।।६७०१।।

अणगजातिएहिं अणेगवण्णहि पुप्फेहिं पुप्फोवयारो कओ विचित्तो दीसति, एव सुत्तत्थविकप्पिया अणेगविहा अत्थाधिकारा दट्ठव्वा । कह ?, उच्यते – पकप्पो, सो केरिसो ? गुणसइदप्पतुल्लो । वप्परूपक इम – सस्य यस्या भूमौ विद्यते सा भूमी सस्यवती सस्ययुक्ता, क्वचिच्छाली क्वचिदिक्षू क्वचिज्जवा क्वचिद्व्रीहय,

भावितो गुणेहि जो सो भावितगुण, गुणगत इत्यर्थ, ते च गुणा सतिमादी, सती नाम विशिष्टा सस्यवृद्धि-निरुपहतत्व ईतिवर्जितत्व बहुफल च, एभिर्गुणैरुपपेतो वप्र ।

इदाणि उवणग्रो – वप्पो इव पकप्पो, सालिमादीण वा उद्देसत्थाधिकारा सस्यवृद्धिरिव अनेकार्थ, निरुपहतमिव दोषवर्जिता, ईतिवर्जितत्वोऽत्र पासत्थचरगादिदोषवर्जिता, बहुफलत्वमिव ऐहिकपारत्रिक-लब्धिप्रभवात्, ईदृशे प्रकल्पे अनेकार्थाधिकारा इत्यर्थ ।।६७०१।।

एय पुण पकप्पऽज्झयण कस्स ण दायव्व, केरिसगुणजुत्तस्स वा दायव्व ?

अतो भण्णति –

भिण्णरहस्से व नरे, निस्साकरए व मुक्कजोगी वा ।
छव्विहगतिगुविलम्मी, सो समारे भमइ दीहे ।।६७०२।।

भिण्णरहस्सो णाम जो अववादपदे अण्णेसिं सकप्पियाण साहति । णिस्साकरओ णाम जो कि चि अववादपद लभित्ता त निस्स करेत्ता भणाति – एव चेव करणिज्ज, जहा य एय तहा अन्नपि करणिज्ज, तत्थ दिट्ठतो – जहा कोइ सूईमुहमेत्तमच्छिद्द लभित्ता मुसल पक्खिवइ । मुक्कजोगी णाम जेण मुक्को जोगो णाणदसण-चरित्ततवणियमसजमादिसु सो एस मुक्कजोगी । एरिसस्स जो देति सो ससारे चउप्पगारे वा पचप्पगारे वा छप्पगारे वा णरमादिगतिगुविले "गुविलो" त्ति गहणो धुणावयतीति घोरो, एरिसे ससारे भमिहिति दीह काल, एरिसेसु ण दायव्वा ।।६७०२।।

एएसिं पडिवक्खा जे तेसु दायव्वा । ते य इमे –

अइरहस्सधारए पारए य असढकरणे तुलोवमे समिते ।
कप्पाणुपालणा दीवणा य आराहण छिण्णसंसारे ।।६७०३।।

अतीवरहस्स अइरहस्स, त जो धरेति सो अइरहस्सधारगो । जो त अइरहस्स एक दो तिण्णि वा दिण्णा धरेति ण तेण अहिकारो, जो त रहस्सधरण जीवियकाल पार णेति तेण अहिकारो । असढकरणो णाम सव्वच्छादने जो अप्पाण मायाए ण ठाति, असढो होऊण करण करेति । तुलसमो णाम समट्ठिता तुला जहा ण मग्गतो पुरवो वा णमति, एव जो रागदोसविमुक्को सो तुलासमो भण्णति । समितो णाम पचहि समितीहि समितो । एयगुणमपउत्ते य देयो, एयगुणमपउत्ते पदेतेण पकप्पाणुपालणा कया भवति । अहवा– पकप्पे ज जहा भणित तस्स अणुपालणा जो करेति तस्स देयो, पकप्पाणुपालणाए य दीवणा कया अण्णेसि दीविय दरिसियं गमिय, जहा एत एव कायव्वमिति । अहवा – दीवणा जो अरिहाण अणालस्से वक्खाण करेति तस्सेय देय ति । दीवणाए य मोक्खमग्गस्स आराहणा कता भवति, आराहणाए य चउगतिगुविलो दीहमणवयग्गो छिण्णो ससारो भवति, छिण्णम्मि य ससारे ज त सिवमयलमरुयमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तय ठाण त पावति, त च पत्तो कम्मविमुक्को सिद्धो भवति ।।६७०३।। अणुगमो त्ति दार सम्मत्त ।

इदाणि "नय" त्ति दार – "णीड् प्रापणे", अनेकविधमर्थं प्रापयतीति नया, अधवा – णिच्छिय-मत्थ णयनीति, तथा जो सो अत्थो उवक्कमादीहि दारेहि वण्णिओ सो [1]सव्वो णएहिं समोयारेयव्वो, ते य मत्तणयसता दो चेव णया जाता, त जहा – णाणणयो चरणणओ य । तत्थ णाणणओ इमो – "णायम्मि" गाहा [2]इदाणि चरणणओ – "सव्वेसि पि" गाहा

१ सव्वेहि इत्यपि पाठ । २ इमा, इत्यपि पाठ ।

जो गाहासुत्तत्थो, सो चेव विधिपागडो फुडपदत्थो ।
रयितो परिभासाए, साहूण य अणुग्गहट्ठाए ॥१॥

ति चउ पण अट्ठमवग्गे, ति पणग ति तिग अक्खरा व ते तेसिं ।
पढमततिएहि तिदुसरजुएहि णाम कय जस्स ॥२॥

गुरुदिण्ण च गणित्त, महत्तरत्त च तस्स तुट्ठेहि ।
तेण कएसा चुण्णी, विसेसनामा निसीहस्स ॥३॥

नमो सुयदेवयाए भगवतीए ।

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए वीसइमो उद्देसओ समत्तो ॥

॥ इति सनिर्युक्तिभाष्यचूर्ण्युपेतं निशीथसूत्रं समाप्तम् ॥

निशीथचूर्ण्याः सुबोधा व्याख्या

विंशतितमोद्देशकस्य विषमपदविवरणरूपा

प्रणम्यवीरं सुरवन्दितक्रमं, विशुद्धशुद्धयाखिलनष्टकल्मषम् ।
गुरूंस्तथा निर्मलशुद्धिकारिणो, विशुद्धतत्त्वान् जगते हितैषिणः ॥१॥

विंशोद्देशे श्रीनिशीथस्य चूर्णौ, दुर्गं वाक्यं यत् पदं वा समस्ति ।
स्वस्मृत्यर्थं तस्य वक्ष्ये सुबोधां, व्याख्यां कांचित् सद्गुरुभ्योऽवबुद्धाम् ॥२॥

आदौ मासिकपदमिह तत्प्रस्तावात् समागता मासा, तानवधिकृत्यादौ व्याख्या प्रारभ्यतेऽत्र, यथा –

"नक्खत्ते" गाहा (२० उ० गा० ६२८३) **"एगत्तीसं"** गाहा (२० उ० गा० ६२८५–६२८६) नक्षत्रमासाना पचानामपि प्रमाणाभिधायिके एते गाथे, स्थापना—

न	चन्द्र	आ	ऋतु	अ	मा
२७	२६	३०	३०	३१	१४४
२१	३२	१/२		१२१	१३
६७	६२	६०	६१	१२४	

तत्र चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डलभोगकालो नक्षत्रमास । अत्र च सप्तविशते सप्तषष्ट्या गुणने जात १८०६ । एकविंशतिभागाश्च मध्ये क्षिप्यन्ते जात १८३० सप्तषष्टिभागा । एतावन्तो भागा नक्षत्रमण्डलभोगकाले भवन्ति, अस्य च राशे सप्तषष्ट्या भागे हृते लब्धम् २७, २१, ६७ । "अहव त्ति तिन्नि अहोरत्त" त्ति – द्विघटिकाप्रमाणो मुहूर्त, तीसाए मुहुत्तेहि अहोरत्त भवइ, पन्नरसहि छ गुणिया ६० होइ, तओ तीसमुहुत्तेहि भागे हृते लभ्यन्ते दिनानि ३, उत्तराण छण्ह नक्खत्ताण पणयालीसाए छहि गुणणे २७०, ३०, ६ । तीसाए भागे हृते दिन ६ । पण्णरस तीसाए गुणिया तीसाए भागे हृते लब्धा १५, ४५०, ३०, १५ । तओ मिलिया सत्तावीस दिणा २७, २१, ६७, चन्द्रमास उच्यते । अभिइभोगो सावणबहुलपडिवयाए एव पमाणो चदस्स वत्तइ ६, २४, ६२ ६६, ६७ । ते सह "च्छेएण" त्ति – इगवीसा गुणितज्जइ वासट्ठीए, जाय १३०२, छेदश्च सप्तषष्टिरूप स च द्वाषष्ट्या गुणित ४१५४, अय भागहारक, भाज्यश्चाय १३०२, अय च लघुर्भागहारकरा- (?) पेक्षयाऽतस्त्रिशता गुण्यन्ते जात ३९०६०, ४१५४, ९ । भागे हृते लब्ध मुहुर्ता ९, शेष चोर्द्धरित १६७४ । एतच्च द्वाषष्ट्या गुणनीय, चतुर्विशत्यशाना द्वाषष्टिसप्तत्वात्पर ण गुण्यते अकवृद्धिभयात्

किन्त्वपवर्तन – राशेर्ह्रस्वीकरण क्रियते, तथाहि – भाज्यस्य द्वाषष्ट्या किल गुणनमिति द्विषष्टिस्ता वदेकाऽधस्तनराशेरपि द्वाषष्ट्या भागो हार्य इति द्विषष्टिस्तुल्यैव पश्चाद्द्विषष्टेरिति गुणकारको द्वाषष्टिरेक छिद्यते, द्वाषष्ट्या एककश्च लभ्यते, तथा च तुल्येन सम्भवेन सति हर विभाज्य च राशिना छित्वा भागो हार्य, क्रमश इति न्यायोऽन्यत्रोक्त, तत ४१५४, अस्य राशे द्वाषष्ट्या भागे हृते सप्तषष्टिर्लभ्यते, तया अस्य राशे १६७४, $\frac{६६}{२}$ भागे हृते लब्ध २४, ६६, ६७। षड्वास्य १६७४, राशेर्द्वाषष्ट्या गुणने जात १०३७८८, ४१५४। अस्य भागोऽनेन ४१५४ हार्य । लब्ध २४ शेष ६६ च, ततो द्वाषष्ट्या अपवर्तन द्वयोरपि क्रियते अधस्तने लभ्यते ६७ उपरितने च द्वाषष्ट्या हृते ६६ लभ्यते, एव च अभीचिभोग प्राग् दर्शितरूप सर्वोप्यागत । "सवणाइया नक्खत्तभोग" त्ति मिलिताना ८१० अभीचिमुहूर्ते ६ क्षेपे ८१६ "पुणो अभीइभोगो" त्ति जओ एव कण ६०, २७०, ४५०। नक्खत्तमास एव भवति।

चदमासो य नक्खत्तमामाओ अधिकतरो अओ पुण्णे नक्खत्ततिगभोगकाल क्षिप्यते समत्तुति – समस्त अभीमुहूर्त ६, २४०, ४२६। मिलिय ६५, अस्य राशे ८१६ मिलने जात ८८४, वासट्ठिभागा य, अभीचि ४८, धणिट्ठा ४२ सङ्का मीलिता ६०। अभिचिचुन्नी ६६, दुगुणिया १३२, धनिष्टाया दो चुन्नीप्रक्षेपे १३४, मिलित च जात, शेष सुगम। यावच्चन्द्रमास समाप्त ।

उऊमासइ त्ति – बुद्ध्या छिन्नस्य द्विषष्टिभागतया एकाहोरात्रस्य एगषष्टिभागेहिं चन्द्र गत्या तिथिसमाप्तिर्भवति – एकषष्टिभागरूपा तिथिर्भवतीत्यर्थ । अत्र त्रैराशिक कर्त्तव्य यथा – १८६०। १८३०। १ । आद्यन्त्योस्त्रिराशावभिन्नजातीति प्रमाणमिच्छा च फलमन्यजातिमध्ये तदत्यगुणमादिमेन भजेत्, १८३०, १८६०, $\frac{३०}{१}$ त्रिशता भागे हृतेऽधस्तनराशौ लब्ध ६२, उपरितने च लब्ध ६१, ततो न्यस्यते $\frac{६१}{६२}$ लब्ध। त्रिशता गुणितेऽस्मिन् ६१, जात $\frac{१८३०}{६२}$ एकषष्ट्या भागे ३ हृते लब्ध ३, भागो न पूयते, लब्ध शून्य, तत ३०। ऋतुमासस्य च साधनमासकर्ममासाविति पर्यायौ, अत आह – "कम्ममासो सावणमासो य भन्नइ त्ति" "एस चेव" त्ति $\frac{१८३०}{६२}$, लब्ध, तेन किल चद्रगत्या तिथिर्भवति, ततश्चन्द्रमा सोऽपि एतस्मादेव तिथिराशेरानीयते इत्यावेदयते। आ इव त्ति – कोऽर्थ ? अभुक्तेषु एतेषु कर्कस्थेन आदित्येन तद्दिनात् प्रभृत्येव दक्षिणायनप्रवृत्ति, किन्तु पुष्यनक्षत्रस्याष्टभिरहोरात्रैश्चतुर्विशतिमुहूर्तैश्च मुक्तैरुत्तरायणमेवातिक्रामति, तदूर्ध्व चतुर्भिरहोरात्रैरष्टादशभिश्च मुहूर्तै सावशेषैर्दक्षिणायनप्रवृत्तिरिति, सयभिसयेत्यादि षडहोरात्रा षड्भिर्गुणिता ३६, मुहूर्ताश्च २१, षड्भिर्गुणिता १२६, अहोरात्रविशतिश्च – षड्भिर्गुणिता १२०, मुहूर्ताख्यभागाश्च त्रय षड्गुणा १८, त्रयोदशाहोरात्रा पचभिर्गुणिता १६५, भागा १२, गुणिना पचदशभि १८०, अभीचिभागा ६, सर्वभागमीलने ३३०, अत्र च विंशता भागे हृते लब्धा ११ अहोरात्रा, पूर्वोक्ताना षड्त्रिशतादीना अहोरात्रराशीना मीलने ३५१, अभीचिअहोरात्रचतुष्कक्षेपे मुहूर्तेषु लब्धा एकादशाहोरात्रक्षेपे च ३३६। अत्र च पुष्यभाग प्राग् दर्शितो न क्षिप्यते, पचदशगुणकारकमध्ये पुष्यस्य सद्भावात्, ये दिवस $\frac{४}{८,३६}$ मीलितो दिन १, ३, एतावत्प्रमाण क्षिप्यते तदा चतुर्विंशतिभिर्गुण्यते त्रयोदशाहोरात्रमाने राशिस्तदभागाश्च, अत एव पुष्यभक्तौ पृथग् दर्शितायामपि अवसेसा नक्खत्ता पन्नरसविस्तरसहगया "जति" त्ति पुष्य मध्ये कृत्वा पचदशेत्युक्त, तत्र चतुर्दशगुणने त्रयोदशाहोरात्रराशौ १८२, भागेषु च १६८, अय च मील्यते उपरितनराशिरस्य राशे १६०, जात ३४२, भागराशेश्च १५०, भागराशिरय, १६८, मील्यते जात ३१८, पुष्यभागा १२, मीलने ३३०, त्रिशता भागे हृते ११, पुष्यादि १३, सर्व २४,

मील्यते राशे ३४२, रित्यस्य जात ३६६, कारण तु वुच्छामि त्ति – अत्र करणराशीना मीलनमेवाभिप्रेत, अस्य राशे ३६६, भागे १२, हृते लब्ध ३०, ततोऽपवर्तन द्वादशाना षड्भागे द्विक , षण्णा षड्भागे एकक १/२, इति दिनार्धं लब्ध, स्था० ३० १/२ यद्वा अय ३६६, पचगुणा १८३०, तत षड्भागे हृते लब्ध ३०, तत षण्णा तृतीयभागे द्वौ, त्रयाणा च तृतीयभागे एकैक एव, इत्यपवर्त कार्य ।एत्थ वि त्ति अत्र एतस्मिन् राशौ १८३०, अपेर्भिन्नक्रमत्वात् सर्वमासा अपीत्यर्थ , अभिवड्ढिउ त्ति इत्यादि ऋतुसवत्सरो हि ३६०, एतावद्दिनप्रमाणस्तदापेक्षया चन्द्रादित्यसवत्सरयोर्न्यूनाधिक्य व्यवस्थापयन्नाह –

छच्चेव य (२० उ० पृष्ठ २२७)

आदित्यसवत्सर ३६६, एतावद्दिनप्रमाण , चद्रसवत्सर ३५५, १२/६२ एतावत्प्रमाण , तत्रादित्यसवत्सरे षड्दिनानि ऋतुसवत्सरापेक्षयाऽधिकानि चन्द्रसवत्सरे ऋतुवर्षापेक्षयैव न्यूनानि, ओमरत्त त्ति अवमराशे षडेव न्यूनानि दिनानीत्यर्थ । बारसवासेणए त्ति द्वादश दिनानि, एतानि वर्षेणाधिकानि, षडवमरात्राश्चन्द्रसवत्सरसत्का षड् वाऽऽदित्यवत्सरसत्का इति द्वादश एकस्मिन् वर्षे दिवसा अधिका भवति, एव द्वितीयवर्षेऽपि द्वादश षडभिर्मासैस्तृतीयसवत्सरसत्कै षड्दिवसा लभ्यते, तनस्त्रिशद्दिनानि भवति अर्धतृतीयवर्षैरतिक्रान्तै ,अत एवोक्त अड्ढाइज्जेहि पूरमासो त्ति –

सट्ठीए (२० उ० गा० ६२८७)

युग हि पचसवत्सरैर्निष्पद्यते, पचसवत्सरेषु च मासा षष्टिसख्या, पक्षद्वयनिष्पन्नत्वाच्च मासस्य पक्षाणा विशत्यधिक शत युगे भवति, युगस्य च मध्ये अन्ते वाधिकमासो भवति । अद्ध च मध्यमे व भवति इति मध्ये अधिमासक । षष्टिपक्षाणामतिक्रान्ताना भवति–त्रिशन्मासैरतिक्रान्तैरित्यर्थ । बावीसे पक्खसए त्ति युगान्ते हि विश शत पक्षाणा भवति। परमार्थे युगस्य पक्षद्वय यदतिक्रान्त तत्प्रक्षेपे द्वाविश शत मुक्त इति द्वितीयाधिकमासक्षेपे युगान्ते – पक्षाणा १२५, भवति । युगान्ते चाधिकमासो भवन् आषाढान्ते भवत्याषाढद्वय भवतीत्यर्थ । अहव त्ति प्रमाणवर्षस्य दिवसराशि १८३०, तस्मान्नक्षत्रादिमासदिनसख्या आनीयते, सेसा बारस त्ति अशा छेदाश्च द्वाषष्टि , ते छेदा अशाश्चार्धेनापवर्त्यन्ते द्वाषष्टेरर्धं ३१, द्वादशानामर्धं षट्, ६/३१ । छेएण भाइए लद्ध त्ति–छेद १२५, इत्येषस्तेन भाजित इत्यय राशि १४५२ लब्धा ११, उद्धरिता ८८, एकादशसु एतस्मिन् ३२७ राशिमध्ये क्षिप्तेषु ३०३, छेदा १२४, अशा ८८, उभयोश्चतुर्भिरपवर्तनेऽष्टाशीते , २२, चतुरधिक विशतिशतस्य च ३१, दिवसा । दिवसेसु त्ति – चन्द्रवर्षत्रयराशि १०६२, अभिवर्धितवर्षद्वयराशिश्च ७६७, १३/३१ दिवसाना मीलने १८२९ । भागा भागेसु त्ति १८/३१, एवरूपा मिलिता ३१, एतेषामेकत्रिशता भागे हृते लब्व एककस्तस्मिन् पूर्वराशिमध्ये क्षिप्ते १८३० । ज ए तेरसेहि चदमासेहि इत्यादि स्थापना १३ । १२ । ३१, १२१, १२४, ६२ । द्वादशाभिवर्धितमासा अन्त्ये द्वाषष्ट्या गुण्यन्ते जात १४४, त्रयोदशभिश्चादिमे भागे हृते लब्ध मासा ६२, ५७–३/१३ एए पुणो सवन्निय त्ति त्रयोदशभिरेव गुण्यन्ते सतपचाशन्मासा, जात १४१, त्रयोदशभागत्रयप्रक्षेपे १४४, तेरसगुणियाण ति लब्ध ३१ ।

२३७९१०/७४४ शेष ७२६/७४४ द्वयोरपि षड्भिरपवर्तनेऽधस्तनराशौ १२४, उपरितने च १२१, दिन । एवप्रमाणो अभिवड्ढियवरिसस्स भागरूवोऽधिकमासक ,यद्वाऽनयोराश्यो २ २७९१०/३७४४ अर्धयोरपि षड्भिरपवर्तनप्रथमतो विहिते जात ३९६२/१२४ अस्याधस्तनराशिभागे हृते लब्धैकत्रिशद्दिनरूपोऽधिकमासक समागच्छति, एकत्रिशदुपरि छेदाशयोर्न्यस्यते ।

ससिणो य गाहा २० –

शशिनश्चन्द्रमासस्यादित्यमासस्य च य कश्चिद्विश्लेष उद्धरित किंचित्तस्य त्रिशता गुणने द्विपष्टिभक्ते च यल्लब्ध तच्चन्द्रमासोऽभिवर्धितो भवति। एतदेव विवृणोति – एएसि विसेसे एक त्ति – विश्लेपेऽपसारणे कृते सति तच्चन्द्रमाससज्ञितराशेरादित्यराशिमध्यात् आदित्यराशेश्च यद्दिनमेक तस्य मध्यात् द्वार्षष्ठिभागा ३२, अपसायन्ते त्रिशच्च द्वाषष्टिभागा अवतिष्ठन्ते त्रिशच्च स्वगता षष्टिभागा ३०/६०। ३१/६२, एए वट्टिय त्ति आद्यस्य दशकेनापवर्तने शून्यद्वय गत, द्वितीयस्य चाधनापवर्तने जात ३/६।

परोप्पर छेयगुण त्ति कोऽर्थ ? एकत्रिशच्छेदा षष्टिस्त्रिशद्भागा स्थाप्या, अपरे चेनरस्याधस्तत इत्थ न्यास ३ ३/६। १५३/६१। एकत्रिशता च गुणने चाद्यराशौ जात ९३/? द्वितीयस्य च षड्भिर्गुणने ९० एकत्रिशतश्च षड्गुणने १८६, अय च सदृशच्छेदो नष्ट उत्सार्यो गतार्थत्वात् अमा असा असेसु पक्खित्ता जात १८३, ततो अशा १८३ अशाना त्रिभिरपवर्तने लब्ध ६१, छेदाना त्रिभिरपवर्तने लब्ध ६२, न्यास ६१/६२। एस तीसगुण त्ति – एकषष्टिद्वाषष्टिभागरूप एकस्तिथि-स्त्रिशद्गुण १८३०, द्वाषष्टिविभक्त २९३२/६२ चन्द्रमासप्रमाणोऽधिकमासको भवति। अहवे त्ति – १। १। ३०। त्रिशना मध्यभूत एकको गुणितस्त्रिशद् भवति। एककेन वाद्येन त्रिशतो भागेहृते लब्धे त्रिशदेव लभ्यते। एसा आइदुचद त्ति एसा एकषष्टिभागरूपा सोमतिथि मासस्यान्ते एका तिथिर्वर्धते, एय चेव अभिवड्ढि पडुच्च त्ति – एता पूर्वोक्ता – त्रिशत्तिथिरूपा यद्वा २९३२/६२ एतद्रूपा अभिवर्धितवर्प-मास ३१ १२१/१२४ एतावत्प्रमाण । सेसम्म त्ति – उद्धरितस्स ३४, एव रूपस्यार्धे भवति चतुर्विशत्यधि-कशतस्य चार्धे द्वाषष्टि, स्थापना ३१, २९, १७, ६२। नक्षत्रादिमासपचकव्याख्यानमिद समाप्तम्।

तिपरिरयाइजयणाजुत्तस्स जा पडिसेवणा सा कम्मोदयप्रत्यया न भवति, क्रोधादिभावस्थो यतोऽभावशुद्ध न गृहीतवान्, किं च म्हे भयव। न य वज्जीपावसस्सतुल्ल त्ति न च वर्जका विकृतेर्वय वृषस्य तुल्यास्सन्न इति भाव । बात्तामो त्ति वर्तयाम । भिन्न सत् कुड्डसेस भिन्नकु डसेस छक्कायगेसु त्ति – कायकेषु अणिच्छिय त्ति अनिश्चितालोचनया पण्णरसघेत्तु मासो दिज्जइ त्ति द्वयोरपि मासयो पचदश पचदश गृह्यन्ते, ततो माम इति उग्घाइमाणुग्घाइममिश्रभगकेषु इत्थ विन्यस्स भगकाश्चारणीया १, २, ३, ४, ५, उग्वा। १, २, ३, ४, ५। नु ६।

पच दश दश पच एकद्व्यादिसयोगाना सख्याना –

उभयमुहराशिदुग उवरिल्ल आइमेण गुणिऊण।
हेट्ठिल्लभागलद्धे उवरि ठिए हु ति सजोगा॥

इत्यनेन करणेनागच्छतस्तत एककादिसयोगत्वेनोद्घातिमाना यानि सयोगस्थानानि पचाइग त्ति – पचकादी तान्यनुद्घातिमाना एककादिसयोगत्वेन ये पचकादयो गुणकारकास्तैर्गुणनीयानि, तत पचविंशत्यादिक सख्यान जायते। बहुसमुत्तेसु वि मीसगसुत्तसजोग त्ति – उग्घाइयअणुग्घाइय-मीलकेन मिश्रत्व ज्ञेय।

ननु बहुससुत्तावनीसु इत्यादि एकमपि मासिकयोग्यमतिचारजात यदा बह्वीर्वारा आसेवते तदा बाहुल्यासेवनतो बहुससूत्रविषयता तस्या च बहुवारासेवनलब्धो द्विमासाद्यापत्तिसम्भवो-ऽप्यस्तीनि भाव ।

सव्वे वि हुँति लहुगा इत्यादि एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धा एकापेक्षया द्वित्र्यादयो मासास्ते च लघवो मासा सर्वेऽपि प्राप्यन्ते, अतो द्वितीयतृतीयपचममासा अनुक्ता अपि सन्तो गुरवोऽपि

द्रष्टव्या । अयमर्थ – सूत्रे किल मासलघु मासगुरु तथा इत्येवमेवोक्त, द्व्यादिमासाना च न चिन्ता कृता, तथाऽपि लघवो मासा षडपि सूचिता सूत्रे, अतो गुरवो पि मासा द्व्यादयो द्रष्टव्या, एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् ।

जे भिक्खू मासिए मासियमित्यादि एव सामान्येन चतुर्भंगीय विशेषतश्च चिन्त्यमाना पञ्चदश भवन्तीत्याह – एव मासस्सेत्यादि चारणिका, यथा मासिए मासिय १ मासिए दोमासिय २ दोमासिए मासिय, दोमासिए दोमासियमित्येका ११, १२, २१, २२ ।

एव शेषा अपि अकतो दर्श्यन्ते, यथा – ११ ११ ११ ११
१३ १४ १५ १६
३१ ४१ ५१ ६१
३३ ४४ ५५ ६६

इत्येव मासस्य द्विकादिमासै सह चतुर्भंगिकापचक लब्ध । एव द्वित्र्यादिमासानामपि स्वस्थानपरस्थानै सह चारणे चतुर्भंगिका भवति, तत्र द्विकचतुर्भंगिकाया द्विक स्वस्थानम् । त्रिकादिचतुर्भंगिकासु स्वस्वाकरूप स्वस्थानम्, तद्विसदृश तु परस्थानम् । अकत स्थापना चेय – २२ २२ २२ २२
२३ २४ २५ २६
३२ ४२ ५२ ६२
३३ ४४ ५५ ६६

दुमासिए दुमासिय । दुमासिए तिमासियमित्यादि चारणिका कार्या, एव द्विकचतुर्भंगिकाश्चतस्र त्रिकभगिकास्त्रिम – ३३ ३३ ३३
३४ ३५ ३६
४३ ५३ ६३
४४ ५५ ६६

चतुर्भंगिकाद्वितय,
४४ ४४
४५ ४६
५४ ६४
५५ ६६

पचकचतुर्भंगिका ५५, ५६, ६५, ६६ । मिलिता सर्वा १५ ।

जहमन्ने २० उ० गा० (६४२३) –

"एव" ति – अमुना प्रकारेण वुड्ढिहाणिनिष्पन्न, "च" त्ति – वाऽर्थ जे सुत्तनिबद्धा मासिय त्ति—प्रतिपद सूत्रेण यानि प्रायश्चित्तानि निरूपितानि जहा – सेज्जायरपिडे मासो इत्यादि,

तानि सूत्रनिबद्धानि मासिकानि, किमुक्त भवति ? एकस्मिन् अपि बहुदोषदुष्टत्वेन यका मासिकादिबहुत्वापत्ति, सा न सूत्रनिबद्धे ति न तदाश्रित बहुत्व त्रेधा, किन्तु एकैकदोषदुष्टासेवनेन यद् बहुत्व तत् त्रिविधमिति । तत्थ – जहन्नमित्यादि, अयमर्थ – पढमुद्देसए अणुग्घाइयमासपच्छित्ता २५२, । बिइयतइयचउत्थपचमुद्देसएसु मासलहुयपच्छित्ता ३३२। एएसि उग्घाइयाणुग्घाइयमासाण इक्कओ सखित्ताण ५८४ । एव सति मासिकपायच्छित्ततिगसेवणे जहन्नओ बहुत्व तिन्नि मासा तु

प्रतिबहुत्व यत शेष सुगमम्। अहवा – ठवणासेवणाहीत्यादि इद व्यापक लक्षण। सचयमास त्ति – प्रायश्चित्तापत्तितो यावन्तो मासा शिष्येणासेविनास्ते सचयमासा इति तात्पर्यम्।

चउभगविगप्पेण त्ति – मासिए मासिय। मासिए अणेगमासिय।

अणेगमासिए मासिय। अणेगमासिए अणेगमासिय। उवड्ढीइ त्ति अपवृद्धया ह्रासेन।

ठवणा वीसिगपक्खिव २० उ० गा० (६४३२) –

वीसाए अद्धमासं २० उ० गा० (६४३३) –

आभ्या गाथाभ्या स्थापनारोपणाभ्या स्थानरचनाऽभिहिता, साचेय पढमा ठवणारोवण-पतीए ठवणा – २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५। इत्येव पचकवृद्धया स्थानानि तावन्नेयानि यावदन्त्य त्रिशत्सख्य स्थान, पचषष्ट्यधिक शतमिति १५५, आरोपणास्त्वत्र पचदशाद्या १५, २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५, ५० ५५। इत्येवमत्रापि पचकपचक०वृद्धया तावन्नेय यावत् त्रिशत्सख्य स्थान षष्ट्यधिक शतमिति १६०।

द्वितीयस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा पचदशाद्या १५, २०, २५, ३०, ३५। इत्येव पचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेय यावत् त्रिशत्सख्य स्थान पचसप्तत्यधिक शतमिति १७५। आरोपणास्त्वत्र पचाद्या ५, १० १५, २०, २५, ३०। इत्येव पचोत्तरया वृद्धया तावन्नेय यावत् त्रयस्त्रिशत्सख्य स्थान पचषष्ट्यधिक शतमिति १६५।

तृतीयस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा पचकाद्या ५, १०, १५ २०, २५, ३०, ३५। इत्येव पचकवृद्धया तावन्नेय यावत् पचत्रिंशत्सख्य स्थान पचसप्तत्यधिक शतमिति १७५, अत्रारोपणा अपि पचाद्या ५, १०, १५ इत्यादि पचसप्तत्यधिकशताना ता स्थापनास्थानानामधोदृश्या।

चतुर्थस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा एकाद्या १, २, ३, ४, ५, ६, । इत्येवमेकोत्तरवृद्धया तावन्नेय यावदेकोनाशीत्यधिकशतसख्य स्थानमेतदेव १७९, अत्रारोपणा अप्येकाद्या १, २, ३, ४, ५। एकोत्तरवृद्धया तावन्नेय यावदेकोनाशीत्यधिक शतमिति १७९। दोहि वि पक्खे चउ पच त्ति भाष्यपद द्वयोरपि स्थापनारोपणयो पचाना प्रक्षेपत उत्कृष्ट ठवणारोवणाठाण पावेयव्व। यदुपरि यस्य प्रभवति तदुत्कृष्ट, पच्छिमठवणारोवणाउ त्ति पश्चिमाश्चतस्रोऽपि स्थापनारोपणा उत्कृष्टा-अन्त्या इति यावत्, एव तीसियासु त्ति – ठवणासु इति द्रष्टव्य वीसिया से जहन्न त्ति – वीसिया ठवणा से त्ति – पक्खियारोपणयो जघन्या। एव बीए आरोवणा- ठाणे त्ति – विशतिरूपे अतिल्ल तीसइम ठाण 'फिट्टइ" त्ति – ठवणाया सत्कमन्त्य त्रिशत्तम स्थान पचषष्ट्यधिकशतरूप न तद्योग्य भवति, अशीत्यधिकशतस्याधिक्यात् ठवणाठाण उवड्ढिए त्ति – अपवृद्धया पाश्चात्यगत्या आरोपणस्थानवृद्धौ ठवणास्थानस्य ह्रास कार्य। आरोवणावुड्ढीए त्ति ठवणास्थानवृद्धौ आरोपणास्थानस्यापवृद्धि ह्रास। ठवणारोवणसवेहस्स त्ति – एगम्मि एगम्मि ठवणारोवणठाण कइ कइ आरोवणाठाणाणि भवति सवेहो, गणियकरण व त्ति – सकलितगणितानयनोपाय जम्हा पढमा ठवण त्ति – १६५, एतद्रूपा पढमारोवणाठाण १६०, एतद्रूप इक्क लब्भइ त्ति। कोर्थ ?

पचकपचकनिष्पन्न एकैकस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादनयो तदूर्ध्वं पचकपचकनि-ष्पन्नस्य स्थानस्याभावाच्चरिमयोरप्यनयो प्राथम्य विवक्ष्यते, जम्हा एगुत्तरवुड्ढीए त्ति – पचकपचकनिष्पन्न एकैकस्थानवृद्ध्या द्वितीयादीनि च तानि आरोपणास्थानानि पचदशकापेक्षया विशत्यादीनीति भाव। सव्वे त्ति – उत्तरत पढमठवणा १६५ उत्तर पि एक्को चेव त्ति – पचदश-

रूपस्तदूर्ध्वं उत्तरस्यापरस्याभावात् पचदशरूपमेव, यत आद्य स्थान पढमठवणाया स्थान-वृद्धिस्तथा—

गच्छुत्तरसंवग्गे उत्तरहीणम्मि (२० उ० गा० ६४४०) —

व्याख्या – गच्छो पढमठवणाठाणे तीस, बिईए गच्छो तित्तीस, तइए ३५, चउत्थे १७६, गच्छम्य उत्तरेण सवग – गुणन कार्य। अत्र चोत्तर एककरूपस्तेन हीन कार्यो राशि, तत आदि प्रक्षेप्य, स चात्रैककरूप एव, एतच्च यदागत तदन्त्यधन चतसृष्वपि पक्तिषु प्रथमे प्रथमे ठवणा-ठाणे एतावत्सख्यान्यारोपणस्थानानि भवति, तदप्यादियुत प्रस्तुते एककयुक्त कार्य तस्यार्ध कार्य, ततश्च य कश्चिद् गच्छो न्यस्तस्तस्यार्धेनार्धीकृतेन राशिना गुणन्तु त्ति गुणन कार्य। तस्मिश्च कृते ठवणारोवणठाणाण सवेहेण सर्वसख्यान भवति। तत्थ पढमे ठवणारोवणठाणे सवेहतो सर्वाग्र ४६५, द्वितीये ५६१, तृतीये ६३०, चतुर्थे १६११० ।

ठवणारोवणविज्जय ।। गाहा ।। २० —

स्थापनारोपणसख्यानेन वियुता रहिता विधेया, षण्मासदिनराशि तस्य पचभिर्भागो हार्य, भागे हृते ये लब्धा मासास्ते रूपयुता कार्या । स चैतावान् ठवणारोवणाण गच्छो होइ पचभिर्भागो हार्य इत्येवरूपश्च प्रकार आद्यासु तिसृषु ठवणारोवणासु विन्नेओ। चरिमे ठवणे एक्केण भागो हार्य । इत्ययमादेश उपदेश इत्यर्थ ।

अय भावार्थ – प्रथमतीर्थकरकाले उत्कृष्ट प्रायश्चित्तदान द्वादशमासा, मध्यमतीर्थ-कृत्काले चाष्टौ मासा, चरमस्य षण्मासा इति। अतस्तीर्थमाश्रित्य षण्मासा इत्युक्तम्, तत् तिसृ-णामपि पचकपचकनिष्पन्नस्थानवृद्धया निष्पन्नत्वादुक्त रूपयुतत्व यदुक्त तत् सर्वास्वपि स्थापना-रोपणास्वाद्यपदस्य पचकादिवृद्धयाऽनिष्पन्नत्वात् तस्य प्रक्षेपसूचनार्थम् ।

इयाणि गणियकरणमित्यादि वीसियाए ठवणाए अतधण ति सर्वाग्र आरोपणापदाना भवतीत्यर्थ ।

सह आइल्लेहि ति अन्त्यस्यारोपणापदस्य १६०, एतद्रूपस्यापेक्षया आदिमा पचदश-प्रभृतय पचपचाशदधिकशतान्ता सख्याविशेषा एकोनत्रिशत्सख्यास्तै सह त्रिशत्सर्वाग्रमारोपणा-पदाना विशे स्थापनापदे भवनीत्यर्थ । वीसियठवणादीना दिवसा इति विग्रह । एव सेसासु त्ति पचविमियाइसु ।

दिवसा पचहिं भइया (२० उ० गा० ६४४०) -

व्याख्या – यस्या स्थापनायामारोपणाया वा यावतो दिवसास्ते पचभिर्भजनीयास्ततो यल्लब्ध तद् द्विरूपहीन विधेय, स राशि मासप्रमाण ब्रूते, तस्मिन् ठवणापदे आरोपणापदे च अकसिणरूवणाए ओसग्ग ति झोषनिष्पन्ना अकसिणा, झोषरहिता तु कसिणारोवणा ।

जइ मासा तइएहि गुण करिज्ज २० —

व्याख्या – दिवसा पचहि भइया इत्यादि करणतो द्विरूपहीनत्वेनारोपणाया यावन्तो मासा लब्धास्तैर्भागलब्धान् गुणयेत्, तत स्थापनारोपणासु यावन्तो लब्धा मासास्तत्समासा गाहा तत्तियभाग करे त्ति तावत्प्रमाणैर्भागै त पूर्व राशि कुर्यात् । तिपचगुण ति – पचदशगुण कार्य आद्यो भागसेस ति – शेषाश्च तद्व्यतिरिक्ता द्वितीयाद्या भागा एकत्र सम्मील्य पचगुणा कार्यास्ततो

गुणाकारगुणिता राशीनेकत्र सम्मील्य स्थापनारोपणदिवससमन्विता विधेयास्तत षण्मासप्रमाणो राशि १८०, भवति। तेहि एक्कारस गुणिय त्ति – एक्कारसमासाण पन्नरसदिवसमासाओ गिज्झति त्ति काउ एए मासा त्ति दसहि अद्धमासेहि पचमासाए भवति पच झोसो कओ त्ति पचाना प्रक्षिप्ताना झोषउत्सारण कर्त्तव्यम् ।

जइमि भवे आरुवणा, तइभाग तस्स पन्नरसहि गुणये ।

सेस पचहि गुणिय, ठवणदिणजुया उ छम्मासा ॥ (२० उ० गा० ६४८५)

एसा गाहा पढमठवणाए पडिसमणाणस्स षण्मासप्रमाणदिनराशेरानयनस्याकारणलक्षणं रुवणाए जइ मासा तइ भाग त करे इत्यादि ।

का च सर्वसामान्येति पाश्चात्यगाथाया व्याख्यानमाह – आरोवणभागलद्धमास त्ति एतस्मात् १८०, राशे पचत्रिंशत उत्सारणे १४५ पचप्रक्षेपे १५०, आरोपणा १५, अनया भागे हृते लब्धा मासा १०, एते पचदशगुणा कार्या । पुव्वकरणेण तिदिवसा पच भइया इत्यादिकेन अट्ठारसण्ह मासाण सज्झाओ इत्यादि, एवकारो अत्र दृश्यस्ततो दुन्नि ठवणामासा व सोहीय त्ति योज्यम् ।

अन्नेहि सत्तगपु जेहि पचराइदिया गहिय त्ति सर्वे दिवसा ७० । तइयभागलद्ध त्ति तावत्प्रमाणैर्मासैर्भागलब्धान् गुणयेत् । अय प्राचीन वीसियाए ठवणाए पगारो भणिओ, पुण वीसियाए वि तहेव नेओ । अत एवाह–एव पुण वीसियाए इत्यादि द्वितीयतृतीयेत्यादि, द्वितीय तृतीये चतुर्थे च स्थापनारोपणस्थानेऽय विशेषो, यथा –

जत्थ उ दुरूवहीणा, न होज्ज भाग च पच हि न हुज्जा ।
एक्काओ मासाओ, ते दिवसा तत्थ नायव्वा ॥

व्याख्या – पचिकायामारोपणाया पचभिर्भागे हृते द्विरूपहीनत्व मासस्य न प्राप्यते खड वा भवति । चतुर्थे च ठवणारोवणठाणे एकद्विकादिके आरोपणास्थाने पचभिर्भागो न घटते, ततश्च तत्राप्येको मासो द्रष्टव्य । कुत इत्याह – यत एकस्मान्मासात् ते ठवणारोवणदिवसा निष्पन्नास्तत्र द्वितीयादिके ठवणारोवणठाणा ज्ञातव्या । अत एवाह–"जत्थ उ दुरूवहीण न होइ" इत्यादि, आगास वा शून्यमित्यर्थं । तथात्राम्नायात् झोष प्रक्षिप्यते यदा तदारोपणराशे झोषो हीन समो वा प्रक्षेतव्यो न त्वधिक ।अत्र सर्वत्र तथा तथा कर्तव्य स्थापनारोपणयोर्मीलन यथाऽशीत्यधिक शतमुत्पद्यते, सेस पन्नास मयमित्यादि आरोवणा एक्का उ त्ति मासद्वयोत्सारणे सत्येकमास एवावशिष्यते ।

क प्रत्यय ? इत्यादि एत्थ सव्वत्थे त्ति इत्य पचदसिगाठवणारोवणाए सर्वमासेषु ठवणामासे आरोवणामासे मासदशके पक्ष पक्षो ग्रहीतव्यो न न्यूनमधिक वा । सव्वत्य जइहि मासेहीत्यादि तत्र ५, १०, १५, एतास्तिस्रो मासनिष्पन्ना यतस्तिसृष्वपि मासो लभ्यते । पचभिर्भागे हृते सति विंशतिपचविंशत्यादिकाश्चारोपणा द्विमासत्रिमासनिष्पन्ना अतस्तासु द्विमासादयो लभ्यन्ते तत आरोपणामासैस्तावद्भिर्भागलब्ध गुणितव्यम् । छ मय तीसुत्तर त्ति ठवणारोवणाण सवेहणसखाणमेय सभोग त्ति, वेयणाउ त्ति स्वाभाविक मास एवेत्यर्थ ।

इयाणि चउत्थमित्यादि इक्कियाए आरोवणाए भागो त्ति एकोत्तरवृद्धचा वृद्धत्वात् आरोपणपदानामत्रैककेन भागो हार्य । तहेव काउ जावेत्यादि ठवणारोवणदिवसानुत्सार्य एकक झोपक्षेपेऽस्य १७७, राशेस्त्रिभिर्भागे हृते लब्ध ५९, ठवणारोवणमासद्विकप्रक्षेपे ६१ लब्धम् । एव

दुतिगाइठवणासु वि त्रिचतुर्थठवणारोवणपक्त्या द्वित्र्यादिस्थापनापदेष्वप्येकादय आरोपणा ज्ञेया। पुव्वकयविहिण त्ति एकैकारोपणस्थानवृद्धचा एकैकस्थापनापदस्य ह्रास तथा विहीए आरोवणाठाणे आढत्ते इद १७८, ठवणाठाण न भवइ। एव एक्के आरोवणाठाणे उवरि उवरि वड्ढीए एक्किक्क ठवणाठाण उवट्ठिए हुसिज्जा इत्येव पूर्वकृते विधि। इह च एगाइसु चउदसतेसु एक्को चेव मासो घेत्तव्वो। पन्नरसोवरि विकलत्ति पन्नरस १५ १८ १९ इत्येते विगता कला पचभरूपा यत्र ते विकला।

इक्काओ मासाओ निप्फन्न त्ति उद्धरितायामपि कलायामेक एव लभ्यते, न त्वधिक तद्वसेन किंचिल्लभत इति भाव। एवमेकविंशत्यादिषु चतुर्विंशत्यन्तेषु केवल त्ति केवला अनुद्धरितकलाराशय शुद्धा पचकपचनिष्पन्ना इति यावत्, ते पचकभागविशुद्धा द्विरूपहीनत्वकृता ये मासास्तै प्रमाण येषा दिवसाना ते तथा तेभ्य दिनेभ्य इति शेष मासभागा यत्रानेतुमिष्यन्ते यकाभिस्ना स्थापनारोपणा, इय च षोडशकाप्रभृत्येवाभवति, नार्वाक् इत्याह इक्कियेत्यादि, ते ठविय त्ति एकादश स्थाप्यन्ते सकलश्च छेद तेन सहिता ११, एसि त्ति मासस्स पचमो भागो स विन्नेओ। कोऽर्थ ? मासो पचगुणो सो पक्खित्तो त्ति।

इदाणि आरोवणाभागलद्ध ति आरोपणाया भागस्तेन यल्लब्ध एकादशमासाख्य वस्तु सेसा सेस ति यदुद्धरित प्रतिक्रियाजात आरोपणाभागश्च ते परावर्तिताश्च तै, कोऽर्थ ? छेदाशयोर्विपर्यास, कार्य षट्कोऽधपचकाश्चोपरि अत्र पचकेन गुण्यते द्वासततति, जात ३६०, षट्केन पचकगुणने ३०, त्रिशता भागे हृतेऽस्य ३६० राशेर्लब्धा १२, यद्वा छेदाशकयोर्विपर्यये कृते द्वासप्तत्यधोवर्तिन पंचकरय षटकोपरिवर्तिनश्चापवर्तन विधेय—अपनयन तयो कार्यमित्यर्थ। तत षट्केन द्वासप्तेतेर्भागे लब्धा १२। एव सत्तरसा.सु छेदाशरूपयो पचकयोरुभयोरपि उत्सारण कृत्वा शेषेण छेदेन इतराशे सचयमासभागाभिधायकस्य भागो हरणीय इति, यद्वा अशानशैर्गुणयित्वा छेदाश्च छेदैर्गुणयित्वा भागो हार्य इति, प्रक्रियाद्वयेऽपि न वस्तुक्षतिरिति ततो लब्धा १२, अत्र स्थानद्वये स्थाप्यन्त एको द्वादशक पचदशगुण १८०। आरोवणाए जइ विगला दिवस त्ति आरोपणाया पचभिर्भागे हृते शेष यदुद्धरितमित्यर्थ। तन द्वितीयो राशिर्गुणनीय, अत्रैको विकलो दिवस उद्धरित इत्यर्थ। एक्केण गुणिय तत्तिय चेव स्थापनादिवसेन युक्तश्च द्वादशकस्त्रयोदशकीभूत प्रक्षिप्त पचदशगुणकृतपूर्वराशौ स च राशि झोषरहित सन् अशीत्यधिक शत भवति। एगवीसिया वी इत्यादिठवणा १ आरोवणा २१, असीयसयाओ अवणीए १५१, एयस्स एक्कवीसाए भागो, भाग सुद्ध न देइ इति दस पक्खित्ता १६८, भागे लब्ध ८, ते ठविया सगलच्छेदसहिता, आरोवणाभागे हिए लद्ध ४ दुरूवहीणत्वे कृते मास २, मासस्स य एक्को पचभागो मासदुगे पचगुणे असपक्खेवे कए जाता ११ एक्कियाए वि ठवणाए हेट्ठा पचगो छेओ दिन्नो, तओ आरोवणाभागलब्ध ८, त आरोवणामासगुण कायव्व ति काउ असो असगुणो छेओ छेयगुणो एक्कारसहि अट्ठ गुणिया पचहि एक्को गुणिओ जाया अट्ठासी पचभागा ८८ ठवणारोवणमाससहिय त्ति कायव्वा, एत्थ एक्को ठवणाभागो फेडियव्वो, एव कृते सत्याह "नवरमित्यादि – ज सेस ति ९९ एतच्चारोपणभागाश्च ते परावर्तिताश्च इत्थ तैर्गुणित कार्य पर न गुण्यते प्रक्रियात् (?) किन्त्वपवर्तन पचकयोर्विधेयम्, ततो भागहियलद्धि त्ति – एकादशभिर्नवनवतिभागे हृते लब्ध ९, तिसु ठाणेसु स्थाप्य तत एकनवक पचदशगुण १३५, द्वितीयस्य विकला दिवसस्यात्रैकरूपत्वात् तेन गुणितो नवक एव भवति, तृतीयश्च पचगुण (पचगुण) सर्वे मिलिता १८९, ठवणादिणजुया दशकझोषरहिता इद १८०, भवति।

एगतीसेत्यादि ठवणा १, आरोवणा ३१, एतयोरेतस्मात् १८०, उस्सारणे जात १४८, सत्तज्झोषपक्खेवे १५५, आरोपणाए भागे हिते लब्वा ५, ते ठविया सगलछेयसहिता ५, आरोवणाए पचहि भागे दुरूवहीणे कए जाता ४, उद्धरितपचमासस्स एक्को पचभागो, तओ मासचउक्क पचगुणिय असजुय २१, एविकयठवणाए हेट्ठा पचको छेओ दिन्नो १, तओ आरोवणाभागलब्ध पचमासक आरोवणामासगुण कायव्व ति असो असगुणो छेओ छेअगुणो एकवीसाए पच ५, गुणिया पचहिं एक्को गुणिय जाय १०५, पचभागाण ते उ ठवणामाससहिय त्ति कायव्वाए छक्को ठवणापचभागो फेडिओ सेस आरोवणा पचभागा पक्खित्ता जाया सचयमासाण सत्तावीस सय पचभागाण १२७।

कत्तो कि गहिय ति एक्को ठवणाभागो फेडिओ सेस १२६, तत आरोपणाछेदाशयो २१/५ इत्थ परावृत्ति कृत्वा पचकयोरपवर्तने कृते एकविंशत्या भागे हृतेऽस्य १२६, राशलब्ध ६, एव कृते नवरमित्यादिकस्य चूर्णिवाक्यस्यावसर। एगतीसारोवणा पचहि भागे हृते द्विरूपहीन-कृतमासापेक्षया विगलदिन पचममाससत्क लब्ध वर्तते तनश्चारोपणागै परावर्तितैयल्लब्ध तत् तावत् स्थानस्थ स्थाप्यमान पचपट्का न्यस्यन्त इति।

तत्थिक्को रासी पन्नरसगुणो ९० बिइओ विगलदिवसगुणो ठवणदिवससुत्तो ७, तृतीयादय एकत्र मीलिता १८, ते पचगुणा ९०, नवतिद्वय अशीत्यधिकशत सत्तकझोषरहितश्च कार्य, अत ऊर्ध्वं सामान्यलक्षणमाह आरोवणेत्यादि, ठवणासचयभाग त्ति सचयमासभागान्तर्वतित्वात् स्थापनामासभागा अपि सचया भागा उच्यन्ते, स्थापनामासभागा अपनेतव्या इत्यर्थ। पक्खिवतेण-मित्यादिना च ठवणादिणजुया य छम्मासा इनि यत् क्रिया तदुक्त, तेइसगल त्ति – परिपूर्णादिन तया न तु खडरूपतयेति मास चेत्यादिवाक्ये नवमासा दुरूवसहिया पचगुणा ते भवे दिवसा इतीय प्रक्रिया उक्ता, उवउज्ज कायव्वाउ त्ति – भिन्निय ठवणारोवण इच्छतेण ति शेप।

रासि त्ति हेतुसख्या, ते खडा सववहारिए इत्यादि, तउ त्ति तेभ्य व्यावहारिकपरमाणु-मात्रकृतखडेभ्य आनत्यादि निश्चयपरमाणुमात्राणि खडान्येकैकस्मिन् वालग्रेऽनन्तानि भवन्त्यसयम स्थानानामपि तत्प्रमाणत्वात् तावतीष्यन्ते कैश्चिदिनि पराभ्युपगमाथ, सुहन्नमाण ति कस्मादपि मासात् पचदशपचकदशकादि-कियद्दिनग्रहणरूपतया शेषमुत्सार्यमाणमित्यर्थ। भिन्नेसु उवड्ढी त्ति अपवृद्धि, पाश्चात्यगत्या हानिर्द्रष्टव्या, नवमपूर्वकम्यापि स्तोकेनोन अन्यस्य तदपि बहुतरेणेत्यादिना तावद् यावद् नवमपूर्वस्य तृतीयमाचाराख्य वस्त्विति भद्रबाहुकृता निर्युक्तिगाथा एव सूत्र, तद्धरतीति विग्रह, निशीथकल्पव्यवहारयोर्ये पीठे ते एव गाथासूत्र, तद्धरन्तीति। अथवा निर्युक्ति-धरा सूत्रधरा पीठिकाधराश्चेति त्रितय व्याख्येय। किन्तिया सिद्ध तीत्यत्र सिद्धशब्दो निष्पन्नार्थ, ननु ण एसेवेत्यादि प्रथमस्थापनारोपणपक्तौ एक्का जहन्न त्ति उत्कृष्ट स्थापनास्थान ५४(१६५)नत्प्रतीत्य जघन्यारोपणाऽय १५ द्वितीयादीना तत्र भावात्। तीस उक्कोस त्ति विशतिरूपस्थापनास्थानमाद्य प्रतीत्य त्रिशत् सख्या अप्यारोपणा भवन्तीति, त्रिशत उत्कृष्टत्व अतिल्ला आरोपणा। उक्कोसिय त्ति जाव ठवणा उद्दिट्ठा छम्मासा ऊणया भवे ताए आरोवणा उक्कोसा तीसे ठवणाए नायव्वा। इत्यनेन लक्षणेन यस्या याऽन्त्या सा तस्य उत्कृष्टा भवति, एयासि मज्झेत्ति पच पच निष्पन्न त्रिशत् स्थानसख्याना मज्झे त्ति मध्ये वर्तिन्य, तत्र उत्कृष्टास्त्रिशत् शेषाश्चत्वारिशदिति सतति वीसिय-ठवणाए उ त्ति भाष्यगाथापद, अस्यार्थ –विशत्या उपलक्षित आदिभूतया यत् स्थापनारोपणस्थान तत्रैता भवन्तीत्यर्थ। अन्नोन्नवेहओ भवति त्ति अन्यस्यामन्यस्या वेध सम्बन्धोऽन्योऽन्यवेधस्तस्मात्

पचदशाद्यारोपणा एकैकस्मिन् स्थापने सयुज्यत इत्यर्थ । तथाहि—पचदशाखिशत् स्थापनारोपणा विशनौ सयुज्यन्ते, भूयोऽपि ना एवैकस्थानन्यूना पचविशत्या सह सयुज्यन्ते इत्येवमन्योऽन्यानुवेध सभाव्यते। होण त्ति विसमग्रहणमिति कान वि मासाम्रो कत्थ कय ति दिणाणि गिज्भति पच-पचदशेत्यादिकमित्यर्थ । समग्गहण णाम सव्वमासेसु विकत्थइ तुल्यान्येव दिनानि गृह्यन्ते इत्येव-रूप एव कम्म ति एनत् कर्मठवणाठाण पक्तित्रिक प्रतीत्य पचदशाद्यारोपणासु कर्तव्यम्।

चतुर्थेष्वपि विशेषमाह एगा इत्यादि यथा ठवणा १ आरो० १२, आसीयसयाओ तेरस ऊसारिऊण एककझोषप्रक्षेपे – १६८, बारसहि भागहृते लब्धमास १४, ततश्च आरोपणमासेन एकलक्षणेन गुणने एनदेव, ततो ठवणारोवणामासद्वयप्रक्षेपे १६, एतावन्त सचया मासा ।

कत्तो कि गहिय ? ति पट्ठवणा माससोहीए १४, तओ आरुवणा जइ मासा तइभाग त कारेइ त्ति क्रियते, अत्रारोपणमास १ इति चतुर्दश एवावतिष्ठन्ते, एव कृते प्रस्तुतचूर्णि वाक्यस्यावसर, एको पि सन्नय भागोनपचदशगुण क्रियते किन्त्वारोपणाराशिदिनैरिति ततो द्वादशभिर्गुणनेऽस्य १४ जात १६८, ठवणारोवणदिनत्रयोदशप्रक्षेपे एककझोषोत्सारणे च जात १८०, एवमन्या-स्वप्येकाद्यास्वारोपणासु चतुर्दशान्तासु निजनिजदिनैरेव गुणनमिति ।

जइमि भवे गाह त्ति, प्राचीनगाथोक्त एवार्थोऽनया सामान्येनाभिहित, जइत्थी आरोवण त्ति पढमठवणारोवणठाणपतीए इति शेष । अणेग भागत्थ त्ति द्वित्र्यादिभागस्था इत्यर्थ । क्वचिदेवमिति प्रथमस्थापनारोपणस्थानपक्तावित्यर्थ । अहवा – ठवणादिणसजुत्त त्ति अथवा-शब्द होउ त्ति पद ग तृ ज्ञ त सयोज्य भूयोऽपि त्याद्यन्त कृत्वा योज्यत इत्याचष्टे, यद्वा शतृऽन्त स्वन एव गम्यते, होइऊण ति क्रियापदमेव कृत्वा योज्यमिति कथयति। ठवणा-दिणसजुत्त त्ति पद च उभयपक्षेऽपि समान, तदय वाक्यार्थ येन गुणकारेणारोपणा गुणिता ठवणादिणयुता सती षण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया ऊनाधिका वा भवति स गुणकारस्तस्या-रोपणपदस्य न भवति । एएसि ति एतयो विशयठवणापचदशकारोवणपदयो एते द्वे आश्रित्येति । कोऽर्थ ? विशनि प्रतीत्य पचदशारोपणाया समकरणत्वमाश्रित्य दशकाख्यो गुणकारको न भवनि, त्रिशद्रूप च ठवणाठाण प्रतीत्य भवति, इह च दशकगुणकारभणन पाक्षिकारोपणा प्रतीत्य तस्या अप्येकद्वि॰ादिगुणकारपरिहारेण यदुक्त तद् दशस्थापना स्थानानि प्रतीत्य पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना प्राप्यते इति ज्ञापनार्थ । किमपि स्थापनास्थान प्रतीत्य दशगुणाकारपरिहारेण य सती पाक्षिकारोवणा कृत्स्नोच्यते, किमपि च नवगुणा तावद् यावदेक-गुणाऽपि सती कुत्रापि कृत्स्नाऽपि भवति, स्थापनास्थानानि – १६५ । १५० । १३५ । १२० । १०५ ९० । ७५ । ६० । ४४ । ३० । एतेषु एकद्वित्र्यादिगुणा सती यथाक्रम षण्मासप्रमाणदिनराशिपूर्वक त्वात् पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना भवति दशकगुणा नवगुणेत्यादि तावद् यावदेकगुणेति, यदा ओमत्थगपरिहाणीए त्ति पाश्चात्यगत्या योज्यते तदा पूर्वोक्तानि स्थापनास्थानान्यपि पाश्चात्यगत्या योज्यमानानि त्रिशतादीनि वेदितव्यानि तेन पाक्षिकारोपणा दश कृत्स्ना भवन्ति, नाधिक्या इत्यावेदित भवति, एव वीसिएत्यादि विशत्यारोपणा अष्टौ स्थापनास्थानानि प्रतीत्य कृत्स्ना भवति, अन्यानि वाऽऽश्रित्य विशतेर्गुणकारेण गुणिताया अपि षण्मासराश्यपेक्षया हीनाधिकत्व-सभवान्न कृत्स्नत्वसम्भव, तानि चाष्टौ यथा – १६० । १४० । १२० । १०० । ८० । ६० । ४० । २० । एतेषु विंशतिरेकद्व्यादिगुणासती यथाक्रम अशीत्यधिकशतपूरकत्वात् कृत्स्ना भवति, वियाले यथा उ त्ति विचारयितव्या ।

अहवेत्यादि अत्र प्रथमे गाथाव्याख्यानपक्षे प्राधान्यं गुणकारगुणितस्य स्थापनापदस्य गौणता गुणकारगुणिते यत् क्षमा तस्य स्थापनास्थापनपदस्य न्यसनात्, द्वितीयव्याख्याने तु प्राधान्यं स्थापनापदस्य, गुणकारगुणितस्य च गौणत्वं स्थापनापदं नियतं कृत्वारोपणापदविषये स गुणकारः कश्चित् मृग्यो येन गुणिताऽशीत्यधिकशतपूरिका भवतीति कृत्वा तदुपरि माइ त्ति तस्य द्विकस्योपरि त्र्यादयो ये गुणकारास्तैः तदुवरि माई इत्यादिवाक्येन तस्सुवरि जेण गुणा इत्यादि गाथोत्तरार्धं व्याख्यातं। जइ गुण त्ति येन गुणनं यस्याः सा यद्गुणा, प्राचीनो गाथोक्त एवार्थोऽनया भंग्यन्तरेणोक्तः। जेण गुणा आरोवणेत्यादि षण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया येन गुणकारेण गुणित्तारोपणास्थापनादिनसंयुक्ता विहिता सती यावता ऊना भवत्यधिका वा सा तां व्यवस्थापनां प्रतीत्य कृत्स्ना ज्ञातव्या झोषसद्भावात्।

कियान् पुनस्तत्र झोषः? इत्याह – तं चेव तत्थज्झोसणं ति यावदूनं यावदधिकं वा तावत् प्रमाण एतत् स्थापनास्थानं प्रतीत्य तस्यां झोषो भवति। यथा वीसियं ठवणं पडुच्च पक्खियारोवणाए पंचओ ज्झोसो लब्भइ तओ तेरससंचयामासा निष्पन्ना लब्भंति। हुंति सरिसाभिलावाओ त्ति भाष्यपदं। अस्यार्थः – एकद्वित्र्यादिसंख्याभिरारोपणाः पंचदशाद्या गुणिताः सत्यः स्थापनादिनयुक्ता यावत्योऽशीत्यधिकशतपूरिका भवंति तावत्यस्ताः सर्वाः सदृशाभिलापा भवंति – कृत्स्ना भवंतीत्यर्थः।

किं चेत्यादि जाए ठवणाए त्ति यया स्थापनारोपणयोः स्थापनया, अट्ठावीसारोवणमासत्ति व त्ति आरोपणायाः १५० पंचभिर्भागे हृते लब्धा मासा ३० मासद्विकोत्सारणे सत्यष्टाविंशतिरिति जइ पुण न सुज्झइत्यादि तत्थ जावइएण चेव विणा न सुज्झइ त्ति योज्यं। ठवणारोवणामासे नाऊणमित्युक्तं प्राग् यतोऽतः स्थापनारोपणदिनैर्मासोत्पादनकारणमाह – आगासं भवतीत्यादि तत्तिया चेव ते इत्ति यत्संख्याः पूर्वमासान् तावन्त एव दिवसास्ते इत्यर्थः। तेहिं ति आरोवणदिणेहिं इगाइसभावभेदभिन्नाविति ये स्वभावभिन्ना किल भवन्ति तेषु किल नानारूपमासप्रतिपत्तिः प्राप्नोतीत्यभिप्रायः। पंचदशकादिषु मासत्रयं यतः प्राप्यते ततो द्विरूपहीनत्वसंभवः।

कहं पुणेत्यादि काओ ठवणमासाओ, कियंतो दिणा गिज्झंति, कियंतो वाऽऽरोवणमासाओ संचयमासेहिंतो वा, कियंतो गिज्झंति त्ति वितर्कोर्थः। दिवसमाणो समि त्ति सदृश्यां स्थापनायां सदृश्यां चारोपणायामित्यर्थः। पुव्वकरणेणं ति ठवणारोवणदिवसमाणाओ विसोहइत्तु इत्यादिकेन जे पुणेत्यादि आरोपणया भागे हृतेऽस्य १६६ राशेर्ये लब्धा २४ इत्यर्थः। अन्नासु कत्थइ त्ति पूर्वासु तिसृषु स्थापनारोपणपंक्तिषु न पुव्वकरणं कर्तव्यमित्यर्थः। समदिवसग्गहणं न कर्तव्यमित्यर्थः। यथा वीसं ठ० २०, वीसं आरो० २०, इत्थ ठवणारोवणदिवसे इत्यादिना करणेन तावत् कृतं यावत् त्ररुणोए जइ मासा तइ भागमित्यादि करणेन षोडशसु द्विधाऽष्टाष्टतया व्यवस्थितेषु एकः पंचदशगुणः १२०, अन्यस्य पंचगुणः ४०, ठवणादिणक्षेपे भवंति १८० भवति। अत्र च पढमाणो अट्ठगाओ पक्खो पक्खो गहिओ, पन्नरसगुण त्ति काउं बिइयाओ अट्ठगाओ पंच पंच राइंदिया पंचगुणिय त्ति काउं ठवणामासेहिं दो दस दस राइंदिया इत्येवमत्र समेऽपि ठवणारोवणदिवसमाणेन समदिनग्रहणं दृष्टं, तह वि य पडिसेवणाओ णाऊणं हीणं वा अहियं व त्ति एकं वाक्यं यथाप्रतिसेवनमासाश्च ज्ञात्वा हीनत्वेनाधिकत्वेन वा ठवणारोवणासु तथा कथंचिद्दिनग्रहणं कर्तव्यं। यथा – षण्मासा पूर्यन्ते, ते य जे आरोवणाए त्ति अशीत्यधिकशतात् स्थापनारोपणद्दिनरहितात् ययाऽऽरोपणया तद्रहितं कृतं तयैव तस्य भागे इत्यर्थः। वीसियठवणं

वीसियारोवण च पडुच्च ठवणाए दो मासा आरोवणाए वि दो, तन्नैकस्मिन् ठवणामासे ये दश दिवसा गृह्यन्ते ते पचदशदिनप्रमाणस्थापनामासापेक्षया न्यूना । पचाना दशापेक्षया हीनत्वात्, दशकस्य च पचापेक्षयाधिकत्वाद्, एतदेवाह—कत्थ इ ठवणाए हीणमित्यादि, आरोवणामासेसु दुहा विभत्तेसु त्ति अष्टाष्टतया द्विधा व्यवस्थापितेषु पन्नरस गहिय त्ति पचदशकेनाष्टकस्य गुणनात् तत्र चारोपणामासो वर्तते । द्वितीयश्चाष्टक पचभिर्गु ण्यते, विशतिस्थापना प्रतीत्य पाक्षिकस्थापनारोपणाया सर्वत्र पक्ष पक्षो मासा गृह्यन्ते, तत सचयमासा दश, पचदशगुणा १५०, ठवणारोवणदिनयुता १८०, एवमित्यादि पचियठवणारोवणाए ठवणारोवणदिवसे माणाओ वि विसोहइत्तु इत्यादि करणेन षट्त्रिशत् सचया मासा लब्धास्तत स्थापनामासोऽपनीयते ३५, तत प्रतिमासात् पचदिनग्रहणात् पचकेन गुणिते पचत्रिशति स्थापनादिनयुताया १८० ।एक्कियाए वि ठवणारोवणाए असीइसचयमासेहितो ठवणामासे फेडिए मास १७९, इत्थ एक्केक्काओ मासाओ एक्केक्को दिणो गहिओ । ठवणादिणजुओ १८० । एव एगियठवणा पंचियाइ आरोवणासु वि तहा हि – ठवणा १, आरो० ५, असीयसयाओ अवणीए १७४, एक्को झोसो पचभिर्भागे हृते लब्धा ३५, ठवणारोवणामासयुता ३७, ठवणामासे फेडिए ३६, एक्केक्कमासाओ पच पच दिणा गहिय त्ति काउ पचभिर्गु णने एकझोषापनयने १८० । तहा ठवणा २, आरो० २ असीयसयाओ अवणीए १७६, द्विगुणैर्भागे हृते मासा लब्धा ८८, ठवणारोवणामाससहिया सचया मासा ९०, ठवणामासे फेडिए ८९, तओ मासेहितो पत्तेय दो दो दिणा गहिय त्ति काउ दुगेण गुणिए ठवणादिणजुए जात १८० ।

विसमा गाहाए पादत्रिकेण एको वाक्यार्थ । द्वितीयश्चतुर्थपादेनेति तानु(?)य मासविसमत्तणओ इत्यादि यथा ठव० ३०, आरोव० १५, असियसयाओ अवणीए १३५, पचदशभिर्भागे हृते लब्धा ९, ठवणाए मास ४, आरोवणा एक्को मिलिया सचया मासा १४, ठवणामासापनयने १०, एव कृते प्रस्तुतचूर्णिवाक्यस्यावसरो यथा – स्थापनामासानामत्र विषमदिर्नानिष्पन्नत्वेन मासवैषम्यम् ।

कोऽर्थो ? न पूर्णदिननिष्पन्ना मासा लभ्यन्ते किन्तु दिनाशयुक्ता इति । तथाहि – मासो दिनसप्तकेन दिनार्धेन चात्र निष्पन्न इति, स्थापनामासेषु वि दिनसप्तकस्यार्धस्य च ग्रहणमत्र शेषमासेभ्यश्च पक्षपक्षो गृह्यते इति पचदशगुणिता दश जात १५० । ठवणादिनप्रक्षेपे १८० । एवमन्यास्वपि विषमदशासु कसिणासु ठवणारोवणासु ठवणामासेसु विषमदिनग्रहण द्रष्टव्य, कृत्स्नास्वपि विषमदिवसासु यदि स्थापनामासेसु न पूर्णदिनग्रहण भवति किन्तु दिनाशयुक्तमपि भवति तथापि तत् तथा गृह्यमान तथा कार्यं यथा झोषविशुद्ध तद्गृहीत भवति, यथा ठव० २५, आरो० १५, असीयसयाओ अवणीए १४० झोषदशकक्षेपे कृते दशभिर्भागे हृते लब्धा १०, ठवणारोवणमासयुता सचयमासा १४, ठवणामासोत्सारणे ११, पचदशभिर्गु णने १६५, ठवणादिण युते झोषविशुद्धे १८०, अत्र स्थापनामासेष्वष्टौ अष्टौ दिनानि दिनाशयुक्तानि शेषमासेभ्यश्च पक्ष पक्षो ग्रहीत इति झोषविषमार्थेति झोषात् ३ विषमार्थस्य ठवणामासेषु विषम ग्रहणस्य रूपस्य विशेषप्रदर्शन झोषविशुद्धदिनग्रहणरूपमर्थोऽस्येति विग्रह ।

एवं खलु० गाहा ६४९३ ।

ठवणामासैरुत्सारिते शुद्धा ये झोषमासा आरोपणाया यावन्तो मासास्तत्समैर्भागै कृता आरोवणादिणेहि व त्ति चतुर्थीस्थापनारोपणपक्तिमाश्रित्य उद्धरितविकलदिनैरित्यर्थ । यथा–शतादिप्रक्षेपेण सहज पूर्यते विसेसिज्जतीत्यर्थ । इति आरोपणामासेभ्य स्थापनामासा विशेष्यन्ते, विशिष्टा क्रियन्ते, पृथक् क्रियन्ते इति यावत्, षण्मासदिनराशिपूरकत्वात्तेषामिति भाव ।

एगदुतिमाइयाहि इत्यादि अनेन व्याख्यानेनारोपणाना कृत्स्नाना मध्ये एकस्या आरोपणाया प्रतिनियत सख्यानमाह अहवा – जत्थ सखित्तिनरमित्यादि, ते चेव त्ति आलोचकमुखश्रुता यथा-अष्टादशमासा श्रुता तैरशीत्यधिकशताद् भागे हृते लब्धा १० सर्वविशुद्धिसद्भावात् कृत्स्न चैतत्, अत्रैकैकस्मान्मासाद्दिनदशक गृहीत, अष्टादशमासैर्दशकस्य गुणनेऽशीत्यधिकशतभवनात्, किंचि तत्थ विकल भवइ त्ति किंचिदुद्धरति, परिपूर्णतया यदि स राशिर्न शुद्धचतीत्यर्थ । तदा तद्भागलब्ध भागहारकस्य यका सख्या तत्प्रमाणै स्थानैस्तावत्यो वारा न्यसनीयमित्यर्थ । जावइय त्ति विकलयुक्तभागाच्छेषा ये अन्ये भागास्ते यावत् स्थानसख्याकास्तावन्मात्रो राशिर्भाग-हारगुणो त्ति भागहारेण यो लब्धो राशि स भागहार उक्तस्तेन गुण्यते य स वा गुणो गुणकारो यस्य स तथा यद्वा साध्याहार योज्यते, यथा विकलयुक्तभागाद् येऽन्ये भागास्ते यावन्त यावत्स्थानसख्याका स गुणकारो दृश्यस्तेन भागहारलब्धो राशिर्भागहारस्तस्य गुणन गुण्यते वाऽसौ तेनेति विग्रह । यथा – सचया मासा १३ श्रुता, अशीत्यधिकशताद् भागे हृते लब्धा १३, उद्धरिता ११, लब्ध त्रयोदशभि स्थानैर्न्यस्यते, एकश्च भागो विकलयुक्त कार्य, जात २४। अपरे च द्वादशत्रयोदशभागास्ततो द्वादशसख्यया त्रयोदशको गुणित जात १५६, चतुर्विंशते प्रक्षेपे जात १८०, तथा सचया मासा २५, श्रुता । असीयसयाओ भागे हिए लद्ध ७, उद्धरिता ५, सप्तक पचविंशतिस्थानेषु न्यस्यते एको विकलयुक्त १२, अपरे चतुर्विंशतिस्तत सप्तकेन चतुर्विंशतिगुणिता १६८, द्वादशप्रक्षेपे १८० । एवमन्यत्रापि अधुना यदा स्थापनारोपणप्रका-रेणाशीत्यधिकशतमुत्पद्यते तदा अकसिणारोपणाया सत्या झोषप्रक्षेपे कृते भागो हर्तव्य इत्युक्त प्राक् इति विकलप्रस्तावादेव यस्या यावत्प्रमाणो झोषो भवति तत्परिज्ञानार्थमाह – "नायव्व तहेव झोसो य" त्ति, तथा यस्य मासस्य यद्दिनप्रमाण गृह्यते इत्येतत् ज्ञात तथा झोषो अपि यस्या यावत्प्रमाणो झोष इत्येतदपि ज्ञातव्यमित्यर्थ ।

कथ ? इत्याह – आरोवणा इत्यादि चूर्णिवाक्य, यथा वीसियठवणा पणुवीसा-रोवणा तयोरशीत्यधिकशतादुत्सारणे कृते जात १३५, आरोपणया भागे हृते लब्धा ५, उद्धरिता १०, एव कृते चूर्णिवाक्यस्यावसर असुज्झमाणो त्ति सवथा निर्लोपमध्याल्लघुराशौ यच्छेदा-शविशेष । छेदोऽत्र पचविंशतिरूप उद्धरितदशकस्त्वशस्तयोर्विशेषो यस्मात् पतति स तस्मात् पात्यते इत्येव न्यायेन बृहद्राशिमध्याल्लघुराशेरुत्सारणे कृते उद्धरितरूप । अत्र हि दशकपच-विंशत्योर्मध्ये पचविंशतिर् बृहद्राशि, दशकस्तु लघु, तस्य लघोरुत्सारणे कृते पचविंशतेर्मध्यादुद्धरिता पचदश, एतावत्प्रमाणो झोषोऽत्रारोपणाया भवति, तथा ठ० २०, आरो० २५, अशीत्यधिक-शतादुत्सारणे १४५, अत्रारोपणया भागे हृते लब्धा ६, उद्धरिता दश पचदशभ्यो मध्याद्दशाना-मुत्सारणे उद्धरिता पचकपचकरूपो झोषोऽत्रेत्येवमन्यास्वपि छेदाशयोर्विशेषो झोसो विज्ञेय । ततो झोषमित्थं प्रथमत एव विज्ञाय ठवणारोवणदिवसरहितराशिमध्ये प्रक्षिप्यारोपणाया भागो हर्तव्यस्ततो यल्लभ्यते तदारोपणामासैर्गुण्यत इत्यादि प्रागदर्शितप्रकारस्तदूर्ध्व कार्य ।

कसिणा० २० गा० ६४१६ ।

तेसु भागत्थेसुत्ति यथा ठव० ३०, आरो० १५, असीयसयाओ अवणीए १३५, पचदश-भिर्भागे हृते मास ६, ठवणामास ४, आरो० १ ठवणारोवणमाससहिया सचया मासा १४, ठवणा-मासे फेडिए जाया १०, आरोपणाया एकत्वात् एकभागस्थो दशक पचदशकेन गुणित १५०, अत्र दशस्वपि मासेषु पक्खो पक्खो गहिओ, ठवणादिणजुया १८० ।

अह दुगाइभागत्थ त्ति यथा ठव० ३०, आरो० २५, असीयसयाओ अवणीए १२५, आरोवणया भागे हृते लब्धा ५, आरोवणामासा ३, तैर्गुणित पचक १५, ठवणामास ४, आरोवणमासयुत २२, ठवणामासोत्सारणे १८, आरोपणाया मासत्रयसद्भावात् त्रिभि स्थानै षट् स्थितान् मीलयित्वाऽष्टादश ध्रियन्तेऽत्रैकस्मिन् भागो पचदश दिवसा गृह्यन्ते, अपरयोश्च द्वयोभागयो पच पच इति प्रत्येक भागेषु समदिनग्रहण, ततो भागाना पचदशभि आरोपणामास ३ सहिया सचया मासा पचकेन गुणने ठवणादिनक्षेपे १८० ।

अह कसिणत्ति यथा ठव० २५, आरो० २०, असीयसयाओ अवणीए १३५, पच-दशझोषे कृते १५०, आरोपणया भागे हृते लब्धा ६, आरोपणास्त्रिभि षड् गुणिता १८०, ठवणामास २, आरोपणामास ३०, सहिया सचया मासा ३३ ठवणामासोत्सारणे आरोपणाया मासत्रयसद्भावात् त्रय सप्तका न्यसनीया, एक पचदशगुण, अपरौ च पचगुणाविति ७०, झोषस्य पचदशकस्योत्सारणे पचदशभिर्गुणिते सप्तके त्रयोदश त्रयोदश दिनानि किंचिन् न्यूनानि मासाद् गृह्यन्ते, इत्यायाता त्रयोदशसप्तका एकनवतिर्यत स्यात्, अत आह–ता नियमा तेसु मासेसु विसमग्गहणमिति ।

जइ इच्छसि नाऊण० गाहा [१ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

कस्मात् कियन्ति कियन्ति दिनानि गृह्यन्ते ? इति दिनग्रहणगाथेय, अस्यार्थ –यदीच्छसि ज्ञातु कि तद् ? इत्याह – कि गहिय मासेहि तो त्ति सम्बन्ध, कस्मान्मासाच्च कियद् गृहीत-मित्यर्थ । तदा ठवणारुवणा जहाहि त्ति असीयसयाओ ठवणारोवणदिणा उत्सारेहि, मासेहि ति सचयामासेभ्यश्च ठवणामासानारोपणामासाश्चोरय तदूर्ध्व तु मासेहि ति विभक्तिव्यत्ययात् मासै सचयमासै ठवणारोवणामासैश्च भाग हरेदिति योग ।

केभ्य ? इत्याह – तद्दिवस त्ति विभक्तिपरिणामात् तेभ्य स्थापनामासै स्थापनादिनेभ्य आरोपणामासैरारोपणादिनेभ्य सचयमासैश्च ठवणारोवणमासरहितै असीयसयाओ ठवणारोवण-दिणरहियाओ भाग हरेदित्यक्षरार्थ । यथा – ठव २०, आरो० १५, असीयसयाओ उत्सारणे १४५, एत्थ ठवणारोवणठाणे सचया मासा १३, ठवणारोवणमासतिगुत्सारणे स्थिता १०, तैर्भागो हार्य, अस्या राशेर्लब्धा दिन १४, उद्धरितदिनपचकस्य भागहारकस्य च दशका-ख्यस्यापवर्तना देशाना पचमे भागे १ न्यास $\frac{1}{2}$ इति दिनार्धं लब्ध इति सचया मासेषु मासा ३२, दिन १४, दिनार्ध च गृहीत, अर्धं च दशकेन गुण्यते जाता १०, अधस्तनद्विकेन भागे हृते लब्ध दिनपचकम् ।

क प्रत्यय ? चउदसगुणिया १४०, पचकप्रक्षेपे इत्येव सचयमासैर्भागे हृते सचयदि-नप्रमाण यावद्गृह्यते तावदनया गाथायोक्त अधुना ठवणारोवणमासेहितो यावन्तो दिवसा गृह्यन्ते स्वसमासकैर्भागे हृत तत्प्रदर्शनाय गाथामाह –

ठवणारुवणा दिवसा ण० गाहा [२ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

व्याख्या – ठवणारुवणादिवसाना भागो हार्य, कै ? सतमासै, स्वकीयस्वकीयमासैरित्यर्थ, तत्र च ठवणारोवणदिवसराशे पचभिर्भागे हृते यल्लब्ध तद्विरूपेन (?) तत्समासतया भवति, भागे च हृते यल्लब्ध तद्दिवसान् जानीहि, शेष चोद्धरित दिनभागानेव जानीहि, न पुन पूर्णदिनानि इति, यथा ठव० २५ आरो० १५, अत्र च सचया मासा १०, तैर्भागे हृतेऽस्य १४० राशेर्लब्धदिन १४

मासान् गृह्यते, दशकेन गुणिता जात १४०, आरोपणामासेनैकेन भागे हृते आरोपणदिनराशे र्लब्धदिन १५, ठवणमासै त्रिभिर्भागे हृतेऽस्य २५ राशेर्लब्धदिना, मासान् गृह्यन्ते इति २४, उद्धरितश्चैकक स चाष्टकेन गुणितो जाता ८, भागे अष्टकेन हृते लब्धदिन १, मिलित सर्व १८०, ठवणारोवणदिवसा ज्ञानसद्भावे इत्थमुक्त, यदा तु ठवणारोवणराशिर्न ज्ञायते तदा कस्मान्मासात् कियद्दिनानि गृह्यन्त इति कथनार्थमाह—

जइ नत्थि० गाहा [३ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

व्याख्या – ठवणारोवणराशिर्न ज्ञायते विस्मृतत्वादिकारणतो यदा तदा शिष्यमुखात् श्रुता ये सेविता मासास्तैरशीत्यधिक शत विभजेत्, भागे हृते यल्लब्ध तत ओगहिय ति अवग्रहीतमेकैक स्मान्मासाद्दिनमानमित्यथ । इहापि यदुद्धरित तद्दिनभागा अवबोद्धव्यास्ते च लब्धदिनराशिना गुणयित्वा तेनैव लब्धदिनराशिना भाग हृत्वा दिनानि कार्याणि।

क प्रत्यय ? सेवितमासैर्लब्धस्य गुणने तस्य च मध्ये उद्धरितस्य दिनीकृतस्य शत प्रक्षेपे अशीत्यधिकशत वि भवति, यथा श्रुतमासा १३, एभिरस्मात् १८०, राशेर्भागे हृते लब्ध उद्धरित ११, त्रयोदश-त्रयोदशभिर्गुणिता १६६, एकादश दिनप्रक्षेपे जात ॥१८०॥ इयाणिमित्यादि अतिक्रमादिषु यथाक्रम प्रायश्चित्त यथा – तप कालाभ्या लघु, द्वितीये तवगुरु, तृतीये कालगुरु, चतुर्थे ड्डा उभयगुरु, प्राभृतवदित्यादि, यद्वा प्राभृत अर्थाधिकारस्तथा प्राभृतच्छेदा अपि, तथा सकलबहुमसूत्रेषु ये पदविधय पच ताश्च प्रत्येक दर्शयित्वा तओ वि गय ति तत सम्यग् ज्ञानात् ॥छ॥

गुरुय एक्क ओहाडण ति लघुप्रायश्चित्ताना स्थगनकारित्वात् तस्य पिधानकल्प तत् बृहन्मध्ये लघूनि प्रतिविशती ति भाव । अहवा – साहूणमित्यादि गुरूण अणेगानि सिज्ज त्ति – आलोचकसाधुबहुत्वात् साहूण अणेगालोचणाउ त्ति एषोऽप्यगीतार्थोऽपि सन् जे सेसा मास त्ति उद्धरितरूप पडिसेवओ चेव हाय त्ति प्रतिसेवनादेवेत्यर्थ ।

असचए तेरस पया सचए एगारस पया तिण्णि दिणा छेओ दिज्जइ त्ति दिनत्रय यावदासेवने छेदोऽपि, मास ४, ६ रूपोदय आयतरपरतरपदाभ्या चतुर्भगके चतुर्थशून्य । अन्ये अन्यतरतर चतुर्थभ गक ब्रुवते, उभयोर्मध्येऽन्तर तु किंच न कर्तु तरति – शक्नोति अन्यतरतर जइ इच्छिय करेइ त्ति ईप्सित तप प्रभृतिभेयविकप्पोवलभाउ त्ति दोसु वि सामत्थे सतेऽन्यतरकारत्वात् पुरुषभेदविगप्प सलद्धित्तणउ त्ति गुरुयोग्य भक्ताद्यानय त्ति पच्छित्ते निक्खित्ते कज्जइ त्ति, प्रायश्चित्त तस्य स्थाप्य क्रियत इत्यर्थ , ज वहइ त्ति यत् करोति तत्थ थोव पणगाइ इत्यादि लघुमासमापन्नत्वात् तस्य, तथाहि लघुमासलक्षणापन्नस्वस्थानापेक्षया यत् तदधोवर्ति य पचकादिभिन्नमामान्त तत् स्तोक, तदुपरि च लघुद्विमासादिपारचिकान्त यत् तपस्तत् बहुलघुमासापेक्षया तस्य वृद्धत्वात् एव लघुद्विमासादिष्वपि हिट्ठिल्लठाणा थोव ति पणगादि लघुमासात थोव तिगमासियाइ पारचियत बहू एस अविसिट्ठो त्ति लघुपणगादिमासादिसकीर्णतया प्रात अविशिष्ट लघुपचकच्छेदो लघुमासादि छेद इति प्रतिनियतविशेषविशिष्ट प्राप्तो विशिष्टच्छेद । अहवेत्यादि यन्नामकैर्मासैस्तप आपन्न छेदोऽपि तन्नामक मासप्रमाण आपद्यते । तवतिय पि तपस्त्रिक, तदेव दर्शयति – मासब्भतरमित्यादिना मासान्तर्वर्तिलघुपचकादिभिन्नमास लघुमास इति ज्ञेयमित्येक तप , द्वित्रिमासचतुर्मासरूप तप सर्व चतुर्मासान्तर्वर्तित्वाच्चतुर्मासाभ्यन्तरमिति द्वितीय, पचमास-

षण्मासरूपं षण्मासाभ्यन्तर तृतीय, एव छेदोऽपि योज्यमानोऽत्र पक्षे इत्थ योज्य – यथा पचमासियाओ उवरि छअहुय एक्कवारा दिन्न, तओ उवरि जइ इक्क वार आवज्जइ पुणो वि बीय वार, एव ताव जाव वीसवारा, ताव भिन्नमासछेओ पणमाइ पचविशतिपर्यन्तरूपो दातव्य, भूयोऽपि वीसाओ परेण आवज्जमाणे जाव सत्तरसवारा ताव लघुमासछेओ कज्जइ, लघुमासप्रमाणपर्यायोऽपनीयत इत्यर्थ । सत्तरसलहुमासियाण उवरि पुणो एकैकवारासेवनेन आवन्ने जाव सत्तरस वारा ताव लघुद्विमासद्विक छेदो दातव्य, पुणो वि आवन्ने तदुवरि जाव सत्तरसवारा ताव चउलहुच्छेद कर्तव्य । तदुवरि आवन्ने जाव पचवारा ताव लहुपचमासिओ छेद कार्य । तदुवरि एक वार सेविए छअहु छेदो दिज्जइ, एव सति तप समाननामक मासाभ्यन्तरादिरूप छेदत्रिक प्रदर्शितरीत्याऽतिक्रान्त भवति, एतदेवाह – जम्हा एवमित्यादि सुगम, एतच्च प्राचीनग्रन्थानुसारेण अत्रैव निगमनवाक्ये भिन्नमासाइ छम्मासतेसु त्ति भणनाच्च सेवनावारासख्यानमनुक्तमपि दृश्यमिति सभाव्यते । तत्त्व तु बहुश्रुता विदन्ति । उद्घातानुद्घातयोरापत्तिस्थानानि, तेषा लक्षणम् ।

अहवा छहिं० गाहा ।

छण्ह मासाण आरोवियाण छद्दिवसा गया, ताहे अन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे ज तेण अद्धवूढ त सेमिज्जइ, ज पच्छा आवन्न छम्मासिय त वहइ, इत्थभूतेन पचमासा चउवीस च दिवसा सोसिज्जति त पि त्ति नूतन अह छसु इत्यादि अन्न छम्मासिय परिपूर्ण यदि वहतीत्यर्थ, आइमने वा नत्थि त्ति मासचउमासलक्षणा अधरोत्तराभ्या काष्टाभ्या पातितो जइ तम्मि त्ति अग्नौ, डहिउ ति दग्ध, सहिण त्ति श्लक्ष्णानि, अप्पाण न सथारेइ त्ति असमर्थ स्यात् उग्घायाणुग्घाए पट्ठविए त्ति वहत सत नत्थि एगखधाइ त्ति भाष्यपद एकस्कन्धेन कपोतिद्वयमुद्वोढु न शक्यते – यत्नेचेत्यर्थ (?) । अणवट्ठपारचियत्तवाणि वत्ति अनवस्थाप्य तप पारचिक वाऽतिक्रान्त समाप्त इति, ते यदा ये न विहिते भवत इत्यर्थ । छम्मासिओ छेओ छम्मासिओ वि जस्स परियाओ अओ तस्स वि मूल दिज्जइ ।

जइमन्ने० गाहा ।

पर आह – अह एव मन्ये यथा यदुतमास सेवित्ता मासप्रायश्चित्तेनैव शुद्धयति तथा मास सेवित्वैव द्विमासादि पारचिकान्तप्रायश्चित्तेनाप्यसौ शुद्धयतीति तदप्यह मन्ये । आचार्योऽप्याह – आम नि एतदभ्युपगम्यत एवास्माभिर्नात्र काचिन्नो बाधाक व्येति (?) । यदुक्त चूर्णौ तत् पराभिप्राय सुगम एवेत्यपेक्षया आचार्याभिप्राययोजना तु दर्शयति – एस मासिय पडुच्चेत्यादिना भाष्यगाथया हि मासोपेक्षयैव द्विमासादिपारचिक ताव सा न शुद्धिरुक्ता, एतेन सेसा वि गमा सूइय त्ति द्विमास सेवित्वा द्विमासादिना शुद्धयतीत्याद्यपि पाप द्विमासादिकदृश्यतम एव चूर्णिकृता दर्शित । थोवे वा बहु चेव त्ति अपराधे इति शेष आवत्ति सुत्ता नाम शिष्यगतप्रतिसेवनाद्वारेणापन्नप्रायश्चित्ताभिधायीनि, आलोचनाविधिसुत्ता नाम गुरुशिष्ययोर्मध्ये शिष्येण गुरोर्निवेदिते गुरुणा प्रायश्चित्तपर्यालोचनविषयाणि प्रायश्चित्तारोपण गुरुणा यत् क्रियते एतावत् त्वया कतव्यमित्येव दानरूपाण्यारोपणासूत्राणि, चउरो सूत्रेणैव भणिय त्ति यथा – प्रत्येकसगलसुत प्रत्येकबहुससुत्त सगलसजोगसुत्त बहुससजोगसुतमिति, तत्थ जे भिक्खू मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, जे दोमासिय, तेमासिय चाउम्मासिय पचमासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा इति प्रत्येक सूत्र प्रतिसेवनाया सत्या प्रायश्चित्तापत्ति स्यात् इत्यापत्तिसूत्राण्युच्यन्ते ।

जे भिक्खू बहुसो मासिय पडिसेवित्ता ग्रालोइज्जा, बहुसो दोमासिय,० बहुसो तेमासिय०, बहुसो चउम्मासिय,० बहुसो पचमासिय पडिसेवित्ता ग्रालोइज्जा इति प्रत्येकबहुससूत्र, जे मासिय च दोमासिय च तेमासिय च इत्यादि सगलसयोगसूत्र, जे बहुसो मासिय बहुसो दोमासिय तेमासिय-मित्यादि बहुसयोगसूत्र, एतत् सूत्रचतुष्टयमेनावता ग्रथेन सूत्रोपात्त व्याख्यात, इमे ग्रत्यग्रो त्ति ग्रर्थो व्याख्यान भाष्यादिक, तस्मात् षड् बोद्धव्यानि, त जहेत्यादि जे भिक्खू मासाइरेग-दोमासियमित्यादि बहुससातिरेगसूत्र ।

जे भिक्खू साइरेगमासिय च साइरेगदोमासिय च एव सातिरेगमासिय सातिरेगमा-साइणा सह धारेयव्वमित्यादि सातिरेगसजोगसूत्र ।

जे बहुसो सातिरेगदोमासिय बहुसो साइरेगदोमासिय चेत्यादि बहुससातिरेकसयोगसूत्र मासिय सातिरेकमासिय ।

जे भिक्खू दुमासिय सातिरेकदुमासिय चेत्यादि सकलस्य सातिरेकस्य च सजोगसूत्र ।

जे भिक्खू बहुसो मासिय बहुसो सातिरेकमासिय च ।

जे भिक्खू बहुसो दुमासिय बहुसो सातिरेगदुमासिय चेत्यादि बहुसस्स सातिरेगस्स य सजोगसुत्त, इत्येवमापत्तिसूत्राणि दस कथितानि, ग्रालोचनासूत्राण्यपि इत्थ वास्यानि, इम नवमे सुत्ते इति इदमिति सूत्रादर्शोपात्त पचम सूत्र, ग्रालोचना नवमसूत्र च, बहुभगसकुलमिति नवमसूत्रस्य चतुष्कसयोगेनान्त्य चतुष्कसजोगरूप पचम सूत्र षष्ठ च सूत्र बहुसरूप सूत्रोपात्तेना-लोचनादशमसूत्रेऽन्त्यचतुष्कसयोगरूप तदनेन त्रिशत्सूत्रेषु मध्येऽष्टादशसूत्रेष्वतिक्रातेष्वेकोनविंश-तितमे च सूत्रे षष्ठ सूत्रोपात्त सूत्रमिति कथित, न पुनर्नाममात्रेण कथनात् गतार्थममीषा दृश्य, किन्तु पचमषष्ठसूत्रयोराश्रयदशनार्थमेवमेतेषु गतेष्वित्युक्त, तथा चाग्रे ग्रालोचनासूत्राणि व्याख्या स्यति, तद्व्याख्याते च सर्वेषा मदृशत्वात् सर्वाण्यपि व्याख्यातान्येव भवति, तत्राप्याद्य ग्रापत्ति-सूत्रचतुष्कभङ्गेनालोचनासूत्रचतुष्क ग्रारोपणासूत्रचतुष्क सूत्रेणैवोक्त व्याख्यात च द्रष्टव्यम् साति-रेकसूत्रादीनि च षड् व्याख्यास्यति, तत्राप्यालोचनाविषयपचमषष्ठसप्तमाष्टमसूत्रव्याख्याने ग्रापत्ति-सूत्रारोपणासूत्रयोरप्येतानि भवति, ग्रालोचना नवमदशमसूत्रयोर्व्याख्याने ग्रापत्यारोपणासूत्र-योरपि द्विक व्याख्यान भवतीत्यारोपणासूत्रद्विके च नवमदशमे यथाक्रम सूत्रादर्शोपात्ते सूत्रे सप्तमाष्टमे भविष्यत इत्यालोचनासूत्राणि षड् व्याख्यास्यति चूर्णिकृत् । इह चालोचनासूत्र-योर्नवमदशमयोरेते पचषष्ठे सूत्रोपात्ते सूत्रे इति कुतो लभ्यते इति न वाच्य । भाष्ये हीत्थमेवाऽ नयो सूचितत्वात्, इयाणि छट्ठमित्यादि इद पचमषष्ठसख्यान सूत्रोपात्तमात्रापेक्षया द्रष्टव्यम्, न तु प्राग् दर्शितप्रत्येकसगलसूत्रमित्यादि, नामभेदेन सूत्रदशकापेक्षया नवमदशमसूत्रयोर्ये चतुष्कसयोगास्तेष्वन्त्यचतुष्कसयोगसूत्रे इमे, एएसि ग्रत्थो पूर्ववदिति, पचमषष्ठसूत्रोपात्तसूत्रयो रित्यर्थ । ग्रहवा – त मासादीत्यादि त मासाइपडिसेविय ग्रालोयणविहीए गुरवो नाउ ज मासाइ ग्रारोवणाए ग्रारोवयति त ति काइय भन्नइ इति योग , ग्रारोवणाए वि ग्रारोप्यमान यन्मासादि हीनाधिकतया यथारुहपरे यदारोप्यते तदित्यर्थ । भावग्रो वा निष्पन्न त्ति रागद्वेषादिना तग्रो मासिय गुरुपणग वा मु चतेण लघुदशक चेत्यादि ताव भाणियव्व जाव गुरु भिण्णमासो त्ति पणगाइयाण सव्वे दुगसजोग त्ति ५॥५॥१०॥१०॥१५॥१५॥२०॥२०॥२५॥२५॥

जाइ कुल० गाहा ।। सा चेयम् –

जाइकुलविणयनाणे दंसणचरणे य खंतिदमजुत्ते ।
मायारहिए पच्छा-णुतावि इय दसगुणोगाही ।।

अमुगसुएण त्ति अमुकश्रुतेन कल्पनिशीथादिकेन दसणेण ति सम्यक्त्वेन मायारहिए इत्यस्य व्याख्यामाह – अपलिउचमाणो इत्यादि अपच्छाणतावीत्यस्यार्थमाह आलोएत्ता नो पच्छेत्यादि केनापि किचिदकथनीयमालोचित, तत पश्चाद् यो न खेद याति स इत्यर्थ । सुहुमे आलोएइ नो बायरे एव कुर्वन शिष्यस्य गुरोरेवम्भूत प्रत्ययो जायते, तमेवदर्शयितुमाह – जो य इत्यादिना, इयरठविय व त्ति अणतरठविय इयाणि एएसि चेव दोण्ह वीत्यादि आलोचनासूत्र-दशकसख्यानमध्ये ये पचमषष्ठसूत्रे तयोरित्यर्थ । जहा पढमबिनियसुत्तेसु त्ति यथाद्यसूत्रचतुष्टयमध्ये आद्यसूत्रपदसयोगैस्तृतीय सकलसयोगसूत्र निष्पद्यते यथा च द्वितीयबहुससूत्रपदसयोगैश्चतुर्थ बहुसम-योगसूत्र निष्पद्यते तथालोचनाविषयसातिरेकपचमसूत्रपदसयोगै सप्तम सातिरेकसयोगसूत्राणा सख्यानमाह – नवसया एगसट्ठ त्ति उद्घातिमानुद्घातिमाभ्या मिश्रसयोगसूत्रसख्यानमिद, इम चेत्थ यथा – उग्घाइयसजोगठाणा ५।।१०।।१०।।५।।१ गुण्या, एते पच वि अणुग्घाइयसजोगेण गुणिया, जहासख इमे जाया २५।।५०।।५०।।२५।।५।। एव उग्घाइयाण एगदुतिचउपचसयोगो अणुग्घाइय-दुगसजोगेहि दसहि गुणिए जहासख इमे जाया – ५०।।१००।।१००।।५०।।१०।। उग्घाइयाण सव्व-सजोगा अणुग्घाइयदुगसजोगेहि मिलिया ३१०, पुणो उग्घाइयाण सव्वसजोगा अणुग्घाइयतिय-सजोगेहि गुणिया जहासख जाया ५०।।१००।।१००।।५०।।१०।। एए सव्व ३१० पुणो उग्घाइयसव्व-सजोगा अणुग्घाइयचउक्कसजोगेहि पचहि गुणिया जहासख जाया ।।२५।।५०।।५०।।२५।।५।। एए सव्वे मिलिया १५५, पुणो उग्घाइयसव्वसजोगा अणुग्घाइयपचसजोगेहि एक्केण गुणिया जहासख जाया ५।।१०।।१०।।५।।१।। एए सव्वे एक्कत्तीस ३१, एव उग्घाइयाणुग्घाइएहि सव्वसजोग-सुत्ताण सखेवो ९६१ ।, सातिरेकाणि सति सगलसूत्राणि तेषा, तानि च त्रिनवतिसख्यानि, सा च एगतीसत्तिभागेण भवइ, तत्थ एगा एगतीसा य वासातिरेगसगलसुत्ता ।।५।। उग्घातिमादिविशेष-विकलसामान्यसयोगसूत्राणि २६ । सर्वाणि ३१ । द्वितीया च उद्घातिमसातिरेगसूत्र ५ । अनुद्घा-तिमसातिरेकसयोगसूत्र २६ । षड्विंशतिश्च द्विकसयोगा १० । चतुष्कयो ५ । पचक्यो १ । एतन्मीलने निष्पद्यते, इय च त्रिनवति पूवराशे सयोगसूत्ररूपस्येत्यस्य ९६१ । मीलिता सजायते । १०५४ । बहुससुत्ते वि एव तओ दुगुणिए जात २१०८, पुणो मूलुत्तरदुगेण जाय ४२१६ । दप्पकप्प-द्विकेन गुणने जात ८४३२ । एव एय सखाण पचमछट्ठसत्तमअट्ठमआलोचनाविषयसुत्तचउक्कस्स आइमसुत्तचउक्के वि प्रत्येकसूत्रादिरूपे एतदेव सख्यान, तओ पुणो वि दुगुणिए जात १६८६४ । एवमालोचना सूत्राष्टके एतावत् सूत्रसख्यान जात, अत एवाह – अट्ठसु वि सुत्तेसु इत्यादि आलो-चनासूत्राणा प्रस्तुतत्वात् कथमुक्त एत्तिया आवत्तिसुत्त त्ति, सत्य सद्दशत्वाद् येन केनापि व्यपदेशो न दोषायेति सभाव्यते, आपत्तिसूत्राष्टके आरोपणासूत्राष्टके च एतावत्येव सख्या इति त्रिगुणिते पूर्वराशौ त्रिशत्सूत्रमध्ये चतुर्विंशतिसूत्राणामेतत् सूत्रसख्यान जायते ५५०५९२० । एगाइय त्ति एकादि दशान्ता दशपदा कर्तव्या , तान्येव दशपदान्याह –

त जहेत्यादि एगादेगुत्तरिए इत्यादि, एकाद्या एकोत्तरवृद्ध्या पदसख्याप्रमाणेन स्थाप नीया , कोऽर्थ ? यावति पदान्यभिलषितानि तावत्प्रमाणा राशय एकोत्तरवृद्ध्या व्यवस्थाप्या ,

गुणकार त्ति दशकादिभिरेककान्तैरधोवर्तिभि भागहारे लब्धस्य उपरितनैरेककादिभिर्दशकान्तैर्गुण-नात् गुणकारा एते उच्यते, तथा ह्यु परितनपक्तौ व्यवस्थितेन दशकेनापरस्य रूपस्य सकलस्य गुणने जाता १० । एककेन भागे हृते भागलब्धा १० । एकक सयोगा इत्यर्थ । तत्र दशकेन रूपस्य गुणनाद्दशको गुणकारो जात, एककश्चाधोवर्तिभागहारक, तथाय दशको नवकेन गुणनाद् गुण्यनवकश्च गुणकारनवकाधोवर्ती द्विको भागहारक, इत्येवमन्यत्रापि गुण्यगुणकारभागहार कल्पना कार्या, तथापि शिष्यहितार्थ सप्रपच दश्यते तत्र दशकस्य गुण्य रूप जात ।१०। भाग एकेन १ लब्ध १०, नवकस्य गुण्य १० । जाताऽस्य ९०, भागो द्वाभ्या २ लब्ध ४५। अष्टकगुण्य ४५, जात ३६०, भाग ३ लब्ध १२०, सप्तकस्य गुण्य १२० गुणिते जात ८४०, भाग ४ लब्ध २१०, पट्कस्य गुण्य २१०, गुणिते जात १२६०, भाग ५ लब्ध २५२, पचकस्य गुण्य २५२ गुणिते १२६०, भाग ६ लब्ध २१०, चतुष्कस्य गुण्य २१०, गुणिते ८४०, भाग ७ लब्ध १२०, त्रिकस्य गुण्य १२० गुणिते ३६०, भाग ८ लब्ध ४५, द्विकस्य गुण्य ४५, गुणिते ९० भाग ९ लब्ध १०, एककस्य गुण्य १० दशैव च, ते दशाना दशभिर्भागे हृते लब्ध एकक दशयोग एक एव, अत्र चोभयमुखराशिद्वयापेक्षया पक्तिरपरा आगतफलानामुत्तिष्ठते यथा १।१०।४५।१२०।२५२।२१०।१२०।४५।१०। तथा च पडिराशिये त्ति द्वितीयस्थाने धृत्वा गुणय त्ति यदागतफल तस्य पाश्चात्याकेन तथा च नवकाद्दशक पाश्चात्यो भवति, तस्माच्च सप्तक इत्यादि येन गुणितस्तदधस्तनेन भागे हृते यद् लब्ध तत् फल, आगत-फलाना मीलने २०३३, प्रतिसेवनाशब्देन हि नवममापत्तिसूत्र सूच्यते, आदिग्रहणालोचनारोपणा-सूत्रस्यापि नवमस्य भेदा ज्ञातव्या, एए चेवोग्घायेत्यादि तत्रोद्घातिमानुद्घातिमाभ्या मिश्रयोगे यावन्त उद्घातिमाना दशभिरेककयोगै पचचत्वारिशदादिद्विकादियोगैश्चानुद्घातिमाना दशापि दश पचचत्वारिंशदाद्यराशयो गुणिता यत्सख्या प्रपद्यन्ते तदुत्तरत्र चूर्णिकृत् दशयिष्यति, अत्रताव-दन्यदपि करण पाश्चात्यभगकानयनविषय व्याख्यायते –

उभयमुहं रासिदुगं, हेट्ठिल्लाणतरेण भय पढमं ।
लद्ध हरामि विभत्ते तस्सुवरि गुणतु संयोगा ।।

आद्यपाद प्रतीत अधस्तनादन्त्याद् योऽनतरस्तेन प्रथममधस्तनादुपरिवर्तिन भज, नाम तस्य हार, अधोराशिना अनतरेण विभक्ते सति उपरितनराशौ यल्लब्ध तेन लब्धेन तस्य भागहारकानन्तरराशेरुपरि योऽध्वस्तद्गुणन कार्य, गुणिकोऽनन्तरस्तेन भागे हृते प्रथमस्य पचचत्वारिशद्रूपस्य लब्धा १५, तेनाष्टकस्य त्रिकस्योपरिवर्तिनो गुणने जात १२०, एवमन्यत्रापि द्रष्टव्य, द्वितीय च करण यथा –

उभयमुहं रासिदुगं, उवरिल्लं आइलेण गुणिऊण ।
हेट्ठिल्लभायलद्धे उवरि ठिए हुंति संजोगा ।।

व्याख्या – आद्यपाद प्रतीत, उपरितनमादिमेन गुणयित्वा हिट्ठिल्ल त्ति आदिमात् गुणकाररूपादधोवर्तिकोऽधस्तनस्तेन भागे हृते यल्लब्ध तस्मिन् भागहारकादुपरिस्थिते सयोगमान भवति $\frac{९}{३} \frac{१०}{२} \frac{}{१}$, अत्र ह्यकाना वामगत्या नयनाऽशकस्यादावपरागो नास्तीत्यादित्व, तदपेक्षया नवकस्य कल्पते, तदपेक्षया चाष्टकस्यादित्वमिति एव तावद् यावदेककस्यादिमत्व द्विकापेक्षयति, तत्रह्यु परितनो दशकस्य गुण्यते, आदिमे नवके जात ९०, नवकादधोवर्ती द्विकस्तेन भागे हृते नवत्या लब्ध ४५, नवकादुत्सार्य द्विकाद्युपरिन्यस्ता सा एतावन्ते द्विकयोगा उपरितना पचचत्वारिशत्तमा-

दिमेनाष्टकेन गुणयेत् जात ३६०, अष्टकादधोवर्ती त्रिकस्तेन भागे हृते लब्ध १२०, अष्टकमुत्सार्य न्यस्यते १२०, इत्येवमन्यत्राप्युपरित्वादिमत्वाधस्तनादिक स्वबुद्ध्या परिभाव्य सर्व करणीय, अत्र च करणे द्विकादिसयोगपरिसख्यानमेवागच्छति, एककसख्यान स्वतो दृश्य, सामर्थ्यलब्धत्वात्तस्य वोच्छेददेशकस्य शेष परमेक सकल न्यस्यते, तदपेक्षया दशक आदिमस्तेन तद्गुण्यते जाता १०, दशकाध एककस्तेन भागे हृते लब्ध १०, ते उपरिभागहारका न्यस्यन्ते, एवमन्यत्राप्येकोत्तर वृद्ध्या वृध्यो पदसख्याया अग्रेऽपरमेक रूप सर्वत्र न्यसनीय तस्य च पूर्वप्रदर्शितप्रक्रियाविधाने कृते एगसयोगे सख्यान लभ्यते। अहवा – तीसपयाणेणेत्यादि नवमालोचनासूत्रविषयाणामित्यर्थ, न केवल दशपदेष्वेतेष्वपि करणमिति। उभयमुह रासिदुगमित्यादिक पूर्ववदित्यर्थ, स्थापना कार्या एककादारभ्य एकोत्तरवृद्ध्या अकास्तावद् न्यसनीया यावत् त्रिशत्सख्य – स्थान, नवर त्रिशतोऽग्रे रूप न्यसनीय, त्रिशतोऽधस्तु एककादारभ्य तावद् नेय अका यावदुपरितनैककादारभ्य त्रिशक नत उवरिल्ल आइमेण गुणिऊण इत्यादिक्रमेण कृते एककयोगा ३०, द्विकयोगा ४३५ इत्याद्यक स्थानानि भवनि, सर्वाग्र त्रिशत्पदाना सूत्रसख्यायाम् १०७३७४१८२३। नवर – जत्थेत्यादि एककादिसयोगेन निष्पन्नान् आगनफलरूपान् त्रिशत् पचत्रिशदधिकचतु शताद्यान् भागहारकान् विन्यस्यानुद्घातिमैककद्विकादिसयोगफल त्रिशदादिक तैर्गुणयेत्, त्रिशतो त्रिशत्स्थानेष्वेकैकस्थानगत फल गुणयेत्, एव त्रिकयोगादिफलेन च गुणयेत् तावद् यावत् त्रिशद्योगफलेन त्रिशत्स्थानगत फलमिति। इम निदरिसण ति निदर्शनमेतत्, सामान्ये उ (?) मिश्रसयोगफलगुणनताया न तु त्रिशत्पदागतमिश्रसयोगफलगुणनविषये तत्रोद्घातिमानामेककयोगा दशपचचत्वारिशदादयश्च द्व्यादिसयोगविषया, एते गुणकारा, एतेषु च गुणकारेण दशाप्यनुद्घातिमसयोगफलान्येककवृद्धयादिसयोगविषयाणि गुण्यन्ते, तत्र दशकेन दशादी यथाक्रमगुणने जात १००। ४५०। १२००। २१००। २५२०। २१०० १२००। ४५०। १००। १०। एते उग्घाइय चैककसयोगैर्दशभिर्दश पणयाला इत्यादिकस्य गुणने सपन्ना, एकत्र मीलने जात १०३३०। अधुना उग्घातिमद्विकसयोगै पचचत्वारिशत्सङ्ख्यैरनुद्घातिमानामेकवृद्धयादिसयोगफलानि गुण्यन्ते। जात ४५०। २०। २५। ५४००। ६४५०। ११३४०।

सेसा उवरिमुहुत्तति शेषाणि षट्कसप्तमाष्टमनवमसयोगफलानि पाश्चात्यगत्या यथाक्रम पचचत्वारिंशता गुणितानि चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमसयोगगुणितफलसख्यानि भवति, दशकसयोगे चैकस्मन् पचचत्वारिशदेव एककेन गुणने तदेवेति न्यायात् तदत्र पचकदशकसयोगफल ११३८५, एतद्रूप पृथगुत्सार्य प्रथमसयोगादिफल चतुष्क सम्मील्यते जात १७३२५, अस्य द्विगुणने ३४६५०। पचकाद्युत्सारितफलमीलने जात ४६०३५। एवमुद्घातिमत्रिकयोगै १२० एनावद्भिर्गुणने दशाना जात १२००। ५४००। १४४००। २५००। एकत्र मीलने ४६२००। द्विगुणने ९२४००। पचकसयोगे ३०२४०। दशकयोगश्च १२०। एतद्रूपमुभयो पूर्वराशौ मीलने १२२७६०। उद्घातिमचतुष्कयोगफलेन २१० गुणने दशादीना जात २१००। ६४५०। २५२००। ४४१००। चतुर्णामेकत्र मीलने जात ८०८५०। द्विराहते १६१७००। पचकयोगफल ५२९२०। दशकयोगफल च २१०। एतद्रूपमुभयो पूर्वराशौ प्रक्षेपे आगत २१८८३०। अनुद्घातिमपचकसयोगफलान्यपि दशादीन्युद्घातिमपचकसयोगफलेन २५२। एतावद्रूपेण गुणनीयानि ततो जात २५२०। ११३४०। ५२९२०। ६३५०४। अय पचकयोगो विभिन्न उत्सारणीय। षष्ठसप्तमाष्टमनवमफलानि च यथाक्रम पचकसयोगगुणितानि चतुर्थतृतीयद्वितोयप्रथमसयोगगुणितफलसख्या प्रपद्यन्ते, तत चतुष्कमीलने ९७८२०। द्विराहते जात १९४०४०। एतस्य मध्ये दशकयोगफल २५२। पचयोगफल च ६३५०४। एतद्रूपमिलित तन पचकयोगसर्वाग्रमिद २५७७९६। अमु विभिन्नमुत्सार्य एकद्विकत्रिकचतु-

ष्कसयोगमर्वाग्रफलानि १०२३० । ४६०३५ । १२२७६० । २१४८३० । अमीषा मीलने जात ३६३८७५ । षष्ठसप्तमाष्टमनवमसयोगफल सर्वाग्रमग्येनावदेवातो द्विगुणितं जात ७८७७१० । पचकमयोगफलोत्सारितराशे प्रक्षेपे जात १०४५५०६ । एतच्च सख्यानमेकफादीना नवान्ताना संयोगाना दशकसयोगफलानि च दशादीन्येककगुणानि तावन्त्येव मिलितानि च तानि १०२३ । अस्य च पूर्वराशौ प्रक्षेपे जात १०४६५२६ । एतदेवाह – मीसगसुत्तममास इत्यादि, एव कएसु त्ति दशसु पदेषु भगकरद्वारेण विस्तारितेषु यदि सा चेवेत्यादि आरोपणासूत्रदशकस्य यद्यप्यत्र सामस्त्येन पूर्वसूत्रातिदेशो दत्तस्तथाप्युच्चारण अर्थविशेषभगकसख्यानादिक च प्रतीत्य स द्रष्टव्यो न पुन सर्वथा, तथा चारोपणासूत्रविषयेऽन्यदपि बहु वक्तव्यमस्ति । तथाहि प्रायश्चित्ते आरोपिते गुरुणा तदुद्वहन् आलापसभोगादिना परिह्रियते शेषसाधुभिरिति पारिहारिकत्व, तथा चारोपणा पचविधा भवतीति, तस्या स्वरूप तथा मासाइय पच्छित्त वहतो ज अन्न अनरा आवज्जइ मासादिक तत्थ ज जम्मि दिवसग्गहणप्पमाण कज्जइ इत्यादिकमर्थ , जातमारोपणासूत्रविषय सर्वमित ऊर्ध्वं सूत्रेण भाष्येण चूर्ण्या च भणिष्यते । इयाणि सुत्तत्थाण ति पुच्छा इति शेष ।

दाणे दवाणे० गाहा १ ॥ (पृ० ३७६ चतुर्थ भाग)

उपाहियति सस्तारकादेरुपढौकनेन अन्येनास्यादानमनुपहितविधि जत्तिय चेव भणइ करेइ व त्ति सप्तसु भगकेषु वक्तव्यवस्थापितपदेषु च विधिर्भवति ततश्चाष्टमभगे सर्वज्ञत्वादनुशास्त्यादीना त्रयाणा करणमेव सप्तसु च मध्ये यस्मिन् यावन्ति वक्राणि तावन्त सर्वे निषेधा शेषाश्च तद्व्यतिरिक्ता ये ऋजवस्तेषु यदाचार्य उपग्रहादिक कुरुते तृतीयादिषूपलभादिक यद्भणतितत् सर्व मुत्कलमिति सूचित दृश्य गमनिकामात्रमिदमन्यथा वाऽभ्यूह्य आवकप्पे इत्यादि अपवादपदे छट्टिणज्भोसो कज्जइ इति भाव पूर्वश्च अन्यापेक्षया आद्यश्च अहवेत्यादि अत्र पक्षे पूर्वस्मिन्नाद्ये सति अनु-पश्चाद्भावी अनुपूर्वद्विक तत पूर्व आद्यत्रिकापेक्षया अनुपूर्वो द्विको यस्या परिपाटचा ता सार्वानुपूर्वीति विग्रह , यद्वा पूर्वस्मिन् अनु – पूर्व तत स एवेति पूर्वक एव स मास कार्य , यथा पूर्वस्याद्यस्य त्रिकापेक्षया द्विकस्यानुपूर्वस्त्रिको यस्यामिति विग्रह , मत्वर्थीयो वा इन्, नवर तदाक्रम इति दृश्य पुव्वपच्छुत्थरणविकप्पेण चउभगो कायव्वो त्ति ।

पुव्व पडिसेविय पुव्व आलोइय । पुव्व पडिसेविय पच्छा आलोइय ।

पच्छा पडिसेविय पुव्व आलोइय । पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय ।

बितियततियभगा मायाविणो नरस्स हुति मायासद्भाव च स्वत एवाग्रे भावयिष्यति किमर्थ पुनरसौ प्रथमत एवानुज्ञा याचते यावता यत्रासौ यास्यति स्थास्यति वा तत्रैवासावनुज्ञा लप्स्यते इत्याह – एव तत्थ गीयत्था सभवाउ त्ति तृतीयभगशून्य इति तथा ह्याचार्यसद्भावे सति यथा प्रथमालोचते तथा विकृत्यादिक गृहीत्वा गत सन् पश्चादपि तदन्तिके आलोचिते मायारहितश्च पश्चात् प्रतिसेवते इति शून्यता, पश्चादप्यालोचनसम्भवात् पूर्वमेवालोचते इत्यवधारणपरस्य पदस्याघटनात्, अप्पलिउचि वा भावे त्ति मायारहितत्वसद्भावे इत्यर्थ , द्वितीयतृतीयौ च मायासद्भावे स्त , भावशब्दात् पाश्चात्यान्त्यवर्णस्य दीर्घता वाक्यद्वयेऽपि प्राकृतत्वात् ।

अपलिउचिए अपलिउचिय, अपलिउचिए पलिउचिय, ।

पलिउचिए अपलिउचिय, पलिउचिय पलिउचिय चतुर्थभग ।

अपलिउंच० गाहा ॥६६२४॥

भाष्ये यद्यप्यपलिउचणमिति नोक्त तथापि पलिउचण माया, तन्निषेधपरो निदेशो द्रष्टव्य, सूत्रे अकारयुक्तपदसद्भावादित्याह, पलिउचणमित्यय प्रतिषेधदर्शनादिनि, पलिमत्ताए निउत्त त्ति गोभत्ते नियोजिता क्वचित् सूत्रादर्शे आदिचरिमावेव भगौ निर्दिष्टौ, द्वितीयतृतीयौ चार्थलभ्याविति, यदुक्त प्राक् चूर्णौ, तदधुना सूत्रकार स्पष्टीकुर्वन्नाह – अपलिउचिय इत्यादि, अस्यार्थ इति त असणादिग्गहणेति त सामाचारीभासणाभिग्गहेणानित्र।नत प्रायश्चित्त भवतीति विशेपयति तथाह्यासन गुरोर्नीचमात्मीयासनसम वा यदि ददाति तदा सामाचार्युल्लघनमेव कृत भवति, एवमित्यादि, वृषभशब्देनेहोपाध्यायो ग्राह्यो, भिक्षुश्च सामान्ययतिरेव, आलोचनार्ह इति शेष । नवर – कोल्हुगाणुगे विशेष इत्यादि आलोचकस्य कोल्हुगाणुगस्याचार्यादेरालोचनाग्रहणकाले आसन प्रतीत्य विशेषो भवनि, निषद्या चेहौपग्रहिकी पादप्रौछनकल्पैव दृश्या, तत्र कोल्हुगाणुगो कोल्हुगाणुगसमीवे उक्कुडुओ आलोइतो सुद्धो, पायपु छणणिसिज्जोवविट्ठो पुण आलोएतो असुद्धो, सीहवसभाणुग वाऽऽलोचनार्ह प्रतीत्य सो निषद्यापायपु छणोवविट्ठो वि सुद्धो इत्येषा भजना । अथ सिहाणुगतम् वृषभस्य, सिहानुगत्व वृषभाणुगत्वे भिक्षोश्च कथ घटते अनुचितत्वात् ? इति चेद्, उच्यते, आलोचकेन ह्याचार्येणापि निषद्यादिविनयप्रतिपत्ति कृत्वैवालोचना ग्राह्या नान्यथेति, भिक्षुवृषभयोरपि सिहाणुगत्वादिव्यपदेशस्तत्काल प्रतीत्य सगच्छते। अत एवाह – जो होइ सो होउ इत्यादि सिहाणुगत्वादिका च पारिभाषिकी सज्ञा, वसभस्स वसभाणुगस्स त्ति एक कप्पे उवट्ठितस्येत्यर्थ । भिक्खुस्स कोल्हुगाणुगस्स त्ति पायपु छगे उवविट्ठस्स भिक्षुपादनिषद्यात्वासनग्रहेण द्वाभ्या तप कालाभ्या प्रायश्चित्त गुरुक भवति ।

दोहि वि० गाहा ॥६६३१॥

एतस्या पूर्वार्धमाचार्य प्रतीत्य सुगमम् । उत्तरार्धव्याख्यामाह – वसभाणवीत्यादिना । अथ दोहि वीत्यादिगाथाया वृषभमालोचनार्ह प्रतीत्य प्रायश्चित्तनिरूपणपरताया भणिताया प्राग् अपर यथा द्वय भाष्ये दृश्यने तत् किमिति नामग्राह न व्याख्यात – यावता तत्परिहारेण दोहि वीत्यादिगाथैव निर्दिष्टा ।

उच्यते – क्वचिद् भाष्ये गाथाद्वय भवति क्वचिच्च नेति ततश्च यत्र तन्न भवति तत्प्रतीत्य तदर्थो मुत्कल एव चूर्णिकृता स्वतन्त्रतया कथित तमभिधाय दोहि वीत्यादि भाष्यदृष्टा गाथापत्तौ यत्र च तद्भवति तत्र पाठान्तरत्वान्नामग्राह ता गाथा गृहीत्वा विवरीषुरिदमाह, क्वचित् पाठान्तर एवमेव य गाहेत्यादि, तच्चेद –

एमेव य वसभस्स वि आयरियाईसु नवसु ठाणेसु ।
नवरं पुण चउलहुगा, तस्साई चउलहू अंते ॥६६३२॥

उत्तरार्धव्याख्या यथा – तस्य सिहाणुगवृषभस्यालोचनार्हस्यालोच९ आलोचके आदिभूते सिहाणुगे आयरिए ४, वसभाणुगवसभस्स मध्यमस्थाने सिहाणुगपदभूते आचार्ये ४, कोल्हुगाणु वसभस्स अन्त्यस्थाने आदिभूता सिहाणुगा आचार्य ६, द्वितीयगाथा यथा –

लहु लहुओ सुद्धो, गुरु लहुगो य अंतिमो सुद्धो ।
छल्लहु चउलहु लहुओ, वसभस्स उ नवसु ठाणेसु ॥६६३३॥

भिक्षुमप्यालोचनार्हं प्रतीत्य –

एमेव य भिक्खुस्स वि, आलोएंतस्स नवसु ठाणेसु ।
चउगुरुगा पुण आई, छग्गुरुगा तस्स अंतम्मि ।।६६३४।।

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थम् –

एमेव य भिक्खुस्स वि, आलोइंतस्स नवसु ठाणेसु ।
चउगुरुगा पुण आई, छग्गुरुगा तस्स अंतम्मि ।।६६३५।।

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थमेव मुत्कल चूर्णिकृत् कथितवान्, क्वचित् पुस्तकेऽस्या दर्शनात्, अत एव पाठान्तरत्वेन एनामपि गृहीत्वा व्याख्यातवान् । एव विभागओ एक्कासीतयादि, सीहाणुग आयरिय पडुच्च आलोयणागाही आयरिओ तिहा – सी० व० को० ३ ।

वसभाणुग सूरि पडुच्च आयरिओ आलोयगो तिहा – सी० व० को० ३ ।

कोल्हुगाणुग पडुच्च सूरि आलोयणा आयरिओ तिहा सी० व० को० ३ सर्वे ९ । आयरिय आलोचनार्हं प्रतीत्य आलोचकवृषभोऽपीत्थ नवविधो वाच्य, ततो भिक्षुरप्येव नवविधो वाच्य । प्रत्येका सप्तविंशतिर्नवरमाचार्यस्यालोचकस्य प्रायश्चित्त उभयगुरु, वृषभस्यालोचकस्य तपोगुरु, भिक्षोरालोचकस्य कालगुर्विति वाच्यम् । एव वृषभो आलोयणार्हंत्रिधा सी० व० को० । एतदधो आलोचनाग्राही सूरि पूर्ववद् नवधा वाच्य, वृषभोऽप्यालोचनाग्राही नवधा वाच्य, भिक्षुरपि नवविध इति द्वितीया सप्तविंशति, तृतीया तु भिक्षुमालोचनार्हं प्रतीत्य आचार्यवृषभभिक्षूणा नव नव पदै सप्तविंशतिरिति ।

जे त्ति य साहु त्ति जे इति निर्देश साधुसूचक । जाणि य तेरसपयाणि एसा पारचियवज्जिय त्ति पारचिकमेक्वारैव दीयते इति तस्यैकविधत्वात् तद्वर्जन, शेषपदानि वाश्रित्यानेकविधा प्रस्थापना भवति, तेषामनेकवार प्रदानात् । त कसिण ति तत् सर्वमारोप्यते । अणुग्गहेण वि त्ति तत्थाणुग्गह छण्ह मासाणमारोवियाण छद्दिवसा गया, ताहे अन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे ज जेण अद्धवढ त झोसिज्जइ, ज पच्छा आवन्न छम्मासिय त वहति, एत्थ पचमासा चउवीस च दिवसा जेण झोसिया एय अणुग्गहकसिण, णिरणुग्गहेण व त्ति जहा छम्मासिए पट्ठविए पचमासा चतुवीस च दिवसा वूढा ताहे अन्न छम्मासिय आवन्नो त वहइ, पुव्विल्लस्स छद्दिणा झोसो ।

मानासनान्मास इत्यस्य वाक्यस्यान्वर्थमाह – अत्यानीत्यादिना (?) इह शून्यातावित्यस्य निपातनान्मास इति, असतीति वाक्य चूर्णिवाक्यत्वात्, यद्वा भौवादिकोऽस गत्यर्थोऽप्यनेकार्थत्वात् व्याप्त्यर्थस्तस्येद रूपमिति, मानाद्वेति स्वमानेन द्रव्यादीन् प्राप्नोतीति मास, तथाहि मासन्निष्पन्न द्रव्य मासिकमुच्यते, इति स्वमानेन द्रव्यप्राप्ति, क्षेत्रे च तास्थ्यात् तद्व्यपदेशो द्रष्टव्य । परिहार्यत इति चूर्णित्वात्, वाक्य तु – परिह्रियत इति ज्ञेय, तिष्ठन्त्यस्मिन्निति तपोविशेषे इति – स्थान आदिकर्मण्य च उदीरणचेत्यादि द्वन्द्व, अन्त आद्यन्तरूप राति गृण्हातीति अनर मध्यमुक्त, प्रतिदानयो प्रतिसन्निधानयोरिति नावबुध्यते मूलगुणादे प्रतिसेवनोच्यते, आङ्मर्यादयाऽशुद्धनिजाभिप्रायप्रकटन सन्दर्शनम् आलोचनम् । प्ररज्यते तमसा व्याप्यते या सा रात्रि निपातनात्, रज्यते वा स्त्र्यादौ प्राण्य

स्यामिति रात्रि, रात्रिशब्दस्य राग प्रवृत्तिनिमित्त, रागश्च दिवसोऽपि भवतीति रात्रिशब्दोपादानेन तदपि ग्राह्यम्, उभयोऽपीति दिने रात्रौ च इह छम्मासिय परिहारट्ठाण पट्ठविए – अतरा दो मासा पडि वीसइराइया आरोवणा इत्येक वाक्यम्। द्वितीय च आइ मज्झे अवमाणे य सट्ट इत्यादि तावद् यावत सवीसतिराइया दो मास त्ति तत आदिवाक्येन सामान्यत विशत्यारोपणाऽऽरोप्यते विशेषतश्च प्रायश्चित्तनिमित्तकवस्तुनो विवक्षायामनूनातिरिक्तमारोप्यते यदि तदा द्वौ मासौ विशतिरात्रिन्दिवाभ्याधिकावारोप्यौ, प्रथमासेवनाया तदुपरि वा सेवने त्रिशतिवृद्धिरेव प्रतिपद कार्या इति। प्रतिसूत्र सामान्यारोपणा च प्रथमासेवनवारा प्रतीत्य द्रष्टव्या।

तेण मूल वत्थुणा सहेत्यादि यस्मिन् शय्यातरपिडादावाहृनादिदोषदुष्टे द्विमासिकापत्तिस्तन्मूल वस्तु, तथाचोक्त प्राक् सागारियपिडाहडे दोमासिय ति प्रायश्चित्तनिमित्तक वस्तुद्विस्वान्यूनातिरिक्तद्वे नारोपणयो परमाण भवतीत्यस्यैवार्थमाह – न आवत्तिमाणमित्यादि, आपत्तिर्मासिकद्वयरूपा तद्रूप मान न।

कोऽर्थं ? मासिकद्वय शुद्ध, न केवला विशत्यारोपणा, किन्तु परमन्यदेवारोप्यते, विशत्यधिकमासद्वयमित्यर्थ। अहवा – इमो अन्नो वि आदेशो इत्यादि अत्र व्याख्यानेन प्रायश्चित्तनिष्पत्तिकारण वस्तूच्यतेऽथशब्देन किन्त्वर्थ प्रयोजन तच्चात्मन परस्य वा वैयावृत्यादिकरणरूप तस्मिन् हि क्रियमाणे न प्रायश्चित्ततप उद्वोढु शक्यते, अत उभयतरगादिक कारण प्रतीत्य प्रथमवारासेवने विंशत्यारोपणान्यूनातिरिक्ता रोपणीया, एषा च ठवियगा कज्जइ।

उभयतरागादिगो त्ति काउ पुणो पडिसेविए शठ इति कृत्वा मासद्वय दीयते, पाश्चात्यया विशत्या युक्त एगम्मि प्रायश्चित्ते वुज्झमाणे अतरा अन्नमावज्जइ, त मज्झवत्तिय ठविय कज्जइ त्ति काउ ठवियसन्न लभइ तत्प्रतिपादका सुत्ता ठवियसुत्ता, त पि य वुज्झमाणे पट्ठवियसन्न पि लब्भइ, एव च वुज्झमाणपच्छित्तवत्तव्वयाभिहाइणो सुत्ता पट्ठवियसुत्ता भन्नति, अतरा आवन्नाण तेसि चेव वुज्झमाणवत्तव्वया प्रतिपादनपरा सुत्ता ठवियसुत्ता। सवीसतिराइय दोमासिय परिहारट्ठाणमित्यारभ्य ठविय सुत्ता तावत् यावद् दसरायपचमासिय परिहारट्ठाण पट्ठविए अणगारे जाव तेण पर छम्मासा इत्येतदतम्। एतावता च षण्मासिए पट्ठविए द्विमासापत्तिलक्षणसूत्रमाश्रित्य ठवियसूत्राण्युक्तानि, इत ऊर्ध्व शेषमासविषये चूर्णिसूत्राणि वाच्यानि, तान्येव भणितुमुपक्रमते।

इयाणि अत्थवसओ इत्यादिना, एतानि वाच्यत्वादियाणि मासियसजोगसुत्ता लक्षणपत्तेत्यादिवाक्यमिति स्थापनासूत्रादर्शसूत्रसत्कार्यत अत्र च षण्मासिकादिपदमध्ये चूर्णौ द्विमासिकपद न भवति। षण्मासिक प्रस्थापित प्रतीत्य द्विमासिकस्य सूत्रैवाभिहितत्वात्, सव्वाओ लक्खणाओ पत्ताओ त्ति सर्वा सयोगसूत्रजातयो लक्षणात् प्राप्ता सामर्थ्याल्लब्धा इत्यर्थ। षण्मासिके प्रस्थापिते द्विमासिकलक्षणसूत्रोक्तद्विकस्थानव्यतिरिक्ता त्रिकादिसयोगा अन्यथा आद्याश्च द्विकान्यास्यान्त्या एकरूपा, तहा एसि पि सव्वासि ति एतासा मासिकादिषण्मासान्ताना सर्वासा सूत्रजातीना स्थापना १ २ ३ ४ ५ ६

१ २ ३ ४ ५ ६

१५, २०, २५, ३०, ३५, ४०।

आद्य प्रस्थापितपक्ति, द्वितीया आपत्तिपक्ति, तृतीया आरोपणापक्ति। मासिए पट्ठविए चाउम्मासिए पडिसेविए तीसइमा आरोवणा से अद्धा दिज्जमागा मासचउक्क तीसारोवणाय मिलिय पचमासा भवति। एतदेव ठविया सुत्तमित्थ पदे भवति। एय ठवियसुत्त पट्ठवणासुत्त किच्चा भणइ – पचमासियमित्यादि, तेण पर पचूणा चत्तारि मास त्ति जओ आरोवणा पणुवीसिया

मट्ठा दिज्जमाणा चत्तारि मासा तहाहि सट्ठी इत्यादिन्यायेन मासा ३ आरोवणा २५ पचदिणा हीणचत्तारिमासा।

इयाणि मासिय सजोगे सुत्तेत्यादि सूत्रादर्शसूत्राणि छम्मासिय परिहारट्ठाण पट्ठविए अतरा मासिय परिहारट्ठाण सेवित्ता इन्यायारभ्य तावद् यावद् अट्ठ मासिय जाव तेण पर छम्मासा इत्येतदन्तानि वाच्यानि, एतान्येव चूर्णिकारो व्यलीलिखत् पट्ठविया सुत्त त्ति एतानि प्रदर्शितरूपाणि प्रस्थापितसूत्रा ण गतानि। अधुना पट्ठवियसुत्तेसु जे ठवियसुत्ता आसी ते भन्नति–दिवड्ढमासियमित्यादि, अत्र क्वचित् ठवियसुत्ता इति पाठ क्वचित् पट्ठवियसुत्त त्ति, तत्राद्य उत्तरसूत्रपातनापेक्षया योज्य, यत्र त्विनरसूत्रपाठवात्यनिगमनतायनी एव छम्मासाइपट्ठविए इत्यादिक षण्मासान्ते यथाक्रम ।।१५।।२०।।२५।।३०।।३५।।४०।। इत्येवरूपा विकला स्थापिता सती स्वस्थानवृद्ध्या षण्मासावसाना यका भवति, सो उक्केति तथाहि पण्मासे प्रस्थापिते यदारोपणा पाक्षिकी आरोप्यमाण सट्ठ इत्यादि न्यायेन दिवड्ढो मासो आरोविज्जइ, इतीय विकला परिपूर्णमासानामभावात् यद्यपर पक्ष स्यात् तदा परिपूर्णमासद्वय किल भवे, स च नास्त्यतो विकलत्व तथा स्थापिता चेय, तथाहि जो सो दिवड्ढो मासो ठवियपट्ठविओ यश्च मास प्रतिसेवित जाया दो मासा। दोमासिए पट्ठविए पुणो वि मासिय सेवइ, इत्येव पाक्षिक्यारोपणेन तावद्वाच्य यावदपरे षण्मासा पूर्यन्त इति स्वस्थानेन मासिकलक्षणेन वृद्धिरिति। यद्यपीहापरा मासासेवनेन द्विमासादि विजातीय जायते तथाप्येकदोपदुष्ट मासिकयोग्य किंचिदासेवित येन मास एव भवति, ननु दोषद्वयदुष्ट सेवित शय्यातरपिड सोऽप्याहृतदोपदुष्ट इति, येन युगपदेव स मासिकद्वयमापद्यते ततो मासस्य प्रस्थापितत्त्वाद् मासस्यैव च सेवनात् स्वस्थानवृद्धित्वणापरापरमासेवनेन प्रायश्चित्तवृद्धया षण्मासावमाना वृद्धिरुक्ता, अधुना तु परिपूर्णमासाना प्रस्थापनद्वारेण रोपणा स्वस्थानवृद्धया परस्थानवृद्धया सा प्रोच्यते विकलमासप्रस्थापनाक्रम सकलमासप्रस्थापनक्रमश्च पातनिकाया विशेष, तत्र मासे प्रस्थापिते परमासाना प्रतिसेवने पक्ष पक्ष आरोपणेन यत्र षण्मासा पूर्यन्ते सा स्वस्थाने वृद्धि। एव द्विमासादिष्वपि योज्यम्। यथा मासिके प्रस्थापिते द्विमासिके वा सेविते विंशत्यारोपणेन यत्र षण्मासा पूर्यन्ते सा परस्थाने वृद्धि। एव त्रिमासादिसेवनेन षण्मासे पूरणमपि परस्थानवृद्धि।

मासियठविए इत्यादि प्रायश्चित्तमवहत सत स्वतन्त्र एव शय्यातरपिडादिपरिभोगतो यो मास आपन्न स वैयावृत्यकरणादौ साधोर्व्यापृतत्वात् स्थाप्य कृत आसीत्। तत कार्ये समर्थिते मास उद्वोढुमारब्ध इति स्थापितत्व, एव दोमासियासु वि पट्ठविएसु त्ति दोमासिए ठवियपट्ठविए दोमासिय पडिसेवइ इत्येव तावद्वाच्य बीयारोवणा तेण पर सवीसइराइया दो मासा सवीसइरायदोमासिए ठवियपट्ठविए दोमासिय वीसियारोवणा इत्येव तावद्वाच्य यावत् षण्मासा इति स्वस्थानवृद्धि।

दोमासिए पट्ठविए तेमासिए पडिसेविए पणुवीसारोवणा दोमासा। पणुवीसतिराय दोमासिए पट्ठविए तेमासिए पडिसेविए पणुवीसारोवणा, तेण पर पणुवीसतिराया दोमासिय पट्ठविए तेमासिए सेविए पणुवीसारोवणा, इत्येव तावद् यावत् षण्मासा इति परस्थानवृद्धि।

इयाणि दुगसजोगे इत्यादि मासे प्रस्थापिते मास द्विमासयो सेवनेन षण्मासपूरण विधीयते, एव मासे प्रस्थापिते मासियतेमासियप्रतिसेवनेनद्विकयोगे षण्मासा पूरयितव्या इत्येवमन्येष्वपि। कारण त चेवत्यादि छम्मासाइरित्तो तवो न दिज्जइ इत्येव रूप। नाहेत्यादि

दुविह त्ति सट्ठाणपरट्ठाणे हिट्ठे विध्यमित्यर्थः । एव एयस्स वीत्यादि एतस्यापि द्वौ मासिकस्य प्रस्थापितस्य सर्वे द्विकसयोगादय सयोगा वाच्या, यथा मासद्विमासरूपो द्विकयोगस्तथा मासादिरूपो पि वाच्य, अत्र स्थाने निशीथसूत्र सर्व समर्थितम् ।

इत ऊर्ध्वं शे चूर्णिकारो भाष्यकारश्च भणिष्यति । एव तेमासिएत्यादि मासद्विमासादिप्रतिसेवनरूपो द्विकयोग, मासद्विमासत्रिमासादिरूपस्त्रिकादियोग, अत्र च यद्यप्येककयोगा ६, द्विकयोगा २०, चतुष्कयोगा १५ पचकयोगा ६, षड्योगश्चैकस्तथापि मासिक एव स्थापिते द्विमासिके वा प्रस्थापिते सर्वे ते सगच्छन्ते । त्रैमासिके प्रस्थापिते द्विकयोगत्रिकयोगचतुष्कयोगा एव भवन्ति, न परत षण्मासानामाधिक्यात्, तथाहि – चाउम्मासिए ठवियपट्ठविए मासिए पडिसेविए पक्खिवया आरोपणा, तण पर अद्धपचममासा अद्धपचममासेसु पट्ठविएसु दोमासिए सेविए वीसियारोवणा, तेण पर सपचराया पचमासा तेसु पट्ठविएसु तेमासिए सेविए पणुवीसारोवणा, तेण पर छम्मासा, इत्येव त्रिकयोगमेव यावच्चातुर्मासिकप्रस्थापनानि सगच्छन्ते, तदूर्ध्व चतुष्कयोगानाश्रित्य चतुर्मासेसेवने आरोपणायास्तत्र त्रिशद्रूपत्वात् सप्तमासा जायन्ते, षण्मासाधिक्यात् । अत्र चूर्णौ चातुर्मासिकपचमासिकपदे आश्रित्यैककादय षट्कपर्यवसाना ये अका निर्दिष्टास्ते न सयोगसख्याकथनपरतया किन्तु सयोगोच्चारणाथ स्थापनामात्रतया दर्शिता । एवमङ्कानूर्ध्वमधश्च व्यवस्थाप्य द्विकादय सयोगाश्चार्यन्ते, सयोगसख्यान तु यत्र पदे यावत् तत्प्रदर्शनरूपमेव द्रष्टव्यमित्येव गमनिकामात्रमुक्त, तत्त्व तु बहुश्रुता विदन्ति । एव दोतीत्यादि इह षण्मासपदनिर्देशे सर्वत्र कारण षण्मासाधिकतपोऽभावरूप द्रष्टव्यम् । एयासम्मीत्यादि, पढमसुत्तस्स त्ति आरोपणासूत्रदशकविस्तरस्य प्रस्तुतत्वात् प्रथम प्रत्येकसूत्रमारोपणाविषय तद्विषय सर्वमेतद् द्रष्टव्यम् । द्वितीय बहुसूत्र तत्रापि सर्वमिद द्रष्टव्य बहुसाभिलापेन । नवर – ठवण त्ति छम्मासिए पट्ठविए इत्येव निर्देशरूप ठवणाठाण मासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा इत्येव निर्देशस्वरूप पडिसेवणाठाण कसिणमुत्ते सगले सुत्ते इत्यर्थ । मासिय ठवियपट्ठविए अतरा बहुसो मासिय पडिसेवइ इत्यादिकानि ठवियपट्ठवियसुत्ताणि एतेषु द्विकसयोगत्रिकसयोगादय सयोगा बहुससूत्रेष्वपि द्रष्टव्या इत्यर्थ । जिणाइय त्ति जिनकल्पिकादय हुमिय च त्ति आपन्नाल्लघुतर । पुणो इयर त्ति उत्तराध व्याख्येयम् । ते चेव त्ति ते पुनरित्यर्थ तहारिह त्ति भाष्यपदान्तस्य व्याख्यानेहि आयरिया योगा वूढ त्ति तथा तथा चरिता इत्यर्थ । सावेक्खपुरिसाण भेदकरण तत्र तत्थ निरविक्खे पारचिए इत्यादि निरपेक्ष – जिनकल्पिकादिस्तस्य पारचिकमापन्नस्यापि पारचिक न दीयते, गच्छनिर्गतत्वादेव, तथा गच्छान्निष्कासनादिकरणरूप हि किल पारचिक भवति, द्वयो प्रायश्चित्तयोर्मध्याद् यत्रैकमग्रेतनपदे याति सार्धेऽपक्रान्तिरुच्यते, अर्धस्यातिक्रमगमुत्तरत्र गमन यत्रेति कृत्वा, एव अणवट्ठे वीत्यादि अणवट्ठावत्तीए अणवट्ठो कज्जइ, मूल वा दीयत, इत्येवमादेशद्वयम् । अतरा बह ति अनवस्थाप्यकरणपक्षे भिक्षोरगीतार्थेऽस्थिरे प्रकृतकरणे इत्येवरूपेऽन्त्यपदे चतुलघुर्भवति । मूलदानपक्षे द्वितीयेऽन्त्यपदे मासगुरुर्भवति । इत्थ वि त्ति अनवस्थाप्यापत्तौ मूलापत्तौ आचार्यादिक प्रतीत्य मूल वा दीयते, छेदो वा क्रियते, इत्युत्तरत्र वक्ष्यति –

सव्वेसिं॰ गाहा ॥

भाष्यकारेण मूलप्रायश्चित्तमादौ यदुक्त तत्र सर्वेषा जिनकल्पिनादीनामाचार्यादीना च मूलापत्तौ मूल दीयते एव इत्येवमाश्रित्योक्तम् पारचिकानवस्थाप्ये च सापेक्षाणामेव जिनकल्पिकादेरपीति तच्चिन्ता चूर्णिकृताऽभिहिता, अत्र यन्त्रकमुत्तिष्ठते यथा जिनकप्पिया आयरिओ कयकरणो २, अक कर ३ उव कय ४, अकय ५ भिक्खू गीओ थिरो कय ६ । भि.

गी थि ऽक ७। भि गी थि ऽकय ८। भि गी ऽथि कय ९। भि ऽगी थि ऽकय १०। भि गी ऽथि ऽक ११। भि ऽगी ऽथि. क १२। एतेषु यथाक्रम पारचिकापत्तौ प्रायश्चित्तम् ।

द्वितीयपक्तौ निरूप्यते यथा शून्य – ०। पार । अण । अण । मू । मू । । । ६। ६। ६। ६। धी।

तृतीयपक्तौ पारचिकापत्तावाप्यादेशान्तरेणेत्य, यथा – शून्य अण । मूल। मू । । द्दी। द्दी। ६। ६। धी। धी। व्व।

चतुर्थपक्तौ सवषा मूलापत्तौ यथाक्रम मू । मू । । । द्दी। द्दी। ६। ६। धी। धी। व्व। व्व। ०।

पचमपक्तौ सर्वेषा छेदापत्तौ छे । छे । द्दी। द्दी । ६ । ६। धी। धी। व्व। व्व। ०। ०। ०।

षष्टपक्तौ द्दी। द्दी। ६। ६। धी। धी। व्व। व्व। ०। ०। ०। २५।

सप्तमपक्तौ ६। ६। धी। धी। ४। व्व। ०। ०। ०। ०। २५ी। २५ी। २५।

अष्टमपक्तौ धी। धी। व्व। व्व। ०। ०। ०। ०। २५ी। २५ी। २५। २०ी। २०ी।

नवमपक्तौ। व्व। व्व। ०। ०। ०। ०। २५ी। २५ ी। २५। २५। २०। २०ी। २०ी। २०।

दशमपक्तौ ०। ०। ०। ०। २५ी। २५ी। २५। २५। २०ी। २०ी। २०। २०। १५ी।

एकादशपक्तौ ०। ० २५ी। २५ी। २५। २५। २०ी। २०ी। २०। २०। १५ी। १५ी। १५।

द्वादशपक्तौ २५ी। २५ी। २५। २५। २०ी। २०ी। २०। २०। १५ी। १५ी। १५। १५।

त्रयोदशपक्तौ। २५। २५। २०ी। २०ी। २०। २०। १५ी। १५ी। १५। १५। १०ी। १०ी।

चतुर्दशपक्तौ २०ी। २०ी। २०। २०। १५ी। १५ी। १५। १५। १०ी। १०ी। १०। १०। ५ी।

पचदशपक्तौ २०। २०। १५ी। १५ी। १५। १५। १०ी। १०ी। ५ी। ५ी। ५।

षोडशपक्तौ १५ी। १५ी। १५। १५। १०ी। १०ी। १०। १०। ५ी। ५ी। ५। ५। दशम।

सप्तदशपक्तौ १५। १५। १०ी। १०ी। १०। १०। ५ी। ५ी। ५। ५। दशम। दशम। अट्ठम।

अष्टादशपक्तौ। १०ी। १०ी। १०। १०। ५ी। ५ी। ५। ५। दगम। दशम अट्ठम। अट्ठम। छट्ठ।

एकोनविंशतिपक्तौ। १०। १०। ५ी। ५ी। ५। ५। दशम। दशम। दगम। अट्ठम। छट्ठ। छट्ठ। छट्ठ। चउत्थ।

विंशतिपक्तौ। ५ी। ५ी। ५। ५। दशम। दगम। अट्ठम। अट्ठम। छट्ठ। छट्ठ। चउत्थ। चउत्थ। अबिला।

एकविंशतितमपक्तौ । ५ । ५ । दशम । दशम । अट्ठ । अट्ठ । छट्ठ । छट्ठ । चउ, । चउ, । अबि । अबि एकासणा ।

द्वाविंशतितमपक्तौ । दशम । दशम । अट्ठ । अट्ठ । छ । छ । चउ । चउ । आयाम । आयाम । एगा० । एगा० । पुरिम० ।

त्रयोविंशतितमपक्तौ अट्ठ । अट्ठ । छ । छ । च । च । आया० । आया । एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति । एत्थ एक्केत्यादि चरिम पारचिक द्वितीयपक्त्यादौ निर्दिष्ट तस्मादारभ्य तृतीयादिप्रायश्चित्तपक्तिक्रमेण तावन्नयन्ति यावत् पचदशीकपक्तिरिति षोडशाद्या पक्ती नेच्छन्ति, अन्ये तु पचकादुपर्यपि दशमादिष्वपि पदेष्ववस्थान मन्यन्ते ।

चतुर्विंशत्यादिका पक्तीराश्रित्य यन्त्रक यथा छ । छ । चउ । चउ । आया । आया । एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति ।

पचविंशतितमपक्तौ चउ । चउ । आ । आ । एगा आ । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति ।

षड्विंशतितमपक्तौ आ । आ । एगा, । एगा । पुरि । पुरि० निव्वी० ।

सप्तविंशतिपक्तौ एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वी ।

अष्टाविंशतिपक्तौ पुरि । पुरि । निव्वी ।

एकोनत्रिंशत्पक्तौ निर्विकृतकमादिपद एव ।

पढमस्स० गाहा ॥

जिनकालिकस्य पारचिकापत्तौ मूलापत्तौ वा मूलमेवेत्यर्थ । आचार्यादेस्तु मूलापत्तौ मूलं वा दीयते छेदो वा विधीयते इत्यय विकल्प । जे सेसे त्ति अस्थिरा कृतकरणा दोन्नि अकयकरणत्ती त्यादि सप्तमाष्टमनवमा दशमपदविहारेण एकादशद्वादशत्रयोदशपदवाच्याश्च ये तेषामित्यर्थ, द्विकाद्यन्तरित बहु तरित चेत्यर्थ । अजयण करेतस्सावणाय त्ति तत्राचार्यस्य ४, उपाधाय व्व भि थिरगथिरो न कज्जइ त्ति गीतार्थस्य स्थिरस्यैव भावादित्यर्थ । आयरिय कय १ अकय २, ठव क ३, अकय व्व, ४ भिक्खु गीओ कय ५, भिक्खु गी अक ६, भि गी थि कय ७, भि अगी थि ऽक ८, भिऽगी ऽथि क ९, भि गी ऽथि क १०, एतेषु दशसु पदेषु प्रायश्चित्तं यथा आयरिए कयकरणे पचराइदिय आवन्ने त चेव ५, अकृतकरणादिषु द्वितीयादिषु यथाक्रम अभत्तट्ठो २ । अ ३, अबि व्व अबि ५, एगासणा ६, एगा ७, पुरि ८, पुरि ९, अते निव्वीय १० ।

द्वितीय प्रायश्चित्तपक्तौ यथाक्रम दसराइदिएसु आढत्त १० । ५ । ५ । अभ व्व अभ ५ । अ ६ । अ ६ । अ ७ । एगा ८, एगा ९ । पुरि १० ।

तृतीयपक्तौ पचदशसु आढत्त १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । अभ । अ । अ । । का ॥१०॥

चतुर्थपक्तौ यथाक्रम २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । अभ । अबि ॥१०॥

पचमपक्तौ २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । १० ।

षष्ठपक्तौ मासलहुगाओ आढत्त ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० ।

सप्तमपक्तौ द्विमासिकादारद्ध ० । ० । ० । ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० ।

अष्टमपक्तौ त्रिमासिकादारद्ध ०० । ०० । ० । ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ ।
नवमपक्तौ चतुर्मासिकादारद्ध ०० । ०० । तेमा० । तेमा० । दोमा० दोमा० । ० । ० । २५ । २५।
दशमपक्तौ लघुपञ्चमादारद्ध । ५ । ब्व । ब्व । ३ । ३ । २ । २ । ० । ० । २५ ।
एकादशपक्तौ ६ । ६ । ५ । ब्व । ब्व । ३ । ३ । २ । २ । ० ।
द्वादशपक्तौ छेद ६ । ६ । ५ । ५ । ब्व । ब्व । ३ । ३ । २ ।
त्रयोदशपक्तौ मूलाग्रो आढत्त मू० । छे० । छे० । ६ । ६ । ५ । ५ । ब्व । ब्व । ३ ।
चतुर्दशपक्तौ अणवट्ठाग्रो आढत्त अण । मू० । मू० । छे० । छे० । ६ । ६ । ५ । ५ । ब्व ।
पचदशपक्तौ पारचिकादारद्ध पार० । अण० । अण० । मू० । मू० । छे० । छे० । ६ । ६ । लघुपचमासिए ठाइ, अत्र च नगोरूपाणि प्रायश्चित्तानि सर्वाण्यपि लघूनि वाच्यानि, गुरूणि न ।

एमेव गमो० गाहा ॥

अनया गाथयाऽऽरोपणासूत्रदशकविषयमुपयुज्य सर्व वाच्यमित्याचष्टे तत्र सकलसूत्रविषय उक्त प्राक् शेष तु वाच्यमित्याह एवमित्यादि, एव प्रदर्शितरीत्या उद्घातिममासादिसकलसूत्रारोपणा पुनस्तावद् भणिता। उद्घातिममासाद्यारोपणासु च भणितासु अनुद्घातिमविशेपितास्ताएव भणनीया, उद्घातिमानुद्घातिममिश्रसयोगारोपणा अपि वाच्या , मासद्विमासाद्यापन्ने तदुपयुज्यवाच्यमित्यर्थ । एव सातिरेकमासिकाद्यापत्तौ तदारोपणा वाच्या लहुपञ्चकमातिरेकमासिकाद्यापत्तौ तदारोपणा वाच्या । इत्यादि एतास्वापत्तिषूपयुज्यमान दातव्यम्। नवर – परिहारो न इति, सयतीना पारिहारिकतपो न दीयते, शेषसाधुभि साध्वीभिश्च परिह्रियत इत्युक्त भवति, तस्सेव पाणाइवायस्सेत्ति तस्स त्ति पढमठाणस्स पढमपोरुसीए इत्यादि करकर्मकरणोत्पन्नाभिलापापेक्षया प्रथमपोरुषीप्रमाणकालमात्रमध्ये तत्करणे मूल, प्रथमपौरुषीमुत्पन्नापेक्षया प्रतीक्ष्य द्वितीयपौरुष्या करणे छेद इत्यादि वाच्य, न पुन सूर्योद्गमापेक्षया प्रतीक्ष्य पौरुष्या करणे छेद इत्यादि वाच्यम्, न पुन सूर्योद्गमापेक्षया प्रथमपौरुष्यादि कालमान ज्ञेयम् । अर्थ गृण्हन् निपद्या निश्चयेन करोत्येव सूत्रऽपि करोतीति वाचनाचार्येच्छया वा ।

कोऽर्थ ? न करोतीत्यपि कदा च नेति अर्थ च शृणोति शिष्य उत्कटुक सन् कयकच्छउ त्ति उत्कृतकक्ष विहितमस्तवमतिप्रमार्जनादिव्यापार सन् अय च सूत्रार्थग्रहणादिविधिरत्रैव प्रागेकोनविंशतितमे उद्देशके **"जे भिक्खू अप्पत्त वाएइ"** इत्यत्र सूत्रे विस्तरेणोक्तस्तस्माद् बोद्धव्य , गणपरिपालक पूर्वगते श्रुते तद्गते अर्थे च लिगेत्यादि लिगक्षेत्रकालानाश्रित्यानवस्थाप्यपाराचिको य ते अद्यापि प्रवर्तेते न तु व्यवच्छिन्न इत्यर्थं । द्रव्यलिग बाह्य नपुसकाद्याकार दृष्ट्वा पाराचिको विधीयत, असौ सयतो न क्रियते परिह्रियते इत्यर्थ । कृतो वा कारणे गच्छान्निसारणेन परिह्रियते इति पाराचिकता, भावतस्त्वनुपरतमोहोदयभावो परिहार्या , एतेऽनलादयो व्रते नावस्थाप्यन्ते इत्यनवस्थाप्यताऽपि घटते, मलिणविसोहिं व त्ति मलिनत्वविशुद्धि प्रायश्चित्तदान निमित्त च पारिहारिकत्वशुद्धतपोदानरूपमिति सभाव्यते ।

देवय० गाहा –

अल्पर्धिको देवताविशेषोऽन्यतरप्रमादेऽपि वर्तमान शुद्धचारित्रिण छलयेत् कि पुन सर्वप्रमादस्थानवर्तिनम् अवश्य तस्य देवतापाय स्यादेव, इति त मुक्त्वेत्युक्त, तथा चोक्तम् –

"अन्नयरपमायजुत्त, छलिज्ज अप्पिड्ढिग्रो न उण जुत्तमि" त्ति –

घाडिय त्ति मित्त जइरि त्ति भाष्यपद यदृच्छा सेत्यर्थ । कायणुवाइ त्ति भाष्यपदं पृथिव्यादीना यत् काय शरीर तस्यानुपातेन विनाशेन वधकस्य बन्धो भवति, पृथिव्यादीना द्वीन्द्रियादीना च बध्याना यानीन्द्रियाणि तदनुपातेन च वीसइमे उद्दे सगे भणिय ति प्रभूतत-रेप्यापत्त षण्मासनया कृत्वेत्यर्थ । अववायमनरेणेत्यादि अपवादचिन्ताव्यतिरेकेणैव यतना अयतनाश्च उक्त । कहए न य सावए लज्जि त्ति भाष्यपद – कथके श्रावके च श्रोतरि कथकश्रोतृभ्या लज्जा न विधेया इत्युक्त भवति । वप्परूवग इम ति वप्र केदारो जलभृतस्तेन रूप्यते उपमीयत इति वप्ररूपण, भाविता सजाता गुणा सत्यादयो यस्य तत सस्यवद्भूमौ सजातगुणे सति को यो वप्रस्तस्मिन्नीवेनि अकप्पियाण ति अयोग्याना ससारश्चतूरूपो गति चतुष्कभेदात् पच-प्रकारश्च एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियादिभेदात् । षट्प्रकारश्च पृथिव्यप्प्रभृतिभिर्भेदात् इति सम्भाव्यते । (मभाव्यन्) घोर त्ति क्वचित् पाठो भाष्ये क्वचिच्च दीहे त्ति ततो द्वितीयपाठ-मप्यर्थतो व्याख्यातवान्, दीह कालमित्यनेन, अनवदग्रोऽपरिमित ।

इदानी चूर्णिकारो यदर्थ मया चूर्णि कृता इत्येतदाविष्करोति –

जो गाहेत्यादि गाथा शब्देन भाष्यगाथा निबद्धत्वादभिधीयते, ततो गाथा च सूत्र च तयारर्थ इति विग्रह । पागडो त्ति प्राकृत प्रगटो वा पदार्थो वस्तुभावो यत्र स, तथा परिभाष्यतेऽर्थोऽनयेति परिभाषा चूर्णिरुच्यते ।

अधुना चूर्णिकार स्वनामकथनार्थं गाथायुग्ममाह –

अतिथि चेत्यादि वर्गा इह अ,क,च,ट,त,प,य,श, वर्गा इति वचनात् स्वरादयो हकारान्ता ग्राह्या । तदिह प्रथमगाथया जिणदास इत्येतरूप नामाभिहित द्वितीयगाथया तदेव विशेषयितु-माह् - जिणदास महत्तर इति तेन रचिता चूर्णिरियम् ।

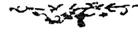
सम्यग् तयाऽऽम्नायाभावादत्रोक्त यदुत्सूत्रम् (?) ।
मतिमान्द्याद्वा किंचित्तच्छोद्धच श्रुतधरैं कृपाकलितै ।
श्रीशालिभद्रसूरीणा, शिष्यै श्रीचन्द्रसूरिभि ।
विशकोद्देशके व्याख्या, दृब्धा स्वपरहेतवे ।।१।।
वेदाश्वरुद्रयुक्ते, विक्रमसवत्सरे तु मृगशीर्षे ।
माघसितद्वादश्या समर्थितेय रवौ वारे ।।२।।

परिशिष्टानि

१

प्रथमं परिशिष्टम्

निशीथ-भाष्यगाथानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका
[1]बृहत्कल्पभाष्यस्य समानगाथानामङ्कनिर्देशश्च ।



अ	नि भा गा	ब भा गा
अइयाण णिज्जाण	५२८	
अइयारो वि हु चरणे	४४३१	
अइरहस्स धारग पारग	६७०३	
अइरेगववगहणा	२८४	
अइपेम इन्दि धम्मकहि	२३	
अउग्गमीत ठवणारा मन	६४५८	
अकयकरणाय गीया	६६५८	
अकयकरणा वि दुविहा	६६५०	
अकरडगम्मि भाणे	५८८५	४०६०
अकसिणमट्ठारसग	६४२	३८७३
अकसिणमगलग्गहणे	६४०	
अक्कतिता य तेणो	३६५०	
अक्कुट्ठ गन्निते वा	२७८६	२७१०
अक्खरलभेण समा	४८२५	
अक्खरवजणसुद्ध	५४ ८	५३७३
अक्खाण चदणस्स वा	५१२	४६०६
अक्खातिगा उ अक्खाणगाणि	५२११	
अक्खादी ट्ठाणा खलु	२३०१	
अक्खा सथारो य	१४१६	४०६६
अक्खी बाहू फुरणादि	४२६६	
अक्खुण्णेसु पहेसू	३१२१	२७३७
अगडे भातुए तिल	२११०	
अगणि गिलाणुच्चारे	४१४३	५२६५
अगणि व गणि बूया	२६२०	
अगदोसहसजोगो	३२८२	
अगमकरणादगार	११६१	३१२२
अगमेहि कतमगार	१४४०	
अगुत्ति य बभचेरे	५३२	२५६७
अग्गघातो हणे मूल	६५३१	

	नि भा गा	ब भा गा
अग्गहण जग गिलि	११५६	३५३७
अग्गहणे कप्पस्स उ	५६८३	३०६२
अग्गहणे वारत्तग	५८८८	४०६४
अग्गिकुमारुववातो	५७४३	३२७४
अगीतस्स ण कप्पति	५२५१	३३३२
	५३७४	
अगीतसु विगिचे	१६६४	
अगीया खलु साहू	१२५२	
,,	५३७६	
अचित्तमसबद्ध	६१८	
अचियत्त-कुलपवेसे	२८३८	५५६०
अचियत्तमतराय	४५०७	
अच्चावेडण मरणातगाय	३६८१	
अच्चित्तमोन त पुण	६०१	
अच्चित्ता एसणिज्जा य	६२७६	
अच्चित्ते वि विडसणा	४८४४	६८४
अच्चीकरण रणगो	१५६६	
अच्चुसिण चिक्कणे वा	४०६५	१८२५
अच्छताण वि गुणा	२१७६	
अच्छतु नाव ममता	२०२७	१६७६
अच्छिज्ज पि य नावद	४८०८	
अच्छेज्जजणिम्मदुार	४५२३	
अच्छे ससित्थ वग्विय	२६६०	५८५५
अजनगा वाम्मेव	४४८	
अजराणु निण्णि पोरिमि	६१०७	
अजिण सलोम जतिण	२६०६	
अजिणादी अत्था खलु	३६१६	
अज्ज अतियाति णीनि व	१२६	
अज्जसुहत्थाऽऽगमण	५७४६	३२७७
अज्जसुहत्थि ममत्तो	५७५१	३२८२

[1] आगम प्रभाकर श्री पुण्यविजय जी द्वारा सम्पादित ।

अज्ज जक्खाइट्ठ	१७१०	३७३२
अज्जाण नेयजणाण	१६३६	३७५८
अज्जाण पडिकुट्ठ	१७०२	३७२४
अज्जेव पाडिपुच्छ	४५८३	
अझुसिरम वेढमफुडिन	१६३३	
अझुसिरमणीणहि	१२४	
अज्झयणम्मि पकप्प	१३८६	
अज्झयणा वोच्छिज्जति	५४६८	५४०२
अज्झप्पियोमि णवहि चेव	३६१७	५१८४
अज्झुसिर झुसिरे लहुआ	४०३	४६४
अज्झुसिराणन्तरे लहु	४०४	४६६३
अट्ठा चउक्क दुग	४७३४	८७४
अट्ठग मत्तग दग	२५२	
अट्ठ उ प्रवणाना	६५४८	
अट्ठम छट्ठ चउ थ	२२४७	
[illegible] दुग चक्कामो	५८०	
अट्ठविन गहरे वा	४६८६	
अट्ठविय-राय पिंडे	२५०१	६३८५
अट्ठविह कम्म पगो	७१	
अट्ठनतमणलुच्चो	५६७६	
अट्ठ रम दुग्गिमसु	६५०५	६३६५
अट्ठार रात्री नीमुत्तरण	६२६०	
अट्ठ रस विहमवण	५११३	२४ ५
अट्ठारनतीमा य	६६०	३८६३
,,	६६२	३८६५
,,	६६४	३८६७
अट्ठावीमा दो वासमया	५९१५	
अट्ठि य दारगादी	१६०५	
,,	१६११	
अट्ठ विजा वुच्छिय	५०७६	२८२४
अट्ट प्पत्ती जिमि स	६३६७	
अडवी पविसमनाण	५४१५	
अडढा[illegible]जा मामा	२८२७	५७५७
अडढाणमेत्ताणो	४२३६	५६४६
अडढाणो तु ने गोटि	१४०२	४०८६
अणाचाविन प्रवलिय	१४३२	
अणट्ठ डडो विकम्मा	५१४५	२४६४
अणण गणाउणुण्णाते	६३६४	

अणाणणरान लहुगा	६ ४७	
अणात्थगय मत [illegible]	२६००	५७६
अणात्थ मोय गुरुगा	१६६५	
अणपज्झ अगार [illegible]	१७०[illegible]	[illegible]
अणभिगयपुण्णपान	२०३५	
अणभुट्ठाणे [illegible]	३०३८	४६३
अणभोगा गनि[illegible]	४[illegible]	
अणभोग गलयो	२६१	
,,	६२	
,,	६१	
अणागय निवसरणो	३६३	२७६४
अणाराया जुगराया	२६२	२७६२
अणालप्पजत्त मनु	४६२६	
अणावत्थाए पसगो	५१ ०	४६१
अणाहार मोय छत्ती	४९६४	६१०४
अणाहारो वि ग कम्म[illegible]	३८६८	८०१०
अणिकाचित लहुमआ	३१७	
अणिगूहियबलविरियो	४३	
,,	५८४३	६०१८
अणिसट्ठ पडिसुट्ठ	४५०८	
,,	४५१६	
अणिसट्ठ पुण कप्पति	४५११	
अणिसेज्जा अणुओग	२१२७	
अणुअत्तणा गिलाणे	२६६७	
अणुओगो पट्ठविओ	३२६०	
अणुकप भगिणिगेहे	४४६५	
अणुकपा पडिणीया	४२१२	५६२२
अणुकपिता व चत्ता	६६०२	
अणुग्घाइयमासाण	६४६६	
अणुग्घातिय वहने	२८६६	
अणुड्डाहो गिहिमत्ते	३४६७	
अणुण्णवण अजयणाए	५२५७	३३३८
अणुण्णवितउग्गहऽणाण	११४८	३१२७
अणुण्णविते दोसा	२४७३	
अणुदिनउदियो किह णु	२६१६	५८१६

अणु देनमणसकप्पे	२८६१	
अणुदियमणसकप्पे	२८८६	५९६०
,,	२८९४	५७६१
अणुपालण-सभोगो	२१३६	
अणुभूता उदगरसा	५२६१	३४२१
अणुमोदण क रावण	५-८	
अणुवत्तणा तु एसा	-०७३	५६७२
अणुयाणे अणुयानी	५७५४	३२८५
अणुरागादी जाणे	५९६३	३०७१
अणुलोमो पडिलोमो	२६५०	
अणुसट्ठी धम्मकहा	२५८६	
	३४४५	२८६८
अणुसट्ठीय सुभद्दा	६६०६	
अणुसामण सजाती	८६४	
अण्णउवस्सयगमणे	१२८६	
अण्णा कल-गोत्त कहणा	१३५१	
अण्णगणे भिक्खुस्स	२८२३	५६५८
अण्णागहणा तु दुविह	४७२५	८६४
अण्णट्ठगट्ठ जुण्णा	५०८०	
अण्णतरपमादेण	६६	
अण्णतर तेइच्छ	२२१४	
अण्णतराग धातु	४९१२	
अण्णत्थ अपसत्था	१७०९	
अण्णत्थ पगिस दुल्लभ	७५०६	
अण्णत्थ ठवावेउ	५७६४	
अण्णत्थ तत्थ गहणे	४७२४	
अण्णत्थ तचकमती	५३२२	
अण्णत्थ वतीजण	११४६	
अण्णत्थ रा वि गिज्जति	६२४८	
अण्णत्थ वि ज य भवे	४६५०	
अण्णत्थ मनिगेण	-२२५	
अण्णापडिच्छणे लहगा	६३९६	
अण्णपासडी य गिही	-२४८	
अण्णम्मि व क नम्मि	२०६०	
अण्णया वित्तता	१ ३	
अण्णावसनीए अमती	[illegible]	
अण्णस्स व अनतीए	[illegible]	
अण्णस्स व दाणामो	[illegible]	

अण्ण अभिधारेतुं	५४७३	
अण्ण च उद्दिमावे	२६३६	
	५५७७	
अण्ण पि ताव तेण्ण	१३९१	
अण्णाणे गारवे लुद्धे	८४०	४०७४
,,	५८६८	
अण्णाते तुसिणीता	१७०६	
,	५४०६	
अण्णाते परलिंग	२२८८	
अण्णा[illegible]	५७०५	
अण्णा वि अप्पसत्था	२३४५	
अण्णा वि ह पडिसवा	६२०७	
अण्णेण अणुण्णविते	१२६८	
अण्णेण पडिच्छाव	२७६६	
,,	६३७४	
अण्णेण सलिंगम्मि	२२३७	
अण्णे नो आयरिया	२८०८	
अण्णे पाणे भेसज्ज	६६५	
अण्णे [illegible] गहणे	२०६५	
अण्णा वि अउणनाम	३५९६	
,,	२५७०	
अण्णे वि तस्स णीया	१२९२	
अण्णे दोस सिक्खे	२५२५	
अण्णे वि होति दोसा	१२८४	
,,	२५०६	
,,	२५१३	
अण्णेवि निज्जमाणे	४४४१	
अण्णो चमटगदोसा	१६२५	
अण्णोण्ण करणा अज्जा	[illegible]	
अण्णाण्णेण विद्ध नु	१५८३	
[illegible]	[illegible]	
[illegible]	[illegible]	
,,	[illegible]	
[illegible]		
[illegible]		
[illegible]		
[illegible]		
[illegible]		

आरम्भ नु जोगामनी	१[illegible]	१६२०
अत्वस्मिरण नवस्मि	३२४[illegible]	
अतमि हिरिमथ तिपुड	१०[illegible]	
अनिमानरो स दीमति	[illegible]	
अनिक्कमे वनिक्कमे	६०९७	
अनिग अमिल्ला जइणगा	५१८१	
अनिभगिय अभगिते वा	१८१६	
,	२७८८	५७४२
पनिभुने उग्गालो	२९५३	५८४७
अनिरित्ताण ठिनाण	५५२	
अ तग्ग उवनिग्गंघि	२१७६	
अनिरेगदिट्ठ नामा	४५२९	
अनिरेग दुविह कारगा	४५४६	
अनि मि जरागमि वणा	१७३९	
अनेगाहडाण-गायगो	१२९६	२०१४
अत्तट्ठ परट्ठा वा	३२३३	४२५८
अत्तट्ठाए परस्स व	४६००	
अत्ताग चोरमया	३३६५	७६६
अत्तागमादिएसु	३३६६	२७६७
,,	३३६७	२७६८
अत्तारामान्याण	३३६८	२७६९
अत्तीकरग रणगा	१५५६	
अत्तीकरगाणीमु	१८५४	
अत्थगो तु पमाण	२२	
अ थयन इत्थी वा	१५७६	
अत्थगए वि मिज्झमि	३६८६	४९९१
अन्नगय मकप्पे	२८९२	५१८७
,,	२८९८	
अ थडिलमेगनर	११०१	
अ थि त्ति हाइ नहुपो	१८४५	
अ थि मि घरे वि वत्था	५०३७	६३६
अ य य मे जागवाही	२९७८	१८८०
अ थि हु वसभगामा	५९४[illegible]	४८५१
अदिट्ठमस्सुनमु	६०४८	
अदिट्ठाणो दिट्ठ	१९३४	
अद्धट्ठ अट्ठमामा	२८१९	
अद्धट्ठमास पक्खे	२८२०	५७५०
,,	२८२०	

अद्ध गुन्ना परेग	६८७	
,	७०१	
,	७१२	
	७२०	
अद्ध तेरम पक्खे	२८३२	
अद्धाग ओम असिवे	४६२०	
अद्धाण ओम दुट्ठे	१६०९	
अद्धाग कज्ज संभम	१६२	
,	२५३	
,,	१८८	
अद्धाणणिग्गनट्ठा	३२४२	
अद्धाणणिग्गताणी	५२४	३३९३
,,	१५३२	
,,	१९६७	
,,	१९८५	
,,	२१६२	
,,	३२३१	४२५६
,,	५३८८	३३[illegible]३
अद्धाणणिग्गतादीणमदेने	३२३२	
अद्धाणणिग्गयादी	२२१	
,,	२१६१	
,,	४[illegible]८१	
	५१९४	२[illegible]४८
,	[illegible]	२५[illegible]०
,	[illegible]२८५	
,,	५३४९	२४२३
अद्ध णिग्गयाणीण	४६१२	
अद्धाणणिग्गया वा	३२५४	
अद्धाग दुग्ग सज्जा	[illegible]४२०	
अद्धाग पविसमाणा	४८८[illegible]	१०२१
अद्धाणबालवुड्ढा	४६१८	
अद्धाग बाल वुड्ढ	४५६७	
अद्धाणमसथरणे	४५१	
अद्धाणम्मि विवित्ता	[illegible]०००	
अद्धाणम्मि [illegible]	३[illegible]५	२८७७
अद्धाणविवित्ता व	[illegible]२८	[illegible]४५७
,	[illegible]	
अद्धाग-सन्देसा	२[illegible] ५	

अद्धाण पि य दुविह	५६३५	३०४१
अद्धाणमि विवित्ता	२३४	
अद्धागादी अणले	४६२६	
अद्धाणादी अतिणिद्ध	२२७	
अद्धाणा मथडिए	२६२५	५८२२
अद्धाणासथरणे	३४५६	२६११
अद्धाणे उव्वाता	१०५८	२७५५
अद्धाणे ओमऽसिवे	४५६८	
अद्धाणे ओमे वा	३४७३	
अद्धाणे गेलण्णे	८६०	
,,	६३०	
,,	१६६३	
,	४५३३	
अद्धागे जयणाए	४८८५	१०२३
अद्धाणे पलिमथो	३६३०	
अद्धाणे वत्थव्वा	२६३८	५८३४
,	२६४६	
अद्धाणे सथरणे	३४६१	२६१३
अद्धिट्ठाभट्ठासु थीसु	५७७६	
अद्धितिकरणे पुच्छा	२४४१	
अद्धिति दिट्ठी पण्हय	१०४३	
अद्धे समत्त खल्लग	६२१	३८५४
अधवा गुरुस्स दोसा	२०६५	
अधवा पायावच्ची	२२३६	
अधवा पुरिसाइण्णा	२०६६	
अधवा वि समासेण	६८६	
अधवा सो तु विगडण	१२५६	
अधिकरणमतराए	१०८६	
अधिकरणमारणाणी	१३२४	
अधिकरण रायदुट्ठे	१०५१	
अधिकरण कायवहो	४ १५	
अधुवम्मि भिक्खकाले	४८३०	
अन्नतरपमादजुत्त	६०६६	
अन्नागकुनित्थिमते	३७०१	
अन्नो पुण पल्लातो	३३२४	
अपडिक्कमसोहम्मे	२१६६	
अपडिहणता सोउ	३०२६	
अपडुप्पण्णो बालो	३७२८	
अपरिक्खउमायवए	४७१	
अपरिग्गहम्मि बाहिं	१६२१	
अपरिग्गहित पलबे	४७८०	६२१
अपरिग्गहिते बाहिं	१६०८	
अपरिणामगमरणा	५६५१	
अपरिमितणेहवुड्ढी	४४८८	
अपरिमिते आरेण वि	१६५५	१६१३
अपरिहरतस्सेते	३ ६७	४२६८
अपहुच्चत्ते काले	४६०८	
अपुहत्ते वि हु चरण	६१६१	
अपुहत्ते अणुओगो	६१८५	
अपुहत्ते य कहेते	६१६५	
अपुहुत्ते व कहेते	६१८६	
अप्पग्गथ महत्थ च	३६२१	
अप्पच्चओ अकित्ती	१३५७	
,,	६२२४	७८५
अप्पच्चओ अवण्णो	३६८८	
अप्पच्चओ य गरहा	६०३८	
अप्पच्चय वीमत्थत्तण	२८१५	५७८१
अप्पच्छित्ते उ पच्छित्त	२८६४	६४२२
अप्पडिलेहऽपमज्जण	२७०	
अप्पडिलेहियदूसे	४००१	
अप्पतरमच्चियतर	६३	
अप्पत्तमइक्कते	१०७७	
अप्पत्त उ सुतेण	७५३	
अप्पत्ताण णिमित्त	३४४२	२८६५
अप्पत्तिए असखड	१०५	
अप्पत्तियादि पच य	११३	
अप्पत्ते अकहिता	३७५२	
अप्पत्ते जो उ गमो	४७७२	६१-
अप्पपरअणायासो	४३३८	
अप्पपर-परिच्चाओ	५८३४	४०१०
अप्प बिति अप्प ततिआ	१७२२	५७१४
अप्पभुणा तु विदिण्णे	११८०	५६१
अप्पभु लहुओ दियगिसि	११७८	३५५६
अप्पमलो होति सुची	६५६४	
अप्पा असथरतो	५८०८	

अप्पा मूत्तगरोग्	३७६	
अप्प हति पुराणानिताण	३२८७	
अप्पिगाह त गइ ल	७१८१	
अप्पुन्नमनिहिकरणे	४३४२	५६८
अप्पुव्व विचित्त-बहुस्सुना	१०५६	२७५३
अप्प मात्तम्मि य	४५४८	
अप्पोल मिउवम्ह	५८०१	३९७८
अप्फामगग दम	२०४९	५८५
अबलकर चक्खुहत	३३९२	
अबम्मुग अगीयत्थे	५४४८	
अबहुस्सुना यऽमद्धा	२७२०	
गबहु पन च पुन्सि	४८५	
य्ाशान बुडुाणे	४६१०	
अब्भक्खाण णिस्सकया	५४४५	
पन रहियम्म हरणे	३८८९	
अब्भ िन वास महिगा	२९१४	५८११
अन्म गेग मवाहिय	४३८८	
अभन ामललित्तो	६१७३	
अभनर च बाहि	७६४	
अन्ना त्थ गनुगा	८९३	
अभास व वमज्जा	१७५८	१७१
अभुज्जन आहारो	५५९५	
अ भुज्ज ामेगतर	७८१५	
अ भुट्ठ गो आमगा	२०३२	१९३३
,,	२१११	
अ भुट्ठ गो गुरुगा	२०३३	१९३८
अभुवगना य लाओ	२४७५	
अ भुगगगयवेरा	३२०१	
अभगिता काइ गा इच्छति	२९८१	१८८८
अभयागी पहनु	४९२७	
अभिओगविमकए वा	४६४६	
अभिओग करिलजो	५९९३	
अभिगाह मभोगो पुगा	२१ ८	
अभिगावपुराणगहित	४६११	
,,	४६१९	
अभिगावावामिट्ठामति	४१९९	
अभिणो मह वयपुच्छा	४८०८	१०४५
अभिधारेन पामत्यमादिणो	५४७६	५३८१
अभिमूता पुण भतिरो	३६४४	
अभिभूतो मम्मुज्झति	३६९८	५२१८
अभिगावमुद्ध पुच्छा	५४६७	५३७२
अभिहारेत वयतो	२७०५	
अमगणणाणऽवहार	२३१६	
अमणाणधणगरासी	६३८१	
अमिला अभिणदच्छिण्ण	४६९३	
अमिला ी उभयसुहा	४१९१	२५४५
अमुगत्थमुओ वच्चति	५४६६	५३७१
अमुग कालमणागत	५०३१	६३०
अमुग च णग्सि वा	५००९	
अमुगायरियमरिच्छाइ	५९८२	
अमुगिच्चय गा मु ज़े	५०१२	६१२
अमुग। अमुग काल	४३ ७	
अम्मा पिनमादी उ	१०७०	
अम्मापियरो कस्सति	३७३४	
अम्म ण वि जाणामो	४२८	
अम्हट्ठ ममारद्धे	४०८८	१८४
अम्ह नि करेनि अरती	२४४२	
अम्ह खमणा ण गणी	२६१९	
अम्हदाणी विमहिमो	५५९	४९ ५
अम्ह मो अकनमुहा	२६१३	
अम्ह मा आएमा	५६०	
अम्हे मा आदमा	५१४	
अम्ह मो कुनहीणा	२६११	
अम्ह मो जातिहीणा	२६१०	
अम्हे मो णिज्जरट्ठी	२९८८	१८९
अम्ह मो घण्हीणा	२६१५	
अम्हे मो रूवहीणा	२६१२	
अम्हे वि एतधम्मा	६६९९	
अम्हेहि तहि गणहि	९८७	१८८९
अय-एलि गावि महिसी	४००३	
अयते पप्फोन्त	५९२४	
अयमण्णो उ विगप्पो	२२०८	
अयमपरा उ विगप्पो	०३८०	
अयम इ पाया खलु	३७ ७	
अयमाइ आगगा खलु	७००९	
अयमाग्नी आगगा खलु	५९१७	

अयमादी लोहा खलु	२२६२	
अयसो पवयणहाणी	१६२३	
,,	१८७८	
,,	४६१४	
,,	५७६२	
,,	६२३३	
अयसो य अकित्ती य	३६७६	५१६२
अयसो य अकित्ती या	३५८६	५१६२
	३६५६	५१६२
,,	३६६८	५१६२
,,	३७०४	५१६२
अरिमिल्लस्स व अग्गिसा	६३२	३८६४
अलभंता पवियार	२५०८	६३६२
अलस घसिर सुचिर	१६४०	१५६२
अलस भणंति बाहिं	६३५६	
अवन गामादि गिलाण	४०१७	८३६
अवरण्ह गिम्हकरणे	२०३६	१६८८
अवराहपदा सव्वे	१६८७	
अवराहे लहुगतरो	६७८३	[illegible]
,	५१३८	२४८८
अवरोप्पर सज्झिलिया मजुत्ता	४४६४	
अवरो फम्मगमुंडो	१२८	५०२०
अवरो वि [illegible]	१३६	५०२१
अवरा वि य [illegible]	५७६२	
अवलक्खणेग [illegible]	७६२	
अवलक्खणेगगहिते	७६५	
अवलक्खणेगवधे	७५६	
अवलक्खणेग बधे	७५०	
अवलक्खणो उ उवधी	७६४	
अवस्सगमणं दिस्सासु	२६६	०६७
,	८८३	६०६७
अवसा वर्मास्स कीरंति	१५३०	
अवसेसा अणगारा	३६१७	
अवसेस पुण अणला	३७३६	
अवसो व रायदंडो	६६०१	
अवहंत गोण मरणे	३१८३	
अवि अवखुज्जत पारेणा	६२८	३८६०
अवि आमियम्मि लग्गा	२८४३	[illegible]
अविकिट्ठकिलामत	६३६७	
अवि केवलमुप्पाडे	१४२	५०२४
अविकोविता तु पुट्ठा	१७७०	३७८९
अविणाम होति सुलभो	४४२६	
अवितहकरणे सुद्धा	६२१६	७८०
अविदिण्ण पाडिहारिय	३३१	
अविदिण्णोवहि पाणा	३६६८	३८११
अविधि अणुण्णवेंते	२१४४	
अविमायर पि सद्धिं	३४४	
अवि य हु कम्मद्दण्णा	५१६२	५५३२
अवि य हु जुत्तो दंडो	२१८	
अवि य हु बत्तीसाए	६५१८	
अवि य हु विमोहितो ते	६६८	
अवि य हु स वपलवा	४८५५	६६५
अवि य हु सुत्ते भणिय	६४०३	
अविरुद्धा [illegible]	३३५४	२७६५
अविरुद्धा सव्वपदा	२१०६	
अविसिट्ठा आवत्ता	२८७५	
,	६५८६	
अविसुद्ध ठाणे काया	१६२६	
अविसुद्धस्स तु गहणे	१८८०	
अविसुद्ध पलब वा	४४४	
अविस्सस दवत-णिमित्तमादी	२५६	
अविदेसिमनमदिट्ठे	२२२	
अविमत्ते वि तिमसो	६६६४	
अविरिस्स बमचारी	६७६	
अव्वत्ते य अपत्ते	६२२६	७८८
अव्वज [illegible] खलु	६२३७	
अव्वाउलाण णिच्चोउयाण	६१६५	
अव्वोच्छित्ति णिमित्त	१५०४	
,,	१५०६	
,	१५१३	
	४३२४	
,	४१६८	
,	४२०३	
असज्झाय तु दुविह	६०७४	
असमत्ता [illegible] मोही	२७२९	
अस[illegible] नउरो	२५००	६३८५

अमणादि दव्वमाणे	१६५४	१६१२
अमणादी वा ऽऽहारे	२३४७	
असणादी वाहारे	२५५८	
असणे पाणे वत्थ	११५३	
असति गिहि णालियाए	१६८	
,,	४२५३	५६६२
असति तिगे पुण	५८७८	४०५३
असति वसधीए वीस	१६६०	१६१८
,,	११५०	३५३१
असति विहि णिग्गता	१६८३	
असति समणाण चोदग	५०७६	२८२१
असती अवाकडाण	५११	४६०८
असती एव दवम्मि तू	१६६३	१६२१
असती गच्छामि जगा	३७३	
असती त गम्ममाणे	३४५३	
असती य परिग्गहस्स	१६४	
असती य भद्दओ पुण	४ ७६	
असती य भेसण वा	१३७२	४६३६
असती य मत्तगस्सा	५४१	
असती य लिंगकरण	१६६१	
,	५१२२	
असता य सजयाण	५६२७	
असती विगिंचमाणे	४६८६	
असत्तूण्ण खोम रज्जू	६५३	२३७६
असन्नोणे पसुपिंड	११८४	३५६५
असमाही ठाणा खलु	६४६३	
असरीरतेणभंगे	१३५०	५७६
असहाओ परिमिल्लत्तण	५४७६	५३८४
असंथर अजोग्गावा	३८५१	
असपत्ति अहालदे	५३२६	२४०३
असिद्धी जति णाएण	४८६७	१००६
असिवगहित नि का उ	३४४	
असिवगहिता तणादी	३४३	
असिवाइकारणेहिं	३१५२	४२८३
असिवातिकारणेण	५०३७	
असिवादिकारणगता	१२२५	
असिवादिकारणगता	२४११	
असिवादिकारणेहिं	३८४७	
,,	५४८०	
असिवादीकारणितो	४५७७	
असिवादी मुक्कधारणम्	४८१२	६५३
असिवादिहि गया पुण	५५४१	५५४२
असिव अगम्ममाणे	१६५६	३०६४
असिवे ओमोदरिए	३४२	
,,	४५८	
,,	१४५४	
असिवे ओमोयरिए	७२६	४०५७
,,	७४७	
,,	७७३	४०५७
,,	७७८	
,,	८१२	
,,	८१४	
,,	८१५	
,,	६८४	
,,	१००७	
,,	१०२१	१०१६
,,	१४३७	
,,	१४६२	
,,	१४८१	
,,	१४६०	
,,	१८४७	
,,	१८५३	
,,	२००७	
,,	२०१२	
,,	२०२४	
,,	२०४४	
,,	२०६१	१०१६
,,	२६६०	
,,	२६८४	
,,	२६६७	
,,	२६६८	
,,	३१०४	२००४
,,	३१२७	२७४१
,,	३१४६	
,,	३१६१	

अमिवे ओमोयणि	३-०९		,	५६६३	
,,	३२९६	४०५८		५८८२	४०५७
,,	३३४२			५९५३	
	२३५५	२००२	,	५९५७	
,	-४८७		,,	५९६२	
,,	२४९१		,	५९६७	
,	३९०५	१०१९	,,	५९७६	
,	४०५९		,,	६०२६	
,,	४१११		,,	६०७२	
,,	४११८		,,	७३४	
,,	४२०७		असिवोम-दुट्ठ-रोधग	१९१२	
,	४२८१		असिवोमाईकाले	६२३६	
,	४३०१		अमिवोमाधयणेसु	६११४	
,	४३१७		असिक्टकविसमादिसु	१००	
,	४३९५		अस्सजतमतरते	१०१	
,,	४४०३		अस्सजमजोगाण	४४३७	
,	४४०९		अस्सजय-लिगीहि तु	४७४५	८८७
,,	४४१७		अस्सजयाण भिक्खू	४३६१	
,,	४४३१		अह अत्थिपदवियाग	३२५७	४२८७
,,	४४३८		अह उग्गहणतग	१४००	
	४४४३		अह जाग्गिसओ दमो	४३६०	
,,	४४५४		अह जे य धोयमइल	२२७८	
,,	४४६७		अह निरिय-उडढलोगा ग	६५	
,,	४४८५	४०५८	अह दूर गतव्व	४४१	
,,	४६१३		अह पुण णिव्वाघाय	६१२१	
,,	४६३१		अह मागमिगी गरटा	२७२५	४७३७
,,	४६५४		अह वायगाति भण्णति	२६३०	
,	४६५८	४०५७	अह सउदगा उ सेज्जा	५२२८	
,,	४६७१		अह सिक्खयतय पुण	६४५	
,,	४६८२	४०५७	अह मा निवायपत्तो	३९६९	
,,	४६८८		अहग मिन्दिस्सामी	६७२	
,,	४८८	१०१९	अहभावदरिसणम्मि वि	२२५३	
,,	४९३८		अहभावमागतेण	४०३२	
,,	४९९९		अहमेगकुल गच्छ	३१५	६०८६
,,	५४१९		अहय च मावराही	६३१०	
,,	५९ ०		अहव अबभ जत्तो	५११४	२४६६
,,	५२५४	०८४	अहव जति अत्थि थेरा	२७४४	

अहव जदि अ[illegible] य था[illegible]	१५८[illegible]	
अहव ण कत्ता सत्था	[illegible]	[illegible]
अहव ण पुट्ठा पुव्वण	[illegible]६	[illegible]८०
अहव ण मेत्ती पुव्व	[illegible]	
अहव ण मद्धा विभव	[illegible]६५[illegible]	६[illegible]०
अहव ण हट्ठ गान[illegible]	८१[illegible]	
अहवा[illegible]जत प[illegible]सि[illegible]	[illegible]६२	
अहवा अकुमिरगहणं	[illegible]२३१	
अहवाऽ[illegible]मट्ठु[illegible]नभुवण[illegible]	६६[illegible]	
अहवा अवीभूत	३२२६	[illegible]
अहवा आगादि[illegible]र ह[illegible]	[illegible]	[illegible]४८५
अहवा आह [illegible]	[illegible]१५६	[illegible]
अहवा ऽहारे पून[illegible]	८०[illegible]	
अ[illegible] उम्मग्ग [illegible]गिय	२[illegible]	
अह[illegible] [illegible]गाहणो	[illegible]७०६	[illegible]
अ[illegible] ण[illegible] [illegible]	[illegible]	
अहवा [illegible]सुद्ध	[illegible]	
अहवा [illegible]मत [illegible]मो	[illegible]	
अहवा [illegible]मद तवा	[illegible]	
अहवा आमट्टहउ	४०५[illegible]	[illegible]
अहवा [illegible]नस्स गुण[illegible]	६६८६	
अहवा गुण्णा गुण्णा	[illegible]९०	[illegible]
अहव[illegible] चिर वमत्ता	[illegible]	
अहव[illegible] ठ[illegible] दिवसाह	[illegible]५[illegible]	
अहवा ज वड्ढाट्ठि	[illegible]६६४	
[illegible]हवा ज भुस्यत्ता	[illegible]६[illegible]	[illegible]००[illegible]
[illegible]हवा ण चव वज्जभ[illegible]	[illegible]	
[illegible]हवा ण मज्ज जन्न	[illegible]६	
अहवा ततिते [illegible]मो	[illegible]०	[illegible]
अह[illegible] तिगमा[illegible]नवा[illegible]	८[illegible]	
अहवा नि[illegible] ण मि[illegible]णा	[illegible]०६[illegible]	
अहवा नमि ततिय	[illegible]	[illegible]
अहवा दृग य [illegible]वग	[illegible]६[illegible]	
अहवा पम्मे [illegible]रा	[illegible]०	
अहवा पम्मे दिवस	[illegible]	
अहवा प [illegible] [illegible]ग्रा	[illegible]	
अहवा पचा[illegible] म[illegible]तीण	[illegible]	[illegible]४०६
अहवा पानपनीति	[illegible]	७०६
अहवा [illegible]म्मय	[illegible]	[illegible]
अहवा [illegible]मक्खुस्सव	५२३१	२४०५
अहवा महानि[illegible]म्मि	[illegible]२६	
अह[illegible] र ग [illegible]हणता	६६८	[illegible]८६[illegible]
[illegible]वा [illegible]णिसरणग [illegible]	६५२२	
अ[illegible]वा वाता तिविहा	११६	
अहवा वि अ[illegible]यत्था	[illegible]८००	६[illegible]१
[illegible]हवा वि असिद्धम्मि य	[illegible]६	२०४०
अ[illegible]वा [illegible] [illegible]आरोग	[illegible]८८०	४०५५
अहवा वि [illegible]लवद्ध	५७७४	
अहवा सच्चित्तकम्मे	[illegible]५६०	
अहवासमणाऽसजय	[illegible]७४७	८८६
अहवा सय [illegible]लागा	६२४८	
अहवा मावक्खितर	६६५[illegible]	
अहवा मिक्खासिक्ख	[illegible]७	
अहवा सुत्तनिब[illegible]गो	६[illegible]०	
अहिकरण भद्दपता	[illegible]३७६	
अहि[illegible]रणमहाकरण	२७७[illegible]	
अहिकरणमतराग	[illegible]३१[illegible]	२[illegible]८७
अहिकरण विगति जाग	६३२७	
अहिकिच्च असुभाता	३३२४	
अहिगरण गिह[illegible]गेहि	[illegible]३५	[illegible]५६६
अहिगवजणगो मून	[illegible]	
अहिमामओ उ काले	६६	
अहियम्म इमे दामा	५८६६	[illegible]०७[illegible]
अहियामिया नु अतो	६११६	
अहिरण[illegible]गच्छ भगव	३०४३	[illegible]६४४
अहि विच्छुग [illegible]मकट	[illegible]०[illegible]०	३८[illegible]
अहुणुट्ठिय च अग-	[illegible]३८२	
अहारत्त मतवीस	६२८४	
अकम्मि व भूमाग	१२ ७	
अक पलियक वा	२३१०	
अगार उवगाग	५६[illegible]	
अगुद्दु पोरमत्ता	[illegible]२७	
अगुनिकामे पगा[illegible]	[illegible]२[illegible]	८५
अ[illegible]गातवट्टण [illegible]	[illegible]३[illegible]	
अ[illegible]गा मम्म[illegible]	[illegible]	
अज[illegible]जणा [illegible]हमा[illegible]तन्न	[illegible]	[illegible]

अजग ा-दहिमुग्गाग	४२	
अडयमुज्भिय कप्प	५१०६	
अन गारा अमती	१ ४३	७६६
अतम्मि व मज्भम्मि व	७९	४८१
अ ार गिमतिश्रो वा	१ ४७	
अनरप ीगहित	४१६३	१२१२
अनरपल्ती तहुगा	२८७	
अनररहिताणतर	४२५८	
अत न हाइ देय	५८४४	४०२०
अनेउर च तिविध	२५१३	
अतो अलब्भमाणेमरणमातीसु	२३६१	४८२८
अनो अहारत्तस्स उ	५०७०	
अनो श्रावसामादी	०३३१	८७१
अना गिह खलु गिह	१२३०	
अना गियम ी पुग	१४०	४०८७
अना र-सक्खीय	२८४८	
अत। बहि कच्छ-पुडादि	११६१	२५७२
अना बहि च धोत	६१०२	
अना बहि च भिणर	७१०५	
अना बहि ग लब्भति	६६०	१८६५
,,	६६५	१८६
,,	६६६	१८६८
अना बाहि व दड्ढ	१८५०	
अनो मणे किरिसिया	१६६९	
अतावस्सय बाहि	१०२५	
अता वहि सजोयणा	०२०	
अ कारा पदीवेण	४८९	१ ०७
अब केण निउणा	०९	
अबगमादी पक्क	४७०	

आ

आइण्ण पिसित महिगा	२१८०	
आइण्णमणाइण्ण	१४८०	
आइण्णमणाइण्णा	८६९	
,,	४७१	
,,	१४६१	
आइण्ण लहुसएण	६	
,,	६	
,,	९०६	
	९०७	
आइण्णा बहगणा	६०५	
आइण्णे रयणाइ	२५१०	६३९४
आइण्णो लहुसकारणा	६०२	
आउक्काए तहुगा	९२४०	२४१५
आउग्गहस्सेत्ताश्रा	२१८५	
आउ ज्जानण वी	५२२	२५६०
,	१२०७	२५८७
आउट्ट जणो मरुगाग	१ ४४	२०१८
आउट्टिया वराह	६१७४	
आउत्तपुव्वभगित	५१३३	
आउरणाउणम्मी	३१४७	
आउ बल च वड्ढति	३३६५	
आऊ अग ी वाऊ	२४०५	
आऊ तऊ वाऊ	३१३०	२७१८
आगम विसवाद	२६६२	
आकडढणमाकसण	६०	
आकपिता णिमित्त गा	२६६४	
आकपिया णिमित्तेण	४४०६	
आगम गम कालगते	४५६०	
आगमसुयत्रवहारी	६३६३	
आगम्मिय परिहरता	४७८६	६२७
आगरणादी कुडगे	५८५६	४०३४
आगर पल्लीमादी	५८६०	४०३५
आगतागारादिसु	२३१२	
आगतागारादा	४६५२	
आगतागारेसु	१०४६	
,,	१४५८	
आगतारागारे	२३४२	
आगताराद।सु	१४३२	
आगतु अहाकडय	५५६२	
आगतु एतरो वा	१८६२	
आगतुएसु पुव्व	२२४४	४२२६
आगतुग तज्जाना	४८५२	
आगतुग तज्जाया	४८११	
आगतुग तु वज्ज	२४५	
आगतुगागि गारण य	१८	१८

आगतु तदुत्थेण व	२१५१	
आगतु पउगा जायगा	०६६	१८५८
आगाढ फरुसमीसग	४२८३	
,,	४६९१	
आगाढमणागाढ	४८८८	१०२६
आगाढमणागाढे	४२१	
,,	१५६४	
,,	३१०७	
आगाढ पि य दुविह	२६०७	
अगाढे अण्णलिग	५७२४	२१३६
आगाढे अहिगरणे	२७६१	२७१३
आगारमिदिएण	२३३५	
आगारिय दिट्ठ तो	६५११	
आगारेहि सरेहि य	६३९८	
आघातादी ठाणा	४१३५	
आचडाला पढमा	१४७३	३१८५
आचेलक्कुद्देसिय	५९३२	६३६८
आगयणे जा भयणा	१३०६	८६०६
आणद अपडिहय	२६९०	
आणाइणो य दोसा	२८३६	
आणाए जिणवराण	५४७२	५३७७
आणाए ऽ मुक्कधुरा	१०२३	
आणाए वोच्छेदे	६७०	
आणादिणो य दोसा	५७४०	३२७१
आणादिया य दोसा	२३५८	
,,	२७३५	
आणादि रसपसगा	४९०४	१०३७
आणाभगे णाण	६६९३	
आणुगदेसे वासेण विणा	४९२४	
अ न्तर परतर वा	६५४०	
आततरमादियाण	६५५६	
आत पर मोहुदीरण	१४९८	
,,	१५१७	
आतपरे वावन्नी	५९०४	
आतपरोभावणता	१४५२	
आतवय च परवय	१०४२	
आतविसुद्धीए जती	१३२	
आतसमुत्थमसज्झाइय	६१६४	
आतर्गविप्पमुक्का	११७८	
आतावणा तह चेव उ	५३४२	
आतावणा साहुस्सा	५३४५	
आतियणे मात्तूण	५६७०	
आदरिसपडिहता	४३२१	
आदाणे चलहत्थो	४८९	
आदिग्गहणेण उग्गमो	४३५	
आदिभयणाण तिण्ह	१६६७	३६९१
आदीअदिट्ठभावे	६२१३	७६४
आदेसगा पचगुलादि	५३	
आधाकम्मादी णिकाए	१०८१	
आधारोवधि दुविधो	११५२	
आपुच्छण आवस्सग	५२५	२५९०
आपुच्छणाकितिकम्मे	६१२७	
आपुच्छित उग्गाहित	११५५	३५३६
आपुच्छिय आरक्खिय	२३९२	४८२९
,,	३३८५	२७८६
आभरणगिए जाणसु	५२१०	२५६३
आभिग्गहियत्ति कए	१५४९	
आभिग्गहियस्सासति	१२४८	
आभोएत्ताण विदू	२५७४	
आभोगिणीय पसिणेण	१३६९	८६३३
आमज्जणा पमज्जणा	१५१६	
आमफलाइ न कप्पति	४७५७	८९९
आमति अब्भुवगए	५२८८	३४११
आमे घडे निहित्त	६२४३	
आयपरउभयदोसा	३७८२	
आयपर-पडिक्कम्म	३८१७	
,,	३९३७	
आयपर-मोहुदीरणा	१२१	
आयपराभयदोसो	५३०	२५९५
आयरिआ अभिसेओ	८७१	५११०
आयरिए अभिसेए	२५८१	६३७७
आयरिग अभिसेगे	६०२०	४३३६

आयरिए उवज्झाए	५५७४	५६०
आयरिए उवज्झाय	२७६१	५४७८
आयरिए कह मोही	६६२८	
आयरिए कालगते	१५०२	५६०६
आयरिए णालत्तो	८८-	६१०७
आयरिए दोण्णि आगत	१४८७	५-९२
आयरिए भणाहि तुम	४५१२	
आयरिए य गिलाणे	३०	१८७
,,	२११६	,,
,,	११२६	
,,	१६२५	५०८७
आयरिओ आयरिय	२८-	
आयरिआ गण गण भणे	२७६४	१०८
आयरिओ तरिमओ	६८१३	
आयरिआ चउमास	२८०३	५७६८
आयरिआ वि हु निहि	१५७१	
आयरितो कुडिपद	२६३२	
आयरितो पवत्तिणीय	४६०७	
आयरिय अभावित	११०८	
आयरिय उवज्झाए	३३७६	
,,	५५७८	५४७६
आयरिय उवज्झाया	२७३५	२७८०
आयरियपादमूल	३८५६	
आयरिय बालवुड्ढा	१६२४	
	५८६६	
आयरिय वसभ-अभिसेग	४६३३	१०७०
आयरियसाधुवदण	१०५५	२७५२
आयरियादीण भया	५४५५	
आयरियादी वत्थु	४८१४	६५५
आयरिया भिक्खूण य	३४१७	
आय कारणमागाढ	४८१०	६५१
आयबिलणिव्वितिय	६२४७	
आयबिलस्स लभे	१६०७	
आय तु हत्थ पाद	६३५	
आया सजम पवयण	१२४१	
आयारपकप्पस्स उ	२	
आयारविणय गुरुकप्पमादीवणा	३८६५	
आयारे अगहीत	५१६६	
आयारे चउसु य	७१	
आयारे णिक्खेवो	४	
आयारो अग्ग चिय	३	
आतुर तुरिणामट्टम्मि	४८७०	१००६
आरक्खितो निमज्जति	३३८६	२७८७
आरभडा सम्मद्दा	१४२८	
आरभनियत्ताण	१०६५	२८०६
आराम माणकीते	४७६४	९०६
आरिय-आरियसकम	५७३०	
आरियमणारियसु	५७२६	
आरुवणा जति मासा	५४८४	
आरुहणे ओरुहणे	४८३५	९७५
आरोवण उद्दिट्ठा	६४३८	
आरोवणा जहण्णा	६४०५	
आरोह परीणाहो	२४१०	२०५१
आलत्ते वाहित्त	८६२	
आलावण पडिपुच्छण	१८८७	
आलंबण तु दुविह	६२२	
आलंबणे विसुद्धे	२०६२	
,,	३२६२	
,,	५८१२	३६८६
आलावण पडिपुच्छण	२८८१	५१३७
,,	६५६६	,,
आलावा देवदत्तादि	८६४	
आलिहण-सिंच-तावण	२४२४	
आलिंगणावतासण	५१८	
आलिंगते हत्थादिभजणे	५१७६	२५२६
आलीढ पच्चलीढे	६३००	
आलोगम्मि चिलिमिणी	६१६२	
आलोयण तह चेव तु	६२३६	
आलोयण त्ति य पुणो	६६२७	
आलोयणाविहाण	५१७८	
आलोयणापरिणओ	५२१२	
आवडणमादिएसु	३०२१	१६२४
आवण्णो इदिएहि	६५५८	
आवरितो कम्मेहिं	५६१	४८२७

आवरिसायण उवलिपत	२२१६	
आवस्सिया णिसीहिय	२११	३४२८
,,	५३८	४४२८
,,	६१३६	
आवहति महादोस	३९७५	
आवात तध चेव य	८२१	
आवाय णिव्वाव	१०२	
आवासग कातूण	६१२४	
आवासग छक्कण्या	३५५०	
आवासग परिहाणी	४३०	
आवासगमादीय	६१८०	
आवासगमादीया	५२१६	६७६
आवासग सज्झाए	४३४६	३१६२
,,	६३४३	
आवासग अणियत	४३४७	
आवास बहि असती	२२४	३४५४
,,	५२९१	,,
आवास-सोहि अखलत	५०१६	६१६
आवासित व बूढ	६११३	
आवासियमज्जणया	६२३२	
आसकरणादि ठाणा	४१३२	
आसगतो हत्थिगतो	६२५	३८५७
आसज्जणिसीहियावस्सिय	४२३	५५८८
आसण्णगतो भयमायती	६७६	
आसण्णमुक्का उट्ठिय	२५५२	
आसण्णुवस्सए मोत्तु	११३५	
आसण्णे परभंगितो	४५५४	
आसण्णे साहति	१७६६	
आसण्णो य छणूसवो	५२७६	३३५५
आसकन्नेरजगाण	१८२६	
आसंदग-कट्ठमओ	१७२३	३७४५
आसंद पीठ मचग	५६५१	
आसाढ-पुण्णिमाए	३१४६	४२८०
आसाढी इदमहो	५०६५	
आसाए य हत्थीण य	२६०१	
आसासो वीसामो	१७४८	३७७१
आसा हत्थी खरिगाति	३६६८	

आसि तदा समणाणं	१८४६	
आसित्ता उसित्ता	३०४	११११
आसण य निहुतो	९६	
आहच्चुवातिणावित्त	४१६२	५४८१
आह जति णमेव	४६१४	
आहा अधे य कम्मे	२६६	५७१
आहाकम्म सइ घतो	५६६४	
आहाकम्मिय पगाग	२८२५	
आहाकम्मुद्देसिय	२५०	४२७५
आहाकम्मे तिविह	४६६२	
आहातच्च-पदागो	४२००	
आहारउग्गमण	१८०१	
आहारउ भवो पुण	५७२	
आहार उवहि दव्व	५७८१	
आहार उवहि देहे	४३५६	
आहार उवहि निभन्न	२११८	
आहार उवहि सेज्जा	४५७६	
,,	५६३४	
,,	६२८८	
आहारदीणऽसती	६२३५	
आहारमणाहारस्स	१८३५	
आहारमतभूमा	२२८७	
आहारमतरेणाति	१२४	
आहारविहारादिसु	११	
आहारादीणट्ठा	४३५३	
आहारादुप्पादण	२४१२	
आहाराद्धुवभोगो	२४२१	
आहारे जो उ गमो	५८६४	
आहारे ताव छिंदाहि	३८६८	
आहारो व दव वा	४१६६	
आहारोवहिमादी	४५०६	
आहिंडए विवित्ते	२११५	
आहिंडति सो णिच्च	२७१६	
आहेण दाणाइत्तगाण	२४८०	

इ

इच्छ अणुलोमणे तेसि	५५७	
इच्छा-णुलोमभाव	३०२६	११२६

इच्छामि कारणेण	१६१३	
इट्टग-छगम्मि परिपिंडिताण	४४४६	
इट्ठ-कलत्त-विओगे	१६८७	३७११
इतरह वि ताव गरुय	८४०	
इतरेसिं गहणम्मी	२४८५	
इतरेसु होति लहुगा	२१०५	
इत्तरोवि य पतावे	४४६६	
इतरिओ पुण उवधी	१८३५	
इत्तरिय पि आहार	३२१५	
इति एस अणुण्णवणा	११८१	
इति चोदगदिट्ठ त	१३८०	
इति दप्पनो अणाइण्ण	४८६३	
इनि दोसा उ अगीते	४८०९	
इति सउदगा तु एसा	५३०९	
इति सदसण-सभासणे हैं	१६८९	
इत्थि-परियार-सद्द	२०१५	
इत्थि पडुच्च सुत्त	२४६९	
इत्थिकह भत्तकह	११	
इत्थिकहाओ कहेति	३५८३	५१५९
इत्थी जूय मज्ज	४७९९	९४०
इत्थी णपुसको वा	१९१४	
इत्थी पुरिस नपुसग	५०३८	६३७
इत्थीण मज्झम्मी	२४३०	
इत्थीणातिसुहीण	२४३३	
इत्थीमादी ठाणा	४१३७	
इत्थी सागारिए	५१९९	२५५२
इत्थीहि णाल-बद्धाहि	१७६४	
इधरध वि ताव सद्दे	१७७२	
इधरह वि ताव गरय	८२८	
इम इति पच्चक्खम्मी	२५८९	
इय सत्तरी जहण्णा	३१५४	८२८५
इय विभणिओ उ भयव	१७८०	
इयरह वि ता ण कप्पति	५०९२	
इरिएसण-भासाण	३१७६	
इरिय ण सोधयिस्स	४८८	
इरियावहिया हत्थतरे	६१४१	
इरियासमिति भासेसणा	३६३३	
इस्सरनिक्खतो वा	५८४२	
इस्सरसरिसो उ गुरू	६६२६	
इस्सालुए वि वेदुक्कडया	३५९३	
इह परलोए य फल	४८१६	९५७
इहलोइयाण परलोइयाग	३११२	
इहलोए फलमेय	६१७८	
इह लोगादी ठाणा	४१४०	
इह वि गिही अविसहणा	२८४४	
इहरह वि ता न कप्पइ	६०३२	
इहरह वि ताव अम्ह	५२६८	३४०१
इहरह वि ताव गघो	६०५०	
इहरह वि ताव लोए	३३११	
इहरा कहासु सुणिमो	५२६३	३४२३
इहरा परिट्ठवणिया	५०६७	२८१२
इहरा वि मरति एसो	५६९९	३११४
इगाल-खार-डाहो	१५३७	
इ दमहादीएसु	२४८०	
इदमहादीसु समागएसु	३१३३	२७४५
इदियपडिसचारो	३८७८	
इदियमाउत्ताण	६१४६	
इदिय सलिंग णाते	४३६	
इदियाणि कसाये य	३८५८	
इदेण बभवज्झा	४१०१	१८५८
इधणधूमे गधे	८०५	
,,	४७१०	८४१
इधणसाला गुरुगा	५३९२	३४४७

ई

ईसर-तलवर-माडबिएहि	२५०२	६३८६
ईसर भोइयमादी	२५०३	६३८७
ईसरियत्ता रज्जा	५१६०	२५१०
ईसिं अधोणता वा	३७७१	
ईसिं भूमिमपत्त	३४७८	

उ

उउबद्धपीढफलग	४३४८	
उक्कोसओ जिणाण	१४१०	४०९३
उक्कोसगा तु दुविहा	८०	
उक्कोसनिसामासे	६९०	
,,	५८३८	४०१४

उक्कोस माउ-भज्जा	५१६७	२५१७
उक्कोसं विगतीओ	३४६०	२९१२
उक्कोसाउ पयाओ	६५४६	
उक्कोसेण दुवालस	६०९२	
उक्कोसो अट्ठविधो	१४१२	४०९५
उक्कोसो थेराणं	१४११	४०९४
उक्कोसो दट्ठूणं	३५१२	
,,	३५४७	
उक्कं.सोवधिफलए	१०१९	
उक्खिप्पत्तगिलाणो	३०७९	१९७८
उग्गम उप्पादण	२०७३	
उग्गम उप्पायण	१८३३	
,,	४९७२	
,,	२०९७	
,,	४९९३	
उग्गमदोसादीया	४७१६	८४६
,,	४९७४	
,,	४९९५	
उग्गमविसुद्धिमादिसु	५९३५	
उग्गममादिसु दोसेसु	४११०	
उग्गममादी सुद्धो	१२७५	
उग्गयमणसंकप्पे	२८९६	५७९३
उग्गयमणुग्गए वा	२९२६	५८२३
उग्गयवित्ती मुत्ती	२८९३	५७८८
उग्गहणंतगपट्टे	१३९८	४०८२
उग्ग.धारणकुसले	३०१६	१९१९
उग्गातिकुलेसु वि	४४१५	
उग्गिण्णादिण्ण अमाये	२८४९	
उग्घाताणुग्घाते	६४२१	
उग्घातियमासाणं	६५४४	
उग्घातियं वहंते	२८६८	
उग्घातिया परित्ते	४७२३	८६२
उग्घायमणुग्घातो	३५३४	
उग्घायमणुग्घायं	२८६१	
,,	३५३३	
,,	३५५४	
उग्घायमणुग्घाया	६६७५	
उग्घायमणुग्घायो	६६४५	

उच्चत्तभत्तिए वा	६००२	
उच्चत्ताए दाणं	४४९२	
उच्चसर-सरोसुत्तं	२८१८	
उच्चारपासवणखेल मत्तए	३१७२	
उच्चारमायरित्ता	१८७३	
,,	१८८०	
उच्चारं पासवणं	१७३२	३७५३
उच्चारं वोसिरित्ता	१८७७	
उच्चाराति अथंडिल	३७५१	
उच्चारे पासवणे	१७५४	३९७७
उच्छवच्छणेसु संभारितं	५२७७	
उच्छाहितो परेण व	४४४५	
उच्छाहो विसीदंते	२६९१	
उच्छुढसरीरे वा	४०५१	
उच्छोलणुप्पिलावण	१८८१	
उच्छोल दोसु आघंस	४६४१	
उज्जाणट्ठाणादिसु	४९५८	
उज्जाणऽट्टालदगे	२४२६	
उज्जाणरुक्खमूले	३८७९	
उज्जाणा आरेणं	४१७०	५२८९
उज्जाणाऽउहणूमेण	५७४२	३२७३
उज्जाणातो परेणं	४१८२	५३०२
उज्जालज्भंपगाणं	२१९	
उज्जुत्तणं से आलोयणाए	२६८०	५३५६
,,	२६८१	५३५७
उज्जोगफुडम्मि तु	४३२०	
उट्ठ-णिवेसुल्लंघण	५९६	
उट्ठेज्ज णिसीएज्जा	२५८५	५६०८
,,	६६००	,,
उट्ठेतं निवेसंते	३५५२	
उडुबद्धिगमेगतरं	१२३८	
उडुबद्धे रयहरणं	७०९	
उडुमासो तीसदिणो	६२८५	
उडुवास सुहो कालो	८६०	
उड्डाहरक्खणट्ठा	३२१	
उड्डाहं च करेज्जा	५२६६	३३४५
उड्डाहं व कुसीला	४०२	
उड्ढमहे तिरियम्मि य	३१६३	४८४१

उड्ढस्सासो अपरिक्कमो य	३६३१	
उड्ढ थिर अतुरित	१४३१	
उड्ढे केण कतमिण	१२६६	
उड्ढे वि तदुभए	१९३८	
उण्णातिरित्तमासा	३१४८	
उण्णियवासाकप्पा	३२०६	
उण्णिय उट्टिय वावि	५८०२	
उण्णोट्टे मियलोमे	७६०	
उण्होद-छगण-मट्टिय	४६३४	
उत्तण ससावयाणि य	३१३६	२७४७
उत्तादिण सेसकाले	६३८८	
उत्तरकरण एगग्गया	३२१६	
उत्तरगुणातिचारा	६५२९	
उत्तरणम्मि परूविते	४२२५	५६३५
उत्तरमाणस्स णंदि	८४९	
उत्तरमूले सुद्धे	१९९०	२९९४
उत्तर-साला उत्तर-गिहा	२४८८	
उत्तिगो पुण छिड्डु	६०१८	
उत्थाणो सहपाणे	१८७९	
उद्उल्ल मट्टिया वा	१८४८	
उदउल्लादीएसू	१८५१	
उदए कप्पूरादी	३७९१	६००१
उदए चिक्खल्लपरित्त	४२३१	५६४१
उदएण वातिगस्स	३५८९	५१६५
उदग-ग्गि-तेणसावयभएसु	४९२	
उदगसरिच्छा पक्खेणऽवेति	३१८९	
उदगतेण चिलिमिणी	५३४८	२४२२
उदगागणि तेणोमे	५९३८	
उदगागणिवातादिसु	३१३२	२७४४
उदरियमओ चउसु वि	५७४८	
उदाहडा जे हरियाहडीए	५८१६	३९९३
उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो	५७५८	३२८९
उदुबद्धे मास वा	४६८६	
उद्दद्दरे वमित्ता	२९=४	५८३०
उद्दद्दरे सुभिक्खे	१९६८	५०१८
,,	३४२६	,,
,,	४८८०	,,
उद्दाण परिट्ठविया	५४४	२६०९
उद्दावण णिव्विसए	४७६३	२५०१
,,	५१५१	,,
,,	३३७६	
उद्दिट्ठ तिगेगतर	५०१०	६१०
उद्दिट्ठमणुद्दिट्ठे	४५९३	
उद्दिट्ठाओ नईओ	४२०८	
उद्दिसिय मेह अतर	५००८	६०९
उद्दूढसेस बाहि	३४६३	२९१६
उद्देसगा समुद्देसगा	२०१९	
उद्देसम्मि चउत्थे	२३५०	
उद्देसियम्मि लहुगो	२०२२	
उद्ध सित्ता य तेण	१७८१	३८००
उद्धसियामो लोगसि	१५६५	
उद्धियदडो गिहत्थो	६४१७	
उद्धियदडो साहू	६४१७	
उपचारेण तु पगत	५८	
उप्पक्कमे गत्त	२२७२	
उप्पणकारणे गतु	३२७१	४३०३
उप्पण्णाणुप्पण्णा	३८६४	
उप्पण्णे अधिकरणे	१७०८	३७३०
उप्पण्णे उवसग्गे	३९४५	
उप्पण्णे णाणवरे	५७३६	३२६७
उप्पत्ती रोगाण	६५०४	
उप्परिवाडी गुरुगा	५६६०	३०६८
उप्पल-पउमाइ पुण	४८३८	९७८
उप्पात अणिच्छप्पितु	३५९	
उप्पादगमुप्पण्णो	१८१९	६११९
उप्पायणेसणासु वि	२०८४	
उब्बद्ध पवाहेती	६०११	
उब्भामगऽणुब्भामग	४०८२	१८३९
उब्भामग वडसालेण	१४०	५०२२
उभओ वि अद्धजोयण	३१६२	
उभयगणी पेहेतु	४९२७	१०६४
उभयट्ठातिणिविट्ठ	२४६६	२०७१
उभयधरणम्मि दोसा	४३३२	
उभयम्मि व आगाढे	१६०१	
उभयस्स निसिरणट्ठा	१२२९	
उभयो पडिबद्धाए	५४८	२६१४

,,	५४६	२६१५
उभयो सह-कज्जे वा	६५७	२३८०
उम्मत्तवायसरिस	५२४७	३३२६
,,	५३७०	३३२६
उम्मर कोट्टिवेसु य	५७१६	
उम्मादो खलु दुविधो	३६७०	
उम्माय च लभेज्जा	६१७७	
उम्माय पावेज्जा	३३४१	
उल्लम्मि य पारिच्छा	३७५६	
उल्लाव तु असत्तो	२६५५	
उल्लोम लहु दिय णिसि	११६८	३५७८
उल्लोमाणुण्णवणा	११६७	३५७७
उल्लोयण णिग्गमणे	५३५०	
उवएसो सघ.डग	१६८८	२६६२
,,	१६८६	२६६३
उवकरणपूतिय पुण	८१८	
उवकरणे पडिलेहा	२०८	३४६२
,,	५३८०	३४३४
उवगरण-गेण्हणे भार	५६४६	३०५७
उवगरण पुव्वभणित	५६५७	३०६५
उवग्गहिता सूयादिया	६६३	
उवचरग अहिमरे वा	२७६६	
उवचरति को गिलाण	२६७४	
उवजु जिउ णिमित्ते	३५५६	
उवदेस-अणुवदेसा	२६२८	५८२५
उवधिममत्ते लहुगा	३६०	
उवधी पडिलेहेत्ता	१४३८	
उवधी लोभ-भया वा	१३३३	
उवधी मरीर चारित्त	२४४६	
उववी सरीरमनाघव	११६५	
उवधीहरणे गुरुगा	१११	
उवभुत्त थेरसद्धि	२२३१	
उवभुत्तभोगथेरेहि	६११	
उवरिमसिण्हा कप्पो	१६०	
उवरि सुयमसद्दहण	६१८२	
उवरिं पच अपुण्णे	३२६६	४३००
उवरिं तु अप्पजीवा	१५७	
उवरि तु अगुलीओ	६१८	३८५०

उवरि तु पचभइते	६४६०	
उवरिं तु मु जयस्सा	८२२	
उवरिंसते लहुग	१२८२	
उवलक्खिया य उदगा	५२६१	
उवलजलेण तु पुव्व	४२३७	५६४७
उवसग-गणित विभावित	८६७५	
उवसग्गवहिट्ठाण	४३६४	
उवसमणट्ठ पउट्ठे	११७३	३५५४
उवसते वि महाकुले	३५३७	
,,	३५५७	
उवसतो रायमच्चो	३६७७	
उवसपयावराहे	२७६१	
उवसामितो गिहत्थो	२८४६	५५८०
उवस्सए य सथारे	१७००	३७२२
उवस्सग णिवेसण	३०६८	१६६६
उवहत उट्ठिय णायणे	३६७३	
उवहत उवकरणम्मि	३५७६	५१५४
उवहम्मति विण्णाणे	६२२६	
उवहयउग्गहलभे	४६०७	
उवहयमणुवहते वा	४६०५	
उवहिम्मि पडग साडग	३०६८	१६६७
उवहि सुत्त भत्त पाणे	२०७१	
उवही आहाकम्म	२६६४	
उवही य पूतिय पुण	८१०	
उवेहऽपत्तियपरितावण	३०८५	१६८४
उवेहोभासणकरणे	३०८६	१६८७
उवेहोभासण उवणा	३०८७	१६८६
उवेहोभासण परितावण	३०८६	१६८५
उवेहोभासण वारण	३०८८	
उव्वत्त खेल सथार	२६८४	१८८६
उव्वत्तणाणीहरण	३६०६	
उव्वत्तण परियत्तण	१७५६	३७८२
उव्वत्तणमप्पत्ते	५४६५	५३७०
उव्वत्तणाइ सथार	३८८४	
उव्वताए पुव्व	१६४६	
,,	१६५५	
उव्वरगस्स तु असती	३००२	१६०५
उव्वरगे कोणे वा	१३४४	५७०

उसिणे ससट्ठे वा	३०५२	१९५१
उसुकादिएहि मडेहि	४३८९	
उस्सग्गठिई सुद्ध	५२३६	३३१८
,,	५३५९	,,
उस्सग्गलक्खण खलु	३५७१	५१४८
उस्सग्गसुत किंची	५३५७	३३१६
उस्सगसुय किंची	५२३४	,,
उस्सग्गाती वितहे	५०२१	६२१
उस्सगा पइन्न-कहा य	२१३१	
उस्सग्गित-वाघात	८३८	
उस्सग्गियवाघाते	८४१	
उस्सग्गियस्स पुव्वि	८३३	
,,	८४७	
उस्सगे अववाय	६६७२	
उस्सग्गे गोयरम्मी	५२३७	३३१९
,,	५३६०	,,
उस्सग्गेण णिसिद्धाणि	५२४५	३३२७
,,	५३६८	,,
उस्सग्गेण भणिताणि	५२४४	३३२६
,,	५३६७	,,
उस्सग्गो वा उ ओहो	६६६८	
उस्सीसग-गहणेण	२१९५	
उस्सुत्तमणुवइट्ठ	३४९२	
उस्सेतिम पिट्ठादी	४७०९	८६०
उस्सेतिममादीण	४७१३	
उस्सेतिममादीया	५९९६	
उहाए पण्णात	५६१०	

ऊ

ऊणट्ठे णत्थि चरण	३५३२	
ऊणगहिय दुब्बल वा	४४९७	
ऊणातिरित्तमासे	३१४४	
ऊणाहिय मण्णतो	३६९७	५२१७
ऊणेण न पूरिस्स	५८२९	४००६
ऊसत्थाणे गाओ	१५३८	

ए

एएण सुत्त ण कय	२९५१	५८४६
एए सव्वे दोसा	३२५२	
एएसामण्णतर	२७२९	
,,	३७७४	
,,	४३६३	
,,	४४८४	
,,	४६५३	
,,	४६५७	
,,	६०३१	
एएसामण्णतरे	४३२५	
एएसामण्णयर	२६२६	
एएसि तिण्ह पी	५२१२	२५६५
एएसि तु परूवण	५६२५	
एएहिं कारणेहिं	३२९१	
,,	३६०८	५१७५
,,	३७६९	
,,	३७७६	
,,	४६१४	
,,	४८८२	१०२०
,,	५६५५	,,
,,	३१३५	२७५७
,,	४०५३	
एएहि तु उववेय	२७३३	
एएहि य अण्णेहि य	२३६२	४८००
एएहि सपउत्तो	६२६३	
एक्कत्तीम च दिणा	६२८६	
एक्कतो हिमवता	१५७१	
एक्कल्ल मोत्तूण	६३३६	
एक्कल्लेण ण लब्भा	६३५५	
एक्कस्स दोण्ह वा	६१४४	
एक्कस्स न एक्कस व	५०६२	२८०६
एक्कहि विदिण्ण रज्जे	२५८१	
एक्क दुग चउक्क	३०१८	
एक्क पाउरमाणे	७६५	
एक्क भरेमि भाण	३४३८	२८६०
एक्कार-तेर-सत्तर	२३२५	
एक्कुत्तरिया घडछक्कए	६५६३	
एक्कूणवीसति विभासियम्मि	६६४८	
एक्केक्कपदा आणा	१९०३	
एक्केक्कम्मि उ सुत्ते	६१९२	

एक्केक्कम्मि य ठाणे	५१०२	२४५४
,,	५२०५	
एक्केक्क त दुविह	५०४	
,,	१८६८	
एक्केक्का उ पदाग्रो	५१०	४६०७
एक्केक्का ते तिविहा	५२१३	२५६६
एक्केक्का सा तिविधा	७११	
,,	७१६	
एक्केक्का सा दुविहा	२६१७	
एक्केक्को तिण्णि वारा	६१२७	
एक्केक्को वि य तिविधो	२१६६	
एक्केक्को सो दुविहो	५६६७	३०७६
एक्कोमहेण छिज्जति	६५०६	
एगक्खेत्तणिवासी	१०२२	
एगचरि मन्नता	५४४३	
एगट्ठा सभोगो	५६४०	
एगनरझामिए उवस्सयम्मि	२४०७	
एगतरणिग्गतो वा	५००७	
एगत्ते जो तु गमो	१४५६	
एगत्थ वसताए	२३७७	४८१४
एगत्थ रधणे भुजणे य	११८५	३५६६
एगत्थ होति भत्त	४१६०	५३०६
एग दुग तिण्णि मासा	२६२१	
एगपुड सगल कसिए	६१४	३८४७
एगवतिल्ल भडि	३१८०	
एगमणेगा दिवसेसु होति	६३२३	
एगमणेगे छेदो	५२८२	३३६०
एगमरण तु लोए	५१४०	२४६०
एगम्मिऽणेगदाणे	६४२६	
एगम्मि दोसु तीसु व	५११२	२२७१
एगस्स अणेगाए व	४०३६	
एगस्स पुरेकम्म	४०७६	१८३६
एगस्स वितियगहणे	४०८५	१८४२
एगस्स माणजुत्त	४४६८	
एग उडुबद्धम्मि	२१६६	
एग च दोव तिण्णि व	३८३१	
,,	३८३८	

एग ठवे णिव्वित्तए	१२०२	३५८२
एग व दो व तिण्णि व	२०७५	
एग सचिक्खाए	६२४४	
एगगि उण्णिय खलु	८२६	
एगगितो उ दुविधो	१२२०	
एगगिय चल थिर	४२३२	५६४२
एगगियस्स असती	१२७४	
एगतणिज्जरा से	३६५२	
,,	३६६३	
एगतरणिव्विगती	६३३०	
एगतरिय णिव्विबिल्ल	३८२५	
एगाणियस्स सुवणे	४५६०	
एगापण्ण व सनावीस	५७२६	३१३८
एगा मूलगुणेहिं	२०६३	
एगावराहडडे	६५१३	
एगासति लभे वा	१२६६	
एगाह पणग पक्खे	२७३८	५४७६
,,	५५७६	,,
एगिंदियमादीसु तु	१८०८	
एगिंदि-विगल-पचिंदिएहिं	५००३	
एगुणवीस जहण्णे	३५२६	
एगुत्तरिया घडछक्कएण	६५६६	
एगूणतीस दिवसे	३५१८	
एगूणतीस वीसा	३५१७	
,,	३५४६	
एगे अपरिणए या	५४६४	५४३७
,,	५५३६	,,
एगे अपरिणते या	५५४५	,,
एगे उ कज्जहाणी	३८४१	
एगे गिलाणपाहुड	५४६६	
एगे तु पुव्वभणि ते	४५७६	
एगेण कयमकज्ज	४७८७	६२८
एगेण तोमिततरो	६०८१	
एगेण समारद्धे	४०८६	१८४३
,,	४०८६	
एगेण बघेण	७४३	
एगेणेगो छिज्जति	६५०५	

एगे तू वच्चते	५४८६	५३६१	,,	५६२५	
,,	५४६		,,	५६८६	
एगे महाणसम्मी	११८२	३५६३	एतेण मज्झ भावो	४४२८	
एगेमि ज भणिय	३३१६		एतेण उवातेण	१०६१	
एगो इत्थिगमो	५४५६		एते तु दवावेंति	१३६६	
एगो गिलाणपाहुड	६३३६		एते पदे ण रक्खति	१३३८	५६४
एगो णिद्दिसतेण	४५६४		एतेसामण्णंतर	६२३	
एगो व होज्ज गच्छो	१६५७	१६१५	,,	६३३	
एगो सघाडो वा	३०३०		,,	६४१	
एगो सथारगतो	३८४८		,,	६४६	
एतणतरागाढे	४६३		,,	१०७३	
एतद्दोसविमुक्क	१६४२		,,	१५०२	
,,	५०६४		,,	१५४०	
,,	६३४१		,,	१५८६	
एतविहिमागत तू	५४६३	५४३६	,,	१६२१	
एत खलु आइण्ण	८६८		,,	१८१४	
एत चिय पच्छित्त	१६०२		,,	२१५७	
एत त चेव घर	१४६६		,,	२१८३	
एत तु परिग्गहित	१८६६		,,	२२२४	
एत सदेसरभिहड	१४८७		,,	२४६५	
एताइ सोहितो	१८३८		,,	२५१४	
एताणि वितरति	२५८४		,	२६८३	
एतारिसमि देंतो	४६६		,,	२७१०	
एतारिसाम्म वासे	५२३२		,,	३७४०	
एतारिस विउसज्ज	५४६५	५४३८	,,	४४६६	
,,	६३३८	,,	,,	४६७०	
एतारिस विओसज्ज	५५४६	,,	,,	५६५६	
एतारिसे विओसेज्ज	५५३७	,,	,,	६२५६	
एतारिसि असतीए	१७७५		एतेसामण्णतरे	६०८	
एतविहिमागत तू	५५३५		,,	६१६३	
एते अण्णे य तहि	३८२६		,,	६१७०	
,,	३८३६		,,	७७१	
एते उ अवेप्पते	५०३०		एतेसामण्णयर	७२७	
एतेच्चिय पच्छित्ता	३३७		,,	८७३	
एते चेव गिहीण	३३८		,,	८८४	
एते चेव दुवालस	१३८५		,,	८८६	
एते चेव य दोसा	४२५०		,,	१२२१	
,,	५६२२		एतेसि अमणादी	५६२६	

एतेसि असतीए	४४६	
एतेसिं कारणाण	३३५०	
एतेसिं च पयाण	५६७३	३०८२
एतेसि तु पदाण	२१३५	
,,	४६२७	
एतेसिं तु पयाण	५६७५	३०८२
एतेसि पढमपदा	१४६६	
एतेसिं परूवणता	३१०६	
एतेसु उ गेण्हते	४७६५	
एतेसु चिअ खमणादिएसु	२८	
एतेह सथरत्तो	२६६८	
एतेहि कारणेहि	८६१	
,,	१०६७	
,,	११२७	
,,	१२१६	
,,	१३०८	४६०८
,,	१५८०	
,,	१५६८	
,,	१५७५	
,,	१५८२	
,,	१७४६	
एत्ते होति अपत्ता	६२२८	
एत्तो एगतरीए	७८३	
एत्तो एगत्तरेण	१६२	
,,	७३६	
,,	६८०	
,,	१०८४	
,,	१०६१	
,,	१०६७	
,,	१३५६	
,,	१४५१	
,,	१५५६	
,,	१५७०	
,,	१५७८	
,,	१८५०	
,,	२१६०	
,,	३३४०	
,,	६०२५	
एत्तो णिज्झायणा	६५७५	
एत्तो समारुभेज्जा	६६१८	
एत्तो हीणतराग	१८६५	
एत्थ उ अणभिग्गहिय	३१५१	
एत्थ उ पणग पणग	३१५३	४२८४
एत्थ किर सन्नि सावग	५७३८	३२७०
एन्थ पडिसेवणाओ	६४२२	
,,	६५८१	
एत्थ पुण एक्केक्के	६१६४	
एमादि अणागय दोसरक्खणट्ठा	३४४१	२८६४
एमादिकारणेहिं	२४५४	
एमेव अगहितम्मि वि	११३३	
एमेव अछिण्णेसु वि	४५५६	
एमेव अट्ठजात	३६८	
एमेव अतिक्कते	१०७६	
एमेव असण्णिाहिने	२२२६	
एमेव अहाछदे	५५६७	५४६६
एमेव ईत्थवग्गे	४५६५	
एमेव उग्गमादी	२६७७	५३५३
एमेव उत्तिमट्ठे	३४२४	२८७६
एमेव उवहिसेज्जा	६२०१	७६६
एमेव उवज्झाए	२८२१	
एमेव कतिवियाए	१३२६	
एमेव कागमादिसु	४४२६	
एमेव गणायरिए	२८०६	५७७५
,,	२६०७	५८०४
एमेव गणावच्छे	५५५०	
एमेव गिलाणे वी	१३३६	५६५
एमेव गिहत्थेसु वि	३४७	
एमेव चरिमभगे	३७८४	
एमेव चरिमभगो	२६३२	
एमेव चाउलोदे	५६७५	
एमेव चारगभडे	१३२२	
एमेव चिणट्ठादिसु	१३३७	
एमेव चेइयाण	४५८०	
एमेव णव विकप्पा	१८३६	
एमेव ततियभगे	३७८३	
एमेव ततियभगो	३४२२	२८७४

एमेव तिविहकरण	६०३६	
एमेव तिविहपात	४४६०	
एमेव तु मजोगा	४२४१	
एमेव तेल्ल-गोलिय	५७५०	३२८१
एमेव थभकेयरा	३१६०	
एमेव दसगम्मि वि	३८७०	
एमेव दसणे वी	६३६५	
एमेव देहवातो	२४२	
एमेव पउत्थे भोइयम्भि	५०५५	२८७०
एमेव पउलिताऽपलिते	४६६३	१०८०
एमेव बारसविहो	५२१४	
एमेव वितियभगे	३७८०	
एमेव विनियमुत्ते	५४४२	
एमेव भावतो वि य	४६०३	१०४०
एमेव भिक्खगहणे	२६०६	८८०६
एमेव मज्जणादिसु	५०४८	६४७
एमेव मामगस्स वि	५०२६	६२८
एमेव य अणवे वी	४६४०	
एमेव य अवराहे	६३७७	
एमेव य ओमम्मि वि	३४८	
एमेव य इत्थीए	२७०२	५०८०
एमेव य उदितो त्ति य	२६१२	५८०६
एमेव य उवगरणे	५०६३	
एमेव य कम्मेण वि	४३६	
एमेव य गेलण्णे	२६२४	५८२१
एमेव य जतम्मि वि	४५२१	
एमेव य छेदग्दी	३५२१	
एमेव य ण्हाणादिसु	२०२०	१६७६
एमेव य णिज्जीवे	४८५६	६६८
एमेव य पडिविम्ब	४३२४	
एमेव य पप्पडग	१६६	
एमेव य परिभुत्ते	४१०६	१८६७
एमेव य पासवणे	६१२०	
एमेव य पुरिसारा वि	५०४०	६३६
एमेव य भयणादी	४६०४	१०७१
एमेव य भिक्खुस्स वि	६६३५	
एमेव य वसभस्स वि	६६३२	
एमेव य विज्जाए	३७१५	
एमेव य सच्चित्ते	४७६७	६०७
एमेव य समणीण	६१६६	
एमेव विहारम्मी	१०६५	
एमेव सम णवग्गे	२६७१	५३४७
एमेव सजईण वि	४६०१	
एमेव सजतीण	४६३६	१०७३
एमेव सजतीण वि	२०७६	१०८५
,,	४६४८	
एमेव सेसएसु वि	५०७	४६०४
,,	२६१६	
,,	२६३६	
,,	२७१७	
,,	२७६२	
,,	३३७७	
,,	४१४५	५२६७
,,	६००४	
एमेव सेसएहिं वि	४२३८	
एमेव सेसगम्मि वि	३२३०	
एमेव सेसगाण वि	२०८२	
एमेव सेसियासु वि	४३८६	
एमेव हाइ इत्थी	५२२१	२५७६
एमेव होति उवरिं	२५७	२६१६
,,	३४६८	,,
,,	५७०२	,,
एमेव होति नियमा	४४८३	
एमेवोवाधमेज्जा	१८३७	
एयगुणविप्पमुक्के	३०१७	
एयगुणविप्पहूण	३१०८	
एयगुणसमग्गस्स तु	३११३	
एयविहिमागय तु	५५४४	५३६८
एयस्स णत्थि दोसो	२८३८	५५७२
,,	५१५२	२५०२
एयस्स णाम दाहिह	३०३८	१६३६
एव चेव पपाण	५८३६	४०१५
एय तु भावकसिण	६६६	
एय मुत्त अफल	१५४६	
एयाइ अवुज्झतो	४३७४	
एयाणि य अण्णाणि य	२७२८	

एयारिण सोहयतो	४६७३	
,,	४६६४	
एयारिसम्मि वासो	५३५५	३३१४
एयारिसे विहारे	३३८१	२७८२
एरवति कुणालाए	४२२६	५६३६
एरवति जत्थ चक्किय	४२४३	५६५३
एरवति जम्मि चक्किय	४२२८	५६३८
एरिसओ उवभोगो	५१०५	२६५७
एरिसय वा दुक्ख	४४३५	
एरिससेवी एयारिसा	३५८७	
एवइय मे जम्म	१०३६	
एवमपि तस्स णियय	२६५८	
एवममखडे वी	११०	
एवमुवस्सय पुरिमे	२६७३	५८४८
एव अड्ढोक्कती	३५२९	
एव अद्धाणादिसु	४८७६	
एव अलब्भमाणे	१२३७	
एव अवप्पदसी	४१५४	५२७६
एव आम ण कप्पति	४८६७	
एव आलोएति	३८७४	
एव उग्गमदोसा	४१८५	
एव उभयावराधे	११२५	
एव एक्केक्क तिग	५२२२	२५६६
एव एक्केक्कदिण	२८०५	५७७१
,,	२८२५	,,
एव एत्ता गमिया	६०५२	
एव एत्ता गमिया	६४५७	
एव एया गमिया	६४४६	
एव एसा जयणा	४६३१	१०६८
एव खलु उक्कोसा	३८८६	
एव खलु गमिताण	६४६२	
एव खलु जिणकप्पे	१४४४	
एव खलु ठवणाओ	६४६३	
एव खलु सविग्गे	५५६४	५४६३
एव गिलाणलक्खेण	२६८६	१८६१
एव च पुणो ठविते	१६३६	१५६१
एव च भणितमेतम्मि	५२६०	३०६८
एव चिय पिसितेण	४३८	
एव चेव पमाण	६६१	
एव जायणवत्थ	५०५०	
एव णाम कप्पती	३२४८	
एव ता असहाए	४७४३	८८५
एव ता उड्डबद्धे	१२३२	
एव ता गिहवास	३०४६	१९४७
एव ता गेण्हते	२०५७	२८०२
एव ता जिणकप्पे	४१४८	५२७०
एव ता णीहरण	१२८६	
एव ता पच्छित्त	३१११	
एव ता सचित्ते	१५३	
एव ता सव्वादिसु	३३५८	
एव ता सविगारे	२२०६	२५५६
एव ताव अभिण्णे	४६६८	
एव ताव दिवसओ	२९३६	५८३२
एव तावऽद्दुगु छे	४७२८	
एव ताव विहारे	४५८६	
एवतियाण गहणे	६४५	
एव तु अगीयत्थे	२८०१	५७६७
एव तु अण्णसभोइएसु	१६५६	१६१७
एव तु अलब्भते	३०१७	
एव तु असढभावो	१८६४	५६१०
एव तु अहाछदे	३५०१	
एव तु कइ पुरिमा	३५७६	५१५६
एव तु गविट्ठेसु	२०४६	६४८
एव तु दिया गहण	१६८०	२६८४
एव तु पयतमाणस्स	५७५	
एव तु पाउरम्मो	३१२८	
एव तु भुजमाण	५७७८	
एव तुमपि चोदग	६४१८	
एव तु समासेण	६४६५	
एव तु सो अवहिता	२७०७	५०८१
एव तेसि ठिताण	६९३७	१०६८
एव दव्वतो छण्ह	६०७३	६१४
एव दिवसे दिवसे	२८००	२७६६
एव परोप्परस्सा	१७६३	
एव पाओवगम	३६२२	
एव पाउसकाल	२२६५	
एव पादोवगम	३६७५	
एव पि अठायते	५५८१	५४८१

एव पि अठायतो	२७४३	५४८१
एव पि कीरमाणे	३००७	१९१०
एव पि परिच्छत्ता	४१८८	५३०७
एव पीतिविवड्ढी	४१७१	१२९८
एव पुच्छासुद्धे	५०४४	६४३
एव फासुमफासु	४०६१	१८१८
एव बारसमासा	६५५२	
एव बारसमासे	२८०४	५७७०
एव भणतो दोसो	२६५०	
एव वितिगिच्छे वी	२९१८	५८१५
एव वि मग्गमाणे	७५८	
,,	७९७	
,,	८४३	
एव सडढकुलाइ	१६३४	१५८६
एव सग वच्च मु ज चिप्पिने	८२७	
एव सण्णितराण वि	३५३९	
एव सिद्ध गहण	४५४०	
एव सुत्तणिबंधो	१२२३	
एव सुत्त अफल	४१७१	५२९०
,,	५२०८	२५६१
एस गमो वजगमीसएण	४२८	
एस तव पडिवज्जति	१८८६	५५९७
,,	२८८०	,,
,,	६५९५	,,
एस तु पलबहारी	४७८२	९२३
एस पसत्थो जोगो	५९९१	
एसमणाइण्णा खलु	१४७८	
एस विही तु विसज्जिते	५४९०	५४३४
एसण दोसे व कते	१६४४	१६०३
एसणमादी भिण्णो	४३२	
एसणमादी रद्दादि	४४३	
एसा अविही भणिता	४०८४	१८४१
एसा आइण्णा खलु	१४९२	
एसा उ अगीयत्थे	६३५८	
एसा उ दप्पिया	४९४	
एसा खलु ओहेण	५१९७	
एसा विही विसज्जिते	५५३३	

एमा सुत्त अदत्ता	६२५२	
एमेव कमो णियमा	५८७	
,,	५९०	४९४०
एमेव गमो णियमा	६००	
,,	६१३	
,,	८३५	
,,	८४४	
,,	९९८	
,,	१००८	
,,	१२९७	
,,	१३०९	४६०९
,,	१४८८	
,,	१७७७	३७९६
,,	१९९५	
,,	२०२८	
,,	२३०७	
,,	२५२५	
,,	२६४०	
,,	३०६४	
,,	३२९८	
	४६६४	
,,	४६९७	
,,	४८९०	१०००
,,	४८९६	१०३३
,,	५१९३	
	५२२३	
,,	५८७१	
,,	५९३१	
,,	५९४८	
,,	६६६४	
एसेव गमो नियमा	१७८२	३८०३
,,	२८५४	५५८७
,,	३३१०	
,,	५५५१	५४५१
,,	६६६५	
एसेव चतुह पडिसेवणातु	९१	
एसेव य, दिट्ठ तो	४८९९	१००८
,,	६५०८	

एसेव य विवरीओ	४२३	
एसो उ असज्झाओ	६११७	
एसो उ आमविही	४७०७	
एसो वि ताव दमयउ	२७८३	२७०४
एहि भणितो त्ति वच्चति	६२११	७७४

ओ

ओकच्छिय-वेकच्छिय	१३९९	
ओगास सथारो	३८६	
ओगाहणाग सासतणागा ए	५१	
ओदइयादीयाण	३१४१	
ओदण-गोरसभादी	२४९३	
ओदण मीसे णिम्मीसुवक्खडे	५९३८	
ओदरिए पत्थयणा	४६९७	३११२
ओधोवधी जिणाण	१३८९	
ओबद्धपीढफलय	५७९८	
ओभामिओ मि	१५६४	
ओभावणा पवयणे	१०८५	
ओभासणा य पुच्छा	५८६४	६६०
ओभासिय पडिसिद्धो	४४४८	
ओमम्मि तासलीए	४९२३	१०६०
ओम ति-भागमद्ध	२६६१	
ओमथ पाणमादी	५८६५	६६५
ओमाणस्स व दोसा	१६८४	२७०८
ओमादिकारणेहि व	५५२६	५४१६
ओमे एगाण सोही	५७०६	३११८
ओमे तिभागमद्धे	४२६	
,,	३९९५	
ओमे वि गम्ममाणे	१७६	
ओमे सगमथेरा	४३९२	
ओमोयरियाभमणे	५७०७	३११९
ओमोयरिया य जहिं	४७९७	९३८
ओयभूता खेत्त	४८१८	९५९
ओरोहधरिसणाए	५७०८	३१२०
ओलग्गणामणुवयणा	१४५९	
ओलबिऊण समपाइन	३८०४	
आलोगम्मि चिलिमिली	६१९२	
ओवट्टिया पदीस	४३८५	
ओवामादिसु सेहो	४००	
ओवासे सथारे	१०१५	
,,	१०१७	
ओसववण अहिसक्कण	१००६	
ओसट्ठं उज्भिय-धम्मिए	२४९४	
ओसवण अधिकरणे	२८१९	
ओसण्णमलक्खणसजुयाओ	४२९७	
ओसण्णाऽपरिभोगा	४५ ५	
ओसण्णे दट्ठूण	०८	६०७६
ओसण्णो वि विहारे	५४३६	
ओह अभिग्गह दाण	२०७०	
ओहणिमीह पुरा	६६६७	
ओहाण ता अज्जो	३९७८	
ओहाणाभिमुहीण	१७०४	७२६
ओहातिय-कालगते	२७५१	५४८९
ओहादीया भोगिणि	२५७२	
ओहारमगरादीया	४२२३	५६३३
ओहावता दुविहा	४५७८	
ओहावित-उस्सण्णे	५५९२	५४९०
ओहावित ओसण्णे	२७५५	,,
ओहावित-कालगते	५५८९	५४८९
ओहमग्गा उत्तउज्जिय	३५६०	
ओहीमाती णातु	२५८३	
ओहे उवग्गहम्मि य	१३८७	
ओहे एगदिवसिया	६३१५	
ओह वत्त अवत्ते	५५२८	
ओहे सव्वणिसेहो	५२०२	२५५५
ओहेण उ सट्ठाण	६६८१	
ओहेण विभागेण य	२०१७	

क

कक्खतरुक्खवगच्छिताइसु	४९३०	१०६७
कच्छादी ठाणा खलु	४१२७	
कज्जकारणमबधो	९९७	
कज्जमकज्ज जताऽजत	६६५४	
कज्जविवत्ति दट्ठूण	६२०५	७५४
कज्ज णाणादीय	५२४९	
,,	५२७२	

कज्जे भत्तपरिण्णा	२७६८	
,,	६३७३	
कट्टुकम्मादि ठाणा	४१३६	
कट्ठ ण किलिंचेण व	१८७५	
कट्ठे ण व सुत्तण व	४६१६	१०५६
कट्ठे पोत्ते चित्त	५११८	
,,	५१५४	२४६६
कडग्रो व चिलिमिली वा	२२२	३४५१
,,	५३६६	३४५१
कडगाई ग्राभरणा	२२६५	
कडगादी ग्राभरणा	५६१४	
कडजोगि एक्कगो वा	१६६३	२६६७
कडजोगि मीहपरिमा	३४४३	२८६६
कडिपट्टए य छिहली	३६१०	५१७७
कडिपट्टग्रो ग्रभिणवे	३६११	५१७८
कणगा हणति काल	६१४७	
कण्णतेपुरमोलोग्रणेण	४८५१	६६१
कण्ण सोधिस्सामि	६८३	
कतकज्जे तु मा होज्जा	६२७	
कतगेण सभावेण व	१३३०	५५७
कतजत्तगहियमोल्ल	३७२१	
कतर दिस गमिस्ससि	३१४	६०८५
कत्तरि पयोयणापेक्ख	४४१६	
कत्तो ति पल्लिगादी	३४४७	
कत्थइ देसग्गहण	५२३६	३३२१
कत्थति देसग्गहण	५३६२	३३२१
कप्पट्ठ खेल्लण	१३०३	४६०२
कप्पट्ठ दिट्ठ लहुग्रो	४७२६	
कप्पट्ठिग्रो ग्रह ते	२८७६	
,,	६५६४	
कप्पडियादीहि सम	३४५८	
कप्पति ताहे गारत्थिएण	८०३	
कप्पति तु गिलाणट्ठा	५६४४	३०५०
कप्पति समेसु नह	४०६६	
कप्प-पकप्पा तु सुते	६३६५	
कप्पम्मि ग्रकप्पम्मि ग्र	४८६६	१००५
कप्पा ग्रातपमाणा	५७६४	३६६६
कप्पामियस्स ग्रसती	७६३	३६६८
कमढगमादी लहुगो	२४०	
कमरेणु ग्रबहुमाणो	५७८३	
कम्मचउक्क दव्वे	५००	
कम्मपसगऽणवत्था	२०६४	
कम्मपसत्थपसत्थे	४१२०	
कम्ममसखेज्जभव	३६०२	
,,	३६०३	
,	३६०४	
,,	३६०५	
कम्मस्स भोयणस्स य	४४०	
कम्म कीत पामिच्चिय च	५४१७	
कम्मादीण करण	६६८२	
कम्मे ग्रादेसदुग	४६४७	१०८४
कम्मे सिप्पे विज्जा	३७१२	
,,	३७१३	
कयकरण इतरे या	६६४६	
कयम्मि मोहभेसज्जे	३८०६	
कयमुह ग्रकयमुहे वा	४६६८	
कयवर-रेणुच्चार	२३१८	
करडुयभत्तमलद्ध	४४४२	
करणे भए य सका	४७३	
कर पाद डडमादिहि	४७६०	६००
कर-मत्ते सजोगो	१४६	
कलमत्तातो ग्रद्दामल	१५८	
कलमादद्दामलगा	१५६	
,,	१८६	
कलमेत्त णवरि णेम्म	४०३५	
कलमोदणा वि भणिते	३८५३	
कलमोदणो य पयसा	३८५४	
कलमोयणो य खीर	३०२५	१६२८
कवडगमादी तवे	३०७०	१६६६
कव्वाल उड्डमादी	३८२०	
कसाय-विकहा-वियडे	१०४	
कसिणत्तमोसहीण	१५८३	
कसिण पि गेण्हमाणो	६३६	३८६८
कसिणाए रूवणाए	६४६४	
कसिणारूवणा पढमे	६४१८	
,,	६४१६	
कसिणाऽविहिभिण्णम्मि य	४६१५	१०५२

कसिरो चतुव्विधम्मी	९७२	
कमिरा कसिरा एता	६४९६	
कस्स घर पुच्छिऊरा	४४४९	
कस्स त्ति पुच्छियम्मी	५०२४	
कस्स त्ति पुरकम्म	४०६४	१८२१
कस्सेते तराफलगा	१७९०	२०३८
कस्सेयति य पुच्छा	१७८८	
कस्सेय पच्छिउत्त	४७९५	९३६
कहिता खलु आगारा	२३४१	
कहितो तेसिं धम्मो	५७५३	३२८४
कचरापुर इह सण्णा	३८४६	
कजियआयामासति	२००	
कजिय चाउलउदए	३०५९	१९५८
कटगमादी दव्वे	६२९३	
कटगमादीसु जहा	१८८३	५५९६
कटऽट्ठि खारगु विज्जल	४७३९	८८१
कटऽट्ठि मच्छि विच्छुग	४१७	
कटऽट्ठिमातिएहिं	४७४१	८८३
कटाइ-साहरणट्ठा	७६५३	
कटादी पेहतो	९२६	३८५८
कटाऽहिसीतरक्खट्ठता	९३१	३८६३
कडादि लोम्र रिगसिरग	१८०७	
कट्टसग-बधेरग	२१७५	
कतार-रिग्गतारा	७५२८	
कदप्पा-परवत्थ	३१८	
कदादि अभु जते	५६९८	३११३
काइयभूमी सथारए य	३१५९	
काउस्सग्गमकातु	१५९६	
काउ सय ग कप्पति	८३६	
काऊरा अकाऊरा व	२८५६	५५८९
काऊरा मासकप्प	२०३८	१६८७
,,	३१४५	
,,	३१५६	४२ ६
काएरा व वायाए	२२५८	
काओवचिओ बलव	३९१०	
काकरिगवारणे लहुओ	३८४	
काराच्छि रोमहरिसो	२३३६	
काराच्छिमाइएहिं	५१४५	२४९५
कातूरा य पगाम	५५२९	
काम आउयवज्जा	३३२३	
काम उदुविवरीता	२०५८	
काम कम्मरिगमित्त	५१५	
काम कम्म पि मो कप्पो	५६९०	३१००
काम खलु अरगुगुरुगो	४८५६	९९६
काम खलु अलसद्दो	३५०४	
काम खलु चेतण्ण	५९७४	
काम खलु धम्मकहा	४७५४	
काम खलु परकररणे	१९२३	
काम खलु पुरसद्दो	४०६२	१८१९
काम खलु सव्वण्णू	४८२२	९६३
काम जिरगपच्चक्खो	५४३४	
काम जिरगपुव्वधरा	६६७४	
काम तु सव्वकाल	३१७७	
काम देहावयवा	६१७२	
काम पमादमूलो	६६९०	
काम पातधिकारो	४५२२	
काम ममेत कज्ज	६४०९	
काम विभूसा खलु लोभ-दोसो	५८१८	३९९५
काम विसमा वत्थू	६४०४	
काम सत्तविकप्प	३३१५	
काम सभावसिद्ध	३१	
काम सव्वपदेसु	३६४	४९४४
काम सुओवओगो	६०६७	
कामी सघरऽगरगओ	४९८७	
कामी सघरऽगरगतो	४९६५	
कयकररगा इतरे या	६६४९	
कायल्लीरग कातु	२८५	
काय परिच्चयतो	४७९१	९३१
कायारग वि उवओगो	३९५	
काया वया य तच्चिय	३३०८	४९७९
कायी सुहत्तीसत्था	१६७१	
कायेहऽविसुद्धपहा	१४७६	
कारण अरगुण्ण विहिरगा	५८१५	३९९२
कारग एग मडबे	२४१०	
कारणओ सग्गामे	६०४२	
कारणगहरणे जयरगा	६०५३	
कारणगहिउव्वरिय	३३९९	२८५१

कारणजाए अवहडो	२७७९	५०८४
कारणतो अविधीए	१६९८	३७२०
कारणपडिसेवा वि य	४५९	
कारणमकारण वा	६६५२	
कारणमकारणे वा	२०८७	
”	३५०९	
कारणमणुण्ण-विधिणा	२०८६	३९९२
कारणलिंगे उड्ढोरगत्तणा	४९६७	
कारणाणुपालणाए	३२६८	
कारणिए वि य दुविधे	१०९१	
कारणे उड्डुगहिते	८१७१	
कारणे विलगियव्व	६००९	
कारणे सपाहुडि ठित्ता	१३४३	५६९
कारणे हिंसित मा	४६३९	
कारावणमभियोगो	५८९	
कालग्ग सव्वद्धा	५४	
कालगतम्मि सहाये	४५६२	
कालचउक्क उक्कोस्सएण	६१५२	
कालचउक्के णाणत्तग	६१४५	
कालदुगातीतादीणि	१०१४	
कालसभावाणुमतो	३८८८	
कालातिक्कमदाणे	१६७१	२६९९
कालादीते काले	२८७	
कालियपुव्वगते वा	५५२३	५४२५
कालियसुय च इसिभासियाणि	६१८८	
कालुट्ठाई कालनिवेसी	५६७४	३०८३
कालुट्ठादीमादिसु	५६९२	३१०२
कालेण अपत्ताण	३२३७	४२६२
कालेण पुण कप्पति	५९७३	
कालेणेवतिएण	३२३५	४२६०
काले अपहुप्पते	२३६७	४८०५
काले उ अणुण्णाते	४१६०	५२८२
काले उ सुयमाणे	२६४३	
काले गिलाणवावड	२६५४	
काले तिपोरिसऽट्ठ व	६१०१	
काले वा घेच्छामो	१२६०	
काले विणये बहुमाने	८	
काले सिहि-णदिकरे	२९६३	
कालो दव्वऽवतरती	१०१२	
काला समयादीयो	३१४३	
कालो सभ्भा य तहा	६१३२	
कावालिए य भिक्खू	५०७७	२८२२
कावालिए सरक्ख	३६२२	५१८७
कासानिमातिज पुव्वकाले	५०१३	६१३
काहीगा तरुणेसु	५२२५	२५८०
काहीता तरुणीसु	५२१९	२५७९
”	५२२४	२५७९
काहीया तरुणेसु	५२१५	२५६७
किड्ड तुयट्ट अणाचार	१३११	
कितिकम्म च पडिच्छति	२८८४	
कितिकम्म तु पडिच्छति	६५९९	
कितिकम्मस्स य करणे	२०७२	
किमणाऽऽभव्व गिण्हसि	२७७५	
किरियातीय णातु	१७५६	३७७८
किवणेसु दुब्बलेसु य	४४२४	
किह उप्पण्णो गिलाणो	३००५	
किह भिक्खू जयमाणो	६३०४	
किह भूताणुवघातो	९२९	३८६१
कि आगतऽत्थ ते बिंति	३३८०	२७८१
किं उवघातो धोए	४१०७	१८६५
कि उवघातो हत्थे	४१०५	१८६३
किं कारण चकमण	३८-०	
किं कारण चमढणा	१६३२	१५८४
किं काहामि वराओ	२९८३	१८८५
किं काहिं ति ममेते	१७४१	३७६४
कि काहिति मे वेज्जो	३०७६	१९७५
किं गीयत्थो केवलि	४८२०	९६१
कि च मए अट्ठो भे ?	१७८९	
कि दमओ ह भते	५०३४	६३३
कि पत्तो णो भुत्त	३८९०	
कि पुण अणगारसहायएण	३९१३	
कि पुण जगजीवसुहावहेण	५९४२	
किं पेच्छह ? सारिच्छ	१६८८	३७१२
किं मण्णे णिसिगमण	५६३८	३०४४
किं वच्चसि वासते	३०२	
किं वा कहेज्ज छारा	४४८२	
किच्चण अट्ठा एएहिं	२४७२	

कीयकड पि य दुविह	८४७५	
कीय किणाविय अणुमोदित	४४७४	
,,	६०३०	
कीवस्स गोण्णणाम	३५८८	५१६४
कीवे दुट्ठे तेणे	३७४२	
कीस ण णाहिह तुब्भे	५०२५	६२४
कुच्छणदोसा उल्लेण	८५०	
कुच्छितलिंग कुलिंगी	६६	
कुज्जा व पच्छकम्म	४६५०	
कुज्जा वा अभियोग	४०२८	
कुट्टिस्स सक्करादीहि	६३३	३८६५
कुड्डतरिया असती	१७२८	३७५०
कुतित्थ-कुसत्थेसू	३३५३	
कुत्तीय-सिद्धणिण्हग	५८५८	८०३३
कुलमादिकज्ज दडिय	६३४	३८६६
कुलवमम्मि पहीणे	२२४२	४६४८
,,	२३५१	५२५४
कुलसथवो तु तेसिं	१०६६	
कुलिर्यं तु होइ कुड	४२७३	
कुलियादि ठाणा खलु	४२७२	
कुवणय पत्थर लेट्टू	४७७४	६१५
कुसमादि अभुसिराइ	१२२६	
कुसलविभागसरिसओ	६४०६	
कुचित सल्ले मालागारे	६३६६	
कु भार-लोहकारहि	४०१५	३८३८
कूयति अदिज्जमाणे	३८४३	
कूयरदसमसोमसीता	५६३६	
कूरो णासेइ खुध	३७८६	५६६६
केइत्थ भुत्तभोई	५१०४	२४५६
केइत्थ भुत्तभोगी	२५४७	२४५६
केई परिसहेहिं	३६२३	
केई पुव्वणिसिद्धा	६३४४	
केण पुण कारणेण	६४२५	
केणुवसमिओ सड्ढो	८८०	
केयि अहाभावेण	१४५०	
केलासभवणे एते	४४२७	
केवइय आस-हत्थी	२३६६	४८३३
केवल मणप्पज्जवणाणिणो	६४६७	
केवल मणओहि-चोद्दस	५४२४	
केवलवज्जेसु तु अतिसएसु	५६६२	
केवलविण्णे अत्थे	४८२६	६६६
केसव-अद्धबल पण्णवति	१४१	५०२३
केसिं चि अभिग्गहिता	१६६७	१६०६
केसि चि एव वाती	३५४६	
केसिं चि होतऽमोहा	६०६०	
को आउरस्स कालो	१०	
कोई तत्थ भणेज्जा	३२४७	४२७२
कोउग-भूतीकम्म	४२८७	
कोउय-भूतीकम्मे	४३४५	
कोउहल च गमण	५६३	
को गेण्हति गीयत्थो	५८५४	४०२६
को जागति केरिसओ	५१०३	२४५५
कोट्ठगमादिसु रन्ने	४७३२	८७२
कोट्ठागारा य तहा	२५३४	
कोट्ठिय छण्णे उदिट्ठ	४०४७	
कोट्ठियमादीएसु	५६५१	
कोणयमादी भेदो	५०८	
कोणामेकमणेगा	१२०८	
को दोसो को दोसो	३४१६	२८७१
को दोसो दोहि भिण्णे	४८४६	६८६
कोद्दवपलालमादी	४७११	८४२
कोधम्मि पिता पुत्ता	२६२	
को पोरिसीए काले	५८२३	४०००
को भते परियाओ	२८७०	
,,	६५८४	
कोमुति णिसा य पवरा	२२६४	
कोयी मज्जणगविही	३०३७	१६३८
कोला उ घुणा तेमिं	४२६०	
कोलालिपावणा खलु	५३६०	३४४५
कोल्लतिरे वत्थव्वो	४३६२	
कोल्लपरपरसकलिया	१३४६	५७५
को वा तहा समत्थो	५४२७	
को वोच्छिनि गेलण्णे	३०६५	१६६४
कोसग णहरक्खट्ठा	३४३३	२८८५
कोसबाऽऽहारकए	५७४४	३२७५

कोसाऽहि-सल्ल-कटग	३४३७	
कोहा गोणादीण	३२८	
कोहा वलवागव्भ	४४०८	
कोहाई परिणामा	४२६५	
कोहातिसमभिभूग्रो	३५६	
कोहादी मच्छरता	३५५	
कोहेण ग एस पिया	२६३	
कोहेण व माणेण व	३४०	
,,	३१६	
कोहो बलवा गब्भ	२६६६	

ख

खग्गूडेग उव्वहते	४५८१	
खणमाणे कायवधो	६२४	
खत्तियमादी ठाणा	२५६७	
खद्धादाणि य गेहे	३१८६	
खमग्रोसि ग्राममोण	६२५४	
खमग मोहतिगिच्छा	३३६८	२८५०
खमणेण खामिय वा	३६६०	
खमणे वेयावच्चे	२७	
खय उवसम मीस पि य	५४३०	
खरए खरिया सुण्हा	४०५०	४५५७
खर-फरुस-णिट्ठर ण	२६१४	
खर-फरुस-णिट्ठुराइ	२८१७	५७५०
खरटणभीग्रो रुट्ठो	६६२५	
खरिया महिड्डिगणिया	५१७८	२५२८
खलुगे एक्को बधो	६३८	
खल्लाडगम्मि खडुगा	६४१३	
खडे पत्ते तह दब्भ	१६८२	२६८६
खतादिसिट्ठुऽदेते	१३६५	४६२६
खतिखम मद्दविय	३१०५	
खते व भूणते वा	१३६२	४६२६
खधकरणी चउहत्थ वित्थरा	१४०७	४०६१
खधादी ठाणा खलु	४२७५	
खधारभया णासति	१३३२	५५६
खधाराती गातु	१३५३	५७६
खघे दुवार सजति	१५२५	६३७३
खधो खलु पायारो	४२७६	
खाणुगमादी मूल	३१०	
खाणू कटग-विसमे	५८३०	४००७
खामित विउसविताइ	१८१८	६११८
खित्तम्मि खेत्तियेस्सा	५४८६	
खिप्प मरेज्ज मारेज्ज	४२८६	
खिवणे वि ग्रपावतो	४७७५	११६
खिसा खलु ग्रोमम्मी	२६३८	
खीर-दधिमादीहिं	२२८३	
खीर-दहीमादीण य	४१८१	५३००
खीर-दुम-हेट्ठ पथे	१५१	
खीराहारो रोवति	४३७७	
खीरुण्होद विलेवी	२३१	
खीरोदणे य दव्वे	३८५२	
खुज्जाई ठाणा खलु	२६०४	
खुड्डुग ! जणणी ते मता	३०७	६०७५
खुड्डागसमोमरणेसु	४५७५	
खुड्डी थेराणप्पे	१६८४	२६८८
खेतस्स उ पडिलेहा	२४५१	
खेत्तबहिता व ग्राणे	३००१	
खेत्तमहायणजोग्ग	८५६	
खेत्तं गतो य ग्रडवि	३४६६	
खेत्त ज बालादी	५६६६	३०७५
खेत्ततो खेत्तबहिया	२६४२	५८३८
खेत्ततो णिवेसणादी	४७२६	
खेत्ता जोयण-वुड्ढी	२६६२	
खेत्तारक्खिनिवेयण	५५३१	
खेत्तोऽय कालोऽय	४८१७	६५८
खेत्तोवसपयाए	५५०५	५४०८
खेल-पवात-णिवाते	१२७३	
खेवे खेवेलहुगा	४०४०	
खोडादिभग-णुग्गह	६२६५	

ग

गग्गरग दडिवलित्तग	७८२	
गच्छग्गहणे गच्छो	३४१३	२८६५
गच्छपरिरक्खणट्ठा	४३६६	४५४२
गच्छम्मि एस कप्पो	१६२७	१५८३
गच्छम्मि य पट्ठविते	२८१६	५७८२
गच्छसि ण ताव कालो	८५७	
गच्छसि ण ताव गच्छ	३१३	६०८४

गच्छती तु दिवसतो	१६५	
गच्छा अणिग्गयस्सा	२७६६	५७६२
गच्छाणुकपणट्ठा	४५३	
गच्छुत्तरसवग्गे	६४४०	
गच्छे अप्पाणम्मि य	४३१	
गच्छे व करोडादी	३२८३	
गच्छो महाणुभागो	१६२६	
गच्छो य दोण्णि मासे	२८०२	५७६८
गणचिंतगस्स एत्तो	५०११	३६८८
गणणाए पमाणेण य	२१६५	
"	५७८५	
गणणाते पमाणेण व	५८२५	४००२
गणभत्त समवाओ	२४७६	
गणि आयरिए सपय	२६३५	५८३१
गणिणिसरिसो उ थेरो	५३३६	२४११
गणि णिसिरणे परगणे	३८१४	
गणि णिसिरम्मि उवही	३८१६	
गणि-वसभ-गीय-	४८६२	१०३०
गणिवायते बहुसुते	२६१८	६०६०
गणिसद्दमाइमहितो	६१७६	
गति ठाण भासभावे	६२०२	
गति-भास-अग-कडि-पट्ठि	३५६६	
गती भवे पच्चवलोइय च	३५६८	५१४५
गब्भे कीते अणए	३६७६	
गमणादि अपडिलेहा	२५२२	
गमणादि णत-मुम्मुर	२३२	
गमणादी रूवमरूवव	४३२६	
गमणे जो जुत्तगती	५६६६	३०७८
गम्भीरविसदफुडमधुरगाहओ	५३६	
गम्मति कारणजाते	१६६६	३७२१
गल्ल-कूड-पासमादी	१८०५	
गविसण गहिए आलोय	२६०५	
गव्विय कोहे/विसएसु	३११०	
गव्वेण ते उद्दिण्णा	५६२८	
गव्वो णिम्मद्दवता	६२४	३८५६
गहण गवेसण भोयण	४१३	
गहण च जाणएग	१२४७	
गहण च सजयस्स	३५८१	
गहण तु अघाकडए	७८५	
गहणम्मि गिण्हिऊण	६७७	
गहणाईया दोसा	२५३५	
गहणे पक्खेवमि य	१६०	
गहिए व अगहिए वा	३२ ६	४२६१
गहितम्मि अद्धरत्ते	६१५४	
गहित च तेहि उदग	५२७८	३४२७
गहिते उ पगासमुहे	४५५७	
गहिते व अगहिते वा	३७२४	
गहितेहिं दोहि गुरुणा	४५५८	
गगाती सक्कमया	३३५४	
गठीछेदगपहियजणदव्वहारी	३६५५	
गडघोसिते बहुएहि	६१३०	
गड च अरतियसि	१५०५	
गडादिएसु किमिए	१५१०	
गडी कच्छवि मुट्ठी	४०००	३८२२
गडी-कोढ-खयादी	४८८६	१०२४
गतव्वदेसरागी	५६५६	३०६७
गतव्वस्स न कालो	८५५	
गतव्वोसह-पडिलेह	८५६	
गतु विज्जामतण	४४५८	
गतूण पडिनियत्ते	४०६३	१८५०
गतूण परविदेस	२२८८	
गधव्वणट्टाउज्जस्स	३८७५	
गधव्व दिसा विज्जुग	६०८८	
गधारगिरी देवय	३१८४	
गभीरविसदफुडमधुरगाहओ	५३६	२६०१
गभीरे तसपाणा	४०२३	
गाउय दुगुणादुगुणा	१५२	३४६६
"	१७६	"
"	२१४	
"	५३८५	३४४०
"	५३८७	"
गाढुत्त गूहणाकर	२६०८	
गामपहादी ठाणा	४१३१	
गामब्भासे बदरी	४१७६	५२६८
गाममहादी ठाणा	४१२६	
गामवहादी ठाणा	४१३०	

गामाइ-सण्णिवेसा	२००४	
गामाण दोण्ह वेर	४४०१	
गामादी ठाणा खलु	४१२८	
गामेय कुच्छियमकुच्छिते	५३१७	२३६१
गारवकारणखेत्ताइणो	५९८३	
गावी उट्टी महिसी	१०३४	
गावी पीता वासी	६५१४	
गाह गिह तस्स पती	१०८२	
गाहेइ जलाओ थल	६०१०	
गिण्हति णिसीतितु वा	५९६८	
गिण्हते चिट्ठ ते	३९९७	
गिण्हामो अतिरेग	४५५५	
गिम्हातिकालपाणग	२४१३	
गिम्हासु चउ पडला	५७९८	३९७५
गिम्हासु तिण्णि पडला	५७९७	३९७४
गिम्हासु पच पडला	५७९९	३९७६
गिरिजण्णगमादीसु य	३४०३	२८५५
गिरिजत्तपट्ठियाण	२५६५	
गिरिजत्ता गयगहणी	२५६६	
गिरिणदि पुण्णा वाला	४२३६	५६४६
गिरिपडणादी मरणा	३८०१	
गिह वच्च पेरता	१५३५	
गिहि अण्णतित्थि	३२१९	
गिहि-अण्णतित्थिएहि व	५७७१	
गिहि-अण्णतित्थियाण व	४११२	
,,	४२८८	
,,	४३०८	
गिहिअण्णतित्थियाण	६२६१	
गिहि-कुल-पाणागारे	६०४७	
गिहिण मूलगुणेसू	३३०५	
गिहिणात पिसीय लिंगे	४४७	
गिहिणिक्खमणगवेसे	४३६२	
गिहिणोऽवरज्झमाणे	३८३	
गिहिमत्ते जो उ गमो	४०४६	
गिहिसहितो वा सका	२४७७	
गिहिसजयअहिकरणे	६३२८	
गीओ विकोवितो खलु	६५२५	
गीताणि य पढिताणि अ	५३५	
गीयत्थग्गहणेण	३४५५	१८२७
गीयत्थग्गहणेण	४०७०	,,
,,	४१०८	,,
गीयत्थदुल्लभ खलु	३८३२	
गीयत्थमगीयत्थ	३९२४	
गीयत्थविहारातो	५५५९	
गीयत्थस्स वि एव	५२८३	
गीयत्थे आणयण	३०३५	१९३६
गीयत्थे ण मेलिज्जति	५५६३	५४६२
गीयत्थेण सय वा	४८८४	१०२२
गीयत्थेसु वि भयणा	४०९०	१८४७
गीयत्थो जतणाए	३६६	४९४६
गीयमगीओ गीओ	२८७१	
,,	६५८५	
गीयमगीतागीते	५५६०	५४५९
गीयाण व मीसाण व	५५६१	५४६०
गुज्झग-वयण-कक्खोरु	१७५३	३७७६
गुणनिप्फत्ती बहुगी य	४५३८	
गुणपरिवुड्डिणिमित्त	१०२४	
गुणसयसहस्सकलिय	५४३८	
गुणसथरेण पच्छा	१०४८	
गुणसथवेण पुव्वि	१०४६	
गुत्ता गुत्तदुवारा	२४५७	२०५८
गुत्तो पुण जो साधू	३९	
गुरुओ चउलहु चउगुरु	२७०४	५०७७
गुरु गणिणिपादमूल	२४१४	
गुरु पाउणए दुव्वल	५८३२	४००८
गुरुवच्चइया आसायणा	२६४४	
गुरुसज्झिलए सज्झतिए	५५१८	५४२१
गुरुगा आणालोवे	५७१०	३१२२
गुरुगा उ समोसरणे	३३५	
गुरुगा पुण कोडु बे	४७५२	८९४
गुरुगा य गुरु-गिलाणे	५८३३	४००९
गुरुगो जावज्जीव	२६८६	
गुरुणो व अप्पणो वा	३६०७	५१७४
गुव्विणि बालवच्छा य	३५०८	
गूढसिराग पत्त	४८२७	९६७
गेण्हण कड्ढणववहारो	४५२०	
गेण्हणे गुरुगा छम्मासा	३३७५	९०४
गेण्हणे गुरुगा छम्मास	४७६२	,,

गेण्हणे गुरुगा छम्मास	५१५०	,,
गेण्हह वीस पाते	४५५०	
गेण्हति वारएण	१२०४	
गेण्हतेसु य दोसु वि	५२९९	३३७८
गेरुय वण्णिय सेडिय	१८४९	
गेलण्णतुल्ल गुरुगा	६३७१	
गेलण्णऽद्धाणो मे	४९२१	१०५८
गेलण्णमरणमाती	४७७७	
गेलण्णमुत्तमट्ठ	१५४७	
गेलण्ण रायदुट्ठे	१४४५	
,,	१५६६	
,,	१५७४	
,,	१५८१	
,,	१८५९	
,,	१८६३	
गेलण्ण-रोह-असिवे	२३६१	४७९९
गेलण्ण वास महिता	१९५१	
गेलण्ण वास महिया	१९५९	
गेलण्ण सुत्त जोए	४६८९	
गेलण्ण पि य दुविह	४८८७	१०२५
गेलण्ण मे कीरति	५६३१	
गेलण्णमणागाढे	१६०४	
गोच्छयपादट्ठवण	५८०६	
गोणादि कालभूमी	६१४०	
गोणादी व अभिहणे	४१६	
गोणादीवाघाते	२३७०	४८०८
गोणे य सागमा-ी	५२७३	३३५२
,,	५३८६	
,,	४६५१	
गोविन्दऽज्जो णाणे	३६"६	
गोमडलवन्नादी	४८०२	९४३
गोमियगहण अण्णे	९७१	
गोयरमगोयरे वा	४०४८	
ग्यरमचित्तभोयण	३७४९	
गोरपभावियपोत्त	३४४०	२८९२
गोवय उच्छेत्त्‌ भति	४५०२	
गोवाइतूण वसंवि	११४३	३५२३
गोवालए य भतए	४५०१	

गोवालवच्छवाला	३२७०	४३०१
घ		
घणकुड्डा सकवाडा	२४५५	२०५९
घण-मसिण निरुवहत	९४९	३८८२
घण मूले थिर मज्झे	५८००	३९७७
घट्टग-रेणुविणासो	२९४६	
घट्टितसठविताए	७१५	
,,	७२३	
घट्टितसठविते वा	६९६	
,,	७०५	
घट्टेउ सच्चित	१४७५	५३८०
घट्टितसठविताण	९७६	
घतसत्तूदिट्ठ तो	४५१५	
घयकुडवो य जिणस्सा	६५०३	
घरघूमोसहकज्जे	७९८	
घरसताणग-पणगे	१४३६	
घसणे हत्थुवघातो	४६३६	
,,	४६४४	
घेत्तु समयसमत्थो	३७२६	
घेत्तूणऽगारलिंग	४५९५	
घेत्तूण णिसि पलायण	२९६३	५८५८
घेत्तूण दोण्णि वि दवे	११०५	
घेत्तूण भोयणदुग	१११४	
घेत्तूण य आगमण	४६०१	
घेप्पति च-सद्देण	६४६८	
घोडेहि व धुत्तेहि व	१७१३	३७३५
च		
चउकण्णम्मि रहस्से	३९६१	
चउगुरुग छच्च लहु	९६५	३८९८
चउ गुरुग छच्च लहु गुरु	२२१०	२४७८
,,	५१२८	,,
चउ गुरुग मासो या	६६४०	
चउगुरुगा छग्गुरुगा	२२१४	२५२१
चउगुरु चउलहु सुद्धो	६६३६	
चउत्थपद तु विदिण्ण	५२०	२५८६
चउपादा तेइच्छा	३०३६	१९३७
उफल पोत्ति सीसे	१५२७	

चउभगो गहणपक्खेवए	४८४१	६८१
चउभगो दाणगहणे	२१४३	
चउभगो रातिभोयणे	३३६७	
चउभागवसेसाए	१४२६	
चउभागसेसाए	१८५८	
चउमूल पचमूला	५२८६	३४२६
चउरगवग्गुराग्परिवुढो	४००५	३८२८
चउरगुल वितत्थी	५८०५	३६८२
चउरो मरुग विदेस	४८७४	
चउरो य जु गिया खलु	३७०७	
चउरो लहुगा गुरुगा	३०६३	१६६१
,,	३०६५	,,
,,	३०६७	,,
,,	५१८४	२५३८
,,	३१२०	१६६१
चउ लहुगा चउ गुरुगा	२२१६	
चउलहुगादी मूल	६०६	
,,	२२०३	
चउवग्गो वि हु अच्छउ	४६३५	१०७२
चउसट्ठीपगारेण	१०३६	
चउसु कसातेसु गती	३१६२	
चउहा णिसीहकप्पो	६६६६	
चक्काग भज्जमाणस्स	४८२८	६६८
चक्की वीसतिभाग	२३५५	
चड्डुग सराव कसिय	३०६०	१६५६
चतुगुरुगा छग्गुरुगा	५१७१	२५२१
चतुगुरुगादी छेदो	२२०४	
चतुपाया तेइच्छा	३०७५	१६७४
चतुभगे चतुगुरुगा	१६३७	
चतुरगुलप्पमाण	१६३२	
चतुरगुलप्पमाणा	१५६	
चतुरेते करणेण	१८१२	
चतुरो य दिव्विया भागा	५०८८	२८३३
चतुसु महामहेसु	६०६४	
चत्तकलहो वि ण पढति	२७६०	
चत्ताए बीस पणतीस	६४७६	
चत्तारि अधाकडए	७५७	४०३१
,,	८४२	
चत्तारि अहाकडए	७६६	४०३१
,,	५८५६	,,
चत्तारि उ उक्कोसा	५७८६	३६६६
चत्तारि छच्च लहु गुरु	६६१	३८६४
,,	२२०६	२४७७
,,	३०६६	
,,	५१२७	२४७७
चत्तारि य उग्घाया	५११०	२४७१
,,	५१२२	२४७३
,,	५१८२	२५३६
चत्तारि विचित्ताइ	३८२४	
चत्तारि समोसरणे	३२३६	४२६४
चम्मकरग सत्थादी	५६५०	३०५८
चम्मतिग पट्टदुग	१४१५	४०६८
चम्मम्मि सलोमम्मी	३६६६	
चम्मादि लोहगहण	३४३०	२८८२
चरगादिणियट्टेसु	१०८३	
चरण-करण-परिहीणे	५५६६	५४६५
चरितट्ठ देस दुविहा	५५३६	५४४०
चरित्तम्मि असतम्मि	६६७६	
चरिमे वि होइ जयणा	२०४२	१६६१
चरिमो परिणत कड-	८६	
चरुग करेमि इहरा	३४६०	
चकमणमावडणे	१५१६	
चकमण णिल्लेवण	५३२१	२३६५
चकमणादी उट्ठण	६३३१	
चकम्मिय ठिय जपिय	५३३	२५६८
चदगुत्तपपुत्तो य	५७४५	२६४
चदिससूरुवरागे	६०६१	
चदुज्जोए को दोसो	३४०६	२८६१
चपा अणगसेणो	३१८२	
चपा महुग्ग वाणारसी	२५६०	
चाउम्मासातीत	१०१६	
चाउम्मासुक्कोसे	६५५	३८८८
,,	१४३४	,,
,,	४०७३	१८३०
,,	५००५	६०६
चाउल उण्होदग तुवर	५८६२	४०३७

चाणक्कपुच्छ इट्टालचुण्ण	४४६५	
चार भड घोड मेठा	२४६१	२०६६
चारिय-चोराभिमरा	२५११	६३९५
चारिय चोराहिमरा	१३०	
चारे वेरज्जे वा	३४९८	
चिक्खल वास असिवातिएसु	३२६१	४२९१
चिट्ठणणिसिय तुयट्टे	५३२५	२३९९
चिंतेंतो वइगादी	५४६०	
चित्त जीवो भणितो	४२५९	
चित्त य विचित्ते य	२००१	
चिंधेहि आगमेत्तु	१३३७	५६३
चीयत्त कक्कडी कोउ	४९१४	१०५१
चुण्णखउरादि दाउ	५४१८	
चुल्लुक्खलिय डोए	८०८	
चेइय-सावग पव्वति	२५७८	
चेयणमचित्तदव्वे	६३९०	
चेयणमचेयण वा	३३४६	
चोएति रागदोसे	२८३३	५७६१
चोदग एताएच्चिय	५८७९	४०५४
चोदग कण्णसुहेसु	४७०५	८५४
चोदग दुविधा असती	५८७६	४०५१
चोदग पुरिसा दुविहा	६५१८	
चोदग मा गद्दभत्ति	६४००	
चोदग माणुसणिट्ठे	६१५८	
चोदग वयण अप्पाणुकपितो	४१८७	५३०६
चोदावेति गुरूण व	५५५६	५४५५
चोदेति अजीवत्ते	४८४६	९८६
चोदेति धरिज्जते	४१५३	५२७५
चोदेति रागदोसे	६५५३	
चोदेति से परिवार	६२७०	
चोदेती वणकाए	४८३६	९७६
चोद्दसग पणुवीसा	५९०१	४०७९
चोद्दसमे उद्देसे	६०२७	
चोद्दस वासाणि तया	५६११	
चोद्दस सोलस वासा	५६१८	
चोद्दा दो वाससया	५६१३	
चोयग गुरुपडिसिद्धे	५०६८	२८,३
चोयग णिद्दयन चिय	४८४३	९८३
चोयगपुच्छा गमणे	३०११	१९१४

चोय सु होति हीरो	५४१२	
चोरभया गावीओ	२९५	
चोरो त्ति कडु दुव्वोडिओ	५२७१	३३५०

छ

छक्काए ण सद्दहति	३६७१	
छक्काय-अगड विसमे	३९८२	
छक्काय-गहण-कड्डण	३३६९	२७७०
छक्काय चउसु लहुगा	५३४१	२७७१
,	११७	४६१
,,	३३७०	,,
,,	४७३७	२७७१
छक्कायविराहणता	३६७४	
छक्कायसमारभो	३६४८	
छक्कायाण विराधण	९११	
,,	१६७४	३६९८
,,	१८५७	
,	१८६७	
छक्कायाण विराहण	१८६२	
,,	३१२५	२७३६
,,	४३१०	
,,	५६४८	३०५६
छच्च सया चोयाला	६४७१	
छट्ठट्ठमादिएहिं	६६५२	
छट्ठवत-विराधणता	१९४०	
छट्ठाणविराहिय वा	२७४९	५४८७
,,	५५८७	,,
छट्ठाणा जा णितिओ	२७५०	५४८८
,,	५५८८	,,
छट्ठो य सत्तमो या	५८२	४९३५
छड्डणे काउड्डाहो	१३२३	
छड्डावण पत्तावण	१५४२	
छड्डावित-कतदडे	४८५०	९९०
छड्डेऊण जति गता	१३२५	
छड्डेति तो य दोण	५९७८	
छणियाऽवसेसएण	६०६८	
छण्ण-वह-णट्ठ-मरणे	६५८	
छण्णे उड्डो व कतो	१२६५	
छण्णेतर च लेहो	२२६१	

छण्ह एक्क पात	४५३०	
छत्तीसगुणसमण्णागएण	३८६२	
छद्दोसायतणे पुण	२५३३	
छप्पइयपणगरक्खा	७६६	३६६७
छप्पति दोसा जग्गण	२६५	
छप्पुरिसा मज्झ पुरे	४७८५	६२६
छब्भागकए हत्थे	५८६६	४०४४
छब्भागकर काउ	४६६२	
छम्मासकरणजडु	३६३५	
छम्मासा ग्रायरिग्रो	३१०३	२००१
छम्मासादि वहते	६६४६	
छम्मासियपारणए	४२६	
छम्मासे ग्रपूरेतो	५४५३	
छम्मासे ग्रपूरेत्ता	६२०७	
छम्मासे ग्रायरियो	३१००	१९९८
छम्मासे उवसपद	५४५२	
छल्लहुगादी चरिम	२२०५	
छल्लहुगा य णियत्ते	३०६	६०७७
छल्लहुगे ठाति थेरी	५३३५	२४१०
छव्वाससयाइ नवुत्तराइ	५६१७	
छहि णिप्पज्जति सो ऊ	४८३७	६७७
छहि दिवेसेहि गतेहिं	६५४६	
छदणिरुत्त सद्द	४३५८	
छद विधी विकप्प	१२५	
छदिय गहिय गुरूण	३५८२	५१५८
छदिय सइगयाण व	३४०४	२८५६
छदो गम्मागम	१२६	
छादेती ग्रणुकुडए	१४०४	४०८८
छायस्स पिवासस्स व	५७१	
छारो तु ग्रपु जकडो	१५३६	
छिण्णमछिण्णा काले	२०३४	१६८३
छिण्णमछिण्णे दुविहे	४५०६	
छिण्णमछिण्णे व घणे	३७२२	
छिण्ण परिकम्मित खलु	४०२६	
छिण्णेण ग्रछिण्णेण व	५६४६	३०५२
छिण्णो दिट्ठमदिट्ठो	४५१०	
छिहली तु ग्रणिच्छतो	३६१२	५१७६
छिंदतमछिंदता	३५१३	
छुब्भण मिंचण बोलण	४२१७	
छुभण जले थलातो	४२१३	५६२३
छुहमाणे पच्चकिरिया	४७६६	६१०
छेदणपत्तच्छेज्जे	२५१	
छेदणे भेदणे चेव	५०२	४८६६
छेदतिग मूलतिग	६५३६	
छेदसुतणिसीहादी	५६४७	
छेदादी ग्रारोवण	२६२१	
छेदो छग्गुरु ग्रहवा	२२४१	
छेदो छग्गुरु छल्लहु	३४६२	२६१४
छेदो मूल च तहा	२२१५	२५२२
,,	२२१७	,
,,	५१७२	२५३६
,,	५१८५	,,
छेयसुयमुत्तमसुय	६१८४	
ज		
जइ ग्रत्थि पयविहारो	३१५७	
जइ ग्रतो वाघातो	२४६३	२०६८
जइउमलाभे गहण	१६३	
जइ उस्सग्गे ण कुणइ	२१०	३४३७
जइ ताव पलबाण	४९१६	१०५३
जइ ताव सावताकुल	३९१२	
जइ देतऽजाइया जा	१९७२	२९७६
जइ पुण ग्रायरिएहिं	४५५३	
जइ पुण पुरिम सघ	२६७०	५३४६
जइ भणति ोइय तू	१०३८	
जइ वि य ता पज्जत्ता	४४४७	
जइ सव्वसो ग्रभावे	३६७	
जड्डे खग्गे महिसे	२०२	२९२३
,,	३४७१	,,
जड्डे महिसे चारी	१६३७	१५८९
जड्डो ज वा त वा	१६३८	१५९०
जणपुरतो फासुएण	५६३२	
जण रहिते वुज्जाणे	५२६	२५९१
जणलावो परग्गामे	४१७६	५२६
जण सावगाण खिसण	४४७१	
जण्णेव छिदियव्व	७६६	
जति ग्रकसिणस्स गहण	९४३	३८७३
जति ग्रगणिणा तु दड्ढा	१७११	३७३

जति अच्छती तुसिणिओ	१८३१	
जति उस्सग्गे ण कुणति	५३८२	
जति एक्कभाणजिमित्ता	५६४१	
जति एते एव दोसा	४५३५	
जति एयविप्पहूणा	४१८४	५२८०
जति एव ससट्ठ	४१८९	५३०८
जति कालगता गणिणी	१७०९	३७३१
जति कुसलकप्पियातो	४८७२	१०११
जति गहणा तति मासा	१८७	
जति छिड्डा तति मासा	२३९	
जति जग्गति सुविहिता	११४८	३५२९
जति ज पुरतो कीरति	४०६०	१८१७
जति जीविहिति जति वा	४५९६	
जति णाम पुव्व सुद्धे	४६७२	
जति णिक्खिवती दिवसे	१६०३	
जति णेतु एतुमाणा	५४८४	५३८९
जति ताव पिहुगमादी	४०४५	१०८२
जति ताव मम्मपरिघट्टियस्स	४२८५	
जति ताव लोतियगुरुस्स	४१८६	५३०५
जति ता सणप्फतीसू	५१९२	२५४६
जति तूण मासिएहि	४६७९	
जति ते जणणे मूल	२१७	
जति तेसिं जीवाण	४००७	३८३०
जति दिट्ठ ता सिद्धी	४८६५	१००४
जति दोण्ह चेव गहणे	४५४५	
जति पत्ता तु निसीधे	२४७०	
जति परो पडिसेविज्जा	२७८२	५७३८
जति पुण गच्छताण	६१२८	
जति पुण तेण ण दिट्ठा	२७१९	४७३०
जति पुण पव्वावेति	४९२६	१०६३
जति पुण पुव्व सुद्ध	४६५९	
जति पुण सव्वो वि ठितो	५१३३	२४८३
जति पोरिसिइत्ता त	४१५०	५२७२
जति फुसति तहिं तु ड	६१०८	
जति भागगया मत्ता	५१६४	२५१५
जतिभि (मि) भवे आरुवणा	६४८५	
जति भोयणमावहती	५८९७	४०७३
जति म जाणह सामि	५७५५	३२८६
जति मूलग्गपलबा	४७०४	८५३
जति रज्जातो भट्ठो	५०३६	६३५

जति रण्णो भज्जाए	५०३५	६३४
जति रिक्को तो दवमतगम्मि	४१९१	५३१०
जति वा णिरतीचारा	५४२६	
जति वा बज्झति सात	३३२९	
जति वि ण होज्ज अवाओ	६६८८	
जति वि णिबधो सुत्ते	४८६१	१००१
जति वि य तुल्लऽभिधाणा	६६९१	
जति वि य पिवीलगादी	३४१२	२८६४
जति वि य फासुगदव्व	३४११	२८६३
जति वि य विसोधिकोडी	४४२	
जति वि य समणुण्णाता	४६०	
जति सव्वे गीतत्था	१४६३	२९३७
जति सव्वे व य इत्थी	५२००	
जति ससिउ ण कप्पति	३९७६	
जति सि कज्जसमत्ती	१३६७	४६३१
जतिहि-गुणा आरोवणा	६४८७	
जत्तियमित्ता वारा	९२२	३८५५
जत्तियमेत्ता वारा	४००८	३८३१
,,	४५४१	
जत्तियमेत्ते दिवसे	१६०२	
जत्तुग्गतरादीण	२५६३	
जत्तो चुतो विहारो	५४४९	
जत्तो दुस्सीला खलु	२४६०	२०६५
जत्थ अचित्ता पुढवी	४२४०	५६५०
जत्थ उ ण होज्ज सका	४६८५	
जत्थ उ दुरूवहीणा	६४८९	
जत्थ उ देसग्गहण	५३६६	३३२५
जत्थ तु ण वि लग्गति	२७६	
जत्थ तु देसग्गहण	५२४३	३३२५
जत्थ पवातो दीसति	३८०२	
जत्थ पुण अहाकडए	४६६१	
जत्थ पुण होति छिन्न	३७२५	
जत्थ वि य गतुकामा	३३८७	२७८८
जत्थ विसेस जाणति	३४५७	२९१०
जत्थाइण्ण सव्व	९०१	
जदि एगस्स उ दोसा	४०८३	१८४०
जदि एतविप्पहूणा	४१५८	
जदि तेसिं तेण विणा	११३०	

जदि दोसा भवतेते	६४१	
जदि सव्व उद्दिसिउ	२६६६	५३४५
जघ आतरो से दीसइ	१४४२	
जम्मण-णिक्खमणेसु य	५७३५	३२६६
जम्हा तु हत्थमत्तेहि	४१०६	१८६४
जम्हा धरेति सेज्ज	११४२	३५२४
जम्हा पढमे मूल	५१३१	२४८१
,,	५१७३	,,
,,	५१८६	,,
जयमाणपरिहवेते	६३४९	
जरजज्जरो उ थेरो	५९६१	
जर सास-कास-डाहे	३६४७	
जलजाओ अमप तिम	५३२८	२४०२
जल-थल पहे य रयणा	२९६२	५८५७
जलदोणमद्धभार	४२९५	
जलमूए एलमूए	३६२६	
जलसभमे थलादिसु	२४०६	
जल्लमलपक्किताण	५३४	२५९९
जल्लो तु होति कमढ	१५२२	
जवमज्झ मुरियवंसो	५७४७	३२७८
जस्स मूलस्स भग्गस्स	४८२९	९६९
,,	४८३०	९७०
जस्स मूलस्स सारातो	४८३१	९७१
,,	४८३२	९७२
जस्सेते सभोगा	२१४६	
जह कारणम्मि पुण्णे	४२४५	५६५५
जह कारणम्मि पुरिसे	५२१८	२५७३
जह कारणे अणाहारो	३७९९	६०११
जह कारणे सलोम	४०१६	३८४१
जह चेव अण्णगहणे	४७४८	८९०
जह चेवऽब्भुट्ठाणे	२११७	
जह चेव पुढविमादी	२७५	
जह चेव य अद्धाणे	१६८	
जह चेव य आहच्चा	४६६०	
जह चेव य इत्थीसु	५२२०	२५७५
जह चेव य किंतिकम्मे	२११२	
जह चेव य पुढवीए	२०३	
जह चेव य पुरिसेसू	५२१७	२५७२
जह जह पएसिणि	४४६०	
जह णाम असीकोसी	३९४६	
जह ते गोट्ठट्ठाणे	३९७३	
जह पढमपाउसम्मी	३५७८	५१५५
जह पारओ तह गणी	४८७८	१०१७
जह बालो जपतो	२८६३	
,,	६३९२	
जह भणितो तह उट्ठितो	३५४८	
जह भणितो तह चिट्ठइ	३५१६	
जह भणिय चउत्थस्सा	२९५०	५८४५
जह भमर-महुयर-गणा	२९७१	१८७३
जह मण्णे एगमासिय	६५६१	
जह मण्णे दसम	६५६७	
जह मण्णे बहुसो	६४२३	
,	६५६८	
जह मोहप्पगडीण	३३२०	
जहऽवती सुकुमालो	३९७२	
जह सपरिकम्मलभे	५८८१	४०५६
जह सरणमुवगयाण	६६१५	
जह सा बत्तीसघडा	३९७४	
जह सुकुसलो वि वेज्जो	३८६०	
जह सो कालासगवेसिउ	३९७०	
जह सो वसिपदेसे	३९७१	
जह हास-खेड्ड आकार	५१८९	२५४३
जह हेमो तु कुमारो	३५७५	५१५३
जहि अप्पतरा दोसा	५१९६	२५४९
जहिय एसणदोसा	५५४०	५४४१
जहि लहुगा तहि गुरुगा	४७३८	
ज अज्जिय चरित्त	२७९३	२७१५
ज अज्जिय समीखल्लएहिं	२७९२	२७१४
ज एत्थ सव्व अम्हे	३०३९	१९४०
ज कट्ठकम्मादिसु	५१००	२४५२
ज किं चि भवे वत्थ	५०९०	२८३५
ज गहित त गहित	४७५५	८९७
ज गघरसोवेत	११०४	
जऽगारणगारत्तं	२६४९	
ज च बीएसु पचाहो	१५८८	
ज च महाकप्पसुय	६१९०	

ज चेव परट्ठाणे	२६२५	
ज चेव सुब्भिसुत्ते	११२२	
ज चोद्दसपुव्वधरा	४८२४	६६५
ज छेदेणेगेण	७६८	
ज जमि होइ काले	६	
ज ज सुयमत्थो वा	६२०६	७५५
ज जारिमय वत्थ	७६०	
ज जस्स जिय सागारियम्मि	६०५७	
ज जस्स णत्थि वत्थ	५०१५	६१५
ज जह सुत्ते भणिय	५२३३	३३१५
,,	५३५६	,,
ज ण सरति पडिबुद्धो	४३०३	
ज त णिव्वाघात	८२०	
,,	८२३	
ज त तु सकिलिट्ठ	५१४	
ज ते असथरता	४६१६	
ज तेण कतेण व	३९६६	
ज पज्जत्त तमस	२१५६	
ज पुण खुहापसमणे	३७६०	६०००
ज पुण पढम वत्थ	५०८५	२८३०
ज पुण सच्चित्तादी	५४७७	५३८२
ज पुव्वकतमुह वा	६८८	
ज पुव्व णितिय खलु	४३५२	
ज पुव्व पडिसिद्ध	५२४६	
,,	५३६६	
ज बहुधा छिज्जत	७६७	
ज भिक्खू वत्यादि	४६६०	
ज मायति त छुब्भति	६५८८	
ज मायति त छुभति	२८७४	
ज लहुसग तु फरुस	२६३६	
ज वच्चता काए	४६२३	
ज वत्थ जभि कालम्मि	६५२	३८८५
ज वत्थ जमि देसम्मि	६५१	३८८४
ज वा असहीण त	११७१	३५५२
ज वा भुक्खत्तस्स उ	३७६३	६००३
ज वेल ससज्जति	२७३	
ज सग्गहम्मि कीरइ	६३८६	
ज सेवित तु बितिय	४६८	

ज हिडता काए	४५७१	
ज होज्ज अभोज्ज ज	११२१	
ज होति अपेज्ज ज	११११	
ज होनि अप्पगास	६६	
जगिय-भगिय-मणय	७५६	
जघड्ढा सघट्टो	१६५	
,,	४२२६	
जघातारिम वत्थइ	१६१	
जघाहीणे ओमे	४४६३	
जा इनवत्था दमुए	३२७	
जा एगदमेण दढा उ भटी	४८६३	
जा कामकहा सा	२३४३	
जा चिट्ठा सा सव्वा	२६४	
जा जेण व तेण जधा	२४२३	
जा जेण होति वण्णेण	४३८४	
जागरह णरा णिच्च	५३०३	३३८२
जागरतमजीरादी	१५६८	
जारिता धम्मीण	५३०६	३३८६
जाणह जेण हडो मो	१३७१	४६३५
जाणति एसण वा	४६०४	
जाणतेण वि एव	३८६१	
जाणतो अणुजाणति	२५७५	
जाणामि णाम एत	१७७१	
जाणिति इति तावऽच्छणे	२५०४	
जाता अणाहसाला	३६४६	
जा ताव ठवेमि वए य	१३५२	५७८
जाति कुल रूव भासा	२६०६	
,,	२७३२	
,,	४२८४	
जाति-कुलस्स सरिसय	२६२८	
जाती कम्मे सिप्पे	३७०६	
जाती कह कुलकह	११६	
जाती-कुलस्स सरिस	२६३१	
जाती कुलगण कम्मे	४४११	
जाती कुले विभासा	४४१२	
जाती य जु गितो खलु	४६२२	
जाती य जु गितो पुण	४५७०	
जा तु अकारण सेवा	४८३	

जावे वि य कालगता	१७२१	
जा पुव्ववड्ढिता वा	७१३	
,,	७२१	
जामातिपुत्तपतिमारण	४४०२	
जामातिय-मडवओ	२०१८	
जायग्गहणे फासु	३११८	
जायण-णिमतणाए	५०२३	
जायसु ण एरिसो ह	४४५२	
जायते तु अपत्थ	२९९८	१६०१
जारिसदव्वे इच्छह	३०८१	१६८०
जारिमय गेलण्ण	३०२८	१६३२
जाव ठवण उद्दिट्ठा	६४३७	
जाव ण मडलिवेला	२०३२	१६८२
जाव ण मुक्को ताव	३००६	
जावतिएणट्ठो भे	१००२	
जावतिय उवयुज्जति	११२३	
जावतिय वा लब्मति	४९४०	
जावतिया उवउज्जति	१६७	
जावतिगाए लहुगा	१४७४	३१८६
जावतियमुद्देमो	२०२०	
जावति वा पगणिया	१४७२	३१८४
जा समणि सजयाण	५९१८	
जा सजमता जीवेसु	६५३२	
जाहे पराइया सा	३९६२	
जाहे य माहणेहि	३७११	
जिइदियो घिणी दक्खो	६२६	
जिणकप्पिया उ दुविधा	१३९०	
जिणकप्पे सुत्ते त	५८८७	
जिण चोद्दस जातीए	६५०२	
जिणणिल्लेवणकुडए	६५६२	
,,	६५७०	
जिणपण्णत्ते भावे	६५७४	
जिणलिगमप्पडिहत	२३७२	४८०९
जिणवयण पडिक्कुट्ठे	३७४५	
जिणवयणभासितेण	५४३९	
जिणवयणमप्पमेय	३९१४	
जिणा बारसरूवाइ	१४०९	३९६५
जियसत्तु-णरवरिंदस्स	२३५२	५२५५
जीवति मओत्ति वा	२६८९	
जीवरहिओ उ देहो	३५४	
जीवरहिते व पेहा	३३०७	
जीवा पोग्गलसमया	५६	२७२५
जीहाए विलिहन्तो	६६१४	
जुग-छिड्ड-णालिया	६०४	
जुज्जति हु पगासफुडे	४३२२	
जुत्तपमाणस्सऽसती	५८४५	४०२१
जुत्तप्पमाण अतिरेग	५५०	
जुत्तमदाणमसीले	४९६१	
,,	४९८३	
जुत्त णाम तुमे वायएण	२६३२	
जुत्त सय ण दाउ	३०४०	१९४१
जे आदरिसतत्तो	४३२३	
जे कुज्जा बूया वा	२२५१	
जे केइ अणल दोसा	३७३७	
जे चेव कारणा सिक्कगस्स	३४३५	२८८७
जे चेव सक्कदाणे	४६१५	
जे जत्तिया उ—	६४६४	
जे जहि असोयवादी	२३८३	४८२०
जे जे दोसायतणा	४१०३	१८६०
जे जे सरिसा धम्मा	३३५७	
जेट्ठा सुदसण जमालि—	५५९७	
जेण ण पावति मूल	४८२	
जेण तु पदेण गुणिता	६४८६	
जेणऽहिय ऊण वा	२८५८	
जे ते भोसियसेसा	६५५०	५५९१
जे त्ति य खलु णिद्दे से	४९७	
जे त्ति व से त्ति व केत्ति व	६२७३	
जे पुण ठिता पकप्पे	८१	
जे पुण सखडिपेही	२९४७	
जे पुव्ववड्ढिता वा	७०२	
जे पुव्व उवगरणा	५६८८	३०९८
जे भणिता उ पकप्पे	६६७१	
जे भिक्खाऽऽजीवपिंड	४४१०	
जे भिक्खु अजोगी तु	१९१०	
जे भिक्खु अरोगत्ते	४३३५	
जे भिक्खू असणादी	२३२९	
,,	२६५८	
,,	३४७२	

,,		३९९१
,,		४९५६
,,		५९६५
,	इत्थियाए	२५४५
,,	उवगरण	४२०८
,,	कोवपिंड	४४३९
,,	गाएज्जा	५९८७
,,	गिलाणस्मा	३११४
,	,,	६०३७
,	गिहत्तनिकुत्र	१४६५
,,	गिहिमत्ते	४०४७
	चुण्णपिंड	४४६२
,	जोगपिंड	४४६८
,,	णह-सिहाओ	१५१४
	णालगाइ	४६८१
,	णायगाइ	४६७३
,,	णिमित्तपिंड	४४०४
,,	तिगिच्छपिंड	४४३२
,,	तुयट्टेते	२१९२
,,	तेगिच्छ	४०५४
,,	दीहाइ	१९३०
,,	दूतिपिंड	४३९६
,,	धातिपिंड	४३७५
,,	पुढविकाय	४०३३
,,	बहुसो मासियाइ	६४२०
,,	माणपिंड	४४४४
,,	रातीण	२५३९
,,	वएज्जाहि	२५२१
,,	वणियपिंड	४४१८
,,	वत्थाइ	४९८०
,,	वत्थादी	२३३१
,,	,,	४९९०
,,	वियड तू	६०४९
,,	सचेलो तू	३७७७
,,	सच्चित्त	४०३८
,,	सुहुमाइ	२१७३
जे मे जाणति जिणा		३८७३
जे विज्जमत दोसा		४४६६
जे सुत्तगुणा वुत्ता		३६१९

जे सुत्ते अवराहा	४६१	
जसि एसुवदेसो	४०८०	१८३७
,	४५३२	
,	४५४२	
जो उ उत्तह कुज्जा	३०८४	१९८३
जा उ णिमज्जा व ता	२१२८	
जागमकाउमहाकड	५००६	६०७
जो गवो जीवजढो	८५१	
जा गवो जीव्जुए	६१४	
जोगे करणे सरभमादी	१८१०	
जागे गेणगम्मि य	१६००	
जो चेव वज्जियगमो	१३३१	५५८
जो चेव य उवधिम्मि	२०९८	
जो जत्तिएण रोगो	६४०२	
जो जत्थ अचित्तो खलु	९८९	
जो जत्थ होइ कुसलो	३९००	
जो जत्थ होइ भग्गो	५४४६	
जो जस्स उ उवसमती	२७७९	५७३३
जो जस्सुवरिं तु पभू	९९१	
जो ज काउ समत्थो	६६०३	
जो जारिसओ कालो	३८८५	
जो जेण अकयपुव्वो	३३३८	
जो जेण जम्मि ठाणम्मि	२७५६	५४९१
,,	५५९३	,,
जो जेण पगारेण	३३४५	
जोण्हा मणी पतीवे	३४०५	२८५८
जो णी वीए य तहि	२२३९	
जो तस्स सरिसगस्स तु	५९३७	
जो त सव्वद्ध वा	६१५	
जो त तु सय णेनी	३७३०	
जातिसनिमित्तमादी	५२५६	३३३७
जो तु अमज्जाइल्ले	४०३	
जो तु गुणो दोसकरो	५८७७	
जो पुण अपुव्वगहणे	४३३९	
जो पुण उभयावत्तो	२७४६	५४८४
,,	५५८४	,,
जो पुण करणे जड्डो	३६३६	
जो पुण चोइज्जतो	६३४६	
जो पुण तट्ठाणाओ	४०८	
जो पुण त अत्थ वा	२९५९	५८५४

जो मागहओ पत्थो	६९२B	
,,	५८९१	४०६७
जो मुद्धा अभिसित्तो	२४९७	
जोयणसय तु गता	४८३३	९७३
जो वच्चतम्मि विधी	६१३८	
जो वा वि पेल्लिओ त	५६७९	३०८८
जो वि दुवत्थ तिवत्थो	५८०७	३९८४
जो वि य अवायसन्नी	६६९५	
जो वि यऽणुवायछिण्णो	४८०५	
जो वि य होतऽक्कनो	४२३५	१६४५
जो सो उवगरणगणो	३४५२	२९०५
जो हट्ठुस्साहारो	१९३६	
जो होज्ज उ असमत्थो	६१२३	

झ

झिज्झिरिसुरहिपलबे	४७०३	८५१

ठ

ठवण-कुलाइ ठवेउ	१७०६	३७२८
ठवणाए णिक्खेवो	३१४०	
ठवणाकुला तु दुविधा	१६१७	
ठवणाकुले व मु चति	२०९९	
ठवणा तू पच्छित्त	१८८५	
ठवणामेत्त आरोवण	६४३१	
ठवणारोवणदिवसे	६४८८	
ठवणा वीसिग पक्खिग	६४३२	
ठवणा सचयरासी	६४२७	
ठवणा होति जहण्णा	६४३४	
ठागासति अचियत्ते	२२३	
ठागासति बिंदूसु व	६१५०	
ठाण-णिसीयण-तुअट्टण	२६३	
ठाण णिसीयण-तुयट्टण	३९३८	
ठाण-णिसीय-तुअट्टण	६२९८	
ठाण-णिसीय-तुयट्टण	१५५	
,,	२७४	
ठाण पडिसेवणाए	५११९	२४७०
ठाण-वसही-पसत्थे	३८१५	
ठाणतिय मोत्तूण	१९९	
ठाण गमणागमण	१६४५	१६०५
ठाण वा ठायती	५२९४	३३७३
ठाणे नियमा रूव	५२९	२५९४
ठितकप्पम्मि दसविहे	५९३२	६४४१
ठितिकप्पम्मि दसविहे	२१४९	,,
ठितो जदा खेत्तबहि सगारो	११८९	३५७०
ठियकप्पे पडिसेहो	४३६५	

ड

डगलग-सपरक्ख कुडमुह	३२३८	४२६३
डगलच्छारे लेवे	३१७५	
डहरगामम्मि मते	६११५	
डहरस्स एते दोसा	५८९४	४०७०
डहरो अकुलीणो त्ति य	२७६०	७७२
,,	६२१०	,,
डहरो एस तव गुरू	२७६१	
डडग विडडए वा	६९९	
,,	९७७	
डडतिग तु पुरतिगे	६४०८	
डडिय खोभादीओ	१३३४	

ढ

ढड्ढसर पुण्णमुहो	४३९०	
ढिंकुण-पिसुगादि तहिं	५४७१	५३७६

ण

ण करेति भु जितूण	१५९७	
ण णिरत्थयमोवसिया	४६९०	
ण तस्स वत्थादिसु कोइ सगो	५८१९	
ण पमाण गणो एत्थ	११३६	
ण पमादो कातव्वो	९५	
ण य वज्जिया य देहो	६३२९	
ण य सव्वो वि पमत्तो	९२	
ण वि किं चि अणुण्णाय	५२४८	
,,	५३७१	
ण वि कोइ किं चि पुच्छति	२३८९	
ण वि खातिय ण वि वयी	४८४८	
ण वि छ महव्वता णेव	४९०९	
ण वि जाणामो णिमित्त	५०९०	
ण वि य इह परियरगा	६३७८	
ण वि य समत्थो सव्वो	१७९८	

ण वि सिंगपु छवाला	३२११	
ण विवित्ता जत्थ मुणी	१६७६	
ण हु ते दव्वसंलेह	३८५५	
ण हु होति सोयितव्वो	१७१७	
णउतीए पक्ख तीसा	६४७६	
णक्खे छिदिस्सामि त्ति	६८१	
णक्खेणावि हु छिज्जति	४८०४	
णच्चासण्णम्मि ठिम्रो	२४३५	
णच्चुप्पइत दुक्ख	१५१२	
णच्चुप्पतित दुक्ख	१५०३	
,,	१५०८	
,,	४१६७	
,,	४२०२	
णच्चुप्पतिय दुक्ख	४३३३	
णज्जतमणज्जते	३५६५	
णट्ट होति अगीय	५१०१	
णट्ठा पथफिडिता	४३०६	
णट्ठे हित विस्सरिते	६६६	
,,	८१३	
,,	८३२	
,,	८४६	
,,	१६४५	
,,	१६४७	
,,	१६५६	
,,	४६८८	
णट्ठे हिय विस्सरिए	१६५४	
णत्थि अगीयत्थो वा	५२३१	
,,	५३५४	
णत्थि अणिदाण तो	४६१२	
णत्थि कहालद्धी मे	१३४५	
णत्थि खलु अपच्छित्ती	५१३६	
णत्थि ण मोल्ल उवधिं	१३८२	
णत्थि सकियसघाडमडली	६३५३	
णत्थेय मे जमिच्छह	६३५४	
णदिकण्हवेण्णदीवे	४४७०	
णदिकोप्पर चरण वा	४२३३	
णदिपूरएण वसती	१७१२	
णयणे दिट्ठे गहिते	१२६४	
णयणे दिट्ठे मिट्ठे	१२६१	
णयणे पूरे दिट्ठे	५३११	
णयवज्जिओ वि हु अल	६१८६	
णव भ।गवाग वत्थे	५०८६	
णव य सया य सहस्स	६४७३	
णवसोओ खलु पुरिसो	२३७४	
णवकालवेलसेसे	६१५६	
णवबभचेरमइओ	१	
णवमस्स तनियवत्थु	६५८७	
णवमम्स तनियवत्थू	२८७३	
णवसत्तए दसमवित्थरे	३८८७	
णवगसोत्तपडिबोहयाए	३६५६	
णवाणवे विभासा तु	१६३	
णह-दतादि अण्तर	५०६	
ण्हाणादि कोउकम्म	४२८६	
णदति जेण तवसजमेसु	३४६६	२६२०
णाइण्ण लहुसएण	६०८	
णाऊणमणुण्णवणा	२५७१	
णाऊण य वोच्छेद	६१८३	
,,	६२३८	
,,	६२४१	
णाऊण य वोच्छेय	२७३०	
,,	२७६३	
,,	५४७८	
,,	५४६६	
,,	५५००	
,,	६१६७	
णागा जलवासीया	२७८५	५७३६
णाणट्ठ दसणट्ठा	१६६६	२८७६
,,	३४२७	२६७२
,,	५४५८	
णाणणिमित्त अद्धाणमेति	३८६८	
णाणणिमित्त आसेविय	३८६७	
णाणस्स होइ भागी	५४५७	
णाणादट्ठा विक्खा	३६२८	
णाणादि तिगकडिल्ल	१८८४	
णाणादितिगस्सऽट्ठा	४८१३	६५४
णाणादिसघणट्ठा	२२८४	

णाणादी छत्तीसा	२१३६	
णाणादी परिवुड्ढी	४६६	
णाणायारे पगत्त	४५	
णाणम्हि उवकरण—	१०३५	
णाणी ण विणा णाण	७५	
णाणुज्जोया साहू	२२५	३४५३
णाणे चरणे परूवण	६२६२	
णाणे दसण चरणे	४४	
,,	२७२७	४७३३
णाणे सुपरिच्छियत्थे	४६	
णातग कहण पदोसे	२२५२	
णातगमणातग वा	२४६७	
णातीवग्ग दुविह	५५०४	
णामण-धोवण-वासण	६	
णामठवण-णिसीह	६७	
णाम ठवणा हत्थो	४९९	
णाम ठवणा कप्पो	५९	
णाम ठवणा चूला	९३	
णाम ठवणा दविए	१७९७	
,,	६२९२	
णाम ठवणा भिक्खू	४९८	
णाम ठवणायारो	५	
णामुदया सघयण	८५	
णालस्सेण सम सोक्ख	५३०७	३३८५
णालीत परूवणता	६५०९	
णाव-थल-लेवहेट्ठा	४२४६	५६५६
णावाए उत्तिण्णो	४२५६	
णावातारिम चतुरो	१८३	
णासण्ण-णाइदूरे	२४५६	२०६०
णासा मुहणिस्सासा	६१६	
णासेइ अगीयत्थो	३८२६	
णासेइ असविग्गो	३८३४	
णिउणो खलु सुत्तत्थो	५२५२	
,,	५३७५	३३३३
णिक्कारणगमणमि	१०६८	२७५८
णिक्कारणगि चमढणा	१७६३	३७८६
णिक्कारणपडिसेवा	४६७	
णिक्कारणमविधीए	१६६६	३६९०
णिक्कारणम्मि अप्पणा	१९२१	
णिक्कारणम्मि एए	४६६५	४०७७
णिक्कारणम्मि एते	५८७२	,,
णिक्कारणम्मि एव	५२८७	३३६६
णिक्कारणम्मि गुरुगा	१६६८	३६९२
णिक्कारणम्मि लहुगो	१९२२	
णिक्कारणिए अणुवएसिए	४५७९	
णिक्कारणियाऽणुवदेसगा	२९२९	
णिक्कारणे अमणुण्णे	२०७६	
णिक्कारणे अविधि	२७१	
णिक्कारणे ण कप्पति	१५०७	
णिक्कारणे विधीए वि	१६९६	३७१९
,,	१९९७	३७१८
णिक्कारणे सकारणे	१५११	
णिक्खिवणा अप्पाणे	२७५७	
णिक्खिवणा अप्पाणो	५५९१	
णिग्गच्छति वाहरती	२३५	
णिग्गच्छ फूमे हत्थे	२३८	
णिग्गत पुणरवि गेण्हति	४१०२	१८५९
णिग्गमण तहचेव उ	५६२	४९२८
णिग्गमणाद्दि वहिठिते	११८८	३५६९
णिग्गमणे चउभगो	२९८०	१८८२
णिग्गमणे परिसुद्धो	६३५२	
णिग्गमसुद्धमुवाए	६३५९	
णिग्गयवट्ट ता या	६५३६	
णिग्गथसक्कतावस	४४२०	
णिग्गथि वत्थगहणे	५०७०	२८१५
णिग्गथीण गणधर	२४४८	२०४८
णिग्गथीण भिण्णा	४९२२	१०५९
णिग्गधो उग्गालो	२९५५	५८५०
णिच्चणियसणमज्जण	५०४५	६४४
णिच्चणियसणिय ति य	५०४६	६४५
णिच्चपरिगले वहिता	६३१	
णिच्चलणिप्पडिकम्मे	३९४१	
णिच्चलणिप्पडिकम्मो	३८१८	
णिच्च पि दव्वकरण	५१०९	२४६१
णिज्जत मोत्तूण	१२००	३५८०

,,	६११६	
णिज्जूहितादि ठाणा	४१३४	
णिण्हयससग्गीए	५५३२	५४३३
णिण्हवण अवलावो	१६	
णिण्हवणे णिण्हवणे	३०१	६०६६
णिता ण पमज्जति	५३६७	३४५२
णिता ण पमज्जती	२२३	,,
णितिए उ अग्गपिंडे	६८६	
णिद्दिट्ठस्स समीवं	४५७४	
णिद्दोस सारवत च	३६२०	२८२
णिद्धमधुरेहि आउ	३५४१	
णिद्धे दवे पणीए	३७६७	६००७
णियय च अणियय वा	११८६	३५६७
णिप्पच्चवाय-सबधि	२४६५	२०७०
णिप्पत्त कटइल्ले	६३८२	
णिप्फण्णो वि स अट्ठा	१००५	
णिप्फेडणे सेहस्स तु	३७३४	
णिब्भए गारत्थीण	४२५१	५६६०
,,	१६६	,,
णिब्भए पिट्ठतो गमण	११०३	
णियएहिं ओसहेहि य	३०२७	१६३१
णियगट्ठितिमतिक्कता	१५८५	
णिरुअस्स गदपओगो	४८७१	
णिरुवस्सग्गणिमित्त	२८७८	
णिरुवहत जोणित्थीण	३७०	४६५३
णिल्लोम-सलोमऽजिणे	४६११	१०४८
णिर्वाचत विकाल पडिच्छणा	३१६५	
णिवत्तण णिक्खिवणे	१७६८	
णिवदिक्खितादि असहू	४६१	
णिवपिंडो गयभत्त	४५१२	
णिवमरण मूलदेवो	६५१७	
णिववल्लभबहुपक्खम्मि	३६२३	५१८८
णिवितिगणिब्बले ओमे	५७४	
णिव्वत्तणा य दुविधा	१८०१	
णिव्वाघातववादी	८२४	
णिव्विगितिय पुरिमड्ढे	६६६२	
णिव्विसओत्ति य पढमो	५७०६	३१२१
णिव्वीयमायतीए	२५५१	
णिमिदनो व ठवेज्जा	१७८५	
णिमिपढमपोरिसुब्भव	५७६	४६३२
णिसिमादीसम्मूढो	८७६	
णिसिह णवमा पुव्वा	६५००	
णिसीहिया णमोक्कारे	६१३४	
णिसुढते आउवधो	३२१२	
णिसेज्जा य वियडणे	६५१२	
णिसेज्जाऽसति पडिहारिय	६३८६	
णिस्सकिय णिक्कखिय	२३	
णिस्सचया उ समणा	४१४४	५२६६
णीणेज्ज पूय-रुधिर	१५०६	
णीयल्लयदुच्चरितारगुकित्तण	२३३८	
णीयस्स अम्ह गेहे	१२१४	
णीयासणजलीपग्गहादि	१३	
णीसको व ऽणुसट्ठो	४५६८	
णेगधुणममु चते	१६२४	
णेगविधा इड्ढीओ	२६	
णेगविह कुसुमपुप्फोवयार	६७०१	
णेगाण उ णाणत्त	१२५०	
णेगासु चोरियासू	६५१५	
णेगेसु एगगहण	५२३५	३३१७
,,	५३५८	
णेगेसु पिता-पुत्ता	११७५	३५५६
णेहाति एव काह	४८७	
णो कप्पति भिक्खुस्सा	१०८०	
,,	१०६०	
,,	१०६६	
,,	१५४४	
णो कप्पति वाऽभिण्ण	५२३८	३३२०
,,	५३६१	
णो तरती अभत्तट्ठी	२७६८	५७६४
णोल्लेऊण ण सक्का	१६७७	३७०१
णोवयणाम दुविह	४७१५	८४५

त

तइया गवेसणाए	२८६६	
तक्कम्मसेवि जो ऊ	३५६५	
तक्ककुडेणाहरण	१२	
तक्कतपरोप्परओ	५७६६	
तच्चित्ता तल्लेसा	५१०७	२४५६

तज्जातगतज्जात	६६७	२२७२
तज्जातमतज्जाता	२०५५	
तण-कट्ठ-पुप्फ-फल	११२४	
तणकट्ठहारगादी	५६१२	
तण कवल पावारे	२६०७	
तणगहणं अग्गिसेवण	४७७६	६२८
तणगहणे झुसिरेतर	४७६१	६०२
तण डगलग-छार मल्लग	३३२	
तण डगल-छार-मल्लग	११५४	२५३१
तण विगाण मजयट्ठा	५०२६	६२५
तण वेत्त-मुंज कट्ठे	२२८६	
तण-संचयमादीण	५५	
तणपणगम्मि वि दोसा	४००६	३२२
तणमादिगानियाओ	५६१०	
तणमालियादिया उ	२२८८	
तणुयमलित्त आसत्थ	६०१५	
तण्णग-वाणर बरहिण	५६०६	
तण्णिगवखता केई	५११२	
तण्हाछेदम्मि कत	२८८६	
तण्हातिओ गिलाणा	५२६१	३८२५
तर्ता रतते घणझुसिरे	५६६४	
ततिए पतिट्ठियादी	६ १६	
ततिए वि होंति जयणा	५७२०	
ततिओ उ गुरुसगास	१२५८	
ततिओ जावज्जाव	४०७७	
ततिओ धिति सपण्णो	८४	
ततिओ लक्खणजुत्त	४५५१	
ततिओ सजम-अट्टी	१७४२	
ततियभगासथर्डिनवि-	२६३२	
ततियलताए गवेसी	२८६७	१८६४
ततियव्वयाडयारे	२७२७	
ततियस्स जावजाव	४०७५	
ततिय भावतो भिण्ण	४७२१	
ततियाए दा असुद्धा	२८६५	
ततियादेसे भोत्तूण	३४१५	
तत्तऽत्थमिते गधे	२६५२	५८४८
तत्थ गतो होज्ज पहू	४१२५	
तत्थ गहण पि दुविह	४७४६	८६१

तत्थ गिलाणा एगो	६३३७	
तत्थऽगतत्थ व दिवस	१७३१	३७५४
तत्थ दमण्ह अवाते	३८१०	
तत्थ पवेसे लहुगा	५४७०	५३७५
तत्थ भवे णणु एव	५६६०	
तत्थ भवे ण तु सुत्त	६४६८	
तत्थ भवे मायमोसो	६३५७	
तत्थ वि घेप्पति ज	४६४१	
तत्थेव अण्णगामे	२६६६	१६०२
तत्थेव गतुकामा	२६४०	५८३६
तत्थेव य णिट्ठवण	४७७६	६१७
तत्थेव य निम्माण	५५१५	५४१८
तत्थेव य पडिबधो	५१५३	२५०३
तद्दिणमण्णादिण वा	११६२	
तद्दिवसकताण तु	२८०	
तद्दिवसभोयणादी	६०६६	
तद्दिवस पडिलेहा	१२७६	
तप्पडिपक्खे दव्वे	६३८७	
तमतिमिरपडलभूओ	२८४७	५५८१
तम्मि असधीणे जेट्ठा	११८३	३५६४
तम्मि चेव भवम्मी	३८०६	
तम्मि तु असधीणे वा	१२६६	
तम्मि य अतिगतमेत्त	१६७३	३६६७
तम्मि य गिद्धो अण्ण	११०७	
तम्मि वि णिव्वाघाते	२३४	
तम्हट्ठा जाएज्जा	६७६	
तम्हा आलोएज्जा	११३४	
,,	३१२१	
तम्हा उ अपरिकम्म	४६३७	
,,	४६४५	
तम्हा उ गिण्हियव्व	३२३४	४२५६
तम्हा उ जहि गहिय	४१४७	५२६६
तम्हा उ ण गतव्व	४१८३	५३०३
तम्हा खलु अबाले	१३४०	५६६
तम्हा खलु वेत्तव्वा	१२४६	
तम्हा खलु पट्ठवण	२८२६	५५७३
तम्हा खलु सग्गामे	६०४४	
तम्हा गवेसियव्वो	१३५८	

तम्हा गीयत्थेण	३८३३	
तम्हा ण कहेयव्व	६२२७	७६०
तम्हा ण तत्थ गमण	२४८६	
तम्हा ण वि भिदिज्जा	२१६३	
तम्हा ण सव्वसेज्जा	२४७३	
तम्हा निपासिय खलु	२१७६	
तम्हा पमाणगहणे	११२४	
तम्हा पमाणधरणे	४५४४	
तम्हा पुव्नादाण	१८७६	
तम्हा वसवीदाता	१२०७	
तम्हा विवीए भुजे	११११	
तम्हा सट्ठाणगय	४६७८	
तम्हा मव्वाणुण्णा	२०६७	
तम्हा मविग्गेण	३८४०	
तया दूराहड एत	१४६४	
तरुणा थेरा य तहा	२५८२	
तरुणा वसिति विवाह-	२५६२	
तरुणाइण्णे णिच्च	२३५३	५२५६
तरुणीओ पिंडियाओ	४०९१	१८४८
तरुणीण य पक्खेन्नो	२२४३	४९५०
तरुणे निप्फण्ण परिवारे	६०२१	४३३८
तन गालिएरि लउए	४७०२	८५२
तनिय पुडग दद्धेग	३४ १	२८८३
तलिआ तु रत्तिगमणे	३४३२	२८८४
तव कप्पति ण तु पम्ह	३७६२	
तव छेदो लहु गुरुगा	२२११	२४७९
तवगेलण्णऽद्धाणे	२९४०	५८१७
तव छेदा लहु गुरुगो	५१२६	२४७९
तवतिग छेदतिग	६५३८	
तवतीयमसद्दहए	६५६०	
तवबलिओ सो जम्हा	६५४२	
तस-उदग-वणे घट्टण	४२२२	
तस-पाण-बीयरहिते	३९४३	
तस बीयम्मि वि दिट्ठे	५८६७	४०४२
तसपाण तण्णगादी	३९७७	
,,	५९०५	
तस्सट्ठगतोभासण	३८४२	
तस्सऽसति फालितम्मि	७८६	

तस्सव । त मुत्ती वा	२८४०	५११८
तह अण्णतित्थियादी	८२२७	४२५८
तह इत्थि-णातवद्धादि	१७६५	
तह चेतरभिहारते	२७१४	
तह वि य ण सव्वकाल	४८५५	
तह समणसुविहियाण	५७७	४९३०
,,	६३०६	,,
तह से कहति जह	३०५१	१९५०
तहि सिक्कगहि हिंडति	३४३४	२८८६
तहि वच्चते गुरुगा	२८५३	५५८८
त अइप्पसग-दोसा	७२	
त अण्णतित्थिएण	७९९	
त अम्ह सहदेसी	१०३७	
त काउ कोति ण तरति	४१५१	५२७३
त कायपरिच्चयती	२६५९	
,,	३९९२	
,,	४७९०	९३०
त चेव णिट्ठवेती	५१४९	५५८३
त चेव निट्ठवेती	२८५०	,,
त चेव पुव्वभणिय	२३८४	४८२१
,,	६५५९	
त जे उ सजतीण	४०२७	
त जो उ पतोएज्जा	१४७९	
त ण खम खु पमादो	६३०९	
त तु अणुट्ठियदड	३९६६	
त दट्ठूण सय वा	६७२	
,,	६७४	
,,	१२८३	
त दारुदडय पादपुछण	८३१	
त दुविह णातव्व	५०१	
त पडिसेवेतूण	१०६०	
त पाडिहारिय पायपुछण	१९४८	
त पि य दुविह वत्थ	५००१	
त पुण ओहविभागे	६३१४	
त पुण गमेज्ज दिवा	४६३६	३०४२
त पुण गहण दुविध	७८९	
त पुण पडिच्छमाणो	३७३१	
त पुण रूव तिविह	५११५	

त मूत्तमुत्वहिगहण	४७७८	
त रयणि अण्णतथा	३४८०	
त वल मारवती	२०४१	१६६०
त सच्चित्त दुविह	४७६८	६०८
त सारिसग रयण	३६२१	
ताड तणफलगाट	१-८८	५० ७
ता जेहि पगारेहि	३-७७	
तालायर य ग्रारे	२२४३	८- ८
,,	३२१५	
तावा भेदो ग्रयमा	१८१५	५७४१
,	१८२०	
,,	२७८७	२७०८
तासेतूग ग्रवहिते	१ ०८	६८८
ताह न्चिय जति तनु	४६८०	
ताह पलवभग	४ १	
तिक्खम्मि उदगवग	५ ७६	
,,	६३०१	
तिक्खुत्तो निण्णि मासा	१८४२	
तिक्खुत्तो मक्खेत्ते	११७४	५५५
तिग बानाला ग्रट्ठ य	६५३५	
तिग सवच्छर तिगदुग	-०५५	१६१४
तिगु गगतेहिं ग दिट्ठा	१४४७	
,,	१४५५	
तिगुणपयाहिणपादे	३७५१	
तिट्ठाणे गवेगो	४५८२	
तिग वइ भुमिरट्ठाणे	२७६	
तिण्णि उ हत्थ डंडो	७००	
तिण्णि कसिणो जहण्णो	५८०६	३६-६
तिण्णि तिगगतरिते	१६०५	
तिण्णि दुवे एक्का वा	३१६५	
तिण्णि पसती य लहम	८६५	
तिण्णि विहन्ती चउरगुल	६८६	४ १३
,	५८३७	
तिण्गाव य पच्छागा	१२६४	
	१३६७	४०८१
,	५७८८	३८६२
तिण्हट्ठारसवीसा	३२७८	
तिण्हट्ठ सकमग	५५५२	

तिण्ह वि कतरो गुरुग्रो	५१५६	
,	१९७६	
तिण्ह एगेग सम	६६१	१६१६
तिण्ह तु तड्डियाण	७३२	
तिण्ह तु बधाण	७४५	
तिण्ह तु विकप्पाण	२१८६	
तिण्हारेग समाण	६२२०	७८१
तिण्हुवरि कालियस्सा	६०५६	
तिण्हुवरि फालियाण	७८७	
तिण्हुवरि बधाण	२१७८	
तिण्हगतरे गमण	१७१३	३१२५
तित्थकर पडिकुट्ठो	११५६	३५४०
तित्थकर रायाणो	६४१०	
ति-परिग्गह-मीस वा	१६००	
तिपरिरयमणागाढे	११७०	३५५१
तिप्पमितिघरा दिट्ठे	४६७६	
तिय मासिय तिग पणए	१८०६	
तिरिश्रो याणुज्जाणे	६००८	
तिरियनिवारण ग्रभिहणण	५२७५	३३५४
तिरियमचेतसचेते	२२२३	
तिरियमणुयदेवीण	६०३	
तिरियमणुस्सित्थीण	६०२	
तिरियाउ ग्रसुभनामस्स	३२-७	
तिरियोयाणुज्जाणे	१८४	
तिविधम्मि कालछेदे	५७६६	२६७३
तिविधम्मि वि पादम्मी	७३७	
तिविध वोसिरिग्रो सो	८६१	
तिविधा य त्व्वचूला	६४	
तिविधे तेइच्छम्मि	६६६१	
तिविह परिग्गह दिव्वे	४७५०	८६२
तिविह च होइ बहुग	६४२६	
तिविह च होति पाद	५८५२	४०२७
तिविह पुण दव्वग	५०	
तिविहाण वि एयासि	५६२६	
तिविहाऽऽमयभेसज्जे	५६८६	३०६५
तिविहित्थि तत्थ थेरी	५०३८	६३८
तिविहे परिवितम्मि	५-५३	४०२८
तिविहो उ विसयदुट्ठो	३६६०	

निविहो य पकप्पगरा	७२	
निविहा य हाइ जट्टा	५२५	
निविहा य हाइ धातू	८१३	
निविहा य होइ वुड्ढो	५४२	
निविहा य हाति कीवा	६३७	
निविहा य होति बाला	८५१०	
निविहा मरीरजड्डा	६२८	
निव्वाणुवद्धगामा	११४	
निसु छल्लहुया छग्गुरु	२८४५	१८४१
निसु तिण्णि तारगाश्रो	८१८९	
निसु लहुश्रो गुरु एगो	२९४४	१८६०
निसु लहुश्रा तिसु लहुगा	१६४१	
निहि थेरेहि कय ज	२१०८	२८१०
निनिगिए चलचित्ते	६१९८	७६२
नीतम्मि य श्रट्टम्मी	८८१	
नीमदिणे श्रायरिए	७८११	५७७७
नीस ठवणाठाणा	८८३९	
नीमुत्तरे पणुवीसा	६८८१	
नीसु वि दीवितकज्जा	७७१२	५४९२
नीसु वि विज्जतीसु	४५१	
तुच्छेण वि लोहिज्जन्ति	२८५३	२०५४
तुब्भट्ठाए कतमिण	४८६१	४०३६
तुब्भेत्ति ताव गवसह	१३८१	४६४५
तुमए चेव कतमिण	६६०९	
तुमए समग श्राम	३६२४	५१८९
तुम्हे मम श्रायरिया	२६३५	
तुल्लम्मि श्रदत्तम्मि	३४६८	२९१७
तुल्ले मेहुणभावे	५१९३	२५१४
नुल्ले वि समारभे	४८७२	१८२९
तुल्लेसु जो सलद्धी	६३६६	
तुवरे फले य पत्ते	२०१	२९२२
,,	३४७०	,,
,,	५७०४	,,
तुम्मिणी श्रटति गिनि व	७२६	
तुसिणीए हु कारे	८५६	६१०५
तुह दसण-मजणिश्रा	२२९६	
तूरपति दति मा ने	१०४२	६८१
नऊ-वाउविहूणा	१२८२	५६५२
तेगिच्छिगस्स इच्छा	३०६२	
त नव तत्थ दासा	५१७५	२५२८
	५१८८	,,
नेगट्ठम्मि पमज्जणा	३३७८	
तेण पर गिहत्थाण	२३८६	
नेण पर सरितादी	५५६५	
तेगभय मावयभया	३२७३	४२०५
तेगभयादक्कज्ज	५६५२	३०६०
तेगादिसु ज पावे	३२९५	
तगारक्खिय-मावय	१५५३	३२०९
तेणा व सजयट्ठा	४५१३	
तेणे कीवे गया	३७४१	
तेणे देव-मणुस्से	४७४०	८८२
तेणे य तेणतेणे	३७२९	
तेणेव माइया मो	३०८३	१९८२
तेणेसु णिसट्ठेसु	५३०२	३३८१
तेणेहि व अगणीण व	१७२५	३७४७
तत्तीम ठवणपदा	६४४८	
ते तत्थ मण्णिविट्ठा	५२६०	३३४१
ते तत्थ सन्निविट्ठा	५२९३	३३७२
,,	५३९४	
ते दोऽवुवालभित्ता	५४७४	५३७९
ते पुण एगमणेगा-	६३५१	
तेरप सय श्रट्ठट्ठा	६४७२	
तेरिच्छ पि य तिविह	५१८०	२५३४
तलुक्कदेवमहिता	१७१५	६२००
तेल्लुव्वट्टण ण्हावण	३०५३	१९५२
तेल्ल घत णवणीते	१५९२	
ते वि य पुरिसा दुविहा	५२०९	२५६२
तेम्नि अवारणे लहुगा	५२७४	३३५३
तेसि अप्पा णिज्जर	३३३५	
तेसि नत्थ ठियाण	३२४०	४२६५
तसि पडिच्छणे आणा	५६२९	
त मीदिउमारद्धा	५११०	२४६२
तेसु अगिण्हतेसू	२५३१	३५८९
तेसु अगेण्हतेसू	२४८४	,,
तेसु अमणावत्थादी	५७६१	
तेसु ठितेसु पउत्थो	५२५८	३३३९

तेसु तमगुणगात	५०	
तेसु प्रमहीणेसु	२६८५	
तेसु दिट्ठिमवयतो	४१२६	
तदुभयदाण्य पि व	६१६८	
ता कट्ट छित्तव्वा उ	४५२८	
ता पत्ता मथुरहि	१७५७	
तामन्तिए वग्गरणा	१२६१	२४४६
थ		
थणजीवि तन्नग खलु	३६८०	
थत देउलियट्ठाण	११६८	३५४६
थल सक्रमणे जयणा	४२४८	१६५८
थलि गोणि मय मत	४८१२	६६३
थडिल तिविहुवघाति	१५२२	
थडिल्ल असति अद्धाण	१८६८	
,,	१६१८	
थडिल्लममायारी	६२४८	
थडिल्ल न वि पासति	३५५१	
थावरणिप्फण्ण पुण	६४०	
थी-पुरिसअणायारे	५३२०	२३७४
थी पुरिमा जह उदय	४६०२	५१६६
थी पुरिमा पत्तेय	३६०४	५१७१
थीसु ते च्चिय गुम्मा	५७७२	
थुल्लाए विगडपादा	४३६१	
थूणाओ होंति वियत्ती	४२६८	
थूणादी ठाणा खलु	४२६७	
थूल-सुहुमेसु वोत्तु	५८७५	
थूले वा सुहुमे वा	५८७४	
थेरबहिट्ठा खुड्डा	२४०४	
थेराणेस वि दिन्नो	५५२८	
थेराणितिविह अधवा	५२२२	१८१
थेरिय दुण्णिखित्त	३४००	
थेरी दुब्बलखीरा	४३८२	
थेरुवमा अक्कते	४२६३	
थेरेण अणुण्णाए	३७६५	
थोव जनि आवण्णा	२८५७	५५६०
थोवाऽवमेमपारिरि	६०७८	
थोवावमेमियाए	६१३५	
थोवा वि हणति खुह	५३८५	३२६४

द		
दगकक्कादीह नवे	४६४२	
दगघट्ट तिण्णि सत्त व	३१६५	
दग-णिग्गमो पुव्वुत्ता	२०५६	
दगतीर ता चिट्ठ	१६७	५६६१
,,	४२१२	,,
दगभाणूणे दद्ठु	५२७८	३४२८
दगमुद्देसिय चेव	६२७८	
दग मेहुणसकाए	५३२३	२३६७
दगवाय सविकम्मे	२०५७	
दगवारबद्धणिया	४११३	
दगवीणिय दगवाहो	६३४	
दगतीरचिट्ठणादी	५३१०	
दट्ठु पि णे ण लज्जा (न्भामो)	१३४६	५७२
दट्ठूण दुण्णिविट्ठ	३६४१	
दट्ठूण य राइड्ढि	१७४०	२७६२
,	२५४३	
,,	२५६६	
दट्ठूण व सतिकरण	५३३६	
दट्ठूण व हिंडतेण वा	१२५१	
दट्ठूण वा णियत्तण	५३१४	२३८८
दड्ढे मुत्ते छगणे	१७१	
दत्थी हामि व णीए	१०५७	
दधितक्कबिलमादी	२६२	
दप्प-अकप्प-णिरालब	४६३	
दप्पण मणि आभरणे	४३१८	
दप्पपमादाणाभोगा	४७७	
,,	४७८	
दप्पादी पडिसेवणा	१४३	
दप्पे कप्प-पमत्ताणाभोगा	६०	
दप्पे सकारणमि य	८८	
दप्पेण होंति लहुया	४७६	
दमए दूभगे भट्ठे	५०६३	६३२
दमए पमाणपुरिसे	४०६६	१८२२
दम्मादी ठाणा खलु	२६८०	
दरहिडिते व भाण	४१६४	५३१३

दवियपरिणामतो वा	२८६७	
दव्वखएण पनो	१६३६	१५८८
दव्वट्ठवणाहारे	३१६६	
दव्व-णिसीह कतगादिएसु	६८	
दव्वतो चउरो सुत्ता	४७१८	
दव्वदिसखेत्तकाले	३६९४	५२१४
दव्वपडिवद्ध एव	२०६८	
दव्वप्पमाणअतिरेग	५८२२	३९९९
दव्वप्पमाण गणणा	१६५३	१६११
द० ...णाइरेग	५७८६	
दव्वम्मि दाडिमबाडिएसु	३३४४	
दव्वम्मि वत्थपत्तादिएसु	८५३	
,,	८७६	
दव्वमिती भावसित्तं	३८२२	
दव्व खेत्त काल	६२३४	
,,	६२३९	
,	६२४२	
,,	६२४६	
दव्व जोग्ग ण लब्भ	१०६५	
दव्व तु जाणित व	१७५५	३७७
दव्वाइ उज्झिय	५०११	६११
दव्वागतिपाहुए ता	३७५९	
दव्वादि चतुरभिग्गह	६३७९	
दव्वादि तिविहकसिणो	९५६	
दव्वादिविवच्चास	३३५१	
दव्वादी अपसत्थे	३७५०	
दव्वे आहारादिसु	२६४२	
दव्वे इक्कड कठिणादिएसु	८८७	
दव्वे एग पाद	५८८६	४०६१
दव्वे खेत्ते काले	८५७	
,,	८६१	
,,	८७५	
,,	८८६	
,,	९४८	
,,	१०१०	
,,	१०२५	
,,	१०६४	
	२१८०	
,,	२६४१	
,,	३३४३	
,,	३६५१	
दव्वेण य भावेण य	१०११	
,	४०९८	
,	६६१०	१८५४
दव्वे त चिय दव्व	६०८३	
दव्वे पुट्ठमपुट्ठो	१०२६	
दव्वे भविओ णिव्वत्तिओ	६२८३	११२७
दव्वे भावेऽविमुत्ती	११६३	३५४४
दव्वे य भाव तितिण	४८०	
दव्वे य भाव भेयग	६२८०	
दव्वोग्गहणग आएस	४९	
दव्वोउक्खरणोहादियाण	३२२५	४२५०
दम आउत्तिवादमा	३५४२	
दम उत्तर सतियाए	६४८०	
दस एतस्स य मज्झ य	३०५	६०७२
दम चेव य पणयाला	६५८२	
दस ता अणुसज्जती	६६८०	
दसउर-नगरुच्छुघरे	५६०७	
दसदुयए सजोगा	२०९२	
दसमासा पक्खेण	२८३१	
दमसु वि मूलायरिए	३६०१	५१६८
दमहि य रायहाणी	२५८८	
दडधरो दडारक्खिओ	२५१६	
दड पडिहार-वज्ज	१९७३	२९७७
दडसुलभम्मि लोए	६६०७	
दडारक्खिय दोवारेहि	२५१५	
दतच्छिण्णमलित्त	३४९४	
दतपुरे आहरण	१२९५	२०४२
दतामय दतेसु	१५२०	
दतिक्क-गोर तेल्ले	५६६४	२०७२
दते दिट्ठे विगिचणा	६१११	
दसणचरणा मूढस्स	४७९२	९३२
दसण-णाण चरित्ताण	२११६	
दसण णाण चरित्त	४८४	
,,	३६२७	
	४२४१	
,	४३४२	

दमगणगारो माता	३३८३	२७८४
दमगागे सुत्तत्थ	६३६२	
दमणक्खे आयरिओ रज्जकाए	१५३४	
दमगपभावगण	४८६	
दमगावाय लहुगा	१४७७	३१८६
दाऊण अण्णदव्व	४०६७	१८२६
दाऊण गेहं तु सपुत्तदारो	११६३	
दाऊण वा गच्छति	२६७६	१८८१
दाणग्गहणे सवासओ	५६२७	
दाणफल लवितूण	६६३	
दाण ण होति अफल	६४३०	
दाणाई समग्गी	१८४१	
दाणे अभिगमसड्ढे	१६२०	१५८०
,,	१६२६	१४८६
,	१६३०	१५७६
,,	१६३१	१५८१
दाणेण तोसितो वा	३७०५	
दातु वा उदु रुस्से	५०२२	
दायग-गाहग-डाहो	५६६६	
दारदुगस्स तु असती	२३७८	६८१५
दार न होति एत्ता	१२६६	३३७५
दाराभोगण एगागि	२६६५	
दाराभोयण एगागि	४४०७	
दावद्दविओ गतिचवलो	६२०३	७५२
दासे दुट्ठे य मूढे य	३५०७	
दासो दासीवतिओ	३१८५	
दाह ति तेण भणित	४४५०	
दाहामि त्ति य भणिते	१००१	
दाहामो ण कस्सयि	५०८२	२८२७
दाहामो त्ति व गुरुगा	३०४१	१६४२
दाहिणकरम्मि गहितो	३५१५	
दाहिणकरेण कण्णे	५८६६	६६६
दिक्खेहि अच्छता	२५८५	
दिज्जते पडिसेहो	४४७६	
दिज्जते वि तदा	१२०४	६६०१
दिज्जतो वि ण गहितो	१३७८	४६४२
दिट्ठमणेसियगहणे	१०२	
दिट्ठमदिट्ठा य पुणो	२२०१	

दिट्ठमदिट्ठे विदमत्थ	२७१८	४७२६
दिट्ठ सलोमे दोसा	६०११	३८३४
दिट्ठ कारणगहण	६०३६	
दिट्ठ च परामट्ठ च	१७७६	३७६८
दिट्ठ त पडिहणिता	१३७६	४६६०
दिट्ठा व भोइएण	२२७१	
दिट्ठीपडिसंहारो	५७०	
दिट्ठीमोहे अपससरणे य	३४	
दिट्ठ णिमतणा खलु	६५२६	
दिट्ठे महस्सकारे	६८	
दिट्ठे सका भोतिय	४७२७	२१७५
दिट्ठो वण्णेणम्हं	१२५५	
दिण्णमदिण्णो दंडो	६४१५	
दिण्णे भवन्निवेसेण व	१३५६	४६२३
दियदिन्ने वि सचित्ते	५६४०	३०४६
दियभत्तस्स अवण्ण	३३६३	
दियराओ गोमतेण	६१६६	
दियराओ लहु गुरुगा	२६६१	५८५६
दियरातो उवसपय	६२२५	
दियरातो भोयणस्सा	३३६१	
दियरातो लहु-गुरुगा	४७३६	८७८
दियरातो लेवण	५२००	
दिवसणिसि पढमचरिमे	१३४	
दिवसत्तो अण्ण गेण्हति	२६६५	
दिवसतो ण चेव कप्पति	३२२०	
दिवसभयए य जन्ना	३७१८	
दिवसब्भयओ उ घिप्पति	३७१६	
दिवसा पचहि भतिता	२६४२	
दिव्व-मणुय-तेरिच्छ	३३१४	
दिव्वमणुयाउ दुगतिगस्स	३६४६	
दिव्व अच्छेर विम्हओ	३३३६	
दिव्वाइतिग उक्कोसगाइ	२६१	
दिव्वेसु उत्तमो लाभो	१०८६	२८३४
दिसि पवण गाम सूरिय	१८७१	
दिसिमूढो पुव्वावर	३६८६	५२१०
दिसिदाहो छिण्णमूलो	६०८६	
दिस्सिहिति चिर बद्धो	५६०७	
दितेण तेसि अप्पा	४५३४	

दीह छेयण डक्को	२३०	
दीहं च णीस सेज्जा	५९२१	
दुक्करयं खु जहुत्तं	५४४४	
दुक्खं कप्पो वोढुं	३९६	
दुक्खं खु निरणुकंपा	५६३३	
दुग-तिग-चउक्क पणगं	१३९१	
दुगपुड-तिगपुडादी	९१७	
दुगुणो चउग्गुणो वा	५८०४	
दुग्गविसमे वि न खलति	६६९८	
दुग्गादि तोसियणिवो	६०८०	
दुग्गूढाणं छण्णंगदंसणे	५३१	२५९६
दुट्ठिय भग्ग पमादे	४०२२	
दुण्णिय दोण्णि विट्ठा	३४८६	
दुपदचउप्पदणासे	४६८२	
दुपद-चतुप्पद-बहुपद	७०३	
दुपय-चउप्पयमादी	३२६	
दुपय-चतुप्पदणासे	१४६७	
दुप्पडिलेहियदूसं	४०२०	३८४३
दुप्पडिलेहियमादीसु	२७९७	५७६३
दुप्पभिति पितापुत्ता	११७७	३५५८
दुब्बलगहणि गिलाणा	४९५७	
दुब्बलियत्तं साहू	४२०६	
दुब्भासियहसितादी	६३२०	
दुमपुप्फिपढमसुत्तं	२०	
दुल्लभदव्वं दाहिति	३९७	
दुल्लभदव्वेच सिया	११७२	३५५३
दुल्लभदव्वे पढमो	४५२	
दुल्लभपवेस लज्जालुणो	१५५८	
दुविध तवपरूवणाया	४१	
दुविधं च भावकसिणं	९५३	३८७६
दुविधं च होई तेण्णं	३२४	
दुविधं च होति मज्भं	२४३२	
दुविधा छिण्णमच्छिण्णा	४५४९	
दुविधा णायमणाया	३९३५	
दुविधे गेलण्णम्मि	११६९	६३७९
"	२५२४	३५५०
"	२५१२	६३९६
दुविधे तेइच्छम्मी	२२५६	
दुविधे तेगिच्छम्मी	२२३०	
दुविधो उ भावमंथवो	१०४०	
दुविधो कायम्मि वणो	१५०१	
दुविधो खलु पासत्थो	४३४०	
दुविधो परिग्गहो पुण	३७७	
दुविधो य मुसावातो	२९०	
दुविधो य संकमो खलु	६२१	
दुविह चउव्विह छउव्विह	११५१	३५३२
दुविह तिविहेण रुंभति	४९६४	
"	४९८६	
दुविहमदत्ता उ गिरा	६२५०	
दुविहम्मि भेरवम्मि	५७२३	३१३५
दुविहरुयआतुराणं	४६२१	
दुविहं च दोसु मासेसु	६४२४	
दुविहं चेव पमाणं	५४३२	
दुविहा उ होइ वुड्ढी	२९२३	५८१९
दुविहा तिविहा य तमा	४१२३	
दुविहा दप्पे कप्पे	१४४	
दुविहा दुगुंछिया खलु	५७५९	
दुविहा पट्ठवणा खलु	६६४२	
दुविहा य लक्खणा खलु	४२९२	
दुविहा य होइ दूती	४३९८	
दुविहा य होति जोई	५३५३	
दुविहा लोउत्तरिया	१६१९	
दुविहा सामायारी	६२१५	७७७
दुविहासती य तेसिं	६२७१	
दुविहे गेलण्णम्मी	२५३२	३५५०
दुविहो अदंसणो खलु	३६७२	
दुविहो जाणमजाणी	३६०९	
दुविहो तस्स अवण्णो	३३०१	
दुविहो य अणभिभूतो	३६३९	
दुविहो य पंडतो खलु	३५७२	५१४९
दुविहो य होइ कुंभी	३५९१	
दुविहो य होइ दुट्ठो	३६८१	४९८६
दुविहो य होइ धम्मो	३२९९	
दुविहो य होइ पंथो	५६४५	३०५१
दुविहो य होइ कीवो	३६३८	
दुविहो य होति कालो	६१२५	

दुविहो य होति दीवो	५४०८	४६१
दुविहोहारि वमभा	६४८५	
दुव्वग्गम्मि य प.दम्मि	७५५	
दुस्सिक्खियस्स कम्म	४१२२	
दुहओ गेलरणम्मी	३२८६	
दुहतो वाघातो पुग	३९८५	
दुहतो वाघायम्मी	३७८६	
दूइज्जता दुविहा	२९२	
दतित्त खु गरहित	६६००	
दूमिय धूमिय वासिय	२०६८	५८४
दूरगमणे गिम्मि वा	५७७०	
दूरे चिक्खिल्लो	६५३८	
दूसपलासनरिग	६१२	
दूसियवेदो दूसी	३५७३	५९५०
देवतपमत्तवज्जा	६६८६	
देवा ह णे पसण्णा	३०८२	१६८९
देवेंदवदिएहिं	६१८७	
देमकहा परिकहणे	२७७८	२६६७
देमग्गहणे बीग	५३६३	३३२२
,,	५२४०	
देसच्चाई सव्वच्चाई	४८१	
देसपदोसादीसु	३३२५	
देसम्मि बायरा ते	२०४३	
देस भोच्चा कोई	३८९३	
देमिय वाणिय लोभा	५०८१	२८२६
देसिल्लग पम्हजुय मणुण्ण	५८२१	३९९८
देसे सव्वुवहिम्मि य	४५४८	
देसो नाम पमती	४६४२	
देसो व सोवसग्गो	४७६६	९३७
,,	४८०१	९४२
देसो सुत्तमहीय	६२६७	
देहजुतो वि य दुविहो	२१९७	
देहविउगा खिप्प	३९०१	
देहविभूसा बभस्स	५०९५	
देहस्स तु दोब्बल्ल	१८९१	५६०८
देहहिका गणणेक्का	६५४	
दोग्गइ पडणुपधरणा	१५	
दोगच्च वइता माणे	३७९	

दो चेव निसिज्जाओ	६२१७	
दो चेव सया सोला	२१३३	
दोच्चेण आगतो	५७४१	२२७२
दोच्च गि उग्गहो त्ति य	५०६६	२८११
दो जोयणाइ गतु	४२४७	५६५७
दोण्णि उ पमज्जणाओ	२८२	२७४६
,,	३१३८	२७४६
दोण्णि तिहत्थायामा	१४०६	
दोण्णि वि विसीयमाण	५५५७	
दोण्णि वि सहू भवन्ति	१७४५	३७६८
दोण्णेक्कतरे खमणे	६३७०	
दोण्णन्तरे काले	१०६२	
दोण्हट्ठाए दोण्ह वि	२७५३	
दोण्ह वि उवट्ठियाए	६००३	
दोण्ह वि कयरो गुरुओ	२९०४	५८०१
दोण्ह वि चियत्त गमण	५६७७	३०८६
दोण्ह वि समागता	५६७८	
दोण्ह जइ एक्कस्सा	३२२४	
दोण्ह पि गुरूमासो	५९१	
दोण्ह पि जुवलयाण	५०४१	६४०
दोण्ह वच्च पुव्वचिय तु	९४	
दो थेर खुड्ड थेरे	३७९६	
दो दविखणापहा वा	९५९	२८९२
दो पत्त पिया पुत्ता	२७६७	
दो पायाऽणुण्णाता	४५२४	
दो मासे एसणाए	५५४२	
दो रासी ठावेज्जा	६४४७	
,,	६४४१	
दारेहि व वज्भेहि व	९३७	२८९९
दो लहुया दो गुरुया	३५२८	
दो लहुया दोसु लहुआ	१५८६	
दो वारियपुव्वुत्ता	२५२७	
दोमविभवाणुरूवो	६६५६	
दोसा जेण णिरु भन्ति	५२७३	३२२१
दोसा जग्ग निरु भन्ति	५२५०	२३३१
दोसा वा के तस्सा	११३६	३५२०
दोसाभरणा दीविच्चणाउ	९५८	३८९१
दासु वि अलद्धि कण्णावरेण	५४७	२९१३

दोसु वि अव्वाच्छण्णा	११८७	३५६८
दोहि तिहि वा दिणेहि	२७७०	
दोहि वि गुरुगा एते	६६३१	४४२४
,,	६६३४	,,
,,	६६३७	,,
दोहि वि णिसिज्जणेहि	२१९०	
दोही तिहि वा दिणेहि	६३७५	

ध

धणधूयमच्चकारिय-भट्टा	३१९४	
धण्णतरितुल्लो जिणो	६५०७	
धण्णाइ चउव्वीस	१०२९	
धण्णाइ रतणथावर	१०२८	
धम्मकहातोऽहिज्जति	४४८१	
धम्मकहा पाढेति य	३६१५	५१८२
धम्मकहि वादि खमए	४४८०	
धातादिपिंड अविसुद्ध-	४४७३	
धातुनिधीण दरिसणे	१२७०	
धाण्यति धीयते वा	४३७६	
धारेतव्व जात	१७९१	
धारोदए महासलिलजले	५२६२	३४२२
धिति बलजुत्तो वि मुणी	१७६०	२७८३
धिति सारीरा सत्ती	४८१५	९५६
धीरपुरिसपण्णत्त	३९११	
धीरपुरिसपरिहाणी	५४२३	
धीभु डिओ दुरप्पा	४७५६	८९८
धुवणाऽधुवणे दोसा	५८३६	४०१२
धुवलंभो व दव्वे	४०५	
धुवलोओ उ जिणाण	३२१३	
,,	३१७३	
धूमादी बाहिरितो	३६६५	५२१५
धोतम्मि य निप्पगले	६१६७	
धोतस्स व रत्तस्स व	१९७४	२९७८

न

न पगासेज्ज लहुत्त	३९३४	
न वि जोइस न गणित	३९७९	
न वि जोतिस न गणिय	५२८६	
न वि रागा न वि दोसो	४९७६	
न वि रागो न वि दोसो	४९९७	
नडपेच्छ दट्ठूण	२९७६	५३५२
नडमादी ठाणा खलु	२५९८	
नदिखेडजणवउल्लुग	५६०१	
नयवानसुहुमयाए	६०६३	
नदिपडिग्गह वि पडिग्गह	४५६३	
नदीतूरं पुण्णस्स	३०२०	१५४९
नाऊण य वोच्छेद	२७११	
नाणम्मि तिण्णि पक्खा	५४९२	५३९७
नाणाति तिविहा मग्गो	२८६६	
नाणिव्विट्ठ लभति	४५०४	
नाणुज्जोया साहू	५३९९	३४२३
नाणे दसण-चरणे	७	
नाणे महकप्पसुय	५५७२	५४७२
नातिक्कमते आण	२९१७	५८१४
नातो मि त्ति पणासति	३५६६	
नाम ठवणा आण	४७०८	८३९
नाम ठवणा दविए	३३५९	
,,	६२८२	११२६
,,	६२९६	
नाम ठवणा पक्क	५८९८	१०३४
नाम ठवणा भिक्खू	६२७४	
नाम ठवणा भिण्णा	४७१९	८५८
नाम ठवणा वत्थ	५००२	६०३
नायगमनायग वा	२७४७	
नावजले पकथले	६०२४	
नावा- उग्गमउप्पायणेसणा	६००१	
नावाए-खिवण बाहण	६०१२	
नावादोसे सव्वे	६०१९	
नावासतारपहो	६००७	
नाविय-साहुपदोसे	४२१४	५६२४
निक्कारणम्मि दोसा	५२८४	३३६२
निक्खम-पवेसवज्जण	५२९२	३३७१
निग्गथी गमण पहे	१७८६	
निम्मलगधगुलिया	४४७६	
नियमा तिकालविसए	२९९३	
,,	४४०५	
नियमा पच्छाकम्म	४११४	

निरुवस्सग्गनिमित्त	६५६३	
नीसट्ठेसु उवेह	५३००	३८७६
नीसकमणुदितो अतिछित्ता	२६११	५८०८
नीसंकिश्रो वि गतूण	४५६६	
नेच्छति जलूग वेज्जे	३१६६	
नोइदियस्स विसश्रो	४२८८	
नोवेक्खति अप्पाण	३३१६	

प

पउमम्मि य पच्छित्ता	३०७२	
पउमप्पल मातुलिगे	१६४२	
,,	४८६१	१०२६
पउमुप्पले अकुमल	७५४	४०७५
पउमुप्पले अकुमले	५०४६	४०२५
पउरऽण्णपाणगमणे	२३६०	४८२०
पक्क भिण्णाऽभिण्णे	४६००	१०३६
पक्खिय चउवरिसे वा	२१४०	
पक्खिय चउ सवच्छर	६३१३	
पक्खिय-मासिय छम्मासिए	३२१४	
पक्खी-पसुमाईण	२३२३	
पक्खी-पसुमादीण	२३२१	
,,	२३२७	
पक्ख-पक्खे भावो	३५६७	
पक्खेवदमादीया	१२१२	
पगतीए समतो साधु	४१०	
पगती पेलवसन्ना	५०७३	२८१८
पच्चक्खाण भिक्खू	३६८६	
पच्चक्खाते सते	१६१५	
पच्छण्ण असति णिण्हग	२३८१	४८१८
पच्छण्ण-पुव्वभणिते	२३८७	४८२४
पच्छण्णा सति वहिता	२३६६	४८०४
पच्छाकड-वत-दसण	१०६४	
पच्छाकड-साभिग्गह	६२६	
,,	६३८	
,,	६४४	
,,	६४६	
,,	६६१	
,,	६६७	
,,	६६८	
पच्छाकड-साभिग्गह	७०८	
,,	७१७	
,,	७२५	
,,	१६२६	
,,	४०२१	
पच्छाकडादिएहिं	४६५२	
पच्छाकडादि जयणा	३०४४	१६४५
पच्छाकडे य सण्णी	३०२३	१६२६
पच्छाकम्मममतिते	५४१६	
पच्छाकम्मपवहणे	६८२	
पच्छा वि होति विगला	३७१०	
पच्छा सथवदोसा	१०४४	
पच्छिन्नऽणुपुव्वीए	६६२१	
पच्छित्तऽणुवाएण	६७००	
पच्छित्तपरूवणाया	४१४६	५२६८
पच्छित्तस्स विवड्ढी	२०८१	
पच्छित्त खु वहेज्जह	४८७७	१०१६
पच्छित्त दोहि गुरु	२२०७	
,,	२२१३	
,,	२२२१	
पच्छिन्न पण जहण्णे	५८६८	
पच्छित्त बहुपाणा	३२०२	
पच्छित्तेण विसोही	६६७७	
पज्जोसवणाए अक्खराइ	३१३८	
पज्जोसवणा कप्प	३२१८	
पज्जोसवणा काले	३१३७	
पज्जोसवणा केसे	३२१०	
पट्टो वि होति एगो	१४०१	४०८५
पट्टविश्रो मे अमुश्रो	२६८८	
पट्ठविन वदिते नाहे	६१४३	
पट्ठवितम्मि सिलोगे	६१६१	
पट्ठविता ठविता या	६६४३	
पट्ठविया य वहते	६६४४	
पट्टीवसो दो धारणाश्रो	२०४६	५८२
पडरा अवगुतम्मि	५८६५	
पडणा नु उप्पतित्ता	३८०३	
पडिकारा य बहुविधा	२४१६	
पडिकुट्ठ देस कारण गता	३४२८	२८८१

पडिकुट्ठेल्लगदिवसे	६३८३	
पडिगमण अण्णतित्थिय	५३८	२६०३
,,	२५४८	१०५४
,,	४९१७	१०५४
पडिगमणादिपदोसे	३८२८	
पडिगामो पडिवसभो	४६७५	
पडिचरणपदोसेण	४५०३	
पडिचरती आचरती	३५९६	
पडिजग्गति गिलाण	३२७२	४३०४
पडिजग्गिता य खिप्प	१७९२	३७८५
पडिणीयता य केई	३९६७	
पडिणीयता य अण्णे	२०७०	
पडिणीय पुच्छणे को	५९८५	
पडिणीयम्मि वि भयणा	६३६०	
पडिणीय-मेच्छ सावत	१७३४	३७५६
पडिणीयया य केई	३९६८	
पडिणीय विसक्खेवो	१४८०	
पडित पम्हुट्ठ वा	१७०३	
पडिपक्खो तु पट्टुट्ठो	२२५९	
पडिपहणियत्तमाणम्मि	५०१५	२३८९
पडिपुच्छ-दाण-गहणे	१७८७	
पडिपुच्छ अमणुण्णे	२०९६	
पडिपुण्ण-हत्थ पूरिम	२१७०	
पाडपोग्गले अपडिपोग्गले	२१४१	
पडिबद्धलदि उग्गह	२१२२	
पडिबद्धा सेज्जाए	५१७	
पडिबद्धा सेज्जा पुण	५१८	
पडिमतथभणादी	४४६१	
पडिमाए झामियाए	५३७७	३४६५
पडिमाजुत दहजुय	३६२	
पडिमाजुते वि एव	५०७	
पडिमाझामण ओरुभण	५४०५	४९९
पडिमापडिवण्णाण	३१४७	
पडिमेतर तु दुविह	५११६	
पडियरिहामि गिलाण	२९७६	
पडियाणियाणि तिण्ह	७७६	
पडिलाभणऽट्ठमम्मी	२८१	४९२४
पडिलाभणा तु सड्ढी	५८४	४९३७

पडिलाभित वच्चता	४४७२	
पडिलेहणाऽणुण्णवणा	८९२	
पडिलेहण पप्फोडण	१४१८	
,,	१४२२	
,,	१४३३	
पडिलेहणमागयण	१३५५	
पडिलेहण-मुहपोत्ती	३४९३	
पडिलेहण मज्जाए	६३४७	
पडिलेहणसथारे	३९०८	
पडिलेहणा तु तस्सा	१४१७	
पडिलेहणा दिसाण	१८७०	
पडिलेहणा पमज्जणा	१४२३	
पडिलेहणा पमज्जणा	१४२०	
पडिलेहणा बहुविहा	४१४९	
पडिलेहणा य पप्फाडणा	१४१९	
पडिलेह दियतुयट्टण	५५५५	५४५४
पडिलेहपोरिसीओ	३००१	१९०३
पडिलेहा पलिमथो	९४६	३८७७
पडिलेहितम्मि पादे	१४२१	
पडिलेहिय च खेत्त	२४६४	२०६९
पडिलेहोभयमडलि	६५६	२३७९
पडिलोमाणुलोमा वा	३८८२	
पडिवत्तीइ अकुसलो	१६९	
पडिविज्जथभणादी	४४५९	
पडिसिद्ध समुद्धारो	४२४	
पडिसिद्ध तेगिच्छ	४८०६	
पडिसिद्धा खलु लीला	४८४२	९८२
पडिसेधे पडिसेहो	१८३९	
पडिसेधे वाघाते	४२५	
पडिसेवओ उ साधू	७६	
पडिसेवणाए एव	५१३२	२४८२
,,	५१७४	,,
,,	५१८७	,,
पडिसेवणातियारा	३८७२	
पडिसेवणा तु भावो	७४	
पडिसेवणा य सचय	६६१६	
पडिसेवणा वि कम्मादएण	६३०८	
पडिसेवती विगतीतो	३८६९	
पडिसेवतो तु पडिसेवणा	७३	

पडिसेवतस्स तहिं	३७५	४६५८
	२२४८	,,
पडिसेविताणि पुव्व	६६६२	
पडिसेहगस्स लहुगा	५४६२	१३६७
पडिसेहणा णिक्खमणे	५६८०	३०८६
पडिसेहणा वरटगा	४७५४	८९६
पडिसेहे अन्नभे वा	३४४६	२८६६
पडिसेहेऽजयणाए	३०४२	
पडिसेहे पडिसेहो	४९७७	
,,	४९६८	
पडिसेहो अववाओ	६६८४	
पडिसेहा जा आणा	६६८५	
पडिसेहो वा ओहो	६६६६	
पडिहारिणीओ पडिहारिओ	१३००	
पडिहारिए जो तु गमो	१६५२	
पडिहारिते पवेसे	१७५०	३७७३
पडिहारिय अदेंते	३३४	
पडुपण्णऽणागते वा	२९५७	
पढमग-भंगो वज्जो	२४६६	६३८३
पढमचरमाहिं तु	०४२७	
पढमा-ततिय-मुक्काण	३३७३	२७७४
पढमदिणबितिय-तातए	२७६५	
पढमदिणणाणापुच्छे	६३७२	
पढमदिणे म विफाले	६३२६	
पढमबितिएसु कप्पे	३८७७	
पढमबितिएहि छड्डे	३८२७	
पढमबितिय दिवा वी	२९५६	५८५१
पढम-बितियदुतो वा	४८९	
पढम-बितियाण करण	६९५	
,,	७०४	
,,	७१४	
,,	७२२	
पढमबितियातुरस्स य	३४२३	२८७५
पढमम्मि जो तु गमो	१४४८	
पढमम्मि य चतुलहुगा	१३१५	४६१
पढमम्मि य सघयणे	३९४८	
पढमम्मि समोसरणे	३२२२	
,,	३२५३	

पढमस्स ततियठाणे	५१६६	२५१६
पढमस्स होंति मूल	६६५६	
पढमं तु भङ्गमाता	५३९३	३४४८
पढम बितिय ततिय	५९७२	
पढम राइ ठवेते	२९९४	१८९६
पढमा ठवणा एक्को	६४५९	
,,	६४६०	
,,	६४६१	
पढमा ठवणा पक्खो	६४४९	
,,	६४५०	
,,	६४५१	
पढमा ठवणा पच य	६४५४	
पढमा ठवणा पच	६४५५	
,,	६४५६	
पढमा ठवणा बीसा	६४४३	
,,	६४४४	
,,	६४४५	
पढमाए गिण्हिऊण	४१६१	५२८३
पढमाए पोरिसीए	५७८	४९३१
पढमाए बितियाए	२९०२	५७९९
पढमालिअ करणे वेला	२४६	
पढमासति अमणुण्णे	२३८५	४८२२
पढमासति सेसाण व	२३७१	
पढमिल्लुगम्मि ठाणे	५१२६	२४७५
,,	५१६८	
,,	५१८३	२०७५
पढमिल्लुगम्मि तव्वारिह	५१७०	२५२०
पढमुस्सेतिममुदय	५९७१	
पढमे गिलाणकारण	५२४६	२४२०
पढमे पचविधम्मि वि	७७०	
पढमे पच सरीरा	१७९९	
पढमे बितिए ततिए	११४७	३५२८
,,	२५३६	
पढमे भगे गहण	४११७	१८६९
पढमे भगे चउरो	४६२८	
पणग च भिण्णमासो	५४६१	
,,	[illegible]	
पणग तु बीय घटट	[illegible]	

पणगातिमतिक्कतो	१५६७	
पणगाति मासपत्ता	४९४२	१०७९
पणगातिरेग जा पण—	६५७६	
पणगाति ह रतमुच्छण	६३६	
पणगादि असपादिम	५३३४	२४०९
पणगादि मगहो होति	६३५०	
पणतीस ठवणपदा	६४५३	
पण दस पण्णर वीसा	५३३३	२४०८
पणयालदिण गणिणो	२८१०	५३७६
पणयालीस दिवसे	५८५७	४०३२
पणवीसजुत पुण	२१०४	
पणहीण तिभागद्धे	२९०५	५८०५
पणिधाणा जोगजुत्तो	३५	
पणिया य भडमाला	५३८९	२४४४
पण्णत्ति जड-सूर	६२	
पण्णत्ति जबुद्दीवे	६१	
पण्णरस दस व पच व	३२६५	
पण्णवणामेत्तमिद	२१९८	
पण्णवणिज्जा भावा	४८२३	
पण्णवगो च उवेह	२३५६	
पण्णाए पण्णट्ठी	६४७७	
पण्णासा पाडिज्जति	३१५५	
पतिदिवसमलब्भते	३४२१	
पत्तम्मि सा व अना	४५७२	
पत्ता पत्तावधो	४३९२	९ २
,,	१३९६	४०८१
,,	५७८७	,,
पत्ता वा उच्छेदे	२६९	
पत्ताण पुप्फाण	४८४०	९८०
पत्ताणमसमत्ता	२७८	
पत्तावयपमाण	५७९०	३९७१
पत्तेगे साहारण	२५४	
पत्तेयचतुणामति	२३६८	४८०६
पत्तेय समण दिक्खिय	२३८०	४८१७
पत्तेय पत्तेय	६५०१	
,,	६५७१	
पत्थारदोसकारी	५१६१	२५१८
पत्थिव-पिडऽधिकारा	२४९६	
पदमग्गमक्कमालणो य	९४९	
पदमग्गा भावागा	७००	
पप्पडए सचित्ता	१५४	
पप्पायरिय सावी	८७०	
पभु-अणुपभुणो आवेदण	१ ४८	५७४
पमाणाइरेग धरणे	५८२४	४००१
पम्हुट्ठ अवहण वा	२५५९	
पम्हुट्ठे पडिसारण	६३९४	
पयतो पुण सकलिता	४३०४	
पयला उल्ले मरुए	२९८	६०६६
,	८८२	,,
पयला णिद्द-तुयट्टे	१६९१	३७१४
,,	१६९२	
,,	१६९४	३७१५
पयलामि कि दिवा	३००	६०६८
परतित्थियउवगरण	३४३९	२८९१
परतो सय व गच्चा	३ ४४	
परदेसगए णातु	३२७४	४३०६
परपक्खम्मि य जयणा	५२७२	३३५१
परपक्खम्मि वि दाण	५२९७	३३७६
परपक्ख तु सपक्खे	३६९३	
परपक्खे उ सपक्खा	३६८८	
परपक्खो उ सपक्खे	३६८९	
परपक्खो परपक्खे	३६९०	
परमद्धजायणाओ	३२८५	
,,	३२९३	
परमद्धजोयणातो	४१६७	
,,	४१६८	५२८७
,,	४१९५	५३१४
परवत्तियाण किरिया	२७८१	
परवयणाऽऽउट्टेउ	१३७७	४६४१
परसक्खिय णिबधति	३०४७	
परिकम्मणमुक्कोस	६८२	
परिकम्मणे चउभगो	२०८५	३९९१
,,	५८१४	,,
परिगलण पवडणे वा	६०४३	
परिघट्टण णिम्मोयण	६९४	
परिघट्टण तु णिहण	७०६	

परिट्ठावण-मक्कामग	२६६	
परिणामओ उ तम्हि	४८७५	
परिणामतेसु अच्छति	३०८८	
परिणिट्ठियजीवजढ	३८६६	२६२१
परितावणा य पोरिसि	४७५६	६०२
परितावमणागणुकपा	२८६३	
परितावमहादुक्खे	३११६	१८६६
परिपिडितमुल्लावो	४४५७	
परिभायण तु दाण	८३७	
परिभोगविवच्चासो	१५२६	
परिमितभत्तगदाणे	४१६४	५२६३
परियट्टणाणुओगो	२१२५	
परियट्टिए अभिहडे	३२५१	४२७६
परियट्टिय पि दुविह	४०६३	
परियाएण सुतण य	६२४०	
परियाय परिस पुरिस	४२७३	
परियायपूयहेतु	५४३७	
परियार सद्दजयणा	१४३	२६०८
परियानियमाहारस्स	३७८८	
परिवमणा पज्जुसणा	३१३६	
परिवार-पूयहेउ	५८६१	५३६६
परिवारियमज्झगते	५७७६	
परिसतो अद्धाणे	२८४७	
परिस व रायदुट्ठे	४११	
परिसाए मज्झम्मि पि	४६८४	
परिसाडिमपरिसाडी	१०१३	
,,	१२१८	
,,	१२८१	
,,	१३१०	
,,	१२८७	
परिसेसु भीरु महिलासु	२५७०	
परिहरणा वि य दुविहा	४०७८	१८३१
परिहार णुपरिहारी	६६११	
परिहारतवकिलतो	१८६५	
परिहारिगगठवेते	२७७७	२६६६
परिहोण त दव्व	३०७८	१६७७
परीसहचमू	३६२५	
पलिउचण चउभगो	६६२४	

पलिमथो अणाइण्णा	१५६०	
पल्हवि कोयवि पावारग —	४००२	
पवत्तिणि अभिसेगपत्त	६०२२	
पवडते कायवहो	४२७०	
पविसते णिक्खमते	५७८२	
पव्वज्जएगपक्खिय	५५१७	५४२०
पव्वज्जाए अभिमुह	६२६४	
पव्वज्जाए सुएण य	५५१६	५४२२
पव्वज्जादी आलोयणा	३८६६	
पव्वज्जादी काउ	३८१२	
,,	३६४०	
पव्वज्जासिक्खावय	३८१३	११३२
पव्वयसी आम कस्स त्ति	२७२२	४७३४
पव्वसहित तु खड	५४११	
पव्वावण गीयत्थे	३५६३	
पव्वावणिज्ज-तुलणा	२४१६	
पव्वावणिज्ज-बाहि	२७००	५०७३
पव्वाविओ सियत्ति य	३७४६	५१६०
पव्वावेति जिणा खलु	३५३५	
,,	३५५५	
पसत्थविगतिग्गहण	३१६६	
पसिढिल-पलब-लोला	१४२६	
पसिणापसिण सुविणे	४२६०	१३१२
पहरणमग्गणे छग्गुरु	११२	
पको पुण चिक्खल्लो	१५३६	
पच उ मासा पक्खे	२८२८	५७५-
पच परूवेऊण	७६२	३६८७
,,	४२१०	५६३१
पच व छ सत्त सते	३८३०	
,,	३८३७	
पचविअचिलिमिणीए	६५६	
पचमना कुलमीता	६४७०	
पचगुलपत्तोय	६६४	२८७५
पचण्ह वि अग्गा ण	५७	
पचण्ह अण्णतरे	७८४	
पचण्ह एगतरे	५२५२	५४५२
,,	५५६८	५४६७
पचण्ह गहणेण	४२११	५८०१

पचण्ह परिवुड्ढी	६१२६	
पचण्ह वण्णाग	९५४	८८७
"	४६२०	
पचण्हायरियाइ	२६२४	
पचतािग्त दव्वे उ	[illegible]९८२	
पचमगम्मि वि एव	१९२	२१७१
पचम-छ मत्तमियाग	१६०३	५८१
पचमहव्वयभेदो	८२०८	७७०
पचमे अगोमगादी	५६४१	२०४७
पचविधम्मि त्ति वत्थे	७८१	
पचविध सज्भाय	२३[illegible]	
पचविहमसज्भायस्स	६११८	
पचविह-रण ग-कमिणे	६३५	२८६७
पचसतदागगहणे	[illegible]०४५	१६४६
पचसमितस्स मुगिगगो	१०३	
पचसयभोगि अगगी	५१५७	२५११
पचसया चुल्लसीओ	५६२१	
पञ्चसया चुलसीता	५६१९	
पचसया चोयाला	५६१६	
पचसया जातेण	३६६५	
पचादिहत्थ पये	१४७	
पचादी गिक्खित्ते	२०७	
पचादी लहुगुरुगा	२४६	
"	३८२	
पचादी लहु लहुया	३४१	
पचादी समगिद्धे	१७८	
पचासवप्पवत्तो	४३५१	
पचूणे दोमासे	३२६४	४२६५
पचेगतरे गीए	५५६६	५४६८
पचेदियाग दव्वे	६१००	
पडए वातिए कीवे	३५६१	५१६६
पडुइया मि वरासे	१६८५	
पतसुर परिग्गहिते	१६०१	
पता उ असपत्ती	५१४७	२४६७
पथसहायमसङ्घो	५४८८	५३६३
पथे ति णवरि णेम्म	२४४३	
पसू अचित्तरया	६०८६	
पसू य मम-रुहिरे	६०८५	
[illegible] अतभ	[illegible]४४५	
पाउनमपाउना घट्ठ मट्ठ	[illegible]	
पाउ[illegible] दुविध	८१६	
"	१६४४	
"	१६१	
पागगा अट्टातन्त्र	१०१	
पागगा दति तागा	४४२१	
पागगा बीयभाई	४७[illegible]	९३
पाडज्ज व भिदेज्ज व	४२०५	
पागगजोगाहारे	२८८०	
पागगागीगि जाग गाइ	८५८	
पागट्ठा व पनिट्ठा	१६६४	१६२०
पागदयग्रमगाक्करणे	४१२७	
पागसुगगा य भुजति	६२३१	
पाणातिपानमादी	१६६६	३६६३
पागादिरहितदसे	२७२	
पागा सीतल कु डू	१२४५	
पानणिमित्त तमिमा	४६८७	
पादञ्छि-नाम-कर	४६२४	
पादप्पमज्जगादी	४६४६	
"	५०६१	
पादस्स ज पमाण	६१५	३८४८
पादादी तु पमज्जण	१८५१	
पादे पमज्जणादी	२२८१	
पादेसु जो तु गमो	१५००	
पादोवगम भगिय	३६४२	
गादोसिय अड्डरत्ते	६१५१	
पाभाइनम्मि काले	६१५५	
पमाणातिरेगधरणे	४५२७	
पामिच्चित पामिच्चोवत	४४८६	
पायच्छिछ गास कर	४५७२	
पायच्छित्त असतम्मि	६२७८	
पायच्छित्ते पुच्छा	४८४५	६८५
पायप्पमज्जगादी	२३०४	
"	३३१२	
पायम्मि य जो उ गमो	११६४	
पायसहरण छेत्ता	३१८७	
पायावच्च कुडु बिय	२२००	

पायावच्च परिग्गहे	५१२१	२४७२
,,	५१२४	,,
,,	५१३०	२४८०
पारणग-पट्ठिता-आगित	१६७६	३७००
पारचिओ ग दिज्ज न	१९४५	
पारचि सतमसीत	६६१७	
पारिच्छ-पुच्छमण्णह	२४१७	
पाव अवाउडातो	५३१६	
पाव अवायभीतो	६६६७	
पावते पत्तम्मि य	४७७०	६११
पासग-मट्टिगिसीयण	६६४	
पासत्थ-अहाछदे	४३५०	
,,	४९७१	
पासत्थमहाछदे	४९९२	
पासत्थमादियाण	४०५७	
पासत्थादि-कुसीले	१८४०	
पासत्थादिगयस्मा	२८२६	
पासत्थादिममत्त	४०६	
पासत्थादी ठाणा	४९७०	
पासत्थादी पुरिसा	४९९१	
पासत्थादीमु डिते	५५७०	१२९२
पासत्थि अण्णसभोइणीण	२०८९	
पासत्थि पडरज्जा	३१९८	
पासत्थोमण्णाकुसीलठाण	३८८३	
पासत्थोसण्णाण	१८२८	
,,	१८३२	
,,	४९९९	
पासवणट्ठाणसरूवे	५१९	२५८५
पासवण-पडणगिसिकज	१५५५	
पासवणमत्तएण	५४५	२६११
पासवणुच्चार वा	१८६६	
,,	१८६९	
पासवणुच्चाराण	१८५६	
पासवणुच्चारादीण	१८६०	
पासडिणित्थि पडे	४७४६	८८८
पासडी पुरिसाण	२३८२	४८१९
पासत्तणे पवाते	५७०५	
पाणिता भासित्ता	१८२३	

पासे तणाण सोहण	५३९५	
,,	५४०७	
पासो त्ति बधण ति य	४३४३	
पाहिज्जे णाणत्त	३०४९	१९४८
पाहुडिय त्ति य एगे	३०१२	१९१५
पाहुडिया वि हु दुविधा	२०२५	१६७४
पाहुणय च पउत्थे	११७९	३५६०
पाहुणविसेसदाणे	४१७७	५२९६
पाहुण तेणऽण्णेण व	५०५९	२८०४
पिप्पलग णहच्छेदण	६७९	
पिप्पलग विकरणट्ठा	३४३६	२८८८
पियधम्मे दढधम्मे	२३९५	४८३२
,,	२४४९	२०५०
पियधम्मो दढधम्मो	१७५१	३७७४
,,	६१३१	
पिय-पुत्त खुड्ड थेरे	३७६४	
पियपुत्तथेरए वा	११७६	३५५७
पिसियासि पुव्व महिसि	१३६	५०१८
पिहितुब्भिण्णकवाडे	५९५५	
पिंडस्स जा विसुद्धी	६५३४	
पिडस्स परूवणता	४५७	
पिंडे उग्गम उप्पादणेसण	४५६	
पिडो खलु भत्तट्ठो	१००९	
पीढग-णिसज्ज-दडग	१४१३	४०९६
पीढगमादी आसण	४०२१	
पीढफलएसु पुव्व	४०२५	
पीतीसुण्णो पिसुणो	६२१२	७७५
पुच्छ सहु भीयपरिसे	४९२५	१०९२
पुच्छतमणक्खाए	३६८४	४९८९
पुच्छा कताकतेसु	८६५	
पुच्छा सुद्धे अट्ठा	३७४८	
पुच्छाण परिमाण	६०६०	
पुच्छाहीण गहिय	५०५८	२८०३
पु जा पासा गहित	१३१२	
पुट्ठो जहा अबद्धो	५६०८	
पुढवि-तण-वत्थमातिसु	५७६५	
पुढवि-दग-अगणि-मारुअ	३९११	
पुढवि-ससरक्ख-हरिते	२०१	

पुढवी-ग्राउक्काए	१४५	
पुढवी-ग्राउक्काते	१३७५	४६३६
पुढवी-ग्रोस सजोती	५५८	
पुढवीमादीएसु	२३०८	
पुढवीमादीएसू	४६४८	
पुढवीमादी ठाणा	४२५७	
पुढवीमादी थूणादिएसु	४६४७	
पुणरवि दव्वे तिविह	५००४	६०५
पुणरवि पडिते वासे	१२४३	
पुण्णम्मि णिग्गयाण	३२५८	४२८८
पुत्तो पिता व जाइतो	१२६७	
पुत्तो पिया व भाया	१७१४	३७३६
,,	१७१६	३७४१
पुप्फग गलगंड वा	४३२८	
पुयातीणि विमद्द	३०६१	
पुरकम्मम्मि य पुच्छा	४०५६	१८१६
पुर-पच्छिमवज्जेहिं	११६०	३५४१
पुरतो दुरूहणमेगते	४२५५	५६६४
पुरतो य पासतो पिट्ठतो	३४४६	२८०२
पुरतो य वच्चति मिगा	३४४८	२८०१
पुरतो वच्चति साधू	२४३८	
पुरतो व मग्गतो वा	२४३७	
पुरतो वि हु ज धोय	४०७१	१८२८
पुराण सावग-सम्मद्दिट्ठि	५६७१	३०८०
पुराणादि पण्णवेउ	५७१८	३१३०
पुराणेसु सावतेसु	६०४६	
पुरिमचरिमाण कप्पो	३२०३	
पुरिमतरति भूयगिह	५६०२	
पुरिसज्जाग्रो ग्रमुग्रो	२०३७	१६८६
पुरिस-णपु सा एमेव	८७	
पुरिसम्मि इत्थिगम्मि य	२७०६	
पुरिसम्मि दुव्विणीए	६२२१	७८२
पुरिससागरिए उवस्सयम्मि	५२०३	२५५६
पुरिसा उक्कोस-मज्झिम	७७	
पुरिसा तिविहा सचयणा	७६	
पुरिसा य भुत्तभोगी	५३७	२६०२
पुरिसाण एगस्स वि	२६७२	
पुरिसाण जो उ गमो	२२८६	
पुरिसाण जो तु गमो	१४५७	
पुरिसित्थी ग्रागमणे	५५३	
पुरिसेसु भीरु महिलासु	३५७०	५१४७
पुरिसेहितो वत्थ	५०७१	२८१६
पुरिसो ग्रायरियादी	१०६६	
पुरे कम्मम्मि कयम्मी	४०६२	
,	४०६५	
,,	४०६७	
पुव्वखतोवर ग्रसती	१७३	
पुव्वगते पुरग्रो वा	१०८६	
पुव्वगयकालियसुए	५४४७	
पुव्वगहित च नासति	६०७१	
पुव्वघर दाऊण	२०२६	१६७८
पुव्वण्हमपट्ठविते	२०४०	१६८६
पुव्वण्हे ग्रवरण्हे	२०३६	१६८५
पुव्वतव-सजमा होति	३३३२	
पुव्वपयावितमुदए	१०७५	
पुव्वपरिगालियस्स उ	६०५२	
पुव्वपरिसाडितस्स	८०१	
पुव्वपवत्ते गहणे	२००८	
पुव्वपविट्ठे गतरे	२४०६	
पुव्वभणित तु ज एत्थ	५२०१	२५५४
पुव्वभणितो व जयणा	५६८२	
पुव्वभवियपेम्मेण	३६५४	
,,	३६५५	
पुव्वभवियवेरेण	३६४४	
,,	३६५६	
पुव्वमभिण्णा भिण्णा	४८६४	१००२
पुव्व ग्रदता भूतेसु	६२७	
पुव्व ग्रपासिऊण	६७	
पुव्व गुरूणि पडिसेविऊण	६६२२	
पुव्व चिय पडिसिद्धा	३७७२	
पुव्व चितेयव्व	५४६४	
पुव्व तु ग्रसभोगी	४६१७	
पुव्व दुच्चरियाण	३५७७	
पुव्व पच्छा कम्मे	५७७७	
पुव्व पच्छा सथुय	५७७२	
पुव्व पच्छुद्दिट्ठ	५५०८,	५४११

,,	५५१०	५४१३
,,	५५१२	५४१५
,,	५५१३	५४१६
पुव्व पच्छुद्दिट्ठे	५५०७	५४१०
पुव्व पि वीर सुणिया	१६३३	
पुव्व भणिता जतणा	५६६३	३०६१
पुव्व मीसपरपर	५६६३	
पुव्व व उवक्खडिय	५७१६	
पुव्व वुग्गाहिता क्ती	३७००	
पुव्वाउत्ता उवचुल्लचुल्लि	३०५७	१६५६
पुव्वाए भत्तपाण	४१४१	
पुव्वाणुपुव्वि पढमो	६६२०	
पुव्वाणुपुव्वी दुविहा	६६१६	
पुव्वामयप्पकोवा	१८२५	
पुव्वामयप्पकोवो	५६८८	
पुव्वावरदाहिणउत्तरेहि	३६४७	
पुव्वावरमजुत्त	३६१८	५१८५
पुव्वावरसभाए	६०५४	
पुव्वाहारोसवण	३१६७	
पुव्वाहीय णासति	३२०७	
पुव्विं पच्छाकम्मे	४०४४	
पुव्वुद्दिट्ठ तस्स उ	५५०६	५४१२
,,	५५०९	,,
पुव्वुद्दिट्ठ तस्सा	५५११	,,
पुव्वे अवरे य पदे	१०५३	
पुव्वोगहिते खेत्ते	४६३२	१०६६
पुव्वोवट्ठमलद्धे	६८७	
पुहवीमादी कुलिमादिसु	५८०२	
पूअलिय सत्तु ओदण	५३६५	४८०३
पूतीकम्म दुविध	८०४	
पेच्छह तु अणाचार	२४१८	२८७०
पज्ञाति पातरासे	२४१८	
पेसवितम्मि अदेंते	३३६०	२३६१
पह पमज्जण वासए	२०६	३४३६
,,	५३८१	,,
पेहपमज्जणसमिय	५२६८	
पेहाऽपेहकता दोसा	५८१३	३६६०
पेहुण तदुल पञ्चय	१३७४	४६३८
पोग्गल असती समित	२८८	
पोग्गल बेदियमादी	३४५६	
पोग्गल-मोयग-दते	१३५	
पोडमय वागमय	१६६५	
पोत्थगजिणदिट्ठ तो	४००४	३८२७
पोरिसिणासण परिताव	४७४२	८८४
पोसगमादी ठाणा	२५६६	
पोसग-सपर-णड-लख	३७०८	
पोसिता ताइ कोती	३८६२	
फ		
फलगादीण अभिक्खरण	२८६	
फासुगमफासुगे वा	२६६०	१८६२
फासुगमफासुगेण य	३००३	१६०६
फासुग जोगिणपरित्ते	३४६७	२६१८
,,	५७००	,,
फासुगपरित्तमूले	४५०	
फासुयजाणिपरित्त	२५६	३१८५
फिडितम्मि अद्धरत्त	६१५३	
फिडित च दगट्ठि वा	५२६५	३३७४
फेडितमुद्दा तेण	५२६७	२३४६
ब		
बत्तीसलक्खणधरो	३६५७	
बत्तीसा अट्ठसय	४२६३	
बत्तीसा सामन्ने	६५१७	
बत्तीसाई जा एक्कधासा	४६३६	१०७६
बत्तीसादि जा लबणे	४२७	
बद्धट्ठिए वि एव	५७०१	
बद्धिय चिप्पिय अविने	२६००	
बम्ही य सुन्दरी या	१७१६	७६८
बलवण्णरूवहतु	४६६	
बलि धम्मकहा किड्डा	१३२६	५५४
बहि अनऽसन्निमन्निसु	३२४६	४२७१
बहि वुड्ढी अद्धजोयण	१४७५	
बहिता व णिग्गताण	५०६६	२८१४
बहिधोतरद्ध सुद्धो	६१०५	
बहियऽण्णगच्छवासी	२७६४	
बहिया वि गमेतूण	२३६४	४८३१

बहिया वि होंति दोसा	२५१९	
बहुआइण्णे इतरेसु	२२४५	
बहुएसु एक्कदाणे	६४०१	
बहुएसु एगदाणे	६४३०	
बहुएहि वि मासेहिं	६४११	
बहुएहिं जलकुडेहिं	६५६६	
बहुपडिसेविय सो या	६४२८	
बहुमाणे भत्ति भइता	१४	
बहुरयपदेस अव्वत्त	५५९६	
बहुसो पुच्छिज्जतो	२९८२	१८८४
बध वह च घोर	३३८२	२७८३
बध वहो रोहो वा	३७१६	
बभवतीए पुरतो	५५६	
बभव्वए विराधए	१७९४	
बभस्स वतस्स फल	३५३१	
बभस्स होतऽगुत्ती	४०४९	
बाडग माहि णिवेसए	१४८५	
बादरपूतोय पुग	८०६	
बायालीस दोसे	४४५	
बारग कादव-कल्लाग	३८७६	
बारस अट्ठा छक्कग	६४९६	
बारस चोद्दस पणुवीसओ	१३८८	
बारस दग नव चेव तु	६५४७	
बारस य चउव्वीसा	२१३२	
बारसअगुलदीहा	७१०	
बारसमे उद्दसे	५९९८	
बारसविहमि वि तवे	४२	
बालमरणेण य पुणो	३८११	
बालऽसहु वुड्ढ-अतरत	३२६३	४२९४
बाल पडित उभय	४८	
बाला वुड्ढा सेहा	११२८	
बाला मदा किड्डा	३५४५	
बालादि परिच्चत्ता	१६४६	१६०४
"	१६४८	"
बाले वुड्ढे कीव	३७४४	
बाले बुड्ढे णपु से य	३५०६	
बाले सुत्त सूती	३२०८	
बावत्तरि पि तह चेव	२१३७	
बावीसमाणुपुव्वि	३९७४	

बासत्ताणे पणग	१४१४	
बाहाए अगुलीए व	१७०४	३७४६
बाहाहि व पाएहि व	४२०९	
बाहिठितपट्ठितस्स तु	११६०	३५७१
बाहिट्ठिया वसभेहि	३१५०	४२८१
बाहिरकरणेण सम	५४२५	
बाहिर खेत्ते छिण्णे	१२०१	३५८१
बाहिरठवणाबलिओ	६२५५	
बाहि आगमणपहे	४३७०	४५६३
बाहि तु वसितुकाम	२४०२	४८३९
बाहि दोहणवाडग	११९९	३५७९
बाहुल्ला गच्छस्स तु	११९२	३५८३
बिइयपदमणप्पज्झे	३९८३	
"	३९८९	
"	४३११	
बिइय पहुणिव्विसए	१३८५	
बितिए वि समोसरणे	३२९६	४२९७
बितिए वि होंति जयणा	५७१७	
बितिएण एतऽकिच्च	४८-६	
बितिएणोलोएति	४८५२	९९२
बितिओ वि य आएसो	६५०	
"	६२५३	
बितिय गिलाणागारे	१६१६	
बितियततिएसु नियमा	५८८४	४०५९
बितियपए एगागी	३७७५	
बितियपए कालगए	३०७१	
बितियपदज्झामिते बा	१३०७	४६०७
बितियपद तेण सावय	६०००	५९९३
"	६०१३	
बितियपददोण्णि वि बहू	१११०	
बितियपदमणप्पज्झे	५९९	
"	६१७	
"	७९१	
"	८७४	
"	१४९४	
"	१५२३	
"	१५४३	
"	१७८४	
"	१८१७	
"	१८२२	
"	१८२७	

बितियपदमरणप्पज्झे	१९९९	बितियपदमरणप्पज्झे	२४३४
,,	२००३	,,	२४४४
,,	२०१६	,,	२५४४
,,	२१५८	,,	२५५०
,,	२१७१	,	२५६२
,,	२१७७	,,	२५७०
,,	२१८०	,,	२६२७
,,	२१८४	,,	२७७१
,,	२१८७	,,	३३०९
,,	२१९१	,,	३३१३
,,	२१९४	,,	३३३६
,,	२२२८	,,	३३९६
,,	२२५४	,,	३५०२
,	२२६०	,,	३७७९
,,	२२६८	,,	३८०८
,,	२२७३	,,	३९८४
,,	२२७५	,,	४०२४
,,	२२७७	,,	४०४१
,,	२२८०	,,	४१२४
,,	२२८२	,,	४३२७
,,	२२८५	,,	४३६७
,,	२२९१	,,	४३६८
,,	२२९४	,,	४६२५
,,	२२९७	,,	४६५०
,,	२३००	,,	४६९५
,,	२३०२	,,	४६९६
,,	२३०५	,,	४९५१
,,	२३०९	,,	४९५५
,,	२३११	,,	५०९४
,,	२३१३	,,	५४४१
,,	२३१५	,,	५४५०
,,	२३२०	,,	५७८४
,,	२३२२	,,	५९०३
,,	२३२६	,,	५९०८
,,	२३२८	,,	५९०९
,,	२३३०	,,	५९११
,,	२३३२	,,	५९१३
,,	२३३४	,,	५९१५
,,	२३४०	,,	५९१७
,,	२३४९	,,	५९२६

बितियपदमणप्पज्झे ५९८४
" ५९९०
" ५९९५
" ६२५७
बितियपदमणागाढे १५९९
बितियपदमणाभोगा १९६२
" २५२०
बितियपदमणाभोगे १०७८
" १२०९
" १४६८
" १६६५
" १७९५
बितियपदमणिउणे वा ६२८
" ६२७
" ६४३
" ६४८
" ६६०
" ६६६
" ६९७
" ७०७
" ७१६
" ७२४
" १९२८
" ४०३०
वितियपदमधासथड १ १३
बितियपदमसति दीह २२०
बितियपदमच्चियगी १०८८
बितियपदमसविग्गे ५४९७ ५४०१
" ५५२८
" ५५४७
बितियपदवुज्झणजनगा ५१३
बितियपद वूढ-ज्झामित ६४२
बितियपद वूढज्झामिय ६४७
बितियपद वुड्ढमुड्ढोरगे १९३४
बितियपद समुच्छेदे ६२६५
बितियपद साहुवदण २८८७
बितियपद सेहरोघण १८८२
बितियपद सेहसाहारणे ५७८०
बितियपद होज्ज अमहू ८०२
बितियपद होज्जमण ११३७
बितियपद अणवट्ठो २११६
बितियपद अद्धाणे ११०२
बितियपद आयरिए २७३६
बितियपद उड्डाहे ८८५
बितियपद गम्ममाणे १६५३
बितियपद गलण्णे ९१२
" १४९९
" १५२८
" १५९१
" १९०६
" १९४१
" २४७४
" २४८७
" ३२८१
" ३२८८
" ३३५२
" ३४२०
" ३४७६
" ३९९४
" ४०४५
" ५७६९
" ६०३४
" ६०४१
" ६०४५
" ६०५१
" ६२३१
बितियपद तत्थेव य ४१९२ ५३११
बितियपद तु गिलाणे ४०१३
बितियपद तेगिच्छ ६१०
बितियपद दोच्चे वा ३१२२
बितियपद परलिगे ४९६६
" ४९८९
बितियपद पारचिय ५९४४
बितियपद सतघी ३७६०
बितियपद सामण्ण १५१८
बितियपदे असिवादी २५९५
बितियपदे आहारो १६१४

बितियपदे कालगते	३०६६	१६६८
बितियपदे जावोग्गहो	६७४	
बितियपदे जो तु पर	४७२	
बितियपदे दोण्णि वि बहू	११२०	
बितियपदे वसधीए	१२८५	
बितियपदे वाघातो	१६५०	
बितियपदे वासासू	८४८	
बितियपदे सागारे	१५५४	
बितियपदे सेहादी	२४४	
बितियपय तेण सावय	४२५४	५६६३
बितियपयमणाभोगे	३२७५	
बितियम्मि रयण देवय	५१५८	
,,	५३७८	
बितियम्मी दिवसम्मि	५८०	४६३२
बितिय अपहुप्पते	५४८५	५३६०
बितिय उप्पाएतु	२८५६	५५६२
बितिय गिहि ओमण्णा	३२२१	
बितिय गुरूवएसा	२८६७	
बितिय च वुड्ढमुड्डोग्गे य	१६२७	
बितिय पढमे ततिए	२६५१	
बितिय पढमे बितिए	४०३७	
बितिय पभुणिव्विसए	१२४०	
,,	१२८०	
बितिय पहुणिव्विसए	१२६८	
बितियाऽऽगाढे सागारियादि	६०५६	
,,	६०६२	
,,	६०६६	
,,	६१६४	
,,	६१७६	
बितियातो पढमपुव्वा	४१४२	५२६४
बितियादेसे भिक्खू	३४१४	२८६६
बिदू य छिय परिणय	६१३६	
बिय तिय चउरो	२६०	
,,	३७७	
बिले मूल गुरुगा वा	३४०१	
बीएसु जो उ गमो	४६६७	
बीएहि कदमादी	५२४२	३३२४
,,	५३६५	,,
बीयपय तेण सावय	६००६	५६६३
बीय जोगागाढे	१६२०	
बीय तु अप्परूढ	४२६१	
बीयादि सुहुम घट्टण	७४८	
बीयारभूमि असती	१०६३	
बीसीयठवणाए तू	६४८२	
बीहावेती भिक्खू	३३१८	
बेटियमाइएसु	७८७	
वेरग्गकहा विसयाण-	३६१४	
बोडिय सिवभूइओ	५६२०	
बोरीए दिट्ठंत	४१७८	५२६७
बोहण पडिमोद्दायण	३१८३	
बोहिग-मेच्छादिभए	५७७४	३१३८

भ

भगव ! अणुग्गहता	१०००	
भग्गघरे कुड्डेसु य	६३८०	
भणइ य णाह वेज्जो	४४३३	
भणइ य दिट्ठ णियत्ते	३११	६०८०
भणति रहे जइ एव	७६५६	
भणमाण भाणवेन्तो	५५५८	५४५७
भणितो य हद गेण्हह	१६६०	
भगिया तु अणुग्घाया	८१६	
भण्णति सज्झमसज्झ	४१५७	५२७६
भण्णति जहा तु कोती	३३३३	
भत्तट्ठणमालोए	२३६८	४८३५
भत्तट्ठितऽपाहाडा	२४००	४८३७
भत्तपरिण्ण गिलाणे	४०१६	३८४२
,,	१२२८	
भत्तमदाणमडत	५१३६	२४८६
भत्तस्स व पाणस्स व	६६२	६०६६
,,	५८६३	,,
भत्त वा पाण वा	१८६३	५६०७
भत्तादि-सकिलेसो	२६८६	१८८८
भत्तामासे लेवे	८६७	
भत्ते पाणे धोवण	३५४०	
भत्ते पाणे विस्सामणे	३४५१	२६०४
भत्ते पाणे सयणासणे	३५५८	
भत्ते पण्णवग निगूहणा	२७०३	५०७६
भत्तेण व पाणेण व	३४५४	२६०७

भत्तोवधिवोच्छेद	२४८३	
भत्तोवधिसजोए	१८००	
भत्तोवहिवोच्छेय	२५३०	
भद्दगवयणे गमण	५६८१	३०९०
भद्दगो तण्णीसाए	२४८७	३५८८
भद्देतरसुर-मणुया	४७५३	८९५
भद्दतरा तु दोसा	१४४१	
भद्देसु रायपिंड	२५३८	
भद्दो उग्गमदोसे	१४५३	
भद्दो तण्णिस्साए	२५२९	३५८८
भद्दो पुण अग्गहण	१२७९	४६४३
भद्दो सव्व वितरति	२५७७	
भमुहाओ दतसोधण	१५१५	
भयउत्तरपगडीए	३३२१	
भयगेलण्णऽद्धाणे	४१६४	
भयणपदाण चउण्ह	२३४६	
भयणपदाण चतुण्ह	१९३८	
,,	२४३९	
भल्लायगमादीसु	२२९९	
भवपच्चइया लीणा	४२९६	
भववीरिय गुणवीरिय	४७	
भवज्ज जइ वाघातो	३८४९	
भडी वहिलग काए	१८८६	
भडी-वहिलग-भरवाहिएसु	५६९६	३१११
भाणप्पमाणगहणे	५८२७	४००४
भाणस्स कप्पकरण	११०९	
,,	२३९९	४८०७
भायणदेसा एतो	४५९१	
भायणुकम्पपरिण्णा	२३५६	५२५९
भारेण वेयणाए	४१६६	५२८८
भारेण वेयणाते	५८२६	
भारो भय परितावण	३२८०	३९००
भारो भय परियावण	९७०	,,
भारो विलवियमेत्त	५६७	
भावऽद्धुवार सपद	४७३०	८७०
भावम्मि उ पडिबद्ध	५२७	२५९२
,,	५२८	२५९३
भावमि ठायमाणो	५४०	२६०५
भावमि रागदोसा	३८८	
भावाम पि य दुविह	४७१४	८४४
भावित करण सहायो	५३५१	
भावितकुलाणि पविसति	१४७०	
भावितकुलेसु गहण	४८९५	१०३२
भावे उक्कोस-पणीत	११६४	३५४५
भावे पाउग्गस्सा	८८८	
भावे पुण कोधादी	८६२	
भावेण य दव्वेण य	४७२०	८५९
भावो तु णिग्गए सिं	३२६२	४२९२
भासचवलो चउद्धा	६२०४	७५३
भासणे सपातिवहो	३१७८	
भा-ससि-रितु-सूरमासा	६२८७	
भिक्खचरस्सऽन्नस्स वि	४०९६	१८५२
भिक्खणसीलो भिक्खू	६२७५	
भिक्ख-वियार-विहारे	१५२४	
भिक्खस्स व वसधीय व	२३७६	४८१३
भिक्ख चिय हिंडता	५०१६	६१६
भिक्ख पि य परिहायति	३७८	४६५७
,,	२२४७	,,
भिक्खातिगतो रोगी	४४३४	
भिक्खाति-णिग्गएसु	६३१७	
भिक्खातिवियारगते	४१५५	५२७७
भिक्खादी वच्चते	४३९९	
भिक्खुगमादि उवासग	३२३	
भिक्खुणो अतिक्कमते	३४१६	
भिक्खुदगसमारभे	४४८९	
भिक्खुवसहीसु जह चेव	३२८६	
भिक्खुसरक्खे तावस	५७३२	
भिक्खुसरिसी तु गणिणी	८७२	६१११
भिक्खुस्स ततियगहणे	२९२२	५८२०
भिक्खुस्स दोहि लहुगा	२८५५	५५८८
भिक्खूणा जहि देसे	५५२४	५४२६
भिक्खू जहण्णयम्मी	५९५०	
भिक्खे परिहायते	४४६४	
भिण्णरहस्से व नरे	६७०२	
भिण्णस्स परूवणता	४९१८	१०५५
भिण्ण गणणाजुत्त	९७३	
,,	५८१०	
भिण्ण समतिक्कतो	१४४६	
भिण्णाणि देह भेत्तूण	४९२८	१०६५

भिग्गासनि वेलातिक्कमे	४६२६	१०६६
भिण्णे व ज्कामिते वा	७३०	
,,	७४८	
,,	७७६	
,,	६८५	
भिण्णे व कामिते वा	७३५	
,,	४५४७	
भित्ता तु होइ अद्ध	४६६६	
भिन्ने व ज्भामित वा	७७४	
भिंदतो वा वि खुध	६२८१	
भीतावासो रतीधम्मे	१६१४	५७१४
भुत्तभुत्ताण तहि	२५६१	
भुत्तभोगी पुरा जो वि	३८८१	
भुत्तस्स सन्नीकरण	४०१२	३८३५
भुत्तगर दास-कुच्छिते	५३१८	२३६२
भुजइ गग व त्ति सेहा	३२८४	
भुजर्ग-वज्ज-पदाण	२१०२	
भुजण वज्जा अण्ण	२११३	
भुजसु पच्चक्खात	३०३	६०७१
भुजति चित्तकम्मट्ठिता	४४२१	
भुजतु मा व समणा	११३१	
भुजामा कमढगादिसु	३२०	
भुजिसु मए मद्धि	३७६१	
भूतणगादी असणे	३६६३	
भूगगगहिते खत	१०६३	४६२७
भूमि-घर-तरुगणादि	१०३३	
भूमिसिलाए फलग	३६०६	
भूसणभाग्मासह	५४२	२६०७
भूसग-विघट्टणागि य	२५३६	
भेद अडयालमहे	२८५	
भेदो य मासक्प्प	१३१८	५४६
भोइत-उत्तर-उत्तर	१३६४	४६२८
भोइयकुलमेविअग्रा	२१५२	
भाइय-महयरमादी	२४५८	२०६१
भोइयमाडविरोधे	२६०८	
भाइयमादीगाउमना	१८७०	४६०७
भागत्थिगो विगन	५१६८	२८६८
भातूग य आगमण	३४०७	२८५६
भोयणमापणामिट्ठ	११६६	३५७६
भोयणे वा रुक्खेते	४२६४	
म		
मइलकुचेलेग्रब्भगिए	३०१६	१६२०
मइल च मइलिय वा	४६८१	
मइले असुभडहेतु	२२७६	
मक्कडसताणा पुग	४२६२	
मगदतियपुप्फाइ	४८३६	६७६
मगहा कोसबीया	५७३३	३२६०
मगति थेरियाओ	५०८३	२८२८
मग्गो खलु मगडपहा	४३०७	
मज्जणग-गधपुप्फोवयार	३६५८	
,,	३६५३	
मज्जणगतो मुरुडो	४२१५	५६२५
मज्जणगादाच्छते	३०५०	१६४६
मज्जण-ण्हाणट्ठाणेसु	५३२४	२३६८
मज्जणा निसेज्जअक्खा	६२१८	७७६
मज्जति व सिचति व	५३४३	२४१७
मज्जादग्ण ठवगा	१६२८	
मज्भ पडो णेस तुह	८७७	
मज्भमिगमण्णपाण	२७०२	५०७५
मज्भम्मि य तरुणीआ	२४०३	
मज्भ दोण्हतगतो	२४३१	
मज्भा य वितिय ततिया	८२	
मज्भिमवोस लहुगो	३५२४	
मज्भेव गेण्हिऊण	६८२	
मज्भे व देउलादी	५४०८	३४७२
मगाउग्गमआहारादीया	१८३४	
मगा उद्दियपदभेदे	२५४१	
मगा उद्दियपयभेदे	२५४६	
मगा एमगाए सुद्धा	२६०१	५७६८
मगा परमोहिजिण वा	६५७२	
मगा-वयग-कायगुत्तो	३१७६	
मगिबधाओ पवत्ता	५६८०	
मगुण्ण भायणज्जाय	१११८	
मंतम अराणि दीहाउओ	४३७८	
मंतनिंतफालितऽफोसित	४४६१	
मत्तग-गण्टग गुरुगा	५८८६	४०६५

मद्दवकरण गाण	६२२२	७८३
मधुरा मगू आगम	३२००	
मम सीस कुलिच्च—	३८९	
मयमातिवच्छग पि व	४४१९	
मरुएहि य दिट्ठ तो	४८७३	१०१२
मरुगसमाणो उ गुरू	६५१९	
,,	६५२३	
मरेज्ज सह विज्जाए	६२३०	
मलेण घत्थ बहुणा उ वत्थ	५८१७	९९४
महजणजाणणाता पुग	४७८१	९२२
महतरअणुमहयरए	११९४	३५७४
महतरपगते बहुपक्खिते	६०९७	
महद्धणे अप्पधणे व वत्थ	५८२०	३९९७
महिलासहावो सरवन्नभेओ	३५६७	५१६४
महिया तु गब्भमास	६०८२	
महिया य भिण्णवासे	६०७९	
महिसादि छेत्तजाते	३२५	
महुपोग्गलम्मि तिण्णि व	१५९३	
मगल-बुद्धिपवत्तग	२००६	
मगलममगलिच्छा	२५६४	
मगलममगले या	२००५	
मगलममगले वा	२०१०	
,,	२५६८	
मडलगम्मि वि धरितो	३५१४	
मतणिमित्त पुग रायवल्लभ	१३६०	४९२४
ममक्खाया पारद्धिगिग्गया	२५५३	
मसछवि भक्खणट्ठा	२५५२	
ममाई पगरणा खलु	४७९	
मसाण व मच्छाण व	३४८१	
मसोवचया मेदो	५७३	
माउग्गामो तिविहो	२१९६	
मा किर पच्छाकम्म	१८५२	
मा ण परो हरिस्मति	४६३५	
मा णीह सय दाह	२३९३	
माणुम्मागपमाणा	४२९४	
माणुम्माणपमाण	५९७७	
माणुस्सग पि तिविह	५१६६	२५१६
माणुस्सय चतुद्धा	६१०९	

मात पिता पुव्वसथवो	१०४१	
माना पिता य भगिणी	५०७८	२८२३
माना भगिणी धूया	५९२८	
,,	५९३०	
माति-समुत्था जाती	१२०	
मातुग्गाम हियए	२२४९	
मा भुज रायपिड	२६०६	
मायामोसमदत्त	१२३९	
,,	१२७९	
,,	१९४९	
,,	१९५८	
,,	१९६१	
मायावी चडुयारो	१०४५	
मालवतेणा पडिता	१३३५	५६१
मालोहड पि तिविह	५९४९	
मा वद एव एक्कसि	६४१२	
मासचउमासिएहिं	६५१०	
मास जुयन हरिसुप्पत्ती	६५४१	
माम्गुरुगादि छल्लहु	६०५	
,	२२०२	
माम्गुरु चउगुरुगा	२२१९	
माम्गुरु वज्जिता	१२९२	
मामाइ अमच्चइए	६५३७	
मामादी जा गुरुगा	१०९८	
,,	११००	
मामादी पट्ठविते	६२४१	
मा मीएज्ज पडिन्त्रा	३७१	४९५४
मास पक्खे दमरानए	२०३५	१६८४
मामो दोण्गि य सुद्धा	६६३०	
मासो य भिण्गमामा	१४३०	
मामो लहुआ गुरुओ	३१२	१५५९
,,	८६७	
,,	२७९	,,
,,	६९३	,
मिच्छत्त गच्छेज्जा	५०५३	२७९९
मिच्छत्तथिरीकरगा	३८०७	
,,	४४७२	
,,	६२६०	

मिच्छत्त-बडुय-चारण	१३१६	५४४
मिच्छत्त सोच्च सका	५०५२	२७६७
मिच्छत्ता मचतिए	३७९५	६००५
मिच्छत्ते उड्डाहो	५६३७	३०८३
,,	५९२०	६१७०
मिच्छत्ते सकादी	४७८८	६२९
मिच्छापडिवत्तीए	२६४८	
मिल्लक्खूऽव्वत्तभासी	५७२८	
मिहिलाए लच्छिघरे	५६००	
मीसाओ ओदइय	६३०२	
मुइग-उवयी-मक्कोडगा	२६१	
मुइगमादी-णगरग	२८	
मुक्कधुरा सपागडकिच्चे	४३७१	४५४४
मुक्को व मोइओ वा	३९६२	
मुक्का व मोइतो वा	३७१७	
,,	३९६९	
मुक्को व मोतिओ वा	३९८०	
मुच्छातिरित्त पचमे	६३२१	
मुच्छा विसूइगा वा	१७३३	
मुणिसुव्वयतवासी	३९६४	
मुदिते मुद्धभिसित्ते	२४९८	६८८२
मुय णिव्विसते णट्ठुट्ठिते	१२४१	
मुरियादी आणाए	५१३७	२४८७
मुह-णयण-चलण-दता	८९९	
मुहपोत्तिय-रयहरणे	१४२५	
मुहकोरण समणट्ठा	४६६६	
मुहणतगस्स गहणे	३९८५	४९९०
मुहपोत्ति-णिसेज्जाए	२१८८	
मुहमादि-वीणिया खलु	२०१३	
मु ड च घरेमाणे	६२६८	
मूइगमाति-खइते	२१८६	
मूगा विसति णिति व	५४००	३४५५
मूढेमु सम्मद्दो	२१७४	
मूढो य दिसज्झयणे	६१३७	
मूलगिहमसबद्धा	२४९०	
मूलगुण उत्तरगुणा	६५२०	
मूलगुण उत्तरगुणे	३३०२	
,,	४३६६	
,,	६२०८	७६९
मूलगुण दइयसगडे	६५३३	
मूलगुण पढमकाया	६३१८	
मूलगुणे उत्तरगुणे	३३०६	
मूलगुणे छट्ठाणा	८९	
मूलग्गामे तिण्णि उ	३१३१	७४३
मूलतिचारेहितो	६५२७	
मूलव्वयातिचारा	६५२८	
मूल छेदो छग्गुरु	३६६१	
मूल तु पडिक्कते	२८०६	
मूल दससु असुद्धे सु	४७४	
मूल सएज्झएसु	५२७०	
,,	५२८१	
मूलादिवेदओ खलु	६२९१	
मूलुत्तर पडिसेवण	६३०३	
मूलुत्तरे चतुभगो	२०५१	५८७
मूले रु द अकण्णा	६०१६	
मूसादि महाकाय	६१०४	
मेच्छभयघोसणणिवे	६०९६	
मेहा धारण इदिय	२५५४	
मेहावि णीयवत्ती	४३६४	
मेहुणभावो तब्भावसेवणे	२२१८	
मेहुणसकमसके	५०५६	२८०१
मेहुण्ण पि य तिविध	३५२	
मेहुण्ण पि य तिविह	३६०	
मोक्खपमाहणहेउ	४१५९	५२८१
मोत्तु गिलाणकिच्च	३६३४	
मोत्त पुराण-भावित—	३१७४	
मोत्तूण एत्थ एक्क	५६२४	
मोत्तूण णवरि वुड्ढ	३७३८	
मोत्तूग वेदमूढ	३७०२	
मोयगभत्तमलद्धु	१३७	५०१९
मोरगिवक्कियदीणार	४३१६	
मोरी नउली बिराली	५६०४	
मोल्लजुत पुण तिविध	९५७	
मोह-तिगिच्छा खमण	१६८३	३७०७
मोहोदय अणुवसमे	२२२९	
,,	२२५५	

र

रक्खम पिमाय-तगारगसु	३३१७	
रक्खाभूसगहेउ	१७०	
रक्खिवज्जति वा पथो	३३७४	२७७५
रज्जूमादि अछिण्णा	६३०१	
रज्जू वेढा बधो	४२६६	
रज्जे दस गामे	२८३७	५५७१
रण्णा कोकणगामन्चा	३८५६	
रण्णो ओरोहातिसु	३६६३	
रण्णो उवबूहणिया	२५५६	
रण्णो दुवारमादी	२५२६	
रण्णो पत्तग वा	२४८१	
रण्णा महाभिसगे	२५६७	
रण्णो य इत्थिया खलु	५१६५	२५१३
रत्तक्कडाआ इत्थी	६११०	
रमणिज्जभिक्ख गामो	५२५४	३३३५
रय खाल्लमादिसु मही	४७०१	
रयणाइ चतुव्वीम	१०३१	
रयताणपत्तबधे	२८१	
रयत्ताणपमाण	५७६१	३९७०
रयमाइ मच्छि विच्छ य	४१४	
रयहरणोगात्तण	३२२८	४२५३
रमगध। तहि तुल्ला	४९१३	१०५०
रमगिद्धा य थलीए	१५२६	५४२८
रसगेहि अविक्खाए	११९६	
रसगही पडिवद्ध	४७८९	
रमालमवि दुग्गधि	११९३	
रहवीरपुर नगर	५२०९	
रह हत्थि जाण-तुरग	३०१४	१९५६
रघण क्रिमि वाणिज्ज	४९६२	
,,	४९८४	
राईण दाण्ह भडगा	२३८८	२७८९
राईभत्ते चउव्विह	४१२	
रागग्गि सजमिवण	६०९	
रागद्दोमविउत्तो	६६९६	
रागद्दोसविमुक्का	५६५८	३०६६
रागद्दोसाणुगता	३६३	४९४३
रागद्दोसुप्पत्ती	१२७	

राग दोसा मोहा	६१७५	
रागेण व दासेण व	२७३१	
,,	२७५९	
रागतर गुरुनहुगा	१३२	
रातिणिआ उस्सारे	५०२०	६२८
रातिणियणारवेण	६२५१	
रातिणिय सारिअतरण	२११६	
रातो व दिवसता वा	२९३७	५८३
रायगिहे गुणमिलए	५५९८	
रायदुट्ठ-भए वा	१९१३	
रायदुट्ठभएसू	१९०७	
,,	३६०६	
रायमरणम्मि कुल-घर	१५५७	
राया इव तित्थकरो	६०७७	
राया उ जहि उमिते	२५५७	
राया कुथू मप्पे	३१५८	
रायाऽमच्च पुरोहिय	६२९९	
रायाऽमच्चे सेट्ठी	१७३५	३७५७
राया रायसुत्री वा	१५६०	
,,	१५७२	
,,	१५७९	
राया रायाणा वा	३७६८	
रायादि-गाहणट्ठा	२५९६	
रामित्ति गाहा	६४६५	
राह उ अट्ठमास	२३७५	
रिक्खम्म वा त्रि दामो	१६८६	३७१०
रीयाति अणुवओगा	२५४९	
रीयादसावि रत्ति	५६४२	३०४८
रुक्खविलग्गा रुधिता	३९२९	
रुद्ध वोच्छिण्णे वा	२४०१	४८२८
रूवस्सेव मरिमय	२६२९	
रुव आभरणविहि	२५९३	
,,	५२०४	२५५७
रूव आभरणविही	५०९९	२४५१
रूवे रूवमहगते	३५३	
रोगेण व वाहीण व	३९४५	
रोसेण पडिणिवसेण वा	५४२२	
राह उ अट्ठमासे	२३७५	४८१२

ल

लक्खणदूमि उवघायपडग ५५८०
लज्जाए गोरवेण व ६८१
लत्तगपहे य खलुते ४२३४ ५६४४
लद्धूण अण्णवत्थे १०१४ ६१४
लद्धूण णावे इतरे ३२४५ ४२७०
लद्धूण माणुसत्त १७१८ ३७४०
लद्धु ण णिवेदती ३३३
लद्धे तीरित कज्ज १३८४ ६६४८
लहुओ उ उवेहाए २७८० २६६६
लहुओ गुरुओ मासो २६४६ ५८४४
लहुओ य दोसु दोसु अ १०६
लहुओ य दोसु य १०८
लहुओ य होइ मासो ३७२ ४६५५
लहुओ लहुगा गुरुगा १८२० ६१२०
लहुओ लहुया गुरुगा ६६३ ६१२०
लहुओ लहुया दुपडादिएसु ६१६ ३८५२
लहुगा अणुग्गहम्मी ४७५८ ६०१
,, ५२६६ ३३४८
,, ५२८० ,,
लहुगा तीसु परित्ते ४६०५ १०४१
लहुगा य णिरालबे ४७३५ ८७७
लहुगा य दोसु दोसु य ४७२२ ८६१
लहु गुरु लहुया गुरुगा ५६४
लहुगो गुरुगो गुरुगो १०७
लहुगो य होइ मासो २२४६
लहुगो लहुगा गुरुगा ३२०
लहुगो वजणभेदे १८
लहुताल्हादीजणय ६३६१
लहुयादी वावारिते ८६६ ६१०८
लहुया लहुओ सुद्धो ६६३३
लाउयदारुयपाते ६८५
लाउयदारुयपादे ७२६
,, ६७५
लाभालाभपरिच्छा ६७८
,, ६८४
लाभालाभ-सुह-दुक्ख २६८७
लाभालाभसुहदुह ४२६१
लाभित नितो पुट्ठो ४५१६
लाला तया विसे वा ३४७५
लिक्खत णिज्जमाणे २२६७
लिगट्ठ भिक्ख सीते १६७७ २६८१
लिगत्थमादियाण ३०१३ १६१७
लिगत्थस्स तु वज्जा ११५८ ५५३६
लिगत्थसु अकप्प ५०२८ ६२७
लिगम्मि य चउभगो २२३४
लिगेण कालियाए ४४६
लिगेण चेव किढिया २२३२
लिगेण पिसितगहणे ४३७
लिगेण लिगिणीए १६६०
लित्थारण दवेण १८७४
लिवि भासा अत्थेण व २२६२
लुद्धस्सऽभनरओ २६६१ १८८३
लेवकडे वोसट्ठे ५८३५ ४०११
लेवाडमगाभोगा ४२०
लेवाडहत्थछिक्केण ४६०६
लेदेहिं तीहि पूति ८०६
लोइय-लउत्तरिय ६६४
लोइयववहारेसू ४३५६
लोउत्तरम्मि ठविता १६२२
लोए वि होति गरहा ६०५५
लोए हवइ दुगु छा ४५४३
लोकाणुग्गहकारीसु ४४२३
लोगच्छेरयभूय ५७३७ ३२६८
लोगविरुद्ध दुपरिच्चया ३०६३ १६६२
लोगे जह माता ऊ ६२६४
लोग वि य परिवाओ ५५२५ ५४२७
लोण य गिलाणट्ठा १७४
लोभे एसणघातो २५०५ ६३८६
,, २५२३
लोभे य आभियोगे ५०७० २८१७
लोयस्सऽणुग्गहकरा ३५५३
लोलति मही य धूली ४३८७
लोलती छग-मुत्त १३४७ ३७७०
लावए पवए जोह ३६२७

व

वइणा अयोग-योगी १५०३

वइगाति भिक्खु भावित	४५५	
वइयासु व पल्लीसु व	२३६४	४८०२
वक्कतजोणि तिच्छड	३०५६	१९५५
वक्कतजोणि थंडिल	४८५८	९९८
वक्केहि य सत्थेहि य	४१२१	
वच्चसि णाह वच्चे	३०४	६०७२
वच्चह एग दव्व	३१६	
वच्चतस्स य भेदा	४७३३	६०८७
वच्चतो वि य दुविहो	५४८१	५३८६
वच्चामि वच्चमाणे	२८४८	
वच्छल्ले असितमु डो	४९०	
वट्टति तु समुद्देसो	३०६	६०७४
वट्ट ति अपरितती	३८९९	
वट्ट समचउरस	६९३	४०७२
,,	५८४६	,,
वडपादवउम्मूलण	५६५	
वणगयपाटण कु डिय	२९६	
वण्णड्ढ-वण्णकसिण	९१६	३८५१
वणसडसरे जल थल	७७८६	२७०७
वणिउव्व साहु रयणा	२९६४	
वणिय महिलामूढ	३६९९	
वणिया ण सचरती	३२२६	४२५१
वण्णमविवण्णकरणे	४६३८	
वण्णविवच्चास पुण	४६३३	
वण्ण-सर-रूव मेहा	४३३१	
वण्णेण य गधेण य	११२	
वतियादि मखमादी	४४७७	
वत्तणा सधणा चेव	६३६१	
वत्तम्मि जो गमो खलु	२७५४	५४९४
,,	५५९०	,,
वत्तवओ उ अगीओ	५५८३	५४८२
,,	७७४५	,,
वत्तस्स वि दायव्वो	५४८२	५३८८
वत्ते खलु गीयत्थे	२७३७	५४७५
,,	५५७५	,,
वत्थत्था वसमाणे	६०२८	
वत्थम्मि णीणितम्मी	५०५६	२७९८
वत्थव्वजयणपना	२९३९	
,	२९४३	५८३९
वत्थव्व पउण जायग	३०६७	१९६६
वत्थ छिदिस्सामि त्ति	६८०	
वत्थ वा पाद वा	८७८	
वत्थ वा पाय वा	८५८	
वत्थ सिव्विस्सामी	६७१	
वत्थादिमपस्सतो	८५४	
वत्थिणिरोहे अभिवड्ढमाणे	३५९७	
वत्थु वियाणिऊण	७९२७	
वत्थेण व पाएण व	१९८१	२९८५
वप्पाई ठाणा खलु	४११९	
वप्पादी जा विह लोइयादि	५९९६	
वमण-विरेगादीहिं	२३१७	
वमण-विरेयणमाणी	६५९०	
वमण विरेयण वा	४३२९	
,,	४ ३०	
वय-गड-थुल्ल तणुय	४३८१	
वयसथवसतेण	१०५२	
वरतर मए सि भणितो	२६३४	
वरिसधरट्ठाणादी	२६०३	
वरिसा णिसासु रीयति	३३४८	
वरिसेज्ज मा हु छण्णे	१२६४	
वलय वलयायममाणो	३८०५	
वसधी ण एरिसा खलु	१०१८	
वसधी य असज्झाए	१७०७	,७२९
वसधी य असबद्धा	६३७	
वसधीपूतिय पुण	८११	
वसभा सीहसु मिगेसु	३४५०	२९०,
वसभे छग्गुरुगाई	२६२३	
वसही आधाकम्म	२६६५	
वसहीए दोसेण	३७६	४९५९
वसही दुल्लभताए	६७५	
वसहीरक्खणवग्गा	५२५५	३३ ६
वसिकरण सुत्तगस्मा	१५२९	
वसुम नि न वसिम ति व	५४२०	
वहण तु गिलाणस्सा	२०००	
वहबधण उद्दवण	३६५८	
,,	३५७८	
,,	३६६७	

वका उ ण साहती	२६८२	५३५८	वामावासविहारे	३१२४	७७३५
वजणमभिदमाणो	१६		वासासु अपडिसाडी	१२४४	
वदिय पणमिय अजलि	२१०३		वासासु व तिण्णि दिसा	६१४८	
वमग कड णोक्कपण	२०४७	५८३	वासासु वि गेण्हती	३२५९	४२८६
वाउल्लादीकरणे	१६१		वासासू दगवीणिय	६३०	
वाए पराजिओ सो	५६०६		वामेण णदीपूरेण	५६६५	३०७३
वाएतस्स परिजित	६२३२		वाहि-णिदाण-विकारे	३०२४	१९२७
वाओदएहि राई	३१८८		विउसग्ग जोग सघाडए	५०५१	२७९६
वाघाते असिवाती	१०६३		विउसग्गो जाणणट्ठा	२८७७	
वाघाते ततिओ सि	६१२६		,,	६५९२	
वाघातो सज्झाए	२५०७		विक्कुभमग्गणे दीह	४८५४	९९४
वाणतरिय जहण्ण	५११७	२४६८	विगतिमणट्ठा भु जति	१५९५	
वात खलु वात कटग	५६४७	३०८५	विगति विगतिब्भीओ	१६१२	
वातातवपरितावण	३०१५	१९१८	विगति विगतीभीतो	३१६८	
वादपरायणकुविया	५५२७		विगतीए गहणम्मि वि	३१७०	
वाद जप्प वितड	२१३०		विगतीक्याणुबधो	३८९६	
वादो जप्प वितडा	२१२९		विगयम्मि कोउहल्ले	५२६४	३३४३
वायण पडिपुच्छण	२०९४		विग्गहगते य सिद्धे	३९२०	
वायाए णमोक्कारो	४३७२	४५४५	विग्गहमणुप्पवेसिय	३५९६	
वायाए हत्थेहि	२७८४	२३०५	विच्चामेलण सुत्ते	२७७६	२६९५
वायामवग्गणादी	४६४		विच्छु य सप्पे मूसग	५६०३	
वायायवेहि सूमति	३३९४		विज्ज-दवियट्ठाए	५३४७	२४२१
वारगमारणि अण्णावएम	३२९		विज्जस्स य पुप्फादी	३०३१	
वारत्तग पव्वज्जा	५८६०	४०६६	विज्जा ओरस्सबली	२८६०	५३६३
वारस य चउव्वीसा	२१३४		विज्जा तवप्पभाव	४४४०	
वारेइ एम एय	२३९५	२७१७	विज्जा मत-णिमित्त	५५७३	५४७३
वाले तेणे तह सावग	५६४३	३०४९	विज्जाए मतेण व	४४५५	
वावारे कात जणे	३७२३		विज्जादसती भोयादि	१३७०	४६२४
वास उडु अहानदे	२१२०		विज्जादीहि गवेसण	१३६८	४६३२
,,	२१२१		विज्जा मत-परूवण	४३०४	
वास-सिसिरेसु वातो	२४१		,,	४४५६	
वासत्ताणाऽऽवरिया	५०८४		विणिउत्तभड भडग	६४०५	
वास न उवरमती	३१६०		वितिगिच्छ अब्भसथड	२९३१	५८२८
वासाखेत्तालभे	३१४६		वित्थारायामेण	९५०	३८८३
वासाण एगतर	४२७८		,,	१८६४	
वासाण एस कप्पो	३२४१	४२६६	विंदु कुच्छत्ति व भण्णति	२५	
वासादिसु वा ठाओसि	३७६३		विद्धसण छावण लेवणे य	२०२६	१६७५
वासा पयरणगहणे	११६७		विधिपरिहरणे सुद्धो	२०९०	

विधुवण णत कुसादी	५०६	
विपुलकुले अत्थि बालो	३५३८	
विपुल च अण्णपाण	१८६०	
विप्परिणतम्मि भावे	१२५७	
विप्परिणमेव सण्णी	३७३३	
विप्परिणामणसेहे	२७१३	
विमलीकतऽम्ह चक्खू	१०४६	
विम्हावणा तु दुविधा	३३३७	
वियडत्तो छक्काए	६०२३	
वियडत्तस्स उ वाहि	६०४०	
वियड गिण्हइ वियरति	१३१	
वियणऽभिधारण वाते	३७५८	
विरए य अविरए वा	४०२५	
विरतिमहाव चरण	४७६४	६३४
विग्हालभे सूल—	३५८	
विरहे उ मठायत	२६५०	
विरूवरूवादि ठाणा	४१३६	
विलउनए य जायइ	३४६५	२६१५
विलियति आरुभते	४६४६	
विवरीय दव्वकहणे	२६१	
विसकु भ सेय मते	२०४	
विसगरमादी लोए	१८०६	
विममा आरोवणाए	६४६२	
विसय कलहेतर वा	२२५७	
विसुआवणसुक्कवणा	८४५	
विहमद्धाण भणित	५६३४	
विहरण वायण आवागाग	४३३६	
विहि अविहीभिण्णम्मी	४६०२	१० ८
विहिणिग्गनादि	५४०१	
विहिणिग्गतो तु जतितु	५३६	
विहिबधो वि ण कप्पति	७४०	
विहिभिण्णम्मि ण कप्पति	४६२०	१०५७
विहिसुत्ते जो उ गमो	३१२३	
वीमसा पडिणीता	५१४६	२४६६
वीमसा पडिणीयट्ठया	५१४४	२४६४
वीयरग समीवारा म	५०७४	
वीयार गोयरे थेरसजुआ	३६१३	५१८
वीयारभूमि असती	१०६३	
वीयारभूमि-दोसा	१०६२	
वीयारे बहि गुरुगा	२४५६	२०६४
वीरल्लसउणि वित्तामिय	१६७२	३६६६
वीरवरस्स भगवतो	४२१८	५६ ८
वीसज्जिता य तेण	५७५६	२८०
वीसऽट्ठाग्म लहु गुरु	६५४२	
वीसत्थादी दोसा	३७७८	
वीसत्था य गिलाणा	१६७०	३६६४
वीसरसद्दस्वते	६१५६	
वीस तु आउलेहा	४६६३	४०४५
,,	५८७०	,
वीस वीस भडी	६५२१	
वीसाए अद्धमास	६४३३	
वीसाए त् वीस	६४७५	
वीसा दो वाससया	५६१४	
वीसा य सय पणयालीसा	६५०३	
वीसु उवस्सते वा	२८४२	५५०६
वीसु दिण्णे पुच्छा	६४०७	
वीसु भूओ राया	१७३८	३७६०
वुग्गहडडियमादी	६०६४	
वुग्गहवक्कताण	५४६४	
वुत्त दव्वावात	२६६	
वुत्त वत्थग्गहग	३२७६	
वुसिरातियागणातो	५४५१	
वुसि सविग्गो भणिता	५४२१	
वेउव्वियलद्धी वा	२५८७	
वेकच्छिना तु पट्टा	१४०५	४०८६
वेजस्स पुव्वभणिय	४६६८	
वेज्जस्स व दव्वस्स व	३०७४	
वेज्ज ण चेव पुच्छह	३००४	
वेज्जेट्ठग एगदुगादि	४८६०	१०२८
वेज्जे पुच्छण जयणा	४८८६	
वेण्टियगहणिक्खेवे	२६८	
वेयावच्चस्सट्ठा	५६६	
वेयावच्चे अगला	३७७३	
वेयावच्चे तिविहे	६६०५	
वेरग्गकर ज वा वि	५४६	२६१०
वेरग्गकहा विमयाण	३६१४	५१८१
वेरग्गितो विवित्तो य	३५००	

वेर जत्थ उ रज्जे	३३६०	२७६०
वेलातिक्कमपत्ता	१०६०	
वेलुमओ वेत्तमओ	८३०	
वेलुमयी लोहमयी	७१८	
ववग्गि पगु वडभ	३६४६	
वेहाणस ओट्टाणे	३०६०	१६८८
वेहारुगाण मण्णे	४५३१	
वाच्चत्थे चउलहुया	३०१०	१६१३
वोच्छिण्णगमडवे	४२२	
वोच्छिण्णम्मि मडवे	३८००	
वोच्छेदे तस्सेव उ	६०५८	
वोसट्ठकायअसिवे	४२६६	
,,	४२७१	
,,	४२७४	
,,	४२७७	
वोमट्ठ पि हु कप्पति	४६६६	
,,	५८७३	

स

मइ लाभम्मि अणियता	१३४१	
सउणग-पाय-सरिच्छा	१६३३	
सउणी उक्कडवेदो	३५६४	
सयरीए पणपण्णा	६४७८	
सकडक्खपेहण बाल—	२३३७	
सकड द्दह समभोम्मे	४८५७	
सकल-प्पमाण-वण्ण	६१३	
स किमवि कातूणऽधवा	२०८३	
सकि भजणम्मि लहुओ	३६८७	
सक्कमहादीएसु	१६०८	
सक्कयमत्ताविदू	१७	
सक्कर-घय-गुलमीसा	५६८४	३०६३
सक्का अपसत्थाण	३३२८	
सक्खेने जइ ण लब्भति	४१७२	
सक्खेत्ते परखेत्ते	३२६०	४२६०
सक्खेत्ते सउवस्सए	१२०५	
सग-जवणादि विरूवा	५७२७	
सगणम्मि णत्थि पुच्छा	६५८६	
,,	२८७२	
सगणम्मि पच्च राइदियाइ	२८२०	५७५३
,,	२८२२	५७५५
सगणिच्चया स मिस्सिणि	२४३६	
सगदेस परदेस विदेसे	३६५३	
सग-पायम्मि य रातो	१५५१	
सगला-ऽसगलाइन्ने	४६४४	१०८१
सगुरुकुल सदेसे वा	३४२८	२८८०
सग्गहणिव्वुड एव	६०६३	
सग्गाम परग्गामे	१४८४	
,,	३६६०	
,,	४३६७	
,,	५०४३	६४२
सग्गामे सउवस्सए	२६६६	१८७०
सचित्त-णतर-परपरे य	१५०	
सचित्तेण उ धुवणे	१८२	
सचित्ते लहुमादी	१८१	
सच्चित्तखद्धकारग	२६४५	
सच्चित्तऽचित्तमीसो	२७७४	५७२७
सच्चित्तामीस अगणी	२१३	
सच्चित्तामीसएसु	५६५८	
सच्चित्तामीसगे वा	१६६६	
सच्चित्ता-रुक्खमूल	१८६६	
सच्चित्ता-रुक्खमूले	१६०६	
,,	१६१६	
,,	१६१७	
,,	१६१६	
सच्चित्ता अच्चित्ता	३६५७	
,,	४६६२	
सच्चित्ताबफलेहि	५४१०	
,,	४७०१	
सच्चित्ता वा अव	४६६२	
सच्चित्तादि हरति ण	२७४२	५४८०
सच्चित्तादि हरति णे	५५८०	,
साचत्तादी तिविध	३३६	
सच्चित्तादी दव्वे	३७८	
,,	६२६७	
सच्चित्ते अच्चिते	३६६४	
,,	३६५२	
सच्छंदमगिद्दिट्ठे	४५६६	

सच्छद परिण्णत्ता	४५५६	
सच्छदेण उ एक्क	५७१४	
सच्छदेण य गमण	५७११	३१०३
सच्छदेण सय वा	५७१२	
सजियपतिट्ठिए लहुओ	४७६६	९०९
सज्जग्गहणातीत	३३६१	२७६१
सज्झाएण णु खिण्णो	१६६३	३७१६
सज्झाए पलिमथो	१२२२	
सज्झाए वाघाओ	१६७९	३७०३
सज्झायट्ठा दप्पेण	३२५६	४२७९
सज्झायमचितेता	६१२९	
सज्झायमातिएहिं	२८१३	५७७९
सज्झायवज्जमसिवे	६०७३	
सज्झाय काऊण	१२७१	
सज्झा-लेवण-सिव्वण	४१६३	५२८४
सट्ठाणाणुग केई	६६२९	
सट्ठाणे अणुकपा	१६७५	२९७९
सडित-पडिताण करण	२०२१	
,,	२०५४	
सड्ढि गिही अण्णतित्थी	१४४३	
सड्ढी गिहि अण्णतित्थी	१०७४	
सड्ढेहिं वा वि भणिता	१२०३	३५८३
सणमाई वागविही	७६१	
सणसत्तरसा धण्णा	४६५६	
सणिसेज्जो व गतो पुग्ग	२१२६	
मण्णातगा वि उज्जुत्तणेग	२६७८	५३५८
सण्णातगिह अण्णो	१२६३	
सण्णातग वि तध चेत्र	१२६१	
सण्णाततेहि णीते	१३३६	
सण्णातपल्लि णेहिए	५८५	
सण्णातसखडीसू	१२१३	
सण्णायग आगमणे	३४१०	
मण्णा सिगगमादी	२४७	
सण्णिधिमण्णिचयाना	२४६२	
सण्णिहित जह स-जिय	२२०६	
सण्णिहिय-भद्दियासु	२२२५	
सण्णिहिय जह सजिय	२२१२	
,,	२२२०	

सण्णी सण्णाता वा	१९६४	
सण्णीसु असण्णीसु	५२२७	
सण्णीसु पढमवग्गे	५२१०	
सण्हे करेति थुल्ल	२१७२	
सति कालद्ध णातु	१६२६	१६१४
सति कालफेडणे	१६७८	
सति कोउएण दोण्ह वि	५१०६	२४५८
सति दो तिसिय अमादी	१८४३	
सतुसा सचेतणा वि य	१५८४	
सत्तचउक्का उग्घाइयाणा	६५४५	
,,	६५५८	
सत्त तु वासासु भवे	४२४४	५६५४
सत्त दिवसे ठवेत्ता	५०७५	२८२०
,,	५०८४	२८२९
सत्त य मासा उग्घाइयाणा	६५५७	
सत्तट्ठगमुक्कोमो	३५११	
सत्तट्ठि णक्खत्त	६२८८	
सत्तण्ह वसगाण	४७९८	९३९
सत्तरत्त तवो होइ	२७४८	४६८०
सत्तरत्त तवो होति	५५८६	,,
,,	६२५९	,,
सत्तमया चोयाला	६२८९	
सत्ता अदीणता खलु	५९८१	
सत्तारस पण्णारस	६५५५	
सत्तेया दिट्ठीओ	५६२३	
सत्थपगाए य सुद्धे	५६७२	३०८१
सत्थपरिण्णा उक्कम	५३६८	२८२८
मत्थपरिण्णा उक्कमा	५२४१	,,
सत्थवाहादि ठाणा	२६०२	
सत्थहताऽऽमति	१७२	
सत्थ च सत्थवाह	५६६१	३०६९
सत्थाए अइमुत्तो	३५३६	
मत्थाए पुव्वपिता	३११६	
मत्थाहऽट्ठगगुणिता	५६७६	३०८५
स[illegible] त्ति पचभेदा	५६६२	३०७०
मत्थ वि वच्चमाण	१९७०	२९७८
मद्दम्मि हत्थवत्थादिएहि	१७७६	३७९८
मद्दहणा खलु मूल	२१५५	

सद्द च हेउमत्थ	५५३०	५४३१
सद्द वा सोऊण	५१६	
सद्दाइ इंदियत्थोवओग-	२५१८	
सद्द पुण धारेउ	५६६७	
सद्दे से सिस्सिणि सज्झ	२२३३	
सन्नातिगतो अद्धाणिओ	२७०१	
सन्नासुत्ता सागारिय	५०९६	
सन्नि खरकम्मिओ वा	३६१६	५१८३
सन्निहिताण वडारो	६१४२	
सपरक्कमे जो उ गमो	३९३६	
सपरिकम्मा सेज्जा	२०४५	
सपरिग्गह अपरिग्गह	१८९७	
सपरिग्गहेतरो वि य	४३१४	
सपरिपक्खो विसयदुट्ठो	३६९२	
सप्पडियरो परिण्णी	४०६	
सबितिज्जए व मुंचति	५७१५	३१२७
सबीयम्मि अतो मूल	२२४०	
सबेटऽप्पमुहे वा	३४७७	
सभमादुज्जाणगिहा	२४२७	
सभए सरभेदादी	५६८७	३०९७
समग तु अणेगेसू	७७०	
समणगुणविदुऽत्थजणो	१७३४	३२६९
समणऽधिकरणे पडिणीय	६३३४	
समणभडभावितेसु	४७५७	३२८८
समणाण सजतीहि	५९१९	
समणाण इत्थीसु	५१९८	
समणाण जो उ गमो	३७८७	
समण समणि सपक्खो	५६६८	३०७७
समणि मणुण्णी छेदो	२१००	
समणी उ देति उभय	२१०९	
समणी जणे पविट्ठे	१७३०	
समणुण्णदुगणिमित्ता	६३२४	
समणुण्णमणुण्णे वा	२१२४	
समणुण्ण-सजतीण	२०८८	
समणुण्णस्स विधीए	२१०१	
समणुण्णा परिसकी	४१०४	१८६२
समणुण्णेण मणुण्णो	२०७४	
समणुण्णेतर गिहि-	१९७९	२९८३

समणुण्णेसु विदेस	१८४४	
समणे य समणि सावग	५०२७	६२६
समणेहि य अभणतो	४०८७	१८४४
समणो उ वणे व भगदले	६१६८	
समत त्ति होति चरण	६१९३	
समवायाई तु पदा	२४७८	
समवायादि ठाणा	४१३८	
समाणे वुड्ढवासी	१०५४	
समि चिंचिणियादीण	२९१३	५८१०
समितीण य गुत्तीण य	३६	
समिती पयाररूवा	३८	
समितीसु य गुत्तीसु य	४०	
समितो नियमा गुत्तो	३७	४४५१
समुच्छति तहि वा	३४७४	
समुदाण पारियाण व	४५९७	
समुदाण पथो वा	४२४९	५६५९
समुदाणि ओयणो	३०५४	१९५३
सम्मज्जण वरिसीयण	२०३१	१६८१
सम्ममसम्मा किरिया	४४१४	
सम्मेयर सम्म दुहा	४७५१	८९३
सम्मेलो घडा भोज्ज	३४८३	
सयकरणे चउलहुआ	९३९	३८७१
सयगुणसहस्सपाग	३१९७	
सयणे तस्स सरिसओ	१०२७	
सयमेव कोइ साहति	३५६४	५१४१
सयमेव छेदगम्मी	१९९७	
सयमेव दिट्ठपाढी	१७५७	३७८०
सयमेव य अवहारो	२७५८	
सयसिव्वणम्मि विद्धे	१९२५	
सय चेव चिर वासो	३८४५	
सरतिमिगा वा विप्पिय	६०१७	
सरिकप्पे सरिच्छदे	२१४७	८४४५
सरिकप्पे सरिछदे	२१४८	६४४६
सरिसावगाहदडो	२८१४	५७८०
सरीरमुज्झय जेण	९३०	
सरीरे उवकरणम्मि य	३९३३	
सविकारो मोहुद्दीरणा	२२९०	
सविगार अमज्झत्थे	२०१४	

सविगारो मोहुद्दीरणा	२२६३	
,,	२२६६	
,,	२२६६	
सव्वत्थ पुच्छणिज्जो	११६५	३५७५
सव्वत्थ वि आयरिओ	६०२३	४३४६
सव्वत्थ वि सट्ठाण	६६३८	
,,	६६३६	
सव्वपदाणाभोगा	३६३	
सव्वमसव्वरतणिओ	२०६	
सव्वम्मि उ चउलहुगा	२०३३	१६८०
सव्वम्मि तु सुयणाणे	३३०४	
सव्वस्स छड्डण विगिंचणा	२६१६	५८१३
सव्वस्स पुच्छणिज्जा	२४२२	
सव्वस्स वि कातव्व	५५२०	५४२४
सव्वसहप्पभावातो	३६१६	
सव्व नेय चउहा	४८२१	६६२
सव्व पि य त दुविह	४७०७	
सव्व भोच्चा कोई	३८६५	
सव्व भोच्चा कोती	३८६४	
सव्वगिया उ सेज्जा	१२१७	
सव्वाओ अज्जातो	३६१८	
सव्वागमाइयाण	२४८६	
सव्वागि पचमो तहिण	४०७८	१८ ४
सव्वानि ठवणाण	६४७४	
,,	६४८३	
सव्वाहि व लद्धीहि	२६१६	
सव्व गाणपदोमादिएसु	३३२६	
सव्वे वा गीयत्था	५०१८	६१८
सव्वे वि खलु गिहत्था	४६६०	
,,	४६८२	
सव्व वि तत्थ रु भनि	१३८३	
सव्वे वि दिट्ठुम्वे	१२३०	
सव्वे वि पद सहो	२६५	
सव्वे वि य पच्छित्ता	६४६६	
सव्व वि लाहपादा	४०४३	
सव्वे समणा समणी	२६७४	५२५०
सव्वे सव्वद्धाने	३६१५	
सव्वेसि एगचरण	१४२८	

सव्वेसि तेसि आणा	११६१	३५४२
सव्वेसि सजयाण	२६७६	
सव्वेसि अविसिट्ठा	६६५५	
सव्वेसु वि गहिएसु	१२७२	
सस-एलामाढ	२६४	
ससगिद्ध दुहाकम्मे	१८८	
ससगिद्ध बीयघट्टे	६५७६	
ससणिद्ध-सुहुम	४३३	
ससगिद्धे उदउल्ले	१८६	
समरक्खाइहत्थ पधे	१४६	
ससहायअवत्तेण	५५०१	५४०५
ससिणिद्धमादि अहिय	६५८०	
ससिणिद्धमादि सिण्हो-	१७७	
सहजेणागतूण व	२००२	
सहसा व पमादेण	१०६	
सहसुप्पइयम्मि जरे	६८०७	६८
सहिणानी वत्था खलु	२२६८	
सक्प्पुट्ठियपदभिदणे	२५४०	
सकप्पे पदभिदण	२५६	५८६७
सकप्पो सरभो	१८१३	
सकम-करणे य तहा	२०१३	
सकम जूव अचले	५ ३८	२४१३
सकमथले य गो थले	४२३०	५६४०
सकमतो अण्णगण	२८१२	
सक्लदीवे वत्ती	५४०६	३४७०
सका सागारहे	१८७२	
सकुचिन तरुण आतप्पमाण	५७६५	३८३०
सव-निगिसागुलुचदणाइ	१०३२	
सखडिगमणे विनितो	२८०२	२८५४
सखडिसभिधारेता	२८४१	५८३७
सखुण्णतो तवस्सी	४१६५	
सखेज्जजीविता खलु	४०३६	
सखे मिगे करतल	२३३	
सगामदुगपरूवणा	३६२६	
सगामे साहसिता	३६२८	
सघट्टणा तु वाले	१४६३	
सघट्टणा य घट्टण	४२२१	५६३१
सघट्टणा य सिचण	४२२७	५६३७

सघट्टणादिएसु	२१५	
सघट्टे मासादी	१८५	
सघयणधितीजुत्तो	३६३६	
सघयण जह सगड	६५१६	
सघयणेण तु जुत्तो	८३	
सघयणे सपण्णा	७८	
सघस्स पुरिम-पच्छिम	२६६७	५३४३
सघस्सायरियस्स	४८५	
सघ समुद्दिसित्ता	२६६८	५३४४
सघाडए पविट्ठे	५०६१	२८१०
सघाडगा उ जाव तु	६५६७	
,,	६५६८	
सघाडगा उ जाव	१८८८	
सघाडगा उ जो वा	२८८३	
सघाडगाओ जाव उ	२८८२	५५६६
सघ डगाणुबद्धा	३६४३	
सघाडणा य परिसाडणा	१८०४	
सघाडमादिकवणे	५८३	४६ ६
सघाड दाऊण	२०८०	
सघाडिओ चउरो	४०२६	
सघाडेगो ठवणा	४१७३	५२६२
सघातणा य पडिसाडणा	१८०२	
सघातिएतरो वा	१४०८	४०६२
सचइयमसचइते	१६५१	१६०६
सचरिते वि हु दोसा	३७८१	
सचालणा तु तस्सा	५६५	
सजतगतीए गमण	१०६६	
सजतणिए गिहिणिए	६७८	
सजत-भद्दा गिहि-भद्दगा	१६७१	
सजतिगमणे गुरुगा	२४५२	
सजतिवग्गे गुरुगा	२०६१	
सजतिवग्गे चेव	२०७८	
सजमअभिमुहस्स वि	१६८१	३७०५
सजमआतविराधणा	११५	
सजमखेत्तचुयाण	३२०५	
सजमखेत्तचुया वा	८२६	
सजमघाउप्पाते	६०७५	
सजम-चरित्तजोगा	४८६६	१०३५
सजमजीवियहेउ	३६५	४६४५
सजमठाणाण कडगाण	३८२३	
सजमतो छक्काया	१०५६	
सजमदेहविरुद्ध	४१८	
सजम-महातलागस्स	१६८०	३७०४
सजमविग्घकरे वा	१५६१	
,,	१५७३	
,,	१५८०	
सजम-विराहणाए	५६३६	३०४५
सजयगणे गिहिगणे	२८५१	५५८४
सजय-गिहि-तदुभयभद्दगा	३३७१	
सजयगुरू तदहिवो	२८५२	
सजयपदोसगहवति	१०८७	
सजयपरे गिहिपरे	६८८	
सजयभद्दगमुक्के	३३७२	२७७३
सजयभद्दा तेणा	४५१४	
सजोए रणमादी	६००५	
सजागदिट्ठपाढी	२६७७	१८७६
सजोय-विधि-विभागे	२०६३	
सभागतम्मि कलहो	६३८५	
सभागतम्मि रविगत	६३८४	
सभा राती भणिता	२४२६	
सठावण लिपणता	२०५२	
सठियम्मि भवे लाभो	५८४७	४०२३
सडासछिड्डेण हिमाइ एति	५७६३	३६६८
सणिहिमादी पढमो	४५४	
सतगुणणासणा खलु	५४२६	
सतविभवा जति तव	१७३७	३७५६
सतम्मि य बलविरिए	६३२२	
सतासतसतीए	७३३	
,,	७७२	
,,	६८६	
,,	७२८	
,,	७३१	
,	७३६	
,,	७४१	
,,	७४२	
,,	७४४	
,,	७४६	

,,	७४६		सभोइयमण्णसभोइयाण	६०३५	
,,	७७५		सभोगपरूवणता	२०६६	
,,	७७७		सभोगमण्णसभोइए	२१४५	
,,	७८०		सभोगा अवि हु तिहि	५५५४	५४५३
,,	७८८		सरभ सरोण तू	१८११	
,,	६८३		सलवमाणी वि अह	१७७३	३७६२
,,	६६०		सलिहित पि य तिविध	१७२०	३७४२
,,	६६२		सनेह पच भागे	२६०६	
,,	६६७		सवच्छर गगो वा	३१०२	२०००
सनी कु थू य अरो	२५६१		सवच्छर च रुद्ध	२८०७	५७७३
सथडमसथडे वा	२८८८	५७८५	सवच्छराणि तिण्णि उ	५५१४	५४१७
सथडिओ सथरतो	२६१०	५८०७	सवच्छरा तिन्नि उ	३१०१	१६६६
सथरणम्मि असुद्ध	१६५०	१६०८	सवट्टणिभयाण	२३७३	४८१०
सथरमाणमजाणत	१०७६		सवट्टम्मि तु जतणा	२३६३	४८०१
सथारएहि य तहि	५२५६	३३४०	सवालादणुरागो	१७६२	
सथार कुमघाडी	१७४४	३७६७	सवासे जे दोसा	२४७६	
सथारगगिलाणे	४०१४	३८३७	सवासे सभोगो	२१४१	
सथारविप्पणासे	१३१४		सवाहणमब्भगण	५६७	
सथारविप्पणासो	१३५४	४६२०	सविग्ग णितियवासी	३०६४	१६६२
सथार देहत	१२५३		सविग्ग-भाविताण	१६४६	,६०७
सथारुत्तरपट्टो	५८ ३	२६८०	सविग्ग-भावितेसु	१६८७	
,,	१२३०		सविग्गमसविग्गा	४७४४	८८६
सथारेगमणेगे	१३०५	४६०५	सविग्गदुल्लभ खलु	३८३६	
सथारो दिट्ठो ण य	१२५२		सविग्गमगीतत्थ	५५८५	५४८५
सदिसह य पाउग्ग	२५८०		सविग्गमगीयत्थ	२७४७	,,
सपनि-रणुप्पती	२१५४		सविग्गमणुण्णाते	१६५८	१६१६
सपत्तीइ वि असती	४१००	१८५७	सविग्गमण्णसभाइएहि	२८२४	
सपत्ती व विवत्ती	४८०८	६४६	सविग्गमण्णसभागिएहि	२०७७	
सपाइमे असपाइमे य	५३२७	२८०१	सविग्गमसविग्गे	४५८७	
सपातिमादिघातो	२४३		,,	४५६४	
,,	५६२३		,,	३००६	१६११
सपातिमे वि एव	५३३०	२४०४	,,	६२६६	
सफाणितस्स गहण	१६४३		सविग्गमसविग्गो	४२८२	
सफासमणुप्पत्तो	३६४०		सविग्गमजतीओ	३०६२	१६६०
सबधभाविएसु	३२४६	४२७४	सविग्गा गीयत्था	३०६१	१६८६
सबधवज्जियत्ती	१७६६		सविग्गा समणुण्णा	६२४५	
सबाहणा पधोवण	१४६५		सविग्गाण सगासे	४५८८	
सभिच्चेण व अच्छह	१३२०	५४८	सविग्गादणुसट्ठो	४५८६	

सविग्गासविग्गे	३००८	
सविग्गेतरभाविय	१९८६	२९९०
सविग्गेहऽणुसट्ठो	४५९१	
सविग्गो सेज्जायर	३०९६	१९९४
समज्जिमेसु छुब्भति	४१५२	५२७४
ससट्ठमससट्ठे	४११६	१८६८
ससत्तपथ-भत्तो	७५८	
ससत्तपोग्गलादी	२८९	
ससत्ताति न सुज्झति	३४०६	२८५७
ससत्तऽपरिभोगो	२६६	
ससत्तेसु तु भत्तादिएसु	२६७	
ससयकरण सका	२४	
ससारगड्डपडितो	४६५	
ससाहगस्स सोतु	५८६३	५३६८
समोहण ससमण	४४३६	
साएता गाऽओज्झा	३३८७	
सागधम्मादावावो	१२३	
सागणिए णिक्खित्ते	२०५	
सागणिया तू सेज्जा	५३५२	
सागारिअदिण्णेसु व	४०१	
सागारिउ त्ति को पुण	११३८	
सागारिपुत्त-भाउग	११६६	३५४७
सागारिय-अधिकरणे	७४७१	
सागारिय तुरियमणाभोगतो	१६४	
सागारिय-सज्झाए	६५५	
सागारिय-सतिय त	१६५७	
सागारियणिक्खेवा	५०६८	२४५०
सागारियणिस्साए	१२११	
,,	३५९०	
सागारियमखछदण	४४७८	
सागारियसण्णातग	१२१०	
सागारियसदिट्ठे	११४५	३५२६
सागारियस्स गध	२५९८	
सागारियस्स णामा	११४०	३५२१
सागारिय अपुच्छिय	१२०६	
सागारिय णिरक्खति	२५८४	५१६०
सागारिया उ सेज्जा	५०९७	
सागारियादिकहण	६०९८	
सागारियादि पलियक—	३४९५	
सागारिसजताण	१३२१	५४६
साडऽब्भगण उव्वलग्ग	३०२२	
साणादीभक्खणता	४१५	
साणुप्पगभिक्खट्ठा	३०७७	१९७६
सातिज्जसु रज्जसिरि	१५६२	
सादू जिणपडिकुट्ठो	४८४७	
साधम्मत वेधम्मत	२१५३	
साधम्मियत्थलीसु	३४५	
साधम्मिया य तिविधा	३३६	
साधारण-पत्तेगो	२१२३	
साधारणे विरेग	४३५७	
साधु उवासमाणो	३५०३	
,,	२४६८	
सा पुण जहण्ण उक्कोम	६६४७	
साभावि णितिय कप्पति	१००४	
साभावित च उचिय	१००३	
साभाविते तिण्णि दिणा	६०८७	
साभावियणिस्साए	१३२८	
सा मग्गति साधम्मी	१७८३	३८०४
सामण्णे जे पुव्वि	१०७१	
सामत्थ णिव अपुत्ते	३६८	४९४९
सामाइय पारेतूण	४९६३	
,,	४९८५	
सामाइयमाईय	३३०३	
सामा तु दिवा छाया	४३१९	
सामायारिं वितह	४३४९	
सामित्त-करण-अधिकरण	६०	
सामित्ते करणम्मि य	३१४२	
सामी चार भडा वा	४५०५	
सारीर पि य दुविह	६०९६	
सारुवि सावग-गिहिगे	५८६	
सारूवि सिद्धपुत्तेण वा	४६०२	
सारेऊण य कवय	३८१६	
सारेहिति सीयत	४५८४	
सालत्ति णवरि णेम	२४८९	
सालबो सावज्ज	४७५	
साला तु अहे वियडा	२४२८	

सालितणादि ज्झुसिरो	१२१६	
साली-घय गुल-गोरस	२६६२	५३४१
सावगसण्णिट्ठाणे	२३६६	३८-६
सावत्तेणा दुविधा	३२६४	
सावत्थी उसभपुर	५६२२	
सावय अण्णट्ठकडे	५६६४	
सावय-तेण-परद्धे	५६६५	३१०४
सावय तेणभया वा	२५५	
सावय भय आणेति वा	२२६	३४५८
सावयतेणे उभय	४२२४	५६३४
सावयभए आणिति व	५४०३	३४५८
सावेक्खो त्ति व काउ	६६५७	
सासवणाले छदण	३६८३	४६८८
सासवणाले मुहणतए	३६८२	
साहम्मि अण्णहम्मि य	३६४२	
साहम्मि य उद्देसो	४५२५	
साहम्मि य वच्छल्ल	२६	
साहम्मियत्थलामति	३४६	
साहारगस्स भावा	५७०३	
साहारण तु पढमे	५५०३	५४०७
साहारणे वि एव	४६४६	
साहिकरणो य दुविहो	२७७३	
साहिति य पियधम्मा	१६४३	
साहु उवासमाणो	४६७४	
साहूण देह एय	५७४६	३२८०
साहूण वसहीए	५३०१	३३८०
सिक्कगकरण दुविध	६३६	
सिग्घयर आगमण	४१८०	५२६६
सिग्घुज्जुगती आसो	६३११	
सिज्जादिएसु उभय	४०७	
सिट्ठम्मि ण सगिज्झइ	२८४५	५५७६
सिणेहो पलवी होइ	३८२१	
सिण्हा मीसग हेट्ठोवरि	१८०	
सितिअवणण पडिलाभग	४४५३	
सिद्धत्थगजालेण व	४००६	३८२६
सिद्धत्थग पुप्फे वा	३४४४	२८६७
सिप्पसिलोगादीहिं	४२७८	
सिप्पसिलोगे अट्ठावए	४२७६	

सिप्पाई भिक्खतो	३७१४	
सिरिगुत्तेण छलुगो	५६०५	
सिहिरिणि लभाऽऽलोयण	३६८७	४६६२
सिचण वीयी पुट्ठा	५३१२	२३८६
सिचति ते उवहिं वा	४२२०	५६३०
सीओदगभोईण	४११५	
सीत पउरिंधणता	१७५	
सीताणे ज दड्ढ	६११२	
सातितरफासु चउहा	५२३०	
सीतेण व उसिणेण व	१६३६	
सीतोदगभावित अविगते	५८६३	
सीतोदगम्मि छुब्भति	५६७०	
सीतोदगवियडेण	२२७४	
सीतोदे उसिणोदे	५२२६	३४२०
सीतोदे जो उ गमो	२२७६	
सीसगए म्मि विसेसो	२१०८	
सीसगता वि ण दुक्ख	४२१६	५६२६
सीसपडिच्छे पाहुड	६३४०	
सीस उरो य उदर	५६३	
सीसोकपण हत्थे	२७२४	४७३६
सीसोकपिय गरहा	२७२१	४७३२
सीहगुह वग्घगुह	५५६५	५४६४
सीहाऽऽसीविस अग्गी	५६८	
सुअ अव्वत्तो अगीओ	५४८२	५३८७
सुक्खोदणो समितिमा	५६८६	३०६६
सुक्खोल्ल ओदणस्सा	५८६२	४०६८
सुट्ठु कय आभरण	५१०८	२४६०
सुट्ठु कया अह पडिमा	५१४३	२४६३
सुट्ठुल्लसिते भीते	३६६	
”	२२४४	
सुणमाणे वि ण सुणिमो	२३६७	४८३४
सुण्ण दुट्टु वड्डुगा	१३१६	
सुण्णे एत पडिच्छए	१२४२	
सुण्गो चउत्थभगो	४०६६	
सुतसुह दुक्खे खेत्ते	२१४०	
सुत्तट्ठि णक्खत्ते	६२८८	
सुत्तणिवाओ इत्थ	२८८६	
सुत्तणिवाओ एत्थ	२०६०	
सुत्तणिवातो सच्चित—	५६५६	

सुत्तणिवातो उक्कोसयम्मि	५९५२	
सुत्तणिवातो एत्थ	१८८९	
,, ,,	१९९८	
,, ,,	२२२७	
,, ,,	३७४३	
,, ओहे	२०२३	
,, कसिणे	९६९	
,, णितिए	१०२०	
,, णियमा	१०५०	
,, तणेसु	१२२४	
,, वितिए	९१०	
,, सगलकसिण	९२३	
सुत्तत्थ अपडिबद्ध	३१०६	
सुत्तत्थतदुभयविसारयम्मि	३३८४	२७८५
सुत्तत्थतदुभयाइ	६२२५	७८६
सुत्तत्थतदुभयाण	६१८१	
,,	६६७३	
सुत्तत्थावस्सणिसीधियासु	५२१	
सुत्तत्थे अकहेत्ता	३७५४	
सुत्तत्थे पलिमथो	१९६६	
,,	४२१६	५६२६
सुत्तनिवातो सग्गामा	१४८९	
सुत्तमयी रज्जुमयी	६५१	२३७४
सुत्तम्मि णालबद्धा	५५२२	
सुत्तम्मि होति भयणा	६२१६	७७८
सुत्तवत्तो वयवत्तो	५५७८	
सुत्तसुहदुक्खे खेत्ते	५५२१	
सुत्तस्स व अत्थस्स व	५४५९	
सुत्तस्स विसवादो	५७३९	
सुत्त कड्ढति वेट्ठो	२११५	
सुत्त तु कारणिय	४८६२	
सुत्त पडुच्च गहिते	२९१५	
सुत्त व अत्थ च दुवे वि काउ	१२३६	
सुत्तमि एते लहुगा	२१	
सुतायामसिरोणत	२११४	
सुत्ते जहा णिबधो	३२०४	
सुद्धतवे परिहारिय	६६०४	
सुद्धतवो अज्जाण	२८७६	
सुद्धतवो अज्जाण	६५९१	
सुद्धपडिच्छणे लहुगा	६३६३	
सुद्धमसुद्ध चरण	५४३३	
सुद्ध एसित्तु ठावेति	३९३१	
सुद्ध पडिच्छिऊण	६३४२	
सुद्धालभे अगीते	६६६०	
सुद्धे सड्ढी इच्छकार	२९७२	१८७४
सुद्धो लहुगा तिसु दुसु	९०९	
सुप्पे य तालवेटे	२३६	
सुबहूहि वि मासेहिं	६५२०	
,,	६५२४	
सुब्भी दढग्गजीहो	१११७	
सुयअभिगमणायविही	४४८७	
सुय-चरणे दुहा धम्मो	२८६५	
सुयधम्मो खलु दुविहो	३३००	
सुयनाणम्मि य भत्ती	६१७१	
सुयवत्तो वयावत्तो	२७४०	
सुलसा अमूढदिट्ठि	३२	
सुवइ य अजगर भूतो	५३०५	३३८७
सुवति सुवतस्स सुय	५३०४	३३८४
सुहपडिबोहा णिद्दा	१३३	२४००
,,	५३२६	,,
सुहमवि आवेदतो	३३३०	
सुहविण्णप्पा सुहमोइया	५१५५	२५२६
,,	५१७७	२५४४
,,	५१९०	२५२७
सुहसाहग पि कज्ज	४८०३	९४४
सुहसीलतेणगहिते	३५१	
सुहिणो व तस्स वीरिय-	१५६३	
सुहियामो त्ति य भणती	२९८५	१८८७
सुहुम च बादर वा	३३०	
सुहुमो य बादरो य	३८०	
सुहुमो य बादरो वा	२९७	
सूतिज्जति अणुरागो	४९७५	
,,	४९९६	
सूतीमादीयाण	६६२	
,,	६६५	
सूभगदूभग्गकरा	४४६९	

सूयग-मतग-कुलाइ	१६१८	
,,	५७६०	
सूयिमरणट्ठाए तु	६६८	
सूयि अविधीए तू	६७५	
सूरत्थमणम्मि तु णिग्गनाग	११५७	३५३८
सूरुग्गते जिणाण	१४२४	१६६१
सूरे अणुग्गयम्मि उ	२८६०	५७८६
सूत्रोदगस्स भरिउ	६६२ग	
सेएण कक्खमाती	३६३२	
सेज्जा-कप्प-विहिण्णू	१२४८	
सेज्जा-सथारदुग	१६६०	
सेज्जातर-रातपिंडे	३४६६	
सेज्जातराण धम्म	१७२६	३७४८
मेज्जातरो पभू वा	११४४	३५२५
सेज्जायरकप्पट्ठी	५५४८	५४४६
सेज्जायरकुलनिस्सित	४३४४	
सेज्जायरमादि सएज्झिया	५५४३	
सेज्जायरस्स पिंडो	३४८५	
सेज्जासथारो ऊ	१३०१	
सेज्जोवहि आहारे	२१०७	
,,	२११०	
मेडगुलि वग्गुडावे	४४५१	
सेडुग रूते पिजिय	१६६२	२६६६
सेणादी गम्मिहिती	२३५७	४७६६
मेणाहिव भोइ महयर	६०६५	
मेयविपोलासाढे	५५६६	
सेय वा जल्ल वा	१५२१	
सेलऽट्ठि-थभदारुपलया	३१६१	
मेवतो तु अकिच्च	४७०	
मेसा उ जहासत्ती	६१२२	
सेसेसु तु सब्भाव	२७२०	४७३१
सेसेसु फासुएण	२०५०	
सेह-गिहिणा व दिट्ठे	३७६६	६००६
सेहऽवहारो दुविहो	२६६६	
सेहस्स विसीदणता	२१२	३४३६
सेहस्स विसीयणता	५३८४	,,
सेहादीण अवण्णा	२६४७	
सहादीण दुगु छा	१५४५	

सहादी पडिकुट्ठो	३८१	
महुभामगभिच्छुणि	३५७	
सा आणा अणवत्थ	७५१	
,,	७६३	
,,	८३६	
,,	११०६	
,,	१११५	
,,	१४६६	
,,	१४६७	
,,	१५५२	
,,	१६११	
,,	१८२४	
,,	१८२६	
,,	१८६१	
,,	२१६६	
,,	२१६३	
,,	२२४८	
,,	२४४०	
,,	२८६२	
,,	३११५	
,,	४०३४	
,,	४३०६	
सोआती णव सोत्ता	३६६०	
सोउ हिडण-कघण	१२५८	
मोऊण जो गिलाण	२६६६	१८७१
सोऊग य घोसणय	४७८४	६२५
सोऊण व पासित्ता	१७६६	३७८८
साऊग वा गिलाण	२६७०	१८७१
,,	२६७३	१८७५
,,	२६७५	१८७७
सोऊण च गिलाणि	१७४६	१८७२
सो एसो जस्स गुणा	१०४७	
सोगधिए य आसित्ते	३५६२	५१६७
सोच्चा गत त्ति लहुगा	१३०२	४६००
मोच्चाण परसमीवे	२६६७	
सोच्चा पत्तिमपत्तिय	१३१७	५४५
सोच्चा व नोवसग्ग	२३६०	
मो णिच्छुभति साधू	२८४१	५५७५
सो णिज्जति गिलाणो	३०८०	१६७६

सो णिज्जराए वट्टनि	१७६१	३७८४
सोणितपूयालित्ते	४०१८	३८४०
सो त ताए अण्णाए	४०६८	१८२२
सोतु अणाभिग्याण	६२२३	
सोत्थियबधो दुविधो	७३८	
सो परिणामविहिण्णू	१७५२	३७७५
सोपारयम्मि णयरे	५११५६	२५०६
सो पुण आलेवो वा	४८६४	१०२१
सो पुण पडिच्छगो वा	४५६२	
सो पुण लेवो चउहा	४२०१	
सो मग्गति साधम्मि	१७७४	३७६२
सो रायोऽवतिवती	५७५२	३२८३
सोलस वासाणि तया	५६१२	
सो समणसुविहितेहि	३५८५	५१६१
सो समणसुविहियाण	५७६७	
सो होती पडिणीतो	५४४०	

ह

हतविहतविप्परद्ध	२३५४	५२५८
हत्थद्धमत्तदारुय	३०५८	१६५७
हत्थ-पणग तु दीहा	६५२	२३ ५
हत्थ वा मत्त वा	४०६३	१८२०
हत्थाइ-जाव सोत	२२५०	
हत्थादि पायघट्टण	१६१०	
हत्थादिपादघट्टण	१६०४	
हत्थादिवातणत	६६२	
हत्थादि-वायणते	६२७२	
हत्थादिवायणत—	६६८२	
हत्थेण अदेंसिते	१४८२	
हत्थेण अपावेंतो	८००	
हत्थेण व मत्तेण व	४०५८	
हत्थे पाए कण्णे	३७०६	
हय-गय-रहसम्मद्द	२५६४	
हयगयलचिक्काइ	३६५४	
हयजुद्धादी ठाणा	४१३३	
हयमादी साला खलु	२४६१	
हरिए बीए चले जुत्ते	१६००	५००
हरियाल मणोसिल	४८३४	६७४
हविपूयो कम्मगरे	१८०३	
हाणी जा एगट्ठा	२२७४	४८११
हा दुट्ठु कय	६५७३	
हास दप्प च रति	५६६	
हित सेसगाण असती	५७२१	३१३३
हिंडितो वहिले काये	३८५७	
हीणप्पमाणधरणे	५८२८	४००५
,,	५८३१	,,
हीणाऽतिरेगदोसे	५८४१	४०१७
हीणाधिए य पोरा	२१६८	
हीणाहियविवरीए	६३४५	
हीणे कज्जविवत्ती	२१६७	
हीरत णिज्जत	३४८४	
हुंड सबल वाताइद्ध	७५२	
हुडादि एगबधे	५८५५	४०३०
हुडे चरित्तभेदो	७५३	४०२४
,,	५८४८	,
हुंडे सबले सव्वण	५८५१	
हेट्ठ उवासणहेउ	२४६२	२०६७
हेमन्तकडा गिम्हे	२०५६	
होऊण सन्नि सिद्धो	४६०३	
होज्ज गुरुओ गिलाणो	२६५२	
होज्ज हु वसणप्पत्तो	५४३५	
होति समे समगहण	६४६१	
होमातिवितहकरणे	४४१३	
होहिति जुगप्पहाणो	३७३६	
होहिति वि णियसणिय	५०४७	६४६
होति उवगा कणगा	५६४	

द्वितीयं परिशिष्टम्

निशीथचूर्णौ चूर्णिकारेणोद्धृतानि गाथादिप्रमाणानि



	विभाग	पृष्ठ
अकाले चरसि भिक्खू	१	७
[दश० अ० ५, उ० २, गा० ५]		
अचिरुग्गए य सूरिये	१	२१
[ ]		
अणुग्घातियाए गुणिया	४	३६७
[ ]		
अट्ठविह कम्मरय	१	५
[ ]		
अट्ठारसपयसहस्सिओ वेदो	१	२
[ ]		
अट्ठारसपुरिसेसु	१	१३२
[निशीथभाष्य, गा० ३५०५, तुलना]		
अत्थिणं भन्ते लवससमा	४	४००
[ ]		
अन्न भडेहि वण	२	१७७
[कल्पबृहद्भाष्य]		
अपत्थ अंबग भोच्चा	३	२५०
[उत्त० अ० ७, गा० ११]		
अपि कद्द मपिंडाना	१	६५
[ ]		
अप्पे सिया भोयणजाए	३	५४७
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७४]		
अप्पोवही कलहविवज्जणा य	४	१५७
[दश० चू० २, गा० ५]		
अब्भतरगा खुभिया	१	२१
[ ]		
अब्भुवगते खलु वासावासे	३	१२२
[आचा० श्रु० २, अ० ३, उ० १, सू० १११]		

	विभाग	पृष्ठ
अभिति छच्च मुहुत्ते	४	२७७
[ ]		
अरस विरस वा वि	२	१२६
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ९८]		
अरहा अत्थं भासति	१	१४
[बृहत्कल्पभाष्य, गा० १९३]		
अवसेसा णक्खत्ता	४	२७७
[ ]		
अ (आ) वती केयावती लोगंसि	१	१३
[आचा० श्रु० १, अ० ५, उ० १]		
असंसत्त	२	४१९
[ ]		
असिवे ओमोयरिए	१	८०
[ ]		
अहय दुक्ख पत्तो	३	४०५
[ ]		
अहाकडेहिं रधति	१	१३
[ ]		
आगपइत्ता अणुमाणइत्ता	४	३६३
[ ]		
आचेलुकुद्देसिय	३	४०१
[ ]		
,,	२	३५६
[ ]		
आदिमसुत्ते भणिते	४	३१३
[ ]		
आणाएच्चिय चरण	१	५४
[ ]		

आयारव आहारव ४ ३६३
[ ]
इयदुद्धरातिगाढे ४ २१०
[ ]
इह खलु निग्गथाण २ १८५
[बृहत्कल्प, उ० ३]
उक्कोस गणणग्ग १ २८
[ ]
उग्गमउप्पायण १ १५८
[ ]
उग्घातितदुगर्एहि ४ ३६६
[ ]
उग्घातियदुअर्एहि ४ ३६७
[ ]
उच्चालयम्मि पादे ३ ५००
[ओघनियुक्ति, गा० ७४६]
उच्चालियम्मि पादे १ ४२
[ओघनियुक्ति, गा० ७४६]
उच्छू बोलति वइ २ १३४
[बृह० उ० १, भा० गा० १५३६]
[ओघनियुक्ति, गा० १७०]
उद्दे से णिद्दे से २ २
[आवश्यकनियुक्ति, गा० १४०]
उवज्झायवेयावच्च करेमाणे ४ २६६
[ ]
उवेहेत्ता सजमो वुत्तो ३ ४०
[ओघनियुक्ति]
उस्सप्पण सव्वसुय १ ८
[ ]
एक्के चउसतपण्णा ४ ३६६
[ ]
एग दुग तिण्णि मासा ४ २१६
[ ]
एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स १ १०८
[भग० श० १८, उ० ७]
एगादि अणुग्घाता ४ २६७
[ ]
एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवकरण– ४ १५७
[औपपातिक, तपोवरान सू० ४०]
[स्थाना० स्था० ३, उ० ३]
एगेण कयमकज्ज १ ५४
[बृहत्कल्पभाष्य, गा० ६२८]
एतेसि ण भते ! बालाण ३ ३६३
[भग० श० १२, उ० २ तुलना]
एस जिणाण आणा ४ २१०
[ ]
कडते य ते कु डलए य ते १ २१
[ ]
कण्णसोक्खेहि सद्दे हि ३ ४८३
[दश० अ० ८, गा० २६]
कति ण भते ! कण्हराईओ १ ३३
[भग० श० ६, उ० ५]
कप्पति णिग्गथाण पक्के– ३ ५३२
[बृहत्कल्प, उ० १, सू० ३]
कप्पति णिग्गथाण वा– ४ ३२
[बृहत्कल्प, उ० १, सू० २]
कप्पति णिग्गथाण वा ४ ३२
[बृह० उ० ३ सू० ६]
कप्पति णिग्गथाण सलोमाइ ४ ३२
[बृहत्कल्प, उ० ३, सू० ४]
कप्पति णिग्गथीण अलोमाइ– ४ ३२
[ ]
कप्पति णिग्गथीण पक्के ४ ३१
[बृहत्कल्प, उ० १, सू० ५]
कप्पति से सागारकड ३ ५८३
[बृह०, उ० १, सू० ३६]
कम्ममसखेज्जभव ३ २६८
[व्यवहारभाष्य, उ० १०, गा० ५१०]
कयरे आगच्छति दित्तरूवे ४ २७२
[उत्तराध्ययन, अ० १२, गा० ६]
कागसियालअखइय– २ १२५
[ ]
काम जानामि ते मूल २ २२
[महाभारत]
कि कतिविह कस्स २ ८
[आवश्यकनियुक्ति, गा० १४१]
कि मे कड, कि च मे किच्चसेस २ ६८
[दश० चू० २, गा० १२]
कुणतु व सपद उ बद्धो ३ ११८
[ ]

कोडिसयं सत्तऽहियं	४	३६६	[ ]
को राजा यो न रक्षति	१	७	[ ]
को राया जो न रक्खइ	१	१२२	[ ]
कोहो य माणो य अणिग्गहीया	४	३३	[दश० अ० ८, गा० ४०]
कृत्स्नकर्मक्षयात् मोक्षः	१	१५७	[तत्त्वा० अ० १०, सू०३, तुलना]
गच्छम्मि केई पुरिसा	४	२९२	[ ]
गज्जित्ता णामेगे णो वासित्ता	४	३०७	[स्थाना० स्था० ४]
गवाशनानां स गिरः शृणोति	३	५६२	[ ]
गहणं पुराणसावग	४	२२२	[ ]
गोयरग्गपविट्ठो उ	४	३१	[दशवै० अ० ५, उ० २, गा० ८]
चंदगुत्तपपुत्तो उ	२	३६२	[बृहत्कल्पभाष्य, गा० २९४]
छच्चेव अतीरित्ता	४	२७७	[ ]
जइ इच्छसि नाऊणं	४	३३७	[ ]
जति णत्थि ठवणआरोवणा	४	३३७	[ ]
जतिभि भवे आरुवणा	४	३२४	[निशीथभाष्य, गा० ६४८६]
जत्तो भिक्खं बलिं देमि	१	२०	[ ]
जत्थ राया सयं चोरो	१	२१	[ ]
जमहं दिया य राओ य	१	२०	[ ]
जह दीवा दीवसयं	१	५	[ ]
जाव वुत्थं सुहं वुत्थं	१	२१	[ ]
जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं	२	२८१	[भग० श० १६, उ० १, तुलना]
जीवेणं भंते सता समितं	२	३२०	[भग० श० ३, उ० ३]
जे असंतएणं अब्भक्खाणेणं	४	२७२	[ ]
जेट्ठामूलंमि मासंमि	१	२१	[ ]
जेण रोहंति बीयाइं	१	२०	[ ]
जे भिक्खू असणं वा पाणं वा	४	३२	[बृह०, उ० ४, सू० ११, तुलना]
जे भिक्खू उग्घातियं	३	२८	[ ]
जे भिक्खू तरुणे बलवं	४	१५७	[आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]
जे मे जाणंति जिणा	३	२९६	[ ]
जो जेण पगारेणं	१	४	[ ]
जो य ण दुक्खं पत्तो	३	४०५	[ ]
जं अज्जियं समीखल्लएहिं	३	४३	[ ]
जं जाणेज्ज चिराधोतं	४	१९६	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७६]
जं भुञ्जति उवकारे	१	९३	[ ]
ठवणारुवणादिवसाण	४	३३७	[ ]
ण चरेज्ज वासे वासंते	१	१०६	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ८]
ण मती सुयं तप्पुव्वियं	३	५१४	[नन्दीसूत्र, तुलना]
ण य तस्स तण्णिमित्तो	१	४२	[ओघनिर्युक्ति, गा० ७४९]

णवमासाकुच्छिधालिए १ २१
[ ]
ण वि लोण लोणिज्जति २ १७७
[कल्पबृहद्भाष्य]
ण हु वीरियपरिहीणो १ २७
[ ]
णाणस्स दसणस्स १ ५
[ ]
णिद्दा विगहा परिवज्जिएहिं १ ९
[ ]
णो कप्पइ णिग्गथाण इत्थिसागारिए ४ २३
[बृह०, उ० १, सू० २७–३०]
णो कप्पइ णिग्गथाण वेरेज्ज— ३ २२७
[बृहत्० उ० १, सू० ३८]
णो कप्पति निग्गथाण अलोमाइ ४ ३२
[ ]
णो कप्पति णिग्गथाण वा ४ ३२
[बृह० उ० ३, सू० ५]
णो कप्पति णिग्गथाण ३ १५४
[कल्पसूत्र]
णो कप्पति णिग्गथाण वा ४ ३१
[बृह० उ० ३, सू० २२]
णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा ४ ३२
[बृह०, उ० १, सू० ४२-४४]
णो कप्पति णिग्गथीण सलोमाइ ४ ३२
[बृह० उ० ३, सू० ३]
तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता १ ११२
[स्थाना० स्था० ३]
,, ,, १ ११९
[स्थाना० स्था० ३]
तणुगतिकिरियसमिती १ २३
[ ]
तमुक्काए ण भते ! कहि १ ३३
[भग० श० ६ उ० ५]
तरुणो एग पाद गेण्हेज्जा ३ २२६
[आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]
तव प्रसादाद्धुतुंश्च १ १०४
[धूर्ताख्यानप्रकरण]
तहेवासजत धीरो १ १६१
[दश० अ० ७ गा० ४७]
त णेच्छइय णयमए १ २६
[ ]
तावदेव चलत्यर्थो ३ ५२६
[ ]
तिगजोगेऽणुग्घाता ४ ३६७
[ ]
तिण्णुत्तरा विसाहा ४ २७६
[ ]
तिण्हमण्णतरागस्स ४ ३२
[दशवै०, अ० ६, गा० ६०]
तेगिच्छ णाभिणदेज्ज ३ ५०९
[उत्त० अ० २, गा० ३३]
तेजो वायू द्वीन्द्रियादयश्च ३ ३१५
[तत्त्वा०, अ० २, सू० १४]
तेरस य चदमासो ४ २७८
[सूयप्रज्ञप्ति]
तेषा कटतटभ्रष्टै १ १०३
[ ]
त्रय शल्या महाराज ! २ १२०
[ओघनियुक्ति, गा० ६२३ समा]
दत्त्वा दानमनीश्वर ३ ५८१
[ ]
दडक ससत्थ १ १८
[ ]
दव्व खेत्त काल ३ ५३५
[ ]
दाण दवावण कारावणे य ४ ३७६
[ ]
दतपुर दतवक्के ४ ३६१
[ ]
दतानां मजन श्रेष्ठ २ ९०
[ ]
धम्मे-धम्मे णातिधम्मे १ ८
[ ]
धम्मियाण किं सुत्तया ४ ८६
[भग० श० १२ उ० २]

धम्मो मगलमुक्कठ्ठ	१	१३	[दश० अ० १, गा० १]
पज्जोसवणाकप्पस्स	३	१५८	[ ]
पञ्च वद्धति कौन्तेय !	१	१४	[ ]
पणुवीससहस्साइ	४	३६७	[ ]
परमाणु पोग्गलेण भते !	४	२८१	[भग० श० २१, उ० ४]
परिताव महादुक्खो	२	४१८	[वृहत्कल्पभाष्य, गा० १८६६]
पिंडस्स जा विसोही	१	३२	[ ]
पुरेकम्मे पच्छाकम्मे	१	५८	[ ]
पुव्वभणिय तु ज एत्थ	१	३	[ ]
बहुअट्ठिय पोग्गल	४	३२	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७३]
बहुदोसे माणुस्से	१	१८	[ ]
बहुमोहो वि य ण पुव्व	४	७२	[ ]
बहुवित्थरमुस्सग्ग	४	२११	[ ]
बारसविहम्मि वि तवे	४	२२७	[ ]
भद्दक भद्दक भोच्चा	२	१२५	[दश०, अ० ५, उ० २, गा० ३३]
मद्य नाम प्रचुरकलह	१	५३	[ ]
माणुसत्त सुई सद्धा	३	२९४	[उत्त० अ० ३, गा० १]
माताप्येका पिताप्येको	३	५६१	[ ]
मोसगसुत्तसमासे	४	३६७	[ ]
मुत्तणिरोहे चक्खु	२	२६७	[ ]

मूढनइअ सुय कालिय तु	१	६	[ ]
रण्णो भत्त सिणो जत्थ	१	१३	[ ]
रस-रुधिर-मास-मेदोऽस्थि	१	२६	[ ]
लघण-पवण-समत्थो	१	२०	[ ]
वग्घस्स मए भीतेण	१	२०	[ ]
वयछक्क कायछक्क	२	३१९	[दश० अ० ६, गा० ८]
वर प्रवेष्टु ज्वलित हुताशन	१	१२७	[ ]
वमहि कह णिसेज्जिदि य	१	५०	[ ]
वसही दुल्लभताए	२	३७	[ ]
विभूसा इत्थीससग्गी	४	१४३	[दश०, अ० ८, गा० ५७]
वीतरागो हि सवज्ञ	४	३०९	[ ]
वैरूप्य व्याधिपिड	१	५३	[ ]
सट्ठीए अतीताए	४	२७७	[ ]
सत्तसया सट्ठऽहिया	४	२६७	[ ]
समणो य सि सजतो य सि	१	२१	[ ]
सम्प्राप्तिश्च विपत्तिश्च	३	५०८	[ ]
समितो नियमा गुत्तो	१	२३	[ ]
सयभिसयभरणीओ	४	२७६	[ ]
सयमेव उ अमए लवे	१	२१	[ ]

सव्वत्थ सजम सजमाओ	१	११८
[ओघनियुक्ति, गा० ४६]		
सव्वामगंध परिण्णाय	३	४८५
[आचा० श्रु० १, अ० २, उ० ५]		
सव्वेसिं पि	४	४१०
[ ]		
साहम्मिय वच्छल्लंमि	१	७२
[ ]		
सिरीए मतिम तुस्से	१	८
[ ]		
सूतोपदप्पमाणाणि	१	८
[ ]		
से गामसि वा	४	७०२
[दश० अ० ४]		
सेसा उवरिमुहुत्ता	४	३६७
[ ]		
सोलसमुग्गमदोसा	१	१३२
[ ]		
सोही उज्जुअभूतस्स	४	२९४
[उत्त० अ० ३, गा० १२]		
सकप्पकिरियगोवण	१	२३
[ ]		
सत पि तमण्णाण	१	२६
[ ]		
सहिता य पद चेव	२	२
[ ]		
हा दुट्ठु कय	१	१५६
[निशीथभाष्य, गा० ६५७३]		

३

तृतीयं परिशिष्टम्

चूर्णौ प्रमाणत्वेन निर्दिष्टाना ग्रन्थाना नामानि

		विभाग	पृष्ठ
अग्घकड	(अघकाण्ड)	३	४००
अत्यसत्थ	(अथशास्त्र)	३	२६६
अणुओगदार	(अनुयोगद्वार)	४	२३५
आचारप्रकल्प	(निशीथ-सूत्र)	१	२६
आचारप्राभृत		१	३०
आचाराग		३	१२२
आयारग्ग (आचाराग्र = निशीथ)		४	२५२
आयारपकप्प	(आचारप्रकल्प)	१	२,५,३१
आयारपगप्प	(,,)	४	७३
आयारवत्थु	(आचारवस्तु)	३	६३
आयार	(आचार)	१	२,३,५,३५
,,		३	२१२
,,		४	१६३
,,		,,	२५२
,,		,,	२५४
,,		,,	२६४
आवश्यक		२	२-
आवस्सग्र	(आवश्यक)	४	२५४
आवस्सग	(आवश्यक)	१	१४६
,,		४	७२,१०३,
,,		,,	२४०
इसिभासिय	(ऋषिभाषित)	४	२५३
उग्गहपडिमा (अवग्रहप्रतिमा, आचा० २ ७)		१	२
उत्तरज्झयण	(उत्तराध्ययन)	२	२३८
,,		४	२५२

		विभाग	पृष्ठ
उपधानश्रुत	(आचाराग १ ९)	१	२
ओहणिज्जुत्ति	(ओघनियुक्ति)	२	४३६
,,		३	४०,४४६,
,,		,,	४५०,
		,,	४६१
,,		४	६४,१०६,
,,		,,	१२०
कप्प	(कल्प)	१	३५
,,		३	३६८
,,		,,	५३२
,,		,,	५८३
,,		४	३०४
कप्पसुत्त	(कल्पसूत्र)	३	५२३
,,		४	२३
कप्पपेढ	(कल्पपीठ)	१	१३२
कप्प-पेढिआ	(कल्पपीठिका)	१	१५५
खुड्डियायारकहा (क्षुल्लकाचारकथा, दश० अ० ३)		४	२४३
गोविंदणिज्जुत्ति		३	२१२
	(गोविन्दनियुक्ति)	,,	२६०
,,		४	९६
चंदगवेज्झग	(चन्द्रकवेध्यक)	४	२२५
चेडगकहा	(चेटककथा)	४	२६
चंदपण्णत्ति	(चन्द्रप्रज्ञप्ति)	१	३१
छज्जीवणिया	(षड्जीवनिका) दशवै० अ० ४	३	२८०
,,		४	२६८

छेदसुत्त (छेदसूत्र)	४	८८	पण्णत्ति (प्रज्ञप्ति)	२	७३८
जंबूदीवपण्णत्ति (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति)	१	३१	पण्हवाकरण (प्रश्नव्याकरण)	३	३८३
जोगसंगह (योगसंग्रह)	३	२६६	पिंडणिज्जुत्ति (पिण्डनिर्युक्ति)	१	१३२
जोणिपाहुड (योनिप्राभृत)	२	७८१		,	१५५
,,	३	१११	,, ,,	२	२४६
,,	४	१६०	,, ,	४	६७,
णमोक्कारणिज्जुत्ति [नमस्कारनिर्युक्ति]	२	२८५	,,	,	१६१
,,	३	३६६	,,	,	१६२
णरवाहणदत्तकथा [नरवाहनदत्तकथा]	२	४१५	,,	,	१६३
णंदी [नन्दी]	४	२३५	,,	,	२०७,
णिसीह [निशीथ]	४	१६०	,,	,	२२०
तरंगवती	२	४१५	पिंडेसणा [पिण्डैषणा आचा० २।१]	१	२
,,	४	२६	,, ,,	४	१६३
तन्दुलवेयालिय [तंदुलवचारिक]	४	२३५	,,	,,	२६८
दसवेयालिअ [दशवैकालिक]	१	२,१८	पोरिसीमंडल [पौरुषीमण्डल]	४	२३५
,,	२	८०	बिंदुसार बिन्दुसार	४	२५२
,,	३	२८०	बंभचेर [ब्रह्मचर्य, आचा० श्रु० १]	४	२५२
,,	४	२५२			
,,	,,	२५४	भगवती सुत्त [भगवती सूत्र]	१	३३,७६
,,	,,	२६३	,, ,,	२	२३८
दसा [दशाश्रुतस्कन्ध]	३	७	भारह [भारत]	१	१०३
,,	४	३०४	भावणा [भावना, आचा० २ २८]	१	२
,,	४	२६४			
दिट्ठिवाय [दृष्टिवाद]	१	४	मगधसेना	२	४१५
दिट्ठिवात	१	२६	मरणविभत्ति	३	२६८
,,	३	६३	मलयवती	२	४१५
,,	४	७३,	महाकप्पसुत्त [महाकल्पसूत्र]	२	२३८
,,	,,	२२६,	, ,,	४	६६,२२४
,,	,,	२५३	महाणिसीह णिज्जुत्ति [महानिशीथनिर्युक्ति]	४	३०४
दीवसागरपण्णत्ति [द्वीपसागरप्रज्ञप्ति]	१	३१			
दुमपुप्फिय [द्रुमपुष्पिका, दश० अ० १]	१	२४	रइवक्का [रतिवाक्या, दश० चू० १]	३	४५०
दुवालसंग [द्वादशांग]	१	१५			
,,	,,	१६५	रामायण	१	१०३
धुत्तक्खाणग [धूर्ताख्यानक]	१	१०५	रोगविधि	३	१०१
,,	४	२६	लोगविजअ [लोकविजय,आचा० १।२]	४	२५२
नदी [नदी]	४	२३५	वक्कसुद्धि [वाक्यशुद्धि, दश० अ० ७]	२	८०
पकप्प [प्रकल्प]	१	३३			
,, ,,	४	२५६,	ववहार [व्यवहार]	१	३५
	,,	३०४	,	४	३०४
	,,	३३८			

वसुदेवचरिय	[वसुदेवचरित]	४	२६
विमुत्ति		१	२
	[विमुक्ति, आचा० २-२४]		
विवाहपडल	[विवाहपटल]	३	४००
वेज्जसत्थ	[वद्यशास्त्र]	३	१०१,
,,		,,	४१७
वेदरहस्स	[वेदरहस्य]	३	५२७
शस्त्र परीज्ञा		१	२
	(आचा० श्रु० १, अ० १)		
सत्थपरिण्णा		४	३३,२५२
	[शस्त्रपरीज्ञा, आचा० १-१]		
सद्द	[शब्दव्याकरण]	४	८८
सम्मति	[सन्मति]	१	१६२
सम्मदि	,,	३	२०२
सामाइय णिज्जुत्ति		४	१
	[सामायिकनियुक्ति]		
सिद्धिविणिच्छिय		१	१६२
	[सिद्धिविनिश्चय]		
सुति	[श्रुति]	१	१०
सूयकड	[सूत्रकृत]	१	३५
,,	,,	४	२५२,२६४
सूरपण्णत्ति	[सूयप्रज्ञप्ति]	१	२१
,,		४	२५
,,		,,	२७८
सेतु	[सेतुबन्ध]	३	३९९
,,		४	२६
हेतुसत्थ	[हेतुशास्त्र]	४	८८,९६

४

चतुर्थ परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गता दृष्टान्ता



प्रथम भाग

विषय	दृष्टान्त	पृष्ठ संख्या
अप्रशस्त भावोपक्रम	गणिका, ब्राह्मणी और अमात्य	३
अकाल स्वाध्याय	तक्र बेचने वाली अहीरी	८
,,	शृंग बजानेवाला किसान	८
,	शंख बजाने वाला	८
,,	दो छाणहारिका वृद्धाएं	८-९
विनय	श्रेणिक राजा और विद्यातिशयी चाण्डाल	९
भक्ति और बहुमान	शिवपूजक ब्राह्मण और भील	१०
उपधान-तप	असगड पिता आभीर	११
निह्नवन=अपलाप	विद्यातिशयी नापित	१२
शंका और अशंका	दो बालक	१५
कांक्षा और अकांक्षा	राजा और अमात्य	१५
विचिकित्सा और निर्विचिकित्सा	विद्यासाधक श्रावक और चोर	१६
विदुगुंछा=साधुओं के प्रति कुत्सा	एक श्रावक कन्या (श्रेणिक पत्नी)	१७
अमूढदृष्टि	सुलसा श्राविका और अम्मड परिव्राजक	२०
उपबृंहण	श्रेणिक राजा	२०
स्थिरीकरण	आचार्य आषाढभूति	२०-२१
वात्सल्य	वज्रस्वामी द्वारा संघरक्षा	२१ २२
,,	नन्दीषेण	२२
विद्यासिद्ध	अज्ज खउड	२२
लब्धिवीर्य	महावीर द्वारा गर्भ में माता त्रिशला की कुक्षि का चालन	२७
स्त्यानर्द्धि निद्रा	पुद्गल-भक्षी श्रमण	५५
,,	मोदकभक्षी श्रमण	५५
,,	शिरश्छेदक कुम्भकार श्रमण	५५
,,	गजदंतोत्पाटक श्रमण	५६
,,	वटशाखा-भञ्जक श्रमण	५६

प्राणातिपात-कल्पिका प्रतिसेवना	सिंहमारक कोकणभिक्षु	१००
लौकिक मृषावाद	अवन्ती के शशकादि धूर्त	१०२ १०५
भयनिमित्तक अकृत्यसेवन	पुत्रार्थी राजा और भीत तरुण भिक्षु	१२७

द्वितीय भाग

प्रणीत आहार	ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का भोजन और पुरोहित	२१
निरन्तर कायसलग्नता	कुलवधू का कामोपशमन	२२
अगादान का सचालनादि	सिंह, सर्प आदि सात उदाहरण	२८
अखण्ड वस्त्र-ग्रहण की सदोषता	कम्बलरत्नग्राही आचार्य और चोर	९७
कलुष परिष्ठापन	मक्खी, छिपकली आदि	१२३
रस भोजन सम्बन्धी लुब्धता अलुब्धता	आर्यमगु और आर्यसमुद्र	१२५
साधुगुण का चिन्ह रजोहरण	मरहट्ट देश मे रसापण (मद्य की दूकान) पर ध्वजा	१३६
अविमुक्ति अर्थात् गृद्धि	वीरल्लशकुनि (श्येन पक्षी)	१३७
यथावसर स्थापना-कुलो मे अप्रवेश से हानि	यथावसर गो-दोहन न करने वाला गृहस्थ	२४८
,,	यथावसर फूल न तोडने वाला माली	२४८
निष्कारण सयती वसति मे गमन	वीरल्ल शकुनि (श्येन पक्षी)	२६०
निवर्तनाधिकरण=जीवोत्पादन	आचार्य सिद्धसेन द्वारा अश्वनिर्माण	२८१
,,	महिष और दृष्टिविष सर्प का निर्माण	२८१
असवृत हास्य	श्रेष्ठी, पाँच सौ तापस	२८५
,,	भिक्षु का मृतक-हास्य	२८६
प्रस्रवण-भूमि का अप्रतिलेखन	चेला (चेल्लग) और ऊँट	२९८
असभोग सम्बन्धी पृच्छा	अगड आदि के ६ उदाहरण	३५९
विसभोग का प्रारम्भ	आर्य सुहस्ती और आर्य महागिरि	३६०
,,	सम्प्रति राजा का जन्म	३६०
अभियोग-प्रतिसेवना	पुत्रार्थी राजा और तरुण भिक्षु	३८१
लोक कथाओ का अनुपदेश	मल्लीगृहोत्पत्ति कथा कहने वाला भिक्षु	४१६
सोपसर्ग-स्थिति मे सयती के साथ विहार	दो यादव श्रमण-बन्धु और भगिनी सुकुमालिका साध्वी	४१७

तृतीय भाग

अधिकरण का अनुपशम	कलहरत सरटो द्वारा जलचर-नाश	४१
,,	क्रोधी द्रमक और कनकरस	४३
सम सपराध मे विषम दण्ड	राजा द्वारा तीन पुत्रो को विभिन्न दण्ड	४८
स्वगण तथा परगण मे दण्ड की अल्पाधिकता	पति द्वारा चार भार्याओ को विभिन्न दण्ड	५२
दुष्ट राजा का शिक्षार्थ अनुशासन	आर्य खउड	५८
,,	बाहुबली	५८
,,	सभूत (ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती का भ्राता)	५८
,,	हरिकेश बल	५८

,,	कालकाचाय और उज्जयिनी-नरेश गदभिल्ल	५८
परिहार तप म भीत को आश्वासन	अगड, नदी आदि	६४
अतिप्रमाण भोजन	अतिभोजी दरिद्र बटुक और अमात्य	८१
अवम भोजन	बटलोई	८५
वा न भोजन का अपवाद	रत्नवणिक् द्वारा चौराकुल अटवी की यात्रा	८७
ग्लानसेवा और तदथ अभ्यथना	दानार्थी, साथ ही अभिमानी मरुक	९२
धम की आपण (दुकान)	सुवर्णादि का क्रय	१०६
,,	गान्धिक आपण मे मद्य-क्रय	११०
पयु षणा काल म परिवतन	कालकाचाय और महाराष्ट्र-नरेश सातवाहन	१३१
पयु पणा मे कलह व्युपशमन	खलिहान जलाने वाला कुम्भकार	१३८
,,	उदायन और चण्डप्रद्योत	१४०
,	दरिद्र कृषक और चौर-सेनापति	१४७
क्रोध	गोघातक मरुक	१५०
मान	अच्चकारिय भट्टा	१५०
माया	पडरज्जा साध्वी	१५१
लोभ	रस-लोभ से आय मगु का यक्ष-जन्म, लुद्धनदी	१५२
भाव वैर	ग्राम महत्तर और चौर सेनापति	१६७
अतिप्रमाण भक्तग्रहण	मधुबिन्दु	२०६
,,	,,	२२१
अहाच्छद द्वारा समानता का दावा	पैतृक सम्पत्ति के समानाधिकारी चार कृषक पुत्र	२२७
वेदोपघात पण्डक	राजकुमार हेम	२४३
उपकरणोपहत पण्डक	दुराचारी कपिल क्षुल्लक	२४३
वातिक क्लीब	दुराचारी तच्चनिय भिक्षु	२४६
स्त्री-पुरुष के परस्पर सवास-सम्बन्धी दोष	आम्र खाने वाला राजा	२५०
,	मातृदशन से वत्स को स्तनाभिलाषा	२५०
,,	आम्र-दशन से लाला-स्राव	२५०
ज्ञान-स्तेन	आर्य गोविन्द	२६०
चारित्र स्तेन	उदायी नृपमारक भट्ट	२६०
,,	मथुर कौण्डइल	२६०
सकारण प्रव्रज्या	प्रभव	२६१
,,	मेताय-ऋषि घातक	२६१
स्वपक्ष की स्वपक्ष मे कषाय-दुष्टता	मृत गुरु के दांत तोडने वाला भिक्षु	२६४
,,	मुहणतक के लिए गुरुघातक भिक्षु	२६५
,,	गुरु की आंख निकालने वाला भिक्षु	२६५
,,	गुरु को पत्थर मारने वाला भिक्षु	२६५
परपक्ष की स्वपक्ष मे कषाय दुष्टता	मथुरा का जउण (यवन) राजा	२६६
द्रव्य-मूढ	दु शील भार्या और अध्यापक पति	२६७
काल मूढ	एक महिषीपालक पिंडार	२६७

गणना मूढ	एक ऊटवाल	२६७
सादृश्य-मूढ	ग्राममहत्तर और चौर-सेनापति	२६८
वेद-मूढ	मातृगामी राजकुमार अनंग	२६८
व्युद्ग्राहण मूढ	मातृगामी वणिक-पुत्र	२६९
"	पंचशैल जाने वाला अनंग सेन	२६९
"	अश्वपुरुष और धूर्त	२६९
"	पशुपालक और स्वर्णकार	२६९
हस्त पादादि विवर्जित बिम्ब	मृगावती-पुत्र	२७६
अज्ञान भाव से गर्भवती की प्रव्रज्या	करकण्डुमाता पद्मावती	२७७
प्रत्यनीक द्वारा साध्वी का गर्भवती होना	पेढाल के द्वारा गर्भवती ज्येष्ठा	२७७
पुरपारादि से अनभिज्ञ के महाव्रत	स्थाणु पर पुष्पमालारोहण	२८०
स्थविर से पूर्व क्षुल्लक की उपस्थापना	राजा के द्वारा पुत्र का राजसिंहासन	२८३
भाव-संलेखना	अमात्य और कोकणक	२९६
"	क्रोध से अपनी उंगली तोड देने वाला भिक्षु	२९६
उत्तमार्थ प्रतिपन्न का आहार	सहस्रयोधी का कवच	२९८
प्रत्याख्यान कालीन आभोग (उपयोग)	कंचनपुर में क्षमक का पारणक	३०२
पादोपगमन में धैर्य	स्कन्दक	३१२
"	चाणक्य	३१२
"	पिपीलिकाओं का उपसर्ग	३१२
"	कालासग वेसिय	३१२
"	अवन्ति सुकुमाल	३१२
"	जल प्रवाह का उपसर्ग	३१२
"	बत्तीस घडा	३१३
पुस्तक से होने वाली जीव हिंसा	चतुरंगिणी सेना से आवेष्टित मृग	३२१
"	दुग्ध पतित मक्षिका	३२२
"	मछली पकडने का जाल	३२२
"	तिलपीलक चक्र (घाणी)	३२२
स्वस्थानिन आसन का सदारना	जैन श्रमण और बौद्ध भिक्षु	३२५
पुरःकर्मकृत कर्मबन्ध का अधिकारी ?	इन्द्र को ब्रह्महत्या का शाप	३४०
भिक्षार्थ भक्तवृद्धि करने के गुण	कृपण वणिक की गृहचिन्तिका पत्नी	३५७
"	गाव के समीप कुबडी बदरी (बेरी)	३५८
नौका नयन सम्बन्धी अनुकम्पा	मुरुड राजा	३६५
नौका नयन सम्बन्धी द्वेष	कम्बल सबल नागकुमार और नौकारूढ भगवान् महावीर	३६६
एकेन्द्रिय जीवों की वेदना	जरा-जीर्ण स्थविर	३७७
एकेन्द्रिय जीवों का उपयोग	रुक्ष भोजनगत स्नेह गुण	३७७
"	पृथ्वीगत स्नेह गुण	३७७

निधानदर्शन	मयूरनृपाकित दीनारों का निधान	३८८
अनागत रोग का परिकम	अंकुर तथा बद्धमूल वृक्ष का अन्तर	३९४
,,	अवर्द्धित तथा विवर्द्धित ऋण	३९४
लौकिक व्यवहारो का निर्णय	दो नारी और एक पुत्र	३९६
,,	पटक	३९६
धातृ-पिण्ड	रोता हुआ बालक और भिक्षु	४०४
,,	आचार्य सगमस्थविर और दत्त शिष्य	४०८
निमित्त पिण्ड	भविष्यकथन से सगर्भा घोडी की हत्या	४११
चिकित्सा पिण्ड	दुर्बल व्याघ्र की चिकित्सा	४१८
कोप-पिण्ड	मासोपवासी धमरुचि भिक्षु	४१८
मान पिण्ड	इट्टगा-भोजनार्थी क्षुल्लक , श्वेतागुलि आदि पुरुष	४१९
विद्या-पिण्ड	विद्या द्वारा उपासक का वशीकरण	४२२
मन्त्र पिण्ड	पादलिप्ताचाय द्वारा मुरुड राजा की मत्र चिकित्सा	४२३
अन्तर्धान पिण्ड	चन्द्रगुप्त मौय के यहाँ क्षुल्लक-द्वय का अन्तर्धान-प्रयोग	४२३
योग पिण्ड	वज्रस्वामी के मातुल समिताचार्य और ५०० तापस	४२५
क्रीतकृत	शय्यातर मख	४२८
पामिच्च	तैल पामिच्च के कारण बहन का दासीत्व	४३०
परिवतन	कोद्रव कूर के बदले मे शालि कूर	४३२
आच्छेद्य	दुग्ध-आच्छेद्य से रुष्ट गोपाल	४३३
,,	सत्तुओ मे स्तेनाच्छेद्य घृत	४३६
अनि सृष्ट	बत्तीस मोदक वाला भिक्षु	४३७
आज्ञा-भग	राजा द्वारा प्रजा को दण्ड	५०३
ज्ञानादिलाभाथ प्रलम्ब-प्रतिसेवना	लाभाथ वाणिज्य-कर्म	५१०
प्रलम्ब निदशना	दो अजघातक म्लेच्छ	५१८
अनवस्था प्रसग का निवारण	कृषक के इक्षु-क्षेत्र की हानि	५१९
,,	राजा की कन्याओं का अन्त पुर	५२०
,,	भीलो द्वारा देवद्रोणी (गौ) की हत्या	५२१
प्रलम्ब-रस की आसक्ति	मद्यपान से मासाहार की आसक्ति	५२१
प्रलम्ब-भक्षण से आत्मविराधना	मूंग की कच्ची फली खाने से स्त्री की मृत्यु	५२२
अनाचीर्ण	अचित्त तिलो से भरी गाडी और भगवान् महावीर	५२३
,,	अचित्त जल से भरा ह्रद और भगवान् महावीर	५२३
यतना और अयतना	विष, शस्त्र, वेताल और औषध	५२५
परिणामक, अपरिणामक और अतिपरिणामक	चार मरुक और श्व-मास	५२६
अकल्प-सेवन की भूमिका	अशत भग्न गाडी की मरम्मत	५३१

अभिन्न प्रलम्ब से मयती को मोहोदय	महादेवी को ककटी से विकारोत्पत्ति	५३६
ममग का महत्त्व	दो शुक-बन्धु	५६१
दत्त वस्तु का पुनरादान	विक्रीत वृक्ष का पुनग्रहण	५८१
मयती पर कामण प्रयोग	विद्याभिमन्त्रित पुष्प	५८४
वस्त्र-विभूषा से हानि	रत्न कम्बल के कारण तस्करोपद्रव	५९४
चतुथ भाग		
स्त्रीयुक्त वसति मे चारित्रहानि	अग्नितप्त जतु	४
आज्ञा-भग पर गुरुतर दड	चन्द्रगुप्त मौय	१०
सुख-विज्ञप्य, सुख-माच्य आदि स्त्री	पाच सौ व्यन्तर देवी	१४
,,	रत्न देवता	१४
,,	अहन्नक	२१
,,	सिंही (शेरनी)	२२
,,	मानुषी की कुक्कुर-रति	२२
व्युद्ग्रह अपक्रान्त	बहुरत आदि निह्नव	१०१
अनाय देशो मे मुनि-विहार से आत्म-विराधना	पालक द्वारा स्कन्दक का यन्त्र पीलन	१२७
अन्ध-द्रविडादि देशो मे मुनि-विहार	मौय नरेश सप्रति	१२८
मात्रक की आवश्यकता	वारत्तग मत्रीपुत्र का सत्रागार	१५८
अस्वाध्याय मे स्वाध्याय से हानि	म्लेच्छाक्रमण पर नृप-घोषणा	२२९
पचविध अस्वाध्याय	पाँच राजपुरुष	२३०
आचार्यादि परिगृहीत गच्छ	पक्षी और पिजरा	२९२
परिकुचित आलोचना	अव्यक्त शल्य से अश्व-मृत्यु	३०४
तीन बार आलोचना	न्यायाधीश के सम्मुख बयान की तीन बार आवृत्ति	३०५
द्विमासादि परिकुचित (गन्यमगापन)	मत्स्य-भक्षी तापस	३०६
,,	सशल्य सैनिक	३०६
,,	दो मालाकार	३०६
,,	चार प्रकार के मेघ	३०७
विषम प्रतिसेवना की समसुद्धि	पाँच वणिको मे १५ गधो का बटवारा	३०९
अनवस्था-प्रसग का निवारण	धान्य-ग्रहण पर विजेता सेनापतियो को दण्ड	३११
जानबूझकर बहु प्रतिसेवना	राजा तम्बोली और सिपाही	३१२
अनेक अपराधो का एक दण्ड	रथकार की भार्या	३४२
अपरिकुचितता की दृष्टि से एक दण्ड	चोर	३४२
दुबलता की दृष्टि से एक दण्ड	बल और गाडी	३४३
आचाय की दृष्टि से एक दण्ड	मूल देव	३४३
गीताथ और अगीत परिणामक का प्रायश्चित्त	चतुर वणिक का शुल्क	३४४
अगीत अपरिणामक और अतिपरिणामको का प्रायश्चित्त	मूख ब्राह्मण का शुल्क	३४४
यतना और अयतना सम्बन्धी प्रायश्चित्त	निधि पाने वाले वणिक् और ब्राह्मण	३४५

सभी आलोचनाओ मे समान विनयोपचार	निधि-उत्खनन	३४६
मूलोत्तर गुणो की प्रति सेवना से अन्योन्यविनाश	ताल वृक्ष	३४७
मूल गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश	दृति और शकट	३४८
उत्तर गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश	एरण्ड-मण्डप	३४८
प्रायश्चित्त वहन करते हुए वैयावृत्त्य	पुरस्कृत राजसेवक	३५०
सानुग्रह और निरनुग्रह प्रायश्चित्त दान	अग्नि	३५४
”	दारक	३५४
प्रायश्चित्त-वृद्धि का रहस्य	जल घट, सरितादि	३५८
आलोचनार्ह की गम्भीरता	दन्तपुरवासी दन्तवणिक का दृढ मित्र	३६१
परिहार तपस्वी को आश्वासन	अगड, नदी आदि	३७३
ोष-शुद्धि न करने से चारित्र नाश	नाली मे तृण	३७४
”	मण्डप पर सर्षप	३७४
”	गाडी मे पाषाण	३७४
”	वस्त्र पर कज्जल-बिन्दु	३७४
शुद्ध तप और परिहार तप	छोटी-बडी गाडियाँ	३७४
शुद्ध आलोचक के प्रति आचार्य का सद्व्यवहार	व्याघ	३८०
”	गाय	३८१
”	भिक्षुणी	३८१
निषद्या का महत्त्व	श्मश्रुरहित राजा और नापित	३८२
अकल्पित चाहने वाले को उद्बोधन	भंडी पोत	४००

५

पंचमं परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गताना विशेषनाम्ना विभागशोऽनुक्रमणिका

	भागांक	पत्रांक
१		
तीर्थंकर		
अर	२	४६६
उसभ	३	१५३
कुंथु	२	४६६
महावीर वद्धमानसामी	३	१४२,३६३
महावीर	३	५२३
रिसभ	२	१३६
वद्धमाण	२	१३६,३६०
,,	३	१४२,१५२
		१६८,३६३
,,	४	४६
मल्ली	२	४६६
२		
गणधर		
गोयम	१	१०
,,	३	३६३,५२२
सुधम्म	३	१५३
,,	४	१०६
सोहम्म	२	३६०
३		
जैनाचार्य और जैन श्रमण		
अज्ज खउड	१	२२
,,	२	४६५
अज्ज महागिरी	२	३६१
,,	४	१२८
अज्ज मगू	२	१२५
,,	३	१५२
अज्जरक्खिय	३	१२३,२३६,

	भागांक	पत्रांक
,,	,,	४४१
अज्जरक्खिय पिया	१	१६४
अज्ज वइर	१	१६३
अज्ज सुहत्थी	२	३६१,३६२
,,	४	१२८
अण्णिय-पुत्त	२	२३१
अतिमुत्तकुमार	३	२३५
अवती सोमाल	२	६०
,,	३	३१२
आसाढ भूति	१	१६,२०,२१
उदाइ-मारक	१	२
,,	३	३७
,,	४	६८,७०
करकडू	२	२३१,४४५
,,	३	२७७
कविल	१	१२४
,,	३	२४३
कपिलाय	४	२००
कालगज्ज	३	५८,१३१
खदग	३	३१२
,,	४	१२७
गोविंदज्ज	३	२६०
गोविदवाचक	३	३७
,,	४	२६५
चडरुद्राचार्य	४	३७७
जसभद्द	२	३६०
जिणदास	४	४४३
जबू	२	३६०
	३	२३६,५२२

थूलभद्द	२	३६०,३६१
दत्त	३	४०८
दुब्बलिय	४	२५३
धम्मरुइ	३	४१८
नंदिशेन-शिष्य	२	२६८
पज्जुण्ण खमासमण	१	१
पसण्णचंद	४	६८
पभव	२	३६०
,,	३	२६१
,,	४	४५
पालित्त	३	४२३
पूसमित्त	४	२५३
बाहुबली	३	५८
भद्दबाहु	१	१५१
,,	२	१५,५७
,,	३	३३४
,,	४	११३,१२१ २४३,३५०
भसअ	२	४१७
मणग	३	२३५
माष-तुष	३	२५४
मेयज्ज ऋषि	३	२६१
रोहसीस	४	२००
लाटाचार्य	२	१३३
वइरसामी	१	२१,१६४
,,	३	२३५,४२८
विण्हु	२	४ ५
,,	१	१६२
विस्सभूती	२	८३
विसाहगणी	४	३९५
समिय	३	४२५
ससअ	२	४१७
संगमथेर	३	४०८
संभूत	२	३६०
सिद्धसेनाचार्य	१	८८
,,	२	४,२८१
	३	३३४
,,	४	७५,१२१, २४३
सीह	३	४०८
सीहगिरी	३	२३५
सुट्ठिय	३	२४३,४२३
सेज्जंभव	२	३६०
,,	३	२३५
शालिभद्र सूरी	३	४०८
श्रीचन्द्रसूरी	४	४४३

४
जैन श्रमणी

अज्ज चंदणा	४	३७६
पंडरज्जा	३	१५१
बम्ही	२	२६३
सुकुमालिया	२	४१७
सुंदरी	२	२६३

५
जैन निह्नव

आसमित्त	४	१०२
आसाढ	,,	,,
जमालि	,,	१०१
तीसगुत्त	,,	,,
पूसमित्त	,,	१०२
बोडिय	,,	,,
,,	४	८७
रोहगुत्त	४	१०२
गोट्ठामाहिल	३	१२३
,,	४	१०२

६
प्रतिमा

गोमीसदारुमय पडिमा	३	१४१
जिय-पडिमा	२	३६२
जियंत पडिमा	३	७६
नारायणादि पडिमा	४	५६
पिउ-पडिमा	४	१५८
रिसभादि कणग पडिमा	३	१४४
लिप्पय-पडिमा	१	१२८
लेप्पग-पडिमा	३	१४५

७
पडिमा (अभिग्रहविशेष)

मायपडिमा	१	१६
,,	२	१२८

८

अन्नकल्प

अगन्थिम	४	११५,११६
खज्जूर		,,
खीरपट्ट	,,	,,
घतमहु	,,	,,
नडुलचूरण	,,	,,
दतिक्क	,	,,
पिण्णाग्र	,,	,,
भेसज्ज	,,	,,
सत्तुग्र	,,	,,
समितिम	,,	,,
सुक्खोदण	,,	,,
सुक्खमडग	,,	,,

९

अन्यतीर्थिक देव

केसव	१	१०५
पसुवति	१	१०४
बभा	१	१०४
,,	३	१४२
महादेव	१	१४६,१४७
रुद्द	१	१४६,१४७
विण्हु	१	१०३,१०४
,,	३	१४२
सिव	१	१०

१०

अन्यतीर्थिक श्रमण और श्रमणी

आजीवक	२	११८,२०० ३३२
,,	३	४१४
कप्पडिय	२	२०७,४५६
,,	४	१०
कव्वडिय	३	१६८
कावालिय	२	३८
कावाल	४	१२५
,,	३	२५३
कापालिका	४	९०
गेरुअ	२	३३२
,,	३	४१४
गोव्वय	३	१९५
चरक	२	११८,२००
,,	३	२०७,३२१
,,	४	३६
चरिका	४	९०
तच्चन्निय	३	२५८,३२५
तच्चणगी	४	९०
तडिय	२	२०७,४५६
तावस	२	३,३३२
,,	३	४१४
तिदडी परिव्वायग	१	१२
दिसापोक्खय	३	१९५
परिव्वाय, परिव्राजक	२	११८,२००
,,	३	४१४
परिव्राजिका	४	९०
पचगव्वासणिय	३	१९५
पचग्गितावय	३	१९५
पडरग	२	११६
पडर भिक्खु	३	४१४
रत्तपड	१	११३,१२१
,,	२	११६
,,	३	४१४,४२२
रत्तपडा	१	१२३
वणवासी	३	४१४
भगवी	४	९०
वृद्ध श्रावक	२	११८
सक्क-शाक्य	२	३,११८, २००,३३२
,,	३	४१४
सरक्ख	३	२५३
समण	२	३३२
हडड सरक्ख	२	२०७

११

परिव्राजक

अक्खपाद	४	८८

अम्मड	१	२०
उडक रिसी	३	३४०

१२
दर्शन और दार्शनिक

आजीविग	१	१५
ईसरमत	३	१९५
उलूग	१	१५
कपिलमत	३	१९५
कविल	१	१५
कावाल	४	१२५
कावालिय	३	५८५
चरग	१	२
"	४	१२५
जइग-मासग	१	१७
जनतत्र	३	३९०
तच्चन्निय	३	२४६,२५३
तावस	१	१५
"	४	१२५
परिव्वायग	१	१७
पडरग	३	१२३
वोडित	१	१५
भिच्छुग	१	११३
भिक्खू	३	५८५
"	४	१२५
रत्तपड	१	१७,११३
वेद	१	१५
सक्क	१	१५
"	३	१९५
सरक्ख	४	१२५
"	३	२५३
सुतिवादी	३	५८५
सेयवड	१	७८
सेयभिक्खु	४	८७
"	३	४२२
शाक्यमत	३	१९५
हड्डसरक्ख	३	५८५

१३
देव और देवी

अच्चुय देव	३	१४१
इद	१	२४
कबल-सबल	३	३६६
कामदेव	१	६
"	३	१४४
खेत्तदेवया	३	४०८
गोरी	४	१५
गधारी	४	१५
चद	३	१४४,२०८
जक्ख	१	२१
"	३	१४१
जोइसिय	४	५
डागिणी	२	४१
णाइलदेव	३	१४१
णाग-कुमार	३	१४४,३६६
देविद	१	२०
पतदेवया	१	८
पिसाय	३	१८६
पुण्णभद्द	३	२२४
पुरदर	२	१३०
पूयणा	३	४०८
बहस्सति	३	१४४
भवणवासी	२	१२५
"	४	५
भूत	१	६
माणिभद्द	३	२२४
रक्खस	३	१८६
रयणदेवता	४	१४
वणदेवता	४	११८
वाणमतर	१	८,९
"	४	५
वाणमतरी	४	१३
विज्जुमाली	३	१४०
वेमाणिय	४	५
शक्र	१	११३
सम्मदिट्ठी देवया	१	८
"	४	११८
सामाणिग	१	२४
सुदाढ	३	३६६

हास पहासा	३	१४०
हिरिमिक्क (चाण्डाल-यक्ष)	४	२३८

१४
चक्कवर्ती बलदेव और वासुदेव

अर	२	४६६
कुंथु	२	४६६
केसव	१	५६
,,	२	४६६
बलदेव	३	३८३
ब्रह्मदत्त	२	२१
भरह	२	४४६,४६५
,,	४	६८
राम	१	१०४
वासुदेव	१	४३
,,	२	४१६,४१७
,,	३	३८३
संती	२	४६६

१५
राजा, राजकुमार और अमात्य

अजुन	१	४३
अणगकुमार	३	२६८
अणघ राजा	३	२६६
अभग्गसेन	४	१५८
अभयकुमार	१	६,१०,१७
,,	२	२३१
,,	४	१०६
असोग	२	३६१
असोगसिरी	४	१२६
उदायन	३	१४६,५२३
कुणाल	२	३६१
,,	४	१२८
कौन्तेय	१	५४
वुड्डगकुमार	२	२३१
,,	४	१२७
खदग	४	१२७,१२८
गद्दभिल्ल	३	५८
गधप्रिय कुमार	२	२८
गधार	१	१०५
पज्जोत	३	१४६,१४७
चदगुत्त	२	३६१,३६२
,,	३	४२४
,,	४	१२६
चाणक्य	२	३३
,,	३	४२४
जउण राया	३	२६६
जरकुमार	२	४१६,४१७
जराकुमार	२	२३१
जितारि	३	२६८
ज्यिसत्त	२	४१७
,,	३	१५०
,,	४	२२०
डडांग	४	१२७
दडति	३	३१०
दतवक्क	२	१६६
,,	४	३६१
धम्मसुत	१	१०५
पडु	१	१०५
पालग	१	१०
पालय	३	५६
बलभानु	३	१३१
बलमित्त	३	१३१
बिंदुसार	२	३६१,३६२
,,	४	१२६
भसअ	२	४१७
भाणुमित्त	३	१३१
भीम	१	४३,१०५
मयूरक	३	३८८
महिडिढत	३	५२०
मुरुड	३	४२३
मूलदेव	४	३४३
,,	१	१०४
मेच्छ (म्लेच्छ)	४	२२६
वसुदेव	२	२३१
वारत्तग	४	१५८
ससअ	२	४१७
सतागित	४	४६
सपनि	४	१२६
सब	१	१०

सातवाहन	४	१६८
,,	३	१३१
साहि	३	५६
सुग्गीव	१	१०४
सुबुद्धी	३	१५०
सणिए	१	६,२० १७
हणुमत	१	१०४,१०५
हेमकुमार	३	२४३
हेमकूड	३	२४३

१६
राज्याधिकारी

अमच्च	२	४४६
ईश्वर	२	४५०
कुराया	२	४६७
कोडुंबिय	४	१५
खत्तिय	२	४६७
गामउड	,,	२६७
गामभोतिय	२	४५०
जुवराया	४	२८१
डंडिय	४	१५
तलवर	२	४५०
पुरोहिय	२	४४६
माडंबी	२	४५०
मुद्धाभिसित्त	२	४४६
रट्ठउड	२	२६७
राया	२	४६७
सत्थवाह	२	४४६
सेट्ठी	२	४४६,४५०
सेणावई	२	४४६

१७
राज्याई

खग्ग	२	२६८
छत्त	,,	,,
चामर	,,	,,
पाउया	,,	,,
रायहत्थी	,	,,

१८
राजसेवक

असिग्गह	२	४६६
अब्भगावय	२	४६९
उव्वट्टावय	,,	,,
कंचुइज्ज	,,	,,
कोतग्गह	,,	,,
चामरग्गह	,,	,,
छत्तग्गह	,,	,,
डंडारक्खिय	,,	,,
दीवियग्गह	,,	,,
दोवारिय	,,	,,
धणुग्गह	,,	,,
परियट्टग्गह	,,	,,
मज्जावय	,,	,,
मंडावय	,,	,,
वरिसधर	,,	,,
संवाहावय	,	,,
हडुग्गप्पह	,,	,,

१९
गणबंध

मल्ल	३	१९५
सारस्सय	,,	,,
कुयसभ	,,	,,

२०
बल (सेना)

आसबल	२	१५५
पाइक्कबल	,,	,,
रहबल	,,	,,
हत्थिबल	,,	,,

२१
अभिषेक-राजधानी

कंपिल्ल	२	४६६
कोसंबी	,,	,,
चंपा	,,	,,
महुरा	,,	,,
मिहिला	,,	,,
रायगिह	,,	,,
वाणारसी	,,	,,
साएग	,,	,,
सावत्थी	,,	,,
हत्थिणपुर	,,	,,

२२

जनपद

अवनी	१	१३
अध	२	३६२
,,	४	१२५
आभीर	३	४२५
उत्तरावह (उत्तरापथ)	१	२१,५२,६७,८७,१५४
,,	२	९५
,,	३	७९
उत्तरापथ	४	१२७
कच्छ	१	१३३
काय	२	३९९
कुडुक्क	३	१९१
कुणाल	४	१२५
कुणाला	३	३६८
,,	४	१२६
कुरुक्षेत्र	२	१०८,११०,
कीरडुक	३	१९१
कोणाला	३	३६८
कोसल	१	५१,७४
कोकण	१	५२, १०० १०१,१४५
गधार	३	१४४
गोल्लय	३	१९१
चिलाइय	२	४७०
चीण	२	३९८,३९९
जवण	४	१२५
टक्क	२	७९
तोमलि	२	३९९
,,	३	८१
,,	४	४३,६१
थूणा	४	१२५
दक्खिणावह	३	३९,१११
दक्खिणापह	२	४१५
दमिल	४	१२५
,,	२	३६२
दविड	२	३८५
पारस	३	५९
पुव्वदेस		१११
,,	२	९४
बब्बर	२	४७०
ब्रह्मद्वीप	३	४२५
मयल (मलय)	२	३९९
मरहट्ट	२	१३६
मरहट्ठ	१	५२
,,	२	११,३७१
,,	३	१३१,१४६
,,	४	११५,१९५
मरु	३	१३१,१४६
,,	४	१०९
मगध	३	५२३
मगह	३	१९३
,,	४	१०५
मालव	२	७९,१०८
,,	३	१९३
रिणकठ	२	१५०
रोम	२	३९९
लाड, (लाट)	२	९४,२२३
,,	३	३९,५९९
,,	४	२२६
वच्छ	४	४५
सिंधु	१	१३३
,,	४	९०
,,	२	७९,१५०
,,	४	९०
सैंधव	१	१४५
,,	३	१९१
सग	४	१२५
सुरट्ठ (सोरट्ठ)	१	५८,१३३
,,	२	३५७,३९२
,,	३	३९
हिंदुदेस	३	५९

२३

ग्राम, नगर, नगरी आदि

अक्कथली	३	१९२

अयोज्झा	३	१९३
अवती	१	१३,१०२
अघपुर	३	२६९
आणदपुर	२	३२८,[illegible]७
,,	३	१५८,१९२, ३४९
आमलकप्पा	४	१०१
उज्जेणी	१	१०२,१०४
,,	३	५९,१३१, १४५
,,	४	२००
उत्तर महुरा	२	२३१,२६९
उसभपुर	४	१०३
कचणपुर	३	३०२
कचिपुरी	२	९५
कपिल्लपुर	२	२१,४६६
कुसुमपुर (पाडलिपुत्त)	२	९५
कु भकारकड	३	३१२
कु भाकारकड	४	१२७
कुणाला	३	३६८
कोट्टग (पुलिदपल्ली)	३	५२१
कोल्लइर	३	४०८
कोसला	३	७९
कोसम्बाहार	२	३६१
कोसबी	२	४६६
,,	४	४६,१२५, १२८
खितिपतिट्ठिय	३	१५०
,,	४	२२९
गिरफुल्लिगा	३	४१९
चपा णयरी	१	२०
,,	२	४६६
,,	४	१२७,३७५
तुरुमिणिणगरी	२	४१७
तेयालग पट्टण	१	६९
दसपुर	३	१४७,४४१
,,	४	१०३
दतपुर	२	१६६
,,	४	३६१
दारवती	२	४१६
पतिट्ठाण	३	१३१
पाडलिपुत्त	१	१०४
,,	२	९५
,,	४	१२८,१२९
पुलिदपल्ली	३	५२०
पोड्डवद्धन	४	१४४
बारवइ	१	६९
बीतिभय णगर	३	१४४,५२३
भरुकच्छ	२	४१५,४३९
भिल्लपल्ली	४	१५१
भिल्लमाल	३	१११
मथुरा	२	१८५
,,	३	२६६
,,	४	२६५
मधुरा	३	१५२,३६६
महुरा	१	८
,,	२	२५७,४६६
माहण कु डग्गाम	३	२३[illegible]
मिहिला	२	४६६
,,	४	१०२,१०३
मेहुणपल्ली	२	२३
रहवीरपुर	४	१०२,१०३
रायगिह	१	९,२०
,	२	४६६
,,	४	४३,१०१, १०९
लका	१	१०४,१०५
वाणारसी	२	४१७,४६६
वेण्णातड णगर	४	४२५
सविस्सयपुर	३	५०३
साएग्र (साकेत)	२	४६६
,	३	१९३
सावत्थी	२	४६६
,,	४	१०३
सेग्रविग्रा	४	१०३
सोपारय	४	१४
हत्थिणापुर	२	४६६
हेमपुरिस नगर	३	२४३

२४

उद्यान

अग्गुज्जाण	४	१२७
असोगवणिया	३	१४०
गुणसिल	४	१०१
जिण्णुज्जाण	१	१०२
तिंदुग	४	१०१
दीवग	४	१०२

२५

अरण्य

कोसबारण्ण	२	४१६
इडगारण्ण	४	१२८

२६

कुल

आभीर	१	११
इब्भ (महाकुल)	२	४३३
गाहावइ	२	४०८
दिवाभोजि	१	१५४
भट्टग	२	२०६
भातिय	२	३६१
राज	४	३०५
वणिय	३	४१८
सामंत	२	३६१
सावग	२	४३५
सेज्जातर	२	२४३,४३५
सेट्ठि	१	९

२७

वंश

मोरपोसग (चन्द्रगुप्तवंश)	४	१०
मोरिय	२	३६१
सग	३	५९

२८

जाति और शिल्पी

आहीर	१	८,१७
कच्छुय	२	४६८
कलाद	३	२६९
कल्लाल	४	१३२
कम्मकार	२	२८०
कव्वडिय	३	१९८
कुक्कुडपोसग	३	२७१
कुंभकार	१	६०,१३९
"	२	३,२४५
"	३	१६६
कोलिग	३	२७०
कोसेज्जग	३	२७१
खट्टिक	२	९
"	३	२७१
खत्तिय	१	१०४
"	२	४६७
"	४	१३४
गोवाल	३	१६६
चम्मकार	३	२७१
"	४	१३२
चारण	३	१६३
चेड	३	१६३
चंडाल	३	५२७
जल्ल	२	४६८
डोंब	२	२४३,२८४
"	३	२७०
णट्ट	२	४६८
णड	३	१६३,१९३,२७१
ण्हाविय	१	१२
"	३	२७१
"	२	२४३
णिल्लेव	२	२४३
णेक्कार	३	२७०
ततिवरत्त	३	२७६
तंतुकार	२	३
"	३	१६६
तालायर	३	१६३
तुन्नकार	३	२७२
धरणिपुत्र	२	३५

तेरिमा	२	२४३
धिज्जाति	१	१३,११३, १६२,१६३
धीयार (धीचार)	१	१८
,,	२	८१
धीर	२	२४६
पदकार	३	२७१
परीषह	३	२७१
पयकर	२	२४३
पवग	२	४६८
पाण	२	२४३
,,	३	२७०
,,	४	२३७
पारसीय	२	३९६
पुरोहित	१	१६४
,,	२	२६७,४४८
,,	४	१२७
पुलिन्द	१	११,१४४
,,	३	२१९,५२१
,,	४	४९
पोसग	३	२७१
बभण	१	१०,११
,,	३	४१३
बोहिग	१	१००
भड	३	१६३
भिल्ल	१	१४४
भोइग	२	४५४
मच्छिक	३	२७१
मणियार	२	५
मयूरपोसग	३	२७१
मरुअ	१	१०५
,,	२	११८,२०८
मल्ल	२	४६८
महायण (महाजन)	३	२७१
मायग, (मातग)	१	९,२१
,,	३	५२७
मालाकार	२	९
,,	४	३६०
मालिय	४	१०
माहन (ब्राह्मण)	३	२०१
,,	२	११९
मुट्ठिय	२	४६८
मेय	३	१९८,२७०
मोरत्तिय	२	२४३
रजक	१	१०४
रयग	३	२७१
रहकार	२	३,३५
,,	३	१६९
,,	४	३४२
लख	३	२७१
लाउलिग	३	१६३
लासग	२	४६८
लोढया	३	१९५
लोहार (लोहकार)	१	८९,१३९
,,	२	३,९,२८०
,,	३	१६९,२७०
वणिय	१	१३९,१५३
,,	३	१४२,२६९, ५१०
वरुड	३	२७०
वरुड	४	१३२
वागुरिय	३	२७१
वाणियग	३	५८५
वालजुय	३	१६३
वाह (व्याध)	३	२७१
विप्प	१	१०४
वेलबग	२	४६८
सबर	३	८७
सत्थवाह	२	२६७,४६८
,,	३	२८४
सपर	३	२७१
सुवण्णगार	१	५०
,,	३	२६८,२६९
,,	४	१२
सूद्र	२	११९
सोगरिग (शौकरिक)	३	२७१
सोणहिय	३	१९८

सोवाग	३	५२७
सोहक	२	२८३
सोघग	३	२७१
हरिएस	१	१०
,,	३	२७०
हेट्ठुण्हावित	२	२४३

२६

पशु-पक्षि आदि-पोषक

अय पोसय	२	४६८
आस ,,	,,	४६८
इत्थी ,,	३	२७१
कुक्कुड ,,	२	४६८
चीरल्ल ,,	,,	,,
तित्तिर ,	,,	,,
पोय ,,	,,	,,
मयूर ,,	,	,,
महिस ,,	,,	,,
मिग ,,	,,	,,
मेढ ,,	,,	,,
मोर ,	२	२४३
लावय ,	२	४६८
वग्घ ,,	,,	,,
वट्टय ,,	,,	,,
वसह ,,	,,	,,
सीह ,,	,,	,,
सुण्ह ,,	,,	,,
सुय ,,	,,	,,
सूयर ,,	,,	,,
हत्थि ,,	,,	,,
हस ,,	,,	,,

३०

दमक, मेठ और आरोह

आस दमग	२	४६८
हत्थि-दमग	,,	,,
आस-मिठ	,,	४६६
हत्थि-मिठ	,,	,,
आस-रोह	,,	,,
हत्थि-रोह	,,	,,

३१

सार्थवाह

दढमित्त	४	३६१
धरगमित्त	४	३६१
माकदियदारग	४	२१०
सागरदत्त	३	८७

३२

सामान्य व्यक्ति

इ ददत्त	२	१५,१४७, २४५,३३४
,,	२	४२०
इ दसम्म	२	१७६
उसभदत	३	२३६
जण्णादत्त	१	३१
देवदत्त	१	२,३१
,,	४	३०५
पेढाल	३	२७७
विण्हुदत्त	१	३१
सत्यकि	३	२३६
सोमदेव	३	२३६
सोमसम्मा	२	१५
सोमिल	३	२३६

३३

नारी

अच्चकारियभट्टा	३	१४९
असगडा	१	११
उमा	१	१०४
कविला	१	१०
किण्हगुलिया	३	१४२
खडपाणा	१	१०४
जयती	४	४६
जेट्ठा	३	२७७
तिसला	१	२७
देवती	१	१०३
धणसिरी	४	३६१
धारिणी	३	१५०
पउमसिरी	४	३६१

पउमावती	२	२३१
,,	३	२७७
पभावती	३	१४२
पुरदरजसा	३	३१२
,,	४	१२७
भट्टा	३	१५०
भद्दा	३	१५०
भानुसिरी	३	१३१
मृगावती	३	२७६
मियावती	४	३७६
वीसत्था	३	२६८
सच्चवती	४	३६१
सीता	१	१०४
सुकुमालिया	२	४१७,४१८
सुभद्दा	४	३७५
सुलसा	१	१६,२०
सुवण्णगुलिया	३	१४५
हेमसभवा	३	२४३

३४

दासी

आलवी	२	४७०
ईसणी	,,	,,
खुज्जा	,,	,,
थारुगिणी	,,	,,
पडभी	,,	,,
परिसणी	,,	,,
पल्हवी	२	४७०
पाउसी	,,	,,
पुलिन्दी	,,	,,
बब्बरी	,,	,,
लउसी	,,	,,
लासी	,,	,,
वामणी	,,	,,
सबरी	,,	,,
सिंहली	,,	,,

३५

उत्सव

अगड	२	४४३
अट्टाहिमहिम	३	१४१
आगर	२	४४३
इट्टगा	३	४१६
इद	२	२३६,४४३
,,	३	१२३ २४३
,,	४	२२६
कौमुदी	४	३०६
खद	२	४४३
,,	४	२२६
गिरि	२	४४३
चेइय	,,	,,
जक्ख	,,	,,
,,	४	२२६
णदी	२	४४३
णाग	,,	,,
तडाग	,,	,,
तलागजण्णग	२	१४३
थूभ	,,	४४३
दरी	२	४४३
दह	२	४४३
देवउलजण्णग	२	१४३
भूत	,,	४४३
,,	४	२२६
मुगु द	२	४४३
रुक्ख	,,	,,
रुद्द	,	,,
लेपग	३	१४५
विवाह	१	१७
,,	२	३६६
सक्क	२	२४१
सर	२	४४३
सागर	,,	,,

३६

यात्रा

गिरिजत्ता	२	४६२
णइ ,,	,,	,,
भडीर ,,	३	३६६
रह ,,	२	१३७,३३४

३७
पूजा

ण्हवण—	२	१३७,३२८
समण—	३	१३१
सुय —	४	२ ६

३८
णाणक (मुद्रा)

उत्तरापहक	२	६५
कवड्डग	३	१११
कागणी	,,	,,
कुसुमपुरग	२	६५
केवडिए	३	१११
केतरात	,,	,,
चम्मलात	,,	,,
णेलग्र (रूपक)	२	६५
तव	३	१११
दक्खिणापहग	२	६५
दीविच्चिक	,,	,,
दीणार (सुवण्ण)	३	१११,३८८
पाडलीपुत्तग	२	६५
पीय (सुवण्ण)	३	१११
रुप्प	,,	,,
साहरक (रूपक)	२	६५

३९
पात्र

अय	३	१७१
कणग	,,	,,
कट्टोरग	१	५१
करोडग	,,	,,
कस	३	१७१
वम्म	,,	,,
वेल	,,	,,
जायरूव	,,	,,
तउय	,,	,,
तव	,,	,,
दन्त	,,	,,
मकुय	१	५१
रुप्प	३	१७१
वइर	,,	,,
सिंग	३	१७१
सिप्पी	१	५१
सुवण्ण	३	१७१

४०
पानक

उदग	३	२८७
कजिग	२	२५३
खीर	३	२८७
खड	२	१२३
गुल	२	,,
चिचा	२	,,
तक्क	३	२८७
द्राक्षापानक	२	२२३
दालिम	२	१२३
परिसित्तग	२	२५३
मज्ज	३	२८७
मुद्दिता	२	१२३
सक्करा	२	,,

४१
विशिष्ट भोज्य पदार्थ

इड्ढ	३	४१६
खड	२	२८२
घयपुण्ण	२	२८०
मण्डग	२	२८२
मत्तागल	३	४१६
हविपूय	२	२८०

४२
वस्त्र

असुय	२	३६६
आईग	२	३६६
आभरण विचित्त	२	३६६
उट्टिय	२	५७
उण्णिय	२	,,
कणग-कत	२	३६६
कणग-खचिय	,,	,,
कणग चित्त	,,	,,
कप्पामिय	,,	,,
किट्ट	,,	,,
कुत	,,	,,

कोयर	२	३९८
कोसियार	,,	५७
कबल	,,	३९८
खोम्म	,,	३९९
चीण	,,	३९९
चीणसुय	,,	,,
जगिय	,	५६
तिरीडपत्त	,,	५६
दुगुल्ल	,,	३९९
पट्ट	,,	५७
पोत्त	,,	५६
पोड	,,	३९९
भगिय	,,	५६
मियलोमिय	,,	५७
वाग	,,	५७
सणय	,,	५६

४३

विद्या

अभियोग	१	१२१
अजण	,,	,,
अतद्धाण	३	४२३
आभोगिणी	२	४६३
इद जाल	३	१९१,१९३
उण्णामिणी	१	९
ऊसोवणी	१	१२१
ओणामिणी	१	९
गहूही	३	५९
तालुग्घाडिणी	१	१२१
थभणी	१	१६४
पडिसाहरण	३	४२२
मागसी	१	१३९
मातग	४	१५

४४

शाला

इधण-	माला	४	६१
उज्जाण	,,	२	४३१
उत्तर	,,	२	४४५
उवक्खडण	,,	२	४५५
कम्मत	,,	,,	४३३
कम्म	,,	४	६२
कुभकार	,,	२	२५५
,,	,,	३	१६०
,,	,	४	६१
कुविय	,	२	४३२
कोट्ठागार	,	२	४५५
खीर	,,	२	४५५,४५६
गय	,,	२	४४६
गज	,	२	४५५,४५६
गुज्झ	,,	२	४४६
गुलजत	,,	४	१५१
गो	,,	२	४३३
गोण	,,	२	,,
घघ	,,	२	२१०
,,	,,	४	२४०
छुस	,,	२	४३२
जत	,,	४	१५१
जाण	,,	२	४३२
जुग्ग	,,	२	,,
जोति	,,	४	६१
तण	,,	२	४३३
तुस	,,	२	४३२
निज्जाण	,,	२	४३१
पणिय	,,	२	४३२,४३४
पयण	,,	४	६२
परिया	,,	२	४३२
पाण	,,	२	४५५
पोसह	,,	३	५५८
भिन्न	,,	२	४३२
भडागार	,,	२	४५५,४५६
भडसाला	,,	४	६१,६२
महाणस	,,	२	४५५,४५६
मत	,,	२	४४६
मेहुण	,,	,,	,,
रहस्स	,,	,,	,,
रुक्ख	,,	१	१०३

लेह ,,	१	१५
वग्घरण ,,	४	६१,६२
वेज्ज ,,	१	८४
सुण्ण ,,	२	४३२
हय ,,	२	४४६

४५

मास

आसाढ	२	४७,३३३
,,	३	१२१,१२६ १३२,१६२
,,	४	२२६,२७५
आसोय	३	१२८
,,	४	२२६
कत्तिय	१	१३८
,,	३	६२,१२८
,,	४	२२६,२३०
चेत्त	४	२२६
जेट्ठ	२	४७,३३३
पोस	३	१२८
भद्दवय	३	१३०,१३१ १३२,१६३
मग्गसिर	१	१३८
,,	३	१२६,१३२
,,	४	२३०
वैसाह	२	३३४
सावण	३	१२१,१२६ १३२
,,	४	२२६,२७५

४६

पवत

अजणग	१	२७
इ दपय	३	१३३
कु डल	१	२७
कैलास	३	४१६
गयग्ग	३	१३३
गोरगिरि	१	१०
चुल्लि हिमवन्त	३	१४१
दहिमुख	१	२७
मदर, मेरु	१	२७,३२
,, ,	३	१५१,४१६
मालवग	२	१७५
रुयग	१	२७
विमोगल्ल	३	३१२
वेयड्ढ	१	२७
,,	३	१४४
हिमवन्त	१	१२

४७

द्वीप और क्षेत्र

अड्ढ भरह	२	४१७
अरुणवर दीव	१	३३
उत्तर कुरु	३	२३६,३११
एरवत	३	३०५
जबुद्दीव	१	२७,३१,३३
,,	३	१४०
णदीसर दीव	१	१६
,,	२	६५
दीविच्चिक दीव	३	१४१
देवकुरु	३	२३६,३११
पचसेल दीव	३	१४०
धाततिसड	१	३१
बभद्दीव	३	४२५
भरह	१	१०५
,,	३	३०५
,,	४	६८
महाविदेह	२	१३६
हिमवय	१	१०५
हेमवय	१	१०५

४८

समुद्र

अरुणोदय समुद्द	१	३३
लवण-समुद्द	,,	३१,१६२

४९

नदी

उल्लुगा	४	१०३
एरवती	३	३६८,३७१
एराबती	३	३६४
कण्हवेणा	३	४२८
गगा	१	११,१०४

,,	३	१६५,३६४
जउणा	३	३६४
मही	३	३६४
वेण्णा	३	४२५
मरऊ	३	३६४
सिंधु	४	३८

५०
उदक

नालोदग	४	४३
नावोदग	४	४३
ग़ारोदग (मत्तधारा)	४	३८

५१
लौकिक तीर्थ

अवक्खड	३	१६५
केयार	,,	,,
गगा	,,	,,
पहास	,,	,,
प्रयाग	,,	,,
पुक्खर	३	१४७
सिरिमाय (ल)	,,	१६५

५२
जल सतरण-साधन

उडुप	१	७४
णावा	१	७४
तु ब	१	७४
दति	१	७४

५३
माला

कट्ठ	२	३२६
कवडग	,	,,
गु जा	,,	,,
तगरपत्त	,,	,,
दत	,,	,,
पत्त	,,	,,
पिच्छ	,,	,,
ुत्तजीवग	,,	,
्फ	,,	,,
ोडिय	,,	,,
फल	,,	,,
बीय	,,	,,
भिंड	,,	,,
मयग	,,	,,
मु ज	,,	,,
मोरग	,,	,,
रुद्दक्ख	,,	,,
वत	,,	,,
सख	,,	,,
सिंग	,,	,,
हड्ड	,,	,,
हरिय	,,	,,

५४
आभरण

अद्धहार	२	३६८
उलवा	,,	,,
एगावली	,,	,,
कडग	,,	,,
कडीसुत्तय	,,	,,
कणगावली	,,	,,
कु डल	,,	,,
केयूर	,,	,,
गलोलइया	,,	,,
तिसरिय	,,	,,
तुडिय	,,	,,
पट्ट	,,	,,
पलब	,,	,,
मउड, मुकुट	,,	,,
मुत्तावली	,,	,,
रयणावली	,,	,,
वालभा	,,	,,
सुवण्ण सु	,,	,,
हार	,,	,,

५५
गन्धद्रव्य

अगरु	२	४६७
कु कुम	,,	,,
कप्पूर	,,	,,

चदण	,	,,
तुरुक्ख	,,	,,
मिगड	,,	,,

५६
धान्य

अणाय	२	१०६
अतसि	,,	,,
अलिसिंद	,,	,,
कल	,,	,,
,,	३	३२७
,,	४	१५३
कलमसालि	२	२३३
कलाय	३	३२७
कुलत्थ	२	१०६
कंगू	२	१०६,२३७
कोद्दव	२	१०६,२१३
,,	३	५
गोधूम	२	१०६,२३७
चणाय	२	२३७,२४१
,,	३	३२७
,,	४	३३,१५३
चवलग	२	२३७
जव	२	१०६
णिप्फाव	२	१०६
,,	४	३३
तदुल	२	२३६
तिल	२	१०६,२३७
तुवरी	,,	१०६
त्रिपुड	,,	,,
धाणग	,,	,,
पलाल	,,	,,
मसूर	,,	,,
मास	,,	१०६,२३७ २४१
मुग्ग	२	१०६,२३७ २४१
रालक	२	१०६
वल्ल	२	२४१
बीहि	२	१०६
सट्टिया	,,	,,
सरिसव	४	१५३
सालि	२	१०६,२३७
हिरिमथ	२	१०६

५७
वाद्य

कच्छभी	४	२०१
कसताल	,,	,,
कसालग	,,	,,
काहला	,,	,,
खर मुही	,,	,,
गु जापगव	,,	,,
गोलुई	४	२००
गोहिय	४	२०१
झल्लरी	४	२००
झोडय	,,	,,
डमरुग	,,	,,
ढकुण	४	२००
णालिया	१	८४
ताल	४	२०१
तुण	४	२००
तु बवीणा	४	२००
दु दुभी	४	२०१
नदी	४	२००
पएस	,,	,,
पडह	४	२००
परिलिस	४	२०१
पिरिपिरिता	४	२०१
बव्बीसग	४	२००
भल	४	२०१
भभा	४	२०१
भेरी	४	२००
मकरिय	४	२०१
मड्डुय	४	२००
महई	४	२०१
मुइ ग	४	२००
मुरज	४	२०१
मुरली	१	८४

मुरव	४	२००
लित्तिय	४	२०१
वल्लरी	४	२००
वलिया	४	२०१
विवची	४	२००
वीणा	४	२००
वेणु	४	२०१
वेवा	,,	,,
वस	४	२०१
सणालि	४	२०१
सदुय	४	२००
सग्व	४	२०१
सखिगा	४	२०१
श्रृंग	३	२०१

५८

आकर

अय	२	३२६
त	,,	,,
न	,	,,
रयण	,,	,,
वइर	,,	,,
सीसग	,,	,,
सुवण्ण	,,	,,
हिरण्ण	,,	,,

५६

लौह

अय	२	३६७
घटा	१	६
तउय	२	२६७
तब	,,	,,
रुप्प	,,	,,
सीसग	,,	,,
सुवण्ण	,	,,

६०

मणि और रत्न

इन्द्रनील	३	३८६
चद्रकान्त	२	१०६
पद्मराग	३	३८६
सूयमणी	३	३६८
सूरकान्त	२	१०६
स्फटिक	२	१०६
,,	३	३८६

६१

धूर्त

एलासाढ	१	१०२
खडपाणा	,,	,,
मूलदेव	,	,
ससग	,,	,,

६२

आपण

कल्लालावण	४	२२८
कुत्तियावण	४	१५१ २-२
मज्जावण	२	१३६
रसावण	२	१३६

६३

भाषा

अट्ठारसदेसी भासा	३	२५२
अद्धमागह	,	,,
पायय	,	,,

६४

पुरोहित

पालग	४	१२७

६५

सुवण्णगार

अणगसेण	३	१४०
,,	४	१२

६६

शौकरिक

काल	१	१०

६७

वैद्य

धन्नंतरी	३	५१२
,,	४	२४०

६८					
मगल			पडह	,,	,,
चामर	३	१०१	पुण्णकलस	१	८८
छत्त	,,	,,	,,	३	१०१
णदावत्त	१	८८	भिगार	३	१०१
णदीमुख	[illegible]	१०१	सख	३	१०१
दवि	,,	,,	सीहासण		,,

६

सुभाषित—सुधासार

ज जम्मि होइ काले, आयरियव्व स कालमायारो।
वतिरित्तो हु अकालो, लहुगा उ अकालकारिस्स ॥
—गाथा, ६

पडिसेवणा तु भावो, सो पुण कुसलो व होज्ज अकुसलो वा।
कुसलेण होति कप्पो, अकुसलेण पडिसेवणा दप्पो ॥
—गाथा, ७४

ण य सव्वो वि पमत्तो, आवज्जति तध वि सो भवे वधओ।
जह अप्पमादसहिओ, आवण्णो वी अवहओ उ ॥
—गाथा, ९२

पचसमितस्स मुणिणो, आसज्ज विराहणा जदि हवेज्जा।
रीयतस्स गुणवओ, सुव्वत्तमबन्धओ सो उ ॥
—गाथा, १०३

रागद्दोसाणुगता तु, दप्पिया कप्पिया तु तदभावा।
आराधतो तु कप्पे, विराधतो होति दप्पेण ॥
—गाथा, ३६३

काम सव्वपदेसु, विउस्सग्गऽववातधम्मता जुत्ता।
मोत्तु मेहुण-धम्म, ण विणा सो रागदोसेहि ॥
—गाथा, ३६४

ससारगडडपडितो, णाणादवलबितु समारुहति।
मोक्खतड जध पुरिसो, वल्लिवितारोण विसमा उ ॥
—गाथा, ४६५

णच्चुप्पतित दुक्ख, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए।
अद्दीणो अव्वहितो, त दुक्खऽहियासए सम्म ॥
—गाथा, १५०३

सोऊण च गिलाणि, पथे गामे य भिक्खचरियाए।
जति तुरित णागच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥
—गाथा, १७४६

रूवस्सेव परिसय, करेहि ण हु कोद्दवो भवे साली।
आमललिय वराओ, चाएति न गद्दभो काउ ॥
—गाथा, २६२६

ज अज्जिय चरित्त, देसूणाए वि पुव्वकोडीए।
त पि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेण ॥
—गाथा, २७९३

मपत्ती व विवत्ती व, होज्ज कज्जेमु ारग पप्प।
श्रणुपायश्रो विवत्ती, मपत्ती कालुवाएहि ॥
—गाथा, ४८०८

—भाष्यकार, श्राचार्य सिद्धसेन क्षमाश्रम

गाए पि काले श्रहिज्जमाए गिज्जराहेऊ भवति, श्रकाले पुए उवघायकर कम्मबन्धाय भवति, तम्हा काले पढियव्व
—भाग १, पृ० ७

मोक्खत्थ आहारविहाराइमु श्रहिगारो कीरति ।
—भाग १ पृ०७

कुलगरामघसमितीसु मामायारी परूवरोसु य ।
मुत्तधराश्रा श्रत्थधरो पमाए भवति।
- भाग १, पृ० १४

उपयोगपूर्वकरगक्रियालक्खरगो श्रप्रमाद ।
—भाग १ पृ० ४२

हिमादिश्रकज्जकम्मकारिगो श्रणायरिया ।
—भाग ४, पृ० १२४

श्रावत्तीए जहा श्रप्प रक्खति,
तहा श्ररणोवि श्रावत्तीए रक्खियव्वो। —भाग ४, १८६

श्रज्जव श्रकरेमागस्स मजमसोही ग भवति।
—भाग ४, पृ० २६४

पमाया दप्पो भवति, श्रप्पमाया कप्पो।
—भाग १, पृ० ४२

कम्मबधा य ग दव्वपडिसेवगाणुरूवो, रागदोसाणुरूवो भवति।
– भाग ४, पृ० ३५६

जहा जउ श्रग्गिगा गलति
एव जहुत्तसजमजोगस्स श्रकरगाता चरित्त गलति ।
—भाग ४, पृ० ४

जारिमी रागभागमात्रा मदा मध्या तीव्रा
वा, तारिमी मात्रा कर्मबधो भवति।
- भाग ४, पृ० १६

जो जो साधुस्स दोसनिरोधकम्मखवरगो किरियाजोगो
मो मो मोक्खोवात्तो।
—भाग ४ पृ० ३५

—चूरिणकार आचार्य जिनदास महत्तर

— — —